

प्रस्तावना ।

और ७।८ इन दोनों भागों को परमोदारचरित श्रीधन्वतरि शास्त्रपारावारपारीण मुरादाबादनिवासी श्रीलालाशालिग्रामजी ने बनाया है जिनमें संपूर्ण औषधियों के नाना देशदेशांतर प्रसिद्ध नाम और गुण दोषों का सविस्तर वर्णन है। ऐसे १ से लेकर ८ भागों में यह "बृहन्निघण्टुरत्नाकर" ग्रंथ सर्वांगसुंदर होकर परिपूर्ण हुआ है ॥

हम बड़े उत्साह के साथ सर्व सज्जनों को निवेदन करते हैं कि, इस आठों भागों सहित "बृहन्निघण्टुरत्नाकर" ग्रंथ को संग्रह करने से फिर आयुर्वेद के कोई विषय जाननेकी आवश्यकता न रहेगी इस लिये सर्व सज्जन महाशयों को यही निवेदन है कि, इस संपूर्ण "अष्टभागभूषित" (बृहन्निघण्टुरत्नाकर) ग्रंथ को संग्रह करके उपरोक्त दोनों विद्वानों के चिरकालारब्ध परिश्रमों को सफल करेंगे और हमारे उत्साह को बढावेंगे ॥

विद्वज्जनरूपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर"—मुद्रणालयाध्यक्ष—मुंबई.



अथ बृहन्निघण्टुरत्नाकर षष्ठभागस्थ-
विषयानुक्रमणिका प्रारभ्यते ।

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
अथ शोथरोग ।			आर्द्रकादि चूर्ण	१४७४	६
शोथरोगका कर्मविपाक	१४६९	१	अभिघातजन्य शोथ	"	"
शोथहर भतिमादान	"	"	विषजन्य शोथ	१४७५	७
शोथसंमाप्ति	"	"	भिलाए सूननपर लेप	"	"
शोथके भेद	१४७०	२	भिलाएके विषपर लेप	"	"
पूर्वरूप	"	"	भिलाएके सूननपर लेप	"	"
कारण	"	"	कृष्णादि चूर्ण	१४७६	८
सामान्य लक्षण	"	"	गुडादि चूर्ण	"	"
शोथ होनेके स्थान	"	"	मकारान्तर	"	"
साध्यासाध्य	१४७१	३	पुनर्नवादिचूर्ण	"	"
असाध्य लक्षण	"	"	बिडङ्गादि चूर्ण	१४७७	९
वातशोथ निदान	"	"	त्रिफलादि काथ	"	"
वातशोथपर सामान्य यत्न	"	"	पुनर्नवादि काथ	"	"
शुष्कादि काथ व बीजपू-			सिहास्यादि काथ	"	"
रादि लेप	१४७२	४	सूननपर काथ	"	"
पित्तशोथ निदान	"	"	दशमूल हरीतकी	"	"
त्रिवृतादि काथ	"	"	तक्रादि योग	१४७८	१०
पटोलादि काथ	"	"	पुनर्नवासव...	"	"
कफशोथ	"	"	वासव	१४७९	११
पुनर्नवादि काथ	१४७३	५	शोथपर योग	"	"
सामान्य यत्न....	"	"	पुनर्नवादि घृत	"	"
आरग्वधादि तैल	"	"	पंचमूलादि तैल	१४८०	१२
पुनर्नवादि लेह	"	"	शुष्कमूलकादि तैल	"	"
द्वन्द्व और संनिपात-			न्यग्रोधादि तैल	"	"
जन्यशोथ	१४७४	६	पुनर्नवादि लेप	१४८१	१३
सामान्य यत्न....	"	"	पुनर्नवादि स्वेद	"	"
पिप्पली चूर्ण	"	"	कुटजादि स्वेद	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
आर्द्रक स्वरस	१४८१	१३	चिकित्सा १४८८ २०
अर्कादि सेचन	"	"	अन्नजवृद्धि " "
कृष्णादि मलेप	"	"	उपेक्षित अण्डवृद्धिका-	
बिल्वपत्ररस	...	१४८२	१४	परिणाम १४८९ २१
वर्षाम्बादि क्षीर	"	"	असाध्य लक्षण " "
गुडार्द्रकादि योग	"	"	शिरावेध " "
पुनर्नवादि योग	"	"	कर्णशिरावेध " "
भूनिम्बादि कल्क	"	"	गोमूत्रयोग " "
दाव्यादिकल्क	१४८३	१५	नारायणतैल १४९० २२
शोथारिरस	"	"	अंगुष्ठपरदाग " "
श्वयथुघाताारिरस	"	"	वचादि लेप " "
शोथपर मंडूर	"	"	कज्जली " "
पथ्य	"	"	अजान्यादि लेप " "
शोधरोगपर अपथ्य	१४८४	१६	लाक्षादि लेप " "
अण्डवृद्धि ।				पिप्पल्यादि लेप १४९१ २३
अण्डवृद्धि निदान	१४८५	१७	देवदारवादि लेप " "
संख्या	...	"	"	दावीचूर्ण " "
वातादिवृद्धिके लक्षण	"	"	"	रास्नादि काथ " "
वातज अण्डवृद्धिका यत्न	"	"	"	एरंडतैल " "
एरंडतैल योग	..	१४८६	१८	त्रिफलादि काथ " "
चन्दनादि लेप	"	"	रास्नादि द्वितीय कादा	१४९२ २४
पञ्चवल्कलादि	...	"	"	मांस्यादिघृत " "
सामान्यचिकित्सा	...	"	"	पुनर्नवादि तैल " "
त्रिकट्वादि काथ	"	"	वृद्धिनाशनरस १४९३ २५
सामान्यचिकित्सा	१४८७	१९	अनुपान " "
रक्तजवृद्धिपर	"	"	सर्वाङ्ग सुन्दररस " "
त्रिवृतादि काथ	"	"	कुरण्डलक्षण " "
मेदज अण्डवृद्धिपर	"	"	वर्धारोगपरकल्क १४९४ २६
पट्टपणादि चूर्ण	"	"	इंद्रवारुणीमूलयोग " "
मूत्रजन्य अण्डवृद्धिनिदान	१४८८	२०		कुरण्डपरलेप " "

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०		
प्रकारांतर	१४९४	२६	मण्डूरलोह	”	”
कुरंटज्वरपर	...	”	”	सूर्यवर्तादिलेप	१५०२	३४
लेप	१४९५	२७	अलाबुजलपान	”	”
प्रकारांतर	”	”	जीर्णकर्कारुयोग	”	”
ब्राह्मणयष्ट्यादि	”	”	निर्गुडीमूलयोग	...	”	”
इंद्राणी मूलयोग	...	”	”	कफजगलगण्ड	”	”
लेप	”	”	चिकित्सा	१५०३	३५
बालकके कुरंडपर	”	”	देवदारवादिलेप....	”	”
हरितकीचूर्ण	१४९६	२८	स्वेदजगलगण्ड	”	”
शंबूकादिलेप	”	”	चिकित्सा	”	”
सैधवादि अनुवासनवस्ति	”	”	”	असाध्यलक्षण	”	”
वर्ध्मरोगपरवित्वादिचूर्ण	१४९७	२९	”	अपचीकेलक्षण....	१५०४	३६
श्वदंष्ट्रादिचूर्ण	”	”	अलंबुपास्वरस....	”	”
वर्ध्मादिलेप	”	”	पोलिका	”	”
अंत्रवृद्धिपरपथ्य	”	”	सौभागनादिलेप	”	”
अत्रवृद्धिपरअपथ्य	१४९८	३०	अश्वत्यादिभस्म	१५०५	३७
गलगण्डरोग ।				रेखाकरण	”	”
गलगण्डकाकर्मविपाक	१४९८	३०	”	सर्पपादिलेप	”	”
गलगण्डनिदान	१४९९	३१	व्योषादितैल	”	”
संमाप्ति	”	”	चंदनादितैल	”	”
गलगण्डकी चिकित्सा....	”	”	”	गण्डमालारोग ।			
सर्पपादिलेप	१५००	३२	गण्डमालाकाकर्मविपाक	१५०६	३८	”
पलाशमूललेप	”	”	गण्डमालानिदान	”	”
अमृतादितैल	”	”	कषाय....	”	”
कटुतुंबीतैल	”	”	लेप	”	”
तुंव्यादितैल	”	”	स्वरस....	१५०७	३९
वातिकगलगण्ड	१५०१	३३	ब्रह्मदण्डीयोग....	”	”
जलकुम्भीभस्मयोग	”	”	आरग्वधादिनस्य और लेप	”	”	”
चिकित्साक्रम	”	”	वत्सनाभलेप	”	”
वातगलगण्डचिकित्सा....	”	”	”	मुण्डीमूललेप	”	”
				गण्डमाला फोडनेकोलेप	”	”	”

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
भङ्गातकादिलेप	१५०८	४०		पुत्रजीवलेप	११	११	
गन्धाकदिलेप	११	११		हृषिरघ्नाव	११	११	
जेवालपत्रलेप	११	११		गदादिलेप	११	११	
अनमोदादितैल	११	११		राजिकादिलेप	११	११	
निर्गुण्ड्यादितैल	१५०९	४१		विष्णुकान्तादिलेप	११	११	
सुचन्दुरितैल	११	११		मूलिकादिबन्ध	११	११	
गुञ्जादितैल	११	११		अर्बुदरोग ।			
योषादेगुग्गुल	११	११		अर्बुरोगकानिदानऔरसंमाप्ति	११	११	
काञ्चनारगुग्गुल	१५१०	४२		अर्बुदकीसंख्या	११	११	
गण्डमालाकण्डनरस	११	११		चिकित्साक्रम	११	११	
गन्धकादिलेप	१५११	४३		वातार्बुदचिकित्सा	११	११	
मंत्र	११	११		मकारान्तर	१५१७	४९	
नस्पतैल	११	११		पित्तार्बुदचिकित्सा	११	११	
अंधिरोग ।				कफार्बुदचिकित्सा	११	११	
अंधिनिदान	११	११		रक्तार्बुद	११	११	
चिकित्साक्रम	१५१२	४४		चिकित्सा	१५१८	५०	
वातजग्रन्थिनिदान	११	११		शोणितार्बुदके लक्षण	११	११	
वातजग्रन्थिकायत्न	११	११		मांसार्बुद	११	११	
पित्तजग्रन्थिनिदान	११	११		असाध्यलक्षण	११	११	
पित्तजग्रन्थिकायत्न	१५१३	४५		चिकित्सा	११	११	
कफजग्रन्थिनिदान	११	११		वचादिगणयोग	१५१९	५१	
कफजग्रन्थिकायत्न	११	११		अध्यर्बुदके लक्षण	११	११	
भेदजग्रन्थिनिदान	११	११		द्विर्बुदके लक्षण	११	११	
भेदजग्रन्थिकायत्न	११	११		अर्बुदनपकनेमैकारण	११	११	
सेक	१५१४	४६		यवक्षारादिलेप	११	११	
सामान्यचिकित्सा	११	११		गन्धाधिलेप	११	११	
सामान्यउपचार	११	११		उपोदिकापिण्डी	१५२०	५२	
क्षारपूत	११	११		उपोदिकादिअभ्यङ्ग	११	११	
द्विराजग्रन्थिकानिदान	११	११		सुह्यादिसेक	११	११	
ग्रन्थिकासाध्यासाध्यलक्षण	१५१५	४७		हरिद्रादिलेप	११	११	

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
शस्त्राग्निकर्म	”	”	स्वरस....	”	”
रौद्रस	१५२१	५३	पलाशमूलस्वरस	१५२७	५९
गलगण्ड, गण्डमाला, अपची व ग्रंथिअर्बुद इनपर पथ्य	”	”	श्लोपदपर-शिरावेध	”	”
अपथ्य	”	”	अन्न और दंभ	”	”
श्लोपदरोग ।				एरंडतैलसेवन	”	”
श्लोपदरोगकाकर्मविपाक	१५२२	५४		पिण्डारकादिचूर्ण	”	”
श्लोपदरोगेप्रतिमादानम्	”	”		ऋषिकादिमूललेप	१५२८	६०
श्लोपदनिदानम्	”	”	गुडूच्यादिलेप	”	”
प्रकारान्तरेण निदानम्	”	”		धान्याम्ल	”	”
चिकित्साक्रम....	”	”	पाददाहपर	”	”
वातजश्लोपद....	”	”	मदनादिलेप	”	”
वातजन्यकायत्न	”	”	सौरेश्वरघृत	”	”
पित्तजश्लोपद	”	”	विडङ्गादितैल	१५२९	६१
पित्तजश्लोपदकायत्र	”	”	श्लोपदपर पथ्य	”	”
पित्तजश्लोपदपरलेप	”	”	अपथ्य	१५३०	६२
श्लेष्मिकश्लोपद	१५२४	५६	अन्तर्विद्रधिरोग ।			
धतूरादिलेप	”	”	अन्तर्विद्रधिनिदान	”	”
सिद्धार्थादिलेप	”	”	उत्पन्न होनेके स्थान....	”	”
असाध्यलक्षण....	”	”	स्रावनिर्गम	१५३१	६३
श्लोपदमेकफकीप्रधानता	”	”		साध्यासाध्यविद्रधि	”	”
श्लोपदहोनेका देश	१५२५	५७	असाध्य लक्षण	”	”
असाध्यश्लोपद	”	”	विद्रधि निदान	१५३२	६४
वृद्धदारुचूर्ण	”	”	वरुणादिघृत	”	”
पिप्पल्यादिचूर्ण	”	”	त्रिफलादिगुग्गुलु	”	”
कृष्णादिमोदक	१५२६	५८	वरुणादिकाथ....	१५३३	६५
चित्रकादिकल्क	”	”	शिश्वादिकाथ	”	”
हरितकीकल्क	”	”	वर्षाभ्वादिकाथ	”	”
गुडूचीयोग	”	”	पुनर्नवादिकाथ	”	”
सर्षपतैल	”	”	दशमूलादिकाथ	”	”
				वरुणादिकाथ	”	”

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
अनन्तादिपेय	१५३४	६६	व्रणशोथ रोग ।	
हरीतक्यादिचूर्ण	११	११	व्रणशोथनिदान ११ ११
कञ्जलीयोग....	११	११	व्रणपाकलक्षण.... ११ ११
विद्रधिपरलेप	११	११	अपक्वव्रणके लक्षण १५४१ ७३
घातविद्रधिकेक्षण	११	११	पच्यमानव्रणके लक्षण ११ ११
व्याघ्रमूलादिलेप	१५३५	६७	पक्वव्रणके लक्षण ११ ११
शिशुमूलादिलेप	११	११	एकदोषसे उत्पन्न सूजनपक्वने	
जलौकापातन	११	११	के समय तीनों दोषोंका	
वातविद्रधिपरफाय	११	११	संबंध होना १५४२ ७४
विडङ्गारिष्टविद्रधिआदिपर	११	११	११	राध न निकलनेका	
पित्तजविद्रधिनिदान....	१५३६	६८	परिणाम.... ११ ११	
सारिवादिऔरचन्दनादिलेप	११	११	आमादि लक्षण ११ ११	
फाय और लेप	११	११	अपक्व छेदन और पकेकी उपेक्षा	
कफजन्यविद्रधि	१५३७	६९	करता वैद्यको दोष	११ ११
मकारान्तर...	११	११	व्रणका चिकित्सान्तम	१५४३ ७५
स्वेद	११	११	विम्लापन और रक्तावसेचन	११ ११
पकनेपरघ्राव	११	११	रुधिरभोक्षको सुसाध्यत्व	११ ११
संनिघातविद्रधि	११	११	मकारान्तर ११ ११
अभिघातजन्य और आर्गतुक				व्रणशोथको फोडना १५४४ ७६
विद्रधि	१५३८	७०	शणमूलादि लेप ११ ११
रक्तजविद्रधि	११	११	दंतीमूलादि लेप ११ ११
रक्तविद्रधिचिकित्सा	११	११	हस्तिदन्तादि लेप ११ ११
रक्तविद्रधिपर	११	११	यवादि लेप १५४५ ७७
स्तनविद्रधिनिदान	११	११	मक्षालन ११ ११
त्रिफलायोग....	१५३९	७१	शोधन रोपण ११ ११
सौभान्जनीय योग	११	११	दुष्टव्रणपर लेप ११ ११
शिशुमूलयोग....	११	११	व्रणको शोधन १५४६ ७८
विद्रधिरोगपर पच्य	११	११	निवादि शोधन ११ ११
विद्रधिरोगपर अपच्य....	१५४०	७२	७२	न्यग्रोधादि शोधन ११ ११
				लेप और चूर्ण ११ ११

विषयाः	सं० पृ०	पृ०	विषयाः	सं० पृ०	पृ०
निंवादि कल्क और रस	॥	॥	कफजन्यघ्नण	॥	॥
लशुनादि छेप और निंब			रक्तज व दन्द्जघ्नण	॥	॥
पत्रादि घूप	१५४७	७९	सुखघ्नणनिदान	॥	॥
त्रिफलादि काथ	॥	॥	कृच्छ्रसाध्य और असाध्य	१५५४	८६
मनःशिलादि छेप	॥	॥	दुष्टघ्नण	॥	॥
पारदादि मलहरघृत....	॥	॥	शुद्धघ्नणके लक्षण	॥	॥
मकारान्तर	१५४८	८०	भरनेवाले घ्नणके लक्षण	॥	॥
अयोरजादि छेप	॥	॥	भरेहुए घ्नणके लक्षण....	॥	॥
गुग्गुलवटक	॥	॥	व्याधि विशेष करके घ्नणको		
विडङ्गादि गुग्गुलु	॥	॥	कृच्छ्रसाध्यत्व	१५५५	८७
अमृतादि गुग्गुलु	१५४९	८१	साध्यासाध्यलक्षण	॥	॥
जात्यादिघृत	॥	॥	असाध्यघ्नण	॥	॥
स्वर्जिकादिघृत	॥	॥	मकारान्तर	॥	॥
लेपोपनाह	॥	॥	घ्नणमें अपचार	१५५६	८८
लेपनियम	१५५०	८२	घ्नणरोगमें सामान्य चिकित्सा	॥	॥
पाचनकाल	॥	॥	वातघ्नण चिकित्सा	॥	॥
अधोपनाहन	॥	॥	रक्तस्राव	॥	॥
सक्तुपिण्डी	॥	॥	गम्भीर घ्नणपर लेप....	॥	॥
पाटन	॥	॥	निंवादि छेप....	१५५७	८९
मातुलुङ्गादि लेप	१५५१	८३	मनःशिलादि छेप	॥	॥
काञ्जिककल्क	॥	॥	घ्नणकी कृमिपर	॥	॥
पित्तशोध चिकित्सा	॥	॥	मकारान्तर	॥	॥
अजगन्धादि लेप	॥	॥	जात्पादिघृत....	॥	॥
कृष्णादि लेप	॥	॥	पटोलादिकाथ....	१५५८	९०
न्यग्रोधादि लेप	१५५२	८४	त्रिफलादिकाथ	॥	॥
घ्नणरोग ।			अधामिदग्धघ्नणनिदान	॥	॥
घ्नणरोगका कर्मविपाक	॥	॥	अग्निदग्धघ्नणचिकित्सा	१५५९	९१
घ्नणनिदान	१५५३	८५	पप्यादिलेप....	१५६०	९२
वातिकघ्नण	॥	॥	अन्तर्भूम	॥	॥
पौक्तिकघ्नण	॥	॥	सुधादिलेप....	॥	॥

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
शेखादिआश्वोतन	"	"	स्नायुविद्ध....	"	"
अग्निदग्धपरलेप	"	"	संधिविद्ध....	१५६७	९९
धातकीचूर्ण....	१५६१	९३	अस्थिविद्ध....	"	"
त्रिफलाचूर्ण....	"	"	मांसमर्मकेअनुकलक्षण	"	"	"
सामान्यलपचार	"	"	आगन्तुकप्रण	"	"
दग्धयवनूर्ण....	"	"	आगन्तुकपरचिकित्सा	"	"	"
चन्दनादितैल	"	"	सामान्य चिकित्साक्रम	१५६८	१००	
प्योलीतैलम्....	१५६२	९४	घृष्ट तथा विदलितका			
लाङ्गलीघृत....	"	"	उपचार	"	"
मधूच्छिष्टादितैल	"	"	छिन्न छिन्न और विद्ध इनपर			
आगन्तुवर्णोदनान	"	"	उपचार	"	"
घणके छःप्रकार	१५६३	९५	उपचार	"	"
सर्वघणके उपद्रव	"	"	उपचार	"	"
छिन्नलक्षण....	"	"	सद्योव्रणचिकित्सा	१५६९	१०१
भिन्नलक्षण....	"	"	आशयभेद उपचार	"	"
कोष्ठलक्षण....	"	"	वंशात्वगादि काथ	"	"
इनके भेदोंकेलक्षण	१५६४	९६	गौरादिघृत	"	"
आमाशयास्थितरक्तभेदलक्षण	"	"	"	यवादिभन्न	१५७०	१०२
विद्धलक्षण	"	"	तिक्तगदिघृत	"	"
पक्षाशयस्थरक्तके लक्षण	"	"	"	जात्यादि तैल	"	"
क्षतकेलक्षण....	१५६५	९७	सद्योव्रणचिकित्सा	१५७१	१०३
पिचिन्नलक्षण....	"	"	दूर्वादि तैल	"	"
घृष्टलक्षण....	"	"	सप्तविंशति गुग्गुलु	"	"
सशल्पलक्षण....	"	"	अथ भग्नरोग ।			
फोष्टकेदलक्षण	"	"	भग्नरोग निदान	१५७२	१०४
असाध्यकोष्ठभेद	१५६६	९८	संधिभग्न	"	"
मांस-शिरा-स्नायु-अस्थि और				संधिभग्नके सामान्य लक्षण	"	"	"
संधिइनकेमर्ममें धावहोनेसे				काण्डभग्नके लक्षण	१५७३	१०५
सामान्यलक्षण	"	"	"	काण्डभग्नके सामान्य			
मर्मरहितशिराविद्धकेलक्षण	"	"	"	लक्षण	१५७४	१०६

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
काण्डभद्रके बारहो भेदोसे				वातनाडीव्रण	१५८०	११२
अधिक प्रकार....	१५७४	१०६		सामान्यचिकित्सा	"	"
कष्टसाध्य	"	"	"	पित्तनाडीव्रण....	"	"
असाध्य लक्षण	"	"	"	सामान्य चिकित्सा	"	"
अन्य असाध्य लक्षण	१५७५	१०७		कफनाडीव्रण....	"	"
उपद्रव करनेसे असाध्यत्व	"	"	"	सामान्य चिकित्सा	१५८१	११३
पृथक् २ अस्थिका पृथक् रीति-				शल्यननाडीव्रण	"	"
से भंगवर्णन	"	"	"	सामान्य चिकित्सा	"	"
भद्रचिकित्सा....	"	"	"	सन्निपातजन्य नाडीव्रण	"	"	"
भद्रका बंधन....	"	"	"	साध्यासाध्य	"	"
भद्रपर कर्म	१५७६	१०८		नाडीव्रण जात्यादिवर्ती	"	"	"
हड्डी बांकी होगई हो उस-				निर्गुण्डी तैल....	१५८२	११४
पर उपचार	"	"	"	नरास्थितैल	"	"
लेप	"	"	"	विडंगाद्यगुग्गुलु	"	"
न्यग्रोधादिकाथ	"	"	"	आरग्वधादिवर्ती	"	"
शृगालविघ्नारसपान	"	"	"	गुग्गुलादि लेप	"	"
आमादिचूर्ण	१५७७	१०९		व्रणरोगपर पथ्य	१५८३	११५
क्षीरपान	"	"	"	अपथ्य	"	"
प्रकारांतर	"	"	"	भगंदररोग ।			
रसोनादिकल्क	"	"	"	भगंदररोगका कर्मविपाक	"	"	"
लाक्षादिगुग्गुलु	"	"	भगन्दर निदान	१५८४	११६
आभादिगुग्गुलु	"	"	भगन्दर शब्दकी निरुक्ति	"	"	"
वह्निजभस्म	१५७८	११०		ज्ञतपोनकके लक्षण	"	"
गोधूमप्रयोग	"	"	"	उष्ट्रशिरोधरके लक्षण	१५८५	११७	
अपथ्य....	"	"	"	शंभूकावर्तके लक्षण	"	"
अथ नाडीव्रणरोग ।				परिस्रावी भगंदरके लक्षण	"	"	"
नाडीव्रणहर कर्मविपाक	१५७९	१११		अशंभूभगंदर	"	"
नाडीव्रणनिदान	"	"	उन्मार्गी भगंदर	१५८६	११८
संख्यारूपसंभासि	"	"	साध्यासाध्य लक्षण	"	"
सामान्यचिकित्सा	"	"	सामान्य चिकित्सा	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
भगंदरपर दंभ	१५८६	११८	संनिपातोपदंश	१५९४	१२६
अपक भगंदर पिष्टिकापर	१५८७	११९	असाध्य लक्षण	"	"
क्षारादियोग	"	"	भकारांतर	"	"
स्यन्दन तैल	"	"	नीलोत्पलादि लेप	"	"
निशादि तैल	"	"	दारुहरिद्रादि लेप ...	१५९५	१२७
करवीर तैल	"	"	रसांजनादि लेप	"	"
शुनास्थ्यादि लेप तथा			भकारांतर	"	"
नरास्थि तैल ...	१५८८	१२०	पारदादि लेप	"	"
बिडालास्थि लेप	"	"	वटमरोहादि लेप	१५९६	१२८
कुष्ठादि लेप	"	"	त्रिफलामयी लेप	"	"
रसांजनादि कल्क	"	"	अश्वत्थादि मक्षालन	"	"
वटपत्रादि लेप	"	"	त्रिफलादि मक्षालन	"	"
तिलादि लेप	१५८९	१२१	जयादि मक्षालन	"	"
खदिरादि लेप	"	"	पटोलादि फाय	"	"
तिलादि लेप	"	"	गैरिकादि फाय	१५९७	१२९
सप्तविंशति गुग्गुलु	"	"	आम्रत्वचाका स्वरस	"	"
जम्बूकमांस भकार	१५९०	१२२	सर्जिकादि चूर्ण	"	"
भगन्दरपर पथ्य	"	"	बज्रूलदल चूर्ण	"	"
भगन्दरपर अपथ्य	"	"	चोपचीनी चूर्ण	"	"
उपदंश रोग ।			भूनिवादिघृत	१५९८	१३०
उपदंशका कर्मविपाक	१५९१	१२३	करञ्जादि घृत	"	"
उपदंश निदान	"	"	रसघृत	"	"
वातोपदंश	१५९२	१२४	आगरधूम तैल	१५९९	१३१
उपदंशपर मक्रिया	"	"	सूतादिघटी	"	"
पित्तोपदंश तथा रकोपदंश	"	"	उपदंशकुठार	"	"
गैरिकादि फाय	"	"	रसगन्धकज्जली	१६००	१३२
निम्बादि फाय ...	"	"	चोपचीनीपाक	"	"
कफोपदंशके लक्षण	१५९३	१२५	बाह्यहरितक्यादि योग	"	"
लिङ्गवर्त्ति उपदंश	"	"	जातिस्वरस	१६०१	१३३
सर्वापदंशपर सर्वव्याधि					
हरण रस ...	"	"			

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
पथ्य	१६०१	१३३		शोणितार्बुद	१६०५	१३७	
अपथ्य	"	"		मांसार्बुद ...	१६०६	१३८	
शूकदोष ।				मांसपाक लक्षण	"	"	
शूकदोषनिदान	"	"		विद्रधि लक्षण	"	"	
शूकदोषचिकित्सा	१६०२	१३४		तिलकालकके लक्षण	"	"	
प्रथम उपचार	"	"		मांसार्बुद, मांसपाक, विद्रधि, ति-			
सर्षपिका लक्षण	"	"		लकालक	"	"	
अष्टौलिका लक्षण	"	"		तिलकाकालकको असाध्यत्व	"	"	
अष्टौलिका चिकित्सा	"	"		चिकित्सा	१६०७	१३९	
ग्रथित	"	"		पथ्य	"	"	
ग्रथितचिकित्सा	१६०३	१३५		त्वग्दोष (कुष्ठ) रोग.			
कुम्भिका लक्षण	"	"		कुष्ठरोगका कर्मविपाक	"	"	
कुम्भिका चिकित्सा	"	"		दुश्चर्महर	"	"	
अलजीके लक्षण	"	"		कुष्ठनिदान ...	१६०८	१४०	
अलजीचिकित्सा	"	"		कुष्ठोको त्रिदोषजत्वहोनेसेदोषा	"	"	
मृदित	"	"		धिक्यकरिकेसातप्रकार	१६०९	१४१	
समूढ पिटिका लक्षण....	"	"		कुष्ठके पूर्वरूप	"	"	
अधमन्थके लक्षण	१६०४	१३६		कपालकुष्ठ	"	"	
अधमन्थ चिकित्सा	"	"		वेल्हादिलेप....	"	"	
पुष्करिका लक्षण	"	"		औदुंबरकुष्ठ	१६१०	१४२	
पुष्करिकाका यत्न	"	"		मण्डलकुष्ठ....	"	"	
स्पर्शहानि लक्षण	"	"		चित्रकादिलेप	"	"	
उत्तमा	"	"		ऋक्षनिद्ध....	"	"	
चिकित्सा	१६०५	१३७		पुण्डरीककुष्ठ	"	"	
शतपोनक	"	"		विजयेश्वररस	१६११	१४३	
चिकित्सा	"	"		भृंगरानादि लेप	"	"	
त्वक्पाक	"	"		सिध्मकुष्ठ	"	"	
त्वक्पाक, स्पर्शहानि				लाक्षादिलेप	"	"	
और मृदित	"	"					

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
कार्पासादिलेप	१६१२	१४४	तालकमस्म....	१६१८	१५०
सिध्मपरलेप...	११	११	कासमर्दादि लेप	११	११
बान्धकादिलेप	११	११	दद्रुपरमपुत्राटादिलेप....	११	११
तालकादिलेप	११	११	दूर्वादिलेप.....	१६१९	१६१
रसादिलेप	११	११	विडङ्गादिलेप	११	११
धान्यादिलेप	११	११	लघुमारीचादितेल	११	११
मकारान्तर	१६१३	१४५	दरदादिलेप....	...	११	११
गन्धकादिलेप	११	११	सर्वकुष्ठोंपर रसादियोग	१६२०	१५२	१५२
कासमर्दादिलेप	११	११	मनःशिलादितथाकरंजादिलेप	११	११	११
मूलकबीजादिलेप	११	११	करवीरादितेल	११	११
कांकणकुष्ठ	११	११	वरादिनूर्ण	११	११
चर्मकुष्ठ (गजकर्ण)	१६१४	१४६		रसादिलेप	११	११
चिकित्सा	११	११	सिन्दूरादिलेप व अर्कतैल	११	११	११
चर्मकुष्ठ	११	११	विस्फोटककुष्ठ	१६२१	१५३
किटिभकुष्ठ,....	१६१५	१४७	कच्छुकुष्ठ	११	११
किटिभपर वज्रपाणिरस	११	११		जीरकतैल	११	११
किटिभपरचक्रांकादिलेप	११	११		बृहत्सिन्दूरादितैल	...	११	११
किटिभपर पिप्पल्यादिलेप	११	११		हरिद्राकल्क	१६२२	१५४
तृतीय लेप	११	११	बृहन्मरीच्यादितैल	११	११
वैपादिक कुष्ठ	१६१६	१४८	शतारुकुष्ठ	१६२३	१५५
धत्तूरतैल	११	११	गन्धकयोग	११	११
मुण्डीघृत....	११	११	सिंहास्यदललेप	११	११
विषादिकातथा विचर्चिका	११	११		विचर्चिकालुष्ठ	...	११	११
दन्धनऔरसन्निपातजन्यकुष्ठ	११	११		माहेश्वरघृत....	१६२४	१५६
थलसकुष्ठ....	१६१७	१४९	सुजलीपरमास्यादिगण	११	११	११
दद्रुमण्डलकुष्ठ	...	११	११	अवलुजादिलेप	११	११
मूलकबीजादिलेप	११	११	कुष्ठचिकित्साक्रम	११	११
आरवधदलादि लेप....	११	११	पथ्यादिलेप...	११	११
चर्मदलकुष्ठ....	१६१८	१५०	एलादिलेप....	१६२५	१५७
राजिकादिलेप	११	११	करवीरादिलेप	११	११

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
शिरावेध....	...	१६२५	१५७	शैलेयादिलेप	१६३४	१६६
शिंगीलगाना....	"	"	मंजिष्ठादि ६४ काथ	"	"	"
जोख-तुम्बी...	"	"	मंजिष्ठादिकाथ	१६३५	१६७
वमन, विरेचन	"	"	लघुमञ्जिष्ठादिकाथ	"	"
गुग्गुल....	"	"	त्रिफलादिकाथ	१६३६	१६८
महातिक्तकघृत	१६२६	१५८	खादिरादि...	"	"
पञ्चतिक्तक घृत	"	"	शुण्ठ्यादिकाथ	"	"
महाखदिरादिघृत	१६२७	१५९	भल्लातकावलेह	१६३७	१६९
तिक्तपट्टपलघृत	"	"	शशाङ्गलेखादिलेप	१६३८	१७०
वातजादिकुष्ठ....	१६२८	१६०	धात्र्यादिलेह...	"	"
वातादिकुष्ठोपरसामान्य				त्रिफलादिमोदक	"	"
चिकित्सा	"	"	खदिरयोग....	...	१६३९	१७१
यवादिवमन....	१६२९	१६१	निम्बादिकल्क	१६४०	१७२
रसगतकुष्ठकेलक्षण	"	"	त्रिफलादिगुटिका	"	"
रक्तगतकुष्ठलक्षण	"	"	एकविंशतिकगुग्गुलु	"	"
मेदोगतके लक्षण	"	"	सर्षपादिउद्बूलन	१६४१	१७३
मांसगतके लक्षण	...	"	"	विडङ्गादिचूर्ण	"	"
आस्थिमज्जागत कुष्ठके लक्षण	"	"	"	सर्वागसुंदररस	"	"
शुक्रार्तवगत कुष्ठके लक्षण	१६३०	१६२		फनकारिष्ट....	...	१६४२	१७४
साध्यासाध्यत्व	"	"	वज्रतेल....	"	"
पञ्चनिम्बचूर्ण	"	"	मञ्जिष्ठादितेल	१६४३	१७५
खदिरासव	१६३१	१६३	श्वित्रकुष्ठकीचिकित्सा....	"	"	"
कुष्ठपर चिकित्सा करनेकेवास्ते				खदिरकाथ...	"	"
प्रधान दोषकथन	१६३२	१६४		त्रिफलादिलेप	"	"
किलास कुष्ठ निदान	"	"		सपेद कुष्ठको असाध्यत्व	१६४४	१७६	
वातादिभेदसें किलासके				बल्यादिलेप	"	"
लक्षण	१६३३	१६५	हयादिलेप	"	"
श्वित्रके साध्यासाध्य लक्षण	"	"	"	तालकादिलेप	"	"
किलासके असाध्य लक्षण	"	"	"	गुंजाफलादिचूर्ण	"	"
सांसर्गिकरोग	"	"	गुंजादिलेप	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
अयोरजादिलेप	...	१६४५	१७७	तालादिगुटी	१६५१	१८३
विपतैल	"	"	रसादिगुटी	१६५२	१८४
ज्योतिष्मतीतैल	"	"	पच्य....	"	"
शशिलेसावटी	"	"	अपच्य	"	"
कुष्ठरोगपरपच्य	१६४६	१७८	अम्लपित्तरोग ।			
कुष्ठरोगमें अपच्य	१६४७	१७९	अम्लपित्तकानिदान	"	"
अपच्य	"	"	लक्षण....	१६५३	१८५
शीतपित्तरोग ।				अम्लपित्तभेदोंमें एकअधोगतदू-			
शीतपित्तनिदान	"	"	सरा ऊर्ध्वगतउनमेंअधोगत			
पूर्वरूप	"	"	केलक्षण....	"	"
उदरदलक्षण	"	"	कफपित्तजअम्लपित्त....	"	"
शीतपित्तऔरउदरदकभेद	१६४८	१८०		कफपित्तलक्षण	"	"
उदरके अन्य लक्षण....	"	"		अम्लपित्तचिकित्सा	"	"
कोठ लक्षण	"	"	पटोलादिकाथ....	१६५४	१८६
उत्कोट और कोठ	"	"	ऊर्ध्वगतअम्लपित्तकेलक्षण	"	"
वमन....	"	"	अम्लपित्तमें साध्यासाध्य	"	"
त्रिफलादिरेचक	१६४९	१८१	अम्लपित्तको वातकफसंसर्ग	"	"
अभ्यङ्ग	"	"	वातयुक्तअम्लपित्त	१६५५	१८७
गंभारीफलकल्क	"	"	वातकफयुक्तअम्लपित्त	"	"
मष्ट्यादिकाथ	"	"	कफयुक्तअम्लपित्त	"	"
अमृतादिकाथ	"	"	गुडाविमोदक	"	"
गुडादियोग	"	"	अम्लपित्तकीसामान्यचिकित्सा	"	"
सामान्यचिकित्सा	१६५०	१८२	मकारान्तर....	"	"
सैन्धवादिलेप	"	"	प्रकारान्तर....	१६५६	१८८
सिद्धार्थादिउद्वर्तन	"	"	अन्न....	"	"
सामान्यचिकित्साक्रम	"	"	सामान्यचिकित्सा	"	"
निम्बपत्रयोग	"	"	वमनऔर विरेचन	"	"
कुष्ठपरउद्वर्तन	१६५१	१८३	सामान्यचिकित्सा	"	"
शतारिख	"	"	अम्लपित्तकेदाहपर....	१६५७	१८९
स्पर्शवातलक्षण	"	"	द्राक्षादिगुटिका	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
नालिकेरस्रण्ड	१६५७	१८९	विसर्प होनेके कारण	१६६५	१९७	
स्रण्डफूष्माण्ड	"	"	वमन	"	"
मधुपिप्पली....	१६५८	१९०	शास्त्रार्थ	"	"
पाठादिकाथ	"	"	विरचन	१६६६	१९८
हिंखादिकाथ	"	"	त्रिवृदादिशोधन	"	"
यवादि....	"	"	वातविसर्प	...	"	"
अन्ययवादिकाठा	१६५९	१९१	रास्नादि लेप....	"	"
भूनिंवादिकाथ....	"	"	पित्तविसर्प	"	"
कंटकार्यादिकाथ	"	"	मर्पोंडरीकादि लेप	...	"	"
चित्रकादिकाथ	"	"	कसेरुवादि लेप	...	१६६७	१९९
अविषात्रिकरचूर्ण	"	"	पंचमूलादि काथ	"	"
एलादिचूर्ण....	१६६०	१९२	कफविसर्प	"	"
गुडमोदक....	"	"	कफविसर्पपर वमन	"	"
त्रिकुट चूर्ण अधोगत				गायत्र्यादि लेप	"	"
अम्लपित्तपर	"	"	त्रिकलादि लेप	"	"
अभयादि अवलेह	१६६१	१९३	घृतादिलेप	१६६८	२००
खंडपिप्पल्यादि अवलेह	"	"	दशांगलेप	"	"
पिप्पलीघृत	"	"	अग्निविसर्प	"	"
द्राक्षादिघृत	१६६२	१९४	मांस्यादिलेप	१६६९	२०१
शतावरीघृत	"	"	शंथिविसर्प	"	"
नारायणघृत	"	"	न्यग्रोधादिलेप	१६७०	२०२
गुडादिघृत	"	"	कर्दमविसर्प	"	"
लीलाविलासरस	१६६३	१९५	कर्दमविसर्पपर	"	"
रसामृत	"	"	क्षतजविसर्प	१६७१	२०३
सूतशेखररस	"	"	विसर्पके उपद्रव	"	"
अम्लपित्तपर पथ्य	१६६४	१९६	साध्यासाध्यलक्षण	"	"
अम्लपित्तपर अपथ्य	"	"	गौराद्यघृत	"	"
विसर्प ।				वृषादिघृत	१६७२	२०४
विसर्पनिदान....	१६६५	१९७	दूर्वादिघृत....	"	"
द्वेदजों के नाम विशेष	"	"	"	करंजादितैल	"	"
				पटोलादिकाथ	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
गुहूच्यादिकाय	१६७३	२०५	दूर्वादिघृत	१६८०	२१२
पटोलादि	"	"	निंवादिक्वाथ	"	"
दुरालभादि	"	"	भूनिंवादिक्वाथ....	"	"
मुस्तादि	"	"	पद्मकादिघृत	"	"
भूनिंवादि	"	"	पञ्चतन्तुघृत	१६८१	२१३
कनकादिलेप	१६७४	२०६	चन्दनादिलेप....	"	"
एरंडादितैल	"	"	विस्फोटपरपथ्य	"	"
हरीतकी योग	"	"	विस्फोटपरअपथ्य	१६८२	२१४
द्वंद्वजविषर्षकीचिकित्सा	१६७५	२०७	मसूरिका ।		
पथ्य	"	"	मसूरिकानिदान	"	"
अपथ्य	१६७६	२०८	मसूरिकाकेपूर्वरूप	"	"
विस्फोट ।			कुंसीहोनेकाकारण	१६८३	२१५
विस्फोटनिदान	"	"	मसूरिकाकास्वरूप	"	"
विस्फोटकास्वरूप	"	"	मसूरिकाचिकित्सा	"	"
सामान्यचिकित्सा	१६७७	२०९	सामान्यक्रम....	"	"
वातविस्फोट	"	"	वातमसूरिका	"	"
दशमूलकाक्वाथ	"	"	वातमसूरिकाकायत्न	१६८४	२१६
पित्तविस्फोट....	"	"	धूप	"	"
द्राक्षादि	"	"	न्यग्रोधादिलेप	"	"
कफविस्फोट	१६७८	२१०	चन्दनादिकल्क	"	"
भूनिंवादि	"	"	गुहूच्यादिचूर्ण	"	"
कफपित्तजविस्फोट	"	"	बृहत्पटोलादिकाथ	१६८५	२१७
द्वादशाङ्गकाथ	"	"	दशमूलादिकाथ	"	"
वातपित्तात्मक	"	"	पित्तमसूरिका	"	"
अमृतादिकाथ....	"	"	सामान्ययत्न	"	"
कफवातात्मक विस्फोट	१६७९	२११	निंवादिक्वाथ	"	"
सन्निपातकाविस्फोट	"	"	निंवादि	१६८६	२१८
रक्तजविस्फोट....	"	"	द्राक्षादि	"	"
साध्यासाध्य	"	"	रक्तजन्यमसूरिका	"	"
विस्फोटकेउपद्रव	"	"	कफजन्यमसूरिका	"	"
पटोलादि काय	१६८०	२१२	पञ्चमूलादिकाथ	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
अङ्गुलिकास्वरस	१६८७	२१९	मसूरिकादिभेद कोद्रव	१६९३	२२५	
खदिरादिलेप	"	"	मोचरसादिपान	"	"
दुरालभादिकाय	"	"	स्फोटदाह....	"	"
गुडूच्यादिकाय	"	"	चन्दनादिहिम	"	"
नागरादिकाय	"	"	कोद्रवनामकमसूरिकापर	"	"	"
त्रिदोषजन्यमसूरिका	"	"	खदिराष्टक....	१६९४	२२६
चर्मपिटिका....	१६८८	२२०	साध्यासाध्यविचार	"	"
रोमांतिक	"	"	निशादिकाय....	"	"
रसगतमसूरिका	"	"	निंबादिकाय	"	"
रक्तगतमसूरिका	"	"	काश्चनादिकाय	१६९५	२२६
मांसगतमसूरिका	"	"	पटोलादिकाय....	"	"
भेदोगतमसूरिका	१६८९	२२१	धान्यादिकाय....	"	"
अस्थिगत तथा मज्जाके लक्षण	"	"	"	नेत्रकीशीतलापर उपचार	"	"	"
शुक्रगतमसूरिका	"	"	अवधूलन....	१६९६	२२८
धातुगतमसूरिकोंके दोष संबंध				मधुकादिलेप....	"	"
से लक्षण....	"	"	शेबूकस्वरस	"	"
धातुगत वा दोषगतमसूरिका				पंचवल्कलादिअवधूलन	"	"	"
ओं मे साध्यासाध्य	१६९०	२२२		शीतलाके घ्रणपर	"	"
कष्टसाध्य....	"	"	रालादिधूप	१६९७	२२९
असाध्यमसूरिका	"	"	मसूरिका रोगपर पप्य	"	"	"
शीतलाकीविशेषावस्था	"	"	"	अपप्य	१६९८	२३०
मसूरिकाके उपद्रव	१६९१	२२३	क्षुद्ररोग ।			
शीतलाके भेद	"	"	अजगल्लीके लक्षण	"	"
बृहतीशीतलाकेलक्षण	"	"	"	अजगल्लीकी चिकित्सा	"	"	"
बृहतीशीतलापरउपचार	"	"	"	यवमरुया	"	"
रक्षामकार....	१६९२	२२४	अंधालनी	१६९९	२३१
भेषजमकार	"	"	यवमरुया और अंधाल-			
चिचाबीजचूर्ण	"	"	नीकी चिकित्सा	"	"	"
सामान्यचिकित्सा	"	"	विश्रुता	"	"
स्तोत्रपाठादि	"	"	कच्छपिका	१७००	२३२

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
चिकित्सा	१७००	२३२		शर्करा	१७०६	२३८	
वल्मीक (बैबी)	"	"	"	शर्कराबुंदकी चिकित्सा	"	"	"
मनःशिलादितैल	"	"	"	पाददारी	"	"	"
असाध्य लक्षण	१७०१	२३३		चिकित्सा	"	"	"
वल्मीककी चिकित्सा	"	"	"	मधुच्छिद्यादिलेप	१७०७	२३९	
लेप और पिंडी	"	"	"	मदनादिलेप	"	"	"
पनसिका	"	"	"	मध्वादिलेप	"	"	"
पनसिकाकी चिकित्सा	"	"	"	उपोदिकादितैल	"	"	"
जालगर्दभ	१७०२	२३४		मदनादिलेप	"	"	"
इन्द्रबृद्धा	"	"	"	सैन्यवादिलेप... ..	१७०८	२४०	
गर्दभिका	"	"	"	फदर	"	"	"
पाषाणगर्दभ	"	"	"	चिकित्सा	"	"	"
पाषाणगर्दभकी चिकित्सा	"	"	"	अलसनिदान (साहए)	"	"	"
इरिवेल्लिका	१७०३	२३५		अलसचिकित्सा	"	"	"
फक्षा (कमलार्ई)... ..	"	"	"	करंजादिलेप	१७०९	२४१	
गन्धनामि	"	"	"	इन्द्रमुस	"	"	"
फक्षलगन्धनामिी	"	"	"	यत्न	"	"	"
चिकित्सा... ..	"	"	"	लेप	१७१०	२४२	
अमिरोहिणी	"	"	"	तिकादिस्वरस	"	"	"
अमिरोहिणीकी चिकित्सा	१७०४	२३६		गोक्षुरादिलेप	"	"	"
चिप्य... ..	"	"	"	जात्यादितैल... ..	"	"	"
चिप्यकुनसकी चिकित्सा	"	"	"	रुहीदुग्धादिलेप	"	"	"
हरिद्रादिकत्क	"	"	"	दाहण... ..	"	"	"
अंगुलीवैष्टकपर	"	"	"	चिकित्सा	१७११	२४३	
कुनसपर	१७०५	२३७		कंटकामादिलेप	"	"	"
अनुशयी	"	"	"	मिषालादिलेप	"	"	"
अनुशयीकी चिकित्सा	"	"	"	आम्रवीजादिलेप	"	"	"
विदारिका	"	"	"	भृंगरागतैल	"	"	"
विदारिकाकी चिकित्सा	"	"	"	गुनादितैल	१७१२	२४४	
सामान्य यत्न	"	"	"	अरुणिका	"	"	"
शर्कराबुंद	१७०६	२३८					

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
चिकित्सा	१७१२	२४४	नीलिका	१७१९	२५१
त्रिफलादितैल....	"	"	कुंकुमादि तैल	"	"
पिण्याकादि लेप	"	"	परिवर्त्तिका	"	"
सामान्ययत्न	"	"	सामान्ययत्न ...	१७२०	२५२
हरिद्रादितैल	१७१३	२४५	मकारांतर	"	"
खदिरादिलेप....	"	"	अवपाटिका	"	"
पलित (बालोंकासपेदहोना)	"	"	चिकित्सा	१७२१	२५३
अयादि लेप	"	"	निरुद्धमकाश....	"	"
घान्यादि लेप....	"	"	संनिरुद्धगुद	"	"
निवतैलयोग ...	१७१४	२४६	चिकित्सा ...	१७२२	२५४
त्रिफलादिलेप ...	"	"	अहिपूतन ...	"	"
काश्मर्यादितैल....	"	"	चिकित्सा	"	"
तारुण्यपिटिका...	"	"	रास्नादि लेप....	"	"
चिकित्सा	१७१५	२४७	पटोलादि काथ	"	"
जातीफलादिलेप	"	"	वृषणकच्छू	१७२३	२५५
लोभादिलेप ...	"	"	सामान्य चिकित्सा	"	"
सिद्धार्थादिलेप	"	"	सर्जादि लेप	"	"
पद्मिनीकंटक	"	"	कासीसादि लेप	"	"
पद्मिनीकंटककीचिकित्सा	१७१६	२४८	गुदभ्रंश	"	"
निबादिघृत	"	"	चिकित्सा	१७२४	२५६
जंतुमणि	"	"	पद्मिनीपत्रयोग	"	"
माप (मस्सा)	"	"	मूषिकादि लेप	"	"
तिलकालक	"	"	चांगीरीघृत	"	"
तिलकालक, मापजंतुमणि पर			वृक्षाम्लादियोग	"	"
चिकित्सा....	१७१७	२४९	मूषकतैल	१७२५	२५७
न्यच्छ... ..	"	"	सूकरदंष्ट्र	"	"
मंजिष्ठादितैल....	"	"	चिकित्सा	"	"
व्यंग	१७१८	२५०	रानीवादिकल्क	"	"
चिकित्सा	"	"	रजन्यादि लेप	"	"
वटांकुरादि लेप	"	"	पथ्यापथ्य	१७२६	२५८
अर्जुनत्वादिलेप	"	"			
जातीफलादिलेप	"	"			
मसुरादिलेप ...	१७१९	२५१			

मुखरोग ।

मुखरोगका कर्मविपाक	"	"
--------------------	---	---

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
मुखरोगसंख्या	१७२६	२५८	सहचरादितैल....	१७३२	२६४
संभाषि	११	११	सौषिरके लक्षण	१७३३	२६५
ओष्ठरोगसंख्या	१७२७	२५९	सामान्यचिकित्सा	११	११
वातजओष्ठरोग	११	११	महासौषिरदंतमूलरोग	११	११
साधारणचिकित्सा	११	११	परिदरदंतमूलरोग ...	११	११
तैलादि छेप	११	११	उपकुशदंतमूलरोग	१७३४	२६६
रासादि छेप	११	११	परिदर और उपकुशकी		
पैक्तिकओष्ठरोग	१७२८	२६०	चिकित्सा	११	११
साधारण चिकित्सा	११	११	सामान्य यत्न	११	११
श्लेष्मिकओष्ठरोग	११	११	वेदभ्रदंतमूलरोग	११	११
सामान्यचिकित्सा	११	११	सामान्ययत्न....	११	११
सांनिपातिकओष्ठरोग	११	११	खल्लिवर्द्धन....	१७३५	२६७
सर्व ओष्ठरोगोंकी सामान्य			सामान्ययत्न....	११	११
चिकित्सा	१७२९	२६१	कराल....	११	११
रक्तजओष्ठरोग	११	११	अधिकमांसकरोग	११	११
मांसजओष्ठरोग	११	११	यत्न....	११	११
भेदजओष्ठरोग	११	११	दंतविद्रधिनिदान	१७३६	२६८
सामान्य चिकित्सा	११	११	नाडीग्रण....	११	११
अभियातजओष्ठरोग	११	११	दालन....	११	११
कफज रक्तज ओष्ठरोग	१७३०	२६२	भजनकेदंतरोग	११	११
दंतमूल रोगोंकी संख्या			दंतहर्ष....	११	११
और नाम	११	११	सामान्यचिकित्सा	१७३७	२६९
शीतादकेलक्षण	११	११	चिकित्सांतर....	११	११
सामान्यचिकित्सा	११	११	कृमिदंतक....	११	११
वासीसादिचूर्ण ...	१७३१	२६३	चिकित्सा....	११	११
दंतपुष्पटकेलक्षण	११	११	वृहत्यादिकाय ...	११	११
दंतवेष्टकेलक्षण	११	११	दंतकृमिपरिधातन	१७३८	२७०
दंतवेष्टकीचिकित्सा	११	११	सारिवापर्णधारण	११	११
जीरकादिचूर्ण....	१७३२	२६४	कासीसादिगुटी	११	११
कषादिचूर्ण....	११	११	दंतशर्करा....	११	११
भद्रमुस्तादिगुटी	११	११	चिकित्सा....	११	११

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
दंतशर्करा....	..	१७३९	२७१	अर्धुदतालुरोग १७४५ २७७
श्यावदंत....	"	"	मांससंधात " "
हनुमोक्ष....	"	"	तालुपुप्पुट " "
दंतनाडीचिकित्सा	"	"	कंठशुंभ्यादिचिकित्सा	१७४६ २७८
जात्यादितैल....	१७४०	२७२	तालुशोपके लक्षण " "
सामान्यचिकित्सा	"	"	चिकित्सा " "
लक्षादितैल....	"	"	तालुपाकके लक्षण " "
दंतरोगकासामान्ययत्न	१७४१	२७३		चिकित्सा " "
कुष्ठादिचूर्ण....	"	"	तालुरोग " "
गुडूचीकरक	१७४२	२७४	शुंडीछेदन " "
जातीपत्रादिचूर्ण	"	"	छेदनमकार १७४७ २७९
पथ्य	"	"	शुंडीछेदनकेपश्चात् उपचार	" "
जिह्वारोग संख्या	"	"	गलरोगके नाम और संख्या	" "
वातजजिह्वा	"	"	कंठगत १७ रोग तिनमें पांचों	
कफजजिह्वा	१७४३	२७५	रोहिणियोंकी संप्राप्ति	" "
अल्लासके लक्षण	"	"	उक्त रोहिणियोंकी सामान्य	
उपजिह्वाके लक्षण	"	"	चिकित्सा.... १७४८ २८०
सामान्यचिकित्सा	"	"	वातजाकेलक्षण " "
व्योषादिचूर्ण	"	"	चिकित्सा " "
निर्गुंध्यादिचर्वण	१७४४	२७६	पित्तजरोहिणी " "
कांचनार काथ	...	"	"	चिकित्सा " "
जिह्वारोगकीसाधारणक्रिया	"	"	"	रक्तजरोहिणी १७४९ २८१
गुडूच्यादिकवल	"	"	चिकित्सा " "
जिह्वाकंठकपर....	"	"	कंठशालूक " "
प्रतिसारणविधि	"	"	सामान्यचिकित्सा " "
कंठशुंडीतालुरोग	१७४५	२७७	कफजरोहिणी " "
तुंडिकरीतालुरोग	"	"	चिकित्सा " "
अधुवतालुरोग	"	"	त्रिदोषजरोहिणी " "
कच्छपतालुरोग	"	"	अधिजिह्वके लक्षण १७५० २८२

विषयाः	सं० पृ०	पृ०	विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सामान्य यत्न	१७५०	२८२	मुक्ताफपर सामान्य	
बलयके लक्षण	"	"	यत्न १७५६ २८८
बलासके लक्षण	"	"	दावींस्वरस " "
एकवृन्दके लक्षण	"	"	सप्तच्छदादि काप " "
सामान्य यत्न	१७५१	२८३	सामान्य चिकित्सा " "
वृन्द	"	"	पटोलादि काय १७५७ २८९
सामान्य चिकित्सा	"	"	जातिपत्रादि काय " "
शतघ्निके लक्षण	"	"	तिलादि गंडूप " "
गिलायुके लक्षण	१७६२	२८४	यष्टीमध्वादि तैल " "
सामान्य चिकित्सा	"	"	हरिद्रादि तैल १७५८ २९०
गलविद्रधिके लक्षण	"	"	जानीपत्रचूर्ण " "
सामान्य यत्न	"	"	कृष्णादिचूर्ण " "
गलौवके लक्षण	"	"	चूनेसे मुखजलगया हो	
स्वरप्रके लक्षण	"	"	उसपर " "
मांसतानके लक्षण	१५७३	२८५	सदिरादि गुटिका " "
निदारीके लक्षण	"	"	मुखरोगपर पथ्य १७५९ २९१
असाध्य मुखरोगके लक्षण	"	"	मुखरोगपर अपथ्य " "
वातिकसर्वसर	१७५४	२८६	कर्णरोग ।	
पैत्तिकसर्वसर	"	"	कर्णरोगकाकर्मविपाक " "
कफजसर्वसर	"	"	कर्णरोगनिदान १७६० २९२
मतांतर	"	"	कर्णरोगकेनाम " "
मुखरोगसंख्या	"	"	कर्णशूलनिदान " "
असाध्य मुखरोगके मा-				शृंगवेरादितैल " "
णकी अवधि	"	"	लशुनादिस्वरस " "
समस्त मुखरोग चिकित्सा	१७५५	२८७	अर्काफुरादिस्वरस १७६१ २९३
गलरोगकी सामान्य चिकित्सा	"	"	अर्कपत्रस्वरस... " "
दाव्यादि काय	"	"	कर्णशूलचिकित्सा " "
कटुकादि काय	"	"	स्पोनाकतैल " "
मृदीपादि चूर्ण	"	"	हिग्नादि तैल " "
यक्षरादि गुटी	१७५६	२८८	नागरादि तैल १७६२ २९४

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
सामान्ययत्न....	१७६२	२९४	कर्णमतिनाह....	१७६८	३००
कर्णपूरणविधि	"	"	चिकित्सा	"	"
मात्राका प्रमाण	"	"	कृमिकर्ण के लक्षण	"	"
पूरणकाल....	"	"	सामान्ययत्न....	"	"
कर्णनादकेलक्षण	१७६३	२९५	हरितालादि धूप	"	"
अपामार्गतैल	"	"	कृमिकर्णयोगचतुष्टय....	"	"
मधुसूक्त....	"	"	गोमक्षिकाकानमें चली गई होय			
हिम्वादितैल	"	"	तो चिकित्सा	१७६९	३०१	
वारिष्य....	१७६४	२९६	कृमिकर्णका यत्न	"	"
चित्त्वतैल....	"	"	कानमें पतंगादिकीट चले जाने			
दीपिकातैल....	"	"	पर यत्न	"	"
चारयोग....	"	"	कर्णविद्रधि	"	"
निर्गुब्बादितैल	१७६५	२९७	चिकित्सा	१७७०	३०२
कर्णश्वेदकेलक्षण	"	"	कर्णपाक	"	"
कर्णस्त्रावकोउपचार	"	"	पूतिकर्ण के लक्षण	"	"
कर्ण कंडकेलक्षण	"	"	चिकित्सा	"	"
कर्णगूथकेलक्षण	"	"	जातीपत्रादितैल	"	"
सामान्य यत्न	"	"	कर्णपाककी सामान्य चिकित्सा	"	"	"
धनिपूरस....	१७६६	२९८	गन्धकतैल	"	"
समुद्रफेन चूर्ण....	"	"	कर्णविुदादिरोग	१७७१	३०३	
सर्जत्वकूचूर्ण	"	"	सामान्य यत्न	"	"
कर्णप्रक्षालन	"	"	चरकोक रोगचतुष्टय....	"	"
रानवृक्षादिप्रक्षालन	"	"	चिकित्सा	"	"
रसाञ्जनयोग....	"	"	पित्तजकर्ण रोग	"	"
कुष्ठादितैल....	१७६७	२९९	कफज के लक्षण	१७७२	३०४	
कर्णस्त्रावचिकित्सा	"	"	सन्निपातजके लक्षण....	"	"
कर्णकंडूचिकित्सा	"	"	परिपोटक कर्णशोथ	"	"
कर्णमलपर....	"	"	परिपोटक लक्षण	"	"
कर्णरोगकीसामान्यचिकित्सा	१	"	"	यत्न	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
शतावरी तैल....	१७७२	३०४	पाठादितैल....	१७७९	३११
उत्पात	१७७३	३०५	पूपरक्तकेलक्षण	११	११
उत्पातकी चिकित्सा....	११	११	चिकित्सा....	११	११
उन्मन्थकके लक्षण	११	११	षड्बिन्दुघृत....	११	११
जीवनीय तैल....	११	११	कलिंगादिअवपीडन	११	११
दुःखघर्दनकी चिकित्सा	११	११	क्षवथु....	११	११
परिलेहीके लक्षण	१७७४	३०६	क्षवथुचिकित्सा	१७८०	३१२
मतांतर	११	११	शुंठीघृत....	११	११
परिलेहीकीचिकित्सा....	११	११	भागंतूक्षवथु....	११	११
असाध्यकर्णरोगनिदान	११	११	शंशथु	११	११
कर्णरोगपथ्य ...	११	११	पाटांतर....	११	११
कर्णरोगमें अपथ्य	१७७५	३०७	दीप्तनासारोग...	१७८१	३१३
नासारोग ।			चिकित्सा....	११	११
पीनसनिदान....	११	११	मतीनाहनासारोग	११	११
संप्राप्ति	११	११	चिकित्सा....	११	११
नासारोगके नाम	१७७६	३०८	नासास्तावकेलक्षण	११	११
पीनसकी चिकित्सा	११	११	चिकित्सा....	११	११
सर्वपीनसोंपर	११	११	नासापरिशोध....	११	११
पंचमूल्यादियूष	११	११	चिकित्सा....	१७८२	३१४
गुडादियोग	१७७७	३०९	आमपीनसरोग....	११	११
बेल्गोधूमयोग....	११	११	प्रतिशाय (सरकेमानुकांम)	११	११
पूतिनस्यकेलक्षण	११	११	तपानिदान....	१७८३	३१५
व्याघ्रीतैल	११	११	प्रतिदयायकेपूर्वरूप	११	११
शिशुतैल....	११	११	चिकित्सा....	११	११
नासापाक	११	११	वाममूटकयूष	११	११
चिकित्सा	१७७८	३१०	पिप्पल्यादिविरेचन	११	११
सर्भकपायघृत	११	११	वातिकप्रतिदयायकेलक्षण	१७८४	३१६
व्योषादिगुटी	११	११	चिकित्सा....	११	११
कटफलादिनूर्ण	११	११	पित्तनासारोग	११	११
			चिकित्सा....	११	११

विषयः	सं०	पृ०	विषयः	सं०	पृ०
कफनासारोग	१७८४	३१६	नेत्रमंडलमें ७८ व्याधि	१७९२	३२४
चिकित्सा	१७८५	३१७	नेत्ररोगसंख्या	"	"
धूमपानवर्ति	"	"	दृष्टिलक्षण	१७९३	३२५
संनिपातनासारोग	"	"	चारपटलके स्थान	"	"
दुष्टमतिश्याय	"	"	नेत्ररोगपर लक्षण	"	"
नित्रफहरीतकी	"	"	दृष्टिगतरोगकीचिकि०	१७९४	३२६
हिग्वादितैल	१७८६	३१८	शलाका (सलाई) के लक्षण	"	"
पीनसका समान्ययत्न	"	"	अंजनकरनेका प्रकार...	"	"
गृहधूमादि तैल	"	"	अंजनका काळ	"	"
करवीरादितैल	१७८७	३१९	वर्तिममाण	१७९५	३२७
नासाशोष	"	"	रसक्रियाका प्रमाण	"	"
रक्तमतिश्यायकेलक्षण	"	"	शलाका प्रमाण	"	"
चिकित्सा	"	"	तर्पण	"	"
घात्रीलेप	"	"	तर्पणकरनेकी विधि	१७९६	३२८
मतिश्यायकासामान्ययत्न	१७८८	३२०	सेकविधि	"	"
सक्तुधूम	"	"	सेककी मर्यादाका काळ	"	"
धूम तथा चूर्ण	"	"	पिंडिकाविधितयास्वरूप	१७९७	३२९
चूना और नोसहर	"	"	बिडालविधि और स्वरूप	"	"
मुंपनेकी पोटली	"	"	तर्पणकी विधि	"	"
शय्यादि चूर्ण	१७८९	३२१	तर्पणमेंमात्राकीविधि	"	"
असाध्य लक्षण	"	"	तर्पणमेंप्रके लक्षण	१७९८	३३०
मतिश्याय और विचारो-			आश्रयान्तविधि	"	"
कोभी करतादि उनकी			लेखनादिषोमं विदुषा		
फहतेहै	"	"	प्रमाण	"	"
शुमिनासाधिकित्सा	१७९०	३२२	नाइमात्राका स्वरूप	१७९९	३३१
माद्यारोगपरपप्य	"	"	नेत्ररोगोका कारण		
नेत्ररोग ।			अभिषेद	"	"
नेत्ररोगनिदान	१७९१	३२३	नातानिषेद	"	"
नेत्ररोगकी संज्ञाति और			विधि	"	"
नेत्रका प्रमाण	१७९२	३२४	परंदादिमेक	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
हरिद्रायञ्जन	१८००	३३२		नेत्ररोगके सामान्यलक्षण	१८०६	३३८	
संधवादिपारिषेक	"	"	"	निरामके लक्षण	"	"	"
बित्वादिआश्वोतन	"	"	"	शोथयुक्तअक्षिपाकके लक्षण	"	"	"
निंबपत्रादिपूरण	"	"	"	शोथपाकचिकित्सा	"	"	"
पित्ताभिष्यन्द....	"	"	"	विभीतकादि क्षाय	"	"	"
चन्दनादिसेक....	१८०१	३३३		हताधिर्मथके लक्षण	१८०७	३३९	
आश्वोतन	"	"	"	अधिमन्थचिकित्सा	"	"	"
द्राक्षादिआश्वोतन ...	"	"	"	वातपर्ययलक्षण	"	"	"
पिंडिका	"	"	"	वातपर्ययचिकित्सा	"	"	"
बिडालकादिलेप	"	"	"	शुष्काक्षिपाकलक्षण	१८०८	३४०	
चन्दनादिलेप	"	"	"	शुष्काक्षिपाकचिकित्सा	"	"	"
कफाभिष्यन्द....	१८०२	३३४		जौवनोपादि तैल	"	"	"
इडोम्बिकाभिष्यन्दचिकि०	"	"	"	अन्यतो वातलक्षण	"	"	"
स्वेदन....	"	"	"	चिकित्सा	१८०९	३४२	
सामान्ययत्न	"	"	"	द्वान्याञ्जन और आश्वो-			
नेत्रशूलपर	"	"	"	तन	"	"	"
निंबादिधूप ...	१८०३	३३५		गुडूच्यादि काथ	"	"	"
आश्वोतन	"	"	"	श्वेत लोभ्रादिसेक	"	"	"
पिंडिका	"	"	"	अन्यतोवातचिकित्सा	१८१०	३४२	
बिडालक	१८०४	३३६		सिन्धनाञ्जन	"	"	"
रक्तनाभिष्यन्द	"	"	"	निंबुरसलेप	"	"	"
वासादिकाथ	"	"	"	निंबादिपिण्डी	"	"	"
त्रिफलादिसेक	"	"	"	अम्टाप्युषितके लक्षण	"	"	"
आश्वोतन	"	"	"	चिकित्सा	१८१२	३४३	
मकारांतर	"	"	"	तिस्नकादिपान ...	"	"	"
अंजन	१८०५	३३७		शिरोत्पातलक्षण	"	"	"
अभिष्यन्दमे अभिमंथकी				शिराहर्षलक्षण	"	"	"
उत्पत्ति	"	"	"	शिरोरगतशिरोहर्षकीचिकित्सा	"	"	"
सामान्यलक्षण	"	"	"	शिरोपानपर	१८१२	३४४	
फलमर्षादा	"	"	"	फणिनाञ्जन	"	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
सनणशुक्रलक्षण	१८१२	३४४		अनकापात ...	१८१९	३५१	
असाध्यमैत्री साध्यत्व ..	"	"	"	अनकानातमै साध्या-			
करजबीजवर्ती ...	१८१३	३४५		साध्यत्व ...	"	"	"
समुद्रफेनादि वर्ती ...	"	"	"	अनका विक्रिसारुम	"	"	"
चन्द्रोदयवर्ती..	"	"	"	वल्लूरमासपुटपाक ..	१८२०	३५२	
अन्नणशुक्रलक्षण	"	"	"	गोस्यादिपूरण ..	"	"	"
अन्नणशुक्रैअसाध्यलक्षण	"	"	"	शुक्रसाधोतन ...	"	"	"
तथाअसाध्यलक्षण	१८१४	३४६		सैन्धवादिपूरण	"	"	"
मकारातर ..	"	"	"	प्रथम पटलगत दोषैके			
शशकादिघृत .	"	"	"	लक्षण ..	"	"	"
लामञ्जकाद्यमत .	१८१५	३४७		द्वितीयपटलस्थित दोष-			
श्यामामूलकपाय	"	"	"	लक्षण ...	१८२१	३५३	
चन्दनादिवर्ती .	"	"	"	तृतीयपटलगतलक्षण	"	"	"
सन्नणशुक्रमतीकार .	"	"	"	चतुर्थपटलगततिमिर			
सैधवादिघृत .	"	"	"	लक्षण ..	१८२२	३५४	
यष्टयादादि आधोतन	१८१६	३४८		काचदोषकी दूसरी शता	"	"	"
लोहादि गुग्गुल .	"	"	"	कानोपक्रम ...	"	"	"
पटोलादिघृत	"	"	"	भेषशुगादि और शिलादि			
वट्कीरादि अन्न .	"	"	"	अन्न ..	१८२३	३५५	
विप्लव्यन्न ..	१८१७	३४९		दोषरूपदर्शन	"	"	"
अन्नचतुष्टय .	"	"	"	वित्तन्यपारम्ष्टापिसङ्ग			
रुक्मटाद्यन्न ...	"	"	"	दूसरा तिमिर	१८२४	३५६	
जात्यादिआधोतन	"	"	"	सामान्य अन्न ..	"	"	"
धात्रीपट्टादि सन्न	"	"	"	अन्नप्रकार	"	"	"
अक्षिपावात्यय	१८१८	३५०		स्नेहन, रोपणलेखनवा			
शुक्ररोगचिकित्सा	"	"	"	स्वरूप ..	"	"	"
कृणादि लेप ...	"	"	"	वातनन्यतिमिरचिकि०	१८२५	३५७	
विप्लव्यादि गुटिका	"	"	"	दशमूनादि घृत	"	"	"
कृणादि तैल ..	"	"	"	राहनादि घृत ..	"	"	"
अक्षिपावात्यय चिकित्सा	१८१९	३५१		दशमूनादि घृत ...	"	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
त्रिफलादि विरेचन	१८२५	३५७		रसांजनादि	१८३१	३६३	
पित्तजतिमिरचिकित्सा	१८२६	३५८		धूमदर्शिके लक्षण	"	"	"
मकारांतर	"	"		ह्रस्वदृष्टिके लक्षण ...	"	"	"
बलादिधृत	"	"		नकुलाध्यलक्षण	१८३२	३६४	
सारिवादिवर्ती	"	"		नकुलाध्यरोगकीचिकित्सा	"	"	"
कफजतिमिरचिकित्सा	"	"		गंभीरदृष्टिके लक्षण...	"	"	"
मकारांतर	"	"		आगंतुकार्लिंगनाश	"	"	"
यूथ्यादिविरेचन	१८२७	३५९		अनिमित्तकेलक्षण	"	"	"
कफतिमिरपर नस्य और				नेत्रार्मपरमारिचादिलेप	१८३३	३६५	
अंजन	"	"		पुष्पाक्षतादि रसक्रिया	"	"	"
संनिपाततिमिरचिकित्सा	"	"		शुक्तिरोग	"	"	"
सर्वजनेत्ररोगपर	"	"		शुक्तिरोगपरसामान्ययत्न	"	"	"
वर्णभेदसे लिंगनाशको				अर्जुन	१८३४	३६६	
षड्विधत्व ...	"	"		अर्जुनकीसामान्यचिकि०	"	"	"
घातिकरोगके विशेषलक्षण	१८२८	३६०		पिष्टक	"	"	"
दृष्टिमंडलगतरोगलक्षण	"	"		जाल	"	"	"
आगेपेछे कहे हुए दृष्टिरो-				शिराजपिटिका	"	"	"
गोंकी संख्या	"	"		बलास	"	"	"
पित्तविदग्धदृष्टिके लक्षण	१८२९	३६१		पूयालसकी चिकित्सा	१८३५	३६७	
पित्तविदग्धदृष्टिकी चिकित्सा	"	"		पूयालसपर अंजन	"	"	"
कादमर्यादिअंजन	"	"		उपनाह	"	"	"
इलेभ्मविदग्धदृष्टिकी चिकित्सा	"	"		उपनाह और अलजीका			
दिवांधके लक्षण	"	"		यत्न	"	"	"
रात्र्यंध (रतोंध) केलक्षण	"	"		घ्राव अथवा नेत्रनाडी	"	"	"
दिवांधऔररात्रंधचिकित्सा	१८३०	३६२		घ्राव चिकित्सा	१८३६	३६८	
क्षुद्रशंखादिगुटी	"	"		पय्यादिवर्ती	"	"	"
मूयैविदग्धदृष्टिपर	"	"		पर्वणी और अलजीका	"	"	"
रसांजनादिअंजन	"	"		शिरावेध	१८३७	३६९	
कणादिअंजन	१८३१	३६३		कृमिग्रंथी	"	"	"
करंजादिअंजन	"	"		जंतुग्रंथिचिकित्सा	"	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
उत्संगपिटिका ...	१८३७	३६९	विसवर्त्म ...	१८४४	३७६
कुम्भिका ...	१८३८	३७०	विसवर्त्मचिकित्सा ...	१८४५	३७७
पोथकी	"	"	कुंचन	"	"
वत्सशर्करा	"	"	पक्ष्मकोप	"	"
अशोविर्त्म	"	"	पक्ष्मशात	"	"
शुष्काशं	"	"	त्रिफलाघृत	१८४६	३७८
अंजन (गुहेरी) ...	१८३९	३७१	भृंगराजतेल	"	"
वर्त्मपक्ष्मजरोगचिकित्सा	"	"	स्नान धावन ...	"	"
अंजननामिकापर यत्न	"	"	द्वितीयत्रिफलादिघृत....	१८४७	३७९
बहलवर्त्म ...	"	"	विभीतिकादिघृत	"	"
वर्त्मबंध	"	"	त्रिफलाद्यंमहाघृतम्	"	"
क्लिष्टवर्त्म	१८४०	३७२	सप्तामृत लेह....	१८४८	३८०
वर्त्मकर्दम	"	"	शताह्लादि सूर्ण	"	"
दयामवर्त्म	"	"	त्रिफलासूर्ण	१८४९	३८१
मङ्गिन्नवर्त्म	"	"	महावासादिघृत	१८५०	३८२
उसकी चिकित्सा	"	"	त्रिफलादिकाथ	"	"
रसांजनाद्यंजन	१८४१	३७३	चित्रकादिकाथ	"	"
अङ्गिन्नवर्त्म	"	"	पिप्पल्याद्यंजन	१८९१	३८३
धातहतवर्त्म	"	"	गुंजामूलाद्यंजन	"	"
वर्त्मपक्ष्मजचिकित्सा....	"	"	तुलस्यादिअंजन	"	"
सामान्ययत्न....	१८४२	३७४	कतकफलादिअंजन	"	"
पिद्धरोग....	"	"	कतकाद्यंजन	"	"
पिद्धरोगचिकित्सा	"	"	पुनर्नवादि अंजन	१८५२	३८४
पिद्धिका यत्न	१८४३	३७५	गुडूच्यादिअंजन	"	"
तुल्यादिलेप	"	"	नयनशरणनामकअंजन	"	"
पक्ष्मरोगचिकित्सा	"	"	मुक्तादिमहांजन	१८५३	३८५
अर्बुद	"	"	दाव्यादिअंजन	"	"
निमेष....	"	"	शंसादिवटी	१८५४	३८६
वर्त्मपक्ष्मजरोगचिकित्सा	१८४४	३७६	शशिकलावती	"	"
शोणिताशं	"	"	चंद्रोदयावती....	"	"
लगण	"	"			
लगणकायत्न....	"	"			

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
नयनामृत	१८५५	३८७	धान्यादिलेप	१८६२	३९४
कुसुमिकावर्ती	११	११	कफजन्यशिरोरोग	११	११
चंद्रोदयावटी	११	११	उसकीचिकित्सा	११	११
चंद्रमभावर्ती	१८५६	३८८	हरेणुआदिलेप	१८६३	३९५
नयनाभिघातनिदान....	११	११	मधुनाटादिलेप	११	११
सामान्य चिकित्सा ...	११	११	सन्निपातिकशिरोरोग	११	११
शराबादिसेक....	११	११	चिकित्सा ...	११	११
प्रतिनिद्राचिकित्सा	११	११	स्वेदन	११	११
जातीपत्रादिअंजन	१८५७	३८९	घृतपान	११	११
नयनाभिघातचिकित्सा	११	११	स्मरफलादिमधुमन	१८६४	३९६
सूर्यांचिरादिसंतर्पण	११	११	रक्तजशिरोरोग	११	११
निशादिपूरण	११	११	चिकित्सा ...	११	११
नेत्ररोगपरपट्य	१८५८	३९०	घृत तथा जलधारण	११	११
अपत्य ...	११	११	कृष्णादिलेप	११	११
दृष्टिरोगनामसंख्या	११	११	नागरादिनस्य	१८६५	३९७
शिरोरोग ।			कमलादिलेप	११	११
मस्तकरोगनिदान	१८५९	३९१	उदुंबरफलादि	११	११
निदान	११	११	क्षयजशिरोरोग	११	११
वातजशिरोरोग	११	११	उसकीचिकित्सा	१८६६	३९८
वातजशिरोरोगचिकित्सा	११	११	सामान्ययत्न ...	११	११
कुष्ठादिलेप	१८६०	३९२	स्वेद ...	११	११
श्रासकुठारनस्य	११	११	निचादिगुग्गुल	११	११
कुष्ठादिलेप ...	११	११	शिमूषणादिलेप	१८६७	३९९
वातजशिरोरोगपरचरित	११	११	विषत्यादिनस्य	११	११
पित्तजशिरोरोग	१८६१	३९३	कुष्ठादिलेप ...	११	११
पित्तजन्यशिरोरोगकी चिकि०	११	११	कुंकुमादिघृत....	११	११
शर्करादिसेचन	११	११	कृमिनन्यशिरोरोग	११	११
पुमुष्णादिउपशम ...	११	११	वृमिनन्यशिरोरोगकी		
शेदनादिलेप	१८६२	३९४	चिकित्सा	१८६८	४००
यष्ट्यादिघृत	११	११	विहंगादिर्तल	११	११
			सूर्यावर्ती शिरोरोग	११	११

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
सूर्यावर्तरोगकी चिकित्सा	१८६८	४००		करंजादिशीर्षरेचन	१८७५	४०७	
तथा	"	"	"	गुडादिनस्य	"	"	"
दशमूल्यादिनस्य	१८६९	४०१		शर्करादिनस्य	"	"	"
भृंगराजादिनस्य	"	"	"	कुष्ठादिलेप	"	"	"
सूघनेकी पोटली तथा				देवदारव्यादिलेप	१८७६	४०८	
उपनाह	"	"	"	नवसादरचूर्ण योग	"	"	"
सूर्यावर्तरस	"	"	"	त्रिकट्टादिकादा	"	"	"
अनन्तवात	१८७०	४०२		क्षीरादिनस्य	"	"	"
शिरोरोगचिकित्सा	"	"	"	पथ्यादिकाथ	"	"	"
अन्न	"	"	"	मयूराद्यघृत	१८७७	४०९	
अर्धावभेदक	"	"	"	महामायूरघृत	"	"	"
शुंठ्यादिनस्य	१८७१	४०३		पद् विदुतैल	१८७८	४१०	
कुंकुमघृत	"	"	"	शताह्लादितैल	"	"	"
शिरोरोगचिकित्सा	"	"	"	नीलोत्पलादितैल ...	१८७९	४११	
गांधार्यादिनस्य	"	"	"	सारिचादितैल	"	"	"
तुवर्षादिनस्य	१८७२	४०४		शिरोवस्तिपर पथ्य	"	"	"
विडंगादिनस्य	"	"	"	शिरोरोगपर पथ्य	"	"	"
गिरिकर्ष्यादिनस्य	"	"	"	शिरोरोगपर अपथ्य	१८८०	४१२	
मरीच्यादि लेप	"	"	"	स्त्रीरोग ।			
दुग्धादिपान	"	"	"	मदररोग	१८८०	४१२	
सारिचादिलेप	१८७३	४०५		मदरका सामान्यरूप	१८८१	४१३	
दुग्धमर्दनादिनस्य	"	"	"	उपद्रव	"	"	"
शशाका रस	"	"	"	कफजन्य मदरलक्षण....	"	"	"
गुडादिनस्य	"	"	"	मलयूरस	"	"	"
बृहन्नीवकतैल	"	"	"	कफमदरपर	"	"	"
रास्नादिकाथ	१८७४	४०६		पित्तजमदरनिदान	"	"	"
शंखकाशिरोरोग	"	"	"	वासवादिस्वरस	"	"	"
दाव्यादिलेप	"	"	"	मधुकादिकल्क	१८८२	४१४	
सामान्य उपचार	"	"	"	वातजमदरनिदान	"	"	"
बलादिलेप	१८७५	४०७		सौवर्चलादिकल्क	"	"	"
				नागरादिमंथ	"	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
एलादिकल्क	१८८२	४१४	जीरकाबलेह	१८८९	४२१
त्रिदोषजमदरलक्षण	१८८३	४१५	मुद्गादिघृत	"	"
त्रिदोषजमदरचिकित्सा	"	"	शाल्मल्यादिघृत	"	"
काकोदुम्बरीकास्वरस	"	"	भद्रारिरस	"	"
संनिपातजमदरपर	"	"	सोमरोगनिदान	१८९०	४२२
मलयफलचूर्ण	"	"	मूत्रातिसार	"	"
दाव्यादिकाथ	"	"	सोमरोगकायन	१८९१	४२३
भूम्यामलक्यादिपान	१८८४	४१६	तालकादियोग	"	"
धातक्यादिकाथ	"	"	कूप्माण्डस्वरस	"	"
आरुपुरीषयोग	"	"	कदलीयोग	"	"
वृहच्छतावरीघृत	"	"	आमलकयोग	१८९२	४२४
कुमुदादिघृत	१८८५	४१७	नागकेशरयोग	"	"
श्वेतमदरपर स्वरस	"	"	कदलीकंदघृत	"	"
सर्वमदरोंपर	"	"	शुद्ध आर्तवके लक्षण	१८९३	४२५
दाव्यादिरक्तमदरपर	१८८६	४१८	योनिरोग	"	"
काकजंषादि सपेदमदरपर	"	"	व्यापत्तिनिदान	"	"
अशोकफाथ रक्तमदरपर	"	"	वातजयोनिरोग	१८९४	४२६
रसांजनादि वातपित्त-				पित्तजयोनिरोग	"	"
मदरपर	"	"	कफज और त्रिदोषज			
कुरंतमूलादिपान	"	"	योनि	१८९५	४२७
बलादिकल्क	१८८७	४१९	योनिव्यापत्तिकित्सा	१८९६	४२८
फपित्थादिकल्क	"	"	मकारांतरसे यत्न	"	"
आमलकचूर्ण	"	"	मयोगांतर	"	"
सर्वमदरपर	"	"	रास्नादि योग	"	"
व्याघ्रनसीमूलयोग	"	"	विभ्रुतापी चिकित्सा	१८९७	४२९
तंदुलीयमूलयोग	१८८८	४२०	वातजयोनि	"	"
आरुपुरीषादिघूर्ण	"	"	योनिशूलपर	"	"
मदरचिकित्सा सर्व				कफात्मक योनिपर	"	"
मकारकं मदरपर				योनिदुर्गमपर	"	"
पुष्पानुगचूर्ण	"	"				

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
सन्निपातजन्योनिरोगचि०	१८९७	४२९	गर्भवतीके छर्दि और		
पित्तलायोनिकीचिकित्सा	१८९८	४३०	अतिसारपर १९०३	४३५
दाह और पाकका यत्न	"	"	कामला सूजन आदिपर....	१९०४	४३६
कफदुष्ट योनिपर सामान्य	"	"	वांतीपर	"
चिकित्सा	"	खांसी श्वासपर	"
मस्रंसिनी योनिकी चिकित्सा	"	"	वायुपर	"
पूयस्त्राविणी योनिकी	"	"	सूजनपर लेप	"
चिकित्सा १८९९	४३१	गर्भविलासरस १९०५	४३७
खुजलीका यत्न	"	"	मंदाग्निपर	"
योनिसेकोचन	"	"	गर्भपातोपद्रवचिकित्सा गर्भ-		
वातला आदिकी चिकित्सा	"	"	शूलपर	"
योनिशूलपर १९००	४३२	पीडापर	"
योनिदाहपर	"	मदरपर	"
नष्टार्तवचिकित्सा	"	आनाहवायुपर १९०६	४३८
मकारांतर	..	"	मूत्ररोधपर	"
तिलगुह्ययोग	"	दूसरा यत्न	"
दूसरा प्रयोग	"	अतिसारपर	"
वर्ती १९०१	४३३	मथम महिनेकी चिकित्सा	"	"
योनिकंद	"	उपायांतर १९०७	४३९
वातयोनिकंद	"	दूसरे महिनेकी चिकित्सा	"
योनिकन्दचिकित्सा	"	तीसरे महिनेकी चिकित्सा	"
दूसरा यत्न	"	चतुर्थ महिनेका यत्न....	"	"
कफयोनिकंद १९०२	४३४	पंचम महिनेकी		
पित्तयोनिकंद	"	चिकित्सा १९०८	४४०
सन्निपातात्मकयोनिकंद	"	"	छठे महिनेकी		
योनिकंदपर लेप	"	चिकित्सा	"
ज्वरपर दूसरा काथ	"	सप्तम महिनेकी		
तीसरा काथ १९०३	४३५	चिकित्सा	"
पित्तज्वरपर	"	अष्टम महिनेकी		
विषमज्वरपर	"	चिकित्सा	"
ज्वरातिसार आदिपर	"	चिकित्सा	"
ग्रहणीपर	"			

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
नवम महिनेकी				विकृताकृति गर्भ-			
चिकित्सा	१९०८	४४०		लक्षण	१९१४	४४६	
मूढगर्भनिदान	१९०९	४४१		गर्भसंकोचका			
स्त्राव और पातके				यत्न	१९१५	४४७	
लक्षण	११	११		शुष्कगर्भका यत्न	११	११	
गर्भपातके उपद्रव	११	११		मसवमास	११	११	
अष्टम महिनेपर	१९१०	४४२		मसवविडंब होनेमें			
नवम महिना	११	११		यत्न	१९१६	४४८	
दशम महिनेपर	११	११		सुखमसवकारक			
ग्यारवे महिनेकी				योग	११	११	
चिकित्सा	११	११		मातुलुगादि प्रयोग	११	११	
बारवे महिनेकी				इक्षुमूलबंधन	११	११	
चिकित्सा	१९११	४४३		सुखमसव	११	११	
रक्तस्त्रावपर	११	११		प्रयोगांतर	१९१७	४४९	
उत्पलादिगण	११	११		मृतगर्भचिकित्सा	११	११	
गर्भपातपर	११	११		गर्भोद्धरण	११	११	
उपायांतर	११	११		मृतगर्भच्छेदनमकार	११	११	
उपायांतर	१९१२	४४४		छेदनानंतरचिकित्सा	१९१८	४५०	
अन्य उपाय	११	११		मृतगर्भपातन.... ..	११	११	
यत्नांतर	११	११		गर्भपातकारकऔषध....	११	११	
हीबेरादिफाथ	११	११		गर्भस्त्राव	११	११	
मूढगर्भका निदान	११	११		गर्भपातन	१९१९	४५१	
मूढगर्भके भेद	११	११		गर्भपातन	११	११	
असाध्य मूढगर्भवतीके				गर्भपातन	११	११	
लक्षण	१९१३	४४५		नरायुपातनमकार	११	११	
मृतगर्भके लक्षण	१९१४	४४६		उसकी चिकित्सा	११	११	
गर्भमरणहेतु	११	११		अपरापातन	१९२०	४५२	
गर्भिणीके दूसरे असाध्य				अपरानिष्कासन	११	११	
लक्षण	११	११		योनिक्षतपर	११	११	
परिषगर्भलक्षण	११	११		योनिदृढीकरण	११	११	

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
मकल्लकनिदान	...	१९२०	४५२	सौभाग्यशुंठी	१९२७	४५९
मकल्लचिकित्सा	१९२१	४५३	सौभाग्य शुंठीका			
पिप्पल्यादि काथ	"	"	द्वितीयपाठ	१९२८	४६०
योगांतर	"	"	सामान्य यत्न	"	"
हिंगुघृतयोग	"	"	हीनप्रसूति	१९२९	४६१
प्रसूता स्त्रीको हितावह		"	"	उपचार देनेकी अवधि	"	"	"
प्रसूताकी व्याधिको कष्ट		"	"	स्तनरोगनिदान	"	"
साध्यत्व	...	१९२२	४५४	स्तनरोगचिकित्सा	"	"
कन्यापुत्र और नपुंसक		"	"	क्षीरवर्धन	...	"	"
होनेका कारण	"	"	स्तन्यरोग	...	१९३०	४६२
गर्भकारक औषध	"	"	वातदूषितस्तन्यकरोग	"	"	"
लक्ष्मणयोग	"	"	वातादिकसे दूषित स्तन्य-			
तैलादि योग	...	१९२३	४५५	के लक्षण	...	"	"
मातुलुंगयोग	"	"	पित्तदूषितस्तन्यकरोग	"	"	"
अश्वगंधायोग	"	"	कफदूषितस्तन्यकरोग	१९३१	४६३	
लक्ष्मणयोग	"	"	स्तन्यवातरोग चिकित्सा	"	"	"
कुरंटमूलादियोग	"	"	शुद्ध दुग्धके लक्षण	"	"
पार्श्वपिप्पलयोग	"	"	कफदुष्टस्तन्यपर	"	"
सफेदकंटकारीयोग	१९२४	४५६		पित्तदुष्टस्तन्यपर	"	"
गर्भनाशकयोग	"	"	द्वंद्वजदुष्टस्तन्य	१९३२	४६४
गर्भनिवारण	...	"	"	त्रिदोषजन्यदुष्टस्तन्यलक्षण	"	"	"
बंध्यायोग	..	"	"	दुग्धशोधककाथ	"	"
सूतिकारोगनिदान	"	"	स्तन्यजननविधि	"	"
प्रसूताकी चिकित्सा	१९२५	४५७	शतावरीपान	"	"
दशमूल	"	"	अन्य योग	"	"
देवदारवादि	१९२६	४५८	स्तनशोधका यत्न	१९३३	४६५
सहचरादिकाथ	"	"	स्तनशोधचिकित्सा	"	"
वज्रकांजिक	...	"	"	विशालादिलप	"	"
सामान्य यत्न	१९२७	४५९				
पंचजीरककाथ	...	"	"				

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
श्रीपण्यादिस्तनवर्द्धन	१९३३	४६५		क्षुद्ररोग	१९४०	४७२	
वनकार्पासिकादिपान	"	"		ग्रहजुष्टवालकके लक्षण	"	"	
नागबलादिमर्दन	१९३४	४६६		सामान्यग्रहजुष्टवालकके			
स्तनदृढीकरणपञ्चबीजादि	"	"		लक्षण	"	"	
गोधूमादियुष	"	"		स्कन्दग्रहजुष्टवालकके			
श्रीरोगेष्व्याप्य	"	"		लक्षण	१९४१	४७३	
श्रीरोगमें अप्य ...	१९३५	४६७		सोमवल्लीवादिकी माला	"	"	
वालरोग ।				देवदारुआदिकापृत	"	"	
वालरोगनिदान ...	"	"		स्कंदमहको धूनी	१९४२	४७४	
त्रिविधफालक ...	१९३६	४६८		मृगादनीमाला	"	"	
दंतोद्भेदको मुख्यस्त्व....	"	"		धूनी	"	"	
वालककी धन्तर्गतपीडा जा-				स्कंदापस्मारलक्षण	"	"	
ननेका उपाय	"	"		स्कंदापस्मार ...	"	"	
वालकको लंघनमें विधि				सुरसादिगण	१९४३	४७५	
निषेध....	"	"		काकोल्यादिगण	"	"	
सामान्य चिकित्सा	१९३७	४६९		वचादिधूप	"	"	
भ्रमाणांतर	"	"		अनंतादिधारण	"	"	
वालकोंकी मात्राका प्रमाण	"	"		शकुनिग्रहलक्षण	१९४४	४७६	
तथा भ्रमाणांतर	"	"		चिकित्सा	"	"	
वालककी मात्रास्थिरत्व				शतावरी आदिका धारण	"	"	
और हासत्व	१९३८	४७०		शकुनिग्रहमें स्नान	"	"	
कषायादिमात्राका प्रमाण	"	"		लेप	"	"	
क्षीरके सापदेनेके नियम	"	"		रेवतीग्रहलक्षण	१९४५	४७७	
कुकूणक	"	"		रेवतीग्रहस्नान	"	"	
चिकित्सा	१९३९	४७१		कुशादितैल	"	"	
पारिगर्भिक	"	"		धवादिघृत	"	"	
पारिगर्भिकरोगका यत्न	"	"		कुलित्यादिधूप ...	"	"	
तालुकंटक	"	"		पूतनाग्रहलक्षण	"	"	
हरीतक्यादिकल्क	१९४०	४७२		पूतनाग्रहजुष्टमें स्नान	१९४६	४७८	
वालककीविसर्प और पशुरोग	"	"		पयस्यादितैल	"	"	

विषयाः	सं०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०
कुष्ठादिधूप	१९४६	४७८	सारिवादिचिकित्सा ...	१९६२	४८४
अंधपूतनाग्रहलक्षण	"	"	मुस्तादि हिम ...	"	"
गंधपूतनाग्रह	"	"	विषमज्वरचिकित्सा....	"	"
पंचतिकगण	१९४७	४७९	ज्याहिकपरगुडूच्यादि		
पुरीषादिधूप	"	"	काथ ...	१९६३	४८५
सर्वगंध	"	"	पलंकषादिधूप ...	"	"
शीतपूतनाग्रहलक्षण	"	"	मूर्वादि उद्वर्तन ...	"	"
रोहिण्यादिघृत	"	"	भद्रमुस्तादि ...	"	"
गृधादिधूपन	"	"	सैंधवादि जिह्वालेप ...	"	"
मुखमंडिकाग्रहलक्षण....	१९४८	४८०	एकाहिकज्वरपरअपामार्गमूलिकाबंध		"
मुखमंडिकाग्रहस्नान....	"	"	द्वंद्वजवातपित्तज्वर	१९५४	४८६
भृंगादि तैल	"	"	उशीरादि वातपित्त चिकित्सा	"	"
वचादिधूप	"	"	त्रिफलादि श्लेष्म-		
नैगमेयग्रहलक्षण	"	"	पित्तचिकित्सा ...	"	"
नैगमेयग्रहचिकित्सा....	"	"	अमृतादि चूर्ण पित्त-		
मिथुंवादि तैल	१९४९	४८१	श्लेष्मज्वरपर	"	"
वचादि उत्सादन	"	"	धान्याकादिहिम पित्त-		
मर्कटादिधूप....	"	"	ज्वरपर	"	"
उत्फुल्लिकालक्षण	"	"	आरग्वधादि वातपित्त		
चिकित्सा	"	"	ज्वरपर ...	१९५५	४८७
शेकदंभबिल्वादिकादा	१९५०	४८२	विषमज्वरचिकित्सा	"	"
पिप्पल्यादिपान	"	"	कटुक्यादि एकाहिक		
सर्पत्वचादिधूप	"	"	ज्वरपर	"	"
बालककेज्वरकीचिकित्सा	"	"	द्राक्षादि एकाहिक ज्वरपर	"	"
सहादिलेप	१९५१	४८३	किराततिकादि काथ		
बालज्वरांकुश	"	"	वातश्लेष्मज्वरपर	"	"
पद्मकादिचिकित्सा	"	"	वातकफज्वरमें पच्य	१९५६	४८८
यष्ट्यादिलेह	"	"	दशमूलिका काथ		
स्थिरादिचिकित्सा	१९५२	४८४	सन्निपातपर	"	"
पंचमूलादिचिकित्सा....	"	"	मुस्तादि चिकित्सा	"	"

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
वासादि चिकित्सा	१९५६	४८८		पिप्पल्यादि चूर्ण ...	१९६१	४९३	
अभयादि क्वाथ	११	११		त्वगादि तैल ...	१९६२	४९४	
कटुफलादि क्वाथ	११	११		भस्मकफी सामान्य			
मधुकादि क्वाथ	१९६७	४८९		चिकित्सा ...	११	११	
वित्वादि काठा	११	११		औदुंबर कल्क ...	११	११	
काकोली क्वाथ	११	११		मयूरतंदुलादिक्षीर	११	११	
वमन अतिसारपर ...	११	११		कासरोगमें धान्यादिहिम	११	११	
अतिसारपर....	११	११		दुरालभादिलेह	११	११	
फलमुस्तादिचूर्ण	१९५८	४९०		द्विंवादिचूर्ण....	१९६३	४९५	
श्यामादि चूर्ण	११	११		कृष्णादिचूर्ण	११	११	
धातव्यादि लेह	११	११		हिक्राभासचिकित्सा	११	११	
छोधादियोग	११	११		गुडोदकयोग....	११	११	
विडंगादिलेह	११	११		व्याघ्यादिलेह	११	११	
ग्रहण्यां यवन्यादि				शुंग्यादिलेह ...	१९६४	४९६	
चूर्ण ..	१९५९	४९१		तुगालेह	११	११	
पिप्पल्यादि चूर्ण	११	११		विडंगादि चूर्ण	११	११	
कृष्णादि चूर्ण	११	११		पौष्करादि चूर्ण ...	११	११	
नागरादि चूर्ण	११	११		मुस्तादि चूर्ण	११	११	
शुडादि चूर्ण	११	११		व्याघ्यादिलेह	११	११	
मुस्तकादि चूर्ण	११	११		हिक्राचिकित्सा	१९६५	४९७	
रकातिसारपर	१९६०	४९२		पिप्पल्यादिक्वाथ ...	११	११	
नागरादि चूर्ण ...	११	११		कटुकीचूर्ण	११	११	
मवाहिकाकी चिकित्सा	११	११		यवान्यादिलेह	११	११	
ग्रहणी अतिसारपर...	११	११		हरातक्यादिचूर्ण	११	११	
हीवेरादि चूर्ण ...	११	११		अश्वत्थक्षार....	११	११	
अर्शचिकित्सा ...	११	११		एलादिचूर्ण	१९६६	४९८	
अजाज्यादि गुटी ...	१९६१	४९३		आम्रादिचूर्ण....	११	११	
नवनीतादियोग ...	११	११		घनादिचूर्ण ...	११	११	
अजीर्णविषूचिकाकी-				क्षीरछर्दिचिकित्सा	११	११	
चिकित्सा ...	११	११		पिप्पल्यादिचूर्ण	११	११	

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
हिंवादिचूर्ण	१९६७	४९९	रक्तपित्तपर	१९७३	५०५	
आनायवायु	"	"	नलसीरफूटे उसकायल	"	"	
रोदनपर	"	"	वातगुल्म...	"	"	
मलबद्ध होनेपर	"	"	वातरोगोंपर...	"	"	
मृत्तिकारेचन	"	"	अपस्मारपर...	१९७४	५०६	
काश्यपर	१९६८	५००	उदावर्तपर...	"	"	
लाक्षादितैल	"	"	हृद्भोगपर..	"	"	
अश्वगन्धाघृत	"	"	मूर्च्छाचिकित्सा	"	"	
लेप	१९६९	५०१	दूसरायल	"	"	
नाभिशोथ	"	"	तीसरायल...	१९७५	५०७	
नाभिपाक	"	"	तिमिररोगपर	"	"	
गुदपाक	"	"	दाह्रोगपर...	"	"	
पारिगर्भक	"	"	दूसरायल...	"	"	
क्षतविस्फोटविसर्प	१९७०	५०२	कृमिरोगपर	"	"	
सिध्मपामाविचर्चिका	"	"	"	पाण्डुरोग और परिणाम			
तालुपाक	"	"	शूलपर	१९७६	५०८	
दंतोद्भेदनरोग	..	"	"	स्वरभेदपर	"	"	
अन्ययज्ञ	"	"	दूसरा उपाय	"	"	
मुखरोग	"	"	पाण्डुरोगपर घृत	"	"	
मुखस्त्राव	१९७१	५०३	क्षयपर	"	"	
मुखपाक	"	"	विस्फोटक	१९७७	५०९	
मुखपाकपरलेप	"	"	नेत्र रोगोपर	"	"	
तालुकंठकपर	"	"	चन्दनादि लेप	१९७८	५१०	
मूत्रकृच्छ्रपर...	"	"	अञ्जन	"	"	
यवक्षारकाथ....	१९७२	५०४	कर्णरोगपर	"	"	
वातरोगपर	"	"	कानकी पीडापर	"	"	
मूत्रकृच्छ्रपर...	"	"	मस्तकरोगपर	"	"	
मूत्रग्रहपर	"	"	मधमदिवस निदान	१९७९	५११	
अपचीरोगपर	"	"	द्वितीय दिवस निदान	"	"	
उन्मादपर	"	"	तृतीय दिवस निदान	"	"	

विषयाः	सं० पृ०	पृ०	विषयाः	सं० पृ०	पृ०
गजदन्तादि लेप ...	"	"	आठवें महीनेका निदान	"	"
निम्बादि धूप... ..	१९८०	५१२	नवमें महीनेका निदान	"	"
चतुर्थ दिवस निदान	"	"	दशवें मासका निदान	"	"
चौथे दिवसकी			वातरोगमें पथ्यापथ्य	"	"
चिकित्सा ...	"	"	विषरोग ।		
पञ्चम दिवस निदान	"	"	विषनिदान	१९८५	५१७
यत्न	"	"	जङ्गम विषके लक्षण...	"	"
छठे दिवसका लक्षण	"	"	विषपीतके लक्षण ...	"	"
यत्न	१९८१	५१३	स्थावर विषका सामान्य		
सातवें दिवसका			लक्षण	"	"
निदान	"	"	कन्दविषयकार्य सामान्य		
यत्न	"	"	लक्षण	१९८६	५१८
अष्टम दिवसका			सामान्य उपचार ...	"	"
निदान	"	"	विषके दशलक्षण ...	"	"
यत्न	"	"	विषोंके दशगुणोंके		
नवम दिवस निदान	"	"	कार्य	"	"
यत्न	१९८२	५१४	विषदेनेवाले मनुष्यके		
दशम दिवस निदान	"	"	लक्षण	१९८७	५१९
दशम दिवसकी			मूलादि विषोंके लक्षण	"	"
चिकित्सा	"	"	विषलिप्त शस्त्रहतके		
यत्नान्तर	"	"	लक्षण	१९८८	५२०
प्रथममास निदान ...	"	"	स्थावर विषको कहकर		
द्वितीयमास निदान	१९८३	५१५	जङ्गममें सर्प विषये		
तृतीयमास निदान ...	"	"	अति तीक्ष्ण हैं		
चौथे मासका निदान	"	"	इसीसे प्रथम सर्पोंकी		
पाँचवें महीनेका			जाति कहतेहैं ...	"	"
निदान	"	"	अब सर्पोंके भेद कहतेहैं	१९८९	५२१
छठवें मासका निदान	"	"	भोगि प्रभृति सर्पके काट-		
सातवें महीनेका			नेपर वातादिकोंके		
निदान	१९८४	५१६	लक्षण	१९९०	५२२

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
बंध्या कर्कोटकी योग	१९९०	५२२		दूर्वादिपान	१९९८	५३०	
विशिष्टदेशमेंतथाविशिष्टनक्षत्रमें				पिप्पल्यादि	"	"	"
काटनेकेअसाध्यलक्षण	१९९१	५०३		छूताविषकीउत्पत्तिकेलक्षण	"	"	"
काटनेवालेकोकष्टसाध्य				उनकेकाटनेकेसामान्यलक्षण	"	"	"
नक्षत्र	"	"	"	दूषीविषलूताकेकाटनेके			
उष्णताकेयोगसेविषकावेग				लक्षण	१९९९	५३१	
दोताहैयहकहते हैं	"	"	"	माणहरलूताके लक्षण	"	"	"
सर्पकेकाटेकेअसाध्यलक्षण	"	"	"	छूताविषचिकित्सारन्यादिलेप	"	"	"
दूसरेअसाध्यलक्षण ...	१९९२	५२४		गिरिकर्ण्यादिलेप ...	"	"	"
तथाअसाध्यलक्षण ...	"	"	"	कीटनलीकाचिकित्सा	२०००	५३२	
सर्पविषचिकित्सा ...	"	"	"	घघादिकादा	"	"	"
शिरीषार्द्यजन ...	१९९३	५२५		वरटीविषचिकित्सामरीचादिलेप	"	"	"
सामान्यउपचार ...	"	"	"	दूषीविषासुलक्षण ...	"	"	"
नक्षत्रमालार्द्यजन ...	"	"	"	माणहरमूषकाविषलक्षण	"	"	"
कर्कोटक्यादिनस्य ...	१९२४	५२६		आसुविषचिकित्सा	२००१	५३३	
लांगल्यादियोग ...	"	"	"	उरगकंचुकीधूम ...	"	"	"
सर्पविषपरधूप ...	"	"	"	विषकमूलचूर्ण ...	"	"	"
कालवज्राशनिरस ...	"	"	"	चिंचादिचूर्ण ...	"	"	"
दूषीविषकेलक्षण ...	१९९५	५२७		रसादिलेप	"	"	"
दूषीविषकेलक्षण ...	"	"	"	शिलादिपान	"	"	"
स्थानभेदकरकेउसकेविशिष्ट				नखदंतविष	२००२	५३४	
लक्षण	"	"	"	कृकलासदष्टलक्षण ...	"	"	"
दूषीविषकीनिरुक्तिकेलक्षण	१९९६	५२८		वृश्चिक (विच्छू) कीउत्पत्ति	"	"	"
इनदोनोंविषोंकालक्षण	"	"	"	वृश्चिकविषलक्षण ...	"	"	"
दूषीविषकेअसाध्यादि				वृश्चिकविषकेअसाध्यलक्षण	२००३	५३५	
लक्षण	१९९७	५२९		विच्छूविषचिकित्साकार्पा-			
शंकरादिलेह	"	"	"	सादिलेप	"	"	"
पुषनीवमज्जायोग ...	"	"	"	मनःशिलादिलेप ...	"	"	"
कृत्रिमविषगृहधूमतैल	"	"	"	बिनोराम्लयोग ...	"	"	"
पारावतादिहिम ...	"	"	"				
टंकणयोग	१९९८	५३०					

विषयाः	सं०	पृ०	पृ०	विषयाः	सं०	पृ०	पृ०
अन्ययोग	२००४	५३६		सामान्याचिकित्सा ...	२००८	५४०	
हंसपादीमूल	"	"		गरनाशकरस ...	२००९	५४१	
जेपाळकत्फ ...	"	"		विपहरशिरीषादिलेप	"	"	
नवसादरादिलेप	"	"		स्थावरविषकायत्न	"	"	
कणभद्रकैलक्षण ...	"	"		पथ्य	"	"	
उच्चिंटिगर (हांगिर) विषके				अपथ्य	२०१०	५४२	
लक्षण	२००५	५३७		अलकं (बावला युत्ता)			
मंडूक (मेढक) विषके				विषनिदानवाग्भट्टसे	"	"	
लक्षण	"	"		उसके फाटनेकेलक्षण	"	"	
मंडूकविषचिकित्सा	"	"		सविषनिर्विषदंशकेलक्षण	"	"	
विषैलमच्छली	"	"		असाध्यलक्षण	२०११	५४३	
मत्स्यविषचिकित्सा ...	"	"		जलसंत्रासनामाकेलक्षण	"	"	
विषैलनोकके लक्षण	२००६	५३८		शानविषकीचिकित्सा	"	"	
छिपकलीकेविषकेलक्षण	"	"		दूसरायत्न	"	"	
कांतर (फानसजूरका) विष	"	"		तृतीययत्न	"	"	
कांतरफानसजूरकेविषकायत्न	"	"		चतुर्थयत्न	२०१२	५४४	
मच्छरकेविषकेलक्षण....	"	"		पंचमयत्न	"	"	
असाध्यमशकक्षतकेलक्षण	"	"		छठयत्न	"	"	
सविषमक्षिका (मकखी) देशके				सप्तमयत्न	"	"	
लक्षण	"	"		अष्टमयत्न	"	"	
चतुष्पादादिकोंकेविषकेसाधा-				स्नायुकेनिदान	"	"	
रणलक्षण ...	२००७	५३९		स्नायुकीचिकित्सा	२०१३	५४५	
विषउतरगयाहोउसकेलक्षण	"	"		बातजस्नायुकपर ...	"	"	
शृङ्गीविषकायत्न	"	"		पित्तजस्नायुकपर ...	"	"	
मकखीकीपिटका ...	"	"		कफजस्नायुकपर ...	"	"	
चैटी, मखीऔरमच्छर	"	"		दंद्भनभौरमनिपातज....	"	"	
विषनाशकयोग ...	२००८	५४०		कफस्नायुकपर	"	"	
शीतलपारिषेक	"	"		स्नायुकपरलेप ...	२०१४	५४६	
ममाणंतर	"	"		उपायान्तर	"	"	
यत्नान्तर	"	"		बच्चूलवीजयोग ...	"	"	
				सुधायोग	"	"	

विषयाः	सं० पृ०	पृ०	विषयाः	सं० पृ०	पृ०
पातालगरुडीयोग	११	११	सुषवीयोग ...	२०१५	५४७
अश्वगन्धावाविष्णु-	११	११	अतिविषादिचूर्ण	२०१६	५४८
फांताकालेप	११	११	मयोगांतर	११	११
काचनीलेप	२०१५	५४७	निवाडियोग	११	११
अन्ययोग	११	११	वृताकयोग	११	११
अन्ययोगांतर	११	११	गोधूमऔरसनके		
गव्यऔरनिर्गुंडीस्वरस	११	११	बीज	११	११
योगराज	११	११			

इति बृहन्निघण्टुरत्नाकरपठभागस्थविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

इति
बृहन्निघण्टुरत्नाकरषष्ठभागस्थ-
विषयानुक्रमणिका
समाप्ता ।

अथ शोथरोग ।

शोथरोगका कर्मविपाक ।

अद्रौमार्गेनदीतीरेछायायांपुलिनेनरः । मूत्रंपुरीपंवलमीकेयः
प्रमुंचेज्जलेपिवा । श्वयथुव्याधिमाप्नोतीत्येवमाहसदाशिवः ।
इन्द्रंवइति मंत्रंहिजपेदष्टोत्तरायुतम् । आपोहिष्टेतिहोमः स्या
चरुणासर्पिंपायुतम् ॥

अर्थ—पर्वतकी उत्तम जगहको मार्ग नदीका तीर छाया नदीका पुलिन
बैवई और जल इनमें जो मूत्र करता है अथवा मलको त्यागता है वो प्राणी
सूजनका रोगवाला होता है, इस प्रकार शिवने कहाहै, वह प्राणी उस
पापके नाशार्थ “इन्द्रंव०” इस मंत्रका १०८ जप करे तथा “आपोहिष्ठा” इस
मंत्रसे चरु और घृतका हवन करे ॥

शोफहर प्रतिमादान ।

शोफः पंचकरस्तीक्ष्णो दशास्यः शरचापधृक् ।

दधानं छुरिकां घंटां कुलिशं च कृशस्तथा ॥

अर्थ—शोथ रोगके पाँच हाथ दशमुख, और क्रूरहै, तथा बाण, धनुष, छुरी,
घंटा, और वज्र इनको धारण करनेवाला कृश है इस प्रकार प्रतिमा बनायेंके
दान करे ॥

संप्राप्ति ।

रक्तपित्तकफान्वायुर्दुष्टोदुष्टान्वाहिः शिराः । नीत्वारूध्वगतिस्ते
र्हिकुर्यात्त्वड्मांससंश्रयम् । सोत्सेधंसंहतंशोथंतमाहुर्निचयादतः ॥

अर्थ—कुपित भई वायु स्वकारणसे दुष्ट भये रक्तपित्त कफको बाह्य शिरा
(बाहरकी नाडियोंमें प्राप्त हो) तब उनकी गति बंद करे इससे वह पवन त्वचा
और मांस इनके आश्रयसे सूजन उत्पन्न करे, वह सूजन ऊंची और फटिन
होय, इस्को रक्तसंहित त्रिदोषोंका संबंध है, अर्थात् सत्रिपातात्मक ऐसा ऐसा
कहते है । “त्वड्मांस संश्रयम्” इस पदसे व्रणशोथ जो शोथका भेद है सो दि
खाया क्योंकि व्रणका संभव आठ व्रण घंस्तुवाम् होनेसे सो कहाभी है त्वड्मां
स-शिरास्नायु अस्थि सन्धिकोष्ठे मर्माणि इति अष्टौ व्रणवस्तूनि भवन्ति इति ॥

सर्वहेतुविशेषैस्तुल्यभेदान्नवात्मकम् ।
दोषैःपृथक्द्वयैःसर्वैरभिघाताद्विषादापि ॥

अर्थ—वो सृजन कारण भेदसे कार्यभेद होकर ९ नौ प्रकारकी होय है ।
यथा अलग अलग दोषोंसे ३द्वंद्वज ३ सन्निपात १ अभिघातज १ और विषसे
१ पेसे सब मिलकर नौ प्रकारका शोथ रोग भया ॥

पूर्वरूप ।

तत्पूर्वरूपंक्षवधुः शिरायामांगगौरवम् ॥

अर्थ—संताप, नसोंकी तननेके समान पीडा, देह भारी ये लक्षण सृजन
होनेवाले पुरुषके होते हैं ॥

कारण ।

शुध्यामयाभक्तकृशावलानांक्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा ।

दध्याममृच्छाकविरोधिदुष्टगरोपमृष्टान्ननिषेवणंच ॥

अर्शास्यचेष्टानचदेहशुद्धिर्ममोपघाताविपमाप्रसूतिः ।

मिथ्योपचारः प्रतिकर्मणांचनिजस्यहेतुःश्वयथोः प्रदिष्टः ॥

अर्थ—वमन आदि ज्वरादिक अभोजन (विगुण भोजन) इनसे जो कृश
और बलहीन मनुष्योंके क्षारादिकका सेवन सृजनेका कारण होय है तहाँ
नोन, खटाई, तीखी, उष्ण, भारी वस्तुन्में देहा, अपक, मट्टी, निषिद्धसाग,
विरुद्ध (क्षीरमत्स्यादिक) संयोगज विषसे इषित भया अन्नके सेवन
करनेसे बवासीर, दंड कसरतके न करनेसे, शोधनके योग्य दोषोंके न शोधनेसे
हृदयादि मर्मोंके दोष जन्म उपघातसे, यच्चा गर्भपात होना विषम प्रसूति,
वमनादि पंचकर्मोंका मिथ्यायोग ये सर्व दोषज सृजनका कारण कहे हैं ॥

सामान्य लक्षण ।

सगौरवंस्यादनवस्थितत्वंसोत्सेधमूष्मायशिरातनुत्वम् ।

सलोमहर्षश्चविषण्णताचसामान्यलिगंश्वयथोःप्रदिष्टम् ॥

अर्थ—अंगभारी हो, चित्तमें स्वस्थता न होना ठंठी सृजन और दाह नस
पतली हो जाय, रंगमांच और देहका रंग बदल जाय ये सृजनके सामान्य
लक्षण हैं ॥

शोथ होनेके स्थान ।

दोषाः श्वयधुमूर्ध्वहिकुर्वत्यामाशयस्थिताः ।

पक्काशयस्थामध्येतुवर्चस्थानगतास्त्वधः ।

कृत्स्नदेहमनुप्राप्ताः कुर्युः सर्वरसंतथा ॥

अर्थ—आमाशयस्थित दोष ऊपर (उरः स्थानादिकोमं) सूजनको करे, पक्काशयमें स्थित दोष मध्य कहिये (उर और पक्काशय) इन दोनोंके बीचमें सूजन करे, मलस्थानगत दोष नीचेके स्थान (पैर आदि) में सूजन करे और सर्व देहमें दोष स्थित होनेसे सब देहमें सूजनको करते है ॥

साध्यासाध्य ।

योमध्यदेशेश्वयथुः सकष्टः सर्वगश्चयः ।

अधोगेरिष्टभूः स्याद्यश्चोर्ध्वचपरिसर्पति ॥

अर्थ—जो सूजन मध्य देशमें तथा सब देशमें होय सो कष्टसाध्य है और सूजन नीचेके अगमें प्रगट हो ऊपरको चढे वो असाध्य है ॥

असाध्य लक्षण ।

श्वासः पिपासाच्छर्दिश्चदौर्गल्यंज्वरएवच ।

यस्यचात्रेरुचिर्नास्तिशोथिनंपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ—श्वास, प्यास, वमन, दुर्बलता, ज्वर ये लक्षण होय और जिसकी अन्नमें अरुचि होय, ऐसे मूजनवाले रोगीको वैद्य त्यागदे ॥

व तशोऽनिदान ।

चलस्तनुस्त्वक्परुषोरुणोसितःससुप्तिर्हर्षांतियुतोनिमित्ततः ।

प्रशाम्यतिप्रोन्नमतिप्रपीडितोदिवावलीस्याच्छ्वयथुः समीरणात् ॥

अर्थ—बादीसे सूजन चंचल, त्वचा पतली होजाय, कठोरहो, लाल, काली तथा त्वचा शून्य पड जाय, भिन्न भिन्न वेदना हो अथवा रोमान्च और पीडा हो कदाचित् निमित्तके बिना शांति होजाय उस सूजनके दावनेसे तत्क्षण ऊपरको उठ आवे जिनमें जोर बहुत करे ॥

वातशोथपर सामान्य यत्न ।

शोथेवातोत्थितेपूर्वमासार्धत्रिवृत्तांपिबेत् । तैलमेरंडजंवापिम

बलंधेपितन्मतम् ॥ शाल्यन्नंपयसायुक्तरसेवापिप्रयोजयेत् ।

स्वेदाभ्यंगांश्वातघ्नान्सेकलेपांश्चकल्पितान् ॥

अर्थ—वातशोथपर प्रथम पंद्रहदिन निसोपकी आंटापरके पीवे अथवा काटा फरके पीवे अथवा अढीका तेल पीवे यह मलावरोध पर दत्तमहै दृष भात

अथवा मांस रसके साथ अन्न सेवन करे पसीने अभ्यंग इत्यादिक वातनाशन उपचार तथा थोटीसे सेकना लेप करना इत्यादिक करे ॥

शुंठ्यादि काय व बीजपूरादिलेप ।

देयाउदयमार्तंडत्रैलोक्याडंबरोथवा ।

वन्हीकुमारकश्चात्रदेयः शोफविनाशनः ॥

शुठीपुनर्नवरंडपंचमूलीशृतंजलम् ।

वातिकेश्वयथोपेयंभुक्तपाकेपित्तमत्तम् ॥

अर्थ—सूजनपर, उदयमार्तंड, त्रैलोक्यडंबर, अमिकुमार, अथवा शोफारी इनमेंसे कोई रस देवे । सोंठ पुनर्नवा अंडकीजड़ पंचमूल इनका काय वात शोथपर देवे और यह अन्न पचनेके विषयमें भी उत्तम है । विजोरेकी जड़ जटाभांसी देवदारु सोंठ रास्ना अरनी इनका लेप वातकी सूजनको नाश करे ॥
पित्तशोथनिदान ।

मृदुः सुगंधोसितपीतरागवान्भ्रमज्वरस्वेदतृपामदान्वितः ।

यउप्यतेस्पृश्रुगक्षिरागकृत्सापित्तशोथोभृशदाहपाकवान् ॥

अर्थ—पित्तकी सूजन नरम, कुछ दुर्गंधयुक्त काली, पीली और लाल होय उसके होनेसे भ्रम ज्वर, पसीना, प्यास और मस्तपना ये लक्षण होय दाह होय हाथ लगानेसे दूखे इसीसे नेत्र लालहो, उसमें अत्यन्त दाह तथा पाक होय ॥
त्रिवृत्तादिकाय ।

क्षीराशिनः पित्तकृतेतिशोफेत्रिवृद्धूचीत्रिफलाकषायम् ।

पिवेद्गवामूत्रविमिश्रितंवाफलत्रिकाचूर्णमथाक्षमात्रम् ॥

अर्थ—पित्त शोथपर निसोथ गिलोय त्रिफला इनका फाटा पीवे अथवा त्रिफलाका १ एक तोले चूर्णको गोसूत्रके साथ पीवे ॥

पटोलादि काय ।

पटोलत्रिफलारिष्टदाविक्रियः सगुग्गुलुः ।

हंतिपित्तभवंशोथंतृष्णाज्वरसमन्वितम् ॥

अर्थ—पटोलपत्र त्रिफला नीमकी छाल, दारुहलदी इनका फाटा गुग्गुलु डालके पीवे तो तृष्णाज्वर इन करके युक्त जो पित्तशोथ उसका नाश करे ॥
कषाय ।

गुरुस्थिरः पाण्डुररोचकान्वितः प्रसेकनिद्रावभिवह्निमाद्यंक्रुत् ।

सकृच्चर्जन्मप्रशमोनिपीडितोचोत्रमेद्रात्रिवलीकफात्मकः ॥

अथ—कफकी सूजन भारी, स्थिर, पीली होय है, इसके योगसे अन्नद्वेष, लारका गिरना, निद्रा, वमन, मन्दाग्नि ये लक्षण होय तथा इस सूजनकी उत्पत्ति और नाश बहुत कालमें होय इसको दवानेसे ऊपरको नहीं उठे, रात्रिमें इसकी प्रबलता होय ॥

पुनर्नवादिक्वाथ ।

पुनर्नवाविश्वत्रिवृद्धूचीश्यामाकपथ्यासुरदारुकल्कम् ।

शोथेकफोत्थेक्षसमंसमूत्रंकाथंपिवेद्वाप्यथचैवतेषाम् ॥

अर्थ—पुनर्नवा सोंठ निसोथ गिलोय सामखिया हरड देवदारु इनका काढा अथवा एक तैल कल्क को गोमूत्रके साथ पीवे तो कफ शोथको नाशकरे सामान्य यत्न ।

क्षारमूत्रासवारिष्टचूर्णतक्राणियोजयेत् ।

अर्थ—खार मूत्र आसव मद्य चूर्ण छाछ इत्यादि कफशोथपर देवे ॥
आरग्वधादि तैल ।

कफोत्थेत्रपिवेतैलंसिद्धमारग्वधादिना ।

मंदेग्रौस्तिमितेकोष्ठेस्रोतोरोधेरुजावपि ॥

अर्थ—कफकी सूजनपर आरग्वधादि क्वाथके साथ सिद्ध कराहुआ तैल उक्तम है और मदाग्नि स्तब्धकोष्ठ मलमूत्रादि मार्गका रुकना और पीडा इनपर प्रशस्त है ॥

पुनर्नवादि लेह ।

पुनर्नवामृतादारुदशमूलरसाढके । आर्द्रकस्यरसप्रस्थैगुड

स्यचतुलांपचेत् ॥ तत्सिद्धेव्योपपत्रैलात्वक्पत्रैश्चपृथक् पृथक् ।

चूर्णाकृतैश्चसहितैर्मधुनः कुडवंक्षिपेत् । लेहःपुनर्नवोनामश्चे

ष्मशोफनिपूदनः । वासाकासारुचिहरोबेलपुष्ट्यग्निवर्धनः ॥

अर्थ—पुनर्नवा गिलोय देवदारु दशमूल इनका काढा २५६ तोले अदरखका रस ६४ तोले गुड १०२४ तोले इस क्रमसे लेकर सबको एकत्र पक करे जब सिद्ध होजावे तब शीतल होनेपर त्रिकुटा पत्रज इलायची दालचीनी इन प्रत्येकका एक २ तोले चूर्ण डाले शहत १६ तोले डाले इसको पुनर्नवावलेह कहतेहैं यह कफकी सूजन और श्वास सौंसी अरुचि इनको नाश करनेवाला तथा बल पुष्टि अग्नि इनको बढ़ावे ॥

यएचाह्वमुस्तैःसकपित्थपत्रैः सचंदनैस्तत्पिटिकासुलेपः ॥
 अर्थ-बहेड़ेकी मिगीका लेप सर्व प्रकारकी भिलाएकी सूजन दाह इनपर प्रशस्त है, भिलाएसे जो पिटका (फुंसी) हो जाती है उनपर सुलहटी नागर-मोथा कैयके पत्ते चंदन इनका लेप करे तो पिटका जाती रहे ॥

कृष्णादि चूर्ण ।

कृष्णाग्निविश्वघनजीरककंटकारीपाठानिशाकरिकणामगधा
 जटानाम् । चूर्णैकवोष्णसलिलैरवलोडचपीतनातः परंश्वयथु
 रोगहरंनराणाम् ॥

अर्थ-पीपल चित्रक सोंठ, नागरमोथा जीरा पाठ हलदी गजपीपल पी-
 परामूल इनका चूर्ण मंदोष्ण जलमें मिलायके पीवे तो इससे बढकर मनु-
 ष्योंके शायेरागेनाशक दूसरी औषध नहीं है ॥

गुडादि चूर्ण ।

गुडापिप्पलिशुंठीनांचूर्णैश्वयथुनाशनम् ।
 आमाजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंवस्तिशोधनम् ॥

अर्थ-गुड, पीपल, सोंठ, इनका चूर्ण मूजन आमाजीर्ण शूल इनका नाशक
 और वस्तिशोधक है ॥

प्रकारांतर ।

गुडात्पलत्रयं ग्राह्यं शृंगवेरंपलत्रयम् । शृंगवेरसमाकृष्णालोह
 विद्रुभस्मनः पलम् ॥ चूर्णमेतत्समुद्दिष्टं सर्वश्वयथुनाशनम् ॥

अर्थ-गुड १२ तोले, सोंठ १२ तोले, पीपल १२ तोले, मंडूरभस्म ५ तोले
 इनका चूर्ण सर्व शोथनाशक है ॥

पुनर्नवादि चूर्ण ।

पुनर्नवादावर्ष्यमृतापाठाविश्ववदंष्ट्रिकाः । रजन्योद्वेवृह
 त्यौचपिप्पलीचित्रकंवृषः । समभागानिसंचूर्ण्यगवांमूत्रेणवा
 पिबेत् । बहुप्रकारंश्वयथुंसर्वगात्रविसारिणम् । हंतिचाशुव
 राण्यष्टौत्रणांश्वैवोत्थितानपि ॥

अर्थ-पुनर्नवा, देप्रदारु, गिलोय, पाद, सोंठ, गोखरू, हलदी, दारुहलदी,
 कंदेरी, बडीकंदेरी, पीपल, चित्रक, और अइसा ए सब समान भागले
 चूर्ण करे, गोमूत्रके साथ पीवे, तो बहुत प्रकारका सर्वांगव्यापी मूजन और
 रद्धत ग्रण (पाव) इनको तत्काल नाश करे ॥

विडंगादि चूर्ण ।

विडंगदंतीकटुकात्रिवृच्चित्रकदारवः । व्योपंसकृष्णत्रिफला-
समादेयाह्वयोरजः । द्विगुणंतत्पिपेचचूर्णैपयसाशोफशांतये ॥

अर्थ—वायुविडंग, दंती, कटुकी, निसोथ, चित्रक, देवदारु, त्रिकुटा, पीपल,
त्रिफला, ए सब समान भाग लेवे लोह भस्म २ भाग ले सबको एकत्र कूट
पीस चूर्ण बनाय ले इसको गरम जलके साथ सेवन करे तो सूजनको दूर करे ॥

त्रिफलादि काय ।

त्रिफलाक्वाथपानंहिमहिपीसपिपासह ।

हंतिशोफप्रमेहंचनाडीव्रणभगंदरम् ॥

अर्थ—हरड़, बहेड़ा आँवला इनका काढा और भैसका घी मिलाय के पीवे
तो सूजन, प्रमेह, नाडीव्रण, भगंदर इनको नाश करे ॥

पुनर्नवादि काय ।

पुनर्नवादारुनिशानिशाशुंठीहरीतकी । गुडूचीचित्रकोभार्गी

देवदारुचैःशृतम् । पाणिपादोदरमुखप्राप्तशोफनिवारयेत् ॥

अर्थ—पुनर्नवा, हलदी, दारुहलदी, सोठ, छोटी हरड़, गिलोय, चित्रक,
भारंगी, देवदारु, इन नौ औषधोका काढा करके पीवे तो सर्व देहकी सूजन
दूर होय ॥

सिंहास्यादि काय ।

सिंहास्यामृतभंडाकीक्वाथंकृत्वासमाक्षिकम् ।

कृच्छ्रशोथंजयेजंतुः कासंश्वासंज्वरंवमिम् ॥

अर्थ—अडूसा, गिलोय, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी इनके काठमें शहत
ढालके पीवे तो दुर्धर सूजन, श्वास, खाँसी, ज्वर, वमन इनको नाश करे ॥

सूजनपर काय ।

पथ्यामृताभार्गिपुनर्नवाग्निदावीनिशादारुमहौपधानाम् ।

क्वाथोनिपीतोदरपाणिपादवक्राश्रितंहंत्यचिरेणशोफम् ॥

अर्थ—छोटी हरड़, गिलोय, भारंगी, पुनर्नवा, चित्रक, दारुहलदी, सोठ,
इनका काढा करके पीवे तो उदर, हाथ, पैर, मुख, इनकी सूजन जल्दी नाश करे ॥

दशमूल हरीतकी ।

दशमूलकपायस्यकंसेपथ्याशतंगुडात् । तुलांपचेद्धनेतत्र

व्योपंक्षारंचतुःपलम् ॥ त्रिजातंतुसुवर्णांशंप्रस्थार्धमधुनोहिमे ।

दशमूलहरीतक्यःशोफान्घ्रंतिसुदुस्तरान् ॥

अर्थ-दशमूलका काठा २५६ तोले हरड नग १०० गुड ४०० तोले, इन सबको एकत्र करके पचावे जब गाढी हो जावे तब इसमें त्रिकुटा, जवाखार, इनका चूर्ण १६ तोले, दालचीनी, इलायची, पत्रज, ये प्रत्येक एक २ तोले ले सबको मिलाय शीतल होनेपर शहत ३२ तोले डाले, तो इसको दशमूल हरी-तकी कहते हैं यह दुस्तर शोथ रोगकी नाशक है ॥

तक्रादियोग ।

तक्रंपिवेद्भागुरुभिन्नवर्चाः सव्योपसौवर्चलमाक्षिकंच ।

विद्धातसंगेपयसारसैर्वाप्रागुण्यमद्यादुरुबूकतैलम् ॥

अर्थ-जिस शोथ रोगीका देह भारी होकर मल पतला होय उसको त्रिकुटा सेचरनिमक इनको चूर्ण और शहत मिलायके छाल पीवे यदि पेटमें चादीके भरनेसे शौच न होता होय तो प्रथम अंडीके तेलको गरम करके पीवे फिर त्रिकुटेका चूर्ण शहत मिलायके दूध पिलावे अथवा शोथनाशक रसके साथ त्रिकुटाका चूर्ण और शहत देवे ॥

पुनर्नवास्व ।

पुनर्नवेद्रेतुपलेसपाठादंतीगुडूचीसहचित्रकेण । निदिग्धिकाच
त्रिफलाविपक्वाद्रोणावशेषसलिलेततस्तम् । पूत्वारसेद्रेचशतंपु
राणंगुडमधुप्रस्थयुतंसुशीतम् । मासंनिदध्याद्घृतभाजनस्थंप
लंयवानांपरतश्चमासात् । चूर्णांकृतैरर्धपलांशकैस्तैर्हेमत्वगे
लामरिचांबुपत्रैः । गंधान्वितंशौद्रयुतंप्रादिग्धजीर्णापिवेद्या
धिवलंसमीक्ष्य । हृत्पांडुरोगंश्वयथुंप्रवृद्धंघ्नीहभ्रमारोचकमेह
गुल्मान् । भगंदाराशौजठराणिकासश्वासग्रहण्यामयकुष्ठकं
डून् । शाखानिलंबद्धपुरीपिणंचहिक्कांचकासंचहलीमकंचाक्षिप्रं
जयेद्घर्णवल्लयुरोजस्तेजोन्वितोमांसरसांश्चभुत्का ॥

अर्थ-पुनर्नवा, पाठ, दंती, जिलोय, चित्रक, कठेरी, त्रिफलाय प्रत्येक आठ २ तोले लेकर २०४८ तोले जलमे फाटा करे जब जाधा रहे तब उतारके छान लेवे जब शीतल होजावे तब इसमें पुराना गुड २०० तोले और २५६ तोले शहत डालके एक महीने पर्यंत घीके चिकने वासनमे भरके धर देवे फिर

केशर, दालचीनी इलायची मिरच नेत्रवाला पत्रज गंधक
; चूर्ण इसमें डाले और शहतके साथ बलाबल विचारके इसकी
दयरोग, पांडुरोग, बहुत दिनकी बढी हुई सूजन, कामला,
नेह, गोला, भगंदर, बवासीर, उदर, खांसी, श्वास, संग्रहणी,
सास्त्रागत वायु, मलबद्धता, हिचकी, हर्लामक, इनको नाश करे
आयुष्य, ओज, तेज इनको बढावे इसपर पथ्य मांसकारसहै ॥

वाससव ।

पलेद्रेतुद्विद्रोणेपांविपाचयेत् । द्रोणार्धशेषंतंज्ञात्वा
पूतेशातेप्रदापयेत् । गुडस्यैकांतुलांतत्रधातक्यास्तुपलाएकम् ।
क्षिपेच्चूर्णांकृतेतस्मिन्त्वगेलापत्रकेशरम् । कंकोलं व्योपतीया
निपलिकान्युपकल्पयेत् । निदध्याद्घृतभांडितुपक्षादूर्ध्वततः
पिबेत् । वासकासवइत्येपःसर्वेश्वयथुनाशनः ॥

अर्थ-अडूसा < तोलेको २०४८ तोले जलमें डालके काढा कर जब चतु-
र्यांश रहे तब उतारके छान लेवे जब शीतल होजावे तब ४०० तोले गुडमि-
लायदे और धायके फूलोंका चूर्ण करके डाल देवे तथा दालचीनी इलायची
पत्रज नागकेशर कंकोल मिरच नेत्रवाला ए प्रत्येक चार २ तोले डाले फिर
इसको धीके चिकने वासनमें भरके धररखे, पंद्रह दिनके बाद निकालके सेवन
करे तो यह वासकासव सर्व प्रकारकी मूजनका नाश करे ।

शोथपर योग ।

पिवेदुष्णांबुनादारुपथ्याशुंठीपुनर्नवा । विडंगातिविपांवासांवि
श्वादारूपणानिच । वर्षाभूशृंगवेराभ्यांकल्कंवासर्वशोथजित् ॥

अर्थ-गरम जलके साथ देवदारु, हरड, सोंठ, पुनर्नवा । अथवा वाय-
विडंग अतीस अडूसा, सोंठ, देवदारु, मिरच । अथवा पुनर्नवा, सोंठ इनका
कल्क पीवे तो सर्व शोथोंको नाश करे ॥

पुनर्नवादिघृत ।

पुनर्नवापत्ररसालमूलंसंक्षुद्यतोयार्पणशेषसिद्धम् ।
चतुर्थभागेनघृतेनपक्वंप्रस्थंतुतत्कल्कपलाएकेन ॥
संसेवितंवातबलासरोगान्सर्वांश्च शोफानतिदुस्तरांश्च ।
गुल्मोदरप्लीहगुदोद्भवांश्चनिशंतिवह्निकुरुतेचपुंसाम् ॥

अर्थ-पुनर्नवाके पत्र आमकी जड़ इन दोनोंको जलसे पीस इनका रस १०२४ तोले लेवे और उसमें चतुर्थांश धी डाले तथा पुनर्नवा आमकी जड़का कल्क ८ तोले डालके पचावे जब सब वस्तु जलके केवल घृतमात्र शेष रहे तब उतारलेवे इसका सेवन करेतो वात कफके रोग बड़ी भारी सूजन, गीला उदर ग्रीहा बवासीर इनको नाश करे और जठराग्निको दीप्तकरे ॥

पंचमूलादितैल ।

पंचमूलंसलवणंसरलदेवदारुच । हस्तिकर्णापलाशस्यफला-
निनिचुलस्यच । पलाशकाकनासाचगुडूचीदेवपुष्ककम् ।
अहिंस्नाश्रेयसीहिंस्नावस्तर्गंधापुनर्नवा । कायस्थाचपयस्या-
चदारुकोजटिलाजटा । अलंबुपोरुबुकंचप्रपुत्राटंसनागरम् ।
शिशुशोधः वर्मभार्ङ्गीतर्कारीपौष्कराजटा ॥ एतैःसिद्धंयथाला-
भंतैलमभ्यंजनैस्त्रिभिः । निहंत्युदीर्णश्वयथुंजंतोर्वातकफात्मकम् ॥

अर्थ-पंचमूल, निम्बक, सरल, देवदारु, कासाल, पलास अजमायन ये चार-
२ तोले ले तथा कौआबोडी, गिलोय, लौंग, ऐरावती, गजपीपल, जटामांसी,
वनतुलसी, पुनर्नवा, काली तुलसी हरड, तेलियादेवदारु, ईश्वरी, वच, गोरखमुंडी,
अंडकी जड़, पवाड, सोठ, संहजना, बटपत्री, पाषाणभेद, भारगी, अरनी, और
पुहफर मूल ये सब दो २ तोले लेकर काढाकरे अथवा कल्क करे इसमें तेल
डालके सिद्धकरे इस तेलको तीन दिन देरमें लगावेतो वातकफकी बड़ी हुई
सूजनको नाशकरे ।

शुष्क मूलवादि तैल ।

शुष्कमूलकवर्पाभूदारुरास्नामहौपथैः ।

पक्वमभ्यंजनेतैलंसमूलंशोफनाशनम् ॥

अर्थ-सूखी मूली, पुनर्नवा, देवदारु, रास्ना और सोठ, इनके साथ सिद्ध
करा हुआ तेलको मालिस करनेसे जड़सहित सूजनका नाश होय ॥

न्यग्रोधादि तैल ।

न्यग्रोपोदुंबराश्वत्थपुक्षवेतसर्वल्कलैः ।

स सर्पिष्कैः प्रलेपःस्याच्छोफनिर्वारणः परः ॥

अर्थ-बड़, गृलर पीर्पल, पार्परी, वेत, इनकी छालको औटाय उसमें धी
मिलायके लेप करे तो अत्यंत सूजनको नष्ट करे ॥

पुनर्नवादिश्लेष ।

पुनर्नवादारुशुंठीसिद्धार्थः शिशुमेवच ।

पिष्ट्वाचैवारनालेनप्रलेपः सर्वशोफजित् ॥

अर्थ—पुनर्नवा, देवदारु, सोंठ, सपेद सरसों, संहजना, इनको पीस कांजीमें मिलायके लेपकरे, तो सर्व शोथोंको जीते ॥

पुनर्नवादि स्वेद ।

पुनर्नवाग्निनिर्गुडीपलितौरंडजैर्दलेः ।

सहचरैर्जलंतप्ततत्स्वेदःशोफहामंतः ॥

अर्थ—पुनर्नवा, चित्रक, निर्गुडी, गूगल अंडकेपत्ते पीयावाँसा, इनको जलमें डालके जलको ओंटावे, इसका बफारा सूजनको नाश करे ।

कुटजादि स्वेद ।

कुटजार्कशिरीषाणांविदलैरंडनिवजैः ।

पत्रैर्युक्तंजलंतप्ततत्स्वेदोदुष्टशोफहृत् ॥

अर्थ—कूडा, आक, सिरस, कालीनिसोय, अंडके पत्ते, इनको जलमें डालके उस जलको ओंटायके, बफारा देवे, तो दुष्ट सूजनको नष्ट करे ॥

आर्द्रकं स्वरसः ।

आर्द्रकंस्वरसःपीतःपुराणगुडमिश्रितः ।

अजाक्षीराशिनांशीघ्रंसर्वशोथहरोभवेत् ॥

अर्थ—अदरखका रस, पुराना गुड दोनोंको मिलायके सेवन करे तथा बकर्रीका दूध सेवन करे तो तत्काल सर्व प्रकारकी सूजनोंको नाश करे ॥

अर्कादिसंचन ।

सेकस्तथार्कवर्षाभूनिम्बकाथेनशोफजित् ।

गोमूत्रेणाथकुर्वीतसुखोष्णत्वावसेचनम् ॥

अर्थ—आक, पुनर्नवा, नीमकीछाल इनके काटके बफारा, अथवा सुंदोष्ण गोमूत्र करके तरड़ा देवे, तो सूजनको दूरकरे ॥

कृष्णादिप्रलेपः ।

कृष्णापुराणपिण्याकंशिशुत्वक्सिकतातसी ।

प्रलेपोन्मर्दनेयुंज्यात्सुखोष्णमूत्रकल्किता ॥

अर्थ—काली मिरच, पुरानी खल, सोंहजनेकीछाल, मिर्ची, अलसी इनको गोमूत्रमें पीस कुछ गरम करके देहमें मालिसकरे अथवा लेप करे तो सूजनको नाशकरे ॥

विल्वपत्ररस ।

विल्वपत्ररसः पीतः शोषणः श्वयथौरुजः ।

विट्संगेचैवदुर्नाम्निविपूच्यांकामलास्वपि ॥

अर्थ—विल्वपत्रका रस पीनेसे सूजन, मलबद्धता, बवासीर, विपूचिका, कामला, इनका शोषक है ॥

वर्षाम्बादिक्षीर ।

क्षीरं शोथहरं दारुवर्षाम्भूनागरैः शृतम् ।

पेयं वाचित्रकव्योपत्रिवृद्धारुप्रसाधितम् ॥

अर्थ—देवदारु, पुनर्नवा, सोंठ इनके फल्कमें सिद्ध करे हुए दूध, अथवा चित्रक त्रिकुटा निशोथ देवदारु इनके फल्कसे सिद्ध करे हुए दूधको पीवेतो सर्व शोथ नाशकरे ॥

गुडार्द्रकादियोग ।

गुडार्द्रकं वा गुडनागरं वा गुडाभयां वा गुडपिप्पलीं वा । कर्षाभिः

बृद्ध्या त्रिपलप्रमाणं खादेन्नरः पथ्यमथापि मांसम् ॥ शोफप्रति

श्यायगलास्यरोगान् सश्वासकासारुचिपीनसादीन् । जीर्णज्वरा

शोथहणी विकारान् हन्यात्तथान्यानपि वातरोगान् ॥

अर्थ—गुड, अदरक अथवा गुड, सोंठ अथवा गुड, हरड, अथवा गुड, पीपल एक तोलेसे लेकर बारह तोले पर्यंत शक्तिकी तारतम्यता देखके बढ़ावे, तथा पथ्यसे रहे यह एकमहीने पर्यंत खानेसे सूजन प्रतिश्याय, कंठरोग, श्वास, खांसी, अरुचि, पीनस, जीर्णज्वर, बवासीर, संग्रहणी और वातके रोग, इन सबको नाशकरे ॥

पुनर्नवादियोग ।

पुनर्नवामूलकदेवदारुच्छिन्नोद्भवाचित्रकमूलसिद्धा ।

रसायवागूश्वपयांसि यूपाः शोफे प्रदेया दशमूलगर्भाः ॥

अर्थ—पुनर्नवाकी जड़, देवदारु, गिलोय, चित्रककी जड़, इनके काटेसे सिद्ध करे हुए रस, सुवागू, दूध, मंड, ये शोथ रोगपर देवे, अथवा दशमूलका काढा डालके सिद्ध करा हुआ रस और कांजी इत्यादिक देवे ॥

भूमिम्बादिबल्क ।

भूमिंश्च विश्वकल्कं जग्ध्वा पीतः पुनर्नवाक्काथः ।

अपहरतिनियतिमाशुश्वयथुंसर्वागर्जनृणाम् ॥ ।

अर्थ-चिरायता सोठ इनका कल्क पीके, ऊपरसे पुनर्नवाका काढा पीवे तो निश्चय सर्वांग शोथको नाश करे ॥

दारुगुग्गुलशुंठीनांकल्कोमूत्रेणशोफजित् ।

गोमूत्रस्यचयोगोवाक्षिप्रंश्वयथुनाशनः ॥

अर्थ-दारुहलदी, सोंठ, गुग्गुल, इनके कल्कको गोमूत्रके साथ पीवे, तो मूजनको नाश करे, अथवा केवल गोमूत्रकाही योग तत्काल शोथको नाश करे ॥
शायारिस ।

हिंगुलंजयपालंचमरीचंटंकणकणा ।

समर्घवल्हः सघृतः सर्वशोफहरःपरः ॥

अर्थ-हिंगुल, जमालगोदा, कालीमिरच, सुहागा, पीपल, इनको एकत्र स्वरलकर धीके साथ २ रत्ती भक्षण करे तो सपूर्ण शोथका नाश करे ॥
श्वयथुपातारिस ।

रसगंधकलोहकणात्रिवृतामरिचामरदारुनिशात्रिफला ।

दलितंमृदुगोसलिलेनपिवेदनु रूपममुंश्वयथूदरहम् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, लोहभस्म, पीपल, निसीय, कालीमिरच देवदारु, हलदी त्रिफला, इनके चूर्णको बलावल विचार करे गोमूत्रके साथ खाय तो मूजन, उदर, इनको नाश करे ॥

शोथपरमहुर ।

गोमूत्रसिद्धमंडूरंसुरभेरसभावितम् । माणकार्द्रककंदानारसे

व्यापिचभावयेत् । त्रिफलाकटुचव्यानांचूर्णपाणितलद्रयम् ।

क्षिपेत्सुसिद्धपाकेतुमधुनश्वपलद्रयम् । निहति सर्वजंशोथं सर्वा

गस्थंविशेषतः ॥

अर्थ-गोमूत्रसे सिद्ध करा हुआ मंडूरमे गोमूत्र मानकंद, अदरक कोसालू इनके रसकी भावना देवे, फिर त्रिफला, कुटकी, चव्य, ये प्रत्येक दो दो तोले ले चूर्ण करके मिलाय देवे, फिर उस मंडूरको दुगनी गोमूत्रके साथ पक करे जब शीतल हो जावे तब इससे ८ तोले शहद डालके धररखे, इसको रोगीका बलावल विचार के सेवन करना चाहिये, यह त्रिदोषज सर्वांग व्यापी मूजनको नाश करे ॥

पद्य ।

संशोधनलंघनमस्रमोक्षः स्वेदः प्रलेपः परिपेचनंच । पुरा-

तनाः शालियवाःकुलित्थासुद्राश्चगोधापिचश्लकोपि । भुजंग-
 गभुक्कृत्तिरिताम्रचूडलावादयोजांगलविष्किराश्च । कूर्मोऽपि
 शृंगीप्रपुराणसर्पिस्तक्रंसुरामाक्षिकमासवश्च । निष्पावकाटि-
 ल्लकरक्तशिथुरसोनककोटकवालमूलम् । सौवर्चलंगृजनकंपटो-
 लंबेत्रायवांतीगणमूलकानि । पुनर्नवाचित्रकपारिभद्रश्रीप-
 णिनिवेशुरपल्लवानि । एरंडतैलंकटुकाहरिद्राहरीतकीक्षार-
 निषेवणंच । भल्लातकंगुग्गुलुमायसंचकट्टूनिक्तानिचदीप-
 नानि । मूत्राणिगोजामहिषीभवानिकस्तूरिकावापिशिलाज-
 तूनि । यत्पांडुरोगेष्वपिवह्निकर्मपुराप्रदिष्टंचतदेवचापि ।
 यथामलंपथ्यमिदंप्रयुक्तंशोथामयंसत्त्वरमुच्छिनत्ति ॥

अर्थ—संशोधन, लघन, रुधिर निकालना, स्वेदन, लेप, परिसेचन, पुराने
 चावल जौ तथा कुलथी, गोह, सेही, मोर तीतर, मुरगा, लवा आदि जंगली पक्षि-
 योका मांस, कलुवा, सींग, मछली, पुराना घी, मट्टा, मदिरा, शहद, आसव
 (द्राक्षासवादिक) सेम करेला लाल सहिजना, लहसन, ककोडा, कोमल
 मूली, डुलडुल, गाजर, परवल, वेतकी कोपल, आँवलोके फल और जड, पुन-
 र्नवा, चीता, देवदारु, अरणी, नीव, तालमखानेके पत्ते, अंडीका तैल, कुटकी,
 हलदी हड, सारका सेवन, भिलावा, गूगल, लोहकिट्ट, कडुए, चरपरे और
 दीपन पदार्थ, गो, बकरी, तथा भैसका मूत्र, कस्तूरी, शिलाजीत और पहिले
 पाण्डुरोगमे जो कहा हुआ है वह अग्निकर्म दोषके अनुसार दिया हुआ यह
 पथ्य शोथ रोगको शीघ्र दूर करे—इति ॥

शोथरोगपर अपथ्य ।

ग्राम्यानूपंपिशितलवणंशुष्कशाकंनवात्रंगौडंपिष्टंधिसकृ-

शरंनिर्झरंमद्यम्लम् । धानात्रलूरमशनमथोगुर्वसात्म्यांविदा-

हिस्वप्नंरात्रौश्चयथुगदवान्वर्जयेन्मैथुनंच ॥

अर्थ—ग्राम्य तथा अनुपदेशका मांस, नोन, सूखासागं नया अन्न, गुडकी
 वस्तु, पिसा अन्न, खिचड़ीके साथ, दही, बिना जलके मद्यपान, सटाई, धनियाँ,
 सूरेव मांस, भारी अहित तथा विदाही भोजन, रातमें जागना, स्त्री संग,
 शोथ रोगवाला इन सबका त्याग करे ॥

इति श्रीआयुर्वेदाचार्यैरुद्दिष्टबृहन्निषण्डुरत्नाकरे शोथरोगपरविदानधिकृतं ब्राह्मणम् ॥

अंड वृद्धि ।

अंडवृद्धिनिदान ।

कुद्धोन्मूर्ध्वगतिर्वायुःशोथशूलकरश्चरन् ।

मुष्कौवंक्षणतःप्राप्यफलकोशाभिवाहिनीम् ॥

प्रपीड्यधमनीवृद्धिकरोति फलकोशयोः ।

अर्थ—कुपित भई अधोगमन शील (नीचे विचरनेवाली) तथा सृजन और शूल उत्पन्न करनेवाली वायु कूखमें संचार करती हुई अंडकोश और वंक्षण (अंडकोश और जंघाकी संधि) से अंडमें आयकर अंडकी वृद्धि और कोश इनकी बहनेवाली धमनी (नाडी) को दुष्टकर अंडकी (दोनों अंडकी अथवा एक औरसे अंडकी) वृद्धि करै है ॥

संख्या ।

दोपात्रमेदोमूत्रांत्रैःसवृद्धिःसप्तधागदः ।

मूत्रांत्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तुकेवलम् ॥

अर्थ—वह वृद्धि रोग तीनों दोषोंसे ३ रुधिरसे १, भेद १, मूत्र १ और आंतोंसे १ सात प्रकारका है । मूत्रज और अंत्रज वृद्धि ये दोनों वायुसे होती हैं परंतु इन दोनोंका निदान और चिकित्सा में भेद होनेसे पृथक् ग्रहण करा है सो लिखा भी है—“मूत्रान्त्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तु केवलम्” इति ॥

वातादिवृद्धिके लक्षण ।

वातपूर्णादृतिस्पर्शोरूक्षोवातादहेतुरुक् ।

कृष्णःस्फोटावृतःपित्तवृद्धिलिगैश्चपित्तजः ॥

कफवन्मेदसोवृद्धिर्मृदुस्तालफलोपमः ।

अर्थ—वातसे भरी मसक जैसी हाथके लगनेसे मालूम होय ऐसा मालूम होय रूक्ष और विनाकारण सूखने लगे वो वातकी अंडवृद्धि जाननी, काले फोडान्से व्याप्त तथा जिस्में पित्त वृद्धिके लक्षण मिलते होय, उस अंडवृद्धिको पित्तकी तथा रक्तकी कहते हैं । भेदसे जो अंड वृद्धि होय है वो कफकी वृद्धिके समान मृदु (नरम) तथा ताल फलके समान हो अर्थात् पीले रंगकी और गोल होय है ॥

वातजअंडवृद्धिकायत्न ।

आर्द्रकस्यरसःशैद्रयुक्तोवृषणवातजित् ॥

अर्थ—अदरखके रसको शहदमें मिलाकर पीवे तो वृषण वातको जीतने वाला जानना ॥

एरंडतैलयोग ।

सक्षीरंवापिवेतैलंमासमेरंडसंभवम् ।

गुग्गुलुंरुद्रुतैलंवागोमूत्रेणपिवेत्रः ॥

वातवृद्धिनिहंत्याशुचिरकालानुबंधिनीम् ।

अर्थ—दूध और अंडोंके तेलको मिलाय १ महीने पर्यंत पीवे अथवा गुग्गुल अंडका तेल इनको गौमूत्रके साथ पीवे तो बहुत दिनको अंड वृद्धिको तत्काल-नाशकरे ।

चंदनादिलेप ।

चंदनंमधुकंपद्ममुक्षीरंनीलमुत्पलम् ॥

क्षीरपिष्टःप्रलेपःस्यात्पित्तवृद्धिरुजापहः ।

अर्थ—चंदन मुहलठी कमल नीलाकमल इनको दूधमें पीसके लेप करे तो अंडवृद्धि रोगका नाश करे ।

पञ्चवल्कलादि ।

पंचवल्कलकल्केनसघृतेनप्रलेपनम् ।

पानंवापिकपायस्यपित्तवृद्धौप्रशस्यते ॥

अर्थ—वड, पीपल, गूलर, पापरी, वेंत इन पंचवल्कलके कल्केको घीमें मिलायके अंडोंपर लेप करे, अथवा पंचवल्कलोंका काढा पीवे तो पित्तजन्य अंड वृद्धिको नाशकरे ॥

सामान्यचिकित्सा ।

कफवृद्धौमूत्रपिष्टरुष्णवीर्यैःप्रलेपनम् ।

पातव्योमूत्रसंयुक्तःकपायः पीतदारुणः ॥

अर्थ—कफ जन्य अंडवृद्धिपर गौमूत्रमें टण्णवीर्य अर्थात् गरम औषधोंको पीसके लेप करे और दारुहलदीका काढा गौमूत्र डालके पीवेतो अंडवृद्धि दूर होय ॥

त्रिकटुादिफाय ।

त्रिकटुत्रिफलाक्वाथःसक्षारलवणःपिवेत् ।

कफवातप्रकोपघ्नोविरेकात्कफवृद्धिजित् ॥

अर्थ—त्रिकुटा, त्रिफला इनके काठेको जवाखार, सैधानिमक इनका चूर्ण डालके पीवे तो कफवादीको अथवा कफ वात जन्य अंडवृद्धिको नाशकरे ॥
सामान्यचिकित्सा ।

अविदाहिचभैपज्यंकर्तव्यंरक्तपैत्तिके ।

सर्वपित्तहरंकार्यंरक्तजेरक्तमोक्षणम् ॥

अर्थ—रक्तज अंडवृद्धि और पित्तज अंडवृद्धि इनपर जो विदाहन करे तथा पित्तहारक, ऐसी औषध करे, तथा रक्त जन्य वृद्धिपर, रुधिरमोक्ष करे ॥
रक्तजवृद्धिपर ।

मुहुर्मुहुर्जलौकाभिः शोणितंरक्तजेहरेत् ।

शीतमालेपनंसर्वपाकोरक्ष्यःप्रयत्नतः ॥

अर्थ—रक्तजन्य अंडवृद्धिपर चारंवार जोक लगायके रुधिरको निकाले, और शीतल लेप करे तथा वह पके नहीं ऐसा यत्न करे ॥
त्रिवृतादिकाय ।

त्रिवृतंप्रपिबेत्क्षौद्रंशर्करासहितंमुहुः ।

पित्तग्रंथिक्रमेकुर्यादामेपक्वेचरक्तजे ॥

अर्थ—रक्तजन्य अंडवृद्धि पर चारंवार, मिश्रीके साथ निसोथका काढा पीवे और आम क्वा पकी हुई गांठ होय तो पित्तजग्रंथिपर जो यत्न करना लिखा है सो करे ॥

मेदजअंडवृद्धिपर ।

खिन्नमेदःसमुत्थानंलेपयेत्सुरसादिना ।

शिरोविरेचयेत् द्रव्यैःसुखोष्णैर्मूत्रसंयुतैः ॥

अर्थ—जिस ठिकाने मेद बढ़ा हुआ हो उस स्थानपर बफारा देकर निर्गुंडी इत्यादिकोंका लेप करे, तथा सुख होय उतना गरम गोमूत्र सहित औषधों करके शिरोवस्ती देवे ॥

षडूषणादि चूर्ण ।

षडूषणंक्षौद्रसमंगुग्गुलुंगव्यसर्पिपा । प्रयुक्तंकुट्यभुंजीतयथा-

ग्निदिवसानने । कटुतिक्तकपायाशीमेदोवृद्धिप्रणाशनम् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, चव्य, चित्रक, पीपलामूल, जो गूगल, गौका घी, इन पदार्थोंको एकत्र खरल कर बलाबल विचारके प्राप्तकाल स्वाय ऊपरसे चरपरे, कटुए, कसेले, ऐसे पदार्थ भक्षण करे तो अंडवृद्धिका नाश होय ॥

मूत्रजन्य अंडवृद्धि निदान ।

मूत्रधारणशीलस्यमूत्रजःसतुगच्छतः । अंभोभिःपूर्णवृत्तिवत्क्षो-
भयातिसरुड्मृदुः । मूत्रकृच्छ्रमधस्थाच्चचलयन्फलकोशयोः॥

अर्थ—मूत्रको रोकनेका जिस्को अभ्यास होय उसके यह रोग होय हैं, वो पुरुष जब चले तब पानीसे भरी पखालके समान डबक डबक हले तथा बजे और उसमें पीडा भी थोडी होय हाथके छेनेसे नरम मालूम होय उसमें मूत्र कृच्छ्रकीसी पीडा होय फल और कोश दोनों इधर उधर चलायमान होय ॥
विकित्ता ।

संखेद्यमूत्रप्रभवांस्त्रखंडेनवेष्टयेत् । सीवन्याःपार्श्वतोऽधस्तात्
विधेद्रीहिमुखेनवै । मुष्ककोशमगच्छंत्यामंत्रवृद्धौविचक्षणः ।
वातवृद्धिक्रमंकुर्याद्दाहस्तत्राग्निनाहितः ॥

अर्थ—मूत्रजन्य अंडवृद्धिपर प्रथम बफारा देकर वल्लसे लपेट देवे, अंड-
कोशकी सीवन एकतरफ नीचेके अंगमें शालीके कांटे से (धानके कांटेसे)
बेध करे अर्थात् छिद्रकर देवे और जो अंडवृद्धि अंडके गोली पर्यंत न गई
हो, उसपर वातजअंडवृद्धिके ऊपर जो उपचार कहे हैं वो करे और उसपर
दाग देना हितकारी है ॥

अंत्रज वृद्धि ।

वातकोपिभिराहारैः शीततोयावगाहनैः । धारणेरणभाराध्व-
विपमांगप्रवर्तनैः । क्षोभणैः क्षुभितोन्यैश्चक्षुद्रांत्रावयवंयदा ।
पवनोविगुणीकृत्यस्वनिवेशादधोनयेत् । कुर्याद्विक्षणसंधि-
स्थोऽग्रन्थ्याभंश्वयथुंतथा॥

अर्थ—वात कोप कारक आहारके सेवन करनेसे, शीतल जलमें प्रवेश करके
स्नान करनेसे, उपस्थित मूत्रादि वर्गोंके धारण अप्राप्तवग (अर्थात् करनेकी
इच्छा न होय) उसको बलपूर्वक प्रेरणा करनेसे, भारी बोझके उठानेसे, अति
मार्गके चलनेसे अंगोंकी विषम चेष्टा (अर्थात् टेटा, तिरछा अंगकरके गमना-
दिक करना) बलवानसे बेर करना, कठिन धनुषका संचना इत्यादि पैसेही
और कारणोंसे कुपित भई जो वायु सो छोटी आंतोंके अययवोंके एक देशको
विगाडकर अर्थात् उनका संघोचकर अपने रहनेके स्थानसे उसको नीचे लेजाय
तब वक्षणसंधिमें स्थित होय उस स्थानमें गांठके समान सूजनको मगट करे ॥

उपेक्षितअंडवृद्धिकापरिणाम ।

उपेक्ष्यमाणस्यचमुष्कवृद्धिमाध्मानरुक्स्तंभवतीसिवायुः ।

प्रपीडितोतःस्वनवान्प्रयातिप्रध्मापयन्नेतिपुनश्चमुक्तः ॥

अर्थ—जिस अंडवृद्धिसे अफरा होय, पीडा होय, जडताहोय, उसकी उपेक्षा करनेसे अर्थात् औषध न करनेसे, तथा अंडकोशोंके दाबनेसे जो वायु 'कोंकों' शब्द करै तथा हातके दाबनेसे वायु ऊपरको चडजाय और छांडनेसे फिर नीचे उतरकर अंडोंको फुलाय दे ये होय है ॥

असाध्यलक्षण ।

क्षुद्रांत्रावयवाश्लेष्मासुष्कयोर्वातसंचयात् ।

अंत्रवृद्धिरसाध्योयंवातवृद्धिसमाकृतिः ॥

अर्थ—छोटी आंतोंके अवयव (अंग वाला) कफ वातके संचयसे सुष्कके विषे प्राप्त होय, तथा जिस्में वातके लक्षण कहे वो सब मिलते होय, वो अंड-वृद्धि असाध्य है वर्ध्म अर्थात् वदरोगका निदान ग्रन्थान्तरमें लिखा है ॥

शिराबंध ।

शंखोपरिचकर्णातेत्यक्त्वासेवनिमादरात् ।

व्यत्यासाद्वाशिराबंध्येदंत्रवृद्धिनिवृत्तये ॥

अर्थ—शंख, अर्थात् फनपदीके ऊपर फानके समीप सेवनी अर्थात् संधिओंको छोड़कर बंध शिराबंध करे, वो व्यत्यास करके अर्थात् दहने तरफ अंत्रवृद्धि होय तो बायें तरफ, और बायें तरफ होय तो दहने तरफकी शिराबंध करे, तो अंत्रवृद्धिकी निवृत्ति होय ॥

कर्णशिराबंध ।

कर्णकोशस्यमध्येतुरक्तानिर्हारयेच्छिराम् ।

उभाभ्याद्विशिरेवेध्यतेनवातसुखंभवेत् ॥

अर्थ—फानके बीचकी रक्तयुक्त शिराको बंध दोनों तरफ वृद्धि होतोदोनों फानोंकी शिराबंध करे, तो अंत्र वृद्धिवालेको सुख होय ॥

गोमूत्रयोग ।

गुग्गुलुरुघुतलंवागोमूत्रेणपिपेत्रः ।

अंत्रवृद्धिनिहंत्याशुचिरकालानुबंधिनीम् ॥

अर्थ—गूगल अथवा अंडीके तेलको गोमूत्रके साथ पीये तो बहुत दिनोंकी अंत्रवृद्धिका नाश होय ॥

नारायणतैल ।

सक्षीरंवापिवेतैलमासमेरंडसंभवम् ।

तैलंनारायणंयोज्यंपानाभ्यंजनवस्तिषु ॥

अर्थ—दूधकेसाथ अंडीका तेल अथवा अंडीकी सपेद मिगी इनको औटा कर पीवे अथवा नारायण तैल पीना लगाना बस्ती इस विषयमें अर्थात् अंडवृद्धि पर योजना करे ॥

अंगुष्ठपर दाग ।

अंगुष्ठमध्यत्वक्छित्वाद्देहदंगविपर्ययम् ।

अर्थ—पैरके अंगुठके बीचोबीच त्वचाको छेदन करके दाग देवे तो विपरीततासे देवे जैसे यदि दहनी तरफ होंवे तो बाई तरफ और बाई तरफ होयतो दहनी तरफ दाग देवे ॥

वचादिलेप ।

वचासर्पपक्केनप्रलेपःशोफनाशनः ॥

अर्थ—वच सरसों इन दोनोंको पीस लेपकरे तो सूजनको नाशकरे ॥

कज्जलि ।

गोमूत्रैरंडतैलाभ्यारसगंधककज्जली ।

पीत्वानिहंतिसहसावृद्धिवृषणसंभवाम् ॥

अर्थ—गोमूत्र अंडीका तेल इनके बराबर पारा और गंधक इनकी कज्जलीको सेवन करे तो तत्काल अंडवृद्धिको नाश करे ॥

अजाज्यादिलेप ।

अजाजीह्वपुपाकुष्ठंगोमयंवदारान्वितम् ।

कांजिकेनतुसंपिष्टंकुर्याद्विध्वंसप्रलेपनम् ॥

अर्थ—जीरा हाठवेर कूट गौका गोबर वेर इनको कांजीमें पीस लेपकरे तो बध्म (बद) और अंत्रवृद्धिको नाशकरे ॥

लाक्षादिलेप ।

लाक्षाकरंजबीजंचण्डोदारुचणैरिकम् । कुंदरंचसमंकृत्वाचूर्ण-

येन्मतिमान्भिषक् । कांजिकेनतुसंपेष्यतथाश्वयथुनाशनः ॥

अर्थ—लाक्ष, करंजके बीज सोंड देवदारु और गेरु इनको बराबर कुंदरू तणले सबका चूर्ण करके कांजीमें मिलाय कुछ गरम २ लेप करे तो यह अंत्रवृद्धि सूजन इनको नाश करे इसमें संदेह नहीं ॥

पिप्पल्यादिलेप ।

पिप्पलीजीरकंकुण्ड्वदरंशुष्कगोमयम् ॥

कांजिकेनप्रलेपोयमंत्रवृद्धिविनाशनः ॥

अर्थ—पीपल, जीरा, कूठ, बेर, सुखाया गोबर, इनको कांजीमें मिलायके लेप करे तो अंडवृद्धिको नाश करे ॥

देवदार्वदिलेप ।

देवदारुमिशोवासाटांकलीमूलसैंधवम् ।

क्षौद्रयुक्तैश्वतैलेपोवृद्धिमंत्रभवांजयेत् ॥

अर्थ—देवदारु, सोंफ, अडूसा, अरनीकी जड़, सैधानिमक, शहत, इनका लेप अंडवृद्धिको जीते ॥

दावीं चूर्ण ।

दावींचूर्णगवामूत्रैर्निपीतंमुष्कवृद्धिजित् ॥

अर्थ—दारुहलदीका चूर्ण गोमूत्रके साथ पीवे तो अंडवृद्धि जीते है ॥

रास्नादि फाय ।

रास्नायष्टचमृतैरंडपटोलरेणुकावला ।

वृषः स्यात्कथितोवृद्धिह्न्याच्चित्रकतैलवान् ॥

अर्थ—रास्ना, मुलहठी, गिलोय, अंड, पटोल पत्र, रेणुक बीज, खिरेटी और अडूसा इनके फाटेमें चित्रकका चूर्ण और अंडीका तेल इनको मिलायके पीवे तो अंड वृद्धिको नाश करे ॥

एरंड तैल ।

तैलमैरण्डजंपीत्वावलासिद्धंपयोन्वितम् ।

आध्मानशूलोपचितामंत्रवृद्धिजयेन्नरः ॥

अर्थ—खिरेटीके फाटेमें अंडीका तेल डालके पीवे, तो अफरा, शूल, इन करके युक्त अंड वृद्धिको जीते ।

त्रिफलादि फाय ।

फलत्रिकोद्भवंकाथंगोमूत्रेणैवपाचयेत् ।

वातश्लेष्मकृतंहंतिशोथंवृषणसंभवम् ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आंवला, इनका गोमूत्रमें फाटा करके पीवे तो वात कफसे उत्पन्न हुए वृषण शोफको नाश करे ।

रास्नादि द्वितीय ।

रास्नामृतवलायष्टीगोकंठैरंडजःशृतः ।

एरण्डतैलसंयुक्तोवृद्धिमंत्रभवांजयेत् ॥

अर्थ-रास्ना, गिलोय, खिरंटी, मुलहठी, गोंखरू और अंडकी जड़ इनके काठमें अंडकी तेल डालके पीवे तो अंत्र वृद्धि दूर होय ॥

मांस्यादि घृत ।

मांसीकुष्ठंपत्रकैलारास्नाशुंगीचचित्रकम् । कृमिघ्नमश्वगंधाच
शैलेयंकटुरोहिणी । सैन्धवंतगरंचैवकुटजातिविपैस्समैः । एतै
श्चकार्पिकैःकल्कैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् । वृषमुंडीनवरंडनिवप
त्रभवंरसम् । कंटकार्याश्चापिदुग्धंप्रस्थंतस्मिन्विनिक्षिपेत् ।
सिद्धमेतद्घृतंपीतमंत्रवृद्धिव्यपोहति । वातवृद्धिपित्तवृद्धिमे
दोवृद्धिमथापिवा । सूत्रवृद्धिचहंत्येतत्सर्पिराशुनसंशयः ॥

अर्थ-जटामांसी, कूठ, पत्रज, इलायची, रास्ना, कांकडासिमी, चित्रक,
घायविडंग, असगंध, शिलाजीत, कुटकी, सैंधानिमक, तगर, कूडा और
अतीस ये सब एक २ तोले ले कल्क करके इसमें ६४ तोले घी डालके आँटावे
फिर अडूसा, गोरखमुंडी, अंड और नीम इनके नवीन पत्ते फटेरी इनका रस ६४
तोले दूध ६४ तोले ये डाले फिर मंदापिपर तो घृतसिद्ध होय इस घृतके सेवन
करनेसे अंड वृद्धिको नाश करे वो अंड वृद्धि वात पित्त मेद सूत्र इनमेंसे
किसी करके उत्पन्न हुई ही उसको अवश्यनाश करे इसमें संशय नहीं है ॥

पुनर्नवादि तैल ।

पुनर्नवामृतादारुसक्षारलवणत्रयम् । कुष्ठसंठीवचामुस्तारास्नाक
टफलपुष्करम् । यवानीहपुपाहिगुशताह्वाचाजमोदकः । विडं
गातिविपायष्टी पंचकोलकसंयुतैः । एतैःकल्कसमैरक्षस्तेलंप्र
स्थंविपाचयेत् । गोमूत्रं द्विगुणं देयं कार्जकंचतथैवच । पुनर्न
वाद्यमेतच्चवस्तौपानेतथोत्तमम् । कट्यूरुपृष्टमेद्रेपुकुक्षीचवृ
पणाश्रितम् । कफवातोद्भवंशूलमंत्रवृद्धिविनाशनम् ॥

अर्थ-पुनर्नवा, गिलोय, देवदारु, निमक, जवास्वार, सामुद्रनिमक, मुहागा,
सैंधानिमक, कचियानिमक, कूठ, कचूर, वच, नागरमोया, रास्ना, फायफल,

पुहकरमूल, अजमायन, हाऊवेर, हींग, शतावर, अजमोदा, वायविडंग अतीस मुलहठी, सोंठ, मिरच, पीपल, चव्य चित्रक इन सबको समान भाग लेवे, और सबकी बराबर बहेडा लेवे, सब ६४ तोले तेलमें डालके औटावे, फिर इसमें दूना गोमूत्र और कांजी मिलावे, इसको पुनर्नवादि तेल कहतेहैं, इसको पीना और बस्तीविषयमें योजना करे तो कमर, पीठ, ऊरू, लिंग, कूख, घृषण (पोते) इन ठिकानेका कफ वातसे उत्पन्न शूल अंत्रवृद्धि इनका नाश होय ॥

वृद्धिनाशन रस ।

रसगंधौसमौतायां द्विगुणं हेममाक्षिकम् । पथ्यारसेन त्रिदिनं रुबु
तैलेन वासरम् । मर्दितं सिद्धिमायातिरसेन्द्रो वृद्धिनाशनः ॥

अर्थ-पारा, गंधक, समान भागले और दोनोंके बराबर सुवर्ण माक्षिक इन तीनोंको एकत्र करके हरडके काठेमें तीन दिन खरल करे, फिर अंडीके तेलमें १ दिन खरल करे, तो यह वृद्धिनाशन रस सिद्ध होय, यह अंडवृद्धिकी नाशकरे ॥

अनुपान ।

सपथ्यारुबुतैलेन सेवितो वल्लमात्रकः ।
मुष्कवृद्धिजयत्याशुकर्णस्फोटरसेनवा ॥

अर्थ-प्रथम कहा हुआ रस, हरडका चूर्ण, अंडका तेल, इनके बराबर, अथवा कर्णस्फोट रुखडीके रसमें मिलाय १ बल्ल सेवन करे तो अंडवृद्धिकी नाशकरे ॥

सर्वांगसुंदर रस ।

बलातैलेन वालिह्याच्चणककाथतोपिवा ।
चेतकीयवशूकाभ्यां पथ्यारुबुकतैलयुक् ।
वृद्ध्याटवीकुठारोयं रसः सर्वांगसुंदरः ॥

अर्थ-अथवा वही रस खिरटीका तेल, अथवा चनेके काठे अथवा हरड जवाखार, इनका चूर्ण अथवा अंडका तेल, इनमेंसे किसी एकके साथ चाटे तै; यह सर्वांगसुंदर रस वृद्धिरूपी अटवीको कुठारके समान है ॥

कुरंदलक्षण ।

अत्यभिप्यंदिगुर्वम्लसेवनान्निचयंगतः ।
करोति ग्रंथिवच्छोफंदोपोवंक्षणसंधिषु ॥

अर्थ—अभिष्यंदि वस्तुके खानेसे, भारी अन्नके खानेसे, कच्चे अन्नके खानेसे वृद्धिको प्राप्त भये दोष अथवा अत्यभिष्यंदि गुर्वाम इसजगै “अत्यभिष्यंदि गुर्वन्न शुष्क पूज्यामिपाशनात्” ऐसाभी पाठ है अर्थात् अभिष्यंदि भारी अन्न के खानेसे तथा सूखा और पूज्य कहिये गौ आदिके मांस खानेसे दोष (वात पित्त कफ) कुपित होकर बंक्षणकी सन्धिमें अर्थात् वस्तिस्थानके समीप जिन को नरे कहतेहैं उनमें सूजनको प्रगट करे ॥

वर्ध्मरोगपर कल्क ।

भृष्टश्चैरंडतैलेनकल्कःपथ्यासमुद्भवः ।

कृष्णासैधवसंयुक्तोवर्ध्मरोगहरःपरः ॥

अर्थ—अंडीके तेलमें हरड पीपल सैधानिमक इनके चूर्णको चुपडके सेवन करे तो अत्यंत वर्ध्मरोग हारक होताहै ।

इन्द्रवारुणिमूलयोग ।

इंद्रवारुणिकामूलतैलपुष्करजंतथा ।

संमर्द्यचसगोदुग्धंपिवेजंतुःकुरंडके ॥

अर्थ—इन्द्रायणकी जडको अंडीके तेलमें मिलायकै गौके दूधके साथ पीवे तो कुरंड रोगको नष्टकरे ॥

कुरंडपरलेप ।

गवांघृतेनसंयुक्तंकृत्वासैधवचूर्णकम् ।

पिवेत्सप्तदिनयावत्तावच्छेषःकुरंडके ॥

अर्थ—गौके घीमें सैधानिमक डालकै सात दिन पीवे और इतने ही दिन कुरंड पर लेप करना चाहिये ॥

प्रकारांतर ।

संचूर्णितंसैधवमाज्ययुक्तंसंमर्द्यतोयस्थितमेव सोष्णम् ।

मुहुर्मुहुयःकुरुतेप्रलेपंविलीयतेतस्यकुरंडरोगः ॥

अर्थ—सैधानिमकका चूर्ण और घी इनको जलमें खरल करके इसका वारंवार लेप करे तो कुरंड रोग नष्ट होय ।

कुरंडज्वरपर ।

एरंडतैलसंमिश्रंकासीसंसैधवंपिवेत् ।

वस्त्रेणवृषणंघ्वाकुरंडज्वरनाशनम् ॥

अर्थ—अंडीका तेल और संधानिमक इसमें कसीसको मिलायके पीवे और वृषण (पौते) लंगोटसे कस देवे तो कुरंड ज्वरका नाश होय ॥
लेप ।

तंदुलवारिविमिश्रंघृतपूरसंज्ञमुच्यतेलोके ।
तन्मूलपिष्टलेपंकुरंडगलगंडयोःकुर्यात् ॥

अर्थ—चावलके धोवनमें घृत करंजकी जडको मिलाय इसका लेप कुरंड और गंडमाला इन पर करे ॥

प्रकारांतर ।

ईश्वरीमूलमेरंडमूलमूपकचर्मच ।
प्रलेपःस्यात्कुरंडाख्यरोगविच्छेदकारकः ॥

अर्थ—वाँझककोडाकी जड अंडीकाजड मूसाकर्नीकी छाल इनका लेप कुरंड रोगको नाश करे ॥

ब्राह्मणयष्ट्यादि ।

सुपेपितंब्राह्मणयष्टिकायामूलंसमतंदुलधावनेन ।
निहंतिलेपाद्गलगंडमालांकुरंडमुख्यानखिलान्विकारान् ॥

अर्थ—भारंगीकी जड चावलके धोवनमें पीसके गंडमाला, कुरंड इनपर लेप करे तो इन दोनों रोगोंका नाश करे ॥

इन्द्राणी मूलयोग ।

वातारितैलमृदितंसुरवारुणीजंमूलंनरः पिवतियोमसृणंविचूर्ण्य ।
गव्येनिधायपयसिन्निदिनावसानेतस्यप्रणश्यतिकुरंडकृतोविकारः ॥

अर्थ—अंडीके तेलमें इन्द्रायणकी जडको पीसके गौके दूधके साथ तीन दिन बराबर पीवे तो कुरंड रोगको नाश करे ॥

लेप ।

तरुमूपिकचर्मणानिवद्धःप्रविलेपादथचेश्वरीजटायाः ।
उपशांतिमुपैतिमानवानामचिरेणैवकुरण्डसंज्ञरोगः ॥

अर्थ—मूसा करनीकी छाल बाँधे अथवा वाँझककोडेकी जडको पीसके लेप करे तो कुरंड रोगको तत्काल शांति करे ॥

बालकके कुरंडपर ।

यःपित्तदोषेणकुरंडरोगोभवेच्छिशोर्दक्षिणमुष्कभागे ।

वस्तोर्द्धभागश्रवणस्यविंध्येद्रामस्यवामेप्रभवेपरस्य ॥

अर्थ—यदि पित्तके दोषसे बालकके दहने तरफ अंडपर कुरंड रोग होय तो उसके बाँए कानकी फस्त खोले और बाँए तरफ हाँय तो दहने तरफ कानकी नसको खोले ॥

हरितकी चूर्ण ।

गोमूत्रसिद्धारुवुतैलभृष्टांहरितकीसैंधवचूर्णयुक्तम् ।

खादेन्नरःक्रोष्णजलानुपानान्निहंतिकूरंटमतीववृद्धम् ॥

अर्थ—हरडको गोमूत्रमें ओटायकै अंडीके तैलमें भूने इसका चूर्ण सैंधानिमक मिलायकै गरम जलके साथ पीवे तो बहुत दिनका कुरंड रोगका नाश करे ॥ शंखूकादि लेप ।

शंखूकोदरनिहितंगव्यंसप्ताहमातपेसर्पिः ।

स्थितमपिहंतिकुरंडंसैंधवचूर्णान्वितंलेपात् ॥

अर्थ—गौका घी सात दिन छोटे २ शंखोंमें भरकै धूपमें रख देवे; इसमें सैंधानिमक मिलायकै कुरंडपर लेपकरे तो उसका नाश होय ॥

सैंधवादि अनुवासनवस्ति ।

सैंधवंमदनंकुष्टंसिताह्वानिचुलंबचा । ह्रीवैरंमधुकंभाङ्गीदेव
दारुःसनागरम् । कट्फलंपौष्करंभेदाचविकाचित्रकंसठी । वि
डंगातिविपाश्यामाहरेणुर्नलिनीस्थिरा । त्रिल्वाजमोदारसना
चदंतीकृष्णाचतैःसमैः । साध्यमेरंडजंतैलंतैलंवाकफवातनुत् ।
वर्ध्मोदावर्तगुल्मार्शः प्रीहमेहाब्ज्यमारुतात् । आनाहमश्मरी
चैवहरेत्तदनुवासनात् ॥

अर्थ—सैंधानिमक, मैनफल, कूठ, वावर्ची, पनस, वच, नेत्रवाला, मुलहदी भारंगी, देवदारु, सोंठ, फायफल, पुहकरमूल, मेदा, बव्य, चित्रक, कचूर, वायाविडंग, अतीस, हरड, रेणुकबीज, कमलकाकंद, सालपर्णी, बेलफल, अजमोदा, रास्ना, जमालगोट्टीकी जड़ और पीपल, ये पदार्थ समान भागले। इसमें अंडीका तैल डालकै सिद्ध करे, यह कफवात, बद्ध उदावर्त, गाला, ववासीर, प्रीह, प्रमेह, आडचवात, अनाह, पथरी, इनको अनुवासन वस्ती करनेसे नाश करे ॥

वर्ध्मरोगपरविल्वादि चूर्ण ।

मूलं विल्वकपित्थयोररलुकस्याग्नेर्वृहत्योर्द्वयोः श्यामापूतिक
रंजशिशुकतरोर्विश्वौषधारुष्करम् । कृष्णाग्रंथिकवेल्लपंचलव
णक्षाराजमोदान्वितपीतंकांजिकमुष्णतोयमथितैश्रुणीकृतं व
र्ध्मजित् ॥

अर्थ—बेलकीजड, कैथाकी जड, टेट्ट, चित्रक, कटेरी, बडीकटेरी, निसांय
पूतिकरंज, सहजना, सोंठ भिलावें, पीपल, पीपरामूल, मिरच, पांचोनिमक
जवाखार, अजमोद, कचूर, इनका चूर्ण करके इसको कांजी, गरम जल,
अथवा छाँछ इनके साथ पीवे तो बदरोगको दूर करे ॥

श्वदंष्ट्रादिचूर्ण ।

श्वदंष्ट्रासिंधुविश्वहृदाहृदारुमिहराश्मभित् ।

लोहचूर्णघृतेनाद्याद्रातवर्ध्महरंपरम् ॥

अर्थ—गोखरू, सैंधानिमक, सोंठ, नागरमोया, देवदारु, वायविडंग पापा-
णभेद, लोहेकी भस्म, इनका चूर्ण पीके साथ सेवन करे तो वादीकी बद
नाश होय ॥

वर्ध्मादिलेप ।

सद्योमृतस्यकाकस्यमलेनपरिलेपनात् । वर्ध्मरोगःप्रयात्याशु
रविणातिमिरंयथा । पक्केतुदारणंकृत्वाप्रकर्तव्याव्रणक्रिया ॥

अर्थ—बद रोगीवालेको तत्कालका मरा हुआ कौआके मलका लेप करे
तो जैसे मूर्यांदय होनेसे अंधकार नष्ट हो उसी प्रकार नाश होय, यदि पक गई
होवे तो उसको फोडकर व्रणपर जो चिकित्सा कही है वो करनी चाहिये ॥

अंत्रवृद्धिपरपध्य ।

संशोधनं वस्तिरसृग्विमोक्षःस्वेदःप्रलेपोरुणशालयश्च । एरंड
तैलंसुरभीजलंचधन्वामिपंशिशुफलंपटोलम् । पुनर्नवागोक्षुर
काग्निमंथतांबूलपथ्यारसनारसनम् । वाडिंगनंगृजनकंमधु
निकौंभघृतंतप्तजलंचतक्रम् । अर्धेदुवद्वंक्षणयोश्चदाहोव्यत्यास
तोवाहुशिराव्यधश्च । यथामयंशस्त्रविधिंश्वर्गोदुर्वर्ध्मवृध्याम
यिनांसुखाय ॥

अर्थ—संशोधन, वस्तिकर्म, फस्त खुलाना, स्वेदन, प्रलेप, लाल चावल,
अंडीका तेल, गोमूत्र, मरुदेशका मांस, सहजनेकी फली, परवल, पुनर्नवा,

गोखरू, अरणी, ताम्बूल, हरड, सरल, लहसन, चाडिंगन गाजर, शहत, पुराना भरा धी, गरम जल, मट्टा, जो आमवातका नाशक और अग्निका बढाने वाला, अन्नपानी, पुरानी मदिरा, अर्द्धचन्द्रके समान दोनों वंक्षणों अर्थात् ऊरुकी संघर्षमें दागना, व्यत्याससं अर्थात् बाँई और होयतो दाहिनीका और दाहिनी ओर होयतो बाँई बाँहकी नसमें फस्त खोलना, यह सब शास्त्रोक्त वर्ग वर्ध्मवृद्धि रोगवालेको मुखदाई है ॥

अंत्रवृद्धिपरअपथ्य ।

अनूपमांसानिदधीनिमापाःपिष्टान्नदुष्टान्नमुपोदिकांच ।

गुरुणिशुक्रोत्थितवेगरोधःस्युर्वर्ध्मवृध्यामयिनाममित्रम् ॥

अर्थ-अनूपदेशके जीवोंका मांस, दही, उडद, दूध, पिसा अन्न, पोईका शाक, भारी वस्तु, वीर्यके रोकना ये सब वर्ध्मवृद्धिके रोगियोंको अपथ्य है ॥

वेगाहतंपृष्ठयानंव्यायाममैथुनंतथा ।

अत्याशनमथाध्वानमुपवासंपरित्यजेत् ॥

अर्थ-वेगोंका रोकना, यानपर बैठना, व्यायाम करना, मैथुन करना, ज्यादा भोजन करना, रास्ता चलना और उपवास (अभक्षण) इन सबका परित्याग करना चाहिये ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरेअष्टादशोऽध्यायः, पु (दशेऽध्यायानिदानाधिकित्वात्समाप्तः) ।

गलगंड ।

गलगंडका कर्मविपाक ।

गलगंडीगणद्रव्यहर्ताभवतिमानवः । दानेनतत्प्रतीकारंवक्ष्यामिशृणुभास्कर । माणिक्यंपद्मरागंचवज्रंमौक्तिकमेवच । वैदूर्यपुष्परगंचवज्रंमरकतंतथा । एभिर्मालांप्रकुर्वीतसूत्रमप्यत्रराजतम् । अलाभेमौक्तिकाद्यन्यतमैर्मालांप्रकल्पयेत् । सर्वत्रराजतंसूत्रमितिर्वेदप्रकल्पितम् । ताम्रपात्रेविनिक्षिप्यतिलानामुपरिन्यसेत् । तिलानांचपरीमाणंद्रोणपंचकमिष्यते । ततोर्ध्वनवग्रहादिमहाशांतिकुर्यात् । रत्नमालांपूजयित्वावेदशास्त्रविदेब्राह्मणायदद्यात् ॥

अर्थ—जो प्राणि पंचायती द्रव्यको चुराता है उसके गलगंडरोग होता है उसका प्रतीकार कहताहूँ— मानिक, पन्नराग, हीरा, मोती, वैडूर्य, पुखराज, पन्ना, इनकी सुवर्णके तारमें माला करके देवे, यदि ये संपूर्ण रत्न न मिले तो इसमेंसे किसी एककी माला बनायके तारमें तिल १०२४ तोले भर उसपर रखके फिर नवग्रहोंकी महा शांति करके तथा उस मालाका पूजन करके वेद शास्त्रज्ञाता ऐसे ब्राह्मणको दानकर देवे ॥

गलगंडनिदान ।

निवद्धःश्वथथुर्यस्यमुष्कवल्लंबतेगले ।

महान्वायदिवाह्रस्वोगलगण्डंतमादिशेत् ॥

अर्थ—जिसके गलेमें अनुबन्ध युक्त बड़ी अथवा छोटी अंड कौशके समान सूजन होकर लटके उसको गलगंड कहतेहैं ॥

संप्राप्ति ।

वातःकफश्चापिगलेप्रदुष्टौमन्येसमाश्रित्यतथैवमेदः ।

कुर्वतिगंडंक्रमशस्त्रिलिङ्गैःसमन्वितंतंगलगंडमाहुः ॥

अर्थ—गलेमें दुष्ट भये वात कफ और उसी प्रकार मेद गलेकी दोनों मन्या नाडीका आश्रय लेकर क्रमसे आपअपने लक्षण संयुक्त गंड (गोला) उत्पन्न करेहैं उसको गलगंड रोग कहतेहैं । ये रोग वात कफ और मेद इन कारणोंसे तीन प्रकारका है ये रोग अपनेही स्वभावसे पैत्तिक नहीं होय है, जैसे चातुर्धिकज्वर अपने प्रभावसे जंघामें कफका और मस्तकमें वातका प्रथम आताहै इसमेंभी पित्तका नहींहोय है, उसी प्रकार इस रोगमेंभी जानो ।

गलगंडकीचिकित्सा ।

जिह्वाधःपार्श्वयोर्मूलाच्छिराद्द्रादशकीर्तिताः । तासांस्थूलंश
रेद्वेचछिद्यात्तेचशनेःशनेः।वडिशेनैवसंगृह्यकुशपत्रेणबुद्धिमान्॥
सुतेरक्तेव्रणेतस्मिन्दद्यात्सगुडमार्द्रकम् । भोजनंचानभिप्यंदि
यूपंकौलित्यमिप्यते । यवमुद्गपटोलादिकटुलक्षंतुभोजनम् ।
छर्दिचरक्तमुक्तिंवागलगंडेप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—जिह्वाके नीचे दोनों तरफ वारह शिरा (नस) हैं उनमेंभी बड़ी दो हैं उनको आँफडेंसे खींचके कुशाके पत्रसे बुद्धिमान् वैद्य धरि २ छेदन करे जब रुधिर निकल जावे तब उस घणपर गुड और अदरक रखदेय तथा कृषि न

करे ऐसे रुक्षात्र कुलयीकी दाल जौ, यव, मूंग परवल तथा चरपरा और रुक्ष
ऐसा भोजन वमन रक्तस्राव ये सब यत्र गलगंडरोगपर करे ॥

सर्पपादिलेप ।

सर्पपाशिशुबीजानिशणबीजातसीयवाः । मूलकस्यचबीजा-
नितक्रेणाम्लेनपेपयेत् । गंडानिग्रंथयश्चैवगंडमालास्तथैवच ।
आलेपात्तेनशाम्यंतिविलयंयांतिवाचिरात् ॥

अर्थ—सरसों संहजनेके बीज, सनके बीज जौ अलसी मूलीके बीज इनको
सूटी छोंछमें पीसके लेप करे तो गलगंड ग्रंथी (गाँठ) गंडमाला ये रोग
शांति होय अथवा नाश होवे ॥

पलाशमूललेप ।

तंदुलोदकपिष्टेनपरिलेपोविधानतः ।

हितःकर्णपलाशस्यगलगंडःप्रशाम्यति ॥

अर्थ—पलाश (टाक) की जड़को चावलोंके धोवनमें पीसके कोंनोपर
लेप करे, तो हितकारी होय, तथा गलगंडको नाश करे ॥

अमृतादि तैल ।

तैलंपिवेच्चासृतवल्लिनिवहिंम्वाभयावृक्षकपिप्पलीभिः ।

सिद्धंवल्लाभ्यांचसदेवदारुहितायनित्यंगलगंडरोगे ॥

अर्थ—गिलोय नीमकी छाल, हींग, जंगीहरड कुडैकी छाल, पीपल,
खिरेटी, नागवला, और देवदारु, इनके कच्चेमें तैल, सिद्ध करे, इसके
पानेसे गलगंड रोगको हित होय ॥

कटुतुंबी तैल ।

विडंगक्षारसिंधूआरास्नाग्निव्योपदारुभिः । कटुतुंबीफलरसे

कटुतैलंविपाचितम् । चिरोत्थमपिनस्येनगलगंडविनाशयेत् ॥

अर्थ—वायविडंग, जवाखार, सैधानिमक, वच, रास्ना, चित्रक, सोंठ,
मिरच, पीपल, देवदारु इनका काटा तथा कड़वी तुंबीका रस इनको तैल
डालके सिद्ध करे, इसकी नस्य देवे, यह बहुत दिनोंके गलगंडको नाश करे ॥

तुंब्यादि तैल ।

तुंबीरसेनकटुकेनचतुर्गुणेनकल्कीकृतैर्मगधजादिगणोपधैश्च ।

तैलंशृतंहरतिदेहिपुगंडमालामत्युल्वणामपिगलेगलगंडरोगान् ॥

अर्थ-चौगुना कटुई तुंबीकारस इसमें १ गुना पिप्पल्यादि गणकी औषधों को पीसके मिलायदे फिर इनकी बरार तेलको औंटायके गंडमाला और गलगंड इनपर लगावे तो इसको नाशकरे तेल तिलीका लेवे ॥

वातिक गलगंड ।

तोदान्वितः कृष्णशिरावनद्धःश्यावोरुणोवापवनात्मकस्तु ।

पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्धिपाकोयदृच्छयापाकमेयात्कदाचित् ।

वैरस्यमास्यस्यचतस्यजंतोर्भवेत्तथातालुगलप्रशोपः ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके पीडा युक्त नीली नाडियोंसे युक्त कृष्ण पीत तथा लाल रंगयुक्त कठोरता युक्त, बढकर पकनेवाला, कभी अचानक पकनेवाला, मुखकी विरसता तालु गलका शोष इन लक्षणोंवाला गलगंड रोग होवे तो वह वातसे उत्पन्न हुआ कहना ॥

जलकुम्भी भस्मयोग ।

जलकुंभीकजंभस्मपक्त्वागोमूत्रगालितम् ।

पिवेत्कोद्रवतक्राशीगलगंडनिवृत्तये ॥

अर्थ-कांटेदार सेवंतीकी भस्मको गोमूत्रमें डालके औंटावे फिर छानके पीवे और कोदोंका भात और छाँछ पथ्यमें खाय तो गलगंडनिवृत्ति होय ॥

चिकित्साक्रम ।

स्वेदनिलोत्थेगलगंडकादौनाडयानिलग्नौपधपत्रपिंडैः ।

अर्थ-वातजन्य गलगंडपर कमलकी नालं अथवा इसी प्रकारके पदार्थोंसे सेक अथवा वातनाशक वृक्षके पत्रोंकी लुगदी बनायके बाँधे ॥

वातगलगंडाचिकित्सा ।

निचूलंशिथुमूलानिदशमूलमथापिच ।

आलेपनंवातगंडेसुखोष्णसंप्रशस्यते ॥

अर्थ-आवकी जड, तथा सर्हिजनेकी जड और दशमूल इनको एकत्र पीस कुछ २ गरम कर इसका वातजन्य गलगंडपर सुखोष्ण लेप करे ॥

मंडूर रोह ।

महिपीमूत्रविमिश्रलोहमलंसंस्थितंघटंमासम् ।

अंतर्धूमविदग्धंमधुनागलगंडनाशनंलीढम् ॥

अर्थ—लोहेकी कीटीको एक महीने मट्टीके वरतनमें भेंसका मूत्र भरके उसमें डालके धर देवे फिर इसको गजपुटमें रखके फूँक देवे, इसको शहतमें मिलायके खानेको देवे, तो गलगंडका नाश होय ॥

सूर्यावर्त्तादि लेप ।

सूर्यावर्तरसोनाभ्यांगलगंडोपनाहनम् ।

स्फोटाःस्त्रावैःशमंयातिगलगंडोनसंशयः ॥

अर्थ—नीला भाँगरा और लहसन इनकी लुगदी करके गलगंडपर बांधे तो फोडा होकर स्राव होय, इससे गंडमालाका उपशम होवे, इसमें संशय नहीं ॥

अलावुजलपान ।

तिक्तालावुफलेपकेसताहमुपितंजलम् ।

गलगंडनिहंत्याशुपानात्पथ्यानुशीलिनः ॥

अर्थ—पकी हुई कड़ुई धीयामें सात दिन जल भरके धर रखे, तथा इसको पौवे और पथ्यसे रहे तो गलगंडको नाश करे ॥

जीर्णकर्कारुयोग ।

जीर्णकर्कारुकरसोविडसैंधवसंयुतः ।

नस्येनतरुणंहतिगलगंडेनसंशयः ॥

अर्थ—पुरानी ककडीके रसमें विडनिमक और सैंधानिमक डालके नस्य देवे तो बडी हुई गलगंडकी नाश करे ॥

निर्गुडी मूलयोग ।

श्वेतापराजितामूलप्रातःपिष्ट्वापिवेन्नरः ।

सर्पिणानियताहारोगलगंडप्रशांतये ॥

अर्थ—सपेद निर्गुडीकी जडको पीसके प्रातःकाल धीके साथ सेवन करे तथा धी भातका पथ्य करे तो गलगंड शांति होय ॥

कफजगलगंड ।

स्थिरः सवर्णोगुरुग्रकंडूः शीतोमहांश्वापिकफात्मकस्तु ।

चिराभिवृद्धिर्भजतेचिराद्वाप्रपच्यतेर्मदरुजः कदाचित् ।

माधुर्यमास्यस्यचतस्यजंतोर्भवेत्तथातालुगलगलप्रलेपः ॥

अर्थ—कफकी गलगंड स्थिर, त्वचाकी रंगके समान वर्ण होय, भारी होय गुजली बहुत चले, शीतल और बडी होय, यह बहुत दिनमें बडे और बहुत

कालमें पके पीडा थोड़ी होय, मुखमें मिठास होय तथा गलेमें और तालुएमें कफ लिहासा होय ॥

चिकित्सा ।

स्वेदोपनाहौकफसंभवेपिकृत्वाक्रमंश्लेष्महरंविदध्यात् ॥

अर्थ—कफजन्य गलगंडपर श्लेष्म, पिंडी और कफनाशक उपचार करे ॥
देवदारुदिलेप ।

देवदारुविशालाचकफगंडेप्रलेपनम् ।

छर्दनंशीपैरेकश्चसर्वैरेचनिकोहितः ॥

अर्थ—कफजन्य गलगंडपर देवदारु, इन्द्रायणकी जड़ इनको पीसके लेप करे, तथा वांती मस्तक जुझाव इस प्रकार संपूर्णरेचक हितकारक है ॥
स्वेदजगलगंड ।

स्निग्धोगुरुः पांडुरनिष्टगंधोमेदोभवः स्वल्परुजोतिकंडूः ।

प्रलंबतैलावुषदल्पमूलोदेहानुरूपक्षयवृद्धियुक्तः ।

स्निग्धास्यतातस्यभवेच्चजंतोर्गलेनुशब्दंकुरुतेचनित्यम् ॥

अर्थ—मेदसे प्रगट गलगंड चिकना होय, भारी, पीलावर्ण, दुर्गन्धयुक्त मन्दपीडा करने वाला और अत्यन्त खजली चले घों तुंचीफलके समान लंबा होय उसकी जड़ छोटी होय और देहानुरूप क्षय और वृद्धि इन्से युक्त होय अर्थात् देहके क्षीण होनेसे क्षीण होजाय, देहके बढनेसे बढजाय, उस्का मुख तेल लगा होय ऐसा चिकना होय और बोलते समय गलेसे दो शब्द निकले ॥

चिकित्सा ।

मेदः समुत्थेत्रयथोपदिष्टांविधेच्छिरांस्निग्धतनोर्नरस्य ।

श्यामासुधालोहपुरीषदंतीरसांजनैश्चापिहितः प्रलेपः ॥

अर्थ—मेदज गलगंडपर प्रथम स्नेह पान करके फहीद्वई शिरावेध (फस्त) करे, फिर पीपल, चूना, लोहफी कीटी, जमालगोटा और रसोत इनका लेप हितकारी है ॥

असाध्यलक्षण ।

कृच्छ्राच्छ्वसंतंमृदुसर्वगात्रंसवत्सराजीतमरोचकार्तम् ।

क्षीणंचवैयोगलगंडजुष्टंभिन्नस्वरंचापिविवर्जयेत् ॥

अर्थ—बड़े कष्टसे श्वास लेनेवाला, नरम शरीरवाला जिसके गलगंड होकर वर्षादिन व्यतीत हो गयाहो अरुचिसे पीडित क्षीण होगया होय और स्वरभेद युक्त ऐसे गलगंड पीडित मनुष्यको वैद्य त्यागदे ॥

अपचीके लक्षण ।

तेग्रंथयःकेचिदवाप्तपाकाःस्रवंतिनश्यंतिभवंतिचान्ये ।

कालानुबंधंचिरमादधातिसैवापचीतिप्रवदंतिकेचित् ॥

अर्थ—अब गंडमालाका भेद अपची है उसको कहतेहैं—पूर्वोक्त गंडमालाकी गांठ पके नहीं अथवा पाक होनेसे सबे कोई नष्ट होजाय दूसरी नवीन उठे ऐसी पीडा बहुत दिन रहै उसको कोई अपची ऐसे कहतेहै ॥

असाध्यलक्षण ।

साध्यास्मृतापीनसपार्श्वशूलकासज्वरच्छर्दियुतानसाध्या ॥

अर्थ—पूर्वोक्त अपची रोग साध्यहै और उसमें पीनस होय पसवाडोंमें शूल खांसी, ज्वर, वमन ये होय तो वो अपची असाध्यहै ॥

अलंबुपास्वरस ।

अलंबुपायाःस्वरसःपीतोद्विपलमात्रया ।

अपचीगंडमालायाःकामलायाश्चनाशनः ॥

अर्थ—लज्जालूका स्वरस ८ तोले पीनेको देवे तो अपची गंडमाला और कामला इनको नाश करे ।

पोलिका ।

वनकापांसिकाभ्रूलंतंदुलैःसहयोजितम् ।

पक्त्वाचपोलिकांखादेदपचीनाशनायच ॥

अर्थ—वनकपास (नादणवण) को जड़को चावलोंकेसाथ पीसके पिट्टी करे, फिर इसकी अंगाकर बनायके राय तो अपचीका नाश करे ।

सौभांजनादिलेप ।

सौभांजनदेवदारुंकांजिकेनतुपेपयेत् ।

कोष्णप्रलेपतोहन्यादपचीमातिदुस्तराम् ॥

अर्थ—सौहंजना देवदारु इनको कांजीसे पीसके इसका मंदोष्ण लेप करे तो अति कठिन अपचीको नाश करे ॥

अश्वत्थादिभस्म ।

अश्वत्थकाष्ठनिचुलंगवांदंतंचदाहयेत् ।
वराहमज्जासंयुक्तंभस्महंत्यपचित्रणान् ॥

अर्थ—पीपर आंव इनकी लकड़ी और गौका दांत इनको जलायके रास करे इसको सूअरकी चर्बीसे लेप करे तो तत्काल अपचीको नाश करे ॥

रेखाकरण ।

मणिवंधोपरिष्टाद्राकुर्याद्रेखात्रयंभिपक्व ।
अंगुलांतरितंसम्यगपचीविनिवृत्तये ॥

अर्थ—वैद्यको पट्टेपर अंगुलीके अंतरसे तीन रेखा अपचीके नाशार्थ करे ॥
सर्पपादि लेप ।

सर्पपारिष्टपत्राणिदंतिभल्लातकैः सह ।
छागमूत्रेणसंपिष्टमपचिन्नंप्रलेपनम् ॥

अर्थ—सरसों, नीमके पत्ते, दंती, भिलाए, इन सबका समान भाग ले बकरेके मूत्रमें पीस लेप करे, यह अपचीका नाशक प्रयोग है ॥

व्योपादि तैल ।

व्योपंविडंगमधुकंसैधवंदेवदारुच ।
तैलमेभिःशृतंनस्येत्कृच्छ्रामप्यपर्चाजयेत् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, मुलहदी, सैधानिमक और देवदारु इन औषधोंको डालके आटाए हुए तैलकी नस्य करनेसे बड़ी भारी कठिनभी अपची होय तो उसकोभी जीते ॥

चंदनादि तैल ।

चंदनंसाभयालाक्षावचाकटुकरोहिणी ।
एतत्तैलंशृतंपीतंसमूलामपर्चाजयेत् ॥

अर्थ—चंदन, हरड, लाख, वच, कुटकी, इनसे सिद्ध करे हुए तैलको पीये, तो अपचीको समूल नाश करे ॥

गंडमाला ।

गंडमालाका कर्मविपाक ।

अध्यापयतिशिष्यांस्तुयःप्रतार्यगुरुस्तथा । शिष्योगुरुं
बंधयित्वायोर्धीतेशृणुतस्यच । जायतेगंडमालारोगस्त
दुपशांतये । अभक्ष्यपानपायोवागंडमालीभवेन्नरः।कृच्छ्रत्रयं
प्रकुर्वीतचांद्रायणमथापरम्।अष्टोत्तरसहस्रंतुजपेत्पुरुषसूक्तक
म् । सौरमंत्रजपस्तद्वच्छत्तयाब्राह्मणभोजनम् । इति कृत्वा
नरः सम्यग्गलगंडाद्रिमुच्यते ॥

अर्थ—जो गुरु शिष्योंको प्रतारणा (बंधना) करके पढावे, अथवा जो शिष्य गुरुको बंधना करके पढता है, उसके गलगंड रोग होवे, अथवा जो अभक्ष भक्षण करे, अथवा मयादि प्राशन करे, वो गंडमाला रोगी होय उसको तीन कृच्छ्र अथवा चांद्रायण १००८ अष्टोत्तरसहस्र पुरुषसूक्तका जप, अथवा यथाशक्ति सौरमंत्रका जप, यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन इत्यादिक उपचार करनेसे वह रोगी गंडमालासे मुक्त होवे ॥

गंडमालानिदान ।

कर्कंधुकोलामलकप्रमाणैःकक्षांसमन्यांगलबंधेषु ।

मेदःकफाभ्यांचिरमंदपाकैःस्याद्गंडमालाबहुभिस्तुगंडैः ॥

अर्थ—मेद और कफ इनसे प्रगट भया कूख, कंधा नाडके पिछाडी मन्या नाडीमें गलेमें और बंधण (जानुमेदसन्धि) इन त्रिकाने छोटे बरेके बराबर बडे बरेके समान आमलेके समान ऐसी अनेक प्रकारकी गंड होतीहै वे बहुत दिनमें हौलेर पके उनको गंडमाला कहतेहैं ॥

कषाय ।

कुलित्थंमरिचंहिंगुंसजलगंडपाचनम् ॥

अर्थ—कुलथी, कालीमिरच, हींग इनकाकाटा गंडमालाको नाश करे ॥

लेप ।

मूलंसितायागिरिकाचमूलंमूलंविशालाभवमुग्रगंधा ।

गोमूत्रपिष्टत्रितयस्यलेपात्सोपद्रवागच्छतिगंडमाला ॥

अर्थ—सपेद कोयलकी जड, इन्द्रायणकी जड और वच इन तीनोंको गोमूत्रमें पीसके लेपकरे तो उपद्रव सहित गंडमाला निकलजावे ॥

स्वरस ।

अलंबुपायाःस्वरसःपीतोद्विपलमात्रया ।

अपच्यागंडमालानां कामलायाश्चनाशनः ॥

अर्थ—लजालूका स्वरस पीनेसे अपची गंडमाला कामला इन सबको दूर करे ॥
ब्रह्मदंडीयोग ।

ब्रह्मदंडीयमूलंतुपिवेत्तंदुलवारिणा ।

स्फुटिताहंतिलेपेनगंडमालानसंशयः ॥

अर्थ—ब्रह्मदंडीकी जडको चावलोंके धोवनमें पीसके पीवे और लेप करे तो फूटीहुई गंडमालाको नाश करे ॥

आरग्वधादि नस्य और लेप ।

आरग्वधशिफापिष्ठासभ्यक्तंदुलवारिणा ।

तेननस्यप्रलेपाभ्यांगंडमालांसमुद्धरेत् ॥

अर्थ—अमलतासकी जडको चावलोंके धोवनसे पीस इसकी नस्य देवे अथवा लेप करे तो गंडमालाको नाश करे ।

वत्सनाभलेप ।

वत्सनाभंनिबुनारलेपाद्गंडविनश्यति ॥

अर्थ—वत्सनाग विपको नीबूके रसमें पीसके लेप करे तो गंडमाला नष्ट होय ॥

मुंडीमूललेप ।

निजद्रवेणसंपिष्टंमुंडीमूलंप्रलेपयेत् ।

गंडमालाक्षयंयातितद्ब्रवंचपिवेत्पलम् ॥

अर्थ—गोरखमुंडीके रसमें उसी गोरखमुंडीकी जडको पीस लेप करे और चार तोले रस पीवे तो गंडमालाका क्षयहोय ॥

गंडमाला फोडनेकोलेप ।

जलेनपेपयेत्तुल्यंकांचनीचित्रकंवृषम् ।

सप्ताहंलेपयेत्तेनसर्वजागंडमालिकाः ।

स्फुटंतिनात्रसंदेहः स्फोटिलेपमिमंकुरु ॥

अर्थ—कांचनीमूल, चित्रक, अदूसा, ये सब समान जलमें पीस इसका सात दिन लेप करे, तो सर्व दोषोंसे उत्पन्न हुई गंडमाला फूटजावे, इसमें संशय नहीं है, इस लेपको फौडेपरभी लेपकरे ॥

भल्लातकादिलेप ।

भल्लातकासीसहुताशदंतिमूलैर्गुंडसुग्रविदुग्धदिग्धैः ।

लेपेकृतेगच्छतिगंडमालासमीरवेगादिवमेवमाला ॥

अर्थ—भिलाए, हीराकसीस, चित्रक, दंती, गुड, थूहरका दूध, आकका दूध, इनको एकत्र खरलकर लेप करनेसे गंडमाला दूर होय, जैसे वायुके वेग से मेघमाला दूर होय है ॥

गंधकादिलेप ।

गंधकंसूतकंतुल्यंअर्कक्षीरंससैन्धवम् ।

पिष्ट्वाचकांचनीमूलंलेपोयंगंडमालिके ॥

अर्थ—पारा, गंधक, बरावर ले और सबको बराबर आकका दूध लेवे और कचनारकी जड़ इनको पीसके सैन्धा निमक मिलायके लेप करेतो गंडमाला दूर होय ॥

जेपालपत्रलेप ।

पिष्ट्वाजेपालपत्राणिस्वरसेनकृतावटी ।

छायाशुष्काततोलैपाद्रुंडमालांविनश्यति ॥

अर्थ—जमालगोटेके पत्तोंको पीसके उसके स्वरसकी बडी बनाय छायामें सुखायले, इसको जलमें घिसके लेप करे तो गंडमाला नष्ट होय ॥

अजमोदादिलेप ।

अजमोदाचसिंदूरंहरितालंनिशाद्रयम् । क्षारद्वयंफेनयुतंसाधकं

सरलोद्भवम् । इन्द्रवारुण्यपामार्गकदलीकंदकैः समैः । एभिःसा

र्पणकतैलमजामूत्रप्रयोजितम् । मृद्ग्नौपाचयेदेतत्सुहृत्कक्षीर

मिश्रितम् । अजमोदादिकतैलंगंडमालांव्यपोहति । आमांवि

दग्धांतुपचेत्पक्त्वाचैवविशोधयेत् । रोपणंमृदुभावंचतैलेन

विनिवारयेत् ॥

अर्थ—अजमोदा, सिंदूर, हरताल, दारुहलदी, हलदी, समीखार, जवाखार, समुद्रफेन, दानामरुआ सरल, इन्द्रायण, चिडचिडा, केलाका कंद, ये सब समान भाग ले सबको फूट पीस तेल मिलाय दे तथा बकरीफा मूत्र, थूहरका,

दूध ये सब डालके मंदाग्निपर पक करे इसको अजमोदादि तेल कहते हैं यह गंडमाला नाशक है तथा अपक होय तो उसको पुलटिस बाँधके पकावे और पकीहुई होतो उसका मल निकालके शुद्ध करे फिर भरके इस तैलसे मृदुता लानी चाहिये ॥

निर्गुंड्यादि तेल ।

निर्गुंडीस्वरसेनापिलांगलीमूलकल्कितम् ।

तैलंनस्येनहंत्याशुगंडमालांसुदुस्तराम् ॥

अर्थ—निर्गुंडीकी जड़ कल्यारी इनके कल्कमें तेल डालके उसकी नस्य करे तो यह दुस्तर गंडमालाको नाश करे ॥

छुछुंदरी तेल ।

छुछुंदरीविपक्वतुक्षणात्तैलवरंचृतम् ।

निवास्वसारनिर्गुंड्याचाभ्यंगान्नाशयेनृणाम् ॥

अर्थ—चकचूद (छुछुंदर) के मांसको तिलोंके तेलमें डालके पकावे, फिर इस तैलको लगावे अथवा कहुचे नीमकी छाल, कनेर निर्गुंडी इन फरके सिद्ध करे घीको लगावे तो गंडमालादि रोग दूर हो ॥

गुंजादि तेल ।

गुंजामूलफलैस्तैलंतोयंद्विगुणितंपचेत् ।

तस्याभ्यंगेनशमयेद्रंडमालांसुदारुणाम् ॥

अर्थ—गुंजा (घुंघची) की जड़ और फल इनका दुगने कोठमें एक गुना तेल डालके पचावे इसकी मालिस करनेसे दारुण गंडमालाका नाश होय ॥

व्योषादि गुग्गुल ।

पट्टपलंव्योपचूर्णचत्रिफलाचपलत्रयम्।कांचनारत्वचक्षूर्णयोज-

येद्वादशंपलम् । गुग्गुलुः सर्वतुल्यः स्यात्सर्वमेकत्रकुट्टयेत् ।

क्षौद्रंपलशतंदेयंगुटिकाकपंसमिताम्।भक्षयेद्रंडमालातोगलग्रं-
थींश्चनाशयेत् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल इनका चूर्ण २४ तोले हरड, घंहेडा, आंवला इनका चूर्ण १२ तोले कचनारकी छाल ४८ तोले गुग्गुल ८४ तोले इन सबको फूट एकत्र करे फिर ४०० तोले शहतमें एक २ तोलेकी गोली बनावे और एक २ फरके खाय तो गंडमाला और गलगंड इनको नाश करे ॥

करनेकी नहीं होती है, गोल, अंची, गांठके समान अथवा कठिन मूजनको उत्पन्न करे उसको ग्रन्थि (गांठ) ऐसा कहते हैं ॥

चिकित्साक्रम ।

ग्रंथिष्वामेषुकुर्वीतभिपक्षोथप्रतिक्रियाम् ।

पक्वानांपाद्यसंशोध्यरोपयेद्द्रवणभेषजैः ॥

अर्थ—यदि गांठ पकी न होय तो उसपर, शोथपर जो चिकित्सा कही है वो करे और पक गई होय तो उसको चीरा देकर शोधन करके घणोक्त औषधोंसे भर देवे ॥

वातजग्रंथिनिदान ।

आयम्यतेवृश्चतितुद्यतेचप्रत्यस्यतेमथ्यतिभिद्यतेच ।

कृष्णोगुरुर्वस्तिरिवाततश्चभिन्नः स्रवेच्चानिलजोस्रमच्छम् ॥

अर्थ—वादीकी गांठ तनेकेसमान करड़ी मालूम हो, छीलनेके समान मालूम हो, सुई चुभनेकीसी पीडा होय, मानो गिरा चाहती है, मयनेकी पीडा होय, फोरनेकीसी पीडा होय, कालावर्ण हो, नरम हो, वस्तिके चौड़ी होय और उसके समान चौड़ी होय और उसके फूटनेसे स्वच्छ रुधिर निकले ॥

वातजग्रंथीकापत्र ।

हिंसासरोहिण्यमृताधभाङ्गीस्योनाकवित्वागुरुकृष्णगंधा ।

गोमूत्रपिष्ट्वासहतालपत्र्याग्रंथोविधेयोनिलजेप्रलेपः ॥

अर्थ—वातजन्य ग्रंथीपर, जटामांसी, लालरोहेडा, गिलोय, भारंगी, दंड, वेलगिरी, अगर, सर्हिजना और मूसाकरना इनको गोमूत्रमें पीसके लेप करे ॥

पित्तजग्रंथिनिदान ।

दंदह्यतेधूम्यतिचूप्यतेचपापच्यतेप्रज्वलतीवचापि ।

रक्तःसपीतोप्यथवापिपित्नाद्रिन्नःस्रवेद्दुष्टमतीवचास्रम् ॥

अर्थ—पित्तकी गांठ आगसे भरेके समान अत्यन्त दाह करे, आँतोसे धुआँ निकलतासा मालूमहो, चूप्यते कहिये मानो सिंगी लगायके कोई चूसैहै, खार लगानेके सदृश पका मालूम होय अपिके समान जलीसी मालूम होय उस गांठका रंग लाल, अथवा किञ्चित् पीला होय और फूटनेसे टस्मेंसे दुष्ट रुधिर बहुत निकले ॥

पित्तजग्रंथिकायत्न ।

जलौकसःपित्तकृतेहितास्तुक्षीरोदकाभ्यांपरिपेचनंच ।

द्राक्षारसेनेक्षुरसेनचापिचूर्णपिवेद्वापिहरीतकीनाम् ॥

अर्थ—पित्तजन्यग्रंथीमें प्रथम जौकलगायके रुधिर निकाले फिर दूध और जल सेचनकरे, तथा द्राक्षारस अथवा ईखका रस इनमेंसे किसीके साथ हरडका चूर्ण पीवे ॥

कफजग्रंथिनिदान ।

शीतोविवर्णोल्परुजोतिकंडूःपापाणवत्सन्नहनोपपन्नः ।

चिराभिवृद्धिश्चकफप्रकोपाद्भिन्नंस्त्रवेच्छुक्कघनंचपूयम् ॥

अर्थ—कफकी ग्रन्थि (गांठ) शीतल प्रकृति समान वर्ण (कोई किञ्चित् विवर्ण होय ऐसे कहते हैं) थोड़ी पीडाहो अत्यन्त खुजली चले, पत्थरके समान कठिन बड़ी होय और चिरकालमें बढनेवाली होय, फूटनेसे उसमेंसे सपेद गाढी राध निकले ॥

कफजन्यग्रंथिकायत्न ।

मधूकजंब्याजुनवेतसानांत्वग्भिःप्रदेहानवचारयेच्च ।

हृतेषुदोषेषुयथानुपूर्वग्रंथिभिपक्वश्लेष्मसमुत्थितायाः ॥

अर्थ—महुआ जामुन, कोह, वेत इनकी छालका लेप करे तथा दोष हरण करके फिर क्रमपूर्वक क्रियाकरे ॥

भेदजग्रंथिनिदान ।

शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिहानिःस्निग्धोमहान्कंडुयुतोरुजश्च ।

भेदःकृतोगच्छतिचात्रभिन्नपिण्याकसर्पिप्रतिमंतुमेदः ॥

अर्थ—भेदकी ग्रन्थि शरीरके बढनेसे बढे और शरीरके क्षीण होनेसे क्षीण होजाय, चिकनी, बड़ी, खुजलीयुक्त, पीडारहित होय है और जब वह फूट-जाय तब उसमेंसे तिल कल्कके समान अथवा घृतके समान भेदा निकले ॥

भेदजग्रंथिकायत्न

सिंचेत्तैलंत्वपचारणीयंविडंगपाठारजनीविपकम् ।

भेदःसमुत्थेतिलकल्कदुग्धैःकृत्वोपरिष्ठाद्विशुणंपटात्तम् ॥

अर्थ—भेदजग्रंथिपर वायविडंग पाठ और हलदी इनसे बनाहुआ घृतका सेचन करे अथवा दूधसे तिलका कल्क करके उस गांठपर लगायके ऊपरसे दोलड कपडा बांधे ॥

मूलिकादिवंध ।

अभिमंत्र्यशनौसायंरवौप्रातः समाहरेत् । पेटारीमूलकंधूपै
धूपयित्वाथखंडयेत् । चतुर्दशगुणैःसूत्रैर्वध्वाग्रंथिगलेस्थितम् ॥

अर्थ—शनिवारके सायंकालको पेटारी सूत्रडीको निमंत्रण कर आवे, रवि-
वारको प्रातःकालमें, जाय धूनादे उसकी जडको उखाडलावे, तथा चौदह पं-
द्रह सूतले उसको पिछाडी कहे हुए मंत्रसे अभिमंत्रित करके गलेमें बांधे ॥

अर्बुद ।

अर्बुदरोगका निदान और संप्राप्ति।

गात्रप्रदेशेकाचिदेवदोषाः संसृच्छितामांसमसृक्प्रदूष्य ।

वृत्तंस्थिरंमंदरुजंमहांतमनल्पमूलंचिरवृद्धिपाकम् ।

कुर्वतिमांसोच्छ्रयमत्यगाढंतदशुंदांशास्त्रविदोवदन्ति ॥

अर्थ—शरीरके किसी भागमें दुष्टभये जो दोष से मांस रुधिरको दुष्ट कर
गोल स्थिर, मंद, पीडा युक्त यह ग्रन्थिरोगसे बड़ी होय है, बड़ी जिसकी जड
होय, बहुत कालमें बढ़ने वाली तथा पकने वाली, ऐसी मांसकी गांठ उठे
उस्को वैद्य अर्बुद ऐसा कहते हैं ॥

अर्बुदकीसंख्या ।

वातेनपित्तेनकफेनचापिरक्तेनमांसिनचमेदसाच ।

तज्जायतेतस्यचलक्षणानिग्रंथेः समानानिसदाभवंति ॥

अर्थ—वह अर्बुदरोग वादासे, कफसे, पित्तसे, रुधिरसे, मांससे और मेदसे,
ऐसे छःप्रकारका है । उसके लक्षण सर्वदा ग्रन्थिके सदृश होते हैं ॥

चिकित्सा क्रम ।

ग्रंथ्यर्बुदानांचयतोविशेषप्रदेशहत्वाकृतिदोषदूष्यैः ।

ततश्चिकित्सेद्भिपगर्बुदानिविधानविद्ग्रंथिचिकित्सितेन ॥

अर्थ—ग्रंथि और अर्बुद इनमें, प्रदेश, हेतु, आकृति, दोष और दूष्य इनसे
इत्तर अपेक्षा विपशेषता नहीं है इसीसे इसपर (ग्रंथिपर) जो चिकित्सा कही
है वही करे ॥

वातार्बुदचिकित्सा ।

वातार्बुदंशीरघृताम्लसिद्धेरुष्णोसतैलरूपनाहयेत्तु ।

कुर्यात्तुसुख्यान्युपनाहनानिसिद्धेश्चमांसैरथवेसवारैः ॥

अर्थ—वातार्बुदको दूध, घृत और खट्टे पदार्थ डालके तैलको आँटावे जब सिद्ध हो जावे तब मांस, बेसवार इन करके बनी पिंडी बाँधे ॥

प्रकारांतर ।

स्वेदंविदध्यात्कुशलश्वैद्यःशृंगेणरक्तं बहुशोहरेच्च ।

वातघ्ननिर्यूहपयोम्लभागैः सिद्धांशताह्वान्निवृतांपिवेद्वा ॥

अर्थ—वातार्बुद होनेसे कुशल वैद्य पसीने निकाले, अथवा तूँचीसे रुधिर निकाले तथा वातनाशक काथ और दूध, खटाई इनमें शतावर अथवा निशोथ डालके सेवन करे ॥

पित्तार्बुदचिकित्सा ।

स्वेदोपनाहोमृदुवस्तुपथ्याः पित्तार्बुदेकाथविरेचनंच ।

विकृप्यसौदुंवरशाकगोजीपत्रैर्भृशंक्षौद्रयुतैः प्रलिपेत् ॥

अर्थ—पित्तार्बुदपर स्वेद, उपनाह नम्र पदार्थ, हरड, विरेचन, इत्यादिकोंके काठे देवे इस प्रकार आकर्षण कर गूलरके फल, गोभीका शाक इनको शह-तमें मिलाय निरंतर लेप करे ॥

कफार्बुदचिकित्सा ।

शुद्धस्यजंतोःकफजेर्बुदेचरक्तेचसिक्तेस्रवतोर्बुदयत् ।

भेदःकृतेमांसकृतेपिकार्यं व्रणोदितं सर्वचिकित्सितंच ॥

अर्थ—कफार्बुद, रक्तार्बुद और मांसार्बुद इनपर रुधिर निकालना और वमन तथा विरेचन इनसे शुद्ध करके फिर संपूर्ण व्रणोक्त क्रिया करे ॥

रक्तार्बुद ।

दोषप्रदुष्टोरुधिरंशिरासुसंकुच्यसंपीडयततोस्यपाकम् । सा

स्त्रावमुन्नस्वतिमांसपिंडमांसांकुरैराचितमाशुवृद्धम् । करोत्य

जस्ररुधिरप्रवृद्धिमसाध्यमेतद्गुधिरात्मकंतु । रक्तक्षयोपद्रव

पीडितत्वात्पांडुर्भवेत्सोर्बुदपीडितस्तु ॥

अर्थ—दुष्ट भये दोष, नसोंमें रहे जो रुधिर उसको संकोचकर तथा पीडित कर मांसके गोलाको प्रकटकरे वो यत्किंचित् पकनेवाला, तथा कुछ स्त्राव-युक्त हो और मांसांकुरसे व्याप्त और शीघ्र बढनेवाला ऐसा होयहै । उसमेंसे रुधिर बहाकरे । यह रक्तार्बुद असाध्य है वो रक्तार्बुदपीडित रोगी रक्तक्षयके उपद्रवोंकरके पीडित होनेसे उसका वर्ण पीला होजाय ये रक्तार्बुदके लक्षणहैं ॥

चिकित्सा ।

रक्तविद्रधिवच्चापिक्रियाशोणितजेर्बुदे ॥

अर्थ-रक्तजविद्रधिके समान रक्तार्बुदपर क्रिया करे ॥

शोणितार्बुदके लक्षण ।

कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिःपटिकाभिर्निपीडितम् ।

यस्यवास्तिरुजाचोग्राज्ञेयंतच्छोणितार्बुदम् ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके स्याह फोड़ा और रुधिर वाली फुन्सी इन्हों करके अर्बुद निपीडित हो और तीव्र पीडाहो वह शोणितार्बुद जानना ॥

मांसार्बुद ।

मुष्टिप्रहारादिभिरर्दितंगेमांसंप्रदुष्टंजनयेद्विशोथम् ।

अवेदनंस्निग्धमनन्यवर्णमपाकमश्मोपसमंप्रचाल्यम् ।

प्रदुष्टमांसस्यनरस्यगाढमेतद्भवेन्मांसपरायणस्य ।

मांसार्बुदंत्वेतदसाध्यमुक्तं-

अर्थ-मुक्का आदिकें लगनेसे अंगमें पीडा होय, उस पीडासे दुष्ट भया मांस सौ सूजन उत्पन्न करे, उस सूजनमें पीडा नहीं होय और वो चिकनी, देहके वर्ण होय, पकेनहीं, पत्थरके समान कठिन, हले नहीं, ऐसी होयहै । जिस मनुष्यका मांस विगडजाय अथवा जो नित्य मांसको खायाकरे उसके यह अर्बुदरोग होयहै । यह मांसार्बुद असाध्य कहाहै कोई मांसार्बुदका भेद रसोक्ती कहतेंहैं ॥

असाध्य लक्षण ।

-साध्येष्वपीमानितुवर्जयेच्च । संप्रभृतंमर्मणियच्चजातं

स्रोतःसुवायच्चभवेदचाल्यम् ॥

अर्थ-साध्यमेंभी यह आगेका अर्बुद रोग वर्जित है । स्त्राव (क्षर) और मर्म स्थानमें प्रगट भया हो अथवा नासा आदि स्रोत (मार्ग) में प्रगट भई हो और जो स्थिर होय, वो असाध्य है ॥

चिकित्सा ।

मांसार्बुदेप्रकुर्वीतक्रियांसद्योव्रणोदिताम् ।

त्रिफलांशुगुलुं चापिशोषेणावचारयेत् ॥

अर्थ-मांसार्बुदपर सद्योव्रणके ऊपर जो क्रिया लिखीहै वो करे तथा विशेष करके त्रिफला गूल सेवन करे ॥

वचादिगणयोग ।

मांसपाकेवंचाद्यस्यगणस्यविधिवत्कृतैः ।

कपायचूर्णकल्कैश्चसेकोद्धूलनलेपनम् ॥

अर्थ—मांसके पाक होनेपर वचादि गणका काठा चूर्ण और कल्क इनसे सेचन उद्धूलन और लेपन करे ॥

अध्यर्बुदके लक्षण ।

यज्जायतेन्यत्रखलुपूर्वजातेज्ञेयंतदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः ॥

अर्थ—पहिले जिस ठिकानेपर अर्बुद भया होय, उसी ठिकानेपर दूसरा अर्बुद प्रगट होय, उसको अध्यर्बुद कहते हैं ॥

द्विरर्बुदके लक्षण ।

यद्वद्वजातंयुगपक्रमाद्वाद्विरर्बुदंतच्चभवेदसाध्यम् ॥

अर्थ—एक कालमें दो अर्बुद, अथवा एकके पिछाडी दूसरा अर्बुद क्रमसे प्रगट होय उसको द्विरर्बुद कहते हैं ॥

अर्बुद न पकनेमें कारण ।

नपाकमायांतिकफाधिकाद्दामेदोवहुत्वाच्चविशेषतस्तु ।

दोपस्थिरत्वाद्ग्रथनाच्चतेपांसर्वावुदान्येवनिसर्गतस्तु ॥

अर्थ—कफ अधिक होनेसे अथवा विशेष करके मेद अधिक होनेसे तथा दोषों के स्थिर होनेसे अथवा दोषोंके ग्रन्थिरूप होनेसे सर्व प्रकारकी अर्बुद स्वभावसेही पके नहीं है ॥

यवक्षारादि लेप ।

लिप्त्वायवक्षारविडंगवीजंगंधोपलैःस्यान्मसृणीकृतैर्यत् ।

रक्तेनमिश्रैःसरटस्यसद्यस्तदुर्बुदंशाम्यतिनान्यथैतत् ॥

अर्थ—जवाखार वायविडंग, गंधक और मक्खन ये पदार्थ एकत्र सरलकर करकैडा (गिरगट) के रुधिरमें मिलायके लेप करे, तो अध्यर्बुद नाश होय अन्यथा नष्ट नहीं हो ।

गंधादि लेप ।

गंधशिलाविश्वोपधविडंगनागभस्मभिःसमैश्चूर्णम् ।

कृकलासरक्तयुक्तलेपात्सद्योर्बुदध्वंसि ॥

अर्थ—गंधक, मनसिल, सोंठ, वायविडंग और शीशेकी भस्म इनका समान भाग चूर्ण करके करकैंटाके रुधिरमें मिलायके लेप करे, तो तत्काल अर्बुदका नाश करे ॥

उपोदिका पिंडी ।

उपोदिकाकांजिकतक्रपिष्टातयोपनाहोलवणेनसार्धम् ।

वृष्टोर्बुदानांप्रशमायकेचिद्दिनेदिनेरात्रिपुमर्मजानाम् ॥

अर्थ—मर्ममें अर्बुद होनेसे उपोदिकाको कांजी और छांछ इनमें पीसके उसमें निमक मिलायके रात्रिमें तथा दिनमें लेप करे ॥

उपोदिकादिअभ्यंग ।

उपोदिकारसाभ्यक्तास्तत्पत्रपरिवेष्टिताः ।

प्रणश्यंत्यचिरान्नृणांपिडिकावुदजातयः ।

अर्थ—उपोदिकाका रस निकालके उसके मालिस कर उसके पत्रसे ढक देवे तो अर्बुद जातिकी पिडिका नष्ट होवे ॥

सुहादि सेक ।

सुहिगंडीरिकास्वेदःसीसकेनतथैवच ।

लवणेनाथवास्वेदःसीसकेनतथैवच ॥

अर्थ—धूरके टुकड़ेसे किंवा निमकसे अथवा शीशेके चूरेसे सेके तो अर्बुदका नाश होय ॥

हरिद्रादिलेप ।

हरिद्रालोध्रपत्तंगुडधूमोमनःशिलाः । मधुप्रगाढोलेपोयमेदो

वुदहरःपरः ॥ एतामेवक्रियांकुर्यादशेषांशर्करावुदे ॥

अर्थ—हलदी, लोध्र, पत्तंग, गुड, धूआँ, मनसिल ये पदार्थ एकत्र खरल कर शहंतमें मिलायके लेप करे तो मेदोर्बुदका नाश करे यही सर्व क्रिया शर्करावुदपर करे ॥

शस्त्राधिकर्म ।

इभांडसदृशमेदोहृत्वाचाग्निप्रयोजयेत् ।

जयेद्विद्राधिवत्पूर्वमर्बुदं दहनादिभिः ॥

अर्थ—हाथीके अंडके प्रमाण मेदको निकाल दाग देवे और विद्राधिके समान दाग आदि उपचार करके अर्बुद रोगको जीते ॥

रीद्ररस ।

शुद्धसूतंसमंगंधमर्द्ययाभचतुष्टयम् । नागवल्लीदलयुतमेघनादं
पुनर्नवा । गोमूत्रपिप्पलीयुक्तंमर्द्यरुध्वापुटेच्छु । लिहेत्क्षौद्रे
रसोरौद्रोगुंजामात्रोर्बुदंजयेत् ॥

अर्थ—शुद्धपारा शुद्धगंधक इनकी कजली और पीपल इनको एकत्र कर उसको नागरवेल, चोंलाई, पुनर्नवा, गोमूत्र इनकी भावना देके लघु पुट देवे फिर इसमेंसे दो रत्ती यह रीद्ररस शहतसे देवे, तो अर्बुद रोगको दूर करे ॥

गलगंड गंडमाला अपची व ग्रंथि अर्बुद इनपरपथ्य ।

छर्दिर्विरेचनंस्वेदोनस्यंधूमःशिराव्यधः । अग्निकर्मक्षारयो
गाःप्रलेपोलंघनानिच ॥ विशेषाद्गलगंडेतुच्छिद्याजिह्वातले
शिराः । कुर्याद्भ्रामणिवंधोर्ध्वरेखास्तिस्त्रोगुलांतराः ॥ पुराण
घृतपानंचर्जीर्णलोहितशालयः । यवामुद्गाःपटोलंचरक्त-
शियुकटिल्लकम् ॥ शालिचशाकंवेत्राग्रंरूक्षाणिचकटूनिच ।
दीपनानिचसर्वाणिगुग्गुलुश्चशिलाजतु ॥ गलगंडगंडमाला-
पचिग्रंथ्यर्बुदांतरे । यथादोषंयथावस्थंपथ्यमेतत्प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ—वमन, रेचन, पसीने, नस्य, धूम, फस्त खोलना, दागदेना, क्षारयोग, लेप, लंघन, ये पथ्य करे, तथा विशेष करके गलगंडपर जिह्वाके नीचेकी शिरा छेदन करे अथवा पटुचेपर एक अंगुलके अंतरपर तीन रेखाकरे पुराने घीका पिवाना, पुराने लाल चावल, यव, मूंग, परवर, लाल सहिजना, करेला, शालिच शाक, बेंतकी कोपल, रुखे और कटुए तथा दीपन सब पदार्थ, गूगल, शिलाजीत, विशेषकर गलगंड रोगमें जीभके नीचेकी दो नसोंका काटना अथवा मणिवन्ध अर्थात् पटुचेके ऊपर एक अंगुलके अंतरसे तीन रेखाकरे । गलगंड गंडमाला, अपची, ग्रंथि, अर्बुद इन रोगोंसे पीडित मनुष्यको दीप तथा अवस्थाके अनुसार ये सब पथ्य कहें ॥

अपथ्य ।

दुग्धेषुविकृतीःसर्वामांसचानूपसंभवम् ।
पिष्टान्नमम्लंमधुरंगुर्वभिष्यंदिकानिच ।
गलगंडगंडमालापचीग्रंथ्यर्बुदामयान् ।
चिकित्सन्नगदंकारोयशोर्थापरिवर्जयेत् ॥

अर्थ—दूध तथा ईखकी बनी हुई सब वस्तु, अनूपदेशके जावोंका मांस पिसा हुआअन्न, खटाई, मिठाई, भारी तथा अभिष्यंदी वस्तु, गलगंड गंडमाला, अपची ग्रंथि, अर्बुद इन रोगोंकी चिकित्सा करनेवाला वैद्य जो यशचाहे तो ऊपर लिखी हुई बातोंका त्यागन करावे ॥

इति श्रीभ्रातृवैद्योद्दारे बृहत्त्रिपट्टुरत्नाकरे अर्बुदरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

श्लीपद ।

श्लीपदरोगका कर्मविपाक ।

स्वगोत्रस्याभिगमनाच्छ्लीपदीजायतेनरः ।

योन्यामसृक्स्रवतिवत्तत्रचांद्रायणंचरेत् ।

मासंपयोव्रतंचैवतस्माद्रोगात्प्रमुच्यते ॥

अर्थ—जो प्राणी अपने गोत्रकी स्त्रीसे गमन करता है उसके श्लीपद रोग होताहै तथा स्त्रीके योनिसे रुधिर गिरनेवाला रोग होय उसके शमनार्थ चांद्रायण व्रत करे, तथा एक महीने पर्यंत पयोव्रत करे तो इस रोगसे मुक्त होय ।
श्लीपदरोगे प्रतिमादानम् ।

श्लीपदस्त्रिपदःकुंठःपतच्छस्त्रधनुर्धरः ॥

अर्थ—श्लीपद रोग तीनपैर कुंठित गिराहुआ और शस्त्र तथा धनुष इनको धारण करनेवाला है इसीसे इसकी ऐसी प्रतिमा बनायकर दान करे ॥
श्लीपदनिदान ।

मेदोमांसाश्रयंशोफंपादयोःश्लीपदंवदेत् ।

स्वलिङ्गदेशदोषैश्चत्रेधास्याच्चकफोत्तरम् ॥

अर्थ—मेद और मांसके आश्रित हुए पाँवोंके सोजाको श्लीपद (पील पावा) कहतेहैं वह श्लीपद स्वलिङ्ग, देश, दोष, इन्हीं करके तीन प्रकारका है और कफप्रधान है ॥

प्रकारांतरेण निदान ।

यःस्वज्वरोवंक्षणजोभृशार्तिः शोथोनृणांपादगतःक्रमेण ।

तच्छ्लीपदस्यात्करकर्णनेत्रशिश्रोष्ठनासास्त्रपिकेचिदाहुः ॥

अर्थ—सो सृजन प्रथम वंक्षण (रोगों) में उत्पन्न होकर धीरे धीरे पैरोंमें आवे और उसके साथ ज्वरभी होय तो इस रोगको श्लीपद कहते हैं, यह श्लीपद हाय, कान, नेत्र, शिश्र, होठ, नाक, इन्मेंभी होती है ऐसे कोई कहते हैं ॥

चिकित्साक्रम ।

लंघनालेपनैःस्वेदैरेचनैश्चप्रसेचनैः ।

प्रायः श्लेष्महरैरूष्णैःश्लीपदंसमुपाचरेत् ॥

अर्थ—लंपन, लेप, स्वेद, रेच, रक्तमोक्ष, इनसे और प्रायः कफनाशक गरम पेसे उपचारोंसे श्लीपद रोगको दूर करे ॥

वातजश्लीपद ।

वातजंकृष्णरूक्षंचस्फुटितंतोत्रवेदनम् ।

अनिमित्तरुजंतस्यबहुशोज्वरएवच ॥

अर्थ—वातकी श्लीपद काली, सूखी फटी और जिस्में तीव्र पीडा होय, बिना कारणके दूखे और उसमें ज्वर बहुत होय ॥

वातजन्यका यत्न ।

स्नेहस्वेदोपनाहांश्चश्लीपदेनिलजेभिपक्त् ।

कृत्वागुल्फोपरिशिरांविधेत्तुचतुरंगुले ॥

अर्थ—वातजन्य श्लीपदपर पसंने निकालना, पिंडी बांधना, ये उपचार करके पैरके टकनानके ऊपर चार अंगुलपर शिरावेध करे ॥

पित्तजश्लीपद ।

पित्तजंपीतसंकाशंदाहज्वरयुतंमृदु ॥

अर्थ—पित्तकी श्लीपद पीले रंगकी दाह और ज्वरयुक्त होय. तथा नरम होय हे ॥

पित्तजश्लीपदका यत्न ।

गुल्फस्याधः शिरांविध्येच्छ्लीपदोपित्तसंभवे ।

पित्तघ्नीचक्रियांकुर्यात्पित्तार्बुदविसर्पवत् ॥

अर्थ—पैरके नीचे शिरावेध करे और पित्तार्बुद, विसर्प, इनपर जैसी पित्त नाशक क्रिया करते हैं उसी प्रकारकी पित्तनाशक क्रिया करे, तो श्लीपद नाश होय ॥

पित्तजश्लीपदपर लेप ।

मंजिष्ठामधुकंरास्नासर्हिन्नासपुनर्नवा ॥

पिष्टारनालेलेपोयंपित्तश्लीपदशांतये ।

अर्थ—पित्तज श्लीपद शांतिके अर्थ मजीठ सुलहटी, रास्त्रा, जदामांसी पुनर्नवा, ये कांजीमें पीसके लेप करे ॥

श्लैष्मिकश्लीपद ।

श्लैष्मिकंस्निग्धवर्णं च श्वेतं पांडुगुरुस्थिरम् ।

अर्थ—कफकी श्लीपदका वर्ण चिकना, सपेद, पीला, भारी और कठिन होय है। पैरके अँगूठाकी शिराको अच्छी रीतिसँ देखके वेधकरे, तो श्लीपद नाश होय ॥

धतूरादिलेप ।

धतूरैरंडनिर्गुडीवर्षाभूशियुसर्पपैः ।

प्रलेपः श्लीपदं हंति चिरोत्थमपिदारुणम् ॥

अर्थ—धतूरा, अंड, निर्गुडी, पुनर्नवा, सहिजना, सरसों, इनका लेप बहुत कालकी दारुण श्लीपदकोभी नष्टकरे ॥

सिद्धार्थादिलेप ।

सिद्धार्थसौभांजनदेवदारुविश्वौषधैर्मृत्रकृतैः प्रलिपेत् ।

पुनर्नवानागरसर्पपाणांकल्केनवाकांजिकमिश्रितेन ॥

अर्थ—सपेदसरसों, सहिजना देवदार, सोंठ, इनको गोमूत्रमें पीस लेप करे, अथवा पुनर्नवा, सोंठ और सरसों इनको कांजीमें पीस लेप करे तो श्लीपद अच्छी होय ॥

असाध्यलक्षण ।

वलसीकमिव संजातं कंठकैरुपचीयते ।

अत्रात्मकं महत्तच्च वर्जनीयं विशेपतः ॥

अर्थ—सर्पकी बांवीके समान बटीभई और जिसके ऊपर कांठे होय, ऐसी एक वर्षकी होगई हो और बही होय, उसको वेध त्यागदे ॥

श्लीपदमें कफकी प्रधानता ।

शीण्यप्येतानि जानीयाच्छ्लीपदानिकफाच्छ्रयात् ।

गुरुत्वं च महत्त्वं च यस्मान्नास्ति विना कफात् ॥

अर्थ—ये जो प्रयोक्त तानों श्लीपदोंमें कफकी आधिक्यताहि इस्का कारण यह है कि, भारी और महत्व ये दोनों कफके विना नहीं होते ॥

श्लेषद होनका देश ।

पुराणेदकभूयिष्ठाः सर्वतुपुचशीतलाः ।

यैदेशा स्तेपुजायतेश्लेषदानिविशेषतः ॥

अर्थ—वर्षाऋतुमें पानी अधिक वर्षे परंतु पृथ्वीमें नीचे होनेसे सूखेनहा इसीसे पुराने पानी का संचय (इकट्ठा) होय और सर्व ऋतुमें शरदी रहा करै ऐसे जे अनूप (पुरब) आदि देश उन्में यह श्लेषद रोग विशेष कर्के होयहे जांगल देशोंमें अमिका अधिक अंश होय है यासे उन देशोंमें जलको पुराणत्व नहीं होयहे और अनूपदेशमें गरमी मंद पडनेसे उष्ण ऋतुमेंभी शीतलता होय है, हाथ फान आदिमें श्लेषद रोगकी शंका होनेसे दोषोंके कोपद्वारा ज्वरकर्के श्लेषदको जानले ॥

यच्छ्रेष्मलाहारविहारजातंपुंसःप्रकृत्याचकफात्मकस्य ॥

सस्त्रावमत्युन्नतसर्वलिङ्गसकंडुरंश्लेष्युतंविचर्यम् ॥

अर्थ—जो श्लेषद कफकारक आहार विहारसे प्रगटभया, तथा कफ प्रकृतीवाले पुरुषके कफसे प्रगटभया होय, तथा स्त्रावयुक्त तथा जिस दोषसे प्रगटभया होय, उस दोषके लक्षण उरमें बढगये होय, जिस्में खुजली बहुत होय, और कफयुक्त होय, सो श्लेषदरोगी वैद्यकर्के त्याज्यहै ॥

वृद्धदारुचूर्ण ।

वृद्धदारुकचूर्णवामूत्रसौवीरकादिभिः ।

शीलितंश्लेषदंहंतिकृच्छ्रंसंवत्सरोपितम् ॥

अर्थ—विधाथरेका चूर्ण, गोमूत्र अथवा काजी इनके साथ सेवनकरे तो घोर कष्टसाध्य वर्षादिनसे उपरांतका श्लेषदरोग नाश होय ॥

पिप्पल्यादि चूर्ण ।

पिप्पलीत्रिफलादावीनागरंसपुनर्नवम् । भागैर्द्विपालिकैस्तेषां

तत्ससंवृद्धदारुकम् ॥ कांजिकेनतुतचूर्णपिषेत्कर्पप्रमाणतः ।

जीर्णैवापरिहीनःस्याद्रोजनंसर्वकामिकम् । श्लेषदंवातरोगां

श्रुणुहंगुल्ममरोचकम् । अग्निचक्रुरुतेघोरंभस्मकंचप्रयच्छति ॥

अर्थ—पीपल, त्रिफला, दारुहलदी, सोंठ, पुनर्नवा, ये प्रत्येक आठ २ तोले तथा सबफी बराबर विधाथरेका चूर्ण मिलावे यह चूर्ण १ तोले कांजीके साथ

देवे और औषध जीर्ण होनेपर जो इच्छा होय सो भोजनकरे तो श्लीपद, वातरोग, श्लीहा, गुल्म, अरुचि, इनको नाशकरे अग्निको प्रदीप्त करे तथा घोर मस्तकरोगको नाशकरे ॥

कृष्णादि मोदक ।

कृष्णाचित्रकदंतीनांकर्पमर्धपलंपलम् ।

विंशतिश्वहरीतक्योगुडस्यचपलद्वयम् ।

मधुनासहसंयुक्तंश्लीपदंहंतिदारुणम् ॥

अर्थ—पीपल १ तोला, चित्रक २ तोले, हरड २० तोले, गुड ८ तोले सबको एकत्र कर शहतके साथ चाटे तो दारुण श्लीपदको नाशकरे ॥

चित्रकादि कल्क ।

हितश्चलेपनेनित्यंचित्रकोदेवदारुच ।

सिद्धार्थेशिशुकल्कोवासुखोष्णोमूत्रपेपितः ॥

अर्थ—चित्रक, देवदारु, अथवा सपेदसरसों और साँहजना इनका कल्क गोमूत्रमें पीस कुछ २ गरम करके लेपकरे तो श्लीपद रोग नष्ट होय ॥

हरीतकी कल्क ।

प्रपिवेद्वाभयाकल्कंमूत्रेणान्यतमेनच ॥

अर्थ—हरडका चूर्ण गोमूत्रसे अथवा अन्य अनुपानके साथ मिलायके पीवे ॥
गुडूनीयोग ।

पिवेदेवंगुडूचीचनागरंभद्रदारुच ॥

अर्थ—गिलोय अथवा साँठ, तेलिया देवदारु, इनका चूर्ण गोमूत्रके साथ पीवे ॥
सर्पप तैल ।

पिवेत्सर्पपतैलेनश्लीपदानानिषृत्तये ॥

अर्थ—अथवा तूषाँक चूर्णको सरसोंके तैलमें मिलायके पीवे, तो श्लीपद गकी निवृत्ति करे ॥

स्वस ।

पूतीकरंजच्छदंजरंवापियथावलम् । अननैवविधानेनपुत्रजी-
वकंजरसम् । प्रयुंजीतभिषक्प्राज्ञःकालसात्म्यविभागतः ॥

अर्थ—विदकरंजके पत्तोंका रस अथवा जीया पोता वृक्षके पत्तोंके रसको चलावल विचारके पीवे तो श्लीपदरोगको नाश करे ॥

पलाशमूल स्वरस ।

पलाशमूलस्वरसंपिवेद्रातैलेनतुल्यंसितसर्पपाणाम् ।

मूत्रेणपक्त्वामरदारुविश्वंश्रीगुग्गुलुंश्लिपदिभिर्निपेव्यम् ॥

अर्थ—पलास (टाक) के जड़का स्वरस और सपेद सरसोंका तैल दोनों समान भाग लेके पीवे तथा देवदारु, सोंठ, बेलफल, गुग्गुलु, इनको गोमूत्रमें पक करके श्लिपद रोगी खाय ॥

श्लिपदपर शिरावेध ।

गुल्फोपरिष्टाच्चतुरंगुलेचवातोत्तरेगुल्फतलेचपैत्तिके ।

अंगुष्ठमूलेकफजेषिषेपाच्छिराव्यधश्चापियथाविधानम् ॥

अर्थ—वाताधिक श्लिपदपर पैरोंके टकने ऊपर चार अंगुलपर और पित्ताधिक श्लिपदपर टकनानके नीचे, चार अंगुलपर और कफजन्य श्लिपदपर अँगूठेकी जड़में शिरावेध अर्थात् फस्त खोले ॥

अन्न और दंभ ।

यवान्नंकूर्ममांसंचकटुतैलेनयोजयेत् ।

श्लिपदानांप्रशांत्यर्थमांसांतेदाहमाग्निना ॥

अर्थ—जौ, कटुएका मांस इनको सरसोंके तैलके साथ सेवन करे, तथा मांस जलने पर्यंत दाग देवे, तो श्लिपदकी शांति होय ॥

एरंड तैल सेवन ।

गंधर्वतैलभृष्टांहरितकींगोजलेनयःपिवति ।

श्लिपदबंधनमुक्तोभवत्यसौसप्तरात्रेण ॥

अर्थ—सपेद अंडीके तैलसे हरडोंको तलके गोमूत्रके साथ जो पीवे, वह सात दिनमें श्लिपदसे छूट जावे ॥

पिंडारकादि चूर्ण ।

पिंडारकतरुसंभवबंधूकशिफाचसर्पिपापीता ।

श्लिपदसुग्रानियतंवद्भासूत्रेणजंघायाम् ॥

अर्थ—पिंडारक वृक्षपर होनेवाला बाँदकी जड़के चूर्णको घाँके साथ पीवे और उसीकी जड़को सूतकी डोरीसे जाँघमें बाँधे तो उग्रश्लिपद रोगका नाश करे ॥

ऋषिकादिमूललेप ।

संपिष्टाचारनालेनऋषिकामूलवल्कलम् ।

प्रलेपाच्छीपदंहंतिवद्धमूलमपिट्टम् ॥

अर्थ—छोटे कांसकी जड़की छालको खटाईमें पीस लेप करे तो दारुण बहुत दिनकी श्लीपदको नाश करे ॥

गुडूच्यादिलेप ।

गुडूचीकटुकोशुंठीदेवदारुविडंगकम् ।

पिष्टगोमूत्रसंयुक्तंलेपंश्लीपदनाशनम् ॥

अर्थ—गिल्लोय, कुटकी, सोंठ, देवदारु, वायविडंग इनको गोमूत्रमें पीसके लेप करे तो श्लीपदका नाश होय ।

धान्याम्ल ।

धान्याम्लंतैलसंयुक्तंकफवातविनाशनम् ।

दोषनंचामदोषंचमेदःश्लीपदनाशनम् ॥

अर्थ—धान्याम्ल (धानकी कांजी) और सरसोंका तेल इनको मिलायके पीवे तो कफवात, आमदोष, श्लीपद इनका नाशक तथा अमिदीपक है ॥

पादवाहपर ।

पादकंडुहरंकुर्यान्नवनीतेनमाक्षिकम् । पाददाहहरंखादेत्तिला

द्विगुणवाकुचीम् । चूर्णितामधुसर्पिभ्यांकर्पमात्तिप्रशांतये ॥

अर्थ—पैरोंकी खुजलीनाशक मक्खन और शहत एकत्र करके मले और पैरोंका दाह नाशक एकपट तिल तथा दुप्पट वावची एकत्र करके शहत यी इनके साथ एक तोले खाय ।

मदनादिलेप ।

मदनंचतथासिकथंसासुद्रलवणंतथा । महिपीनवनीतेनसंतते

लेपनेहितम् । सप्ताहात्स्फटितौपादौजायेतेकमलोपमौ ॥

अर्थ—मैनफल, मोम, सामुद्र निमक, इनको भेंसकी माखनमें खरल कर पैरोंमें मालिस करे तो दाह शांति होय और फटे हुए पैर सात दिनमें कमलके समान हो जावें ॥

सैरिश्वरघृत ।

सुरसादेवकाष्ठंचत्रिफलात्रिकटुर्गजा । लवणानिचसर्वाणिविडं

गान्यथचित्रकम् । चविकापिप्पलीमूलंगुग्गुलुहंबुपावचा।यवा
 अजंसपाठंचसज्येलेवृद्धदारुकम् । कल्कैश्चकार्पिकैरोभिघृतप्रस्थं
 विपाचयेत् । दशमूलकपायेणधान्ययूपद्रवेणचादधिमंडसमायु
 त्तंप्रस्थंप्रस्थंपृथक्पृथक् । पक्वंस्वादुघृतंकल्कैःपिवेत्कर्पत्रयं-
 हविः । श्लीपदंकफवातोत्थंमांसरक्ताश्रितंजयेत् । मेदोश्रितो
 भिघातोत्थहन्यादेवनसंशयः।अपचीगलगंडानिअंत्रवृद्धितथावुं
 दम्।नाशयेद्ग्रहणीदोषंश्वयथुंगुदजानपि । परमशिकरंहृद्यंकोष्ठ
 कृमिविनाशनम् । घृतंसौरेश्वरंनामश्लीपदंहंतिसेवितम् । जीव
 केनघृतंहेतद्रोगानीकविनाशनम् ॥

अर्थ-निर्गुडी देवदारु त्रिफला त्रिकुटा गजपीपल संपूर्ण निमक वायविडंग
 चित्रक चव्य पीपरासूल गूगल हाऊबेर, वच, जवाखार, पाठ, कचूर, इला-
 यची विधायरो ये प्रत्येक तोले २ भर ले चूर्ण कर घी ६४ तोले दश मूलका काठा
 ६४ तोले धानका मंड अथवा काठा ६४ तोले दहीका मंड ६४ तोले इस प्रकार
 सबको एकत्र कर पककरे फिर तीन तोले इसमेंसे सेवन करे तो कफ वातसे
 उत्पन्न मांसाश्रित अथवा रक्ताश्रित मेदाश्रित किंवा अभिघातसे उत्पन्न क-
 साही श्लीपद होय तो उनको नाशकरे उसी प्रकार अपची, गलगंड अंडवृद्धि
 अर्बुद, संग्रहणी, सूजन, बवासीर कौठ कृमिरोग इनको नाश करे तथा अमिको
 बटावे और जीवक औषधके साथ सेवन करे तो सर्व रोगोंको नाशक और
 ह्यहै इसको सौरेश्वरघृत कहतेहैं ॥

विडंगादितैल ।

विडंगंसारिवाकैपुनागरोचित्रकेतथा ।

भद्रदावैलकाख्येचसर्वेपुलवणेपुच ।

तैलपक्वंपिवेद्वापिश्लीपदानानिवृत्तये ॥

अर्थ-वायविडंग सारिवा, आककी जड, सोंठ, चित्रक तेलियादेवदारु,
 इलायची, संपूर्णनिमक इनके साथ सिद्धकरा हुआ तैल श्लीपदको निवृत्तकरे ॥

श्लीपदपरपथ्य ।

पुरातनाः पाण्डिकशालयश्च यवाः कुलित्थालशुनंपटोलम् । वा
 र्ताकसौभांजनकारवेहंपुनर्नवामूलमुपोदिकाच । एरंडतैलंसु

रभीजलंचकट्टूनितिकानिचदीपनानि । एतानिपथ्यानिभवं
तिपुंसारोगेसतिश्लीपदनामधेये ॥

अर्थ—पुराने सांठी तथा शालीचावळ, जौ, कुलथी लहसन, परवर, वेंगन, सहिजना, करेला, पुनर्नवा मूली, पृतिका शाक, अंडीका तेल, गौका मूत्र, कडुए, चरपरे और दीपन पदार्थ, वातसे उत्पन्न श्लीपदमें टकनेसे ४ अंगुल पर और पित्तकेमें टकनेके नीचे तथा कफसे उत्पन्नमें अँगूठेकी जडमें विधि पूर्वक नसका वेधना ये सब श्लीपद नाम रोगमें मनुष्योंको पथ्य हे ॥

अपथ्य ।

पिष्टान्नदुग्धविकृतिगुडमानूपमामिपम् । स्वाद्रम्लंपारियात्रंच
सर्वाविध्यनदीजलम् । पिच्छलंगुर्वाभिष्यंदिश्लीपदीपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ—पिसा अन्न, दूधकी बनी वस्तु, गुडा कच्छ देशका मांस, स्वादुरस, पारियात्र, सहाचल तथा विध्याचलसे निकली हुई नदियोंका जल, पिच्छल भाग तथा अभिष्यंदी वस्तु, इन सबोंको श्लीपदका रोगी त्यागकरे ॥

अंतर्विद्रधि ।

अंतर्विद्रधि निदान ।

पृथक्संभूयवादोपाःकुपितागुल्मरूपिणम् ।

बल्मीकवत्समुन्नद्धमंतंकुर्वतिविद्रधिम् ॥

अर्थ—कुपित भये पृथक्पृथक् अथवा मिले भए दोष शरीरमें गोलके और चांबीके समान बढी ऐसी विद्रधि उत्पन्न करेहे ॥

उत्पन्न होनेके स्थान ।

गुदेवस्तौमुखेनाभ्यांकुक्षौवंक्षणयोस्तथा । वृक्कयोःप्रीन्हि यकृ
तिहृदये क्लोमिचाप्यथ । एषामुक्तानिलिगानिवाह्यविद्रधिलक्षणैः
गुदेवातनिरोधस्तुवस्तौकृच्छ्राल्पमूत्रता । नाभ्यांहिकातथा
टोपःकुक्षौमारुतकोपनम् । कटिपृष्ठग्रहस्तीत्रोवंक्षणोत्थेचवि
द्रधौ । वृक्कयोःपार्श्वसंकोचःप्रीन्त्युच्छ्वासावरोधनम् । सर्वांगप्र
ग्रहस्तीत्रोहृदिकंपथ्यजायते । श्वासोयकृतिहिकाचक्लोमिपेपी
यतेपयः ॥

अर्थ—गुदा, वस्ती, मुख, नाभी, कूख, वंक्षण, घृक्क (कूखापिंडी) ग्रीह यकृत् (कलेजा) हृदय, क्लोम (प्यासकास्थान) इन ठिकानेपर विद्रधि होय हे इनके लक्षण बाह्यविद्रधिके समान जानने ॥ १ गुदामें—विद्रधि होनेसे अधो-वायुको रोध होय ॥ २ वस्तीमें—अर्थात् मूत्राशयमें होनेसे कठिनतासे थोडा मूत ॥ ३ नाभिमें—होनेसे हिचकी तथा पीडापूर्वक क्षोभ होय ॥ ४ कूखमें—होनेसे पवनका कोप होय ॥ ५ वंक्षणमें—होनेसे कमर और पीठका बलपूर्वक जिकड जाना होय ॥ ६ कूखके पिंडमें—होनेसे पसवाडोंके संकोच होय ॥ ७ ग्रीहमें—होनेसे श्वास रुकजाय ॥ ८ हृदयमें—होनेसे सब अंग जिकड जाय और कंप होय ॥ ९ कलेजेमें—होनेसे श्वास और हिचकी होय ॥ १० क्लोममें—अर्थात् पिपासा स्थानमें विद्रधि होनेसे वारंवार पानी पीनेकी इच्छा होय हे ॥
स्त्रावनिर्गम ।

नाभेरुपरिजाःपक्वायांत्यूर्ध्वमितरेत्वधः ।

अधःश्रुतेपुर्जावेत्तुश्रुतेपूर्ध्वनजीवति ॥

अर्थ—नाभिके ऊपर जो विद्रधि होय उनके पकनेसे जो स्त्राव कहिये राध आदिका बहना होय वो मुखके रास्तेसे होय है और नाभिके नीचे होनेसे जो स्त्राव होय वो गुदाके मार्गसे होय है और नाभिसमीप होनेवाली विद्रधियोंका स्त्राव दोनों मार्गसे होय, जिनका स्त्राव नीचेके मार्ग हो वो रोगी जीवे और ऊपरके मार्ग जिस्का स्त्राव होय वो रोगी बचे नहीं ॥

साध्यासाध्य विद्रधि ।

हृन्नाभिवस्तिवज्यायेत्तेषु भिन्नेषुवाह्यतः।जीवेत्कदाचित्पुरुषोने

तरेषुकथं चन । साध्याविद्रधयःपंचविवज्याःसन्निपातिकः ।

आमपक्वंविदग्धत्वन्तेपांशोथवदादिशेत् ॥

अर्थ—हृदय नाभि और वस्ति इन ठिकानेको छोड़कर प्रगट जो विद्रधि (अर्थात् ग्रीह क्लोम इत्यादि ठिकाने) बाहर फूटनेसे कदाचित् पुरुष बच जाय और ठिकानेपर फूटनेसे नहीं बचे । पहिली पांच विद्रधि साध्य हैं, सन्निपातिकी विद्रधि असाध्य है, इन विद्रधीन्को आम, पक और विदग्ध ये तीन अवस्था शोथ रोगके समान जाननी चाहिये ॥

असाध्य लक्षण ।

आध्मातंवद्धनिष्पदंछर्दिहिकात्पान्वितम् ।

रुजाश्वाससमायुक्तंविद्रधिर्नाशयेन्नरम् ॥

अर्थ—अफरायुक्त, मूत्ररुक गया होय, हिचको, वमन और प्यास इन्से पीडित, शूल, श्वास, इनकर्के युक्त ऐसे मनुष्यको विद्रधि रोग असाध्य है ॥

विद्रधिनिदान ।

त्वग्रक्तमांसमेदांसिप्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः । दोषाः शोथंश-
नैघोरंजनयंत्युच्छ्रिताभृशम् । महाशूलंरुजावंतंवृत्तंवा-
प्यथवायतम् । सविद्रधिरितिख्यातोविज्ञेयःपड्विधश्चसः ।
पृथग्दोषैः समस्तैश्चक्षतेनाप्यसृजातथा । पण्णामपिहिते
पांतुलक्षणंसंप्रचक्षते ॥

अर्थ—अत्यन्त बढे तथा अस्थि (हड्डी) का आश्रय लेकरके रहनेवाले वातादि दोष, त्वचा, रुधिर, मांस और मेद इन्को दुष्टकर धीरे धीरे भयंकर शोथ उत्पन्न करे उसकी जड हड्डीपर्यंत पहुँचजाय, उत्पत्तिकालमें अत्यन्त पीडा कारक तथा गोल अथवा लंबा जो शोथ (सूजन) होय उसको विद्रधि कहते हैं । पृथक् दोषोंसे ३, सन्निपातसे १, क्षत (घाव) से १, और रुधिरसे १, मिलकर छः प्रकारकी विद्रधि होयहै उन छहों विद्रधिके लक्षण कहतेहैं ॥

वरुणादिघृत ।

सिद्धंवरुणादिगणेषुविधिनातत्कल्कपाचितंसार्षिः ।

अंतर्विद्रधिमुग्रंमस्तकशूलंहुताशमाद्यंच ।

गुल्मानपिपंचविधानाशयतीदंपयांसिवायुसखः ।

एतत्प्रातःप्रपिबेद्भोजनसमयेनिशास्येपि ॥

अर्थ—वरुणादिगणोक्त औषधोंके कल्कके साथ सिद्ध करा हुआ धी अंत-विद्रधि, मस्तक शूल, मंदाग्नि, तथा पाँच प्रकारके गुल्म, इनको नाश करे, जैसे अग्नि जलको नष्ट करे हैं इसको प्रातःकाल भोजनके समय तथा सायंकालमें सेवन करे ॥

त्रिफलादि गुग्गुलु ।

त्रीणिपलानिफलत्रितयस्यद्वेतुपलेभवतोमगधायाः ।

पंचपलानिभवन्तिपुरस्याःस्यात्फलत्रिकगुग्गुलुयोगः ॥

अर्थ—हरड ४ तोले, बहेडा ४ तोले, आंघला ४ तोले, पीपल ८ तोले, गुग्गुलु २० तोले, इन सबको मिलायके खरल करे तो यह त्रिफला गुग्गुलु अंतर्विद्रधिको नाश करे ॥

वरुणादि काय ।

कासीससैधवशिलाजतुहिंगुचूर्णैर्मिश्रकृतोवरुणवल्कलजःक
पायः । अभ्यंतरेस्थितमपक्वमतिप्रमाणंनृणामयंहरतिविद्रधि
मुग्रशोफम् ॥

अर्थ-हीराकसीस, सैधानिमक, शिलाजीत, हींग, इनका चूर्ण करके मि-
श्रित वरनाके काठे पीवेतो भीतरसे अपक्व बडा भारी सूजनयुक्त ऐसे विद्रधि
रोगको नाश करे ॥

शिष्वादि काय ।

शिशुदीप्यवरुणद्वियामिनीकुंजराशनकृतः कपायकः ।
चोलचूर्णसहितोतरस्थितंविद्रधिप्रशमयेदसंशयम् ॥

अर्थ-सहिजना, अजमायन, वरना, दारुहलदी, हलदी पीपल, इनका काठा चो-
लका चूर्ण डालके पीवे तो विद्रधिको नाशकरे ॥

वर्षाभ्वादि काय ।

वर्षाभूवरुणांघ्रिभ्यांकाथोविद्रधिनाशनः ।

अर्थ-पुनर्नवा, वरना, इनकी जडका काठा विद्रधि नाशक है ॥

पुनर्नवादि काय ।

श्वेतवर्षाभुवोमूलंमूलंवरुणकस्यच ।

जलेनकथितंपीतमपक्वंविद्रधिंजयेत् ॥

अर्थ-सपेदपुनर्नवाकी जड, वरनाकी जड इनका काठा करके पीवे तो
अपक्वविद्रधिको नाश करे ।

दशमूलादि काय ।

दशमूलच्छिन्नरुहापथ्यादारुपुनर्नवा ।

ज्वरविद्रधिशोफेषुशिशुविश्वयुताहिता ॥

अर्थ-दशमूल गिलोप, हरड, देवदारु, पुनर्नवा, सहिजना, सांड इनका काठा
ज्वरविद्रधि, सूजन इनपर उत्तम है ॥

वरुणादि काय ।

वरुणादिगणकाथश्चापक्वेभ्यंतरोत्थितम् ।

ऊपकादिप्रतीवापंपिबेत्संशमनायवे ॥

अर्थ—अफरायुक्त, मूत्ररुक गया होय, हिचकी, वमन और प्यास इन्से पीडित, शूल, श्वास; इनकेके युक्त ऐसे मनुष्यको विद्रधि रोग असाध्य है ॥

विद्रधिनिदान ।

त्वग्रक्तमांसमेदांसिप्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः । दोषाः शोथंश-
नैर्घोरंजनयंत्युच्छ्रिताभृशम् । महाशूलंरुजावंतंवृत्तंवा-
प्यथवायतम् । सविद्रधिरितिल्यातोविज्ञेयःपड्भिधश्चसः ।
पृथग्दोषैः समस्तैश्चक्षतेनाप्यसृजातथा । पण्णामापिहिते
पांतुलक्षणंसंप्रचक्षते ॥

अर्थ—अत्यन्त बड़े तथा अस्यि (हड्डी) का आश्रय लेकरके रहनेवाले वातादि दोष, त्वचा, रुधिर, मांस और मेद इन्को दुष्टकर धीरे धीरे भयंकर शोथ उत्पन्न करे उसकी जड हड्डीपर्यंत पहुँचजाय, उत्पत्तिकालमें अत्यन्त पीडा कारक तथा गोल अथवा लंबा जो शोथ (सूजन) होय उसको विद्रधि कहते हैं । पृथक् दोषोंसे ३; सन्निपातसे १; क्षत (घाव) से १; और रुधिरसे १; मिलकर छः प्रकारकी विद्रधि होयहै उन छहों विद्रधिके लक्षण कहतेहैं ॥

वरुणादिघृत ।

सिद्धंवरुणादिगणेविधिनातत्कल्कपाचितंसार्षिः ।

अंतर्विद्रंधिसुग्रमस्तकशूलंहृताशमाद्यंच ।

गुल्मानपिपंचविधान्नाशयतीदंपयांसिवायुसखः ।

एतत्प्रातःप्रपिबेद्रोजनसमयेनिशास्येपि ॥

अर्थ—वरुणादिगणोक्त औषधोंके कल्कके साथ सिद्ध करा हुआ थी अंत-विद्रधि, मस्तक शूल, मंदाभि, तथा पाँच प्रकारके गुल्म, इनको नाश करे, जैसे अभि जलको नष्ट करे हैं इसको प्रातःकाल भोजनके समय तथा सायंकालमें सेवन करे ॥

त्रिफलादे गुग्गुलु ।

त्रीणिपलानिफलत्रितयस्यद्वेतुपलेभवतोमगधायाः ।

पंचपलानिभवन्तिपुरस्याःस्यात्फलत्रिकगुग्गुलुयोगः ॥

अर्थ—हरड ४ तोले, वहेडा ४ तोले, आंवला ४ तोले, पीपल ८ तोले, गुग्गुलु २० तोले, इन सबको मिलापके खरल करे तो यह त्रिफला गुग्गुलु अंतर्विद्रधिको नाश करे ॥

वरुणादि काय ।

कासीससैधवशिलाजतुहिंयुचूर्णैर्मिश्रकृतोवरुणवल्कलजःक
पायः । अभ्यंतरेस्थितमपक्वमतिप्रमाणंनृणामयंहरतिविद्रधि
मुग्रशोफम् ॥

अर्थ—हीराकसीस, सैधानिमक, शिलाजीत, हींग, इनका चूर्ण करके मि-
श्रित वरुणाके कांडे पीवेतो भीतरसे अपक्व बडा भारी सूजनयुक्त ऐसे विद्रधि
रोगको नाश करे ॥

शिष्वादि काय ।

शिशुदीप्यवरुणद्वियामिनाकुंजराशनकृतः कपायकः ।
चोलचूर्णसहितोतरस्थितंविद्रधिप्रशमयेदसंशयम् ॥

अर्थ—सहिंजना, अजमायन, वरुना, दारुहलदी, हलदी पीपल, इनका कांडा चो-
लका चूर्ण डालके पीवे तो विद्रधिको नाशकरे ॥

वर्षाभादि काय ।

वर्षाभूवरुणांभिभ्यांक्राथोविद्रधिनाशनः ।

अर्थ—पुनर्नवा, वरुना, इनकी जडका कांडा विद्रधि नाशक है ॥

पुनर्नवादि काय ।

श्वेतवर्षाभुवोमूलंमूलंवरुणकस्यच ।

जलेनकथितंपीतमपक्वविद्रधिंजयेत् ॥

अर्थ—सपेदपुनर्नवाकी जड, वरुनाकी जड इनका कांडा करके पीवे तो
अपक्वविद्रधिको नाश करे ।

दशमूलादि काय ।

दशमूलछिन्नरुहापथ्यादारुपुनर्नवा ।

ज्वरविद्रधिशीफेषुशिशुविश्वयुताहिता ॥

अर्थ—दशमूल, गिलोय, हरड, देवदारु, पुनर्नवा, सहिंजना, सांड इनका कांडा
ज्वरविद्रधि, सूजन इनपर उत्तमहै ॥

वरुणादि काय ।

वरुणादिगणकायश्चापक्वैभ्यंतरोत्थितम् ।

ऊपकादिप्रतीवापंपिबेत्संशमनायवे ॥

अर्थ-वरुणादिगणका काढा ऊषकादि गणके चूर्णका प्रतिवाप करके पीवे तो अपक्व अभ्यंतर विद्रधिका नाशकरे ॥

अनंतादि पेय ।

शमयतिमानतमूलंक्षौद्रयुतंतंदुलांभसापीतम् ।

अंतरभूतंविद्रधिमसह्यतममाशुमनुजस्य ॥

अर्थ-पित्तपापडेकी जड़को चावलोंके धोवनमें पीस शहद डालके पीवे तो बहुत कठोर अंतर्विद्रधिका तत्काल नाश करे ॥

हरीतक्यादिचूर्ण ।

हरीतकीसैंधवधातकीनारजोघृतक्षौद्रयुतंतुशोघ्रम् ।

निहंतिलीढंशुबमेवपुंसामंतर्भवविद्रधिसुग्रहूपम् ॥

अर्थ-हरड, सैंधानिमक, धायके फूल, इनके चूर्ण शहत और घीके साथ भक्षण करे तो घोर अंतर्विद्रधिका निश्चय तत्काल नाश करे ॥

कज्जलीयोग ।

वरुणादिकपायेणरसगंधककज्जली । भुक्त्वानिहंतिमापैकावा

ह्यमंतश्चविद्रधिम् ॥ अपक्वेत्वेतदुद्दिष्टंपक्वेतुव्रणवत्क्रिया ॥

अर्थ-वरुणादि काथमें पारे गंधककी कजली ५ रत्ती डालके पीवे तो अंतर्विद्रधि, बाह्यविद्रधि इनका नाश करे यह अपक्वविद्रधिपर कहाहै, पक्वविद्रधि पर, व्रणपर जो यत्न करने लिखे हैं वो करे ॥

विद्रधिपर लेप ।

यवगोधूममुद्गैश्चसिद्धपिष्टैःप्रलेपयेत् ।

विलीयतेक्षणेनैवपक्वश्चैवहिविद्रधिः ॥

अर्थ-जौ, गेहूं, मूंग इनके चूर्णको पकापके देहमें लेप करे तो क्षणमात्रमें अपक्वविद्रधि पक्व होय अर्थात् पकजावे ॥

वातविद्रधिके लक्षण ।

कृष्णोरुणोवाविषमोभृशामत्यर्थवेदनः ।

चिन्नोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिर्वातसंभवः ॥

अर्थ-जौ विद्रधि फाली, लाल, विषम कहिये कदाचित् छोटी, कदाचित् मोटी हो, अत्यन्त वेदनायुक्त और उसका प्रगट होना तथा पाक ये नाना प्रकारका होय, उसको वातविद्रधि कहतेहैं ॥

व्याघ्रमूलादिलेप ।

व्याघ्रमूलककल्कैस्तुवसातैलघृतान्वितैः ।

सुखोष्णोबहुलोलैपःप्रयोज्योवातविद्रधौ ॥

अर्थ—लालअंडकी जडका कल्क, चर्बि अथवा तेल वा घृत इनसे युक्त करके गरम कर सुहाता सुहाता लेप करे तो वादीकीविद्रधि दूर होय ॥

शिशुमूलादि लेप ।

स्वेदोपनाहःकर्तव्यःशिशुमूलसमन्वितः ॥

अर्थ—पसीने निकालने अथवा पिंडी बांधना होय तो सहिजनेकीजड मिलायकर करे ॥

जलौकापातन ।

रसालफलतुल्योयःशोफोबाह्योथचोत्तरः । पृथग्दाहरुजाना

हकारकोविद्रधिःस्मृतः । जलौकापातनंशस्तं सर्वस्मिन्नेववि

द्रधौ । मृदुर्विरेकोलघ्वन्नंस्वेदःपित्तोत्तरंविना ॥

अर्थ—आमके फलके समान भीतर अथवा बाहर जो सूजन उत्पन्न होय तथा दाह, पीडा, अफरा इनको करे, उसको विद्रधि ऐसा कहते हैं, इन सर्व प्रकारकी विद्रधियोंपर जोक लगावे, मृदु जुल्लाव, हलका अन्न पसीने निकालना ये उपचार करे परंतु ये सब उपाय पित्तकी विद्रधिको त्यागकर अन्य विद्रधियोंपर करे ॥

वातविद्रधिपर काप ।

पुनर्नवादारुविश्वदशमूलभवांभसा ।

गुग्गुलुंरुद्रुतैलवापिवेन्मारुतविद्रधौ ॥

अर्थ—पुनर्नवा, दारुहलदी, सोंठ और दशमूल इनके काढेमें शूगल अथवा अंडीका तेल डालके पियावे तो वातविद्रधिको नष्ट करे ॥

विडंगारिष्ट विद्रधिआदिपर ।

विडंगग्रंथिकंरास्नाकुटजत्वक्फलानिच । पाठैलवालुकंधात्री

भागान्पंचपलान्पृथक् । अष्टद्रोणैभसःपक्त्वाकुर्यात्द्रोणा

वशोपितम् । पूतेशीतेक्षिपेत्तत्रशौद्रंपलशतत्रयम् । घातकी

विंशतिपलंत्रिजातं द्विपलंतथा । प्रियंगुकांचनाराणांसलोध्राणां

पलंपलम् । व्योपस्यचपलान्यष्टौचूर्णीकृत्यप्रदापयेत् । घृत
भाण्डेविनिक्षिप्यमासमेकंविधारयेत् । ततः पिबेत् यथार्हतुज
येद्विद्रधिमूर्जितम् । ऊरुस्तंभाश्मरीमेहान्प्रत्यष्टीलाभगं
रान् । गलमालाहनुस्तंभंविडंगारिष्टसांज्ञितम् ॥

अर्थ-वायुविडंग, पीपराम्ल, रास्ना, कडाकी छाल, इन्द्रजौ, पाठ, एल-
वालुक, आँवला ये आठ औषध पाँच २ पल लेंगे, जब कूट करके इसको ८
द्रोण जलमें डालके आँटावे जब एक द्रोण जल रहे तब उतारके छान लेय,
जब शीतल हो जावे तब ३०० पल शहत डाले और धायके फूल २० पल
तथा दालचीनी, इलायची, पत्रज ये तीन औषध एक २ पल लेंगे, तथा
सोंठ, मिरच, पीपल इन तीन औषधोंको मिलायके आठ पल ले, इस प्रकार
सब औषधोंका चूर्ण करके उसी काठके जलमें मिलाय देवे, फिर पीके चि-
कने वासनमें इसको भरके सुख वंद कर उसपर मुद्रा देकर १ महीने पर्यंत
धररवखे, पश्चात् मुद्राको खोलके निकास लेंगे इसको विडंगारिष्ट कहते हैं
इसके पीनेसे विद्रधि रोग तथा ऊरुस्तंभ रोग, पथरी, प्रमेह, पेटमें ठोडकि-
नाचि प्रत्यष्टीला इस नाम करके वादीका रोग होताहै वो गलगंड, हनुस्तंभ
वायु ये संपूर्ण रोग दूर होय ॥

पित्तजविद्रधि निदान ।

पक्वोदुंबरसंकाशः श्यावोवाज्वरदाहवान् ।

क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिः पित्तसंभवः ॥

अर्थ-पित्तकी विद्रधि पके गूलरके समान होय. अथवा काला वर्ण होय,
ज्वर, दाह करनेवाली, उस्का प्रगट और पाक शीघ्र होय ॥

सारिवाटि और चंदनादि लेप ।

पित्तिकेसारिवालाजामधुकैः शर्करायुतैः ।

प्रदिह्यात्क्षीरपिष्टैर्वापयस्योशरिचंदनैः ॥

अर्थ-पित्तविद्रधि पर सारिवा रीस, मुलहदी, मिश्री इनको दूधमें पीसके
लेप करे अथवा खस, चंदन, इनको दूधमें पीसके लेप करे ।

काय और लेप ।

पिबेद्वाम्रिफलाक्वाथंत्रिवृत्कल्काक्षतंयुतम् ।

पंचवल्कलकल्केनघृतमिश्रेणलेपनम् ॥

अर्थ—पित्तविद्रधिपर त्रिफलाका काढा १ तोला निसोथका चूर्ण डालके पीवे अथवा बड़, गूलर, पाखर, जामुन, आंव, इनकी छालको पीस घी मिलायके लेप करे ।

कफजन्यविद्रधि ।

शरावसदृशःपांडुःशीतःस्निग्धोल्पवेदनः ।

चिरोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिःकफसंभवः ॥

अर्थ—कफकी विद्रधि शराव (मट्टीके शराब) सदृश बडी होय, पीलावर्ण शीतल चिकनी, अल्पपीडा होय उसकी उत्पत्ति और पाक देरमें होयहै ।

प्रकारांतर ।

त्रिफलाशिशुवरुणदशमूलांभसापिवेत् ।

गुग्गुलुंमूत्रसंयुक्तंविद्रधौकफसंभवे ॥

अर्थ—हरड, बहेडा आंवला, सांहजना, बरना और दशमूल इनके काठेमें गुग्गुलु और गोमूत्र डालके पीवे तो कफविद्रधिको नाश करे ।

स्वेद ।

इष्टकासिकतालोहाश्वशकृत्तुपपांसुभिः ।

मूत्रैरुष्णैश्चसततंप्रस्वेदःशुष्मविद्रधौ ॥

अर्थ—ईंट, वालू, लोह, घोंडकी लीद, तुपाकी धूल, गोमूत्र इनको गरम करके बफारा देकर पसीने निकाले तो कफकी विद्रधि दूर होय ॥

पक्नेपर स्याव ।

तनुपीतसिताश्वैपामास्त्रावाःक्रमशःस्मृताः ।

अर्थ—ये तीनप्रकार विद्रधि पक्नेके अनंतर होतेहै इन्से यातादिकोंके क्रमसे पीला और सपेद राध निकले ॥

सन्निपातविद्रधि ।

नानावर्णरुजास्त्रावोपंटालोविपमोमहान् ।

विपमंपच्यतेचापिविद्रधिःसान्निपातिकः ॥

अर्थ—सन्निपातकी विद्रधिमें अनेकप्रकारकी पीडा, जैसे तौद, दाह, खुजली, पीडा तथा अनेकप्रकारका स्याव (जैसे पतला, पीला, सपेद, स्याव होय) पंटाल कहिये नचि स्थूल होय और उपर पतराहों, अर्थात् अग्रभाग अति-उंचा होय, छांटी बडी फदान्चित् नहीं पके पसी होय ॥

अभिघातजन्य और आगंतुक विद्रधि ।

तैस्तैर्भावेरभिहतेक्षतेवापथ्यकारिता । क्षतोष्मावायुविसृतः
सरक्तंपित्तमीरयेत् । ज्वरस्तृष्णाचदाहश्चजायंतेतस्यदेहिनः ।
आगंतुर्विद्रधिज्ञेयःपित्तविद्रधिलक्षणः ॥

अर्थ—तिन तिन भाव कहिये लकड़ी, पत्थर, डेला आदिका अभिघात(चोट लगना पिचजाना इत्यादि) होनेसे, अथवा तलवार, तीर, बरछी इत्यादिक लगनेसे पाव होजानेसे, अपथ्य करनेवाले पुरुषके कुपित वायुकके विसृत (फैला) क्षतोष्मा (धावकी गरमी) और रुधिरसहित पित्तको कोप करे उस पुरुषके ज्वर, प्यास और दाह होय और उसमें पित्तकी विद्रधिके लक्षण मिलते होय इस्को आगंतुजविद्रधि जाननी ॥

रक्तजविद्रधि ।

कृष्णस्फोटावृतःश्यावस्तीव्रदाहरुजाकरः ।
पित्तविद्रधिलिंगस्तुरक्तविद्रधिरुच्यते ॥

अर्थ—कालेफोडोंसे व्याप्त, श्यामवर्ण, दाह, पीडा और ज्वर ये उसमें तीव्र होय, तथा पित्तकी विद्रधिके लक्षण कर्क युक्त होय, उस्को रक्तविद्रधि जानना ॥

रक्तविद्रधि ।

विद्रधौकुशलःकुर्याद्रक्तागंतुनिमित्तजे ।
पित्तविद्रधिवनूत्रंक्रियात्रिरवशेषयेत् ॥

अर्थ—रक्तविद्रधि आगंतुनिमित्तज विद्रधि, इनपर नियमपूर्वक पित्तविद्रधिके समान सब उपचार करे ॥

रक्तविद्रधिपर ।

विद्रधौविधिवत्कार्यैरक्तविद्रधिभेषजम् ।
वरुणादिकपायस्यपानंप्रक्षालनंहितम् ॥

अर्थ—रक्तजन्य विद्रधिपर कहेहुए उपचार करके फिर वरुणादि गणवा काटा करके पीवे, तथा इसी फाटसे उस रक्तविद्रधिको धोवे ॥

स्तनविद्रधीनिदान ।

पवनेनस्तनशिराःसंवृताःप्राप्ययोपिताम् । सूतानांगभिणीनां
तुसंभवःश्वयधुर्घनःस्तनेस्त्रियःसदुग्धेवावाह्याविद्रधिलक्षणः ।
नाडीनांसूक्ष्मवक्रत्वात्कन्यानांसजायते ॥

अर्थ-वातसे आच्छादित हुई स्तनोंकी नाडियां प्रसूतिका स्त्रियोंके तथा गर्भवती स्त्रियोंके स्तनोंमें घन सूजनको पैदा करदेतीहैं । तिसको स्तनविद्रधि कहतेहैं यह स्तनविद्रधि दुग्धवाले स्तनोंमेंही होतीहै कन्याओंके स्तनोंकी नाडियां सूक्ष्म मुखवाली होनेसे तिनके यह स्तनविद्रधि रोग नहीं होताहै ॥

त्रिफला योग ।

पक्केषुविद्रधिपुपूयमतिस्त्रवत्सुनाडीपुचव्रणगदेपुभगंदरेषु । स्या-
द्रंडमालिपुफलत्रिकगुग्गुलुःस्यात्पथ्यफलत्रिकघृतलघुभोजनंच ॥

अर्थ-पक और अतिराध बहनेवाले विद्रधिपर, नाडीव्रण, भगंदर, गंड-माला इनमें त्रिफला, गुग्गुलु मिलायके खाय और त्रिफला घृत तथा लघु भोजन ये पथ्य है ।

सौभांजनीय योग ।

सौभांजनस्यनिर्यासोर्हिगुसंधवसंयुतः ।

अचिराद्विद्रधिंहतिप्रातःप्रातर्निपेवितः ॥

अर्थ-सर्हिजनेका गोंद, हींग, संधानिमक, इनका चूर्ण नित्य प्रातःकाल सेवन करे तो विद्रधिका तत्काल नाश करे ॥

शिशुमूलयाग ।

शिशुमूलंजलेघृष्टंरपिष्टंप्रलेपयेत् ।

तद्रसंमधुनापीत्वाहंत्यंतर्विद्रधिंनरः ॥

अर्थ-सर्हिजनेकी जड़को जलमें पीस उसमें शहत डालके पीवे, तथा उसी रसमें सिंगिया विपका चूर्ण घिसके लेप करे तो अंतर्विद्रधिको नाश करे ॥

विद्रधि रोगपर पथ्य ।

आमास्थेरेचनंचैवलेपःस्वेदोस्त्रमोक्षणम् । जीर्णाश्यामाककल-
माःकुलित्यालशुनानिच । रक्तशिशुश्चनिष्पावकारवेल्लंपुन-
नवा । श्रीपर्णाचित्रकंक्षौद्रंशोफोक्तानिचसर्वशः । पक्वावस्थे
शस्त्रकर्मपुराणारक्तशालयः । घृततैलमुद्गरसोविलेपीधन्वजो-
रसः । शालिशकं चकदलीपटोलंहिमवालुकम् । चंदनंतप्तशी-
तांबुसर्वचापित्रणोदितम् । नराणांविद्रधौरोगेपथ्यापथ्यंयथा-
मलम् । पथ्यान्येतानिसर्वाणिनिर्दिष्टानिमहापिभिः ॥

अर्थ—कच्चेपनकी दशामें रेचन, लेपन और रुधिर निकालना, पुराने समा, कलमी चावल, तथा कुलथी, लहसन, लाल साहिजना, रमास, करेला, सांठ, अरणी, चीता, शहद, शोथरोगमें कही हुई सब औषधी और पकनेकी दशामें चीरना, पुराने लाल चावल, घी, तेल, मूंगकारस, विलेपी मरुदेशी जीवोंका मांस, शालिच शाक, केला, परवर, कपूर, चन्दन, तपाया शीतल जल, व्रण-रोगमें कही हुई वस्तु, मनुष्योंको विद्रधिरोगमें दोषके अनुसार पथ्यापथ्य जानिये महर्षियोंने ये सब पथ्य कहे हैं ॥

विद्रधिरोगपर अपथ्य ।

शोफिनांयान्यपथ्यानिव्रणिनामहितानिच ।

क्रमादामेचपक्केचविद्रधौवर्जयेन्नरः ॥

अर्थ—विद्रधि रोगमें, कच्चेपनकी दशामें, शोथ रोगमें कहे हुए अपथ्य और पकेमें व्रणरोगके सब अपथ्य जानिये ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे विद्रधिरोगनिदानचिकित्सा समाप्तः ।

व्रणशोथ ।

व्रणशोथनिदान ।

एकदेशोत्थितः शोथोव्रणानांपूर्वलक्षणम् । पृथिःस्यात्पृथ
क्सर्वरक्तागंतुनिमित्तजः । शोथाः पडेतेविज्ञेयाः प्रागुक्तैः शो
थलक्षणैः । विशेषः कथ्यतेतेपांपक्कापक्काविनिश्चये ॥

अर्थ—एक ठिकानेपर सूजन उत्पन्न होनेसे जाने कि, इसके व्रण (फोडा) होगया, सो व्रणरोग पृथक् दोषोंसे ३, सन्निपातसे १, रुधिरसे १ और आगंतुज १, ऐसे मिलकर छः प्रकारके है इन छहों व्रणोंमें जो प्रथम सूजन होय उनके लक्षण शोथरोग लक्षणके समान जानने । इसमें पक्क (पकना) अपक्क (नपकने) के विषयमें जो विशेषता है उसको इसजगो कहतेहैं ॥

व्रणपाकलक्षण ।

विपमंपच्यतेवातात्पित्तोत्थश्चाचिरंचिरम् ।

कफजः पित्तवच्छोफोरक्तागंतुसमुद्भवः ॥

अर्थ—बादीसे विपमपाक होय अर्थात् कहीं पके, कहीं नहीं पके, पित्तसे बहुत जल्दीपके कफका फोडा देरमें पके और रुधिरका तथा आगंतुक फोडे का पकना पित्तके समान अर्थात् जल्दी पके है ॥

अपक्वव्रणके लक्षण ।

मंदोष्णताल्लपशोथत्वंकाठिन्यंत्वक्सवर्णता ।

मंदवेदनताचैवशोथानामामलक्षणम् ॥

अर्थ-सूजन हाथके छूनेसे थोड़ी गरम लगे, थोड़ी सूजन होय, फोडेका स्थान कर्ना होय तथा देहक रंग समान उसकारंग होय और उसमें पीडा मंद होय ये कच्ची सूजनके लक्षण है ॥

पच्यमानव्रणके लक्षण ।

दह्यतेदहनेनेवक्षारेणेवविपच्यते । पिपीलिकागणेनेवदश्यते
छिद्यतेतथा । भिद्यतेचैवशस्त्रेणदंडेनैवचताड्यते । पीड्य
तेपाणिनैवांतः सूचीभिरिवतुद्यते । शोपश्चोपोविवर्णः स्यादं
गुल्येवावपाट्यते । आसनेशयनेस्थानेशान्तिवृश्चिकविद्धवत् ।
नगच्छेदाततः शोथोभवेदाध्मातवस्तिवत् । ज्वरस्तृष्णारु
चिश्चैवपच्यमानस्यलक्षणम् ॥

अर्थ-जिस समय व्रण पकनेको होय उस समय ये लक्षण होते हैं, अग्निसे भरासा फोडेका स्थान मालूम हो, खार लगानेकासा चिनमिनावै, चैंटी काटनेकीसी पीडा होय, वो दो टूक करनेके समान तथा शस्त्रसे फारनेके समान और दंड आदिके मारनेके समान तथा हाथसे मीडनेके समान तथा भीतरी मुईसे छेदनेके समान पीडा होय और उसमें अत्यंत दाह होय अग्निसे सेकनेके समान उसमें वेदना होय, उस फोडेका रंग बदल जाय, उंगलीके लगानेसे उखारनेकीसी पीडा होय, बैठनेमें सोनेमें खडे रहनेसे बीछू काटने कीसी घोर पीडा होय वो पीडा कभी शांति नहीं होय, वो सूजन फूली हुई बस्ती (मूत्रस्थान) के सदृश तनीसी होय, उसमें ज्वर प्यास और अरुचि ये लक्षण होते हैं ॥

पक्वव्रणके लक्षण ।

वेदनोपशमःशोथोलोहितोलपोनचोन्नतः । प्रादुर्भावोवलीनां
चतोदःकंडूमुहुमुहुः । उपद्रव्राणांप्रशमोनिम्नतास्फुटनत्वचः ।
बस्ताविवांबुसंचारः स्याच्छोत्थेगुलिपीडिते । पृथस्यपीड
यत्येकमंतमंतचपीडिते । भक्ताकांक्षाभवैश्चैवशोथानांपक्व
लक्षणम् ॥

अर्थ—व्रण पकनेसे पीडा शान्ति हो जाय उसकी सूजन तामेके रंगकी होय और थोड़ी होय, ऊंची न होय, उसमें गुजलट पड़े, सुई चुभानेकीसी पीडा होय, वारंवार खुजली चले पित्तदाहादि उपद्रवोंकी शांती हो, खुजानेसे उस जगे गढेला हो जाय, त्वचा फट जाय, सूजन हाथके दवानेसे जैसे बस्तीके नीचेका पानी इधर उधर होय, उसी प्रकार राध इधर उधर होय, अन्नमें इच्छाहो ॥

एक दोषसे उत्पन्न सूजन पकनेके समय तीनों दोषोंका संबंध होना ।

नतैनिलाद्गुणविनानपित्तंपाकःकफंवापिविनानपूयः ।

तस्माद्धिसर्वैपरिपाककालेपचंतिशोथास्त्रिभिरेवदोषैः ॥

अर्थ—वादीके विना पीडा नहीं होय, पित्तके विना दाह नहीं होय और कफके विना राध नहीं होय अर्थात् पकनेके समय तीनों दोषोंके मिलनेसे सब प्रकारकी सूजन पकती है । रक्तपाक लक्षण ग्रन्थान्तरोंमें कहे हैं यथा—“कफ-जेषुच शोथेषु गंभीरं पाकमेत्यसूक् । पक्वस्त्रिगन्धततः स्पष्टं यत्रत्यांस्त्रिन्नशोफता । त्वक्सावर्ण्यरुजोल्पत्वंधनस्पर्शित्वमश्मवत् । रक्तपानमितिश्रयात्तंप्राज्ञोमुक्तसंशयः” ॥ इसका अर्थ सुगम है ॥

राध न निकालनेका परिणाम ।

कक्षंसमासाद्ययथैववह्निर्वाय्वीरितःसंदहतिप्रसह्य ॥

तथैवपूयोप्यविनिस्सृतोहिमांसंशिरास्नायुचखादतीह ॥

अर्थ—फूसके गंजमें लगी हुई आग, पवनकी सहायता पाकर जैसे वो फूसको जलाकर खाक करदे उसी प्रकार व्रणमेंसे राध न निकालनेसे वो राध मांस, शिरा और स्नायु इनको खाप लेती है ॥

आमादिलक्षण ।

आमंवेदह्यमानंचसम्यक्पक्वंचलक्षणैः ।

जानीयात्सभवेद्वैद्यःशेषास्तस्करवृत्तयः ॥

अर्थ—आम (कच्चा) पच्यमान और जो अच्छी रीतिसं पक गयाहो, ऐसे व्रणके लक्षण जो वैद्य जानेहैं, उसीको वैद्य जानना चाहिये बाकीके सब चोरहैं ॥

अपकलेदन और पक्वेकी उपेक्षा करता वैद्यको दोष ।

यश्चिन्नत्याममज्ञानाद्यश्वपकमुपेक्षते ।

श्वपचाविवमंतव्यौतावनिश्चितकारिणौ ॥

अर्थ—जो अज्ञानसे कच्चे फोंडेको पका समझकर फोंड और जो पके

फोड़ेको कच्चा समझकर चीरे नहीं ये दानों अविचारवान् वैद्य चांडालके समान जानने ॥

व्रणकाचिक्रिसाक्रम ।

आदौविम्लापनंकुर्याद्वितीयमवसेचनम् । तृतीयमुपनाहंचचतुर्थीपाटनक्रिया ॥ पंचमंशोधनंकार्यपष्टंरोपणमुच्यते । एतेक्रमाव्रणस्योक्ताःसप्तमं वैकृतापहम् ॥

अर्थ—व्रणमें प्रथम विम्लापनक्रिया करे, फिर अवसेचन (रुधिरनिकालना) तीसरे उपनाह (पिंडी घांधना) चौथे पाटन (चिरादेना) पांचवे शोधन छटे रोपण (घावको भरना) सातवे उसकी विकृति अर्थात् घावके स्थानमें गूथ होजाती उसकी चमड़ीको देहकी चमड़ीके वर्णमें मिलाय देना इस प्रकार सात क्रम जानने ॥

विम्लापन और रक्तावसेचन ।

अभ्यज्यस्वेदयित्वातुवेणुनाब्द्याशनैःशनैः ।

विम्लापनार्थं गृहीततैलेनांगुष्ठकेन च ॥

अर्थ—प्रथम तैलसे मालिसकर उसस्थानमें बाँसकी नली द्वारा सेककर पसीने प्रगट करे फिर अंगूठेसे तैल लगाकर धीरे २ रगडे इस कर्मको विम्लापन कहतेहैं यह व्रणरोगमें प्रथम करना चाहिये । यदि व्रणमें अत्यंत सूजन और पीडा ये विकार होंवे तो प्रथम रुधिरनिकलवावे ॥

रुधिरमोक्षकोसुताध्यत्व ।

रक्तावसेचनंकुर्यादादावेवविचक्षणः ।

शोफेमहतिसंबृद्धेवेदनावतिवाव्रणे ॥

अर्थ—जो व्रण, लेप स्वेद, रुधिर मोक्ष और अपतर्पण इन क्रियाओंसे शमन न होवे वोभी रुधिर निकालनेसे शीघ्र नष्ट होताहै ।

प्रकारांतर ।

एकतश्चक्रियाःसर्वारक्तमोक्षणमेकतः ।

रक्तंहिविक्रियांयातितन्मोक्षेयातिविक्रिया ॥

अर्थ—रुधिरके विगडनेसे फोडा फुंसी आदि रक्तविकार होतेहैं उस दुष्ट रुधिरके निकलवानेसे तत्संबंधी विकार शांति होतेहैं इसवास्ते संपूर्ण क्रियाओंमें रुधिर निकालनाही उत्तम है ॥

व्रणशोथको फोडना ।

चिरविल्वामिकोदंतीचित्रकोहयमारकः ।

कपोतकंकगृध्राणामललेपेनदारणम् ॥

अर्थ—कंजा, चित्रक, दंती, कनेर इनकी जड तथा कपोत (पिंडुकिया कव, तर) कंक (सपेद चील) गीध इनकी बीठको गरम करके लेप करे तो व्रणकी सूजन बिनाही चिरादिये फूटजावे ॥

स्वर्जिकायावशूकाद्याःक्षारालेपेनदारणाः ।

अर्थ—सज्जीखार, जवाखार इत्यादि क्षारोंका लेप करनेसे व्रणको सूजन फूटजावे ॥

हेमकायास्तथालेपोव्रणेपरमदारणः ।

अर्थ—हेमकारीकालेप व्रणशोथको फोडनेमें उत्तमहै ।

शणमूलादि लेप ।

शणमूलंचशिग्रूणांफलानितिलसर्पपाः ।

सक्तवःकिण्वमतसीप्रदेहःपाचनःस्मृतः ॥

अर्थ—सन, मूली, सहिजना, इनके फल, तिल, सरसों, सत्तु, किण्व(धान्यको भिगोकर मद्य काढनेको तयार करतेहैं वो) और अलसी इन सबको एकत्र पीसकर उसपर लेप करे तो व्रणकी सूजनको फोडदेवे ॥

दंतीमूलादिलेप ।

दंतीमूलकचित्रत्वक्स्तुह्यकंपयसागुडैः ।

भल्लातकास्थिकाशीससैंधवैदारणःस्मृतः ॥

अर्थ—दंतीकी जड चित्रककी छाल धूरकादूध आकका दूध, गुड, मिलावैकी गुठली हीराकसीस और सैंधानिमक इनकालेप करे तो पके घावको फोड देवे ॥

हस्तिदंतादिलेप ।

हस्तिदंतंजलेवृष्टंविदुमात्रंप्रलेपनम् ।

अत्यंतकठिनेचापिशोफेपाचनभेदनम् ॥

अर्थ—हाथीके दांतको पानीमें पिसके सूजनके मुखपर एकदूध धरे तो अत्यंत कठिन सूजनको पकायके फोड देवे ॥

यवादिलेप ।

यवगोधूमचूर्णैचसक्षारंदारणंपृथक् ।

हरिद्राभस्मचूर्णाभ्यांप्रलेपोदारणः परः ।

अजविट्क्षारमूज्यंचप्रलेपोव्रणदारणः ॥ (?)

अर्थ—जौ, गेहूं, इनके चूनमें क्षार मिलायके लेप करे (वा निमक डाली पुलटिस बांधे) अथवा हलदीकी राख, तथा चूना, अथवा बकरीकी लेंडीकी राख और साम्हर निमक, इन सबको एकत्र करके इनका लेप करेतो फोडे को तत्काल फोडदेवे ॥

प्रक्षालन ।

ततः प्रक्षालनेक्वाथः पटोलोनिवपत्रजः । अविशुद्धेविशुद्धेतु

न्यग्रोधादित्वगुद्भवः । पंचमूलीद्वयंवातेन्यग्रोधादिश्वपैत्तिके ।

आरग्वधादिकोयोज्यः कफजेसर्वकर्मसु ॥

अर्थ—व्रणके धोनेके वास्ते पटोलपत्र और नीमके पत्ते, इनका काढा करके देवे, अथवा शुद्ध अथवा अशुद्ध व्रणके धोनेको बटादिक गणकी छालका काढा करके धोवे, वातव्रणके धोनेके वास्ते दशमूलका काढा और पित्तव्रण धोनेके वास्ते न्यग्रोधादिक और कफव्रणके धोनेके वास्ते आरग्वधादिक काथ लेनी चाहिये ॥

शोधनरोपण ।

तिलसैंधवयष्ट्याह्वनिवपत्रनिशायुतैः । त्रिवृन्मधुयुतैः पिष्टैः

प्रलेपोव्रणशोधनः । तिलकल्कः सलवणोद्रेहरिद्रेत्रिवृद्धतम् ।

मधुकंनिवपत्राणिलेपः स्याद्व्रणशोधनः ॥

अर्थ—तिल, सैंधानिमक, मुलहदी, नीमके पत्ते, हलदी और निसोथ, इनके चूर्णको शहतमें घोटके लेप करे तो व्रणको शोधन करे, तथा तिलोंका कल्क निमक, हलदी, दारुहलदी, निसोथ, घी, मुलहदी और नीमके पत्ते, इनको पीसके लेप करे तो व्रणको शुद्ध करे ॥

दुष्टव्रणपर लेप ।

निवकोलकपत्राणिलेपः स्याद्व्रणशोधनः । निवपत्रतिलैः क

ल्कोमधुनाकृतशोधनः । निवपत्रतिलादंतीत्रिवृत्सैंधवमाक्षि

कम् । दुष्टव्रणप्रशमनोलेपः शोधनकेशरी ॥

अर्थ-नीमके और बेरके पत्तोंको पीसके लेप करे, अथवा नीमके पत्ते, तिलोंका कल्क, इनको शहतके साथ लेप करे, अथवा नीमके पत्ते, तिल दंतीकी जड़ निसोथ, सैंधानिमक और शहत इनका लेप करे तो दुष्ट व्रणका शमन होय ॥

व्रणको शोधन ।

अभयात्रिवृतादंतीलांगलीमधुसंधवैः । सुपवीपत्रधत्तूरकर्णमो

टकुठेरिकाः । पृथगेतेप्रलेपेनगंभीरव्रणशोधनाः ॥

अर्थ-हरड, निसोथ, दंती, कलियारी, शहत, सैंधानिमक, करेलोंकेपत्ते, धत्तूरके पत्ते, वजूरके और आजवलाके पत्ते, इनका पृथक् २ लेप करनेसे गंभीर व्रणको शोधन करेहै एक २ को पीस २ किसी एककाही लेप करे सचकानकरे ॥

निंवादि शोधन ।

निंवपत्रमधुभ्यांतुयुक्तःसंशोधनःस्मृतः ।

एकंवासारिवामूलंसर्वव्रणविशोधनम् ॥

अर्थ-नीमके पत्ते और शहत इनका लेप व्रणको शोधन करे, अथवा एकही सारिवाकी जड़ संपूर्ण व्रणकी शुद्धि करेहै ॥

न्यग्रोधादि शोधन ।

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थकदंबपृक्षवेतसाः ।

करवीरार्ककटुकाकपायोरोपणेहितः ॥

अर्थ-बड, गूलर, पीपल, कदंब, इमली, वेत, आक और कुटकी इनका काढा व्रणको भरनेमें बहुत उत्तमहै ॥

लेप और चूर्ण ।

सप्तदलदुग्धकल्कःशमयतिदुष्टव्रणंप्रलेपेन । मधुयुक्ताशरपुंखा

सर्वव्रणरोपणीकथिता ॥ पंचवल्कलचूर्णैर्वाशुक्तिचूर्णसमायुतैः ।

धातकीलोध्रचूर्णैर्वा निःसाराहंतितेव्रणाः ॥ (१)

अर्थ-सतौनाकी छालको दूधमें पीसके लेपकरे तो दुष्टव्रणको शमन करे किंवा शरपुंखके चूर्णको शहत मिलायके लगावे तो सर्वव्रणको भरदेवे तथा पंचवल्कलका चूर्ण सीपका चूना धायके फूल और लोध इनके चूर्णको जलमें पीसके फोडेपर लगावे तो व्रण भरजाय ॥

निंवादि फल्क और रस ।

निंवपत्रघृतसौद्रदार्वीमधुकसंयुताः । वर्तिस्तिलानांकल्कोषा

शोधयेद्रोपयेद्रणम् ॥ निवशम्याकजात्यर्कसप्तपर्णाश्वमारकाः ।
कृमिघ्नामृत्रसंयुक्ताः सेकलेपनधावनैः । करंजारिष्टनिर्गुडीरसो
हन्याद्व्रणकृमिन् ॥

अर्थ—नीमके पत्ते, घी, शहत दारुहलदी और मुलहदी, इनके चूर्णको चची अथवा तिलोंका कल्क व्रणका शोधन करके भरदेताहै। नीम, अमलतास, चमेली, आक, सतौना, कनेर और घायविडंग इनके काठेका सेचन, लेपन धोना, इस विषयमें देवे और करंज, नींव और निर्गुडी इनका रस व्रणके भीतरकी कृमि (कीड़े) को नाशकरे ॥

लशुनादि लेप और निवपत्रादि धूप ।

लशुनेनाथवादद्याल्लेपनंकृमिनाशनम् । निवपत्रवचार्हिगुस-
पिर्लवणसैधवैः । धूपनंकृमिरक्षोघ्नव्रणकंडुरुजापहम् ॥

अर्थ—लहसनका लेप करे तो कृमियोंका नाश होय । तथा नीमके पत्ते वच, हांग, घी, निमक और सैधानिमक इनको एकत्र कूट पीस धूनी देवे तो कृमि, राक्षस.व्रण और खुजली, इनको नाश करे ॥

त्रिकलादि काय ।

येक्केदपाकद्युतिगंधवंतोव्रणामहांतः सरुजाःसशोथाः ।
प्रयातितेगुगुलुमिश्रितेनपीतेनशांतित्रिफलाजलेन ॥

अर्थ—क्केद, पाक, स्राव और गंध, इन करके युक्त तथा घोर और पीडा, सृजन इनसे व्याप्त जो व्रण उसके नाश करनेको त्रिफलेका काठमें गुगुलु डालके पीवे ॥

मनःशिलादि लेप ।

मनःशिलासमंजिष्ठासलाक्षारजनीद्रयम् ।

प्रलेपःसघृतक्षौद्रस्त्वग्विशुद्धिकरःस्मृतः ॥

अर्थ—मनसिल, मजीठ, लास, हलदी, दारुहलदी इनको घी और शहदसे लेप करे तो चर्मकी शुद्धि करे अर्थात् घाव भरनेपर जो गूँथ पडजाती है उसको नहीं पडने दे ॥

पारदादि मलहरघृत ।

रसगंधकयोश्चूर्णैतत्सममुर्दशंखकम् । सर्वतुल्यंतुकंपिष्टींकिचि-
जुत्थसमन्वितम् । सर्वसंमेलयेदत्वाघृतंसर्वचतुर्गुणम् । पित्रुष्टु-

तंप्रदातव्यंदुष्टव्रणविशोधनम् । नाडीव्रणहरचैवसर्वव्रणनिघूद-
नम् । येव्रणानप्रशाम्यन्तिभेषजानांशतेनच । अनेनतेप्रशा-
म्यन्तिसर्पिपास्वल्पकालतः ॥

अर्थ—पारा गंधक इनकी कजली और कजलके समान मुरदासिंग तथा सबके बराबर कवीला तथा किंचित् लीलायोथा इन सबको एकत्र खरल कर चौगुना घी मिलायके एकजीव करलेवे फिर इसको कपडे लगायके फोडेपर चिपकावे तो यह घृत व्रणशोधक है तथा नाडीव्रण संपूर्ण व्रण इनको नाश करे जो घाव सैकड़ों औषधोंसे दूर नहीं होते वो इस मलहमसे थोडे कालमें अच्छे होय॥
प्रकारांतर ।

रसगंधकसिंदूररालकंपिल्लमुर्डकम् । तुत्थंखादिरकंचूर्णसर्व-
घृष्टंचतुर्गुणम् । युक्त्यासंमैल्यापिचुनाव्रणेदेयंविजानता ।
सर्वव्रणप्रशमनंघृतमेतन्नसंशयः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, सिंदूर, रार, कवीला, मुर्दासिंग, लीलायोथा, कत्या इन सबको एकत्र चूर्ण कर इसमें चौगुना घी डालके मलहम बनाय ले इसको कपडेपर लगायके घावपर रखे तो यह घृत अर्थात् मलहम सर्व प्रकारके व्रणोंको नाश करे ॥

अयोरजादिलेप ।

अयोरजाःसकासीसंनिफलाकुसुमानिच ।
प्रलेपःकुरुतेदाव्याःसद्यएव नवत्वचि ॥

अर्थ—झांझ, हीराकसीस, हरड, बहेडा आँवला, लौंग, दारुहलदी इनको नए चमडेपर लेप करे तो देहके रंगसे नवीन चमडेके रंगको मिलायदे ॥
गुग्गुलवटक ।

त्रिफलाचूर्णसंयुक्तोगुग्गुलुर्वटकीकृतः ।
निषेवित्तोविवंधघ्नोव्रणशोधनरोपणः ॥

अर्थ—त्रिफलाका चूर्ण मिलायके गुग्गुली गोली बनावे इसमेंसे एक एक देवे तो मलबद्धताको नाश करे तथा व्रणको शुद्ध करके भरलावे ॥
विडंगादि गुग्गुलु ।

विडंगंत्रिफलाव्योपचूर्णैगुग्गुलुनासमम् । सर्पिपावटकान्कुर्यात्
खादेद्वाहितभोजनः ॥ दुष्टव्रणापचीमेहकुष्ठनाडीविशोधनः ॥

अर्थ—वायविडंग, हरड, बहेडा, आंवला, सोठ मिरच पीपल इन सबके बराबर गूगल लेवे सबको कूटपीस ॥

अमृतादिगुग्गुलु ।

अमृतापटोलमूलंत्रिकदुत्रिफलाकृमिघ्नानां । कृत्वासमभाग
चूर्णतत्तुल्योगुग्गुलयोज्यः ॥ प्रतिवासरमेकैकांखादेदथाक्षपरि
माणाम् । जेतुंव्रणवातास्रगुल्मोदरपांडुशोथादीन् ॥

अर्थ—गिलोय परबलकी जड, सोठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, वायविडंग इनको सम भागले चूर्ण करे तथा सब चूर्णके बराबर गूगल मिलावे फिर एकर तौलिकी गोली बनावे एक गोली नित्यप्रति भक्षण करे तो व्रण वातरक्त, गोला, उदर पांडुरोग और सूजन इनको नाश करे ॥

जात्यादिघृत ।

जातीपत्रपटोल निंबकटुकादावीनिशासारिवामंजिष्ठाभयतु
त्थसिक्थमधुकैनेक्ताह्वबीजैः समैः । सर्पिः सिद्धमनेनसूक्ष्म
वदनामामिश्रिताः स्नाविणोगंभीराः सरुजोव्रणाः सगतिकाः
शुद्ध्यन्तिरोहन्तिच ॥

अर्थ—जावित्री, पटोलपत्र, नीमकीछाल, कुटकी, दारुहलदी, सारिवा, मजीठ लीलायोथा, खपरिया, मोम, मुलहटी, कंजेके बीज, इनके काठमें घी मिला-यके सिद्ध करे और खाय तो छोटे मुखका, मर्मका, बहनेवाला, गंभीर दूखने वाला, अंतर्गति करनेवाला ऐसा व्रणको शुद्ध करे, तथा भरलाताहै ॥

स्वर्जिकादिघृत ।

स्वर्जिकाचयवक्षारःकपिलंचहरेणुका । टंकणश्वेतखदिरंतुत्थं
चूर्णचगोघृतैः । सर्वसमांशंसंचूर्ण्यमर्दयेत्प्रहरंदृढम् । स्वर्जिका
द्यमिदंसर्पिःसर्वव्रणहरंपरम् ॥

अर्थ—सज्जीखार, जवाखार, कवीला, रेणुकबीज, सुहागा, पपरियाकत्थ, लीलायोथा, इन सबका चूर्णकर गौके घीसे १ प्रहर खरल करे, यह स्वर्जिका-दि घृत सर्व प्रकारके व्रणोंको नाश करे तथा व्रणको भरलावे है और कृमि खजली, इनको नाश करके चमडीको उत्तम करे ॥

लेपोपनाह ।

कटुतैलान्वितैर्लेपःसर्पनिर्मोकमस्मनिः ।

चयःशाम्यतिगंडस्यप्रकोपःस्फुटतिद्रुतम् ॥

अर्थ-सांपकी कांचली और राख इनको सरसोंके तेलमें लेप करे तो व्रणमें संचय, गंडका प्रकोप शांति होकर शीघ्र फूटजावे ॥

लेपनिधम ।

नरात्रौनेपनंदद्यादतंचपतितंतथा । नचपर्युपितंचैवशुष्यमा
णनधारयेत् ॥ शुष्माणंचाप्युपेक्षेतप्रदेहंपीडनंप्रति । नचापि
मुखमालिपेत्तेनदोषः प्रसिच्यते ॥

अर्थ-रात्रिमें लेपन करे और लगाया हुआ लेप गिर पड़े तो उसको न लगावे तथा वासी औषधको न लगावे, सूखने वाला व्रणका लेप तथा लुगदी बांधने उपेक्षा करे, तथा व्रणके मुखपर लेप न करे यदि व्रणके मुखपर लेप करे तो दोषोंका सिंचन होय ॥

पाचन काल ।

नप्रशाम्यतियःशोथःप्रलेपादिविधानतः ।
द्रव्याणिपाचनीयानिदद्यात्तत्रोपनाहने ॥

अर्थ-जो सूजन प्रलेपादिक करने से शांति न होय उसको पाचन करने वाली औषध बाँध के शांति करे ॥

अथोपनाहन ।

सतिलासातसीबीजादध्यम्लंसक्तुर्पिंडिका ।
सकिरावकुष्ठलवणाः शस्ताः स्युरूपनाहके ॥

अर्थ-तिल-अलसी-जौकेचूनेकीपिंडी-खट्टादही-कूठ-निमक- ये एकत्र करके धान्य भिगोके दाह निकालनेके वास्ते तयार करे हुए जलमें भिगोय कर पिंडी बाँधे ॥

सक्तुर्पिंडी ।

तैलेनसर्पिपाषापिद्राभ्यांसक्तुकर्पिंडिका ।
सुखोष्णाशोफनाशार्थमुपनाहःप्रशस्यते ॥

अर्थ-सक्तुको तेलमें अथवा घीमें गरम कर उसको सुखोष्ण करके पिंडी बाँधे तो सूजन दूर होय ॥

पाटन ।

अंतः पूयिष्ठवक्रेषुतथैवोत्संगवत्स्वपि । गतिमत्सुचरोगेषुभे-

द्वनंशस्तमुच्यते ॥ बालवृद्धासहक्षीणभीरुणांयोपितामपि ॥
मर्मोपरिचजातेषु पक्वशोथेचदारुणम् ॥

अर्थ—ब्रणके मुखमें राध होनेसे तथा और पास राध होनेसे अथवा व्याधिके फैलनेसे उसको फोड़ देवे, बाल वृद्ध क्षीण डरपोक स्त्री और मर्म के ऊपर ब्रण होनेसे तथा सूजनके पकनेपर ब्रणको अवश्य फोड़ देना चाहिये ॥

मातुलुंगादि लेप ।

मातुलुंगाग्रिमथौचसुरुदारुमहौपधम् ॥
अहिंसाचैवरास्नाचप्रलेपोवातशोफहा ॥

अर्थ—बिजोरा, अरनी, देवदारु, सोंठ, अहिंसा, (ऐरावती) और रासना इनका लेप वात शोथको नाश करे ॥

कांजिक कल्क ।

कल्कःकांजिकसंपिष्टः स्निग्धःशाखोटकत्वचः ।

सुपर्णइवनागानांवातशोथविनाशनः ॥

अर्थ—अखरोटकी छाल कांजीमें घोटके उसका लेप करे तो वातजनित सूजनको नाश करे जैसा सपौंका गरुड नाश करते हैं ॥

पित्तशोथ चिकित्सा ।

दूर्वाचनलमूलंचमधुकंचंदनंतथा ।

शीतलैश्वर्गणैःसर्वैःप्रलेपोपित्तशोफजित् ॥

अर्थ—दूर्व नरसलकी जड, मुलहठी, चंदन और संपूर्ण शीतल औषधों का गण, इनका लेप करे तो पित्तजनित सूजनका नाश होय ॥

अजगंधादि लेप ।

अजगंधाश्वर्गंधाचकालासरलयासह ॥

कंपिल्लकाचगृगीचप्रलेपःश्लेष्म शोथहा ॥

अर्थ—वनतुलसी, असगंध, कालीनिसोथ, संपेदनिसोथ, कबीला और काकडासिंगी इनका लेप कफात्मकसूजनको नाश करे ॥

कृष्णादिलेप ।

कृष्णापुराणपिण्याकशिष्टुत्वक्सीकताशिवा ।

मूत्रापिष्टःसुखोष्णोयंलेपःश्लेष्मशोथजित् ॥

अर्थ-पीपल, पुरानीखल, साँहजनेकी छाल, खांड, हरड, इनको गोमूत्रमें पसिके गरम करके सुहाता २ लेप करे यह कफजनितसूजनको नाश करे ॥
न्यग्रोधादिलेप ।

न्यग्रोधोदुम्बरोश्वत्थप्लक्षवेतसशैलुभिः ॥ चंदनंद्वयमंजिष्ठायष्टी
सुरण गैरिकैः ॥ शतधौतघृतोन्मिश्रैर्लेपोरक्तप्रसादनः ॥ दाह
पाकरुजास्त्रावशोफनिर्वापणंपरः ॥ आंगतुजेरक्तजेचणपले
पोतिपूजितः ॥

अर्थ-बड, गूलर, पीपल, इमली, वेत, लिसोरा, सपेदचन्दन, लालचन्दन,
मजीठ, मुलहठी, सुरन, (जमीकन्द) गेरू इनका चूर्ण करके सौवार धुलेहुए
धीमें मिलायके घोंटे इसका लेप करे तो रुधिर को शुद्धि करे और दाह, पाक
पीडा, खाव और सूजन इनको नाश करे तथा यह लेप आगन्तुक व्रण तथा
रक्तजव्रण इनपर उत्तम है ॥

व्रणरोग ।

व्रणरोग का कर्मविपाक ।

जात्युत्तमस्त्रीगमनाज्जायतेमस्तकव्रणी ।

तत्पातकविशुध्यर्थंप्राजापत्यं व्रतंचरेत् ॥

अर्थ-उत्तम जातिकी स्त्री से हीन वर्णका पुरुष गमन करे वो मस्तक
व्रणी होता है उसको इस पापके दूर करनेको प्राजापत्य व्रत करना चाहिये ॥
कर्मकालेकुक्कुटंचंखरादीन्वायईक्षते । सनासिकाव्रणीचस्या
द्राद्रेनेत्रश्वजायते ॥ उद्यन्नद्यंत्युचाचाज्यं जुहुयादयुतंचरुम् ॥ श्री
सूक्तंचजपेद्रक्षां दूवाक्षतविमिश्रिताम् ॥ शिखायांचनिवध्रीयात्
शिवसंकल्पमंत्रितम् ॥

अर्थ-स्नान संध्यादिक पुण्य फर्म करते समय मुरगा, गधा, चांडालादिक
इनको बुद्धिपूर्वक देखे जिसके नासिका व्रण होय है तथा नेत्रोंसे जल गिरा
करे उस की शांति यह है कि "उद्यन्नद्येति" इस ऋचासे घृत और चरुका
होम दशहजार करे तथा श्रीसूक्तका जप व्याधिके तारतम्यानुसार करे,
तथा शिखा (चुटिया) में दूब और अक्षतयुक्त भस्म शिवसंकल्पमंत्रसे
रक्षार्थ बोधे ॥

व्रणनिदान ।

द्विधाव्रणःपरिज्ञेयःशारीरागंतुभेदतः ।

दोषैराद्यस्तयोरन्यःशस्त्रादिक्षतंसंभवः ॥

अर्थ—शरीर और आगंतुक इन भेदोंसे व्रण दो प्रकार का है, पहिला शरीर दोषोंके कोपसे होय है और दूसरा शस्त्रादिक करके घावके होनेसे होय है ॥

वातिक व्रण ।

स्तब्धःकठिनसंस्पृशामंदस्त्रावोमहारुजः ।

तुद्यतेस्फुरतिश्वावोव्रणोमारुतसंभवः ॥

अर्थ—वादीसे प्रगट व्रणमे जिकड़ना, तथा हाथके छूनेसे कठिन मालूम होय, उसमेसे थोडा साव होय तथा पीडा बहुत होय तथा सुईके चुभाने कीसी पीडा होय और उसका रंग काला होय ॥

पैत्तिकव्रण ।

वृष्णामोहज्वरक्लेददाहदुष्टचवदारुणैः ।

व्रणंपित्तकृतांविद्याद्रधैःस्त्रावैश्चपूतिकैः ॥

अर्थ—प्यास, मोह, ज्वर, क्लेद, दाह, सडना, चिरासा होय, बास आंवे, साव होय ये पित्तव्रणके लक्षण है ॥

कफजन्यव्रण ।

बहुपिच्छोगुरुःस्निग्धःस्तिमितोमंदवेदनः ॥

पांडुवर्णोल्पसंक्लेदीचिरपाकीकफोद्भवः ॥

अर्थ—कफका साव अत्यंत गाढा, भारी, चिकना, निश्चल, मन्द, पीडा, पीलारंग, थोडा स्रवने वाला और बहुत कालमे पके ॥

रक्तज व द्रवजव्रण ।

रक्तोरक्तस्रुतीरक्ताद्वित्रिजः स्यात्तदन्वयैः ।

अर्थ—जो रक्तके कोपसे व्रण होय वो रक्तवर्ण, उसमेंसे रुधिर स्रवे, एक दोष और रुधिरके संबंधसे जो होय वो द्रव अथवा दो दोष तथा रुधिर इनके मिलनेसे सत्रिपातका व्रण जानना ॥

सुखव्रणनिदान ।

त्वङ्मांसजःसुखेदेशेतरुणस्यानुपद्रुतः ।

धीमतोभिनवःकालेसुखंसाध्यःसुखव्रणः ॥

अर्थ—जो व्रण त्वचा और मांस तथा मर्मरहित स्थानमें उपद्रव रहित होय और जो तरुण तथा ज्ञानी पुरुषके हेमंत शिशिर कालमें प्रगट होय, उसको मुखव्रण कहते हैं वो मुखसाध्य है ॥

कृच्छ्रसाध्य और असाध्य ।

गुणैरन्यतमैर्हीनःस्ततःकृच्छ्रोव्रणःस्मृतः ।

सर्वैर्विहीनोविज्ञेयःसोसाध्योनिरुपक्रमः ॥

अर्थ—जो पूर्व श्लोकमें लक्षण कह आये उनमेंसे कुछ लक्षण थोड़े होनेसे व्रण कृच्छ्रसाध्य होय, है और गुण रहित होय वो असाध्य है, उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥

दुष्टव्रण ।

पूतिपूयातिदुष्टासृक्स्त्राव्यूत्संगीचिरस्थितिः ।

दुष्टव्रणोतिगंधादिःशुद्धलिंगविपर्ययः ॥

अर्थ—जिसमेंसे दुर्गन्ध युक्त रास और सडा भया रुधिर बहे जो ऊपर ऊंचा तथा भीतरसे पीला होय, बहुत दिन रहनेवाला होय, उसको दुष्टव्रण कहते हैं वो शुद्ध लिंगके विपरीत होय है ॥

शुद्ध व्रणके लक्षण ।

जिह्वातलाभोतिमृदुःश्लक्ष्णःस्निग्धोल्पवेदनः ।

सुव्यवस्थोनिरास्रावःशुद्धोव्रणइतिस्मृतः ॥

अर्थ—जो व्रण जीभके नीचे भागके समान अत्यंत नरम होय, स्वच्छ, चिकना, थोड़ी पीडा युत, भले प्रकारका कहिये ऊंचा आदि जो दुष्ट व्रणादिकमें लक्षण कहे वो न होय, दोष रक्तादि सावरहित होय उसको शुद्धव्रण जानना ॥

भरनेवाले व्रणके लक्षण ।

कपोतवर्णप्रतिमायस्यांताःक्लेदवर्जिताः ।

स्थिराश्चापिटिकावंतोरोहतीतितमादिशेत् ॥

अर्थ—जिस्का घाव कषूतरके रंग सदृश होय और जिस्में क्लेदन नहता होय और घाव स्थिरहो, जिस्में फूसीसी मालूम हो, उसको वैद्य जाने कि, यह व्रण (घाव) स्थिर भरनेवाला है ॥

भरेहुए व्रणके लक्षण ।

रूढवर्तमानमग्रंथिमशूनमरुजं व्रणम् ।

त्वक्सवर्णसमतलं सम्यक् रूढं तमादिशेत् ॥

अर्थ—जिसका मार्ग भरगया होय, गाँठबँधी होय, सूजन और पीडा जिस्में होय नहीं, त्वचाके समान वर्ण होगया हो, घावका गडला भरकर बराबर होगयाहो, वो व्रण उत्तम भरा जानना ॥

व्याधिविशेष करके व्रणको कृच्छ्रसाध्यत्व ।

कुष्ठिनांविपजुष्टानांशोपिणामधुमेहिनाम् ।

व्रणाःकृच्छ्रेणासिद्धचंतियेषांचापिव्रणेव्रणाः ॥

अर्थ—कोठी पुरुष, विषवालापुरुष, क्षयीरोग वाला, मधुमेही पुरुष, ऐसेन्का व्रण बडे कष्टसे साध्य होय है । और जिस्के पहिले व्रणमें व्रण प्रगट होय, उस्के ये व्रण कष्टसाध्य होय है ॥

साध्यासाध्य लक्षण ।

वसामेदोथमज्जानंमस्तुलुंगंचयःस्रवेत् ।

आगंतुजोव्रणःसिद्धचेन्नसिद्धचेदोपसंभवः ॥

अर्थ—जिस व्रणमें से चर्बी, मेद, मज्जा और बस्तिस्नेह ये बहें वो व्रण आगंतुज होय तो साध्य है और दोषकृत होय तो साध्य नहीं हाये ॥

असाध्य व्रण ।

मद्यागुर्वाज्यसुमनःपद्मचंदनचंपकैः ।

सुगंधादिव्यगंधाश्चमुमूर्पूर्णाव्रणाःस्मृताः ॥

अर्थ—मद्य, अगर, घृत, फूल कमल, चन्द्रन और चंपाके फूलके समान अथवा चमत्कारी, पारिजाति आदि फूलकीसौगन्ध जिस व्रणमें से आवै वो व्रण मरने वाले रोगी के जानना ॥

प्रकारांतर ।

येचमर्मस्वसंभूताभवंत्यत्यर्थवेदनाः । दह्यंतेचांतरत्यर्थवहिः

शीताश्चयेव्रणाः ॥ दह्यंतेवहिरत्यर्थभवंत्यंतश्चशीतलाः । प्रा

णमांसक्षयंश्वासकासारोचकपीडिताः।प्रवृद्धपूयरुधिराव्रणाये-

पांचमर्मसु ॥ क्रियाभिः सम्यगारब्धानसिद्धचंतिचयेव्रणाः ।

वर्जयेदेवतान्वैद्यः संरक्ष्यन्नात्मनोयशः ॥

अर्थ—जे व्रण मर्मस्थानमें प्रगट भये होय और उनमें अत्यन्त पीडा होय वे तथा जिस जिस व्रणके भीतर दाह होय और बाहर शीतल होय वे अथवा बाहर दाह होय और भीतर शीतलता होय वे तथा जिन्में बल, मांस, इन्का

क्षय होय; श्वास; खांसी; अरुचि; इन्से अत्यंत पीडित होय; ऐसे अथवा जे व्रण मर्मस्थानमें प्रगट भये हों उन्में से राध; रुधिर बहुत बहे वे अथवा जिन व्रणोंकी अच्छी चिकित्सा करनेसे भी अच्छे न होय ऐसे व्रणोंका अपने यशकी रक्षा करने वालो वैद्य त्याग दे ॥

व्रणमें अपचार ।

व्रणोश्चयथुरायासात्सचरागश्चजागरात् ।

तौचरुक्च दिवास्वापात्ताश्चमृत्युश्चमैथुनात् ॥

अर्थ—परिश्रम करनेसे व्रणमें सूजन होती है और जागनेसे ललोही होतीहै और दिनमें सोनेसे सूजनपर लाली आयकर पीडा होती है और मैथुन करनेसे सूजन लाली पीडा होकर मृत्यु होय ॥

व्रणरोगमें सामान्यचिकित्सा ।

अम्लंदधिचशाकंचमांसमातृपवारिजम् ।

जीरंगुरुणिचान्नानिव्रणिनः परिवर्जयेत् ॥

अर्थ—खट्टादही-साग-अनूपदेशके तथा जलमें रहने वाले प्राणियोंका मांस जीरा और भारी अन्न ये पदार्थ व्रणरोग वालेको त्याग देने चाहिये ॥

वातव्रण चिकित्सा ।

मातुलुंगाग्रिमथौचसुरदारुक्महौपधम् ।

अहिंसाचैवरास्त्राचप्रलेपोवातशोफहा ॥

अर्थ—विजोरेकी जड़-अरनी-देवदारु-सोंठ-नागफनी-थूहर और रास्ना-इनका लेप करे तो वातसंबंधी सूजनको नाश करे ॥

रक्त स्नाव ।

हरत्यष्टांगुलंतुंबीशृंगंचद्वादशांगुलम् ।

शिरासर्वांगजरक्तंजलैकाचतुंगुलम् ॥

अर्थ—तुंबी आठ अंगुल पर्यंतके रुधिरको निकाले है सिंगी बारह अंगुलके रुधिरको और शिरावेध (फुत्त खोलना) सर्वांगके रुधिरको और जोख चार अंगुलके रुधिरको निकाले है ॥

गंभीरव्रणपर लेप ।

अभयात्रिवृतादंतलिगिलीमधुसैधवैः । सुपवीपत्रधनूरकर्ण-
मोटकुठेरिकाः । पृथगेतिप्रलेपेनगंभीरव्रणशोपणाः ॥

अर्थ-हरड, निसोथ, दती, मजीठ, सहत, सैधानिमक, कलौजी, तालीसे पत्र, धनूरा, बबूर और फठेरक इनका लेप करे तो ये पृथक् २ घणको शोषण करने वाले है ॥

निवादि लेप ।

निवपत्रंतिलादंतीत्रिवृत्सैन्धवमाक्षिकम् ।

दुष्टघणप्रशमनोलेपःशोधनकेसरी ॥

अर्थ-नींबके पत्ते, तिल, दंती, निसोथ, सैधानिमक, सहत इनका लेप दुष्ट घणको नाशक और शोधन विषयमे सिंह है ॥

मनःशिलादि लेप ।

मनःशिलासमंजिष्टासक्षारारजनीद्वयम् ।

प्रलेपःसघृतक्षौद्रस्त्वग्विशुद्धिकरःस्मृतः ॥

अर्थ-मनसिल, मजीठ, जवाखार, दारुहलदी, हलदी, घी और सहत इनका लेप त्वचाकी शुद्धि करे है ॥

घणकी कृमिपर ।

करंजारीष्टनिर्गुंडीरसाहन्याद्घणकृमीन् ॥

अर्थ-करज, अमलतास, निर्गुंडी इनका रस घणसंबंधी कृमिको नाशकरे ॥
प्रकारातर ।

निवशम्याकजात्यर्कसप्तपर्णाश्वमारकाः ।

कृमिघ्नामूत्रसंयुक्तासेकलेपनधावनैः ॥

अर्थ-नींब, अमलतास, चमेली, आक, सतौना सपेदकनेर और गोमूत्र इनका लेप तथा इन्हींके काढेसे घणको धोना तथा बफारा देना ये सब कर्म कृमिनाशक है ॥

जात्यादि घृत ।

जातीनिवपटोलपत्रकटुकादावीनिशासारिवामंजिष्ठाभयसिं
धुतुत्थमधुकैर्नक्ताह्वजीःसमैः ॥ सर्पिःसिद्धमनेनसूक्ष्मपदना
मांसाश्रिताः स्त्राविणोगंभीराः खरुजोव्रणासुगतिकाःशुद्धयं
तिरोहंतिच ॥

अर्थ-चमेली, नींब, पडवल, फुटकी, दारुहलदी, हलदी, सपेदसारिवा, मजीठ, खस, सैधानिमक, लीलाथोथा, मुलहटी, इनके बराबर कंजाके बीज ले, इन

सबके कल्कको मिलायके सिद्ध करा हुआ थी, इसके लगानेसे छोटे सुखका मांसाश्रित गहन स्राव होनेवाला, पीडायुक्त पेसा व्रण शुद्ध हो भरके अच्छा होय ॥
पटोलादि काय ।

पटोलीनिवपत्राणांकाथःसंक्षालनेहितः ।

कल्कःसंरोपनेशस्तास्तिलानांमधुकान्वितः ॥

अर्थ—परबल, नीमके पत्ते, इनका काढा घावके धोनेमें उत्तम है, उसी प्रकार तिलोंका कल्क और मुलहठीका चूर्ण व्रणके भरनेमें उत्तम है ॥
त्रिफलादिकाथ ।

थेक्केदपाकेसतिगंधवंतोव्रणामहांतःसरुजःसशोथाः ।

प्रयांतितेशुग्गुलमिश्रितेनपीतेनशांतित्रिफलाजलेन ॥

अर्थ—जो व्रण राध होकर पके और गन्ध पीडा सृजन इन फरककेयुक्त तथा बड़े भारी हो वो हरड, बहेडा, आंवला इनके काढेमें गूगल मिलायके पानेसे अच्छे होवे ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे शारीरकव्रण निदानचिकित्सा समाप्ता ।

अथाग्निदग्धव्रणनिदान.

तत्रस्निग्धंरूक्षंवाश्रित्यद्रव्यमाग्निर्दहति ॥ अग्निःसंतप्तोहिस्नेहः
सूक्ष्ममार्गानुसारित्वात्त्वगादीननुप्रविश्याशुदहति । तस्मा
त्स्नेहदग्धेधिकारुजोभवन्ति । तत्रप्लुष्टंदुर्दग्धंसम्यग्दग्धम
तिदग्धंचेतिचतुर्विधभवत्यग्निदग्धम् ॥

अर्थ—तहाँ स्निग्ध द्रव्य (घृत आदि) और रुक्ष द्रव्य (काष्ठपापाण लोष्टादि) के आश्रय करके अग्नि, वैद्यके दोषसे दहन करे है । अग्नि करके संतप्त जा चिकनाई है सो सूक्ष्म शिरानुसारित्व होनेसे त्वचा आदिमें प्रवेश हो तत्क्षण पजारता है । इसीसे स्नेहदग्धमें अधिक पीडा होती है । तहाँ प्लुष्ट, दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध और अतिदग्ध ये चतुर्विध अग्नि दग्ध हैं ॥

तत्रयद्विवर्णतुप्यतेप्रतिमात्रंतत्प्लुष्टं । यत्रोत्तिष्ठंतिस्फोटास्ती
वाश्रोपदाहरागपाकवेदनाश्चिराच्चोपशाम्यन्तिदुर्दग्धं । स
म्यग्दग्धमवगाढंतालफलवर्णसुस्थितंपूर्वलक्षणयुक्तं । अतिद

ग्धंतुत्वद्मांसावलंबनंगात्रविश्लेषः शिरास्त्रायुसंध्यस्थिव्यापा
 देनातिमात्रचेदनाज्वरदाहपिपासामूर्च्छांश्वासोपद्रवाभवन्ति ।
 व्रणश्चास्यचिरेणरोहतिरूढश्चविवर्णोभवति ॥ तदेतच्चतुर्विध
 मग्निदग्धलक्षणमात्मकर्मप्रसाधकंभवति ॥

अर्थ—तहां दग्धस्थानका विवर्ण हो और अत्यंत दाह हो उसको प्लुष्ट कहते हैं । जिसमें तीव्र फोडे प्रगट हों और खींचने कीसी पीडा, दाह, राग (रक्तता) पाक और ओषादि दाह हों तथा बहुत देरमें जो शांति होंवे उसको दुर्दग्ध कहते हैं । जो अति दग्ध लक्षण करके रहित हो तथा पके हुये तालफलेक समान वर्ण होंवे और अत्यंत ऊंचा तथा नीचा इत्यादि दोष-रहित हो ओर जो पूर्वलक्षण (त्वचा, मांस, शिरा, स्त्रायु, संधी, अस्थि दाह लिंग) युक्त हो उसको सम्यग्दग्ध कहते हैं । अति दग्ध होनेके ये लक्षण हैं कि, मांसका अवलंबन, देहका विषट्टन, शिरा, स्त्रायु, संधी और अस्थि इनका हिंसन, अत्यंत ज्वर, दाह, प्यास मूर्च्छा इत्यादि उपद्रव होंवे तथा व्रण बहुत दिनमें भरे और भर जावे तब भी वह स्थान विवर्ण हो जावे । यह चतुर्विध अग्निदग्ध वैद्यको आत्मकर्म (चिकित्सा) का प्रसाधक होता है ॥

प्लुष्टशाग्निप्रतपनंकार्यमुष्णंतथौषधम् । शीतामुष्णंचदुर्दग्धे
 क्रियांकुर्यात्ततःपुनः । घृतालेपनसेकांस्तुशोतान्येवास्यकार
 येत् । अतिदग्धेविशीर्णानिमांसान्युद्धृत्यशीतलाम् । क्रियांकु
 र्याच्चतांकालेशालितंडुलकंडनैः । तिदुक्व्यास्त्वक्कपायैर्वाघृत
 मिश्रैःप्रलेपयेत् । सम्यग्दग्धेतुगाक्षीरीप्लुक्षचंदनगौरिकैः । सा
 मृतैसर्पिपायुक्तैरालेपंकारयेद्भिपक् ॥

अर्थ—प्लुष्ट दग्ध है उसको अग्निसे तपाना चाहिये और औषध भी गरम देना चाहिये अर्थात् लेप पानादिक भी उष्ण ही करने चाहिये। कदाचित् कोई शंका करे कि, अग्निदग्ध उष्ण है उसमें उष्ण ही क्रिया करना तो हमारी समझमें नहीं आता दुर्दग्धमें शीतल और उष्ण दोनों क्रिया वैद्यको करनी चाहिये और पीछे घृतका लेप और सेक आदि शीतल ही करना चाहिये, इस प्रकार रोगी सुखी होता है । कोई कहता है कि, अतिदाहमें शीतल क्रियाकरे और उष्ण क्रिया कदाचित् न करे । अतिदग्धमें विखरेहुये मांसको निकाल कर वैद्य शीतल क्रिया करे पीछे सांठीचावलोंकी कणकी करके तेंदूकी छालके कांडमें घृत

मिलाय लेप करे । सम्यग्दग्धमें वंशलोचन (अथवा कोई तुगाक्षीरीके कहनेसे वंशलोचनके समान पार्थिवद्रव्य विशेष कहते हैं) पाखर, लालचंदन और गिलोय इनको घृतमें मिलाय लेप करे यह लेप पित्तको शांति करताहै ॥

पथ्यादि लेप ।

पथ्याकर्दमजीरकमधुसिक्थकसर्जमिश्रितोलेपः ।

गव्यंघृतमपहरतिचपावकजनितंत्रणंसद्यः ॥

अर्थ—हरड, कौंच, जीरा, मुलहठी, मोम, राल, इन सबको एकत्र पीस लेप करे अथवा गौका घी अग्निसे भुलसे हुए पर लगावे ॥

अंतर्धूम ।

अंतर्धूमकुठेरकोदहनजंलेपान्निहंतित्रणं

चाश्वत्थस्यविशुष्कवल्कलभवंचूर्णतुसंगुठनात् ॥

अर्थ—घरका धूआँ आजबला चित्रक इनका लेप करनेसे व्रण नाश होय अथवा पीपलकी सूखी हुई छालके चूर्ण लगानेसे व्रण नाश होय ॥

सुधादि लेप ।

सुधांपुरातनीदग्धोवारिणापरिपेपिताम् ।

लेपनेतेलदग्धस्यविस्फोटव्याधिनाशनम् ॥

अर्थ—बहुत दिनका पुराना चूना ले उसमें दहीका जल डालके पीसे फिर इसका लेप करे तो तेलसे जले हुएको और फोडेनको नाश करे ॥

शैलादि आश्रोतन ।

आक्षिपक्ष्मसुकर्तव्यमिदमाश्रोतनंहितम् ॥ शैलुत्वक्त्रिफलादावीं

क्वाथोरोचनयायुतः । स्नुह्यर्कक्षीरसिक्तोष्णगव्यसर्पिर्निपेचयेत् ॥

अर्थ—शैलकीछाल—हरड—बहेडा—आँवला दारुहलदी इनके फोडेमें गोरोचन डालके इससे नेत्र सिंचन करे—फिर घीसे सिंचन करे तो जलेहुए नेत्र तथा शूहर आकफा दूध इनसे चिगडे हुए नेत्र अच्छे होय ॥

अग्निदग्धपर लेप ।

अभ्यंगाद्विनिहंतितैलमखिलंगडूपदैः साधितं

पिष्टाशाल्मिलतूलैकजलगतलिपात्तथावालुकाम् ॥

अर्थ—गिडोरानका तेल निकालके मालिस करे अथवा सेमरकी रुईको पीस जलसे लेप करे अथवा जलसे घालका लेप करे तो अग्निसे जला हुआ अच्छा होय ॥

घातकीचूर्ण ।

अग्निदग्धे विसर्पे च कीटलूताव्रणे पुच ॥ चिरोत्थेषु च दुष्टेषु नाडीमर्माश्रितेषु च ॥ अग्निदग्धव्रणे देयं घातकीचूर्णमुत्तमम् ॥

अतसीतैलसंमिश्रं वह्निदग्धव्रणापहम् ॥

अर्थ—घायके फूलोंका चूर्ण अलसीके तेलमें लगावे तो अग्निदग्धव्रण, विसर्प, कीटव्रण, लूताव्रण बहुत दिनका दुष्टनाडीव्रण मर्माश्रित व्रण इनको नाश करे ॥
त्रिफलाचूर्ण ।

अंतर्धूमविदग्धं त्रिफलाचूर्णं विमिश्रितं तैलैः ।

शौमैः शीघ्रं शमयत्यग्निव्रणमाशुलेपेन ॥

अर्थ—त्रिफलाको एक वासनमें भर ऊपरसे ढक देवे और चूल्हेपर चढायके उसको जलाय लेवे. इस राखकी तेलमें मिलायके लगावे तो अति दग्ध व्रण शीघ्र दूर होय ॥

सामान्य उपचार ।

पित्तविद्रधि वीसर्पशमनलेपनादिकम् ।

अग्निदग्धव्रणे सम्यक्प्रयुंजीतविचक्षणः ॥

अर्थ—अग्निदग्धव्रणपर पित्तविद्रधि विसर्प इनपर जो औषधी कही है वो लगावे ॥

दग्धयवचूर्ण ।

दग्धयवभस्मचूर्णतैलतिलोक्तप्रलेपनादचिरात् ।

हरति शिखिदाहदग्धभूयोभ्यंगाद्द्वणं चाशु ॥

अर्थ—जौनको जलायके उस भस्मको तिलके तेलमें लेप करे तो अग्निदग्धव्रण शीघ्र नाश होय इसमें संदेह नहीं है ॥

चंदनादि तेल ।

चंदनं वटशृंगाश्वमंजिष्ठा मधुकंतथा । प्रपौडरीकंदूर्वाचपृतंगं
घातकी तथा । एतैस्तैलं विपक्तव्यंगोक्षीरेण समायुतम् । अग्निदग्धव्रणे श्रेष्ठं तत्क्षणाद्द्रोपणं परंम् ॥

अर्थ—चंदन, वडकीकली, मजीठ, मुलहटी, पुंडरीक वृंक्ष, दूर्वा, पतंग, घायके फूल; इन सबका कल्क कर उसमें दूध डालके तेल सिद्ध करे यह अग्निदग्ध व्रणको भरलानेमें श्रेष्ठ है ॥

पयोलि तैलम् ।

सिद्धंकपायकल्काभ्यांपटोल्याःकटुतैलकम् ।

दग्धव्रणरुजास्त्रावदाहविस्फोटनाशनम् ॥

अर्थ—परवलका काढा तथा कल्क इनसे सरसोंका तैल सिद्ध करके उसको दग्धव्रण, पीडा, स्त्राव, दाह और फोडा इनपर लगावे तो इनको नाश करे ॥

लांगली घृत ।

उभेहरिद्रमंजिष्ठा मधुकंलोध्रकटुफलम् । कपिल्लकमुभेमेदेलांगलीमूलमेवच ॥ पिप्पलीत्रिफलाचैर्वानिवपत्रंचकार्षिकं । कपिलायाघृतप्रस्थपचेत्तद्विगुणंपयः ॥ पलद्वयंचसिक्थस्यसिद्धेपूतेचदापयेत् । लांगलीकंघृतंनामव्रणानारोपणंपरम् ॥

अर्थ—हलदी—दारुहलदी—मजीठ—मुलहठी—लोध—कायफल—कवीला—मेदा—महामेदा—कलयारीकी जड़—पिप्पली—हरड—बहेडा—आवला—नीचके पत्ते—ये प्रत्येक तोले २ काली गौका घी ६४ तोले गौका दूध १२८ तोले इनमें घृत सिद्ध करे इसमें ८ तोले मोम मिलापदे—तो घृत सिद्ध होय यह व्रणको भरनेमें सबसे उत्तम है ॥

मधूच्छिष्टादि तैल ।

मधूच्छिष्टसमधुकंलोध्रंसर्जरसंतथा । मूर्वाचंदनमंजिष्ठापिष्ट्वा सर्षिर्विपाचयेत् ॥ सर्वेषामग्निदग्धानां व्रणरोपणमुत्तमम् ॥

अर्थ—माम—मुलहठी—लोध—राल—मूर्वा—चंदन—मजीठ—इनका कल्क करके उसमें घी मिलायके पचावे यह संपूर्ण प्रकारके अग्निदग्ध व्रणोंको भरलाताहै ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे अग्निदग्धव्रणस्य विद्वान्नीचीकरसा समाप्ता ॥

आगंतुव्रण निदान ।



नानाधारामुखः शस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ।

भवंतिनानाकृतयीव्रणास्तांस्तान्निवोधमे ॥

अर्थ—अनेक प्रकारकी धारवाले तथा सुखवाले शस्त्र अनेक ठिकानेपर लगनेसे अनेक प्रकारकी आकृति (स्वरूप) के व्रण होते हैं उनके कहताहूँ ॥

व्रणके छः प्रकार ।

छिन्नं भिन्नं तथा विद्धं क्षतं पिच्चितमेव च ।

घृष्टमाहुस्तथा पृष्ठंते पां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥

अर्थ—छिन्न, भिन्न, विद्ध, क्षत, पिच्चित और छटा घृष्ट, ऐसे आगंतु व्रण छः प्रकारके होते हैं उनके लक्षण कहता हूँ ॥

सर्वव्रणके उपद्रव ।

विसर्पः पक्षाघातश्च शिरास्तंभोपतानकः । मोहोन्मादव्रणरुजा-
ज्वरस्तृणाहनुग्रहः ॥ कासश्छर्दि रतीसारो हिक्काश्वासः सवे-
पथुः । पौडशोपद्रवाः प्रोक्ता व्रणानां व्रणचिंतकैः ॥

अर्थ—विसर्प, पक्षाघात शिरास्तंभ, अपतानक, मोह, उन्माद, ज्वर, व्रणकी पीडा, प्यास, हनुग्रह, खँसी, वमन, अतिसार, हिचकी, श्वास और कंप ये व्रण रोगके सोलह उपद्रव व्रणरोगके जाननेवालोंने कहे हैं ॥

छिन्न लक्षण ।

तिर्यक्छिन्नो मृदुर्वापियो व्रणस्त्वायतो भवेत् ।

गात्रस्य पातनं तद्धिच्छिन्नमित्यभिधीयते ॥

अर्थ—जो व्रण तिरछा, सरल (सीधा) अथवा लंबा होय उसको छिन्न-व्रण कहते हैं ॥

भिन्न लक्षण ।

शक्ति कुंतेपुषङ्गाग्रविपाणैराशयोहतः ।

यत्किंचित्स्रवते तद्धिभिन्नलक्षणमुच्यते ॥

अर्थ—बच्छीं, भाला, बाल, तरवारका अग्रभाग, विपाण (दांत सींग) इन से आशय, (कोष्ठ) को वेधकर थोडासा रुधिर सवे (निकले) उसको भिन्न कहते हैं ॥

कोष्ठ लक्षण ।

स्थानान्यामाग्निपक्वानामूत्रस्य रुधिरस्य च ।

हृदुंदुकः फुफ्फुसश्च कोष्ठा इत्यभिधीयते ।

अर्थ—आमाशय, अग्नाशय, पकाशय, मूत्राशय, रक्ताशय, कलेजा, ह्रीहृदय, मलाशय और फुफ्फुस इन स्थानोंकी कोष्ठसंज्ञा है ॥

इनके भेदोंके लक्षण ।

तस्मिन्भिन्नैरक्तपूर्णेज्वरोदाहश्चजायते । सूत्रमार्गगुदास्येभ्यो
रक्तग्राणांचगच्छति ॥ सूच्छांश्वासतृयाध्मानमभक्तछन्दए-
वच । विण्मूत्रवातसंगश्चस्वेदास्त्रावोक्षिरक्तता ॥ लोहगंधित्वं
मास्यस्यगात्रदौर्गन्ध्यमेवच । हृच्छूलंपार्श्वयोश्चापि विशेषंचा-
त्रमेशृणु ॥

अर्थ—वो कोष्ठ भिन्न होकर रुधिरसे भरजावे तब ज्वरदाह होयहे, सूत्रमार्ग,
गुदा, मुख और नाक इन्मेंसे रुधिर बहे, सूच्छां, श्वास, प्यास, पेटका फूलना,
अन्नमें अरुचि, मलमूत्र, अधोवायु इन्का अवरोध पसीना बहुत आवे, नेत्रमें
लाली, मुखमें लोहेकीसी वास आवे, अंगोंमें दुर्गन्धि, हृदय और पसवाडोंमें
शूल येलक्षण होतेहैं इन्से जो विशेषे लक्षण हैं उन्को मोसे सुन ॥

आमाशय स्थितरक्तके लक्षण ।

आमाशयस्थेरुधिररुधिरच्छार्दयत्यापि ।
आध्मानमतिमात्रंचशूलंचभृशदारुणम् ॥

अर्थ—आमाशयमें रुधिरका संचय होनेसे रुधिरकी वर्मन, पेट बहुत फूले
और अत्यंत भयंकर शूल होय ॥

विद्वलक्षण ।

पक्वाशयगतेचापिरुजागौरवमेवच ।
अधःकायेविशेषेणशीतताचभवेदिह ॥

अर्थ—पक्वाशयमें रुधिरका संचय होनेसे शूल, देहमें भारीपनो और कमरसे
लेकर नीचेके भागमें शीतलता होय है ॥

पक्वाशयस्य रक्तके लक्षण ।

सूक्ष्मास्यशल्योभिहतंयदंगंत्वाशयंविना ।
उत्तुडितंनिर्गतंवातद्विद्धिमितिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—वारीक अग्रभागवाले (मुई आदि) शस्त्रसे आशय विना जे अंग हैं
उन्में घेघ होनेसे तृडित (कहिये उन्मेंसे वो शस्त्र न निकला होय) निर्गत कहिये
(शल्य निकल गया हो) उस्की विद्वयण कहते हैं ॥

क्षतके लक्षण ।

नातिच्छिन्ननातिभिन्नमुभयोर्लक्षणान्वितम् ।

विपमंत्रणमंगेषुतत्क्षतंत्वाभिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—जिस्में अंग अतिच्छिन्न तथा अति भिन्न न भया हो और दोनोंके लक्षण मिलते हों, तथा व्रण तिरछा बाँका होय उसको क्षत व्रण कहते हैं ॥

पिञ्चितलक्षण ।

प्रहारपीडनाभ्यांतुयदंगंपृथुतांगतम् ।

सास्थितत्पिञ्चितंविद्यान्मज्जारक्तपरिप्लुतम् ॥

अर्थ—जो अंग हाड सहित प्रहार कहिये सुझर आदिकी चोट अथवा द-
बना किवॉर आदिसे इन्के योगसे पिच जाय तथा मज्जा रुधिर करके युक्त
होय (घाव न होय) उसको पिञ्चितव्रण कहते है ॥

घृष्टलक्षण ।

घर्षणादभिघाताद्वायदंगंविगतत्वचम् ।

ऊष्मास्रावान्वितंतद्विघृष्टमित्यभिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—कठिन वस्त्र आदिको घर्षण (घिसने) से, चोटके लगनेसे, जिस
अंगको ऊपरकी त्वचा जाती रहै तथा आगके समान गरम रुधिर चुचाय
उसको घृष्ट ऐसे कहते हैं ॥

सशल्यलक्षण ।

शावंसशोथंपिटिकान्वितंचमुद्गुर्मद्गुः शोणितवाहितंच ।

मृदूद्गतं बुद्बुदतुल्यमांसं व्रणं सशल्यं सरुजं वदंति ॥

अर्थ—जो व्रण नीला, मूजनयुक्त, मरोरीन्से व्याप्त होय और बारबार
उन्मेंसे रुधिर बहे और नरम होकर ऊपर बबूलेके समान उठा भया जिस्का
मांस होय उस व्रणको सशल्य है ऐसे जानना चाहिये ॥

कोष्ठभेदलक्षण ।

त्वचोतीत्यशिरादीनिभित्वावापरिहृत्यवा ।

कोष्ठेप्रतिष्ठितंशल्यंकुर्यादुक्तानुपद्रवान् ॥

अर्थ—त्वचाकी संधि कहिये शिरा, मांस, नस, हड्डी, इन्की सन्धीको वेध
कर अथवा शिरा आदिको छोड जो शल्यकोष्ठमें रहे है उससे आगे कहे
भए लक्षण होते है ॥

असाध्य कोष्ठ भेद ।

तत्रांतलोहितंपांडुशीतपादकरणनम् ।

शीतोच्छ्वासंरक्तनेत्रमानद्धंपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ—जिसका रुधिर आंतोंमें संचित होय (अर्थात् बाहर नहीं बहे) और जो पीलावर्ण जिसके हाथ पैर शीतल होय और जो शीतल श्वासको छोड़े, जिसके लाल नेत्र होय तथा अनाह कहिये (पेट फूलना) ऐसे रोगीको वैद्य त्यागदे ॥

मांस-शिरा-स्नायु-अस्थि-और संधी-इनके मर्ममें घाव होनेसे सामान्य लक्षण ।

भ्रमःप्रलापःपतनंप्रमोहोविचेष्टनंग्लानिरथोष्टताच । स्रस्तांगतामूर्च्छनमूर्ध्ववातस्तत्रिरुजोवातकृताश्वतास्ताः॥ मांसोदकामंरुधिरंचगच्छेत्सर्वोद्द्रियार्थोपरमस्तथैव । दशार्धसंख्योष्वथविक्षतेषुसामान्यतोमर्मसुलिंगमुक्तम् ॥

अर्थ—भ्रम, अनर्थभाषण, गिरना, इन्दी और मन इन्को मोह, हाथ पैरका फैलाना ग्लानि, उष्णता, अंगोंमें शिथिलता, मूर्च्छा, श्वासका चटना, वात अन्य तीव्र पीडा, मांसका धोया हुआ पानी ऐसा रुधिर बहे, सर्वइन्दी विकल होंय (अर्थात् सब इन्दीन्का व्यापार बंद हो जाय) ये लक्षण मांस आदि पांच मर्मविद्ध होनेसे होते हैं ॥

मर्मरहितशिराविद्धके लक्षण ।

सुरेंद्रगोपप्रतिमंप्रभूतरक्तस्रवेत्तत्क्षणजश्ववायुः ।

करोतिरोगान्विविधान्यथोक्ताच्छिरासुचिद्धास्वथवाक्षतासु ॥

अर्थ—शिरा कहिये (नाडी) विद्यजाय, अथवा शिरामें घाव होजाय ठसमें से इन्द्रगोप (वीरबहूटी) कीडाके समान लाल तथा पुष्कल रुधिरस्रवे तथा रक्तक्षय होनेसे वायु रुपित होकर अनेक प्रकार के (आक्षेपकादि) रोग उत्पन्न करे हैं ॥

स्नायुविद्ध ।

कौन्व्यंशरीरावयवावसादःक्रियास्वशक्तिस्तुमुलारुजश्च ।

शिराद्गणोरोहतियस्यचापितंस्नायुविद्धंपुरुषंव्यवस्येत् ॥

अर्थ—कुबडापना, शरीरमें ग्लानि काम करनेसे असामर्थ्यपना, बहुत पीडा और जिसका घण बहुत दिनोंमें भरे टस्की स्नायु विद्धभई ऐसे जाते ॥

संधिविद्ध ।

शोथाभिवृद्धिस्तुमुलारुजश्चवलक्षयःपर्वसुभेदशोथौ ।

क्षतेपुसंधिष्वचलाचलेपुस्यास्सर्वकर्मापरमश्चलिंगम् ॥

अर्थ—चल अथवा अचल संधीका वेध होनेसे सूजन बढे पीडा बहुत होय शक्तिका नाश होय, संधिमें भेदके समान पीडा होय, सूजन होय कुछ कार्य करे परंतु उस्में उपराम होय ॥

अस्थिविद्ध ।

घोरारुजोयस्यनिशादिनेपुसर्वास्ववस्थासुचनैतिशांतिम् ।

भिपग्विपश्चिद्विदितार्थसूत्रस्तमस्थिविद्धंपुरुषंव्यवस्येत् ॥

अर्थ—जिस पुरुषके रात दिन घोर पीडा होय, जागृतादि तीनों अवस्थामें शांति होय नहीं उसके अस्थि (हड्डी) विधी है ऐसे श्रेष्ठ वेद्य जाने ।

मांस रहित शिरादिकोंके विद्ध कथन करके शिरादि मर्म विद्ध लक्षणका हवालादेतेहैं।

यथास्वमेतानिविभावयेत्तुलिंगानिमर्मस्वभिताडितेषु ।

अर्थ—मर्मके ठिकाने चोटके लगनेसे ये पूर्वोक्त लक्षण जानने चाहिये तु शब्दसे लक्षण और सामान्य लक्षण होते हैं ऐसे जानना ॥

मांस मर्मके लक्षण अनुक्त उनको कहते है ।

पांडुर्विवर्णःस्पृशितंनवेत्तियोमांसमर्मस्वभिताडितःस्यात् ।

अर्थ—जो पुरुष मांस मर्मके ठिकाने विद्ध होता है, उसका पीला वर्ण देहका विवर्ण होय और स्पर्शका ज्ञान न होय ॥

आगंतुक व्रण ।

यष्टीमधुकयुक्तेनकिंचिदुष्णेनसर्पिपा । मत्वागंतुव्रणंवैद्यैर्घृत

क्षौद्रसमन्वितम् । शक्तिक्रियाप्रयोक्तव्यापित्तरक्तोष्मणानिशि ॥

अर्थ—आगंतुक व्रण पर सुलहटीका चूर्ण और घी इनका उष्ण लेप करे और शक्तिके अनुसार किंचित् पित्तकारक रक्तशोधक और गरम पदार्थोंको घी और सहतके साथ रात्रिके समय उपचार करे ॥

आगंतुकपर सामान्य चिकित्सा ।

बुध्वागंतुव्रणंवैद्योघृतक्षौद्रसमन्विताम् ।

शीताक्रियांचरेदाशुरक्तपित्तोष्मनाशिनीम् ॥

अर्थ—वैद्योंको आगंतुक व्रण जानके उसको सहत और घी इनसे युक्त तथा रक्त पित्त संबंधी उष्म नाशक ऐसी शीतल क्रिया करे ॥

सामान्य विक्रिस्ता क्रम ।

कुद्धेसद्योत्रणेकुर्याद्दूर्ध्वचाधश्चशोधनम् ।

लंघनंचवलंज्ञात्त्वाभोजनंवाप्तमोक्षणम् ॥

अर्थ-संपूर्ण व्रणका कोप होनेसे वमन, विरेचन, लंघन और तलको विचार
अन्न तथा रुधिर निकालना ये उपचार करे ॥

घृष्ट तथा विदलितका उपचार ।

घृष्टेविदलितेचैवसुतरामिष्यतेविधिः ।

तयोस्वलपंस्रवत्यस्रंपाकस्तेनाशुजायते ॥

अर्थ-घिसनेसे अथवा फटनेसे व्रण हो गया हो और उसमेंसे रुधिर बहुत
जाता न हो इसवास्ते उस स्थानमें पित्तकोप होकर बहुत जल्दी पकता है
इसवास्ते ऊपर लिखे सर्व उपचार करे ॥

छिन्न-भिन्न-और विद्ध इनपर उपचार ।

छिन्नेभिन्नेतथाविद्धेक्षतेचासृगतिस्रवेत् ।

रक्तक्षयात्तत्ररुजःकरोतिपवनोभृशम् ॥

अर्थ-छिन्न-भिन्न-और विद्ध इन धावोंसे रुधिर बहुत निकलता है.
इसवास्ते उस ठिकाने वायुका कोप होकर पीडा होती है ॥

उपचार ।

स्नेहपानपरीपेकलेपस्वेदौपनापनम् ।

कुर्वीतस्नेहवस्तिचमारुतघ्नौपधैःशृतैः ॥

अर्थ-स्नेहपान सिंचन-लेपपसीने काटना बाँधना और वातघ्न औषधोंसे
स्नेह वस्ती इत्यादि उपचार करे ॥

छिन्नेभिन्नेतथाविद्धेक्षतेसद्योभिपग्वरः ॥ पट्टसूत्रेणचसंवेष्टच-

व्रणंव्रणविशारदः । मुहुर्मुहुर्ह्यथादुःखंनप्राप्नोतिव्रणीनरः ॥

अर्थ-छिन्न-भिन्न-और विद्ध घर्णोंको प्रथम रेझमसे बाँधे अथवा सींदे फिर
रोगी वारंवार दुःख न पावे ऐसा यत्न करे ॥

उपचार ।

अथवादीप्यलवणपोटल्यास्वेदयेन्मुहुः ॥ संतप्तयातप्तलोह-
पात्रसंयोगतःक्रमात् ॥ दुष्टंरक्तंस्थितंचापिशृग्यलान्वादिभिर्हरेत् ॥

अर्थ—अथवा उस व्रणको अजमायन—निमक—इनकी पोटली बनायके गरम लोहेके पात्र गरम करके वारंवार शेके तथा तूबी लगायके रुधिर निकाले ॥

सद्योव्रणचिकित्सा ।

सद्यःक्षतव्रणोवैद्यः सशूलेपरिपेचयेत् । यष्टीमधुकमिश्रेणना-
तिशीतेनसर्पिपा ॥ कपायमधुराः शिताःक्रियाः सर्वास्तुयोज
येत् । सद्योव्रणानांसप्ताहात्पश्चात्पूर्वोक्तमाचरेत् ॥ चिकि-
त्सितंतुतत्सर्वसामान्यव्रणनाशनम् ॥

अर्थ—सद्यक्षत अर्थात् तत्कालके घावमें प्रथम सात दिन मुलहटी डाला हुआ शीतल घीसे सेचन करे और कपेला—मधुर—शीतल ऐसी क्रिया करे फिर सामान्य व्रणपर जो उपचार कहे हैं वो करे ॥

आशयभेद उपचार ।

आमाशयस्थेरुधिरवमनंपथ्यमुच्यते ।
प्रकाशयस्थेदेयंचविरेचनमसंशयम् ॥

अर्थ—आमाशय बढ़कर उसमें संचित रुधिर होगया हो तो वमन करावे और पकाशयमें यदि रुधिर संशय होय तो निःसंशय जुल्लाव करावे ॥

वंशलगादि काय ।

काथोवंशत्वगेरंडश्वदंश्राश्मभिदाकृतः ।
हिंगुसैंधवसंयुक्तःकोष्ठस्थंन्रावयेदसृक् ॥

अर्थ—बाँसकी छाल, अंडकी जड़, गोखरू, पाषाणभेद, इनका काढाकर उसमें हींग और सैंधानिमक डालके देवे, तो कोठेसे रक्तस्राव करे ॥

गोरादिघृत ।

गौराहरिद्रापंजिष्ठामांसीमधुकमेवच । प्रपौंडरीकंहीविरंनतंसु
स्तंसचंदनम् ॥ जातीनिंबपटोलंचकरंजंकटुरोहिणी । मधूच्छि
ष्टमधूकंचमहामेदातथैवच ॥ पंचवल्कलतोयेनघृतप्रस्थंविपा
चयेत् । एतद्रौरादिकंसर्पिःसर्वव्रणविशोधनम् ॥ आगंतुकाश्च
सहजाःमुचिरोत्थाश्चयेव्रणाः । नाडीव्रणश्चविपमोन्श्यत्येव
संशयः ॥

अर्थ—गोरोचन, हलदी, मजीठ, जटामांसी, मुलहठी, पुंडरीकवृक्ष, नेत्र-
वाला, तगर, नागरमोथा, चंदन, चमेली, नीमकीछाल, कंजेकेबीज, कुटकी,
सहत, महामेदा और पंचवल्कल इनके काढ़ेमें ६४ तोसे घी डालके सिद्धकरे
तो यह गौरादिक घृत संपूर्ण व्रणोंको शोधन करे तथा जो आगंतुक व्रण
सहजव्रण बहुत दिग्का व्रण नाडीव्रणको नाश करे ॥

यवादि अन्न ।

यवकोलकुलित्थानानिस्नेहेनरसेनच ।

भुंजीतान्नयवागूवापिवेत्सैधवसंयुताम् ॥

अर्थ—आगंतु सद्यो व्रणवालेको जो कालीमिरच कुलथी इनको स्नेह रहित
रस किंवा सैधानिमक डालके यवागू देवे ॥

तित्कादि घृत ।

तित्कासिक्थनिशायपीनक्ताह्वफलपल्लवैः ।

पटोलमालतीनिवपत्रैर्वर्ण्यं घृतंशृतम् ॥

अर्थ—कुटकी, मोम, हलदी, मुलहठी और करंजके पत्ते और बीज पटोल-
पत्र चमेली नीमके पत्ते इनके कल्कमें घृतसिद्ध करके देवे तो घावकी गूथके
वर्णको उत्तम करे ॥

जात्यादितेल ।

जातीनिविपटोलानानक्तमालस्यपल्लवाः ॥ सिक्थकंमधुकं
कुष्टद्वेनिसेकटुरोहिणी ॥ मंजिष्ठापद्मकंलोध्रमभयानीलमुत्प
लम् । तुत्थकंसारिवावीजनंक्तमालस्यचक्षिपेत् ॥ एतानिस
मभागानिपिष्ट्वातैलंविपाचयेत् । विपत्रणसमुत्थेषुस्फोटेषुचस
कच्छुपु॥कंडूविसर्परोगेपुकीटदृष्टेषुसर्वथा । सद्यःशस्त्रप्रहारेपु
दग्धविद्धक्षतेषुच ॥ नखदंतक्षतेदेहदुष्टमांसाववर्षणे । भक्ष
णार्थमिदंतैलंहितंशोधनरोपणम् ॥

अर्थ—चमेली, नीम, परवल और कंजा, इनके पत्ते मोम, मुलहठी, कुठ,
हलदी, दासहलदी, कुटकी, मजीठ, पत्रास, लोध, हरड, नीला कमल, लीला-
थोथा, सारिवा और कंजेके बीज ये समान भागले उसके कल्कमें तेल
सिद्ध करे तो विपत्रण संपूर्ण स्फोट खाज कंडू विसर्प, वृमीकादंश शस्त्र
प्रहार, दग्ध, विद्ध, इनका क्षत और नख दांत इनसे उत्पन्न हुआ घाय और
मांसका पिसना. इत्यादिकोंको भरलावे है ॥

सद्योत्रणचिकित्सा ।

सिंदूरकुष्ठविपहिंगुरसोनचित्रवाणांघ्रिलांगलिककल्कविपक्व
तैलम् ॥ प्रासादमंत्रहुतहुंकृदतुत्थफेनः क्लिन्नव्रणप्रशमनोविप
रीतमल्लः ॥ खड्गाभिघातगुरुगंडमहोपदंशनाडीव्रणव्रणवि
चर्चिककुष्ठपामाः ॥ एतान्निहंतिविपरीतकमल्लनामतैलयथेष्ट
शयनाशनभोजनस्य ॥

अर्थ—सिंदूर कूठ, विप, हींग, लहसन बाणपुंख और कलयारी और
हरताल और लीलाथोथा, इनका चूर्ण और अफीम इन पदार्थोंसे तेल सिद्ध
करे यह तेल बहनेवाले व्रण शमन करनेको विपरीत मल्ल है और तलवा-
रका घोर प्रहार गांठ उग्र उपदेश नाडीव्रण विचर्चिका कोठ खुजली इनको
यह विपरीत मल्लनामक तेल नाश करे इसपर पथ्यका नियम नहीं है ॥

दूर्वादि तैल ।

दूर्वास्वरससंसिद्धंतैलकंपिल्लकेनवा ।

दावीत्त्वचश्चकल्केनप्रधानंव्रणरोपणम् ॥

अर्थ—दूर्वाके रसमें अथवा टेंदूके रसमें अथवा दास्हलदी की छालके
कल्कमें तेल सिद्ध करे यह व्रणको भर लानेमें उत्तम है ॥

सप्तविंशति गुग्गुलु ।

त्रिकटुत्रिफलामुस्ताविडंगामृतचित्रकम् । पटोलंपिप्पलीमूलं
हृद्युपासुरदारुच ॥ तुंवरूपुष्करंचव्यंविशाखारजनीद्वयम् ।
विडंसौवर्चलंक्षारसैधवंगजपिप्पली ॥ यावंत्येतानिसर्वाणिता-
वद्विगुणगुग्गुलुः । कोलप्रमाणंवटिकाभक्षयेन्मधुनासह ॥
कासश्वासतथाशोफंअर्शासिचभगंदरम् ॥ हृच्छूलंपार्श्वशूलंच
कुक्षिवस्तिगुदेरुजं ॥ अश्मरीमूत्रकृच्छ्राचअंत्रवृद्धितथाकृमीन् ।
चिरज्वरोपसृष्टानांक्षतोपहतचेतसां ॥ आनाहंचतथोन्मादंसर्व-
कुष्ठोदराणिच । नाडीदुष्टव्रणान्सर्वान्प्रमेहान्श्लीपदस्तथा ॥
धन्वंतरिकृतोद्दोषसर्वरोगनिपूदनः । सप्तविंशतिकोनामगुग्गु-
लुःप्रथितोमहान् ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, नागरमोथा, वायविडंग, सिंगिया विप, चित्रककी छाल, पटोल पत्र, पीपरा मूल, हाऊवर, देवदारु, तुंबरू, पुहकर मूल, चव्य, इन्द्रायण, हलदी, दारुहलदी, विडनिमक सेंधानिमक, गजपीपर, ये सब समान भागले तथा सब चूर्णसे दूना गुग्गुलु डालके आधेर तालेकी गोली बनावे, इनको सहतके साथ देवे तो खाँसी, श्वास, सूजन, बवासीर, भगंदर, हृदयशूल, पार्श्वशूल, कूख, बस्ति और गुदा, इन स्थानोंकी पीडा, पथरी, भूत्रकृच्छ्र अंत्रवृद्धि, कृमि, अफरा, उन्माद, संपूर्णकुष्ठ, संपूर्ण उदर, दुष्ट नाडीव्रण, प्रमेह क्षीपद् इनको नाश करे, यह सर्वाविशति गुग्गुलुगुटी संपूर्ण रोग नाश करनेको धन्वतरिने कही है ॥

इति श्रीबृहत्त्रिपण्डुरत्नाकरे आगतुव्रणनिदानचिकित्सासमाप्तम् ।

अथ भग्ररोग ।

भग्ररोग निदान ।

भग्ररोग दो प्रकारका है एक सव्रण दूसरा अव्रण इनमें सव्रण कहकर अब अव्रण भग्ररोगको कहते हैं ॥

भग्रंसमासाद्विविधहुताशकाण्डेचसंधौचहितत्रसंधौ ।

अर्थ-अपिवेश कांड भंग और संधिभंग मिलकर संक्षेपसे भग्ररोग दो प्रकारका है ॥

संधिभग ।

उत्पिष्टविशिष्टविवर्तितंचतिर्यक्चविक्षिप्तमधश्चपांडा ।

अर्थ-तहाँ संधि स्थानका भग्ररोग छः प्रकारके हैं उनके नाम कहते हैं-उत्पिष्ट, विशिष्ट, विवर्तित, तिर्यक्, विक्षिप्त और अधःक्षिप्त भग्रनाम दूटनेका है ॥

संधिभंगके सामान्य लक्षण ॥

प्रसारणाकुंचनवर्तनोर्ग्रारुक्स्पर्शविद्वेषणमेतदुक्तम् ।

सामान्यतःसंधिगतस्यलिङ्गं-

अर्थ-फैलाते समय, सफोरनेके समय, नीचे करनेसे घोर पीडा होय और स्पर्श सहा न जाय, ये संधिभगके सामान्य लक्षण है ॥

-उत्पिष्टसंधैः श्वयथुःसमंतात् ॥

विशेषतोरान्निभवारुजाच-

अर्थ—उत्पिष्टमें संधिके चारों ओर सूजन होय और रात्रिमें पीडा बहुत होय संधीनके हाड दोनों आपसमें धिसे उसको उत्पिष्ट ऐसे कहते हैं ॥

—विश्लिष्टजंतौचरुजाचनित्यम् ।

अर्थ—विश्लिष्ट संधीन्में सूजन और रात्रिमें पीडा होकर सर्व कालमें अत्यंत पीडा होय और उत्पिष्टकी अपेक्षा इतने लक्षण विश्लिष्टमें विशेष होते हैं अर्थात् संधि शिथिलमात्र होय इस्में हाडके हटनेसे बीचमें गलेटा होजाय ॥

विवर्तितेपार्श्वरुजश्चतीव्रा—

अर्थ—विवर्तित संधिमें दोनों तरफके हाडसंधिसे पलट जाय तब अत्यंत पीडा इस संधिमें हाड दोनों तरफ फिरा करे ॥

—तिर्यग्गतेतीव्ररुजोभवन्ति ॥

अर्थ—हड्डीके तिरछे हटनेसे पीडा बहुत हो और एक हड्डी संधिस्थान छोडकर टेढी हो जाय ॥

क्षिप्तेऽतिशूलंविपमारुगश्चौ—

अर्थ—संधिहड्डी एक ऊपरको हटजाय तो अत्यंत पीडा होय और हाडोंमें कमजास्ती पीडा होय, इस जगे एक हड्डीकी क्रियासे अथवा दोनों हड्डीकी क्रिया कर्के दोनों हाड परस्पर समीपसे दूर हो जाय हैं ॥

—क्षिप्तेत्वधोरुग्विवटश्चसंधेः ॥

अर्थ—संधिकी हड्डी एक नीचेको हटजाय तो पीडा होय और संधीकी विरुद्ध चेष्टा होय इस्में संधीके हाड परस्पर दूर होय परंतु किंचित् नीचेको गमन करे ॥

अब कांडभम्रको कहते हैं ।

कांडेत्वतःकर्कटकश्वकर्णविचूर्णितंपिञ्चितमस्थिछल्लिका ॥

कांडेपुभग्नंत्वतिपातितंचमज्जागतंचस्फुटितंचवक्रम् । छिन्नं

द्विधाद्वादशधापिकांडे—

अर्थ—कांडभम्र बारह प्रकारका है १ कर्कटक, २ अश्वकर्ण, ३ विचूर्णित, ४ पिञ्चित ५ अस्थिछल्लिका, ६ कांडभम्र ७ अतिपातित ८ मज्जागत, ९स्फुटित १० वक्र और दो प्रकारके छिन्न । १ कर्कटक—अर्थात् हाड दोनों ओरसे दबकर बीचमें ऊंचा सा होय । २ अश्वकर्ण—घोडाके कानके समान जो हाड हो जाय । ३विचूर्णित—चुरकट होगया हो वो शब्दसे अथवा स्पर्शसे जाना जाय

धपिञ्चित-पिनाभया हाड । ५ अस्थिछल्लिका-हाडका कोई भाग छिलकाके समान उखडकर रहे है सो । ६ कांडभग्न-हड्डीका कांड टूटना । ७ अतिपात सब हाड टूटे सो । ८ मज्जागत-हड्डीके अवयव मज्जामें प्रवेशकर मज्जाको बाहर निकाले । ९ स्फुटित-जिस हड्डीके बहुत टुकड़ा होजाय । १० बन्ध-हड्डी-तिरछी होजाय वोभी भग्नमें गिनी जाती है । ११ छिन्न २ वारीक बहुतसे टुकड़ा हो जाय सो और दूसरा एक ओरसे टूटकर दूसरी तरफ निकले है ॥

कांडभग्नके सामान्य लक्षण ।

स्रस्तांगताशोथरुजातिवृद्धिः ॥ संपीडय मानेभवतीहशब्दः
स्पर्शा सहस्पंदनतोदशूलाः । सर्वास्ववस्थासुनशर्मलाभो
भग्नस्यकांडेखिलुचिह्नमेतत् ॥

अर्थ-अंगोंमें शिथिलता, मूजन घोर पीडा, जिस स्थानकी हड्डी टूटी होय उस जगे पीडाके साथ शब्द होय । हाथके लगानेसे सहान जाय । हड्डी फाडके सुई छेदने कौसी पीडा होय और शूल होय, कभी चैन न पडे कांड इस शब्दसे नलक, कपाल, बलय, तरुण और रुचक इन पांच प्रकारकी हड्डीन्का संग्रह होय है कांडभग्नके १२ वारह भेदोंसे अधिक भेद होते है उनको कहते हैं ॥

कांड भग्नके बारहों भेदोंसे ये अधिक प्रकार होते हैं ।

भग्नतुकांडंबहुधाप्रयातिसमासतोनामभिरेवतुल्यम् ॥

अर्थ-कांडोंमें अनेक प्रकारके भंग होते हैं, सो जिस जिस ठिकाने जैसी आकृति का होय उसका उसी प्रकारका नाम कहना चाहिये ॥

कष्टसाध्य ।

अल्पाशनोनात्मवतांजंतोर्वातात्मकस्यच ।

उपद्रवैर्वाञ्जुष्टस्यभग्नकृच्छ्रेणसिद्धयति ॥

अर्थ-थोडा खानेवाला और जिसकी इन्द्री स्वाधीन न होय, वात प्रकृतिवाले की ज्वरादि उपद्रव संयुक्त ऐसे पुरुषकी हड्डी टूटनेसे बडे कष्टसे साध्य होय ॥

असाध्य लक्षण ।

भिन्नकपालंकट्यांतुसंधिमुक्तंतथाच्युतम् ।

जघनंप्रतिपिष्टं च वर्जयेत्तु विचक्षणः ॥

अर्थ—कमरकी कपाल हड्डी टूट गई हो, अथवा संधिके पासकी हड्डी हट गई हो अथवा स्थानमें छूट गई हो और जंघाकी हड्डीका चूर हो गया हो, ऐसे रोगीको वैद्य त्याग दे ॥

अन्य असाध्य लक्षण ।

अंसंश्लीष्टकपालंचललाटंचूर्णितंचयत् ।

भग्नस्तनांतरेपृष्ठेशंखेर्मूर्ध्निचवर्जयेत् ॥

अर्थ—ललाटकी हड्डीके टुकड़ा टुकड़ा हो परस्पर दूर हो जाय, जुड़नेके कामके न रहे अथवा स्तनके बीचकी अथवा पीठकी अथवा शंख (कनपटी) की हड्डी मस्तककी हड्डी टूट गई हो उसको वैद्य त्याग दे ॥

उपद्रव करनेसे असाध्यत्व ।

सम्यक्संधितमप्यस्थिदुर्निक्षेपनिबंधनात् ।

संक्षोभाद्रापियद्गच्छेद्विक्रियांतच्चवर्जयेत् ॥

अर्थ—हड्डी भले प्रकार जुड़ भी गई हो उसको अच्छी रीतिसे न राखे अथवा अच्छी रीतिसे बांधे नहीं उसमें किसीका धक्का लगनेसे फेर जैसा का तैसा हो जाता है और यह साध्य नहीं होय इसको वैद्य त्याग दे ॥

पृथक् २ अस्य पृथक् रीतिसे भग्न होती है ।

तरुणास्थीनिनम्यंतेभिद्यत्तेनलकानिच ।

कपालानिविभज्यंतेस्फुटंतिरुचकाणिच ॥

अर्थ—तरुण हड्डी नव जाती है या टेढ़ी हो जाय, नलकी हड्डी चिर जाती है, कपालास्थी फूटकर टूक टूक हो जाय, रुचकास्थी (दंतादिक) हड्डी टुकड़ा होकर गिर पड़े ॥

भग्न चिकित्सा ।

भग्नान्युपचरेद्धीमानसेकलेपनबंधनैः ।

शीतलैरेवविविधैःप्रयोगैश्चसमीरितैः ॥

अर्थ—टूटे हुए अवयवों पर सेचन लेपन बंधन ये तथा अनेक प्रकार के शीतल उपचार जो कहे हैं वो करे ॥

भग्न का बंधन ।

तत्रातिशयिलेबंधेसंधिस्थैर्यनजायते । गाढेनापित्त्वगादीनां
शोफोरुक्पाकएवच ॥ तस्मात्साधारणबंधंभग्नेशसंतितद्विदः ॥

अर्थ-टूटे हुए स्थान को सिथिल बांधनेसे संधि ठीक २ नहीं मिले और बहुत तंग करनेसे सूजन पीडा और पाक होता है इस वास्ते साधारण (न बहुत शिथिल न बहुत करड़ा) ऐसा बांधे ॥

भग्न पर कर्म ।

आदौभग्नविदित्वातुसेचयेच्छीतलांबुना ।

पकेनालेपनंकुर्याद्विधनंचकुशान्वितम् ॥

अर्थ-हड्डी टूटी होनेसे प्रथम उस पर शीतल जल गेरे, फिर कीचका लेप करे, फिर कुशादिसे बांधे ॥

हड्डी बाँकी होगई हो उसपर उपचार ।

अवनामितमुन्नम्येदुन्नतंचावपीडयेत् ।

क्षिप्तं द्विधापिचस्थाने संस्थाप्याविधिमाचरेत् ॥

अर्थ-हड्डी नीची होगई होय तो उसको सीधी करे-और जो उठ आई होय तो उस को बैठार देवे और यदि टूटकर टुकड़े होगये होय तो दोनों तरफ ठीक २ बैठार के फिर बंधनादिक क्रिया करे ॥

लेप ।

आलेपनार्थमंजिष्टंमधुकंचाम्लपोषितम् ।

शतधौतघृतोन्मिश्रंशालिपिष्टंचलेपनम् ॥

अर्थ-मजीठ और मुलहठी इनको नींबू के रसमें पीस उस सौ चारका घुला हुआ घृत और चावलोंका चून मिलायके लेप करे ॥

न्यग्रोधादि काय ।

न्यग्रोधादिकपायंतुशीतलंपरिपेचने ।

पंचमूलीविपक्वतुक्षिरंदद्यात्सवेदने ॥

अर्थ-टूटे हुए हड्डी वाले को न्यग्रोधादि फाड़े को शीतल करके उसमेंसे सेचन करे यदि अत्यंत पीडा होती होय तो पंचमूलका फाड़ा करके उससे सेचन करे ॥

शृगालविन्नारसपान ।

मूलंशृगालविन्नायाःपीत्वामांसरसेनतु ।

चूर्णाकृत्वातुसप्ताहादास्थिभंगमपोहति ॥

अर्थ-पिठयनकी जड़ का चूर्ण कर उस को मांस रससे सातदिन पीनेको देवे तो अस्थिभंग को नाश करे ॥

आभादिचूर्ण ।

आभाचूर्णमधुयुतमस्थिभंगेऽप्यहंपिवेत् ॥

पीत्वाचास्थिभवेत्सम्यक्वज्रसारनिभंढम् ॥

अर्थ—बज्ररके बीजोंका चूर्ण तीनदिन सहतमें मिलायके खाय तो हड्डी वचके समान मजबूत होवे ॥

क्षीरपान ।

गृष्टिक्षीरंससर्पिष्कंमधुरौपुधसाधितम् ।

शीतलंलाक्षयायुक्तंप्रातर्भग्रेपिवेत्रः ॥

अर्थ—प्रातः काल,ओसर गौके दूधमें मिष्ट,औपध डालके ओंटावे उसमें घी और लाखका चूर्ण डालके शीतल होनेपर पीनेको देवे, तो अस्थिभंग नष्टहोय ॥ प्रकारांतर ।

समृतंचास्थिसंधानंलाक्षागोधूममर्जुनम् ।

संधिमुक्तेस्थिभग्रेचापिवेत्क्षीरेणमानवः ॥

अर्थ—लाख, गेंहूं, कोहकीछाल, इनके चूर्णको दूध औरूषीमें मिलायके पीवे तो मुक्तिसंधि (हड्डीयोंका अलग २ होजाना) तथा टूटी हड्डी इन पर संधानार्थ (जुडनेको) देवे ॥

रसोनादिकल्क ।

रसोनमधुलाक्षाज्यसिताकल्कंसमिश्रितम् ।

छिन्नभिन्नच्युतास्थीनांसंधानमचिराद्भवेत् ॥

अर्थ—लहसन, सहत, लाख और खांड, इनका कल्क घी,डालके देवे तो छिन्न भिन्न हड्डी को बहुत जल्दी जोडे ॥

लाक्षादि गुग्गुल ।

लाक्षास्थितंढत्ककुभाश्वगंधाचूर्णाकृतानागबलापुरश्च ।

संभग्नमुक्तास्थिरुजनिहन्यादंगानिकुर्यात्कुलिशोपमानि ॥

अर्थ—लाख, हडसंकरी, कोहंबूक्षकी छाल, असगंध, नागबला और गुग्गुल इनके चूर्णको अस्थिभंग, तथा मुक्तास्थि इन पर देवे तो इनको दूरकरे और देहको वचके समान करे ॥

आभादि गुग्गुलु ।

आभाफलत्रिकव्योपैःसर्वैरेतैःसमांशकैः। तुल्यगुग्गुलुनायोज्यं

भग्नसंधिप्रसाधकम् ॥ सव्रणस्यतुभग्नस्यव्रणंसर्पिर्मधूत्तरैः ॥

प्रतिसायंकपायैस्तुशेषंभग्नवदाचरेत् । वातव्याधिविनिर्दिष्टं
स्नेहंतत्रापियोजयेत् ॥

अर्थ—बबूरकेबीज, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, ये सब समान भागलेवे और सबके समान गूगल डाले, इसको भमास्थीके जोड़नेको देवे और सत्रण भग्न वालेको घी और सहत डालके भग्नके ऊपर कहे हुए काटेनसे धोयके फिर सब भग्नके समान क्रियाकरे, तथा वात व्याधि पर कहे हुए स्नेह देवे ॥

वल्लिजभस्म ।

वल्लिजंभस्ममधुनापातव्यांहितभोजिना ।

संधिभग्नेस्थिभंगेचविशेषेणप्रशस्यते ॥

अर्थ—संधिभंग और अस्थिभंग इनपर पथ्य करके मूंगाकी भस्म सहतके साथ देवे यह विशेष करके उत्तम है ।

गोधूम प्रयोग ।

ईषद्विदग्धगोधूमचूर्णपीतंसमाक्षिकम् । कटिसंधिपुभग्नेपुभग्ने
प्वस्थिपुपूजितम् ॥ अविदाहिभिरत्रेथ्वपिष्टकैः समुपाचरेत् ॥
मांसमांसरसंक्षीरसंर्षिर्धूपंचमुद्गजम् । बृंहणंचान्नपानंचसं
धिभग्नायदापयेत् ॥

अर्थ—कुछ २ भुनेहुए गेहूँके चूनको सहतसे देवे, वो कमर, तथा संधीके दूटनेसे अथवा हड्डी दूटनेसे उसपर उत्तम है, तथा संधिभग्नवालेको दाह न करनेवाले अन्न, पिष्टपदार्थ और मांसरस, दूध, घी, मूंगका घूप और पाँष्टिक रसे अन्न और पान ये पदार्थ महीनाभर देवे ॥

अपथ्य ।

लवणंकटुकंक्षारंसाम्लमैथुनमातपम् । व्यायामंचनसेवेतभ
श्रोहृक्षान्नमेवच ॥ बालानांतरुणानांचभग्नान्याशुभवंतिवै ।
सर्माचीनंनवृद्धानांभग्नानांचविशेषतः ॥

अर्थ—लवण, चर्चरा, खारी, खट्टा, मैथुन, धूप, कसरत, रूक्षान्न, घण रोग-वाला मनुष्य इनको सेवन न करे और बालक के जवानोंमें घण शीघ्र अच्छे होते हैं और वृद्धोंके घण अच्छे नहीं अर्थात् कठिनतासे देरमें अच्छे होते हैं ॥

इति श्रीशुद्धनिघण्टुरत्नाकरे भग्नरोगविनिर्दानविधिक्रमा अन्तां ।

अथ नाडीव्रण ।



नाडीव्रण हर कर्मविपाक ।

परेपात्रणभेदेनमुष्टिघातेनचैवाहि । असत्यवचनाञ्चैवप्लीहाश्ली-
लयुतस्तथा ॥ नाडीव्रणीचजायेततद्रोगस्यापनुत्तये । चांद्रा-
यणंचातिकृच्छ्रप्रतिचांद्रायणंचरेत् ॥ अतिरौद्रेणसूक्तेनशतम-
ष्टोत्तराहुतीः । कूष्मांडहोमः कर्तव्यः सोमारुद्रजपस्तथा ॥
यत्किंचेदमिमंसम्यग्जपेदयुतसंख्यया ॥

अर्थ—दूसरेके घावको भेद अथवा सुक्का (घूसा) मारने आदिसे दुःख देय
अथवा असत्य भाषणकरे इस पापसे प्लीहा और नाडीव्रण होतेहैं, उस पापको दूर
करके चांद्रायण व्रत करके अति कृच्छ्रव्रत करे, इस प्रकार प्रति चांद्रायणके
साथ करे, तथा “ अतिरौद्रेण ” इस ऋग्वेदीयसूक्तसे अष्टोत्तर १०८ शत हवन
करे, तथा कूष्मांड (पेठा) हवन, तथा “ सोमारुद्रा ” और ‘ यत्किंचेद ’ इन
सूक्तोंका दशहजार जप करे ।

नाडीव्रण निदान ।

यःशोथमाममतिपक्वमुपेक्षतेज्ञोयोवाव्रणंप्रचुरपूयमसाधुवृत्तः ।
अभ्यंतरंप्रविशतिप्रविदार्यतस्यस्थानानिपूर्वाविहितानिततःसपूयः ।
तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरिष्यतेतुनाडीचयद्रहतितेनमतातुनाडी ॥

अर्थ—जो मूर्ख मनुष्य पके हुए फोडेको कच्चा समझकर उपेक्षा करे, किंवा
बहुत राध पडे; फोडेकी उपेक्षाकर दे, तब वो बढी दुई राध पूर्वोक्त त्वङ्मां-
सादिक स्थानमें जायकर उनको भेदकर वो बहुत भीतरी पहुँच जाय, तब
एक मार्गकर उस्में वह राध नाडीके समान बहे, इसीसे इस्को नाडीव्रण
(नासूर) कहते हैं ॥

संख्यारूप संप्राप्ति ।

दोषैस्त्रिभिर्भवतिसापृथगेकशश्वसंमूर्च्छितैरपिचशल्यनिमित्ततोन्त्या।

अर्थ—पृथक् पृथक् दोषोंसे ३ सत्रिपातसे १ और शल्यसे १ ऐसे नाडीव्रण
पांच प्रकारका है ॥

सामान्य चिकित्सा ।

नाडीनांगतिमन्वीक्ष्यशस्त्रेणोत्पाद्यकर्मवित् । सर्वव्रणक्रमं

कुर्याच्छोधनारोपणादिकम् ॥ कृशदुर्बलभिरूणांनाडीमर्माश्रि
तातुया । क्षारमूत्रेणसंछिद्यान्नशस्त्रेणकदाचन ॥

अर्थ-नाडियोंकी गति निश्चय करके उनको कुशल वेद्य शस्त्रसे फाड़े (ची-
रादेवे) और सर्व व्रण क्रम से उनका शोधन रोपणादिक क्रियाकरे, तथा
कृश, दुर्बल और भयभीत ऐसे रोगीके मर्माश्रित नाडी व्रणको क्षार मूत्रादि
कसे छेदन करे, शस्त्रसे कदाचित् नतोड़े ॥

वातनाडी व्रण ।

तत्रानिलात्परुपसूक्ष्ममुखीसशूला
फेनानुविद्धमधिकं स्रवतिक्षपासु ॥

अर्थ-वादीसे नाडी व्रणका मुख रुखा, तथा छोटा होय और गूल होय
उसमें से फेन युक्त स्राव होय, रात्रिमें अधिकस्रवे ॥

सामान्य चिकित्सा ।

नाडीवातकृतंसाधुपाटितिलेखयेद्भिषक् ।

प्रत्यक्पुष्पाफलयुतैःतिलैःपिष्टैःप्रलेपयेत् ॥

अर्थ-वातजन्य नाडी व्रणको शस्त्रसे चीरके लेखन क्रियाकरे और संपेद
आंगाके बीज तथा तिल पीसके उसका लेप करे ॥

पित्तनाडी व्रण ।

पित्तात्तृट्ज्वरकरोपरिदाहयुक्तापीतंस्रवत्याधिकमुष्णमहःसुचापि ॥

अर्थ-पित्तके नाडी व्रणमें प्यास, ज्वर और दाह होय, उसमेंसे पीलरंगका
और बहुत गरम राध स्रवे और दिनमें स्राव अधिक होय ॥

सामान्य चिकित्सा ।

पैत्तिकंतिलमंजिष्ठानागदंतीनिशाह्वयैः ॥

अर्थ-पित्तजन्यनाडी व्रणको तिल मजौठ, नागदोना और हलदी इनका
लेप करे ॥

कफ नाडी व्रण ।

ज्ञेयाकफाद्बहुधनार्जुनपिच्छिलास्त्रास्तन्धासकंडुररुजारजनीप्रवृद्धा ॥

अर्थ-कफजनाडी व्रणमें संपेद, गाठी, चिकनी राध निकले खुजली चले
रातमें स्राव बहुत होय ॥

सामान्य चिकित्सा ।

श्लेष्मिकीतिलयष्ट्याह्वनिकुंभारिष्टसंधवैः ।

अर्थ—कफजन्य नाडी व्रणको तिल, मुलहठी, दंती, नीमकी छाल और संधानिमक इनका लेप करे ॥

शल्यजनाडीव्रण ।

नष्टं कथंचिदनुमार्गमुदीरितेषु स्थानेषु शल्यमचिरेण गतिकं करोति । साफेनिलं मथितमुष्णमसृग्विमिश्रं स्रावं करोति सहसा सरुंजं च नित्यम् ॥

अर्थ—किसी प्रकारसे शल्य (कंटकादि) उक्तस्थानमें पहुँच कर दूढ़ जाय तो नाडीव्रणको उत्पन्न करे उस नाडीव्रणमेंसे झाग मिला तथा रुधिर युक्त मथेके समान गरम नित्य राध बहे तथा पीडा होय ॥

सामान्य चिकित्सा ।

शल्यजातिलं मंजिष्टमध्वाज्यैर्लेपयेन्मुहुः ॥

अर्थ—शल्य नाडीव्रणको तिल, मजीठ, सहत और धी इनको वारंवार लेप करे ॥

सन्निपातजन्यनाडीव्रण ।

दाहज्वरश्चसनमूर्च्छनवक्रशोपायस्यां भवन्ति विहितानि च लक्षणानि । तामादिशोत्पन्नपित्तकफप्रकोपाद्धोरामसुक्षयकरीमिव कालरात्रिम् ॥

अर्थ—जिस नाडीव्रणमें दाह, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, मुखका सूखना और पूर्वोक्त लक्षण हों उसको त्रिदोषकोपजन्य नाडीव्रण जानना, यह भयंकर प्राणनाश करनेवाली कालरात्रिके समान जाननी ॥

साध्यासाध्य ।

नाडीत्रिदोषप्रभवानसिधेच्छेषाश्च तस्रः खलु यत्र साध्याः ॥

अर्थ—त्रिदोषजन्य नाडीव्रण साध्य नहीं होय, बाकीके चार नाडीव्रण यत्र करनेसे साध्य होते हैं ॥

नाडीव्रणपर जात्यादिवर्ती ।

जात्यर्कशम्याकरंजदंतीसिधूत्थसौवर्चलयावशूकैः ।

वर्तिः कृताहंत्यचिरेण नाडीं स्नुक्षीरपि द्वा सहसंधवेन ॥

अर्थ—चमेली, आक, अमलतासका गूदा, करंज, दंती, सैंधानिमक संचर-
निमक, जवाखार, इन सबको एकत्र खरलकर उसकी बत्ती बनायके व्रणमें
प्रवेश करे, अथवा शूहरका दूध, सैंधानिमक इनको एकत्र खरलकर बत्ती
बनायके व्रणमें प्रवेश करे तो नाडीव्रण अच्छा होय ॥

निर्गुंडी तैल ।

समूलपत्रानिर्गुंडीपीडयित्वा रसेन तु ।

तेन सिद्धं समतैलं नाडीदुष्टव्रणापहम् ॥

अर्थ—जड़पत्तोंसहित निर्गुंडीके वृक्षको कूट उसका रस निकालले उस
रसके बराबर तैल मिलायके ओंटावे जब रस सूखजावे तब तैलको उतारके
छानले यह नाडीव्रणसंबंधी दुष्ट व्रणोंको नाश करे ॥

नरास्थि तैल ।

नरास्थितैललेपेन स्फुटितः शुष्यति व्रणः ।

अर्थ—मनुष्यकी हड्डीके तैलसे फूटा हुआ व्रण सूखता है ॥

विडंगाद्य गुग्गुलु ।

विडंगत्रिफलाव्योपचूर्णं गुग्गुलुना समम् । सपिष्टावटिकाकुर्या

त्त्वादेद्वाहितभोजनः ॥ दुष्टव्रणापचीमेहकुष्ठनाडीविशोधनः ॥

अर्थ—चायविडंग, हरड, बहेडा, आंवला, सोंठ, मिरच, पीपल, इनके चूर्ण-
के समान गूगल लेवे सबको धीमें खरलकर गोली बनावे, इसको सेवन करे
और पथ्यसे रहे तो दुष्टव्रण, अपची, प्रमेह, कोढ़, नाडीव्रण इनकी शुद्धि करे ॥

आरग्वधादि बत्ती ।

आरग्वधनिशाकोलचूर्णाज्यक्षौद्रसंयुता ।

सूत्रवर्तिव्रणे योज्या शोधनगतिनाशिनी ॥

अर्थ—अमलतास, हलदी, और बेर इनका चूर्ण करके उसमें सहत और पी
डाल इसमें सूतकी बत्तीको भिगोयके उस व्रणमें रक्ते, यह व्रणको शोधन
करनेवाली तथा व्रणकी गतिको नाश करनेवाली है ॥

गुग्गुलादि लेप ।

गुग्गुलुस्त्रिफलाव्योपैः समासैश्चाज्ययोजितः ।

नाडीदुष्टव्रणंचाभिजयेदपि भगंदरम् ॥

अर्थ—गूगल, त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, ये समान भाग लेवे-सबको
पीसके लेप करे तो दुष्ट नाडीव्रणको और भगंदरको नाश करे ॥

व्रणरोगपर पथ्य ।

यवपष्टिकगोधूमपुराणाःसितशालयः । मसूरतुवरीमुद्गयूपश्च
णकशर्कराः ॥ विलेपीलाजमंडश्चजांगलामृगपक्षिणः । घृतंते
लंपटोलंचवेत्राग्रंचालमूलकम् । वार्ताकंकारवेष्टंचकर्कोटंतंदु
लीयकम् ॥ एतत्पथ्यंनरैःसेव्यंयथावस्थंयथामलं ॥ व्रणशोथे
व्रणेषद्योव्रणोनाडीव्रणेषिच ॥

अर्थ—जव, साठी चावल, गेंहूँ, पुराने सफेद शालि, मसूर, तुवरी, मूँगोंका यूप, चणा, शर्करा, यवागू विशेष, खील, मंड, जांगल देशके मृग पक्षी, घृत, तैल, परवल, जलवेतस, नेत्रवालाकी जड़, वैंगन, करेली, ककोडे, चौलाई ये पथ्य वस्तु मनुष्योंने व्रणशोथ सद्योव्रण नाडीव्रण इनमें सेवन करनी योग्य है ॥

अपथ्य ।

रूक्षाम्लशीतलवणंव्यवायमायासमुच्चैःपरिभाषणंच । प्रिया
समालोकनमद्विनिद्रांप्रजागरंचक्रमणंनितांतम् ॥ शोकंविरु
द्धाशनमंबुपानंतांबूलशाकानिचपत्रवंति । अजांगलंमांसमसा
त्म्यमंत्रंविवर्जयेत्संततमप्रमत्तः ॥

अर्थ—रूक्ष खट्टा शीत लवण स्त्रीसंग परिश्रम ऊंचे स्वरसे भाषण करना स्त्रियोंको देखना दिनमें सोना रात्रिमें जागना हर वक्त फिरना शोक विरुद्ध भोजन अति जलपान तांबूल पत्तोंवाला शाक जांगल वर्जित देशोंके जीवोंका मांस असात्म्य अन्न अप्रमत्त हुआ व्रणरोगवाला मनुष्य इनको निरंतर वर्ज देवे ॥

इति श्रीवृहत्सिधुपुराणकारे नाडीव्रणरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ॥

भगंदर ।

भगंदर रोगका कर्मविपाक ।

स्वगोत्रघ्नीप्रसंगेनजायतेचभगंदरी । तेनापिनिष्कृतिःकार्यामे
पदानेनयत्नतः । देवानांयोमुखंहव्यवाहनःसर्वपूजितः । त
स्मात्त्वंवाहनंपूज्यंदेवैःसद्रैर्महापिभिः । भगंदरःपूर्वकर्मविपाको
त्यंतुयन्मम । तत्सर्वनाशयक्षिप्रंसांख्यंचापिप्रवर्षय ॥

अर्थ-अपने गोत्रकी स्त्रीके साथ गमन करनेसे भगंदर रोगी होय है, उस प्राणीको स्वर्ण, सुर, रौप्य, शृंग, इत्यादि लक्षण युक्त भेष दान करे तथा जो अग्नि देवोंका मुख है, तथा सर्व जिसकी पूजा करे है, अतएव हे अग्ने ! तू इन्द्रादिक संपूर्ण देव और ऋषियोंको पूज्य है, इसवास्ते मेरे कर्मसे उत्पन्न जो भगंदर व्याधि इसको शीघ्र नाशकर और मेरेको सुखकी वृद्धि कर दे इस प्रकार अग्निकी स्तुति करे ।

भगंदर निदान ।

गुदस्यद्व्यंगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिटिकातिंकृत ।

भिन्नोभगंदरज्ञेयःसचपंचविधोमतः ॥

अर्थ-गुदाके समीप दो अंगुल ऊंची पिछाडी एक पिटिका (फुंसी) होय उसमें बहुत पीडा होय, वह पिटिका फूट जाय उसको भगंदर रोग कहते हैं। सुश्रुतने इसकी निरुक्ति इस प्रकार करी है, यथा- 'गुदभगवस्तिदारणात् भगंदरः' इति । भग शब्द इस जगो गुदा वाचक है सो (भोजने) कहा भी है । " भगोपरिसमंताच्च गुदवस्तिस्तथैवच । भगवद्दारयेद्यस्मात्तस्माज्ज्ञेयोभगंदरः " इति । यह भगंदररोग पांचप्रकारकोहै। यह संख्या कहना केवल रक्तज, द्विज, भगंदर संभावना निवारणार्थ जानना इसके पूर्वरूप ग्रन्थान्तरोंसे लिखते हैं ॥

कटीकपालनिस्तोददाहकडूरुजादयः-

भवंतिपूर्वरूपाणिभविष्यन्तिभगंदरेः॥

अर्थ-कमरमें कपालास्थीमें सुईसी चुभे, दाह होय, खुजली चले, पीडा होय ये लक्षण जब भगंदर हों, हार होय है तब होते हैं । इस जगो भी कपालास्थी पूर्वोक्त जाननी अर्थात् जो नाडीघणमें कहि आये हैं ॥

भगंदर शब्दकी निरुक्ति ।

भगोपरिसमंताच्चगुदवस्तिस्तथैवच ।

भगवद्दारयेद्यस्मात्तस्माज्ज्ञेयोभगंदरः ॥

अर्थ-भग व लिंगके चारों तरफ और गुद वस्तिके चारों तरफ भगकी तरह जो विदीर्ण होजावे तिसको भगंदर कहते हैं ॥

शतपानकके लक्षण ।

कृपायूरुक्षैरतिकोपितोनिलस्त्वपानदेशेपिटिकांकरोतियाम् ।

उपेक्षणात्पाकमुपैतिदारुणंरुजाचभिन्नारुणफेनवाहिनी ॥

तत्रागमौमूत्रपुरीपरेतसांत्रणैरनेकैःशतपानकंवदेत् ॥

-अर्थ-कपेले और रूखे पदार्थ खानेसे वायु अत्यंत, कुपित होकर गुदास्थानमें जो पिटिका (फुंसी) प्रगट करे, उनकी उपेक्षा करनेसे वे फुंसी पके और फूट जाय तब पीडा होय तथा लाल झागमिली राध वहे तथा उस्में अनेक छिद्र होजाय उन छिद्रोंमें मूत्र, मल और रेत (शुक्र) वहे चालनी केसे अनेक छिद्र होय इसी कारण इस रोगको शतपोनक ऐसे कहते हैं । शतपोनक नाम संस्कृतमें चालनीकाहै ॥

उष्ट्रशिरोधरके लक्षण ।

प्रकोपणैःपित्तमतिप्रकोपितंकरोतिरक्तांपिटिकांगुदाश्रिताम् ।

तदाशुपाकाहिमपूयवाहिर्नाभगंदरंतूष्ट्रशिरोधरंवदेत् ॥

अर्थ-पित्तकारक पदार्थ खानेसे कुपित भया जो पित्त सो गुदामें लाल रंगकी पिटिका उत्पन्न करे वो शीघ्र पककर उन्मेंसे गरम राधवहे ये पिटिका (फुंसी) ऊंटकी नाडके समान होय इसीसे इस्को उष्ट्रशिरोधर नाम कहतेहैं ॥

शंखकावर्तके लक्षण ।

बहुवर्णरुजास्रावाःपिटिकागोस्तनोपमाः ।

शंखकावर्तवन्नाडीशंखकावर्तकोमतः ॥

अर्थ-जिस्में गौके थनके समान अनेक पिडिका होय उन्का रंग पीडा और स्राव अनेक प्रकारका होय और व्रण शंखके आंठके समान गोल होय, इस्को शंखकावर्त कहते हैं ॥

परिस्रावी भगंदरके लक्षण ।

कंडूयनोघनस्रावीकठिनोमंदवेदनः ।

श्वेतावभासः कफजःपरिस्रावीभगंदरः ॥

अर्थ-कफसे प्रगट भया भगंदर उस्में खुजली चले तथा उस्मेंसे गांठी राध वहे तथा वो पिटिका कठिन होय, उस्में पीडा थोड़ी होय उन्का वर्ण सपेद होय उस्को परिस्रावी भगंदर कहतेहै ॥

अर्श भगंदर ।

कफपित्तसपित्तोत्थेगुदमाश्रित्यकोपतः । अर्शोमूलेततःशोथः

कंडूदाहादिमान्भवेत् ॥ सशोभ्रंपक्वभिन्नोस्यकृद्दयन्मूलमर्श

सः । स्रवत्यजस्रंगतिभिरयमर्शोभगंदरः ॥

अर्थ-कफ और पित्त पित्ताधिक्यसे गुदामें प्राण हो कुपित हुए बवासीर, पेडूमें सोजा, खुजली, दाह ये रोग मनुष्योंके पैदा करतेहैं और बवासीरकी,

जड़को गीली करते हुए येही कफ पित्त शीघ्र पकाते हैं और फोड़ते हैं और मनुष्यके चलनेसे यह वारंवार झिरताहै ऐसे भगंदरको अर्शभगंदर कहते हैं ॥

उन्मार्गी भगंदर ।

क्षताद्गतिःपायुगताविवर्द्धतेह्युपेक्षणात्साकृमिभिर्विदार्यते ।

प्रकुर्वतेमार्गमनेकधामुखैर्व्रणैस्तदुन्मार्गीभगंदरंवदेत् ॥

अर्थ—गुदामें कांटे आदिके लगनेसे क्षत (घाव) होजाय, उस घावकी उपेक्षा करनेसे उसमें कृमि पडजाय, वो कृमि उस क्षतको विदारण करे, ऐसे वो घाव गुदापर्यंत बढकर पहुँचे तथा कृमि उसमें अनेक मुख करलेवें इसको उन्मार्गी भगंदर कहते हैं ॥

साध्यासाध्यलक्षण ।

घोराःसाधयितुंदुःखाःसर्वेएवभगंदराः ।

तेष्वसाध्यस्त्रिदोषोत्थक्षतजश्वविशेषतः ॥

अर्थ—सब भगंदर दुःसाध्य हैं तिसमें भी त्रिदोषका भगंदर असाध्य है और क्षतज विशेष कर्के असाध्य है ॥

वातसूत्रपुरीपाणिकृमयःशुक्रमेवच ।

भगंदरात्प्रस्रवंतिनाशयंतितमातुरम् ॥

अर्थ—जिस भगंदरमेंसे अधोवायु, सूत्र, विष्टा, कृमि और वीर्य वहे उस रोगीका नाश होय ॥

सामान्य चिकित्सा ।

गुदपिटिकायामादौकुर्याद्रक्तावसेचनंमतिमान् ।

जलसदनाभिरशेषसापाकंनप्रयातियथा ॥

अर्थ—गुदापर भगंदरकी फुन्सी होनेसे उसका रुधिर निकाले तथा उसमेंसे जल निकल जावे, तथा पके नहीं ऐसी क्रिया करे ।

भगंदरपरदंभ ।

अपानमार्गपिटिकांदहेत्स्वर्णशलाकया ।

अग्निप्रतप्तयापश्चात्कुर्यादग्निव्रणक्रिया ॥

अर्थ—अपानमार्गस्थ भगंदरकी फुंसीको सुवर्णकी सलाईसे दागदेवे, फिर अग्निदग्ध व्रणपर जो क्रिया फही है वो करे ॥

अपकभगंदरपिटिका पर ।

पिटिकानामपक्वानामपतर्पणपूर्वकम् ।

कर्मकुर्याद्विरेकांतंभिन्नायावक्ष्यतेक्रिया ॥

अर्थ—जिस भगंदरकी कच्ची फुंसी होवे उसको रुधिरस्त्रावादिक करके उसपर रेचकादि क्रिया करे. जब वो फूट जावे उसपर जो क्रिया करी जाती है उनको मे कहता हूँ ॥

क्षारादियोग ।

एतासांपाटनंक्षारंवाह्निदाहादिकंक्रमम् ।

विधायव्रणवत्कार्यैयथादोषंयथाक्रमम् ॥

अर्थ—इन भगंदरकी फुंसियोंको क्षार अग्निदाह, इत्यादिकोंसे फोड़कर फिर क्रमसे प्राप्त व्रणकी क्रिया करे ॥

स्यंदन तैल ।

चित्रकार्कत्रिवृत्पाठामलपुहकमारकौ । सुधांवचांलांगलिकीं

हरितालंसुवर्चिकाम् ॥ ज्योतिष्मतींचसंहृत्यतैलंधीरोविपाच

येत् । एतद्विस्यंदनं नाम तैलं दद्याद्भगंदरे ॥ शोधनं रोपणं

चैव सवर्णकरणं तथा ॥

अर्थ—चित्रक, आक, निसोय, पाठ, वावची, कनेर, यूहर, वच, कल्यारी, हरताल, सजीखार, कांगनी इन औषधोंके साथ तैल आंटावे, इसको स्यंदन तैल कहते है । इसको भगंदर पर लगावे, यह शोधन और रोपण करे ॥

पूर्वोक्तत्रिफलागुग्गुलुंभक्षयेत् ॥

अर्थ—पूर्वोक्त त्रिफला गुग्गुलुका सेवन करे तो भगंदर दूर होय ॥

निशादि तैल ।

निशार्कक्षीरसिध्वग्निपुंखीलांगलिवत्सकैः ।

एभिः प्रसाधितं तैलं भगंदरविनाशनम् ॥

अर्थ—हलदी, आकका दूध, सैधानिमक, चित्रक, सरफोका, मजीठ, कूडा, इनके कल्क वा फाय करके सिद्ध करे हुए तैलसे भगंदर दूर होय ॥

करवीर तैल ।

करवीरनिशादंतीलांगलीलवणाग्निभिः ।

मातुलिंगार्कपयसापचेतैलं भगंदरे ॥

अर्थ—कनेरकी जड़, हलदी, दंती, कल्यारी, निमक, चित्रक, विजोरेका रस, और आकका दूध, इनको मिलाय तेल सिद्ध करे, इसको भगंदर पर लगावे ॥

शुनास्थ्यादि लेप तथा नरास्थि तैल ।

शुनोस्थिभूलतातक्रपेपिताखररक्तयुक् ।

लेपोभगंदरंहन्यान्नरास्थनातैलमेवच ॥

अर्थ—कुत्तेकी हड्डी, गिडोहे, इनको छॉछमें पीस इसमें गधेका रुधिर मिलायेके लेप करे तो भगंदरको नाश करे । अथवा मनुष्यकी हड्डीके तेलको लगावे तो भगंदर जाय ॥

विडालास्थिलेप ।

त्रिफलारससंयुक्तंविडालास्थिप्रलेपनम् ।

दुष्टव्रणनिहंत्याशुभगंदरहरंपरम् ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आँवला, इनके काढेमें विलाईकी हड्डी आँटायके लेप करे तो दुष्ट-व्रण, भगंदर इनको नाश करे ॥

कुष्ठादिलेप ।

कुष्ठत्रिवृत्तिलादंतीमागधीसैधवंमधु ।

रजनीत्रिफलातुत्थंहितंस्याद्गुणलेपनम् ॥

अर्थ—कूठ, निसोय, तिल, दंती, पीपल, सैधानिमक, सहत, हलदी, हरड, बहेडा, आँवला, नीलायोया, इनका लेप भगंदरके घाव पर उत्तम है ॥

रसांजनादिकल्क ।

रसांजनंहरिद्रेद्रेमंजिष्ठानिवपल्लवाः ।

त्रिवृत्तेजावतीदंतीकल्कोनाडीव्रणापहः ॥

अर्थ—रसोत, दारुहलदी, हलदी, मजीठ, नीमके पत्ते, निसोय, कांगनी, दंती, इनके चूर्णको लेप नाडीव्रणका नाशक है ॥

वटपत्रादिलेप ।

वटपत्रेष्टिकाशुंठीगुडूचीसपुनर्नवाः ।

सुपिष्टाःपिटिकावस्तेलेपःशस्तोभगंदरे ॥

अर्थ—बडकी कली, ईटवा चूर्ण (कूआ) सोंठ, गिलोय, पुनर्नवा, इन सबको पीसके जलसे भगंदर पर लेप करे ॥

तिलादिलेप ।

तिलात्रिवृन्नागदंतीमंजिष्ठाज्यैःससैंधवैः ।

सक्षौद्रैश्चप्रलेपोयंभगंदरकुलांतकृत् ॥

अर्थ-तिल, निसोय, बहीदंतो, मजीठ, धी, और सैधानिमफ इनको पीस, सहत मिलाय लेप करे तो भगंदर कुलको नाश करे ॥

खदिरादिलेप ।

खदीरत्रिफलाकाथोमहिपीघृतसंयुतः।

विडंगचूर्णसंयुक्तोभगंदरविनाशनः ॥

अर्थ-कत्या, हरड, बहेडा, आंवला, इनका काढा भैसका पी, वायविडंगका चूर्ण इनको डालके पीवे तो भगंदरको नष्ट करे ॥

तिलादिलेप ।

तिलाभयालोध्रमरिष्टपत्रंनिशावचांकुष्ठमगारधूमः ।

भगंदरेनाडचुपदंशयोश्चदुष्टत्रणेशोधनरोपणोयम् ॥

अर्थ-तिल, हरड, लोध, नीमके पत्रे, हलदी, वच, पूठ, घरका धूआ इनको जलमें पीसके लेप करे तो भगंदर, नाडीघण, उपदंश और दुष्ट व्रण इनका शोधन और रोपण करे ॥

सप्तविंशतिगुगुल ।

त्रिकटुत्रिफलामुस्ताविडंगामृतचित्रकम् । चव्येलेपिप्पलीम्
लंहप्रुपासुरदारुचातुंबरुंपुष्करंचव्यविशालारजनीद्वयम् ॥ वि
डसोव्वर्चलक्षारसैंधवंगजापिप्पली । यावन्त्येतानिद्रव्याणिताव
द्विगुणगुगुलुः । कालप्रमाणांगुटिकांभक्षयेन्मधुनासह । कासं
श्वासंतथाशोफमशीसिचभगंदरम् । हृच्छूलंपार्श्वशूलंचकुक्षि
वस्तिगुदेरुजम् । अश्मरीमूत्रकृच्छ्रंचअन्त्रवृद्धितथाकृमीन् ॥
चिरञ्चरोपसृष्टानांक्षयोपहतचेतसाम् । आनाहंचतयोन्मादस
कुष्ठान्युदराणिच । नाडीदुष्टत्रणान्सर्वान्प्रमेहंश्लीपदंतया । स
प्तविंशतिकोह्येपःसर्वरोगानिपूदनः ॥

अर्थ-साँठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, नागरमोया, वायविडंग, मिलोय, चित्रककी छाल, चव्य, इलायची, पीपरामूल, हाकनर, देव-

दारु, तूंबरु, पुहकरमूल, चव्य, इन्द्रायण, हलदी, दारु हलदी, विडनिमक, संचरनिमक, सैधानिमक, गजपीपल ये समान भाग ले, इन सब चूर्णसे दुग्नी गूगल डाले फिर तीन मासेकी गोली बनावे, इसको सहतमें मिलायके देवे तो खांसी, श्वास, सूजन, ववासीर, भगंदर, हृदयशूल, पार्श्वशूल, कुक्षिशूल, वस्तिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, अंत्रवृद्धि, कृमिरोग, बहुत दिनका ज्वर क्षय, आनाहवात, उन्माद, कुष्ठ, उदररोग नाडीबण, दुष्टव्रण, प्रमेह, श्लीपद इन सबको यह सप्तविंशति गूगल नाश करे ॥

जंबूकमांस प्रकार ।

जम्बूकस्यामिपंभुक्त्वाप्रकारैर्व्यंजनादिभिः ।

अजीर्णवर्जमासेनमुच्यतेतुभगंदरात् ॥

अर्थ—जंबूक (स्यार) के मांसके व्यंजनादिक पदार्थ भक्षण करे तथा अजीर्ण होने देवे नहीं तो भगंदरसे छूट जावे ॥

भगंदर पर पथ्य ।

आमेसंशोधनंलेपोलंघनंरक्तमोक्षणम् । पक्वेपुनःशस्त्रविधिस्त
थाक्षाराग्निकर्मच ॥ सर्वत्रशालयोमुद्गाविलेपीजांगलोरसः ।
पटोलंशिथुवेत्राग्रंधतूरोवालमूलकम् ॥ तिलसर्पपयोस्तैलंति
क्तवर्गोघृतमधु । एतत्पथ्यंनरैः सेव्यंयथादोपंभगंदरे ॥

अर्थ—विनापके भगंदर रोगमें संशोधन, लेप, लंघन, रक्तका निकालना ये क्रिया करें और पक्वमें शस्त्रविधि, क्षारकर्म, अमिकर्म करे और शालि, मूग, यवागूविशेष जांगलरस, परवल, सहिजनेकी छाल, जलवेतस, धतूरा, नेत्र-वालाकी जड, तिल व सरसोंका तेल, तिक्तवर्ग, घृत, शहद, भगंदर रोगमें मनुष्योंने ये पूर्वकही पथ्य औषधियें सेवन करनी योग्य है ॥

भगंदर पर अपथ्य ।

व्यायाममैथुनंयुद्धं पृष्टयानंगुरुणिच ।

संवत्सरंपरिहरेद्यावद्द्व्रणोनरः ॥

अर्थ—कसरत, मैथुन, युद्ध, घोडे, ऊंट आदिकी सवारी, बोझा उठाना, व्रण दृढ होनेतक मनुष्य इन पूर्वकहे दुर्गोंको एक वर्ष पर्यन्त त्याग देवे ॥

इति श्रीदत्तरामनिर्मितआयुर्वेदोद्धार बृहन्निघण्टुरत्नाकरे भगंदररोगस्य निदानधिसिद्धा समाप्ता ।

उपदंश ।

उपदंशका कर्मविपाक ।

मातृगामीभवेद्यस्तु तस्य लिंगं विनश्यति । चांडालीगमने चैव
हीनकुष्ठः प्रजायते ॥ तस्य प्रतिक्रियां कर्तुं कुंभमुत्तरतो न्यसेत् ।
तत्रोपरिकुबेरप्रतिमां सौवर्णो कृष्णवस्त्राघृतां माल्यभूषितामा
वाहनादिनापोडशोपचारैः प्रत्यहं पूजयेत् ॥ अथर्ववेदपाराय
णं कुर्यात् । समाप्ते पारायणे प्रतिमां ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ दानमन्त्रः
निधीनामधिपो देवः शंकरस्य प्रियः सखा । सौम्याशाधिपतिः श्री
मान्ममपापं व्यपोहतु ॥ इमं मंत्रं समुच्चार्य आचार्याय यथाविधि ।
दद्याद्देवं हीनकुष्ठीलिंगनाशी च शुद्ध्यति ॥

अर्थ—जो प्राणी मातासे गमन करे हैं उसके लिंगनाश रोग होय, और
चांडालीसे गमन करनेसे सपेद कुष्ठ होय, उसकी शांतिके वास्ते अमिके
उत्तरकी तरफ कलश स्थापन कर उस पर कुबेरकी सुवर्णकी मूर्ति बनाय-
के स्थापना करे उसके काले वस्त्र पहनायके फूलोंकी माला धारण कराय,
नित्य प्रति आवाहनादि शोडशोपचार पूर्वक पूजन करके उसके आगे अथर्व
वेदका पारायण करे । उस के समाप्त होने पर उस प्रतिमाको ब्राह्मणके अर्प
दान करदेवे, दान करनेका यह मन्त्र है “ निधीनामधिपो देव इति ” इसमें
इसका उच्चारण कर यथाविधि आचार्यको देवे, इस प्रकार हीन कुष्ठी और
लिंगनाशवान् ये शुद्ध होवे ॥

उपदंशनिदान ।

हस्ताभिधाता व्रखर्दंतघातादधावनाद्भ्रत्युपसेवनाद्वा ।
योनिप्रदोपाच्च भवन्ति शिश्रेपंचोपदंशाविविधप्रकाराः ॥

अर्थ—हाथकी चोट लगनेसे, नख दांतके लगनेसे, अच्छीरीतिसे न धोनेसे
अत्यन्त स्त्री संगके करनेसे, अथवा योनिके दोषसे (अर्थात् दीर्घकरे वाल जिस्के
ऊपरहोय) अथवा खारी गरम जलके धोनेसे, ब्रह्मचर्यवाली स्त्रीसे गमन करनेसे
इत्यादि कारणोंसे लिंगमें उपदंश (गर्भाका रोग) होयै दो पांच प्रकारका है ॥

वातोपदंश ।

सतोदभेदस्फुरणैःसकृष्णैःस्फोटैर्व्यवस्येत्पवनोपदंशम् ॥

अर्थ—लिङ्गन्द्रियके ऊपर काले फोडा उठे, उन्मे चोट लगनेकीसी पीडा होय, तोडनेकी सी पीडा होय और स्फुरण ये लक्षण वातोपदंशके जानने ॥

प्रपौडरीकंमधुकंरास्नांकुष्ठपुनर्नवैः ।

सरलागरुमद्राख्यैलेपोवातोपदंशहा ॥

अर्थ—पुंडरीक वृक्ष, मुलहठी, रास्ना, कूठ, पुनर्नवा, सरल, देवदारु, अगर और भद्राख्य इनका लेप वातोपदंश नाशक है ॥

उपदंश पर प्रक्रिया ।

स्निग्धस्विन्नस्यतेष्वादौध्वजमध्येशिराव्यधः ॥ जलौकापात
नंवास्यादूर्ध्वाधःशोधनंतथा । सद्योपहतदोषस्यरुक्शोफाबु
पशाम्यतः । पाकीरक्ष्यःप्रयत्नेनशिश्नक्षयकरश्चसः ॥

अर्थ—उपदंश रोगवालेको प्रथम सेंहे पान करापके पसीने निकाले और लिगमें शिरा बंधे अथवा जोक लगायके रुधिर निकाले, तथा ऊपर नीचेसे देह-को शोधन करे, इस प्रकार दोष हरण करनेसे पीडा, और सूजन ये न्यून हो, परंतु लिगको पकने न देवे, पकनेसे लिगका क्षय होय ॥

पित्तोपदंश तथा रक्तोपदंश ।

पीतैर्वहुक्लेदयुतैःसदाहैःपित्तेनरक्तात्पिशितावभासैः ॥

अर्थ—पित्तके उपदंशके पीले रंगके फोडे होते है उन्मेसे पानी बहुत बहै, दाह होय, रुधिरके उपदंशसे मांसके समान लाल रंगके फोडा होंय ॥

गैरिकादिकाय ।

गैरिकांजनमंजिष्ठांमधुकोशीरपद्मकैः ।

सचंदनोत्पलैःस्निग्धैःपेयःपित्तोपदंशहा ॥

अर्थ—गेरु, रसोत, मजीठ, मुलहठी, खस, पद्मास, लालचदन, और कमल इनका फाटा परके पीके साथ देवे, तो पित्तका उपदंश नाश होंय ॥

निवादिकाय ।

निवारुनाश्वत्थकदंबशालजंबूवटोदुंबरवेतसाद्रिः ॥

प्रशालनाल्लेपघृतानिकुर्याच्चूर्णचपितास्रमोपदंशे ॥

अर्थ-नींबू, कोहू वृक्षकी छाल, पीपलकी छाल, कदंब, साल जामुन, चड, गूलर, और वेत इनका काटा करके उससे धोवे, तथा इसीका लेप करे एवं इन्ही औषधोंसे सिद्ध करा हुआ घी अथवा इनका चूर्ण देवे तो पिचोपदंशकी शांति होय ॥

कफोपदंशके लक्षण ।

'संकुडुरैःशोथयुतैर्महद्भिःशुकैर्घनस्त्रावयुतैःकफेन ।

अर्थ-कफके उपदंशके सपेद मोटे फोडा होय, ठन्मे खुजली चले, सूजन होय, और गाढीराध वहे ॥

लिंगवर्तिउपदंश ।

अंकुरैरिवसंचातैरुपय्युपरिसंस्थितैः॥ क्रमेणजायतेवर्तिस्ताम्र
चूडशिखोपमा ॥ कोशस्याभ्यंतरेसंधौसर्वसंधिगतापिवा ॥
लिंगवर्तिरितिख्यातालिंगार्शइतिचापरे ॥ कुलित्थाकृतयःके
चित्केचित्पद्मदलोपमाः ॥ मेढ्रसंधौनृणांकेचित्केचित्सर्वाश्र
याःस्मृताः ॥ रुजादाहार्तिबहुलास्त्वृष्णातोदसमन्विताः । स्त्री
णांपुंसांचजायतेह्युपदंशाःसुदारुणाः ॥

अर्थ-मुरगाकी चोटके समान लिंगके ऊपर मांसके अंकुर एकके ऊपर एक प्रगट होय कोशकी भीतरकी मणिमें अथवा सर्व संधियोंमें, तो इस रोगकी लिंगवर्ति ऐसे कहते हैं, और कोई लिंगार्श कहते हैं, यह त्रिदीपजन्य है इस्में मांसके अंकुर कुलियोंके समान, और कोई पद्मदलके समान, फिसीके अंडकोशकी संधीमें किसीके सर्व आश्रयमें होते हैं। पीडा, दाह, बहुत होय, प्यास नोचनेकीसी पीडा होय, स्त्री और पुरुषोंके यह उपदंश और पीडाकारक होते हैं इस्में (कुलित्थाकृतयः) यहांसे लेकर (स्त्रीणांपुंसांचजायन्ते) यहांतक पाठ लेपक है माध्वका नहीं और स्त्रियोंकेभी गरमीका रोग होय है, यह मत मुश्कतना है परंतु यह आर्य पाठ नहीं है ॥

सर्वोपदंशपर सर्वन्याधिहरण रस ।

हिंयुलोत्थरसंभागद्वौभागोरसकपुंरम् । इसतुल्यंवालिदद्यात्स्व
ल्पमध्येतुकजली ॥ दक्षडिमृत्पुंडपंचवालुकार्यत्रगंपचेत् ।
दिनैकंतुक्रमादग्नौस्वांशीतंचसमुद्धरेत् ॥ पूजयेद्गुरुविप्राद्यैर्यथा
रोगंप्रयोजयेत् । गुंजाचतुष्टयंसादेन्नागवल्लीदलेयुंतम् ॥

पंडोपिलभतेपुंस्त्ववाजीकरणमुत्तमम् । अपुत्रःपुत्रमाप्नोति
जीवेच्चशरदांशतम् ॥वलीपलितहृच्छूलंवातश्लेष्मनिवर्हणम् ।
अयंव्याधिहरःसूतः पूज्यपादेननिर्मितः ॥

अर्थ-हिंगुलसे निकाला हुआ पारा, १ भाग, रस कपूर २ भाग, गंधक
१ भाग इस प्रकार सबको एकत्रकर खरलमें डाल कजली करे फिर इसको
सुरगीके अंडेमें भर ऊपरसे पांच कपड मिट्टी करे. फिर इसको वालुकायंत्रमें
रख १ दिन क्रमसे आग्निदेवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब निकालक
गुरु और ब्राह्मणकी पूजाकर जैसी व्याधि होवे उसके अनुसार अनुपानसे ४
रेत्तादेवे तथा उपदंशपर नागरखेल पानके साथ देवे तो नपुंसक होय तो उसको
पुरुषत्व प्राप्त होय जिसके पुत्र न होय उसके पुत्र होय और १०० वर्ष जीवे
यह व्याधिहरण सेवन करनेसे वलीपलित इनका नाश होकर कफ वात-
का नाश होय और प्रमेह उपदंश इनका नाश करे, यह हमारे गुरुने कहाहै ॥
संनिपातोपदंश ।

नानाविधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिमलोपदंशम् ॥

अर्थ-जिस उपदंशमें अनेक प्रकारका स्राव होय, पीडा होय यह त्रिदोषज
उपदंश असाध्य है ॥

असाध्य लक्षण ।

विशीर्णमांसकृमिभिःप्रजग्धंसुष्कावशेषंपरिवर्जयेत्तु ॥

अर्थ-जिस उपदंश कर्के लिंगका मांस गल गया होय और कृमि लिंगको
खाय जावे, केवल अंडकोश मात्र रहिजाय, उसको वैद्य त्यागदे ॥

प्रकारांतर ।

संजातमात्रेणकरोतिमूढःक्रियांनरोयोविपयेप्रसक्तः ।

कालेनशोथःकृमिदाहपाकैर्विशीर्णंशिश्रोत्रियतेसतेन ॥

अर्थ-उपदंशके होतेही जो मूर्ख मनुष्य विषयमें आसक्त होकर इस्का उप-
चार नहीं करे, उसका लिंग थोडे दिनमें सूजन और कीड़ेपड़े और उसमें दाह
और पाकभी होय, पीछे वो गलजाय ऐसा रोगी मरजाय ॥

नीलोत्पलादि लेप ।

नीलोत्पलानिकुमुदंपन्नसौगन्धिकानिच ।

उपदंशेचूर्णयित्वाप्रलेपोयंप्रशस्यते ॥

अर्थ—नीलाकमल, कमोदनी कमल और सौगन्धिक कमल इनका सर्व उपदंश पर लेप परमोत्तम कहा है ॥

दारुहरिद्रादिलेप ।

त्वजोदारुहरिद्रायाःशंखनाभिरसांजनम् । लाक्षागोमयनिर्या
संतैलंशौद्रंघृतंपयः ॥ एभिःसुपिष्टैर्द्रव्यांशैरुपदंशेप्रलेपयेत् ।
व्रणास्त्वनेनशाम्यांतिश्वयथुर्दाहएवच ॥

अर्थ—दारुहलदी, शंख, रसोत, लाख, गौके गोवरका रस, तेल, घी, दूध, इनको एकत्र खरल कर इसको उपदंशकी चट्टोंपर लेप करे तो चट्ट सूजन और दाह ये शांति होवे ॥

रसांजनादि लेप ।

रसांजनंशिरीषेणपथ्ययाचसमन्वितम् ।
सशौद्रलेपनंयोज्यंसद्योरोपयतिव्रणम् ॥

अर्थ—रसोत, सिरस वृक्षकी छाल, हरड, इनका चूर्ण कर इसका सहतसे लेप करे, तो तत्काल व्रण भर आवे ॥

प्रकारांतर ।

गोपीचन्दनतुत्थंचसमभागेनमर्दयेत् ।
कज्जलीजलसंयुक्ताव्रणानालेपनेहिता ॥

अर्थ—गोपीचन्दन और नीलायोथा ये समान भाग लेकर घोटे, तथा दोनोंकी कजली करे फिर इसको जलसे घाव पर लगावे तो हितकारी होय ॥

पारदादि लेप ।

पारदंगंधकंतालदरदंचमनःशिलां । पृथक्कर्पैद्रिकर्पैचमुर्दारंशं
खजीरकम् ॥ विधायकज्जलीशुष्णामर्दयेत्सुरसारसेः । छाया
शुष्काततःकृत्वापुनरुन्मत्तजद्रवैः।विमर्द्याथवटीकार्याह्युपदंशे
प्रयोजयेत् । गोघृतेनप्रलेपोयंव्रणानारोपणेहितः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, हरताल, हींगलू मनसिल प्रत्येक एक २ तोले और मुर्दार सिंग तथा शंख जीरा ये दोरतोले इन सबकी वारीक कजली कर तुलसीके रससे खरलकर छायामें सुखायले फिर धतूरेके रससे खरलकर गोली बनावे इसको गोमूत्र में घिसके उपदंश पर लेप करे तो व्रणको भर लावे ॥

वटप्ररोहादि लेप ।

वटप्ररोहार्जुनजंबुपथ्यालोभ्रंहरिद्रासहितःप्रलेपः ।

सर्वोपदंशेष्यवरोहणार्थंचूर्णचतुर्विंशतिज्विमलाजलेन ॥

अर्थ—बडके अंकुर, कोह वृक्षकी छाल, जामुन, हरड, लोष, हल्दी, इनका चूर्ण धूरके दूधमे खरल कर लेप करे तो उपदंशका घाव भरजावे ॥

त्रिफलामपीलेप ।

दहेत्कटाहेत्रिफलांतांमर्पीमधुसंयुताम् ।

कृत्वोपदंशेलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आंवला, इनको कटाईमे जलायके इनकी स्याहीको सहतमें मिलायके लेप करे तो तत्काल उपदंशके व्रणको भरलावे ॥

अश्वत्यादिप्रक्षालन ।

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवत्वेतसजशृतः ।

व्रणशोथोपदंशानानाशकःक्षालनेस्मृतः ॥

अर्थ—पीपल, गूलर, पाखर, बड, वेत, इनके काटेसे व्रणको धोवे, तो व्रण नाश होय तथा मूजन और उपदंश इनका भी नाशक है ॥

त्रिफलादि प्रक्षालन ।

त्रिफलायाः कपायेणभृंगराजरसेनवा ।

व्रणप्रक्षालनंकुर्यादुपदंशप्रशांतये ॥

अर्थ—उपदंशके घावकी शांति होनेके वास्ते त्रिफलेके काटेसे अथवा भांगरके रससे धोवे तो उपदंशका घाव जाता रहे ॥

जयादि प्रक्षालन ।

जयाजात्यश्वमारकेशम्याकानांदलैःपृथक् ।

कृतंप्रक्षालनेकार्येभेदंप्राकेप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—अरनी, चमेली कनेर, आक और अमलतास इनके पत्रोंका पृथक् २ काटा करके पके हुए लिंगको धोवे तो अच्छा होय ॥

पटोलादि फाय ।

पटोलनिंबत्रिफलाकिरातेः कार्यपिबेद्राखदिरासनाभ्याम् ।

सगुगुलुंवात्रिफलायुतंवासर्वोपदंशापहरः प्रयोगः ॥

अर्थ—पटोलपत्र, नाँवके पत्ते, हरड, वहेडा, आँवला, चिरायता, इनका काढा पीवे, अथवा खैर, विजेयसार, इनका काढा त्रिफलेके साथ अथवा गूगलके साथ पीवे तो सर्व प्रकारके उपदंश दूर होय ॥

गैरिकादि काथ ।

गैरिकांजनमंजिष्ठामधूकोशीरपद्मकैः ।

सचंदनोत्पलैःसिन्धुधैः पेयःपित्तोपदंशहा ॥

अर्थ—गेरू, रसोत, मजीठ, मुलहठी, खस, पद्माख, चंदन, कमल इनका काढा घृतके साथ देवे तो पित्तोपदंशको नाश करे ॥

आम्रत्वचाकास्वरस ।

आम्रत्वचंविनिष्पीडयनिगृह्यस्वरसंपलम् ॥

चतुःपलंत्वजाक्षीरसंयुक्तंप्रपिबेत्प्रगे ।

एवंमुनिदिनंकुर्यादुपदंशत्रणेहितम् ॥

अर्थ—आमकी छालका ४ तोले स्वरस लेकर उसमें १६ तोले बकरीका घी डालके प्रातःकाल पीनेको देवे, इसप्रकार सात दिन देवे तो उपदंश व्रणको हितकारी होयहै अर्थात् उपदंशके व्रणको भरलावे ॥

सर्जिकादि चूर्ण ।

सर्जिकातुत्थकासीसशैलेयंसरसांजनम् ॥

मनःशिलासमश्ूर्णव्रणवीसर्पनाशनम् ॥

अर्थ—सजीखार, लीलायोथा, हीराकसीस, शिलाजीत रसोत, मनसिल, इनका चूर्ण उपदंशके व्रणको तथा विसर्पके व्रणको नष्ट करे ॥

बबूलदलचूर्ण ।

बबूलदलचूर्णेनदाडिमत्वग्रजोथवा ।

गुंडनर्लिगदेशस्थेलेपःपूगफलेनवा ॥

अर्थ—बबूरके पत्तोंका चूर्ण, अथवा अनारकी छालका चूर्ण करके उपदंशपर लगावे, अथवा सुपारीको घिसकर उसका लेप करे ॥

चोपचीनी चूर्ण ।

कुडवंचोपचिन्याश्चर्करायाःपलंतथा ॥ पिप्पलीपिप्पलीमू

लंमरिचंदेवपुष्पकम् ॥ आकलंसुरकंशुंठीजंतुग्रंचदरांगकम् ॥

पृथक्कोलमितं ग्राह्यमेतच्चूर्णीकृतं शुभम् ॥ सर्वमेकत्रसंयोज्यं क
 पार्थिवप्रतिवासे ॥ भक्षयेन्मधुसर्पिभ्यो युक्तं पथ्यं समाचरेत् ॥
 शाल्योदनं तथासूपंतुवरीणां घृतं मधु ॥ गोधूमसैधवं शिशुं विंवी
 कोशातकीफलम् ॥ आर्द्रकं जलमंदोष्णं हितमत्र प्रकीर्तितम् ॥
 पचोपदंशरोगाणां प्रमेहाणां तथैव च ॥ व्रणानां वातरोगाणां कुष्ठ
 नां च विनाशनम् ॥

अर्थ—चोपचीनी १६ तोले, खांड ४ तोले, तथा पीपल, पीपरामूल, का-
 लीमिरच, लौंग, अकरकरा, बंगभस्म, सोंठ, वायविडंग, हरड, बहेडा,
 आँबला, ये प्रत्येक आधे २ तोले ले इन सबका चूर्ण एकत्र कर इसमेंसे छः
 भासे चूर्ण नित्य सहत और घीके साथ देवे, और पथ्यमें भात, अरहरकी दाल,
 घी, सहत, गेहूँ, संधानिमक, साहिजना, कँदूरी, तोरई, अदरस, तथा गरम जल,
 ये सब पदार्थ हितकारी हैं, इस प्रकार सेवन करे, तो पांच प्रकारके उपदंश,
 बीस प्रकारके प्रमेह व्रण वादीका रोग और कुष्ठ इनको नाश करे ॥

भूनिंवादिघृत ।

भूनिं वनिं वत्रिफलापटोलकरंजजातीखरिरासनानां ।
 सतोयकल्के घृतमाशुपकंसर्वोपदंशापहरं प्रदिष्टम् ॥

अर्थ—चिरायता, नीमकीछाल, हरड, बहेडा, आँबला, पटोलपत्र, कंजा,
 चमेली, खैरकीछाल, विजैसारकीछाल, इनका पतला कल्क कर उसमें घी
 मिलाय आँटावे जब सिद्ध होजावे तब उतारले, यह संपूर्ण उपदंशोंका नाश करे ॥

करंजादिघृत ।

करंजबीजाजुनशालजंबूवटादिभिः कल्ककपायसिद्धम् ।

सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं सदाहपाकं सुतिरागयुक्तम् ॥

अर्थ—कंजेके बीज, कोहकी छाल, शाल, जामुन और बड इनका काढा तथा
 कल्क इनमें घृतमिलायके सिद्ध करे तो यह दाह, पाक, स्राव, और दुष्टरंग
 इन करके युक्त उपदंशको नाश करे ॥

रसघृत ।

शुद्धं सुतं पिचुमितं द्विवर्लिं प्रमर्द्य सर्वैर्द्विभागवनीतमापि प्रमर्द्य ।

वक्षेमलिप्यपिचुमंदविपर्णशाखांसंवेष्टयेन्न तमुर्लीपरिदीप्यवर्ति ॥

तस्याघृतं स्रवतिकाचमयेचपात्रे घृत्वा हिवल्लिदलशाकमिदं प्रदे-
यम् । सर्वोपदंशकरिकेसरिणंत्रणंत्रंपङ्गादिकं रसघृते च विवर्ज-
नीयम् ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ तोला गंधक २ तोले, दोनोंकी कजली कर इसमें २ तोले मक्खन मिलायके खरल करे फिर इसको कपडेमें चुपडे उस कपडेको नीमकी ओली लरुडीके ऊपर लपेट उसको उलटी रखे फिर नीचेसँ आग लगाय देवे, उसमेंसे जो घी टपके उसको कांचके बरतनमें भरके धर रखे, इसको पानमें लगायके खाय तो यह रसघृत संपूर्ण जातिके उपदंशको नाशकरे इस पर निमक खाना वर्जित है ॥

आगरधूमतैल ।

आगरधूमोरजनीसुराकिण्वंचतौस्त्रिभिः । भागोत्तरैः पचेत्तैलं
कंडुशोथरुजापहं । शोधनं रोपणंचैव सुवर्णकरणंतथा ॥

अर्थ—घरका धूँआ १ भाग, हलदी २ भाग, दारू' निकालनेके वास्ते धान भिगोयकर करा हुआ पदार्थ ३ भाग ये सब एकत्र कर इसमें तेल सिद्ध करे, यह खुजली, सूजन, पीडा, इनको नाश करे, तथा शोधन और रोपण है, तथा प्रांति उत्पन्न करे है ॥

सूतादि वरी ।

ग्ल्यातकीं शुद्धसूतां पिप्पलीमूलपिप्पली । आकल्लकं जातिपत्री
दुरकंदेवपुष्पकम् ॥ मर्दयेत्समभागेन पुराणगुडमिश्रितम् ॥
उपदंशेषु सर्वेषु प्रमाणं रक्तिकावटी ॥

अर्थ—भिलाए, शुद्धपारा, पीपर, पीपरामूल, अकरकरा, जावित्री वंगभस्म लौंग, ये समान भागले, पुराने गुडमें खरलकर एक रत्तीके अनुमान खाय तो सर्व उपदंश नष्ट होय ॥

उपदंशकुठार ।

कंकुष्टंकुष्टकंचैव तोलैकंतु पृथक्पृथक् । तोलार्धतुत्थकं ग्राह्यं
शृंगवेररसेन तु ॥ मर्दयित्वा वटीकार्यावदरास्थिमिताभिपक्व ॥
शृंगवेररसेनैव सायंप्रातश्च भक्षयेत् ॥ मधुराम्लं मत्स्यदुग्धं कू-
प्पांडं च विवर्जयेत् ॥ उपदंशकुठारो रसः सर्वत्र पूजितः ॥

अर्थ—सुदार्दरसिग, १ तोला, कूठ १ तोला, लीलाथोथा आधा तोला, सबको एकत्र कर अदरसके रसमें खरल करके बैरकी गुठलीके बराबर गौली बनावे इसमेंसे १ गोली, अदरसके रससे सायंकाल और १ गोली प्रातःकालमें देय, ऊपरसे मधुराम्ल, मंजली, दूध, पेठा ए पदार्थ खाना त्याग देय, यह उपदंश कुठाररस सर्वत्र मान्य है ॥

रसगंध कजली ।

कर्पमात्ररसंशुद्धं द्विकर्पगंधकं स्मृतम् ॥ विधिवत्कजलीं कृत्वा
तच्च गोघृतसंयुतम् ॥ मापमात्रं प्रतिदिनं दद्यादेव त्रिसप्तकम् ॥
गोधूमान्नं वृतं पथ्यं कारयेत्त्वणं विना ॥ उपदंशापहः श्रेष्ठो यो
गोमुनिभिरीरितः ॥

अर्थ—पारा १ तोला, गंधक २ तोले, दोनोंकी कजली करके १ मासे गौके घीके साथ देवे, इसप्रकार २१ दिन देवे, पथ्यमें गेहूं, और घी, विना निमकके देना चाहिये, तो यह योग उपदंशको नाशकरे, इसप्रकार मुनी-श्वरोंने कहा है ॥

चोपचीनीपाक ।

चोपचिन्ध्याभवं चूर्णं पलं द्वादशमेव च ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलं
मरिचिनागरं त्वचम् ॥ आकल्लकं लवंगं च प्रत्येकं कर्पसंमतम् ॥
शर्करासमचूर्णं च पाचयेत्सर्वमेकतः ॥ मोदकं कारयेत्तत्तु एक
कर्पप्रमाणतः ॥ सायंप्रातर्निपेयं स्तुपथ्यं पूर्वोक्तचूर्णवत् ॥
उपदंशे व्रणे कुष्ठे वातरोगे भगंदरे ॥ धातुक्षयकृते कासे प्रतिश्या
ये च पक्ष्मणि ॥ सर्वांश्च रोगान्निहंत्याशु ततः पुष्टिकरो भवेत् ॥

अर्थ—चोपचीनीका चूर्ण ४ तोले, तथा पीपल, पीपरामूल, मिरच, सोंठ, दालचीनी, अकरकरा, और लोंग, ये प्रत्येक एक एक तोले लें, और सब चूर्णके समान मिश्री मिलायके इसका पाक करे, इसमेंसे १ तोले पाक सायंकाल और प्रातःकालमें देवे, और पथ्य चोपचीनी चूर्णके समान करे, तो उपदंश, व्रण, कोठ, वादीके रोग, भगंदर, क्षय, कास, पीनस, क्षयरोग और संपूर्ण रोग इनको नाश करे, तथा देहको पुष्ट करे ॥

घालहरीतकयादियोग ।

बालपथ्यापलैकं चतुर्थं ज्ञाणमितंतथा ॥ निवद्रवेण संमर्द्य
दृढं सप्तदिनानिवै ॥ गुटिकांचणकप्रायां छायाशुष्कांतुकार

येत् ॥ शीतोदकानुपानेननित्यमेकांप्रदापयेत् ॥ घघ्नाणामे
कविंशत्यामुच्यतेतूपदंशतः ॥ शालिगोधूममुद्गाश्वगोसर्पिः
पथ्यमीरितम् ॥

अर्थ—छोटी हरड ४ तोले, लीलाथोथा आधा तोले सबको एकत्र करके नीबूके रसकी सात दिन पर्यंत भावना देवे फिर चनेके बराबर गोली बना यले और उनको छाया में सुखाय लेवे फिर इनको शीतल जलके साथ देवे, इस प्रकार २१ दिन देय तो उपदंशसे मुक्त होय इस पर भात गेहूंकी रोटी मूंग और गौका घी पथ्यमें देना ॥

जातिस्वरस ।

जातिप्रवालस्वरसंपलार्धधनोर्धृतंतत्समरालकिञ्चित् ।
पिवेत्प्रगेपंचविधोपदंशेक्षारादृतेगोधुममेवपथ्यम् ॥

अर्थ—चमेलीके पत्तोंका स्वरस २ तोले गौका घी २ तोले रार २ तोले सब को एकत्र करके प्रातःकाल देवे तो पांच प्रकारका उपदंश नष्ट होय, इस पर गेहूं (और घी) पथ्य में देना चाहिये । निमक वर्जित है ॥

पथ्य ।

अजाक्षीरंयथाजीर्णगोधूमंपथ्यमाचरेत् ।

अर्थ—उपदंश रोग वालेको जीर्ण होनेके प्रमाण बकरीका दुग्ध, गेहूं पथ्य के लिये देना उचित है ॥

अपथ्य ।

दिवानिद्रांमूत्रवेगंगुर्वन्नमैधुनंगुडम् ।

आयासमम्लंतक्रंचवर्जयेदुपदंशवान् ॥

अर्थ—दिनमें सोना, मूत्रवेग, भारी अन्न, मैधुन, गुड, परिश्रम, खट्टी वस्तु, तक (छाछ) इनको उपदंश रोगवाला मनुष्य सर्वथा वर्ज देवे ॥

शूकदोष ।

शूकदोषनिदान ।

अक्रमाच्छेषसोवृद्धियोभिवाञ्छतिमूढधीः ।

व्याधयस्तस्यजायतेदशचाष्टौचशूकजाः ॥

अर्थ—जो मन्दशुद्धिवाला पुरुष शास्त्रोक्त क्रमसे विना लिंगको मोटा करा चाहे वो विष कृमिका लिंगके ऊपर लेपादिक करे (अथवा जल योग वात्स्यायन ऋषिके कहे उनका साधन करे) उसके १८ प्रकारके शूकज रोग होय हैं ॥

शूकदोषचिकित्सा ।

हितंचसर्पिपःपानंपथ्यंचापिविरेचनम् ।

हितंशोणितमोक्षश्चशूकरोगेषुदेहिनाम् ॥

अर्थ—शूक रोगवालेको घृतपान, रेचन, तथा रक्तमोक्ष एकमें हितकारी है ॥

प्रथम लक्षण ।

उल्लिख्यसार्पपीतालपत्रेणाथप्रलेपयेत् ।

तिंदुकत्रिफलालोत्रैर्गोमूत्रपरिपोषितैः ॥

अर्थ—सार्पप नामक शूक दोषवालेको ताडपत्रसे लेखन कियाकर कुचला, हरड, वहेडा, आंवला, और लोध इनको गोमूत्रमें पीस लेप करे ॥

सर्पपिका लक्षण ।

गौरसर्पपसंस्त्यानाशूकदुर्भुङ्गहेतुका ।

पिटिकाश्लेष्मवाताभ्याञ्जियासर्पपिकाचसा ॥

अर्थ—दुष्टजलजंतूका दुष्ट रीतिसे लेप करनेसे कफवात कुपित होकर सपेद सरसोंके समान जो पिटिका (फुंसी) होय उसको सर्पपिका कहते हैं ॥

अष्टीलिका लक्षण ।

कठिनाविपमैर्भुङ्गैर्वायुनाष्टीलिकाभवेत् ॥

अर्थ—अप्रसक्त शूकोंके लेपसे वायु कुपित होकर करडी निहाईके समान पिटिका होय और विपम कहे कोई छोटी और कोई बड़ी और भुम कहे टेढे ऐसे शूक कहिये मासांकुरोंसे व्याप्त होय उसको अष्टीला कहे हैं ॥

अष्टीलिकाचिकित्सा ।

अष्टीलायांहृतेरक्तेश्लेष्मग्रंथिक्रियांचरेत् ॥

अर्थ—अष्टीलकाका प्रथम रुधिर निकाल श्लेष्मजग्रंथिरोगपर जो यत्न लिखा है वो इसपर करे ॥

प्राथित ।

शूकैर्यत्पूरितंशश्वद्भ्रथितं नामतत्कफात्

अर्थ—निरंतर शूकलेप करनेसे लिङ्गेन्द्रीके ऊपर गाँठ पैदा होय. उसको ग्रथित कहते हैं ॥

ग्रथितचिकित्सा ।

स्वेदयेद्ग्रथितं यच्च नाडीस्वेदेन बुद्धिमान् ॥

अर्थ—ग्रथित नामक शूक दोषको कुशल वैद्य नलिकासे शेरू देवे तथा ग्रणोक्त जैसा सुहाय ऐसा गरम पीडी जो ग्रणपर कही वो बाँधे ॥

कुम्भिका लक्षण ।

कुम्भिकारक्तपित्तोत्थाजां ववास्थिनिभा शुभा ॥

अर्थ—रक्तपित्तसे जामुनकी गुठलीके समान कालेरगकी पिटिका होय, उसको कुम्भिका ऐसा कहते हैं ॥

कुम्भिकाचिकित्सा ।

कुम्भिकायां हरेद्रक्तपक्वायां शोधिते त्रणे ।

तिंदुकत्रिफलालौघ्रैलेपस्तेलंचरोपयेत् ॥

अर्थ—कुम्भिका कुंशीका प्रथम रुधिर निकलवावे. यदि वह पक्गई हांय तो ग्रणशोधनी क्रिया करके फिर रुचला हरड बहेडा आंवला और लोघ इनका लेप तथा इन्ही औषधोंसे तेल सिद्ध करके लगावे ॥

अलजीके लक्षण ।

तुल्यजांत्वलजीं विद्याद्यथा प्रोक्तां विचक्षणैः ॥

अर्थ—यह पिटिका प्रमेह पिटिकामे जो अलजी नाम पिटिका कह आये है उसके समान लाल काले फोडोंसे व्याप्त होय तथा उसके लक्षण पूर्वोक्त पिटिकाकेसे होय है ॥

अलजी चिकित्सा ।

अलज्यां हृत्तरक्तायां पूर्व एव क्रियाक्रमः ॥

अर्थ—अलजीका प्रथम रुधिर निकालके पूर्वोक्त प्रमाण क्रिया करे ।

मृदित ।

मृदितं पीडितं यत्संरब्धं वातकोपतः ॥

अर्थ—शूक पीडा शंके अर्नंतर लिगको हापोसे मीडनेसे अथवा दाबनेसे वायुके कोपसे लिग सूज जाय ॥

मृद पिटिका लक्षण ।

पाणिभ्यां भृशं मृदं मृदापिटिका भवेत् ॥

अर्थ-लेप करनेके अनंतर जब लिंगमें खुजली चले तब उसको दोनों हाथोंसे खूब मुजावै, तब एक मूठ (विना मुखी) पिटिका होय उसको समूठ पिटिका कहते हैं ॥

अवमंथके लक्षण ।

दीर्घावह्वयश्चपिटिकादीर्यतेमध्यतस्तुयाः ।

सौवमंथःकफासृग्भ्यावेदनारोमहर्षकृत् ।

अर्थ-कफ रक्तसे लंबी और अनेक तथा बीच बीचमें फूटी भई ऐसी जो पिटिका लिंगमें होय उसके होनेसे रोमांच और पीडा होय इस रोगको अव मंथ ऐसे कहते हैं ॥

अवमंथ चिकित्सा ।

क्रियेयमवमंथेपिरक्तंशोध्यंयथोभयोः ॥

अर्थ-अव मंथपर रक्त शुद्धि कारक क्रिया करे ॥

पुष्करिका लक्षण ।

पित्तशोणितसंभूतापिटिकापिटिकाचिता ।

पद्मकर्णिकसंस्थानाज्ञेयापुष्करिकाचसा ॥

अर्थ-पित्त रक्तसे उत्पन्न भई पिटिका उसके चारों तरफ अनेक छोटी छोटी फुंसी होय और वो कमलके भीतरकी केसरके समान सब फुंसी होय उसको पुष्करिका ऐसे कहते हैं ॥

पुष्करिकाका यत्न ।

क्रमःपित्तविसर्पोक्तःपुष्करीमूढयोर्हितः ॥

अर्थ-पुष्करिका और मूठ पिटिका इनपर पित्त विसर्पोक्त क्रिया करे ।

स्पर्शहानिलक्षण ।

स्पर्शहानितुजनयेच्छोणितंशूकद्रूपितम् ॥

अर्थ-शूकका लेप करनेसे रुधिर द्रूपित होकर त्वचाका स्पर्श ज्ञानको नष्ट करे हैं ॥

उत्तमा ।

मुद्गमापोद्गमारक्तारक्तपित्तोद्भवाश्चयाः ।

व्याधिरेपोत्तमानामशूकाजीर्णनिमित्तजः ॥

अर्थ-शूकका वारंवार लेप करनेसे रक्तपित्त कुपित होकर मूंग उरदके समान लाल फुंसी लिङ्गेन्द्रीमें होय उसको उत्तमा कहतेहैं ये अजीर्णके कारणसे होती है ॥

चिकित्सा ।

उत्तमाख्यांतुपिटिकांसंस्वेद्यबहुशोधृतम् ।

कल्कचूर्णैःकपायैश्चक्षौद्रयुक्तैरुपाचरेत् ॥

अर्थ—उत्तमा नामक शूक दोषके खूब सेक करे फिर घृत, कल्क, चूर्ण और कपाय इनमें मद्य डालके उससे उपचार करे ॥

शतपोनक ।

छिद्रैरण्मुखैर्लिङ्गंचितंयस्यसमंतथा ।

वातशोणितजोव्याधिर्विज्ञेयःशतपोनकः ॥

अर्थ—जिस पुरुषके लिङ्गमें अनेक बारीक छिद्र होजाय यह व्याधि वात शोणितसे प्रगट इस्को शतपोनक कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

रसक्रियाविधातव्यालिखितेशतपोनके ।

पृथक्पण्यादिभिःसिद्धतैलदेयमन्तरम् ॥

अर्थ—शतपोनक नामक शूक दोषको प्रथम लेखन क्रिया करके पारद क्रिया (वा रसक्रिया) करे, फिर शालिपर्ण्यादिकसे सिद्ध करे तैलको देवे ॥

त्वक्पाक ।

वातपित्तकफोत्थस्तुत्वक्पाकोज्वरदाहवान् ॥

अर्थ—वातपित्तसे लिङ्गकी त्वचा पक जाय और उसमें ज्वर दाह होयहे ॥

त्वक्पाक. स्पर्शहानि. और मृदित ।

त्वक्पाकेस्पर्शहानौचसेचयेन्मृदितंपुनः ।

बलातैलेनकोष्णेनमधुरैश्चोपनाहयेत् ॥

अर्थ—त्वक्पाक, स्पर्शहानि, और मृदित इन शूक दोषोंको मंदोष्ण बला-तैलसे सिंचन करके मधुर औषधोंकी पिंडी बांधे ॥

शोणितार्बुद ।

कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिःपिटिकाभिर्निपीडितम् ।

यस्यवास्तुरुजाचोग्राज्ञेयंतच्छोणितार्बुदम् ॥

अर्थ—जिस पुरुषकी लिङ्गेन्द्रियके ऊपर काले लाल फोडा उत्पन्न होय तथा उनमें पीडा होय, उसको शोणितार्बुद कहते हैं ॥

मांसारुद ।

मांसदोषेणजानीयादर्वुदंमांससंभवम् ॥

अर्थ—मांस दुष्ट होनेसे मांसारुद प्रगट होय है ॥

मांस पाक लक्षण ।

शीर्यतेयस्यमांसानियस्यसर्वाश्ववेदनाः ।

विद्यात्तंमांसपाकंतुसर्वदोषकृतंभिपक् ॥

अर्थ—जिसकी इन्द्रिका मांस गल जाय और अनेक प्रकारकी पीडा होय (यह व्याधि त्रिदोषज है) इस व्याधिको मांस पाक कहते हैं ॥

विद्रधि लक्षण ।

विद्रधिसन्निपातेनयथोक्तमभिनिर्दिशेत् ।

अर्थ—विद्रधि निर्दानमें जो सन्निपात विद्रधिके लक्षण कहे हैं वोही यहाँ विद्रधि शूकके लक्षण जानने ॥

तिलकालकके लक्षण ।

कृष्णानिचित्राण्यथवाशूकानिसविपाणितु । पातितानिपचं
त्याशुमेढ्रंनिरवशेषतः ॥ कालानिभूत्वामांसानिशीर्यतेयस्य
देहिनः । सन्निपातसमुत्थांस्तुतान्विद्यात्तिलकालकान् ॥

अर्थ—काले अथवा चित्र विचित्र रंगकेसे विष शूकोंके लेप करनेसे तत्काल सर्व लिंग पक जाय तथा सब मांस तिलके सदृश काला होकर गल जाय इस त्रिदोषोत्पन्न व्याधिको तिलकालक ऐसे कहते हैं ॥

मांसारुदं मांसपाक विद्रधि तिलकालक ।

मांसारुदंमांसपाकंविद्रधितिलकालकम् ।

प्राप्ताख्येपिनकुर्वीतभिपक्तेपांप्रतिक्रियाम् ॥

अर्थ—मांसारुदं मांसपाक विद्रधि और तिलकालक इन पर प्राप्त कालमें ही वैद्योंको चिकित्सा नहीं करना अर्थात् कुछ काल ठहरकै करे ॥

तिलकालकको असाध्यत्व ।

तत्रमांसारुदंयत्तुमांसपाकस्ययःस्मृतः ॥

विद्रधिश्चनसिध्यतियेचस्युस्ति लकालकाः ॥

अर्थ—मांसारुदं मांसपाक विद्रधि और तिलकालक शूक दोष ये सिद्ध नहीं होते ॥

चिकित्सा ।

तिलकालंसमुल्लिख्यक्षुरेणलघुपाणिना ।

भिपजाथात्रकर्तव्यःसद्योव्रणविनिर्मिताः ॥

अर्थ—तिलकालक शूक दोषको वस्त्रसे झाड़ (पोंछ) कै फिर सच व्रण पर जो चिकित्सा कही वो करे ॥

पथ्य ।

छर्दिर्विरेकोध्वजमध्यनाडीवेधोजलौकापरिपातनंच ॥ सेकः
प्रलेपोयवशालयश्चधन्वामिपंसुद्ररसोधृतानि ॥ कंठिलकं
शिशुफलंपटोलंशालिंचशाकंनवमूलकंच ॥ तित्तंकपायंमधु
कूपवारितैलंचहन्यादुपदंशरोगम् ॥

अर्थ—वमन, विरेचन, लिंगके बीचकी नसका वेधना, जोंक लगाना, परि-
पातन, सींचना, प्रलेप, जौ, चावल, मरुदेशका मांस, मूंगका रस, घी, करेला,
सोंहजनैकी फली, परवर, शालि और शाक, नधौन मूली, चरपरी और कपेली
वस्तु, शहद, कुएका पानी, तेल ये सब उपदंश रोगको दूर करते हैं ॥

इति श्रीवृहत्संहिताकारे शूकदोषस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

त्वग्दोष (कुष्ठ) रोग ।

कुष्ठ रोगका कर्मविपाक ।

परुषंभापतेत्यर्थसत्त्वक्रदोपयुतोभवेत् ॥ चांद्रायणत्रयंकु
र्यात् प्रदद्यादोपधानिच ॥ वैद्यकोक्तानिविप्रायशक्त्यात्रा
ह्नणभोजनम् ॥

अर्थ—जो प्राणी किसीसे कठोर बोले है उसके कुष्ठ रोग होय हे उसको इस
दुष्टरोगके नाश करनेको तीन चांद्रायण करे और ब्राह्मणोंको भोजन करावे
तथा यथाशक्ती वैद्यक शास्त्रमें कही हुई औषध रोगी ब्राह्मणको देवे ॥

दुर्धर्महर ।

गुरुतल्पगदोपाच्चगविमैथुनदोषतः ॥ दुश्चर्मास्यादसौकृत्वा
औषधाद्युपचारकम् ॥ चांद्रायणत्रयंकुर्यात्ततोदोपात्प्रमुच्यते ॥

अर्थ—गुरुस्त्रीसे अथवा गोसें गमन करे उसकें कुष्ठ रोग होय है उसको इस व्याधिके नाश करनेको तीन चांद्रायण करने चाहिये, तो कुष्ठ दोषकारक पापसे मुक्त होय ॥

कुष्ठनिदान ।

विरोधीन्यन्नपानानिद्रवस्निग्धंगुरूणिच । भजतामागतांछीर्दिवे
गांश्चान्यान्प्रतिघ्नताम् । व्यायाममतिसंतापमतिभुक्त्वानिपे
विणाम् । शीतोष्णलंघनाहारान्क्रमंसुक्कानिपेविणाम् । वर्म
श्रमभयार्तानांद्रुतंशीतांबुसेविनाम् । अजीर्णाध्यशनानांचपं
चकर्मापचारिणाम् । नवान्नदधिमत्स्यानिलवणाम्लनिपेविणा
म् । मापमूलकपिष्टान्नतिलक्षीरगुडाशिनाम् । व्यवायंचाप्य
जीर्णेत्रेनिद्रांचभजतांदिवा । विप्रान्गुरून्धर्षयतांपापंकर्मचकु
र्वताम् । वातादयस्त्रयोदुष्टास्त्वग्रत्तंमांसमंबुच । द्रूपयंतिसकु
ष्ठानांसप्तकोद्रव्यसंग्रहः । अतःकुष्ठानिजायंतेसप्तचैकादशैवच ॥

अर्थ—विरोधी कहिये क्षीर मत्स्यादि, पतले, स्नेह युक्त, भारी ऐसे अन्न पानके सेवन करनेसे, रद्दके वेगको रोकनेसे और अन्य वेग कहिये मलमूत्रादि वेगोंके रोकनेसे, भोजन कर्के अत्यंत व्यायाम (दंड कसरत) अथवा अति संताप (सूर्यका ताप) सहनेसे, शीत, गरमी, लंघन, और आहार इनके सेवन उक्त क्रम छोड़कर सेवन करनेसे, पसीना, श्रम और भय इनसे पीडित होय और उसी समय शीतल जल पीवे इस कारणसे अजीर्ण अन्न भक्षण करनेसे तथा भोजनके ऊपर भोजन करनेसे, वमन, विरेचन, निरुहण, अनुचासन, नस्य कर्म इन पंच कर्मके करते समय अपथ्य करनेसे, नया अन्न, दही, मछली, खारी, खट्टा, पदार्थके सेवन करनेसे, उडद, मूरी, मिष्ठान्न (लाडु, खजला, फेनी आदि) तिल, दूध, गुड, इनके खानेसे अन्नके पचे विना स्त्री संग करनेसे तथा दिनमें सोनेसे, ब्राह्मण, गुरु इनका तिरस्कार करनेसे पाप कर्मके आचरण करनेसे ऐसे पुरुषोंके वातादिक तीनों दोष, त्वचा, रुधिर, मांस और जल इनको दुष्ट कर कुष्ठ रोग (कोढ़) उत्पन्न करे कुष्ठ होनेके वातादि तीनों दोष और त्वचादि दूष्य, ये सात पदार्थ अवश्य कारणभूत हैं इनसे ही अठारह प्रकारके कुष्ठ होते हैं तिनमें सात महा कुष्ठ और ग्यारह क्षुद्र कुष्ठ हैं ॥

कुष्ठोंको त्रिदोषजत्व होनेसे दोषाधिक्य करके वो सात प्रकारके होते हैं ।

कुष्ठानिसप्तधादोषैःपृथक्द्वन्द्वैःसमागतैः ।

सर्वेष्वपित्रिदोषेषुव्यपदेशोधिकंत्वतः ॥

अर्थ-पृथक्पृथक् दोषों करके ३, द्वंद्वज ३ और सन्निपातसे १ सब मिलाकर सात कुष्ठ भये सब कुष्ठ त्रिदोष होने पर भी जो दोष अधिक होय उसीसे व्यवहार करना चाहिये अर्थात् जिस दोषके लक्षण मिलें उसको उसी दोषका कुष्ठ जानना जैसे “ वातेन कुष्ठं कापालं ” अर्थात् वाताधिक्य होनेसे कापाल कुष्ठ होय है ॥

कुष्ठके पूर्वरूप ।

अतिशुष्णखरस्पर्शस्वेदास्वेदविवर्णता । दाहःकण्डूत्वचिस्वा
पस्तोदःकोष्ठोन्नतिःकुमः । व्रणानामधिकंशूलंशीघ्रोत्पत्तिश्चि
रस्थितिः । रूढानामपिरूक्षत्वंनिमित्तेल्पेपिकोपनम् । रोमह
र्षोसृजःकाष्ण्यैकुष्ठलक्षणमग्रजम् ॥

अर्थ-जिस ठिकाने कुष्ठ होनहार होय उस जगह हाथोंसे चिकना मालूम होय, अथवा खरदरा मालूम होय, उस ठिकाने पसीना आवे अथवा नहीं आवे तथ- उस ठिकानेका वर्ण पलट जाय, दाह होय, खुजली चले, त्वचाको स्पर्शमा लूम न होय, नोचने कीसी पीडा होय, विपैल मास्कीके काटनेके सदृश चकत्ता उठे, परिश्रम करे विना देहमें श्रम होय, व्रणमें पीडा अधिक होय, उन फोड़ोंकी उत्पत्ति शीघ्र होकर बहुत दिवस पर्यंत रहे, जब फोड़ा भरनेको होय, तब रूखेरहे, उन्का थोडे निमित्त होनेसे कोप होय, रोमांच होय, और रुधिर काला पडजाय, ये कुष्ठ होनेके पूर्वरूप होते हैं ॥

कपाल कुष्ठ ।

कृष्णारुणकपालाभयद्रूक्षंपरुपंतनु ।

कपालंतोदबहुलंतत्कुष्ठंविपमंस्मृतम् ॥

अर्थ-कापाल कुष्ठ जो काले तथा लाल, खीपडाके सदृश, लंबे, फोरे, पतले, ऐसे त्वचावाले तथा नोचनेकीसी पीडा युक्त होय वे दुश्चिकित्स्य हैं अर्थात् वे चिकित्सा करनेमें कठिन हैं उसको कपाल कुष्ठ कहतेहैं ॥

बेह्लादिलेप ।

बेह्लव्योपवराब्दाग्निविपोआगुडतुल्यकः ।

लेपात्कुष्ठादिकान्घ्रंतित्रिवारंसकपालिकान् ॥

अर्थ—वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा आंवला, नागरमोथा चित्रक, विष, वच, और गुड, इनको समान मागले पीसके इसका तीन बार लेप करेता कपालिक कुष्ठ सहित संपूर्ण कुष्ठादि रोगोंको नाशकरे ॥

औदुंबर कुष्ठ ।

रुग्दाहरागकंडूभिःपरीतलोमपिंजरम् ।

उदुंबरफलाभासंकुष्ठमौदुंबरवदेत् ॥

अर्थ—औदुंबर कुष्ठ यह शूल, दाह, लाल और खुजली इन्से व्याप्त होय; इसमें बाल कपिल वर्णके होय तथा ये गूलर फलके समान होय है ॥

मंडल कुष्ठ ।

श्वेतरक्तस्थिरस्त्यानंस्निग्धमुत्सन्नमंडलम् ।

कृच्छमन्येनसंयुक्तंकुष्ठमंडलमुच्यते ॥

अर्थ—मंडल कुष्ठ सपेद, लाल, कठिन, गीला, चिकना, जिस्का आकार मंडलके सदृश होय तथा एक दूसरेसे मिलाहोय, ऐसा यह मंडल कुष्ठ कष्टसाध्य है ॥

चित्रकादि लेप ।

मंडलानिचघृष्ट्वाथचित्रकेनप्रलेपयेत् ।

ततोवातारिबीजैश्चलेपोमंडलकुष्ठनुत् ॥

अर्थ—मंडल कुष्ठको घिसकर चित्रकका लेप करे फिर निर्गुंडीके बीजोंका लेप करे तो मंडल कुष्ठको नाश करे ॥

ऋक्षजिह्व ।

कर्कशंरक्तपर्यंतमंतःश्यावंसपेदनम् ॥

यदृष्यजिह्वासंस्थानमृक्षजिह्वंतदुच्यते ॥

अर्थ—ऋक्षजिह्व कुष्ठ कठोर, अंतविषे लाल होय, बीचमें काला होय; पीडाकरे, तथा रीछकी जीभके समान होय है ॥

पुंडरीक कुष्ठ ।

सश्वेतरक्तपर्यंतपुंडरीकदलोपम् ॥

सोत्सेधंचसरांगंचपुंडरीकंप्रचक्षते ॥

अर्थ—पुंडरीक कुष्ठ—जो कुष्ठ पुंडरीक (कमल) पत्रके समान सपेद होय, और उसके अंतभाग लाल होय, यत्किञ्चित् ऊंचा निकल आवे और मध्यमें थोडा लाल होय है ॥

विजयेश्वर रस ।

शुद्धतालंमृतंसूतंतुल्यंताभ्यांचतुर्गुणम् ॥ भर्जित्वाविजया
योज्यासर्वतुल्यंगुडंक्षिपेत् ॥ श्वेतकुष्ठहरंनिष्करसोयंविजयेश्व
रः ॥ दावीखदिरनिवानांकाथंतमनुपाययेत् ॥

अर्थ—शुद्ध हरताल, पारकी भस्म ये समान भाग लेवे, इन दोनोंसे चौगुनी भुनी हुई भाग लेवे और सबके बराबर गुड मिलावे सबको एकत्र खरलकरके चार चार मासेकी गोली बनावे, इसके सेवन करनेसे सपेद कुष्ठको दूर करे इसको विजयेश्वर रस कहते है, इसपर दारुहलदी, कल्पा, नीमकी छाल इनका काटा पीवे ॥

भृंगराजादि लेप ।

भृंगराजहरीतक्योर्मूलमंतःपुटंदहेत् ।
आरनालेनतल्लेपाच्छ्वेतकुष्ठविनाशनम् ॥

अर्थ—भांगरा, हरड, पोहकरमूल इनका पुटपाक कर कौंजीमें खरलकर लेप करे तो यह सपेद कुष्ठको नाश करे ॥

सिध्मकुष्ठ ।

श्वेतंताप्रंचतनुयद्रजोघृष्टंविमुंचति ।
प्रायेणोरसितत्सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् ॥

अर्थ—सिध्मकुष्ठ सपेद, लाल, पतला, छजानेसे भूसीसी उडे, यह विशेष करके छातीमें होय है और घीयाके फूलके आकारका होय है ॥

लाक्षादि लेप ।

लाक्षाश्रीवेष्टकंकुष्ठंहरिद्रागौरसर्पपाः ॥ व्योषंमूलकबीजानि
प्रपुन्नाटफलानिच ॥ एतान्यत्रप्रष्टणानिकुष्ठेषूद्धर्तनंपरम् ।
सिध्मानांकिटिभानांचदद्रूणांचविशेषतः ॥

अर्थ—लाख, श्रीवेष्ट, कूठ, हलदी, सपेद सरसों, सोंठ, मिरच, पीपल मूलाक बीज, पमारके बीज ये सब समान भाग लेवे, चूर्ण करके इसका कुष्ठविभूति किटिभ कुष्ठ और खाज इन पर लेप करना उत्तम है ॥

कार्पासादि लेप ।

कार्पासिकापत्रविमिश्रकाकजंघाकृतोमूलकबीजयुक्तः ।

तक्रेणलेपःक्षितिपुत्रवारेसिध्मानिसद्योनयतिप्रणाशम् ॥

अर्थ—कपासके पत्ते काकजंघा और मूलीके बीज ये पदार्थ समान भागले छालमें पीस मंगलवारके दिन लेप करे तो विभूत (वनरफ)को नाशकरे ॥
सिध्म पर लेप ।

गोमूत्रेणाथतक्रेणजीर्णसौवीरकेणच ।

पिष्टमूलकबीजानालेपनात्सिध्मनाशनम् ॥

अर्थ—मूली के बीजों का चूर्ण गोमूत्र में छाल में अथवा कांजी में मिलायके लेप करे तो विभूतका नाश होय ॥
गंधकादि लेप ।

गंधकःसयवक्षारःसिध्महृत्तोयलेपतः ।

आहित्वकूपयसापिष्टालेपस्त्वक्कीलकापहः ।

अर्थ—गंधक, जवाखार इनको जलमें पीस लेप करे तो सिध्मका नाश करे और सांपकी कांचलीको पानीमें खरल कर लेप करे तो चामखील को नाश करे ॥

तालकादि लेप ।

तालकाद्दिगुणगंधवाकूचीगोजलादितम् ।

सिध्मंप्रलेपनादाशुहंतिमासप्रयोगतः ॥

अर्थ—हरताल १ गंधक २ बावची ३ भाग ले गोमूत्रमें पीस १ महीने लेप करे तो विभूतका नाश होय ॥

रसादि लेप ।

रसोपणंसैध्वंचविडंगंचामृतारसः ।

कांजिकेनविमर्द्याथलेपः सिध्मविनाशनः ॥

अर्थ—पारा, मिरच, सैधानिमक, धायविडंग गिलोयका रस इन सबको कांजीमें पीस लेप करे तो विभूतको नष्ट करे ॥

धात्र्यादिलेप ।

धात्रीफलंसंजंरसोयावशुकस्त्वदंत्रयम् ।

सौवीरपेपितंसर्वसिध्ममूलविदारणम् ॥

अर्थ—आँवले; राल, जवाखार, इन तीनों पदार्थोंको कांजीमें पीस लेप करे तो सिध्म (विभूत) को जडमुद्गा नाश करे ॥

प्रकारांतर ।

शिखरीरसेणपिष्टकमूलकबीजंप्रलेपतः सिध्मम् ।

क्षारेणकदल्यावारजनीमिश्रेणनाशयति ॥

अर्थ—कूठ, मूलीके बीज, फूलप्रियंगु, सपेद सरसों, धमासो, और नाग-केशर, इनका चूर्ण करके लेप करे तो बहुत दिनकी सिध्मको नाश करे ॥

गंधकादि लेप ।

गंधपापाणमिश्रेणयवक्षारेणलेपितम् ।

सिध्मनाशमुपैत्याशुकटुतैलयुतेनच ॥

अर्थ—गंधक, जवाखार, इनका चूर्णकर सरसोंके तेलमें भिगोयके लेप करे तो शीघ्र विभूतका नाश होय ॥

कासमर्दादिलेप ।

कासमर्दकबीजानिमूलकानांतथैवच ।

गंधपापाणमिश्राणिसिध्मानांपरमौषधम् ॥

अर्थ—कसोंदीके बीज मूलीके बीज और गंधक इनका लेप विभूतपर बड़ी भारी औषध है ॥

मूलकबीजादि लेप ।

बीजंमूलकजनिंवपत्राणिसितसर्पपाः । गृहधूमंचसंपिड्वाजले

नांगंप्रलेपयेत् ॥ उद्धर्तनवनीतेनक्षालयेदुष्णवारिणा । त्र्यहा

दनेनसिध्मानिशात्म्यंत्याशुशरीरिणाम् ॥

अर्थ—मूलीके बीज, नीमके पत्ते, सपेद सरसों, घरका धूँआ, ये पदार्थ जलमें पीस, देहमें लेप करे, फिर देहमें मक्खन लगाय गरम जलसे अच्छी रीतिसे धोय डाले, इस प्रकार तीन दिन करे तो मनुष्योंकी विभूति शीघ्र नाश होय ॥

कांकणरुष्ट ।

यत्काकणंतिकावर्णसपाकंतीत्रवेदनम् ।

त्रिद्रोपलिंगंतत्कुष्ठंकाकणनैवसिद्धयति ॥

अर्थ—काकणकुष्ठ जो चिरमिट्टीके समान लाल, अर्थात् बीचमें काला होय और ओरपास लाल होय, अथवा बीचमें लाल होय, और ओरपास काला होय किंचित् पका, तीव्र पीडायुक्त, जिस्में तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हों यह कुष्ठ अच्छा नहीं होय ॥

चर्मकुष्ठ (गजकर्ण) .

अस्वेदनंमहावास्तुयन्मत्स्यशकलोपमम् ।

तदेवकुष्ठं चर्मख्यं बहलं हास्तिचर्मवत् ॥

अर्थ—चर्मकुष्ठ पसीना रहित, मोठी जगे व्यापनेवाला, मछलीकी त्वचा समान अर्थात् अन्नकके पत्र समान गोल, गोल होय और जिस्का चर्म हाथीके चर्म समान मोटा और कठोर होय, उसको चर्मकुष्ठ कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

सूतगंधकयोः पिष्ट्वाकजलीसुविधाय च । मृक्षणेन विमर्द्याथ
करित्वग्लेपनं हितम् ॥ कवावगैरीगदतुत्थजीरवल्लीभवंकर्प
मिदं पृथक्पृथक् । शिलावलीतोरविकर्पसंख्यौसार्धौविभागः
किलपारदस्य ॥ कर्पैश्चविंशत्प्रमितैर्घृतस्य सर्वविमर्द्याथ
लताम्रपात्रे । ततो ग्लेपात्रिदिनंचतीव्राहरेच्चरोगीगजकर्णपामाम् ॥

अर्थ—पारे गंधककी कजली कर उसमें मक्खन डालके खरल करे और लगावे तो हितकारी होय । अथवा कवावचीनी, गेरू, कूठ, लीलायोथा जीरा कालीमिरच ये प्रत्येक एक २ तोले और मनसिल गंधक ये वारह २ तोले और पारा १२ तोले और घी २० तोले डालके ताँबेके पात्रमें खरल करे इसका तीनदिन लेप करे तो तीव्रगजचर्म (गजकर्ण) और खजली दूर होय ॥

चर्म कुष्ठ ।

गुंजाचित्रकशंखभस्मरजनीदूर्वाभयालांगलीसुक्सासिंधूत्थकुमा
रिकाजलधराकक्षीरधूमेशजैः । वल्गूएडगजाविडंगमारिचक्षौद्रै
श्वखारीयुतैः कार्यवैगजचर्मदद्गुरकसाकण्डूयमुद्गर्तनम् ॥

अर्थ—धूंधची चित्रक शंखभस्म, हलदी दूब हरड कल्यारी धूर सेधानिमक, धीगुषार, नागरमोथा, आकका दूध, धरका धूआँ, पारा, वावची, पवारके बीज, वायविडंग, मिरच, इनको सहतमें घोटकर देहमें लगानेको देवे तो गजचर्म, दाद, और खजली इनको नाश करे ॥

किटिभ कुष्ठ ।

श्यावंकिणखरस्पर्शीपरुपंकिटिभंस्मृतम् ॥

अर्थ—किटिभ कुष्ठ नील वर्ण, व्रणकी चटके समान कठोर स्पर्श मालूम होय और परुप कहिये रूक्ष होय ॥

किटिभ पर वज्रपाणिर्स ।

शुद्धसूतंमृतंचाभ्रमृतंताभ्रंसमंसमम् । मर्दयेद्वाकुचीतैलेयामै
कंकृतगोलकम् । द्विगुणेपाचयेद्गंधेसतैलेलोहपात्रके । गंधते
लेविजीर्णेतुतद्रालांशंमृतायसम् । पंचांगनिवसंयुक्तमधुनागो
लकीकृतम् । निष्कैकंकिटिभंहंतिवज्रपाणिर्महारसः ॥

अर्थ—शुद्ध पारा, अभ्रक भस्म ये समान भाग लेवे, सबको वावचीके तेलमें १ प्रहर पर्यंत खरल करके गोला बनावे, इसको लोहेके पात्रमें दुगनी गंधक और तेल डालके पक करे, यह तेल गंधक जल जानेपर शेष गोलेको निकाल उसकी बराबर लोहभस्म डाल दोनोंको नीमके पंचांग और सहत इनके साथ खरल कर गोलाकर चार २ मासेकी गोली बनावे, १ गोली नित्य खाय तो कटिभ कुष्ठको नाश करे, इसको वज्रपाणि महारस कहते है ॥

कटिभ पर चक्रांकादि लेप ।

चक्रांकवीजंसुकक्षीरभावितंमूत्रसंयुक्तम् ।

रविवेतसकंदंचलेपनंकिटिभापहम् ॥

अर्थ—सुदर्शनाके बीजोंका चूर्ण कर उसमें आकके दूधकी भावना देवे, तथा आक-वेतकंद इनका काढा ये समान भाग ले, एकत्र खरल कर गोमूत्रमें मिलायके लेप करे, तो कटिभ कुष्ठको नाश करे ॥

कटिभपर पिप्पल्यादि लेप ।

पिप्पलीपूतिकायस्थाकुष्ठगोपित्तचित्रकैः ।

लेपंसम्यक्प्रशंसंतिकटिभघ्नंचिकित्सकाः ॥

अर्थ—पीपल, करंज, तुलसी, कूठ, गौकापित्ता, और चित्रक, इनका लेप करे इसकी उत्तमताको वैद्य लोग प्रशंसा करते है यह कटिभ नाश करनेमें परमोत्तम है ॥

तृतीय लेप ।

गोमूत्रवारिसंपिष्टैःशिलाकासीसतुत्थकैः ।

लेपःकिटिभवीसर्पकुष्ठनाशायपूजितः ॥

अर्थ-मनसिल, हिराकसीस और लीलाथोथा, इनको गोमूत्रमें पीसकैलेप करे तो किटिभ विसर्प और सर्व कुष्ठ इनको नाश करनेमें परमोत्तम है ॥

वैपादिक कुष्ठ ।

वैपादिकं पाणिपादस्फोटनं तीव्रवेदनम् ।

अर्थ-वैपादिक जिसमें हाथकी हथेली और पैरके तरवा फटजाय और पीडा बहुत होय इस विपादिकको विवाई नहीं जानना क्यों कि विवाई केवल पैरमें ही होती है, और विवाईको शास्त्रमें पाददारी कहते हैं और विपादिकमें हाथ पैरोंमें फुंसी श्यामरंगकी होय हैं और वे फुंसी चुचाती तथा खुजाती है, इसीसे पाददारी भिन्न और विपादिका भिन्न हैं ॥

धतूरतैल ।

धतूरबीजकल्केनमाणकक्षारवारिणा ।

कटुतैलं विपकंतद्भुतंहन्याद्विपादिकाम् ॥

अर्थ-धतूरके बीज, और सैधानिकम, इनको जसमें कल्क करके सरसोंके तैलमें पचावे यह विपादिकाको शीघ्र नाश करे ॥

मुंडीघृत ।

मुंडीरसेनसंसिद्धं घृतं हंति विपादिकाम् ।

अर्थ-मुंडीके रसमें घृत सिद्ध करे यह विपादिकाका नाश करे ॥

विपादिका तथा विचर्चिका ।

दोषः प्रदूष्यत्वङ्मांसपाणिपादंसमाश्रितः । पिडिकां जनय
त्याशुदाहकं डूसमान्वितां ॥ दह्यते त्वक्शिरारूक्षापाणे ज्ञेया विच
र्चिका । पदे विपादिका ज्ञेया स्थानान्यत्वाद् विचर्चिका ॥

अर्थ-हाथ पावोंको आश्रित हुआ दोष त्वचामांसको दूषित करके शीघ्र पिडिका उत्पन्न करता है और तिन पिडिकाओंमें दाह कटू (खाज) पैदा करता है त्वचामें दाह होजाता है शिरा (नाडी) रुक्ष होजाती है तिन पिडिकाओंके नामोंमें इतना भेद है कि हाथोंमें होंवें तो विचर्चिका कहनी और पावोंमें होंवें तो विपादिका (विवाई) कहनी और अन्य स्थानोंमें होने वाली भी विचर्चिका कहनी ॥

द्वंद्व और सन्निपातजन्य कुष्ठ ।

कफात्क्लेदियनं स्निग्धंसकं डूरीत्यगौरवम् ।

अर्थ—कफसे उत्पन्न हुआ कुष्ठ गीला, करडा, चिकना, कंडूवाला, ठंडा, भारी ऐसा होता है ॥

द्विलिंगंद्रजंकुष्टत्रिलिंगसन्निपातिकम् ॥

अर्थ—और दो दोषोंसे उत्पन्न होनेवाला कुष्ठ तिन दो दोषोंके लक्षणोंवाला होता है और सन्निपातसे उत्पन्न होनेवाला कुष्ठ तीन दोषोंके लक्षणोंवाला होता है ॥

अलस कुष्ठ ।

कंडूमद्भिःसरागैश्वगंडैरलसकंचितम् ॥

अर्थ—अलस कुष्ठ इस कुष्ठमें पीडा बहुत होय और जिसमें पिडिका पित्तीके समान बहुत होय, और लाल होय, इसमें बहुतसे मूर्ख वैद्य पित्तीका शंका करते हैं ॥

दद्रुमंडल कुष्ठ ।

सकंडूरागपिटिकंदद्रुमंडलमुद्गतम् ॥

अर्थ—दद्रुमंडल कुष्ठ इसमें खुजली होय, लाल होय, और फोडा होय और ये ऊंचे उठ आवें, मंडलके आकार गोल उत्पन्न होय, इसीसे इसको दद्रुमण्डल कहते हैं ॥

मूलर बीजादि लेप ।

**बीजानिवामूलकसर्पपाणांलाक्षारजन्यौप्रपुनाटबीजम् । श्री
वेष्टकव्योपविडंगतुल्यंपिष्ट्वाजमूत्रेणविलेपनंस्यात् । दद्रूणि
सिध्मान्किटिभानिपामांकपालकुष्टंविपमंचहन्त्यात् ॥**

अर्थ—मूलीके बीज, सरसों, लाख, दारुहलदी, हलदी, पवारके बीज, श्रीवेष्टक, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग ये समान भाग लें, सबको बकरेके मूत्रमें पीसके लेप करे तो दाद, सिध्म, किटिभ, खुजली और कपाल कुष्ठ ये सब नष्ट होय ॥

आरग्वधदलादिलेप ।

आरग्वधदलैःपिष्टैर्लेपःकांजिकयुक्कृतः ।

करित्वक्दद्रुकुष्ठानिहंतिपामांविचर्चिकाम् ॥

तासके पत्तोंको पीस कांजीमे मिलाय लेप करे तो गजचर्म खुजली, विचर्चिका इनको नाश करे ॥

चर्मदलकुष्ठ ।,

रक्तसशूलकंडूमत्स्फोटयदलयत्यपिः ।
तच्चर्मदलमाख्यातमस्पर्शासहमुच्यते ॥

अर्थ—चर्मदल कुष्ठ यह लाल हो, शूलयुक्त, खुजलीयुक्त, फोड़ोंसे व्याप्त होकर फूट जाय इसमें हाथ लगानेसे सहा न जाय, इसमें त्वचा फट जाय ॥

राजिकादिलेप ।

राजिकागुडयुक्तेनसैंधवेनप्रलेपितम् ।
विजलंचर्मणावद्धं नाशंचर्मदलं व्रजेत् ॥

अर्थ—राई, गुड और सैंधानिमक इनको विना पानीके पीस लेप करे और ऊपरसे चमड़ेसे बांध देवे, तो चर्मदल कुष्ठको नाश करे ॥

तालकभस्म ।

अपामार्गस्यभस्मंतुघटेनिक्षिप्यन्नतः । तन्मध्येतालकंक्षि
त्वापचेद्वादशयामकम् ॥ धवलंजायतेभस्मसर्वकुष्ठनिवार
णम् ॥ सर्ववातप्रशमनं सर्वरोगनिवारणम् ॥

अर्थ—ओंगाकी भस्मको हांडीमें भर उसमें हरतालको बीचमें रख बारह प्रहर अग्नी देवे, तो सपेद रंगकी भस्म होय, यह संपूर्ण कुष्ठ सर्व वादीके रोग, और संपूर्ण रोगोंको निवारण करे ॥

कासमर्दादि-लेप ।

कासमर्दकमूलानिसौवीरेणतुपेपयेत् ।
दद्रुकिटिभकुष्ठानिजयेत्तत्तत्प्रलेपनात् ॥

अर्थ—कसोंदीकी जड़को कांजीमें पीस लेप करे तो दद्रु, किटिभ, तथा अन्य कुष्ठोंको नाश करे ॥

दद्रुपरप्रपुत्राटादि लेप ।

प्रपुंनटास्यबीजानिधात्रीत्तर्जरसःस्तुही ।
सौवीरपिष्टद्रूणामेतदुद्धर्तनंपरम् ॥

अर्थ—पवारके बीज, आंबले, राल, शूहरका दूध, इनको कांजीमें पीसके इसका दाद पर लेप करे तो दाद दूर होय ॥

दूर्वादि लेप ।

दूर्वाभयासैधवचक्रमर्दकुठेरकाकांजिकतक्रपिष्टाः ।

त्रिभिःप्रलेपैरपिवद्धमूलांदद्रुंचकंडूंचविनाशयंति ॥

अर्थ—दूव, हरड, सैधानिमक, पवारके बीज, आंवला, और कांजी, इनको एकत्र पीसके इसके तीन लेपसे बद्धमूल दाद और खुजली इनको नाशकरे ॥
विडंगादि लेप ।

विडंगैडगजाकुष्ठनिशासिंधूत्थसर्पपैः ।

धान्याम्लपिष्टैर्लेपोयंदद्रुकुष्ठविनाशनः ॥

अर्थ—वायविडंग, पवारके बीज, कुठ, सैधानिमक, सरसों, और धनिया, इनको धानकी खटाईमें पीसके, लेप करे तो दाद और कुष्ठ इनको नाशकरे ॥
लघु मारीचादि तेल ।

मरीचालसिलाचार्कपयोश्वारिजटात्रिवृत् । सकृद्रसविशाला

रुद्धनिशायुग्दारुचंदनैः । कटुतैलंपचेत्प्रस्थंक्षोविपपलान्वि

ते । सगोमूत्रंतदभ्यंगाद्द्रुश्चित्रविनाशकृत् ॥

अर्थ—मिरच, हरताल, मनसिल, नागरमोथा, आकका दूध कनेरकी जड़, निसोय, गोवरका रस, इन्द्रायन कुठ, हलदी, दारुहलदी, देवदारु, चंदन ये समान भागले इनका कल्क करे, इसमें सरसोंका तेल ६४ तोले, और सिंगिया विपचार तोले, तथा गोमूत्र डालके पचावे, इस तैलकी मालिस करेतो दाद, कौड, इनको नाश करे, इसे लघु मारीचादि तैल कहते हैं ॥

दरदादिलेप ।

दरदगंधकपारदपिप्पलीविपविडंगानिशाग्रिमरोचकम् ॥ अ

भयशुंठिघनाब्धिकवाकूचीकटुनृपद्रुममेडगजान्वितम् ॥ सम

मिदंखलुनिंवरसैर्युतंहरतिदद्रुजकंडुविसर्पकान् ॥ हरतिलूत

भगंदरमंडलंतनुविलिप्तमहोक्षणतोत्रुणाम् ॥

अर्थ—हींगलू, गंधक, पारा, पीपल, सिंगियाविप, वायविडंग, हलदी, चित्रक, मिरच, हरड, सोंठ, नागरमोथा, समुद्रफेन, वावची, कुटकी, अमल-तास, पमारके बीज ये पदार्थ समान भागले, इनको नीमके रसमें खरल करे, इसका लेप करनेसे दाद, खुजली, विसर्प, लूता भगंदर, मंडल कुष्ठ इनको क्षणमात्रमें नाश करे ॥

सर्वकुष्ठोपर रसादियोग ।

रसगंधकहेमंचसाभ्रकंकटतैलतः ॥

मर्दितमर्दनात्तस्यकुष्ठजातंविनश्यति ॥

अर्थ-पारा, गंधक, नागकेशर, अभ्रक, इनको सरसोके तैलमें खरल करके देहमें लगावे और मालिस करे तो संपूर्ण कुष्ठोंका नाश होय ॥

मनःशिलादि तथा करंजादिलेप ।

मनशिलालंमरिचानितैलमार्कपयःकुष्ठहरःप्रसिद्धः ॥

करंजवीजैडगजंसकुष्ठंगोमूत्रपिष्टंचवरःप्रदेहः ॥

अर्थ-मनसिल, हरताल, मिरच, तैल आफका दूध इन सबका लेप कुष्ठनाशक है, और कंजेके बीज पमारके बीज, कूठ इनको गोमूत्रमें बारीक पीस लेप करे यह कुष्ठ पर उत्तम कहा है ॥

करपीरादितैल ।

शुकुस्यकरवीरस्यरसोवेष्टंचचित्रकम् ॥

एभिःसुपाचितंतैलमभ्यंगात्कुष्ठजातिनुम् ॥

अर्थ-सपेद क्नेरका रस वायविडंग, चित्रक, इनको तैलमें डालके औंदावे जब केवल तैल मात्र रहे तब उतार छानके मालिस करे तो कुष्ठजातिको नष्ट करे ॥

वराट्टिचूर्ण ।

वरावेष्टकणाचूर्णलीढंसन्माक्षिकैःसदा ॥

हंतिकुष्ठान्कृमीन्मेहान्नाडीव्रणभगंदरान् ॥

अर्थ-त्रिफला, वायविडंग, पीपल, इनके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो कुष्ठ, कृमि, प्रमेह, नाडीव्रण, भगंदर, इनको नाश करे ॥

रसादिलेप ।

रसगंधकयोःपिष्टंकटुतैलेनभृंगजैः ।

द्रवैःसंमद्यतल्लेपात्सर्वकुष्ठंविनश्यति ॥

अर्थ-पारा, गंधक, दोनोंकी कजलीको सरसोके तैलसे खरल करे, फिर भांगरेके रसमें खरलकर इसका लेप करे तो सर्वकुष्ठोंका नाश करे ॥

सिंदुरादि लेप व अर्कतैल ।

सिंदुरगुगुलुरसांजनसिक्वतुत्थैः कल्कीकृतैःकटुकतैलमिदं

सुपकम् । कच्छंस्त्रवत्पिटिकजामथवापिशुष्कामभ्यंजनेनसकृ
दुद्धरतिप्रसह्य ॥

अर्थ-सिंदूर, गूगल, रसोत, मोम, लीलायोथा इनका कल्क करके सर-
सोंके तेल डालके पचावे, इसका लेप करे तो कच्छू खाव होनेवाले फुंसी
तथा शुष्क फुंसी इनको हठपूर्वक नाश करे ॥ सरसोंका तेल, हलदीका
कल्क, और आकके पत्तोंका रस इनको एकत्र करके लगावे तो शीघ्र
पामा (खुजली) कच्छू और विचर्चिका इनका नाश करे ॥

विस्फोटक कुष्ठ ।

स्फोटाःश्यावारुणाभासाविस्फोटाःस्युस्तनुत्वचः ।

अर्थ-विस्फोटक जो फोडा काले वा लाल रंगके होय और जिन्की त्वचा
पतली होय उसको विस्फोटक कहते हैं ॥

कच्छुकुष्ठ ।

सर्वस्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेताज्ञेयापाण्योःकच्छुरुग्रास्त्रिजोश्च ॥

अर्थ-कच्छुकुष्ठ वोही पामा मोटे फोडों करके तथा तीव्र दाहयुक्त होय
र हाथोंमें होय, उसको कच्छू कहते हैं ॥

सिंदूरजीरद्वयरात्रियुग्ममनःशिलावल्लिजगंधकानाम् ।

रसान्वितानांघृतयोजितानांमामात्रजेद्दूरतरत्रिलेपात् ॥

अर्थ-सिंदूर, जीरा, कालाजीरा, हलदी, दारुहलदी, मनसिल, कालीमि-
रच, गंधक और पारा इनको घीमें खरल करे, इसका तीनवार, लेप करनेसे
खाज दूर होय ॥ सेंधानिमक, पमारकेबीज, सरसों, पीपल, इनका चूर्ण कर
काजीमें पीस लेप करे तो पामा और खुजली इनको नाश करे ॥

जीरकतैल ।

जीरकस्यपलंपिष्ट्वासिंदुरार्धपलंतथा । कटुतैलंपचेदाभ्यांसद्यः

पामाहरंपरम् ॥ वृद्धवैद्योपदेशेनपाच्यंतैलंपलाष्टकम् ॥

अर्थ-जीरा ४ तोले सिंदूर २ तोले दोनोंको सरसोंके तेलमें डालके पचावे तो
तत्काल खाजको नाश करे यह वृद्ध वैद्योंकी आज्ञानुसार ३२ तोले तैल पचावे ॥

वृहत्सिंदूरादितैल ।

सिंदूरंचंदनमांसीविडंगंरजनीद्वयम् । प्रियंगुपद्मकंकुष्टमंजिष्ठा

सादिरं वचा ॥ जात्यर्कत्रिवृतानिचकरंजंविषमेवच ॥ कृष्णचि

त्रकलोध्रं च प्रपुं नाटं च संहरेत् । श्लक्ष्णपिष्टानिसर्वाणियोगयेत्तैल
मात्रया ॥ अभ्यंगेन प्रयोज्यं तद्वर्णकृत्कुष्ठनाशनम् । पामांवि
चर्चिकां कच्छूं विसर्पविपमेव च ॥ रक्तपित्तोत्थितान्हांतिरोगाने
वंविधान्वहून् । सिंदूराद्यमिदं तैलमश्विभ्यां निर्मितं पुरा ॥

अर्थ—सिंदूर, चन्दन, जटामांसी, वायविडंग, हलदी, दारुहलदी, फूलप्रियंगु, पद्मास, कूठ, मजीठ, खैरकी छाल, वच, चमेली, जुही निसोत नीमकी छाल, कंजेके धीज अतीस पीपल चित्रक लोध पमारके बीज इनको समान भागले बारीक बूर्ण करे इसमें तैल डालके इसका मालिस करे तो देहकी कांति उत्तम करके कुष्ठका नाश करे तथा पामा विचर्चिका कच्छू विसर्प विप रक्त पित्तसम्बन्धी विकार इनको नाश करे यह सिंदूरादि तैल प्रथम अश्विनी कुमारोंने निर्माण करा ॥

हरिद्रा कल्क ।

हरिद्राकल्कसंयुक्तं गोमूत्रस्य पलद्वयम् ।

पिपेत्रः कामचारी कच्छू पामाविनाशनम् ॥

अर्थ—हलदीका कल्क करके उसमें गोमूत्र आठ तोले डालके पीवे तो कच्छू और पामा इनको नाश करे इस पर पथ्यकी कोई जरूर नहीं है ॥

शृङ्गरीच्यादि तैल ।

मरीचं त्रिवृतादं तीक्ष्णमार्कं शकृद्रसः । देवदारुहरिद्रेद्रेमांसीकु
ष्टसंचंदनम् । विशालांकरवीरंच हरितालं मनःशिलां । चित्रको
लांगलाख्याचविडंगंच क्रमदेकम् ॥ शिरीषत्वक्चकुटजोनिव
त्वक्पिप्पलीवचा । जोतिष्मतीतुपलिकाविपस्यद्विपलं भवेत् ॥
आढकंकटुतैलस्य गोमूत्रंच चतुर्गुणम् ॥ मृत्पात्रे लोहपात्रे वा श-
नैर्मुद्गग्निनापचेत् । पक्त्वा तैलवरं त्वेतन्मृक्षयेकोपिकव्रणान् ।
पामाविचर्चिकाकंद्दुद्विस्फोटकानि च ॥ वलयः पलितं छा
यांनीलाव्यंगंतथैव च । अभ्यंगेन प्रणश्यंति सौकुमार्यंच जायते ॥

अर्थ—मिरच काली, निसोथ, जमाल गोंटकी जड़, आकका दूध, गोब-
रका रस, देवदारु, हलदी, दारुहलदी, जटामांसी, कूठ, चंदन, इन्द्रायण-
कागूदा, कन्हेर, हरताल, मनसिल, चित्रक, कलियारी, वायविडंग, पमारके

बीज, सिरसकी छाल, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, सतोना, धूहर, अमलतासः कंजा, नागरमोथा, खैरकी छाल, पीपल, वच, मालकांगनी ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, और सिंगिया विष ८ तोले, सरसोंका तेल १०२४ तोले तथा गोमूत्र ४०९६ तोले सबको एकत्र कर मिट्टीके पात्रमें अथवा लोहेके पात्रमें मंदाभिपर रखके पचावे जब सिद्ध हो जावे तब उतारके कुष्ठोंपर मालिस करे, तो खुजली (खाज) विचर्चिका, कंड़ू, दाद, विस्फोटक, वलीपलित, नीली, छाया, व्यंग, इत्यादि कुष्ठोको दूर करे, इसके लगानेसे सुकुमार देह होय।
शतारु कुष्ठ ।

रक्तश्यावंसदाहार्तिशतारुःस्याद्बहुव्रणम् ॥

अर्थ—शतारु जो लाल होय, श्याम होय, जलन होय, शूल होय तथा जिसमें अनेक फौडा होय उसको शतारु कुष्ठ कहते है ॥

गंधक योग ।

गंधपापाणचूर्णतुकटुतैलेनयोजितम् ।

लेपनादथपानाद्राकच्छूपामाविनाशनम् ॥

अर्थ—गंधकके चूर्णको सरसोंके तेलमें खरल कर लेप करे अथवा पीवे तो कच्छू और पामा इनको नाश करे ॥

सिंहास्यदल लेप ।

कोमलसिंहास्यदलंसनिशंसुरभीजलेनसंपिष्टम् ।

दिवसत्रयेणनियतंशमयातिकच्छूविलेपनतः ॥

अर्थ—कोमल अडूसेके पत्ते, हलदी, दोनोंको गोमूत्रसे पीस इसका लेप करे तो कच्छूको नाश करे ॥

विचर्चिका कुष्ठ ।

सकण्डूःपिटिकाश्यावावहुस्रावाविचर्चिका ॥

अर्थ—विचर्चिका खुजली युक्त काले रंगकी जो फुंसी (माताके समान) होय तथा उनमेंसे स्राव बहुत होय, उसको विचर्चिका कहते हैं ॥ चर्मकुष्ठसे लेकर विचर्चिका कुष्ठ पर्यंत १२ कुष्ठ होते है और पोंछे क्षुद्र कुष्ठ ११ कहे हैं ऐसी कोई शंका करे उसके निमित्त कहते है । विचर्चिका पैरोंमें होकर फूटकर अर्थात् विपादिका होय है ऐसे कहनेसे संख्या नहीं बढे इस विषयमें भोजका भी मत है ॥

अर्थ—गिलोय, त्रिफला, दारुहलदी, इनका काठा अथवा गरम जलके साथ
१ महीने पर्यंत गूगल सेवन करे यह त्वचाके दोष व्रणशोथ इनको नाशकरे ॥
महातित्तकघृत ।

सप्तच्छदप्रतिविपाशम्याकंतिक्तरोहिणीपाठां । मुस्तासुशीरत्रि
फलांपटोलपिचुमंदपर्पटकम् ॥ धन्वयवासकचंदनमुपकुल्या
पद्मकरजन्यौच । पद्मग्रंथासंविशालाशतावरीसारिवेचोभे ॥ व
त्सकबीजंवासांमूर्वामृताकिराततित्तं च । कल्कान्कुर्यान्मति
मान्यपृचाहंत्रायमाणांच ॥ कल्कस्यचतुर्भागोजलमष्टगुणं
सोमृतपलानां । द्विगुणोघृतात्प्रदेयस्तत्सर्पिःप्राशयेत्सिद्धम् ॥
कुष्ठानिरक्तपित्तंचबलान्यशांसिरक्तवाहीनि । विसर्पमम्लपित्तं
वातासृक्पाडुरोगंच ॥ विस्फोटकान्सपामामुन्मादंकामलंज्व
रंकंडूम् । हृद्रोगगुल्मपिटिकांभगंदरंगंडमालांच ॥ हन्यादेत
त्सद्यः पीतकालेयथाबलंसर्पिः । योगशतैरप्यजितान्महावि
काराञ्जयेन्महातित्तम् ॥

अर्थ—सताना, अतीस, अमतास, कुटकी, पाठ, नागरमोथा, खस, हरड,
बहेडा, आंवला, पटोलपत्र, नीमकी छाल, पित्तपापडा, धनिया, धमासों
चंदन, पीपल, पत्रास, हलदी, पीपरासूल, इन्द्रायनकी जड, सतावर, छोटी
बडी सारिवा, इन्द्रजौ, अडूसा, मूर्वा, गिलोय, चिरायता, मुलहदी, और
त्रायमाण, इनको समान भागले, इनका कल्क वा काठा तथा कल्कका चतु-
र्थांश जल और आठगुना आंवलेका रस और धी दो भाग डालके तयार करे
तो कुष्ठ, रक्तपित्त, बलवान् तथा रक्त स्रवनेवाला बवासीर रोग, विसर्प अ-
म्लपित्त, वातरक्त, पांडुरोग, फोडा, खाज, उन्माद, कामला, ज्वर, खुजली,
हृदय रोग, गोला, फुसी, भगंदर, गंडमाला, इनको नाश करे; इसको प्रातःकाल
में सेवन करे तो जो अन्य औषधसे न जानेवाले महाविकारोंको नाश करे ॥

पंचतित्तक घृत ।

निंबपटोलंव्याघ्रींचगुडूर्चीवासकंतथा । कुर्याद्दशपलान्भा
गानेकेकस्यसुकुट्टितान् ॥ जलद्रेणेविपक्तव्यंयावत्पादावशे
पित्तम् । घृतप्रस्थंपचत्तेनत्रिफलागर्भसंयुतम् ॥ पंचतित्तमि

तिख्यातंसर्पिः कुष्ठविनाशनम् । अशीतिवातजान् रोगाञ्च
त्वारिंशच्चपैत्तिकान् ॥ विंशतिश्लेष्मिकांश्चैव पानादेवापकर्ष
ति । दुष्टव्रणकृमीनर्शः पंचकासांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ—नीमकी छाल, पटोलपत्र, कटेरी, गिलोय और अड्सा ये प्रत्येक
४० तोले इनको कूट १२४ तोले जलमें डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष
रहे तब उतारके छानले फिर इसमें ६४ तोले घी, तथा त्रिफलाका काढा
मिलायके मंदामिपर घृत सिद्ध करे इसको पंचतित्त घृत कहते हैं, यह कुष्ठ,
अस्सी प्रकारके वातरोग, चालीस प्रकारके पित्तरोग और बीस प्रकारके कफ
रोग, इनको इस घृतके खातेही आकर्षण करे तथा दुष्टव्रण कृमि, बवासीर
और पांच प्रकारकी खांसी, इनको नाश करे ॥

महाखदिरःदि घृत ।

खदिरस्यतुलाः पंचशिशुपासनयोस्तुले ॥ तुलार्धसर्वेष्वैतेकरं
जारिष्टवेतसः ॥ पर्पटःकुटजश्चैव वृषःकृमिहरस्तथा ॥ हरिद्राकृ
तमालश्चगुडूचीत्रिफलात्रिवृत् ॥ सप्तपर्णश्चसंक्षुणां दशद्रोणेन
वारिणा ॥ अष्टभागावशेषंतुकपायमवतारयेत् ॥ धात्रीरसंचतु
ल्यांशंसर्पिपश्चाढकंपचेत् ॥ महातित्तकतैलैश्चयथोक्तैः पलसं
मितैः ॥ निहंतिसर्वकुष्ठानिपानाभ्यंगनिपेवणात् ॥ महाखदि
रमित्येतत्परकुष्ठविकारनुत् ॥

अर्थ—खैरकी छाल २००० तोले, कालीसीसो ४०० तोले, और विजैसार
४०० तोले और कंजानीम वेत, पित्तपापडा, इन्द्रजौं, अड्सा, वायवि-
डंग, हलदी, दारुहलदी, अमलतासका गूदा गिलोय, हरड, बहेडा, आँवला,
तेल और सतौना, ये प्रत्येक २०० तोलेले, सबको १०२४० तोले, जलमें अष्ट-
मांश काढा करके उतारके छानले, फिर जितना काढा होय उतनाही आँवले
तथा घी २५६ तोले डालके अमिपर रख घृतको तयार करे, ये महातित्तक
तेलसे चार तोले पान और अभ्यंग इस विषयमें देवे तो संपूर्ण कुष्ठोंका नाश
होय यह महाखदिरघृत अत्यंत कुष्ठनाशक है ॥

तित्तपदपलघृत ।

निंबपटोलंदावींदुरालभातित्तरोहिणीत्रिफलाम् । कुर्यादर्थप
लांशान्पर्पटकंत्रायमाणंच ॥ सलिलाढकासिद्धानारसेष्टभागे

अर्थ-अस्थि (हड्डी) और मज्जागत कुष्ठ होनेसे नाक गिर पड़े, नेत्र लाल होय, घावमें कीड़ा पड़जाय, स्वर बैठजाय ये लक्षण होय ॥

शुक्रार्तिवगतकुष्ठकेलक्षण ।

दंपत्योःकुष्ठबाहुल्यात्कुष्ठंशोणितशुक्रयोः ।

यदंपत्यंतयोजांतंज्ञेयंतदपिकुष्ठितम् ॥

अर्थ-जिस स्त्री पुरुषोंके रुधिर शुक्र कुष्ठाधिक्यसे दुष्ट होय, उस दुष्ट भये वीर्य और रजसे प्रगट भई जो संतान सी भी कौड़ी होती है, इस जगे दुष्ट भये शुक्र और आर्तव सर्वथा बीजत्व नष्ट होनेसे संतानके करनेवाले होते हैं और जीव संक्रमण कालमें कदाचित् बीज दुष्ट होय तो विषके कीड़ाके न्याय करके संतान प्रगट होती है । अर्थात् जैसे विष प्राणियोंके प्राणका नाशक है परंतु उसमेंभी विषका कीड़ा प्रगट होता है और वो, उससे नहीं मरता है यह वाग्भटका मत है ॥

साध्यासाध्यत्व ।

साध्यंत्वग्रक्तमांसस्थंवातश्लेष्माधिकंचयत् । मेदसिद्धंद्रजंया
प्यंवर्ज्यमज्जास्थिसंश्रितम् । कृमिहृल्लासमंदाग्निसंयुक्तंयत्रिदो
पजम् ॥ प्रभिन्नंप्रसृतांगंचरक्तनेत्रंहतस्वरम् ॥ पंचकर्मगुणा
तीतंकुष्ठंहंतीहकुष्ठिनम् ॥

अर्थ-रक्त रुधिर मांस इन धातुओंके पर्यंत गये जे कुष्ठ वो साध्य होतेहैं तथा जिस कुष्ठमें वायु और कफ प्रधान होय वो भी साध्य है और मेदो-धातुगत कुष्ठ तथा द्रंज कुष्ठ याध्य जानना मज्जा अस्थि इन दोनों धातुमें कुष्ठ पड़च गया हो तथा जो शुक्रगत हो वो कुष्ठ असाध्य है तथा जिस कुष्ठमें कृमि, वमन, मन्दाग्नि इन करके युक्त होय तथा त्रिदोषज होय वो असाध्य है । जो कुष्ठ फूटकर बहने लगे तथा जिस कुष्ठसे रोगीके नेत्र लाल होय अथवा स्वर बैठ गया होय और वमन विरेचनादि पंचकर्मके गुण जिस पुरुषके होय नहीं ऐसा रोगी मरजाय ॥

पंचनिवर्चूर्ण ।

पिचुमंदफलंपुष्पंत्वक्पत्रंमूलमेवच ॥ पंचैतानिचसूक्ष्माणिस
मचूर्णानिकारयेत् ॥ अष्टभागावशेषेणसदिरासनवारिणा । भा
वयित्वातुसंयोज्यद्रव्याण्येतानिदापयेत् ॥ चित्रकोथविडंगानि

व्याधिघातकशर्कराः॥ भल्लार्तकहरीतक्योःशुंठ्यामलकगोक्षु
 राः॥चक्रमर्दकवाकूचीपिप्पलीमरिचनिशा ॥ भावयेद्भृंगराजे
 नपुनःशुष्काणिकारयेत्॥ निवारधचूर्णमेतेपामेकीकृत्यनिधाप
 येत् ॥ विडालपदमात्रंतुसर्पिपापयसापिवा ॥ प्रातःप्रातर्निपे
 वेतखदिरासनवारिणा॥परिहारोन्चात्रास्तिपंचनिवेवतिष्ठति॥
 मासमात्रप्रयोगेणकुष्ठंहंतिरसायनम् ॥ त्वग्दोषनीलिकाव्यं
 गंतथैवतिलकालकान्॥अष्टादशविधंकुष्ठंसप्तचैवमहाक्षयान् ॥
 सर्वव्याधिविनिर्मुक्तोजीवेद्दर्पशतशुखी ॥

अर्थ--नीमके फल, फूल, पत्ता, छाल, और जड़ ये समान भाग ले, इस
 पंचांगका बारीक चूर्ण करे तथा खैर (कत्था) और विजैसार इनका अष्ट-
 मांश काढा करके इस चूर्णमें भावना देवे फिर इसमें चित्रक, वायविडंग,
 अमलतास, मिश्री, भिलाए, हरड, सोंठ, आवले, गोखरू, पमारके बीज,
 बाबची, पीपल, मिरच, हलदी, और लोहेकी भस्म इनका चूर्ण नीमके चूर्णसे
 आधा भाग मिलायके भांगरके रसकी भावना देकर सुखायले फिर किसी
 शीशी आदि पात्रमें भरके रख छोडे फिर इसमेंसे घी अथवा खांड इनके
 साथ खैरका अथवा विजैसारका काढा डालके एक तोले प्रातःकाल नित्य
 पीवे, इस निवपंचांगचूर्ण पर पथ्यादिकका नियम नहीं है, ये तीन महिने
 सेवन करनेसे कुष्ठ, त्वचाके दोष, नीलिका, व्यंग, तिलकालक, तथा अठारह
 प्रकारके कोठ, सात प्रकारके क्षयको नाश करे तथा रसायन है, इसके सेवनसे
 सब रोगोंसे मुक्त होय तथा सौ वर्ष जीवे ॥

खादिरासव ।

खदिरस्यतुलार्धतुतत्तुल्यं देवदार्वपि ॥ वरायाविंशतिर्दाव्याः
 पलानांपंचविंशतिः ॥ वाकूच्याद्वादशपलान्यष्टद्वेणभसःप
 चेत् ॥ द्रोणशेषेकपायेतुपूतशेषेविनिक्षिपेत् ॥ धातक्याविंश
 तिपलंमाक्षिकस्यशतद्रयम् ॥ शर्करायास्तुलामेकांचूर्णानी
 मानिदापयेत् ॥ कंकोलकं लवंगंच एलाजातीफलंत्वचम् ॥
 केसरंमरिचंपत्रंपलिकान्युपकल्पयेत् ॥ पिप्पलीनांतुकुडवं
 स्थापयेद्घृतभाजने ॥ मासादूर्ध्वविवेन्मात्रामवेक्ष्यचवलाव

लम् ॥ सर्वकुष्ठहरो ह्येपपांडुहृद्भोगकासनुत् ॥ कृमिग्रंथ्यर्जुद
ग्रंथिगुल्मप्लीहोदरांतकृत् ॥ एषवैखदिरारिष्टः कृष्णात्रेयेण
पूजितः ॥

अर्थ—खैरकी छाल २०० तोले, देवदारु २०० तोले, त्रिफला ८० तोले
दारुहलदी १०० तोले बावची ४८ तोले, सबको कूट एकत्र कर १६३८४
तोले जलमें डाल अष्टावशेष काढा करे जब तयार हो जाय तब छान लिय
फिर इसमें धायके फूल ८० तोले सहत २०० तोले, मिश्री ४०० तोले
डालके ककूल, लौंग, इलायची, जायफल, दालचिनी, केशर, मिरच,
पत्रज, इन प्रत्येकका चार २ तोले चूर्ण, तथा पीपल १६ तोले, डालके
धीके चिकने वासनमें भरके १ महिने पर्यंत धरा रहने देवे, पश्चात् इसमेंसे
बलाबल विचारके मात्रा देवे तो यह संपूर्ण कुष्ठ, पांडुरोग, हृदयरोग, खाँसी
कृमिरोग, गांठ, अर्जुदकी गांठ, गोला, प्लीहा और उदर इनको नाश करे, यह
खदिरारिष्ट आत्रेयके पुत्र कृष्णको मान्य है ॥

कुष्ठपरचिदित्साकरनेके वास्ते प्रधान दोष बहते हैं ।

वातेनकुष्ठकापालंपित्तेनौदुंबरकफात् ॥ मंडलाख्यविचर्चिच
ऋष्याख्यंवातपित्तजम् ॥ चर्मैककुष्ठंकिटिभंसिध्मालसविपादि
काः ॥ वातश्लेष्मोद्भवाःश्लेष्मपित्ताद्दृशतारूपी ॥ पुंडरीकं
सविस्फोटंपामाचर्मदलंतथा ॥ सर्वैःस्यात्काकणंपूर्वत्रिकंदद्रुः
सकाकणा ॥ पुंडरीकपर्यजिह्वेचमहाकुष्ठानिसप्ततु ॥

अर्थ—वादीसे कपाल कुष्ठ, पित्तसे औदुंबर, कफसे मंडल और विचर्चिका,
वातपित्तसे, ऋष्याजिह्व, वात कफसे चर्मकुष्ठ, किटिभ, सिध्म, आलस और
विपादिका, कफ पित्तसे दृश तारु, पुण्डरीक, विस्फोटक, पामा चर्मदल, त्रिदो-
षसे काकण कुष्ठ होय है । पहिले तीन (कपाल, उदुंबर और मंडल) दद्रु,
काकण, पुंडरीक और ऋष्याजिह्व ये सात महाकुष्ठ जानने ॥

किलासकुष्ठनिदान ।

कुष्ठैकसंभवंश्वित्रं किलासंचारुणं भवेत् ॥

निर्दिष्टमपरिस्रावित्रिधातूद्भवसंश्रयम् ॥

अर्थ—कुष्ठ होनेके जो कारण (विरुद्ध भोजन पापकमादि) कहे हैं उन्हीं
कारणोंसे श्वित्र (सपेद कौड) और किलास (लाल कौड) ये होते हैं इन्में

स्त्राव नहीं होय तथा ये तीन धातुओंका आश्रय करके रहते हैं अर्थात् (तीन दोष और रुधिर मांस तथा मेद) इन्का आश्रय करके रहै हैं ॥

वाताद्रूक्षारुणंपित्तात्ताम्रकमलपत्रवत् । सदाहंरोमविध्वंसिक
फाच्छेतंवनंगुरु ॥ सकंदूरंक्रमाद्रक्तमांसमेदस्सुचादिशेत् ।
वर्णैर्नैवेदगुभयंकृच्छ्रंतच्चोत्तरोत्तरम् ॥

वातादि भेदसे किलासके लक्षण ।

अर्थ—वादीसे रूक्ष और लाल होय, पित्तसे कमलपत्रके सजान लाल होय, और उस्मे दाह होय, उस्के ऊपरके बाल गिर पड़े कफके योगसे वो कोठ सफेद, गाढा, और भारी उसमें खुजली चले इसी क्रमसे रुधिर मांस और मेदका भी ठिकाना जानना अर्थात् दोष रक्ताश्रित होनेसे लाल, मांसाश्रित होनेसे ताम्रकरंग और मेदाश्रित होनेसे सपेद किलास होय है ॥

श्वित्रके साध्यासाध्य लक्षण ।

अशुक्लरोमावहलमसंश्लिष्टमथोनवम् ।

अनग्निदग्धजंसाध्यंश्वित्रंवर्ज्यमथोन्यथा ॥

अर्थ—जिस श्वित्र कोठके ऊपरके बाल सफेद न भये होय तथा जे पतले होकर आपसमें मिले नहीं तथा नवीन हो तथा अग्निदग्ध न होय वो श्वित्र कोठ साध्य जानना, यासे विपरीत असाध्य जानना ॥

किलासके असाध्य लक्षण ।

गुह्यपाणितलोष्ठेषुजातमप्यचिरंतनम् ।

वर्जनीयंविशेषेणकिलासंसिद्धिमिच्छता ॥

अर्थ—गुदास्थानमें, हाथोंमें, पैरोंके तलुओंमें, हाठोंमें प्रगट भया किलास कुछ थोड़े दिनका होय, तो भी यश मिलनेकी इच्छावाला वैद्य छांडदे ॥

सांसर्गिक रोग ।

प्रसंद्वागात्रसंस्पर्शाग्निःश्वासात्सहभोजनात् । सहशय्यासना
च्चापिवस्त्रमाल्यानुलेपनात् ॥ कुष्ठंज्वरश्चशोषश्चनेत्राभिप्यंद
एवच । औपसर्गिकरोगाश्चसंक्रामंतिनरात्रम् ॥

अर्थ—मेथुनादि प्रसंगसे अथवा शरीरके स्पर्शसे श्वासके लगनेसे, साथ बैठ कर एक पात्रमें भोजन करनेसे, एक साथ शय्या एक (पलंग) पर सोनेसे तथा एक साथ मिलकर बैठनेसे, पास रहनेसे, धारण कर वस्त्रका धारण करनेसे

सूँघे पुष्पको सूँघनेसे कौठ, ज्वर धातुशोष (अर्थात् क्षईका रोग) नेत्ररोग (आंख दुखना) और औपसर्गिक रोग कहिये शीतलादिक और भूतोपसर्गादिक ये संक्रामिक रोग ये पुरुषसे उडकर दूसरे मनुष्यके होताते है इसीसे पूर्वोक्त रोगियोंका प्रसंगादिक न करे ॥

शैलेयादि लेप ।

शैलेयकंपिल्लकयष्टिसाहसौराष्ट्रिकासर्जरसोत्पलानि ।

शिलाचचूर्णोनवनीतयुक्तःकुप्रेस्रवत्यभ्यधिकःप्रदिष्टः ॥

अर्थ—शिलाजीत, कबीला, मुल्हटी, इलायची, राल आर मनसिल ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, इसको पीस मक्खनमें मिलाय सबनेवाले कुष्ठ पर लेप करे ॥

मजिष्ठादि ६४ काय ।

मंजिष्ठात्रिफलाप्रियंगुरमृतात्राह्नीवचापौष्करैर्भृगाख्यात्रिकटुः
किरातकविपानिर्गुडिकारग्वधाः ॥ त्रायंतीखदिरंकुटंतटवृ
कस्यामाद्वयंरोहिणीतिक्तापर्पटवाभकेंद्रफलिनोतानीविशाला
मिदम् । एरंडःपिचुमंदचित्रकवरीभांर्गीमलेंद्रीसठोविल्वाग्नी
धवमूलपाडलवृतीतेजस्विनीवालकम् ॥ दंतीमूलपलासचंद
नयुगंमुंडीविडंगान्वितमकेंयोररणीकरंजधवयोः पर्णानिमूला
निच । क्षुद्राह्वाद्रयदेवदारुजलदाकल्हारकंवल्लकमेभिःसि
द्धमिदंपटोलसहितंक्वाथश्चतुःपष्टिकः । अष्टांशंतुविपाचयेच्च
मतिमानुत्काथ्यमृद्राजनेपीत्वाहंतिसपित्तरक्तसकलंकुष्ठानि
चाष्टादश ॥

अर्थ—मजीठ, हरड, बहेडा आंवला, फूलप्रियगु, गिलोय, ब्राह्मी वच पुह-
करमूल, भारंगी सोंठ, मिरच, पीपल, चिरायता अनीस, निर्गुडी, अमलतास,
त्रायमाण, खैरसार, टैडू, पाठ, सालपर्णी, पृश्निपर्णी, कंभारी, कुटकी, पित्तपा-
पडा, बवूरकी छाल, इन्द्रजो, कलियारी, तानीकी बेल, इन्द्रायन, कस्तूरी,
अंडकीजड, नीमकीछाल, चित्रक, शतावर, भारंगी, आविया हलदी, कचूर,
बेलगिरी, चित्रक, धायकेफूल, पाडल, पुत्राग मालकांगनी, नेत्रवाला, दंती,
पलास पापडा, लालचंदन, पतंग, मुंडी, वायविडग, आफ, अरनी, कंजा-
घो, इनके पत्ते. तथा जडकटेरी, बडी कटेरी, देवदारु, नागरमोथा, लालकमल,

बलक, और पटोलपत्र इन चांसट औपधोंको मिट्टीके पात्रमें अष्टावशेषकाढा करके पीनेको देवे तो रक्तपित्त और अठारह प्रकारके कोढ़, इनको नाशकरे ॥

मंजिष्ठादि काय ।

मंजिष्ठापिचुमंदचंदनघनछिन्नागवाक्षीवृपात्रायंतीत्रिवृतानटद्विर
जनीभूर्निवपाठाविपा । गायत्रीत्रिफलापटोलकटुकाकोटद्विप
त्पर्पटाउग्रावलगुजवासवत्सकयुतैःकाथंविदध्याद्विपक ॥ कंडू
मंडलपुंडरीककिटिभैःपामाविचचित्रणैः सिध्माश्वित्रकिलासदं
दुरसकैर्व्याताग्रसप्तत्वचः । किंचान्यत्कृमिभिर्विशीर्णगालितग्रा
णांत्रिपाण्युद्भवानेनंप्राप्यमहाकपायमचिरात्पंचेपुतुल्योनरः॥

अर्थ—मजीठ, नीमकीछाल, लाल चंदन, नागरमोथा, गिलोय, इन्द्रायन, अडूसा, त्रायमाण, निसोथ, विजेसार, हलदी, दारुहलदी, चिरायता, पाठ अतीस, खैर, हरड, बहेडा, आवला, पटोलपत्र, फुटकी, वायविडंग, पित्तपा-पडा, वच, वावर्चा, और कूडाकी छाल, इनका काढा करके देयतो खजली, मंडल, पुंडरीक, किटिभ, साज, विचचिका, वण, सीप, सपेद कोढ, किलास, दाद, लहस बहनेवाला घाव, सात त्वचामें होनेवाले कोढ, तथा कीडा पडके सड़गया हो असा कुष्ठ, तथा नाक, पैर सडनेवाला इन सब कुष्ठोंको नाशकरके शरीरको कामदेवके समान सुंदर करे ॥

लघुमंजिष्ठादि काय ।

मंजिष्ठाकुटजामृताघनवचाशुंठीहरीद्राद्वयम् । क्षुद्रारिष्टपटो
लकुष्टकटुकाभारंगीविडंगान्विताः ॥ मूर्वादारुकलिंगभृंगमग
धात्रायंतिपाठावरी । गायत्रीत्रिफलाकिरातकमहानिवाशना
रग्वधाः ॥ श्यामावलगुजचंदनचरुणकंपूतीकसाखोटकं
वासापर्पटसारिवाप्रतिविपानंताविशालाजलम् ॥ मंजिष्ठादि
रयंकपायविधिनानित्यंपुमान्यःपिवेत्वग्दोषाह्यचिरेणयांतिवि
लयंकुष्ठानिचाष्टादश ॥

अर्थ—मजीठ, इन्द्रजो, गिलोय, नागरमोथा, वच, सोंठ, हलदी, दारुह-लदी, कटेरी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, फुटकी, भारंगी, वायविडंग, मूर्वा, देवदारु, कूडाकी छाल, भारंगरा, पीपल, त्रायमाण, पाठ, शतावरु, खैरसार,

हरड, वहेडा, आंवला, चिरायता, वकायनकी छाल, विजेशार अमलतासका गूदा, सारिवा, वावची, लालचंदन, वरना, कंजा, सहोडा, अडूसा, पित्तपापडा, सपेद सारिवा, अतीस, धमासो, इन्द्रायन, नेत्रवाला इनका काढा करके नित्य प्रति पीवे तो त्वचाके दोष, और अठारह प्रकारके कौड ये नाश होवे ॥

त्रिफलादि काय ।

त्रिफलानिवपटोलमंजिष्टारोहिणीवचारजनी ।

एकपायाभ्यस्तोनिहांतिकफापित्तजंकुष्ठम् ॥

अर्थ—हरड, वहेडा, आंवला, नींबूकी छाल, पटोलपत्र, मजीठ, कुटकी, वच, हलदी, इनका काढा नित्य प्रति पीवे तो कफपित्तात्मक कुष्ठको नाश करे ॥

सदिरादि ।

प्रलेपोद्भर्तनस्नानपानभोजनकर्मसु ।

शीलितंखादिरंवारिसर्वत्वद्गोपनाशनम् ॥

अर्थ—लेप, मालिस करना, स्नान, पान, भोजन, इनमें खैरके कोठेका उपयोग करनेसे संपूर्ण त्वचाके दोषोंको नाश करे ।

शुंठ्यादि काय ।

शुंठिनिंवकिराततित्तककणापाठाहरिद्राद्रयंत्रायंतीत्रिफलामृता
ह्वकडुकावासावचावाकुची । मंजिष्टातिविपादुरालभमहानिं
वाग्निपद्ग्रथिका व्याधिघ्नागजचिर्भटासकुटजा भार्गसिमुस्ता
यवाः॥ मूर्वाचैवपटोलपत्रसहितारक्तंतथाचंदनंश्यामापर्पटसा
रिवाकृमिहरागायत्रिकासयुता । गोमूत्रेणमहाकपायमरु
णोद्भूतेपिवेद्यः पुमांस्तस्याष्टादशर्यातिनाशमचिरात्कुष्ठानि
दुष्टान्यपि ॥

अर्थ—शुंठ, नीमकी छाल, चिरायता, पीपल, पाठ, दारु हलदी, त्रायमाण, हरड, वहेडा, आवला, गिलोय, नागरमोथा, कुटकी, अडूसा, वच, वावची, मजीठ, अतीस, धमासो, वकायनकी छाल, चित्रक, पीपलामूल अमलतास, चिभेट, कूडाकी छाल, भारंगी, भद्रमोथा, इन्द्रजो, मूर्वा, पटोल पत्र, लाल चंदन, हरडकी छाल, पित्त पापडा, और सारिवा, वायविडंग, खैर, इनका गोमूत्रमें काढा करके प्रातःकाल पीवे, तो दुष्ट अठारह प्रकारके कौड, जल्दी नष्ट होंय ॥

भल्लातकाव लेह ।

निवगोपारूणाकट्टीत्रायंतीत्रिफलाघनम् ॥ पर्पटावलगुंजांता
वचास्रदिरचंदनम् ॥ पाठाशुंठीशठीभांर्गीवासाभूर्निववत्सक
म् ॥ श्यामैद्रवारुणीमूर्वाविडंगतिविपानलम् ॥ हस्तिकर्णा
मृताद्वेकापटोलंरजनीद्वयम् ॥ कृष्णारग्वधसप्ताहंशिरिपंचो
च्चटाफलम् ॥ मंजिष्ठां गलीरास्नानक्तमालःपुनर्नवा ।
दंतीवीजकसारश्चभृंगराजकुरंदकम् ॥ एतान्द्रिपलिकान्भा
गान्जलद्रोणेविपाचयेत् ॥ अष्टभागावशिष्टं चपायमवतारये
त् ॥ भल्लातकसहस्राणिक्षिपेच्छित्त्वामर्णेभसि ॥ चतुर्भागाव
शिष्टं चपायमवतारयेत् ॥ तौकपायौसमादायवस्त्रपूतौतु
कारयेत् ॥ एकीकृत्यकपायौतौपुनरग्नावधिश्रयेत् ॥ त्रिकटु
त्रिफलामुस्तंविडंगंचित्रकंतथा ॥ चंदनंसैधवंकुष्टं दीप्यकंचप
लंपलम् ॥ चातुर्जातंचसंपूर्णघृतभांडेनिधापयेत् ॥ सौगंधिक
स्यदातव्यंचूर्णपटचतुष्टयम् ॥ महाभल्लातकोद्द्वेषमहादेवेन
निर्मितः ॥ प्राणिनांजुहितार्थायनाशयेच्छीघ्रमेवच ॥ श्वित्रमौ
दुंबरंदद्रुमृक्षजिह्वंसकाकणम् ॥ पुंडरीकंचचर्माख्यंविस्फोटं
रक्तमंडलम् ॥ कृच्छ्रंकापालिकंकुष्ठंपामांचांपिविपादिकाम् ॥
वातरक्तमुदावर्तपाण्डुरोगंविमृमीन् ॥ अर्शांसिपट्प्रकारा
णिश्वासंकासंभगंदरम् ॥ अनुपानेनदातव्यंचित्रातोयेनतंभिप
क् ॥ भोजनेनसदायोज्यमुष्णंचाम्लंविशेषतः ॥ अन्यान्यपि
चकुष्ठानिनाशयेन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ-नीमकी छाल, सारिवा, अतीस, कुटकी, त्रायमाणः हरड, बहेडा
आवला, नागरमोथा, पित्तपापडा, वाक्ची, धमासों, वच, खैरकी छाल, चंदन
लाल, पाठ, सोंठ, कन्नूर, भारंगी, अड्सा, चिरायता, इन्द्रजव, श्यामा,
इन्द्रायनकी जड, मूर्वा, वायविडंग, अतीस, चित्रककी छाल, कसालू, गिलोय
नागरमोथा ये सब एक २ भाग ले तथा पडवल, हलदी, दारुहलदी,
मजीठ, कल्यारी, रास्ना, करंज, पुनर्नवा, जमालगोटा, विजैसार, भांगरा,

पियांवासा ये प्रत्येक दो २ भाग लेवे इनको १०२४ तोले, जलमें डालके घोटाने जब अष्टावशेष जल रहे तब उतारके छान लेवे, फिर शुद्ध करे । हुए भिलाए १००० ले उनको तोडके १०२४ तोले जलमें डालके चतुर्थांश काढा करके छान लेवे फिर दोनों काढोंको एकत्र कर अग्नि पर चढावे, और इसमें गुड ४०० तोले डालके । अवलेह बनावे, इसमें एक हजार भिलावके बीज डाले तथा सोंठ मिरच पीपल, हरड, वहेडा, आवला, नागरमोथा वायविडंग चित्रककी छाल चन्दन संधानिमक कूठ और अजवायन ये प्रत्येक चार २ तोलेलेय और दालचीनी इलायची पत्रज नागकेशर ये चार तोले डालके धीके चिकने वासनमें भरके धर रखै इसके सौगंधिक पदार्थ १६ तोले डाले यह महाभल्लातक । अवलेह प्राणियोंको हितके वास्ते श्रीशिव ने प्रगटकरा यह गिलोयके अनुपातसे देय तो सपेद कौट भौर्दुरकुष्ठ ऋक्ष-जिह्व कांफण पुंडरीक चर्मदल विस्फोटक रक्तमंडल कापालिक पामा विपादिका वातरक्त उदावर्त पांडुरोग घाति कृमि छः प्रकारकी बवाशीर थास खांसी और भगंदर इनको नाश करे इसका खानेवाला विशेष करके गरम और खट्टे पदार्थको न खाय तो अन्य जो कुष्ठ नहीं कहे उन सबका नाश करे ॥

शशांकलेखादि लेप ।

शशांकलेखासविडंगसारासपिप्पलीकाशहुतासमूला ।

सायोमलासामलकासतैलासर्वाणिकुष्ठानिनिशतिलीढा ॥

अर्थ—बावची विडंगसार पीपल चित्रक लंहेकी शीट आवला और तेल इनका अवलेह बनायके लेवे तो संपूर्ण कुष्ठोंको नाश करे ॥

धात्र्यादि लेह ।

धात्र्याक्षपथ्यासविडंगवह्निभल्लातकावल्लुजलोहभृंगाः ॥

भागाभिवृद्धैस्तिलतैलमिश्रैःसर्वाणिकुष्ठानिनिहतिलेहः ॥

अर्थ—आवला वहेडा, हरड, वायविडंग चित्रककी छाल भिलाए बावची लोहभस्म भांगरा ये प्रत्ये एकौत्तरकी वृद्धिसे लेवे चूर्णकर तिलके तेलसे अवलेह बनावे इसके सेवन करे तो संपूर्ण कुष्ठोंको नाश करे ॥

त्रिफलादि मोदक ।

त्रैफलस्यतुचूर्णस्यपलानिदशपंचच ॥ सप्तचैवविडंगानांलोह
चूर्णपलद्वयं ॥ शतंभल्लातकानांचपलानिदशवाकुची ॥ शिला

जतुपलार्धचद्रेपलेगुगुलोस्तथा ॥ पलंपुष्करमूलस्यपलार्धं
त्रिवृतस्यच ॥ सचित्रकंसमीरंचपिप्पलीविश्वभेषजं ॥ त्वक्
पत्रंकुंकुमंमुस्ताकार्पिकानुपकल्पयेत् ॥ यांवत्येतानिचूर्णानि
तावत्खंडंप्रदापयेत् ॥ पलिकान्मोदकान्कृत्वाप्रातरुत्थाय
नित्यशः ॥ एकैकंभक्षयेत्प्राज्ञोयथेष्टंचात्रभोजनं ॥ कृष्टान्य
ष्टादशानीहृष्टीहगुल्मभगंदरान् ॥ विंशतिश्चेष्मिकांश्चापिसंस्तृ
ष्टान्सात्रिपातिकान् ॥ शालक्यगतरोगांश्चशिरोक्षिभ्रूगतांस्त
था ॥ कंठतालुगतांश्चापिजिह्वायामपजिह्वकं ॥ उर्ध्वजत्रुग
तेरोगेभुक्तस्योपरिदापयेत् ॥ शरीरेदापयेत्पूर्वमौदरेमध्यभो
जने ॥ निर्दिष्टरोगाञ्छमयेत्क्रियमाणंरसायनम् ॥

अर्थ—हरड बहेडा आंवला इनका चूर्ण १५ पल वायविडंग २८ तोले
लौहकी भस्म ८ तोले, भिलाए ४०० तोले, घावची ४० तोले, शिलार्जीत २
तोले, गुगुल ८ तोले, पुहकर मूल ४ तोले, निशोध २ तोले और चित्रक,
फाल्गु मिरच, पीपल, सोंठ, दालचीनी, पत्रज, केशर और नागरमोषा ये
प्रत्येक एक २ तोले लेंवे और सब चूर्णके समान मिश्री मिलाये फिर चार २
तोलेके लड्डू बनावे इसको प्रातःकाल भक्षण करे ऊपरसे यथेष्ट भोजन करे
तो अठारह प्रकारके कुष्ठ, प्लीहा, गाला भगंदर, अस्ती प्रकारके वादीके रोग
चालीस प्रकारके पित्तरोग, बीस प्रकारकी कफ व्याधि और टंडन, तथा
संनिपातिक, शालाक्य तंत्रमें कहे हुए रोग तथा मस्तक, नेत्र, ध्रुक्टी, कंठ,
तालु, जिह्वा और उपजिह्वा इन सब रोगोंको नाश करे; यदि यह हसलीके
ऊपरके रोगोंमें देना होय तो भोजन करनेके उपरांत देना चाहिये; और उद्-
रस्थ रोगोंमें भोजनमें मिलायके देवे; कमरके नीचेके रोगोंमें भोजन करनेके
प्रथम देवे, तो ऊपर कहे हुए रोग शमन होय यह रसायन है ॥

सादिस्योग ।

दह्यमानाद्युतःकुंभेसमूलखदिराद्रसः ॥

साज्यधात्रोरसज्ञोद्गीह्न्यात्कुण्डंरसायनम् ॥

अर्थ—सैरके पृष्ठके नीचे गहटा करके उसमें गिपडेको रंग और उस पात्रमें
गैरकी लगड़ी डालके नीचे अपि जलावे तो जल रक्तक पर उम गिपडेमें

खैरका रस जमजावे उसको सहतमें मिलायके देवे तो कुष्ठको नाश करे,
तथा रसायन है ॥

निंवादिकल्क ।

निंषपत्रशतंपिष्टानिंवामलकमेवच ।

विडंगवाकुचीकल्कंपिवेद्राकुष्ठनाशनम् ॥

अर्थ—नीमके पत्ते निवोरी, आंवले, वायविडंग वावची, इनका कल्क करके
सेवन करेतो कुष्ठ रोगको नाशकरे ॥

त्रिफलादे गुटिका ।

त्रिफलारुष्करलोहैःसावल्गुजभृंगलिव्योपैः । सगुडैर्वराहकंदैः
पलिकैरेकत्रसंमिश्रैः ॥ गुटिकांप्रकल्प्यखादेदेकैकामक्षसंभि
तांप्रातः । कुष्ठंदद्रुकिलासंजित्वावर्षेणसर्वथापलितम् । जीव
तिवर्षशतंवैदीप्तहुताशोयुवेवसोत्साहम् ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आंवला, भिलाए, लोहेकीभस्म, वावची, भांगरा, कलि-
यारी, सोंठ, मिरच, पीपल, गुड, और वाराहीकंद ये प्रत्येक चार २ तोले
लेय, सबको एकत्र कर मिलाय देवे फिर खरल कर आधे २ तोलेकी गोली
बनावे, एक गोली नित्य प्रातःकालमें भक्षण करे तो कुष्ठ खाज, किलास कुष्ठ
इनको एक वर्षमें नाश करेके बलीपलितको नाशकरे, तथा अग्निको प्रदीप्त कर
तरुणके समान उत्साह पूर्वक जीवे ॥

एकविंशतिवो गुग्गुलु ।

चित्रकस्त्रिफलाव्योषमजाजीकारवीवचाः । सैधवातिविपाकुष्ठं
चव्यैलायावशूजकम् ॥ विडंगान्यजमोदाचमुस्तान्यमरदा
रूच । यावंत्येतानिसर्वाणितावन्मात्रंतुगुग्गुलुः ॥ संकुटचस
पिंपासार्धगुटिकांकारयेद्विपक् । प्रातर्भोजनकालेषाभक्षयेत्तु
यथाबलम् ॥ हंत्यष्टादशकुष्ठानिकृमिदुद्रुन्नानपि । ग्रहिण्य
शौचिकारांश्चसुखामयगलग्रहान् ॥ गृधसीमथभग्नंचगुल्मंचा
पिनियच्छति । व्याधीन्कोष्ठगतांश्चान्याञ्जयेद्विष्णुरिवासुरान् ॥

अर्थ—चित्रककी छाल, हरड, बहेडा, आवला, सोंठ, मिरच, पीपल, जीरा,
सोंफ, वच, सैधानिमक, अतीस, कूठ, चव्य, इलायची, जवाखार, वायवि-

डंग, अजमोद, नागरमोथा, देवदारु, ये समान भाग लेवे, तथा सबके बराबर गुग्गुलु, सबको एकत्र कर घी डालके आँटाव जव गाढा हो जावे तव गोली बनायले इसको प्रातःकाल अथवा भोजनके समय चलावल विचारके देवे, तो अठारह प्रकारके कुष्ठ, कृमि, दुष्टव्रण, संग्रहणी, बवासीर, मुखरोग, गलेका रोग गृध्रसी, भ्रमरोग, गोला और कोष्ठगत व्याधी इनको यह गोली नाश करे॥

सर्पपादिवद्भूलन ।

सर्पपकरंजरजनीदारुनिशादारुमंजिष्ठाः । त्रिफलाचशठीश्वेता
मूर्वाप्रियंगुकाग्राह्याः॥ त्रिकटुत्रिगंधकेशरलाक्षाश्वैपांकृतं रजः
शुष्णम् । उद्भूलनेनक्तजपित्तजवातस्थितंवापि॥निस्तोदभेद
पिटिकंसर्वस्फुटनंविनाशयति ॥

अर्थ—सरसों, कंजाकेबीज, हलदी, दारुहलदी, देवदारु, मजीठ, हरड, बहेडा, आवला, कचूर, खैर, सपेद मूर्वा, फूलप्रियंगु, सोंठ, मिरच, पीपल, दालचिनी, इलायची पत्रज नागकेशर और लाख, इनका बारीक चूर्ण करके इसका कुष्ठ पर उद्भूलन करे तो रक्तजन्य पित्तजन्य, वातजन्य ऐसे कोठ, पीडा, फूटना और फुन्सी इन करके युक्त भी कुष्ठको नाश करे ॥

विडंगादिचूर्ण ।

विडंगत्रिफलाकृष्णाचूर्णलीढंसमाक्षिकम् ॥
हंतिकुष्ठकृमीन्मेहान्नाडीकुष्ठभगंदरान् ॥

अर्थ—वायुविडंग हरड बहेडा आवला और पीपल इनके चूर्णको सहतसै देवे तो कोठ, कृमि प्रमेह नाडीव्रण और भगंदर इनका नाश करे ॥

सर्वांगसुंदरस ।

भल्लातकसहस्रैकं त्रिफलावारिनिक्षिपेत् ॥ द्रोणमात्रेपचेत्तावद्याव
त्पादावशेषितं ॥ शर्करायादशपलान्येकंवाकूचिकापलम् ॥
तथैवात्रैवदेयानिपलानिदशगुगुलुः ॥ खदिरारिष्टमंजिष्ठा
बीजकंचेद्रवारुणी ॥ चित्रकंद्रेहरिद्रेचदशदारुहरीतकी ॥ भां
गीविचेतिसर्वेषांप्रत्येकंचपलार्थकम् ॥ प्रक्षिप्यगुटिकाकार्या
नाम्नासर्वांगसुंदरी ॥ प्रत्यहंभक्षयेत्कुष्ठीत्वेतां वदरमात्रया ॥
सर्वाण्येवाद्भेकुष्ठानिशीघ्रमेवव्यपोहति ॥

अर्थ—भिलाये १००० को तोड़ त्रिफलेके १०२४ तोले काठमें डालके पचावे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उसमें मिश्री ४० तोले, बावची, ४ तोले गुग्गुलु ४० तोले. और खैर नीम, मजीठ, विजैसार, इन्द्रायण, चित्रक, हलदी, दारु-हलदी, देवदारु, हरड, भारंगी और वच, ये प्रत्येक दौदो तोले डालके गोली बनाय लेवे, इसको सर्वांगसुंदरी वटी कहतेहैं, इसको कोठी मनुष्य नित्य प्रति बेरके बराबर सेवन करे तो संपूर्ण उमरकोठोंको नाशकरे ॥

कनकारिष्ट ।

खदिरकपायंद्रोणं सर्पिकुंभे निधाय येन मध्ये । पलिकां मात्रां क्षे-
प्यांकृत्वा तु तान्येव सूक्ष्मर्णतु ॥ त्रिफलात्रिकटुकरंजनिकनक-
त्वक्वाकुर्चीगुडूचीच।सविडंगमत्रमधुपलशतद्वयं प्रक्षिपेत्सर्वं ॥
धातव्याश्च फलान्यष्टौ क्वाथे चास्मिन्प्रदेयानि ॥ प्रातःप्रातस्तुपि
वेत्नाशयति चिरोत्थितं कुष्ठम् ॥ मासेन सर्वरोगान्विनिहंति च शोफमे-
हांश्च ॥ निर्जितकासश्चासोगुदकीलभगंदराद्रिनिर्मुक्तः । कनका-
रीष्टं प्रपिबन् भवति पुमान्कनककांतिश्च ॥

अर्थ—खैरका काठा १०२४ तोलेको धाँके वासनमें भरके उसमें हरड, वहेड आंबला सोठ, मिरच, पीपल, हलदी, धतूरा, दालचीनी, बावची गिलोय वायविडंग, इन प्रत्येकका चूर्ण चार २ तोलेले और सहत ८०० तोले धायके फूल ३२ तोले डालके रखदेवे, इसमेंसे प्रातःकाल पीयाकरे तो बहुत दिन-के कोठको नाशकरे एक महीनेमें संपूर्ण रोग सृजन, प्रमेह, खाँसी, श्वास, बवासीर, भगंदर इनसे छूट जावे, इस कनकारिष्टके सेवन करनेसे अंगकी कांति सुवर्णके समान होय ॥

वज्रतल ।

सप्तपर्णकरंजकं मालतीकरवीरजाः ॥ मूलसुहीशरीपाभ्यां
चित्रकास्फोटयोरपि ॥ करंजबीजं त्रिफलां त्रिकटुं रजनीद्वयम् ॥
सिद्धार्थकं विडंगं च प्रपुत्राटं च संहरेत् ॥ मूत्रपिष्टैः पचेत्तैलमेभिः
कुष्ठविनाशनम् ॥ अभ्यंगाद्ब्रह्मकं नाम नाडीदुष्टघ्नापहम् ॥

अर्थ—सतोना, कंजा, आक, मालती, कनेर, थूहर, और शिरस वृक्ष चित्रक वनमालती, कंजेके बीज, हरड, वहेडा, आंबला, सोठ, मिरच, पीपल हलदी, दारुहलदी, सपेद सरसों, वायविडंग, पमारके बीज, इनको गोमूत्रमें कल्क

कर इसमें तेल डालके सिद्ध करे इस तेलके लगानेसे यह वज्रतिल वज्रके समान कठोर कुष्ठको नाडीव्रण और दुष्ट ग्रण इनको नाश करे ॥

मंजिष्ठाद्य तेल ।

मञ्जिष्ठाग्निशाचक्रमर्दारग्वधपल्लवैः ।

तृणकस्वरसेसिद्धंतैलंकुष्ठहरंकटु ॥

अर्थ—मजीठ, कूट, हलदी पमारके बीज, और अमलतास इनके पत्ते और रोहिपतृण इनका स्वरस निकालके इसमें सरसोंका तेल सिद्ध करे यह कुष्ठको नाश करे ॥

श्वित्रकुष्ठकीचिकित्सा ।

श्वित्रिणोद्धतदोषस्यहृतरक्तस्यवासकृत् ॥ खदिरांबुयवान्ना

नांतृप्तस्यमलयूरसः ॥ सगुडःशस्यतेपानेयवाग्मंडभोजिनः ॥

अर्थ—सपेद कुष्ठका चारंबार रुधिर निकालके दोष नाश करे खैरका काटा तथा यवान्रदे तृप्त कर वावचीका रस गुड डालके खानेको देवे और भोजनको यवाग् देवे ॥

खदिरकाय ।

खदिरामलककपायंवाकुचिवीजान्वितंपिबेन्नित्यम् ।

शंखेंद्रुकुंदधवलंश्वित्रंहंतिहिक्ताच्चित्रम् ॥

अर्थ—खैरकी साल, आँवले इनका काटा वावचीका चूर्ण मिलायके पियावे तो शंख, कुंद, तथा चंद्रमाके समान सपेद कुष्ठका नाश करे ॥

त्रिफलादेलेप ।

त्रिफलानीलिकापत्रलोहचूर्णरसांजनम् ॥ श्वेतगुंजादंतितंतभ

स्मत्तुल्यंचमार्कवम् ॥ मेपीदुग्धेनसंपिप्यस्थापयेच्छोहभाजने ॥

दिनमेकंततोर्लिपेन्मुहुःश्वित्रेष्वनुक्रमात् ॥ श्वित्राण्यनेनलेपे
ननिजवर्णत्यजंतिवै ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आँवला, नीलकापत्ता, लोहभस्म, रसांत, सपेद गुंजा, हापीदांतकी भस्म, लीलायांथा, भांगरा इन सबको एकत्र करके चकरीके दूधसे खरल करे, इस फल्फको लोहेके बरतनमें एक दिन भरके धर देवे इसरो सपेद कुष्ठ पर चारंबार लेप करे, तो अपना वर्ण छोड देवे ॥

सपेदकुष्ठकोअसाध्यत् ।

श्वेतश्वित्रादिकुष्ठानिह्यसाध्यानिप्रयत्नतः ॥

तस्मात्तेपामुपायश्चनात्रैवल्लिखितोमया ॥

अर्थ—सपेद कुष्ठ, और श्वित्रकुष्ठ, इत्यादिक कुष्ठ असाध्य कहे हैं इसीसे विशेष करके प्रयत्न करके उनका उपाय भी नहीं लिखा ॥

बल्यादि लेप ।

वल्लिवेलाग्निभल्लातदंतिशम्याकर्निवजैः ।

कांजिकेपेपितैलेपःश्वेतकुष्ठविनाशकृत् ॥

अर्थ—गंधक, वायविडंग, चित्रक, भिलाए, दंतीकी जड़, अमलतास, निबोरी, इनको कांजीमें पीसके लेप करे तो सपेद कुष्ठका नाश करे ॥

हयादि लेप ।

हयवेलाग्निभल्लातदंतीशम्याकर्निवजैः ॥

कांजिकैःपेपितैलेपःश्वेतकुष्ठविनाशकृत् ॥

अर्थ—असगंध, वायविडंग, चित्रक, भिलाए, दंती, अमलतास. निबोरी, इनको कांजीमें पीसके लेप करे तो सपेद कुष्ठका नाश करे ॥

तालकादि लेप ।

तालकःशाणमात्रःस्याच्चतुःशाणाचवाकुची ।

गोमूत्रयुक्तं तच्चूर्णलेपनाच्छ्वित्रनाशनम् ॥

अर्थ—हरताल ४ मासे वावची १६ मासे इनको गोमूत्रमे बारीक पीस लेप करे तो श्वित्रकुष्ठको नाश करे ॥

गुंजाफलादि चूर्ण ।

गुंजाफलाग्निचूर्णस्यलेपनंश्वेतकुष्ठनुत् ।

शिलापामार्गभस्मादिलेपाच्छ्वित्रविनाशनम् ॥

अर्थ—गुंजा, चित्रक, इनका लेप और मनसिल आंगाकी रास इनका लेप श्वित्रनाशक है । मर्जाठ, कुटज, इत्यादि वातरक्त प्रकरणमें मंजिष्ठादि काढा जो कहाहै वो कुष्ठ रोगपर देवे ॥

गुंजादि लेप ।

गुंजांकुष्ठवचानिवैवारिपिष्टैः प्रलेपनात् ।

श्वेतापरांजितामूलंहंतिश्वित्रमसंशेयम् ॥

अर्थ—गुंजा, फूठ, वच, नीमकी छाल, इनको जलमें पीस लेप करे अथवा सपेद सारिवा सफेद निर्गुडी इनकी जडका लेप श्वित्रनाशक है ॥

अयोरजादि लेप ।

सायोरजः कृष्णतिलांजनानिसावल्गुजान्यामलकानिजग्ध्वा
पिष्ट्वाहिभृंगस्यसकृद्रसेनहन्यात्किलासंपरिघृष्टलेपात् ॥

अर्थ—लोहभस्म, कालेतिल, रसोत, वावची, और आवले, इनके चूर्णको भांगरेके रसमें खरल करके श्वित्रकुष्ठको खुजायके लेप करे तो किलास कुष्ठ और श्वित्रकुष्ठ नष्ट होय ॥

विष तैल ।

नक्तमालंहरिद्रेद्रेअकैतगरमेवच । करवीरवचाकुष्टमास्फोता
रक्तचंदनम् ॥ मालतीसप्तपर्णचमंजिष्ठासिंधुवारिकाः । एषा
मर्धपलान्भागान्विपस्यद्विपलंभवेत् ॥ चतुर्गुणेषांमूत्रतैल
प्रस्थंविपाचयेत् । श्वित्रविस्फोटकिटिभकोठलूताविचार्चि
काः ॥ दद्रूकच्छूविकारश्चयेत्रणाविपदूषिताः । विषतैलमिदं
नामसर्वत्रणविशोधनम् ॥

अर्थ—अमलतास, हलदी, दारुहलदी, आक, तगर, कनेरकी जड, वच, फूठ, सपेद सारिवा, लालचंदन, मालती, सतोना, मजीठ, निर्गुडी, ये प्रत्येक दौ तोले और सिंगियाविष ८ तोले, सबको एकत्रकर चौगुने गौके मूत्रमें ये पदार्थ ६४ तोले तेल डालके पचावे, तो यह श्वित्रकुष्ठ, विस्फोटक, किटिभ, फोठ, लूता, विचार्चिका, दाद, कच्छू, दुष्टत्रण इनको शोधन करके नाश करे इसको विषतैल कहते हैं ॥

ज्योतिष्मतीतैल ।

मयूरकक्षारजलेसप्तकृत्वः परिश्रिते ।

सिद्धंज्योतिष्मतीतैलंमभ्यंगात्श्वित्रनाशनम् ॥

अर्थ—लीलाधोथेके जलमें सातवार फांगनीका तेल पचावे इसको देहमें लगावे तो सपेद फोठको नाशकरे ॥

शशिलेखावटी ।

शुद्धसूतसमंगंधंतुल्यंचमृतताम्रकम् । मर्दितंवाकुचिकाथै

दिनैकंवटकीकृतं ॥ निष्कमात्रांसदाखादेच्छिन्नघ्नोशशिलेखि
काम् । वाकुचीतैलकर्पकंसक्षौद्रमनुपाययेत् ॥

अर्थ-शुद्धपारा १ भाग गंधक १ भाग तांबेकीअस्म २ भाग इस प्रकार
सबको एकत्र कर वावचीके फाँटमें एकदिन घोंटे इसकी छः २ मासेकी गोली
बनावे, एक गोलीको रसाय वावचीका तेल, सहत डालके ऊपरसे पीवे तो
सपेद फाँटकी नाश करे, यह शशिलेखाके समान है ।

कुष्ठरोगपर पथ्य ।

पक्षात्पक्षाच्छर्दनानिमासान्मासाद्विरेचनम् । नस्यंय्यहाय्यहा
न्मासात्पष्टेपष्टेस्रमोक्षणम् ॥ घृतलेपःपुराणाश्चयवगोधूमशा
लयः । मुद्गाढक्यौमसूराश्चमाक्षिकंजांगलामिपम् ॥ आपाठ
पलवेत्रायपटोलंबृहतीफलम् । काकमाचीनिवपत्रंलशुनंहि
लमोचिका ॥ पुनर्नवापेशुंगीचक्रमर्ददलानिच । भल्लातकं
फलंतालंखदिरश्चित्रकोवरा ॥ जातीफलंनागपुष्पंकुंकुमंप्रत
तंहविः । कोशातकीकरंजौचशालसर्पपनिवजं ॥ तैलंतथे
गुदोत्पन्नंलघून्यन्यानियानिच । स्नेहास्सरलदेवाह्वशिशपा
गुरुसंभवाः ॥ मूत्राणिगोखरोद्गाश्वमहिषीजनितानिच ।
कस्तूरीगंधसारश्चतिकातिक्षारकर्मच ॥ यथादोषंसमस्ता ।
निपथ्यान्येतानिकुष्ठिनाम् ॥

अर्थ-पक्ष २ पीछे घमन करना, मास २ पीछे विरेचन अर्थात् जुलाब
देना, तीन २ मास पीछे नस्य, छठे २ मासमें रुधिरका निकालना, घीका
लेप, पुराने जी, गेहूँ, शाली चावल, मूंग, अरहर तथा भसूर, शहद, जंगली
जीवोंका मांस, आपाठ फल, बेंतकी फाँपल, परवर, कटेरीका फल, कवैया,
नीबके पत्ते, लहसन, हिलमोचिका शाक, पुनर्नवा, मेढासिगी, पमारके पत्ते,
भिलावा, पका ताड़फल, कत्या, चीता, त्रिफला, जायफल, नागकेसर,
केसर, पुराना घी, तोरई, कंजुआ, तिल, सरसों, नीब, हिंगोट इन सबका
तेल, अलसी, हलके पदार्थ, सरल धूप, देवदारु, ससों, अगर इनके तेल, गौ,
गधा, ऊँट, घोडा, भैस इनके मूत्र, कस्तूरी, चन्दन, चरपरी वस्तु, सार
लगाना ये सब दोषके अनुसार फाँडी मनुष्योंके लिये पथ्य कहे गये है ॥

कुष्ठरोगमें अपथ्य ।

अन्नपानंहितंकुष्ठेनत्वम्ललवणोपणम् ।

दधिदुग्धगुडांश्चापितिलमापांस्त्यजेन्नरः ॥

अर्थ—कुष्ठरोगमें संपूर्ण अन्नपान हितकारी हैं परन्तु खट्टा, लवण, गरम, दधि, दुग्ध, गुड, तिल, उडद इनको कुष्ठरोगवाला मनुष्य त्याग देवे ॥

अपथ्य ।

स्वेदंच्यवायंवमिमिक्षुदण्डंव्यायाममम्लानितिलांश्चमापान् ।

अन्नपमांसं दधिदुग्धमद्यंगुडंचकुष्ठामयिनस्त्यजेयुः ॥

अर्थ—पसीना स्त्रीसंग, वमन, गन्ना, कसरत, खट्टा, तिल, उडद, अन्नप-देशके जीवोंका मांस, दधि, दुग्ध, मद्य, गुडःइन संपूर्णोंको कुष्ठरोगवाले मनुष्य त्याग देवे ॥

इति भीष्मायुर्वेदोद्गायत्रेवृहत्त्रिषण्डुरलाकारे कुष्ठरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ॥

शीतपित्त ।

शीतपित्तनिदान ।

शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदुष्टौकफमारुतौ ।

पित्तेनसहसंभूयवहिरंतर्विसर्पतः ॥

अर्थ—शीतल पवनके लगनेसे कफ वायु दुष्ट होकर पित्तसे मिल भीतर (रक्तादिकोंमें) और बाहर त्वचामें विचरे ॥

पूर्वरूप ।

पिपासारुचिहृल्लासदेहसादांगगौरवम् ।

रक्तलोचनतातेपांपूर्वरूपस्यलक्षणम् ॥

अर्थ—प्यास, अरुचि, मुखमेंसे पानी गिरना, अंगगलने, और भारी होना, नेत्रमें लाली ये पूर्वरूप शीतपित्तके जानने ॥

उदरद लक्षण ।

वरटीदृष्टसंस्थानशोथः संजायतेवहिः ॥ संकंडूस्तोद्वहुलश्च्छ

दिज्वरविदाहवान् । उदरदमितितंविद्याच्छीतपित्तंतथापरं ॥

अर्थ—वरटी (ततैया) के फाटनेके समान त्वचाके ऊपर चकत्ता होना, उन्में खुजली चले, और सूई चुभानेकीसी पीडा होय, इसके संयोगसे वमन,

संताप और दाह होय, इस रोगको उदरद कहते हैं, कोई इस्को शीतपित्त कहते हैं, इस्को लौकिकमें पित्ती कहते हैं इसमें खुजली होय है, सो कफसे जानना चोटनी वादीसे होय है और ओकारी संताप और दाह ये पित्तसे होते हैं ऐसे जानना ॥

शीतपित्त और उदरदका भेद ।

वाताधिकंशीतपित्तमुदरदस्तुकफाधिकः ॥

अर्थ—शीतपित्तमें वात प्रधान, तथा उदरद कफ प्रधान जानना ॥

उदरदके अन्य लक्षण ।

सोत्संगैश्वसरागैश्वकंडूमद्रिश्वमंडलैः ।

शैशिरःकफजोव्याधिरुदरदःपरिकीर्तितः ॥

अर्थ—सरदीसे कफका कोप होकर अंगके ऊपर लाल लाल चकत्ता उठें उनमें खुजली बहुत चले और वे मंडलकेसा आकार गोल हों, बीचमें कुछ नीच और पास ऊंचे होय, इस रोगको उदरद कहते हैं ॥

बीठलक्षण ।

असम्यग्वमनोदीर्णापित्तंश्लेष्मान्ननिग्रहैः ॥ मंडलानिसकण्डूनि

रागवंतिवहूनिच ॥ उत्कोठःसानुबंधश्चकोठइत्यभिधीयते ॥

अर्थ—वमन कारक औषध सेवन करनेसे, अच्छी रीतिसे वमन न होनेसे, पित्त और कफ क्षुपित होनेसे अथवा स्वतः वमनके वेग आये भयेको रोकनेसे देहके ऊपर लाल और बहुत चकत्ता उठें, उनमें खुजली चले, इस रोगको उत्कोठ कहते हैं, और यह चारवार होय, और जो क्षणभरमें उत्पन्न होकर नाश होजाय उसको कोठ कहते हैं ॥

उत्कोठ और कोठ ।

आरनालैश्वसूतैश्चआसुरीलवणेनच ॥ वर्षाकालेप्रकुप्येतत

थादुष्टैश्चकारणैः ॥ उत्कोठःसानुबंधश्चकोठइत्यभिधीयते ॥

अर्थ—काजी खानेसे, राई और सामुद्र निमक बहुत खानेसे और दूषित कारणोंसे वर्षाकालमें क्षुपित होनेवाला चीफर फैला हुवा जो उत्कोठ अर्थात् गीला कुछ उसको कोठ चक्राकर कोठें कहते हैं ॥

वमन ।

अभ्यंगःकटुतैलेनस्वेदश्चोष्णेनवारिणा ।

तथासुवमनंकार्यपटोलारिएवासकैः ॥

अर्थ-सरसोंके तेलकी मालिस कर गरम जलसे शैक कर तथा पटोल पत्र नोम और अडूसा इनका काढा घमन होनेके वास्ते देवे ॥

त्रिफलादि रेचक ।

त्रिफलापुरकृष्णाभिर्विरेकश्चप्रशस्यते ।

सर्पिःपीत्वाभहातिक्तकार्यशोणितमोक्षणम् ॥

अर्थ-शीत पित्त रोगीको हरड बहेडा आँवला गूगल और पीपल इनका जुलाब देवे तथा महातिक्त घृत पीनेको देवे और रुधिर निकाले ॥

अभ्यंग ।

सक्षारसिंधुतेलस्यगात्राभ्यंगःप्रकल्पयेत् ॥

अर्थ-तेलमें संधानिमक डालके देहमें मालिस करे तो शीतपित्त दूर होय ॥

गंभारीफलकल्क ।

गंभारिकाफलंकल्कंशुष्कमुत्स्वेदितंपुनः ।

क्षीरेणशीतपित्तघ्नंखादितंपथ्यसेविना ॥

अर्थ-कंभारीके सूखे फलोंको आटायके पीस डाले उस कल्कको दूधमें मिलाय देवे और पथ्य करे तो शीतपित्तका नाश करे ॥

यष्ट्यादिकाप ।

यष्टीमधुकपुष्पंचसरास्नंचंदनद्वयम् ।

निर्गुडीसकणाक्काथंशीतपित्तहरंपिबेत् ॥

अर्थ-मुलहठी, महुआके फूल, रास्ना, चन्दन, रक्तचन्दन, निर्गुडी, पीपल इनका काढा शीतपित्तनाशक है ॥

अमृतादिकाथ ।

अमृतारजनीनिबधनायासैः पृथक्शृतम् ।

प्राणिनांप्राणिदं चैतच्छीतपित्तेसमाचरेत् ॥

अर्थ-गिलोय, हलदी, नीमकी छाल, धनिया घमासा इन प्रत्येकका काढा शीत पित्त पर देवे तो प्राणियोंके प्राणका संरक्षण करे ॥

गुडादियोग ।

सगुडंदीप्यकंयस्तुखादेच्चपथ्यभुङ्गरः ।

तस्यनश्यातिसाप्तहादुददःसर्वदेहजः ॥

अर्थ—गुड और अजमायन इनको एकत्र कर सात दिन खाय और पच्य-
से रहे तो सर्व देहका उदर शमन होय ॥

सामान्यचिकित्सा ।

यवागूंपाययेद्वापिसव्योपांक्षीरसंयुतां ।

पिप्पलीवर्धमानांवालगुनंवाप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच पीपल इनका चूर्ण तथा दूध डालके यवागूं पीवे अथ
वा वर्द्धमान पीपल अथवा लहसन देवे ॥

संध्यादिलेप ।

ससैन्धेकेनकोष्णेनसर्पिपालेपमाचरेत् ।

सुरसास्वरसैर्वाथलेपयेत्परमौषधं ॥

अर्थ—सैधानिमक डालके घीको थोडा गरम करके देहमें मालिस करे
अथवा तुलसीके रसकी मालिस करे तो उदर दूर होय ॥

सिद्धार्यादिउद्धर्चन ।

सिद्धार्थरजनीकुप्टेःप्रपुत्राटतिलैःसह ॥

कटुतैलेनसंमिश्रमेतदुद्धर्तनंहितम् ॥

अर्थ—सनेद सरसों, हलदी, कूठ, पमारके बीज तिल इनका चूर्ण सरसोंके
तैलमें मिलायके देहमें लगावे तो उदरपर उत्तम है ॥

सामान्यचिकित्साक्रम ।

शीतपित्तेउदरेचयथाकोठाभिधेगदे ।

कृमिदद्गुहरःकार्यःशीतपीत्तेखिलःक्रमः ॥

अर्थ—शीतपित्त, उदर, और कोठ, इस व्याधिके नाशनार्थ कृमि, दाद
इनकी नाशक सर्व विधि करे अरनीकी जडका चूर्ण करके घीके साथ सेवन
करे तो शीतपित्त, उदर, और कोठ इनको सात दिनमें नाश करे ॥

निवपत्रयोग ।

निवस्यपत्राणिसदाघृतेनधात्रीविमिश्राण्यथवाप्रयुज्यात् ।

विस्फोटकोठक्षतशीतपित्तं कण्डूस्त्रपित्तंसकलानिहन्यात् ॥

अर्थ—नींबके पत्तोंको पीस घीके साथ, अथवा आँबलेके साथ, खाय तो
विस्फोट, उदर, कोठ, क्षत, शीतपित्त, खुजली, रक्तपित्त, ये सब नाश होय ॥

कुष्ठपरतद्वर्जन ।

कुष्ठेहरिद्रेसुरसंपटोलनिवाश्वगधेसुरदारुशिशुम् । ससर्पपंतुंबरु
धान्यकंत्वक्समानिसंगृह्यत्रिचूर्णयेद्विषक् ॥ तैस्तक्रपिष्टैः प्रथ
मंशरीरतैलाक्तमुद्वर्तयितुंयतेत् । तथास्यकंडूपिटिकासको
ठकुष्ठानिशोफश्चशमंत्रजंति ॥

अर्थ—कूट, हलदी, दारुहलदी, तुलसी, पटोलपत्र, नीबकी छाल, अतगंध, देवदारु, सहजना, सिरस, तुंबरु, धनिया, दालचीनी इनको समान भागले चूर्ण करके छालमें पीस प्रथम सरसोंका तेल देहमें लगायके फिर इसको चुपडे, तो खुजली, पिटिका, कोठ, कुष्ठ, सूजन, ये शांति होय ॥

शीतारि रस ।

रसस्यगंधाद्विगुणंप्रगृह्यपुनर्नवावाह्निरसैर्विमर्द्या पक्वार्कपत्रोत्थ
रसेनतस्माद्विपाचयेदष्टगुणेनपश्चात् ॥ रसार्धभागेनविपंच
दद्याद्विपाचयेद्वह्निजलैःक्षणंतत् । शीतारिसंज्ञोहिरसोयमस्य
बलंतदर्धयदिवाद्रैकेन । मरीचचूर्णेनघृतश्रुतेनसेवेतमासंसघृतं
सपथ्यम् ॥

अर्थ—पारा १ भाग, गंधक २ भाग ले पुनर्नवाके और चित्रकके रसमें खरल करे फिर पके हुए आकके पत्तोंका रस आठगुना लेय, इसमें पक्व करके पारेसे आधा सिंगिया विप डालके फिर चित्रकके रसमें एक क्षणमात्र ओं-टावे, तो यह शीतारिरस सिद्ध होय, इसको ३ रत्ती अथवा दो रत्ती अदर-खके रसमें अथवा घी, मरिचका चूर्ण एक मासे पर्यंत खाय ऊपरसे घृतश्रुत भोजनका पथ्य करे तो शीतवात नष्ट होय ॥

स्पर्शवातलक्षण ।

अंगेषुतोदनंप्रायोदेहस्पर्शनविंदति ।

मंडलानिचदृश्यंतेस्यर्शवातस्पलक्षणम् ॥

अर्थ—अंगोंमें पीडा होनी, प्रायः शरीरको स्पर्श नहीं सहना शरीरमें मंड-लोंका दीखनाये स्पर्शवातके लक्षण है ॥

तालादे गुठी ।

तालंरसस्याष्टगुणंजयांचविमर्द्यत्नाद्धटिकांगुडेन ।

निबद्धचतांसेवयमासयुग्मादिनोदयेस्यर्शविकारस्तुत्ये ॥

अर्थ-पारा १ भाग हरताल ८ भाग च हरड तीनोंको पीसके गुडमें गोली बनावे
सूर्योदयके समय दो महीने पर्यंत सेवन करे तो स्पर्शवातका विकार दूर होय ॥
रसादि गुटी ।

अष्टभागोरसःशुद्धोविपतिर्दोर्दशैवतु । गंधकस्यदशद्रौत्रिकदु
त्रिफलयोस्त्रयः ॥ बन्धिचित्रकमुस्तानां वचाश्वगंधयोरपि । रेणु
काविपकुपानांपिप्पलीमूलनागयोः ॥ एकैकस्तुभवेद्भागइति
ग्राह्याःक्रमेणच । गुडश्चतुर्विंशतिःस्याद्द्वटिकावदराकृतिः । क्र
मेणवानुसेवेतस्पर्शवातापनुत्तये ॥

अर्थ-शुद्ध पारा ८ कुचला १० गंधक १२ सोंठ १ मिरच १ पीपल १
त्रिफला ३ भिलाये, चित्रक, नागरमोथा, वच, असगंध, रेणुकवीज, सिंगिया
विप, कूठ, पीपरामूल, नागकेशर इनको एक एक भागले गुड २४ भाग इन
सबको एकत्र खरल कर ढेरके बराबर गोली बनाके क्रमसे १-२-३-इस
प्रकार खायतो स्पर्शवातको नाशकरे ॥

पथ्य ।

शालिमुद्गकुलित्थाश्चकारवेष्टमुपोदिका । वेत्राग्रंततनीरंचपि
त्तश्चेप्महराणिच ॥ शीतपित्तोदर्र्दकोठरोगाणांपथ्यमीरितम् ॥

अर्थ-चावल, मूंग, कुलथी, ये अन्न और करेला, पोईशाक, वेत, ये शाक
और गरम जल पित्त कफोंको हरनेवाले हैं, क्योंकि शीतपित्त, उदर्र्द, कौठ,
इन रोग वालोंको ये पथ्य कहे हैं ॥

अपथ्य ।

स्नानमातपमम्लंचगुर्वन्नंचविवर्जयेत् ॥

अर्थ-स्नान, तपना, खट्टा, भारी अन्न, पूर्वं कहा रोगी इनको त्याग देवे ॥

इति श्रीबृहन्नियन्त्ररत्नाकरे शीतपित्तोदर्र्दकोठरोगाणां निदानविक्रित्ता समाप्ता ।

अम्लपित्त ।

अम्लपित्तका निदान ।

विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तंप्रकोपिपानान्नभुजोविदग्धम् ।
पित्तंस्वहेतूपचितंपुरायत्तदम्लपित्तंप्रवदंतिसन्तः ॥

अर्थ-विरुद्ध (क्षीरमत्स्यादि) और दुष्टान्न, खट्टा, दाहकारक, पित्त बढ़ा-
नेवाला ऐसा अन्नपानके सेवन करनेसे वर्षादि ऋतुमें जलोपाधिगत विदाहा-
दि स्वकारणसे संचित भया पित्त दुष्ट होय उसको अम्लपित्त कहते हैं ॥

लक्षण ।

अविपाकःकुमोत्क्लेदतित्ताम्लोद्गारगौरवैः ।

हृत्कंठदाहारुचिभिश्चाम्लपित्तं वदेद्रिपक् ॥

अर्थ-अन्नका न पचना, विनापरिश्रम करे परिश्रमसा मालूम हो, वमन,
कड़वी, तथा खट्टी डेकार आवे, देह भारी रहे, हृदय और कंठमें दाह होय,
अरुचि होय, ये लक्षण होनेसे अम्लपित्त वेद्य जाने ॥

अम्लपित्तभेदोंमें एक अधोगत दूसरा उर्ध्वगत उनमें अधोगतके लक्षण ।

तृट्दाहमूर्च्छाभ्रममोहकारीप्रयात्यधोवाविविधप्रकारम् ।

हृत्छासकोठानलसादकर्णस्वेदांगपीतत्वकरंकदाचित् ॥

अर्थ-अम्लपित्त अधोगत होनेसे प्यास, दाह, मोह (इन्द्रियमनोमोह)
मूर्च्छा, भ्रम, मोह, सूखीरद, मन्दाग्नि, कौठ कानमें पसीना हेहमें पीलापन ये
लक्षण होकर गुदाके द्वारा फाले, लाल, दुर्गन्धियुक्त अनेक वर्णके पित्त गिरें ॥

कफपित्तजअम्लपित्त ।

करचरणदाहमौण्यमहतीमरुचिज्वरंचकफपित्तम् ।

जनयतिकंडूमंडलपिटिकाचितगात्ररोगचयम् ॥

अर्थ-हाथ पैरोंमें दाह, अंगोंमें गरमी, अन्नमें अरुचि, ज्वर, कंडू (सुजली),
रुधिरके विगडनेसे देहमें मंडल हो; सिकडों पिटिका और अविपाकादि अनेक
उपद्रव, ये लक्षण कफपित्तसे होते हैं ॥

कफपित्तलक्षण ।

भ्रमोमूर्च्छारुचिच्छादिरालस्यंचशिरोरुजः ।

प्रसेकोमुखमाधुर्यश्लेष्मपित्तस्यलक्षणम् ॥

अर्थ-भ्रम, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, आलस्य, मस्तकपीडा, मुखसे पानी
बहना, मुखमें मिठास ये कफपित्तयुक्त अम्लपित्तके लक्षण हैं ॥

अम्लपित्तचिकित्सा ।

गुडूचीचित्रकारिष्टपटोलैःकथितंपिबेत् ॥

क्षौद्रयुक्तंनिहंत्येतच्छर्दिपित्ताम्लसंभवाम् ॥

अर्थ-गिलोय चित्रककी छाल, नींबकी छाल, पटोलपत्र इनके काष्ठमें
त डालके पीवे तो अम्लपित्तसंबंधी वमन होना दूर होय ॥

पटोलादिकाप ।

पटोलत्रिफलानिवकाथंक्षौद्रयुतंपिवेत् ।

अम्लपित्तकफछर्दिदाहंशूलकफंजयेत् ॥

अर्थ—पटोलपत्र हरड बहेडा आंवला नीमकी छाल इनके काठमें सहत डालके देवे तो अम्लपित्त, ज्वर, वमन, दाह, शूल और कफ इनको नाशकरे ॥
ऊर्ध्वगतअम्लपित्तके लक्षण ।

वातंहरित्पीतकनीलकृष्णमारुत्तरक्तंभवतिविचास्रम् ।

मांसोदकाभंत्वतिपिच्छलाभंश्लेष्मानुयातंविधिंरसेन ॥

भुक्तेविदग्धेत्वथवाप्यभुक्तेकरोतितित्ताम्लवर्भिकदाचित् ।

उद्गारमेवंविधमेतिकंठेहृत्कुक्षिदाहंशिरसोरुजंच ॥

अर्थ—ऊर्ध्वगत पित्तसे हरे, पीले, नीले, काले, तामेके रंगके, लाल, अत्यंत खट्टा, मांस धोये हुये जलके समान अत्यंत गाढा, स्वच्छ, कफ मिश्रित, खारी, कपेला आदियुक्त ऐसे पित्त गिरे कभी कभी भोजन करा अत्र विदग्धावस्थाको प्राप्त होकर अथवा भोजन करनेके पहिले कहुई, खट्टी ऐसी वमन होय तथा ऐसीही डकारें आवै, कंठ, कूख और हृदय इन्में दाह होय माथा दूखे ॥
अम्लपित्तमें साध्यासाध्य ।

रोगोयमम्लपित्ताख्योयत्नात्संसाध्यतेनवः ।

चिरोत्थितोभवेद्याप्यःकृच्छ्रसाध्यःसकस्यचित् ॥

अर्थ—यह अम्लपित्त रोग नया होय तो यत्न करनेसे साध्य होय और बहुत दिनका होय तो याप्य जानना और जो अपथ्य सेवन करनेवाला पुरुष है उसके यह अम्लपित्त रोग कृच्छ्रसाध्य होय है ॥

अम्लपित्तको वातकफसर्ग ।

सानिलंसानिलकफंसकफंतच्चलक्षयेत् ।

दोषलिंगेनमतिमान्भिपङ्मोहकरंहितत् ॥

अर्थ—वातयुक्त अम्लपित्त, वातकफयुक्त, अम्लपित्त और कफयुक्त अम्लपित्त ऐसे तीन प्रकारके अम्लपित्त बुद्धिमान् वैद्य दोषोंके लक्षणोंसे जाने । कारण इसका यह है कि ऊर्ध्वगत, अम्लपित्तमें छर्दि (रह) रोगका भास होय है और अधोगत अम्लपित्तमें अतिसारकीसी चेट्टा मालूम होय है । इसीसे वैद्यको इस रोगकी सूक्ष्म रीतिसे परीक्षा करनी चाहिये ॥

वातयुक्तअम्लपित्त ।

कंपप्रलापमूर्च्छाचिमिचिमिगात्रावसादशूलानि ।

तमसोदर्शनविभ्रमविमोहहर्पाश्ववातयुते ॥

अर्थ—वातयुक्त अम्लपित्तमें कंप, प्रलाप, मूर्च्छा, चिमचिमा, (चोंटी काटनेसे प्रगट खुसलीके समान) देहग्लानि, पेटदूखना, नेत्रोंके आगे अंधकार दीखै, भ्रांति होना, इन्द्रियमनको मोह, रोमांच खडे हों, ये लक्षण होते हैं ॥

वातकफयुक्त अम्लपित्त ।

उभयमिदमेवचिह्नमारुतकफसंभवेभवत्यम्ले ॥

अर्थ—वातकफयुक्त अम्लपित्तमें ऊपर कहेद्वये दोनोंके लक्षण होतेहैं ॥

कफयुक्त अम्लपित्त ।

कफानिष्ठीवनगौरवजडताऽरुचिशीतसादवमिलेपाः ।

दहनबलसादकडूर्निद्राचिह्नकफानुगते ॥

अर्थ—कफयुक्त अम्लपित्तमें कफके डेला गिरें शरीरका अत्यंत जडपना, अरुचि, शीतलगे, अंगग्लानि, वमन, मुख कफसे लिहसारहै, मंदामि, बलनाश, खजली और निद्रा ये लक्षण होते हैं ॥

गुडादि मोदक ।

गुडापिप्पलिपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकःकृतः ।

पित्तश्लेष्मापहःप्रोक्तोमंदाग्निचापिदीपयेत् ॥

अर्थ—गुड, पीपल, हरड, ये समान भागले इनका लड्डू बनावे तो पित्त-कफ, इनका नाशक तथा मंदाग्नि दीपन करनेवाला है ॥

अम्लपित्तकी सामान्य चिकित्सा ।

पूर्वतुवमनंकार्यपश्चान्मृदुविरेचनम् ।

कृतवांतिविरेकस्यसुस्निग्धस्यानुवासनम् ॥

अर्थ—अम्लपित्तवालेको प्रथम वमनकारक औषध देवे, फिर हलका रेचन देवे, वांति और रेचन देके स्नेहपान करे, फिर अनुवासन वस्ति देवे ॥

प्रकारांतर ।

अस्थापनंचिरोत्थेस्मिन्देयंदोषाद्यपेक्षया ।

दोषसंसर्गजकार्यमौषधाहारकल्पनम् ॥

अर्थ—बहुत दिनके अम्लपित्तमें दोषादिकोंको देखके निरूहवस्ती देवे, और दोषसंसर्गनाशक ऐसे आहार तथा औषधकी वैद्य कल्पना करे ॥

प्रकारांतर ।-

उर्ध्वदेहस्थितवांत्याप्यधःस्थरेचनैर्हरेत् ।

प्राचनंतिक्तविहितंपथ्यंचपरिकल्पयेत् ॥

अर्थ—उर्ध्व देहस्थित अम्लपित्तवालेको वमन देवे, अधोगतको दस्त करावे तथा कड़ुई औषधोंका पाचन और पथ्य देवे ॥

अन्न ।

विकारान्यवगोधूमकृतानूतीक्ष्णविर्जितान् ।

भक्षयेल्लाजसक्तूंश्चसिताक्षौद्रयुतापिवेत् ॥

अर्थ—जों गंहुके पदार्थ तीक्ष्णपदार्थके विना भक्षण करे तथा खांड और सहत डालके खीलोंको खाय ॥

सामान्य चिकित्सा ।

अम्लपित्तेप्रयोक्तव्यःकफापित्तहरोविधिः ।

गुडकूष्मांडकचैवतथाखंडामलक्यापि ॥

अर्थ—अम्लपित्त पर कफपित्तनाशक उपचार करे, गुड, और पेठा, अथवा मिश्री और आंवलको मिलायको देवे ॥

वमन और विरेचन ।

अम्लपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवारिणा । कारयेन्मदनक्षौद्रसिंधु

युक्तंततोभिपक् । विरेचनंत्रिवृच्चूर्णमधुनात्रिफलाद्रवैः ॥

अर्थ—अम्लपित्त पर पटोलपत्र, नीवकीछाल,मैनफल इनके काठेमें सैधानिमक डालके वमन होनेके वास्ते देवे, और निसोयका चूर्ण त्रिफलेके काठेमें डालके सहत मिलाय रेचन होनेके वास्ते देवे ॥

सामान्य चिकित्सा ।

कृतवमनविरेकस्यापिदोषोपशांतिर्भवतिनयादिकायेरक्तमोक्ष

श्वयुक्त्या । कृतशिशिरविलेपस्याम्लपित्तघ्नभक्ष्यौदनसमुदित

तृप्तेर्वातरक्षाचकापि ॥

अर्थ—अम्लपित्तमें वमन, रेचन देनेसे दोष यदि शांति न होयतो उस रोगीका रुधिर निकाले, तथा शीतल लेपकरे, तथा अम्लपित्तनाशक भक्ष्य पदार्थ, अन्न इत्यादिक देकर तृप्ति करे, तथा वादीका संरक्षण करे ॥

अम्लपित्तके दाहपर ।

ज्वलंतमिवचात्मानमन्यतेयोम्लपित्तवान् ।

तस्यैवशोधनंपथ्यंनशांतिःशोधनंविना ॥

अर्थ—जो अम्लपित्तवाला अम्लपित्तसे अपनी देहको जलती हुईसी जाने उसको शोधन हितकारी है, तथा बिनाशोधन (वमन विरेचन) के शांति नहीं होय ॥

द्राक्षादि गुटिका ।

क्षाद्रापथ्येसमेकृत्वातयोस्तुल्यांसितांक्षिपेत् । संकुट्याक्षद्र

यमितांपिटिकांकारयेद्विपक्व ॥ तांखादेदम्लपित्तातोहृत्कं

ठदहनापहा । तृणमूर्च्छाभ्रममंदाग्निनाशिनीचामवातहा ॥

अर्थ—दाख और हरड ये समान भाग लेवे तथा दोनोंके समान मिश्री मिलाय एकत्र कूट उसकी तीन २ तोलेकी गोली बनायके सेवन करे तो अम्लपित्तसे पीडित, तथा हृदय, गला इनकी जलन, प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, मंदाग्नि और आमवात इनको नाश करे ॥

नारिकेरस्रड ।

कुडवमितमिहस्यान्नारिकेलंसुपिष्टंपलपरिमितसर्पिः पाचितं

तुल्यखंडम्॥निजपयसितदेतत्प्रस्थमात्रेविपक्वंगुडवदथसुशीते

शाणमात्रंक्षिपेच्च॥धान्याकपिप्पलिपयोदतुगाद्विर्जरैः साकंत्रि

जातमिभकेसरवद्विचूर्ण्य । हंत्यम्लपित्तमरुचिक्षयमस्रपित्तंशू

लंवांसकलपौरुपकारिपुंसाम् ॥

अर्थ—बारीक कर्तरी हुई नारियलकी गिरी १५ तोलेको चार तोले धीमे अच्छी रीतिसे भूनके उसमें बराबरकी मिश्री मिलावे और ६४ तोले नारियलका जल डालके गुडके समान पाक करे, फिर इसमें धनिया, पीपल, नागर-मोथा, वंशलोचन, जीरा, काला जीरा, दालचीनी, इलायची, पत्रज, नाग-केशर ये प्रत्येक चूर्ण करके छः छः मासे डाले जब शीतल होजावे तब देवे तो अम्लपित्त, अरुचि, क्षय, रक्तपित्त, शूल, वांति इनको नाश करे और धातुकी वृद्धि करे ॥

खंड कूप्मांड ।

कूप्मांडस्यरसोग्राह्यःपलानांशतमात्रकं । रसतुल्यंगवांक्षिरं

धात्रीचूर्णपलाष्टकं ॥ लघ्वग्निनापचेत्तावद्यावद्भवतिपिंडिते ॥
 धात्रीतुल्यासितायोज्यापलाष्टलेहयेदनु । खंडकूष्मांडकंख्या
 तमम्लपित्तंनियच्छति ॥

अर्थ—पेठेका रस ४ तोले, गौका दूध ४० तोले आँवलेका चूर्ण ३२ तोले
 ले एकत्र कर मंदाग्निसे गोला होने पर्यंत ओटावे, इसमें ३२ तोले मिश्री
 डालके दो तोलेके प्रमाण साय, तो अम्लपित्तको नाश करे इसको
 खंडकूष्मांड कहते हैं ॥

मधुपिप्पली ।

पिप्पलीमधुसंयुक्तानाशयेदम्लपित्तकम् ।
 जंवीरस्वरसःपीतःसायंहंत्यम्लपित्तकम् ॥

अर्थ—सहत और पीपल भक्षण करनेसे अम्ल पित्तको नाश करे है तथा
 सायंकालमें जंभीरीका रस पीवे तो अम्लपित्तको नाश करे ॥

पाटादिकाय ।

पाठानिवपटोलत्रिफलासनयासयोजयति ।

अधिककफमम्लपित्तंसहितोगुग्गुलुनाक्रमशः ॥

अर्थ—पाठ नीबकी छाल, पटोलपत्र त्रिफला, विजसार धमासो इनका
 काढा गूगलडालके पीवे तो अतिकफ अम्लपित्त इनको जीते ॥

हिंसादिकाय ।

सहिंसाभृतभंटाकीक्वथंकृत्वासमाक्षिकम् ।

अम्लपित्तंहरेद्दुष्टंश्वासंकासंज्वरं वामिभं ॥

अर्थ—जटामांसी गिलोय कटेरी इनके फाटेमें सहत डालके पीवे तो अम्ल-
 पित्त, श्वास, कामज्वर, वमन इनको हरण करे ॥

यवादि ।

निस्तुपयववृषधात्रीत्रिसुगंधंचमधुयुतंपीत्वा ।

अपहरतिचाम्लपित्तंयदिभुंक्तेमुद्गयूपेण ॥

अर्थ—तृष रहित जौ, अडूसा, आँवला दालचीनी, पत्रज, इलायची इनका
 फाढा सहत युक्त पीवे तो अम्लपित्तको नाश करे, परंतु इसके साथ भूंगका
 घप पीवे ॥

अन्ययवादि काढा ।

यवकृष्णापटोलानांकाथंक्षौद्रयुतंपिबेत् ।

नाशयेदम्लपित्तंचह्यरुचिंचवामितथा ॥

अर्थ-जौ, पीपल, परवल, इनका काढा, सहत डालके पीवे तो अम्लपित्त अरुचि, वमन, इनको नाश करे ॥

भूनिवादि काय ।

भूनिंबनिंबत्रिफलापटोलीवासामृतापर्पटमार्कवाणाम् ।

काथंहरेत्क्षौद्रयुतोम्लपित्तंचित्तंयथावारवधूकटाक्षः ॥

अर्थ-कडुआ चिरायता, नीबकी छाल, त्रिफला, परवल, अडूसा, गिलोय, पित्तपापडा, भांगरा, इनका काढा सहत मिलायके देवे तो अम्लपित्तको हरण करे जैसे वैश्या स्त्रीका कटाक्ष चित्तको हरण करे है ॥

कंटकार्यादि काय ।

कंटकारिमृतावासाकपायंमधुसंयुतम् ।

अम्लपित्तंजयेत्पीत्वाश्वासंकासंवाग्ज्वरम् ॥

अर्थ-कटेरी गिलोय अडूसा इनका काढा सहत डालके पीवे तो श्वास, खांसी वांति ओर ज्वर इन करके युक्त अम्लपित्तको नाश करे ॥

चित्रकादिकाय ।

चित्रकैरंडमूलानियवाश्चसयवासकाः ।

जलेनक्वथितंपित्तंकोष्ठदाहाम्लपित्तजित् ॥

अर्थ-चित्रककी छाल अंडकीजड जौ और धमासा इनका काढा पीनेको देवे तो कोष्ठदाह और अम्लपित्त इनको नाश करे ॥

अविपत्तिकरचूर्ण ।

त्रिकटुत्रिफलामुस्तंबीजंचैवविडंगजम् ॥ एलापत्रंचसर्वाणिस

मभागानिकारयेत् ॥ यावंत्येतानिसर्वाणिलयंगंतत्समंभवेत् ॥

सर्वचूर्णाद्विगुणितंत्रिवृच्चूर्णतुकारयेत् ॥ यावंत्येतानिसर्वाणि

तावतीशर्कराभवेत् ॥ सर्वमेकीकृतंपात्रे स्निग्धेचैवानिधापये

त् ॥ भोजनादौततोभक्षेन्मापाष्टकमिदंशुभम् । शीततोयात्रु

पानंचनारिकेरोदकंतथा ॥ ततोयथेष्टमाहारंकुर्यात्क्षीरोदनंचवै ॥

अम्लपित्तहरत्याशुशूलदुर्नामनाशनम् ॥ प्रमेहंविंशतिं चैवमूत्र
घातांस्तथाश्मरीम् ॥ अविपात्तिकरं चूर्णमगस्त्यमुनिभाषितम् ॥

अर्थ-सोठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, नागरमोथा, इलायची, पत्रज, ये
सब समान भागले सबके बराबर लौगले चूर्णकरे, जितना चूर्ण होय उतना
ही निसोथका चूर्ण मिलावे, और सबकी बराबर मिश्री मिलावे सबको एकत्र
करके चिकने वासनमें भरके धररखे, भोजनके प्रथम ८ मासे नित्य भक्षण
करे, ऊपरसे शीतल जल पीवे, अथवा नारियलका जल पीवे और आहार
यथेष्ट करे दूध भात भोजन करे तो अम्लपित्त, शूल, बवासीर, प्रमेह, मूत्रा-
घात, मूत्राश्मरी, इनको नाश करे, इस चूर्णको अविपात्तिकर कहते हैं यह
अगस्त्य मुनिने कहा है ॥

एलादि चूर्ण ।

एलातुगाचीचशिवाभयानांत्वग्रंथिपाठीरदलाल्लकानाम् ।

चूर्णसितातुल्यमपाकरोतिप्रौढाम्लपित्तं दिवसस्यभुक्तम् ॥

अर्थ-इलायची, वंशलोचन, दालचीनी, ओंवेले, हरड, तंज, पीपरामूल,
चंदन और धनिया इनको समान भाग चूर्ण करके उसमें बराबरकी मिश्री
मिलावे, यह बडे हुए अम्लपित्त, और आहार इनको नाश करे ॥

शुद्ध मोदक ।

गुडपिप्पलिपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकःकृतः ।

पित्तश्लेष्महरःशोक्तोमंदाग्निर्वचनाज्ञयेत् ॥

अर्थ-शुद्ध, पीपल, और हरड ये समान भाग लेके लड्डू बनावे यह पित्त
कफ और मंदाग्नि इनको नाश करे ॥

त्रिकटु चूर्ण अधोगत अम्लपित्तपर ।

त्रिकटुकसकंठकारिपर्पटवारिकुटजबीजानाम् । सौराष्ट्रिकापटो
लित्रायेंतीदारुमूर्वाणाम् ॥ तित्तामृणालमलयजकालिङ्गकैला
किराततित्तानाम् । सवचातिविपाकेसरदीप्यकमधुशिथुवी
जानां ॥ चूर्णपटघृष्टमिदं पीतं शिशिरेणवारिणाप्रातः । क्षौद्रेण
वातलीढंप्रायेणाधोगतंहंति ।

अर्थ-सोठ, मिरच, पीपल, कटेरी, पित्तपापडा, नेत्रवाला, इन्द्रजो, फिटकरी
पटोलपत्र, त्रायमाण, देवदारु, मूर्वा, कुटकी कमलका कद, चंदन, इन्द्रजो,

इलायची, चिरायता, वचे, अतीस, नागकेशर अजमायन, मुलहठी, सहजनेके वीज इनको कूट पीस कपड छान चूर्ण कर लेवे, इसको प्रातःकाल शीतल जलके साथ पीवें तो प्राय अधोगत अत्यंत बड़े दूध अम्लपित्तका नाशकरे ॥
अभयादि अवलेह ।

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधन्वयवासकम् ।

मधुरकंठहृदाहमूर्च्छाश्लेष्माम्लपित्तजित् ॥

अर्थ—हरड, पीपल, दाख, मिथी और धमासों इनको सहतमें मिलायके अवलेह सिद्ध करे, इसके सेवनसे गला, हयय, इनका दाह, मूर्च्छा और श्लेष्माम्लपित्त इनको नाश करे ॥

खंड पिप्पल्यादि अवलेह ।

पिप्पल्याःकुडवंचूर्णघृतस्यकुडवद्रयम् ॥ पलंपोडशकंखंडा
च्छतावर्याःपलाष्टकम् ॥ शिवायाःस्वरसस्यापिपलंपोडश
कंमतम् । क्षीरप्रस्थद्वयेसाध्यंलेहीभूतेत्रनिःक्षिपेत् ॥ विजात
काभयाजातीधान्यमुस्ताशिवातुगाः । एतेपांकार्पिकंचूर्णक
र्पाधकृष्णजीरकम् ॥ नागरंनागकंजातीफलंसमरिचंहिमम् ।
दत्त्वापलत्रयंक्षौद्रंस्निग्धभाडिविनिक्षिपेत् ॥ प्रातर्यथाबलं
लिह्यादम्लपित्तप्रशांतये । हृत्सासारोचकछादिपिपासादाह
नाशनम् ॥

अर्थ—पीपलका चूर्ण १६ तोले, घी ३२ तोले, मिथी ६४ तोले, शतावर ३२ तोले, आंवेलका रस ६४ तोले, दूध, १२८ तोले, इनका पाक करे जब थोडासा पतला रहे तब इसमें दालचीनी, इलायची, पत्रज, हरड, जीरा, धनिया, नागरमोथा, आंवला, वंशलोचन इन प्रत्येकका एक २ तोले चूर्ण लेवे और कालाजीरा, सोंठ, नागकेशर, जायफल और मिरच, कपूर ये आधे२तोले डालके इसमें १२ तोले सहत डाल घीको चिकने वासनमें भरके धर देवे, इसमेंसे प्रातःकाल बलाबल विचारके देवे तो अम्लपित्त, हलास, अरुचि, वांति, प्यास और दाह इनको नाश करे ॥

पिप्पली घृत ।

पिप्पलीकाथकल्केनघृतंसिद्धंमधुषुतम् ।

पिवेत्प्रातःसमुत्थायअम्लपित्तनिवृत्तये ॥

अर्थ—पीपलका काढा और कल्क इनमें घृतको सिद्ध करे, इसको अम्ल-पित्तके दूर करनेको प्रातःकाल सहित डालकै देय ॥

द्राक्षादि घृत ।

द्राक्षाभयाशक्रपटोलपत्रैः सोशीरधात्रीयवचंदनैश्च । त्रायंति
कापद्मकिरातधान्यैःकल्कैःपचेत्सर्पिरुपेतमेभिः ॥ भुंजीतमा
त्रासहभोजनेनसर्वतुपानेह्यमृतोपमंच ॥

अर्थ—दाख हरड, इन्द्रजौ, पटोलपत्र, खस. आँवले, जंब, चंदन, त्राय-माण, पन्नाख, चिरायता, धनिया इनका कल्क करके उसमें घी डालके पचावे इसको भोजनमें अथवा भोजनके साथ खाय तो अमृतके समान गुण करे ॥

शतावरी घृत ।

शतावरीमूलकल्केघृतप्रस्थंपयःसमम् । पचेन्मृद्वग्निनासम्य
क्क्षीरंदत्वाञ्चतुर्गुणम् ॥ नाशयेदम्लपित्तंचवातपित्तोद्भवान्
गदान् । रक्तपित्तंतृषामूर्च्छांश्वाससंतापमेवच ॥

अर्थ—शतावरकी जड़का कल्क ६४ तोले, घी ६४ तोले तथा इनसे चौगुना दूध डालके पचावे, जब घृत तयार हो जावे तब देवे तो अम्लपित्त, वातपित्त-संबंधी विकार, रक्तपित्त, प्यास, मूर्च्छा, श्वास और संताप इनको नाश करे ॥

नारायण घृत ।

जलेदशगुणेक्वाथ्यंपिप्पलीचपलाष्टकम् । पादशपेहरेत्क्वाथं
क्वाथतुल्यंघृतंक्षिपेत् ॥ अम्लपित्तहरेश्चेष्टंघृतंनारायणमहत् ॥
गुडजीरकणासिद्धंसर्पिश्चत्रापियोजयेत् ॥

अर्थ—३२ तोले पीपरोंको ३२० तोले जलमें ओटावे जब चतुर्थांश काढा रहे तब काढ़ेके समान घी डालके पचावे जब सिद्ध हो जावे तब महानारायणघृत अम्लपित्तरोगमें देवे अथवा गुड, दूध और पीपल इनके कल्कमें सिद्ध करे हुए घृतके साथ देवे ॥

गुडादि घृत ।

गुडजीरकणासिद्धंसर्पिरत्रप्रयोजयेत् ।
सवातेसवित्रंघ्रेस्मिन्हिताकंसहरीतकी ॥

अर्थ—अम्लपित्तपर, गुड, दूध, और पीपल इनसे सिद्ध करा हुआ घी देवे, यदि वह वातानुर्वंधी होनेसे उसपर कंसहरीतकी देवे तो हितकारी होय ॥

लीलाविलास रस ।

शुद्धसूतसमंगंधंमृतताम्राभ्ररोचनम् ॥ तुल्यांशंमर्दयेद्यामंरु
ध्वालघुपुटेपचेत् ॥ अक्षंधात्रोहरोतक्याःक्रमवृध्याविपाचये
त् ॥ जलेनाष्टगुणेनैवग्राह्यमष्टावशोपितम् ॥ अनेनभावयेत्पूर्वपक्व
शूलंपुनःपुनः ॥ पंचविंशतिवारंचतावताभृंगजद्रवैः ॥ शुष्कंच
चूर्णितंस्वादेत्पंचगुंजामधुप्लुतम् ॥ रसोलीलाविलासोयमम्लपि
त्तनियच्छति ॥

अर्थ—शुद्ध पारा, गंधक, तामेकी भस्म, अभ्रक भस्म, गोरोचन ये समान भाग ले, एक प्रहर आँवले और हरड इनके अष्टावशेष काठेकी भावना दैके पुट देवे, इस प्रकार पच्चीस भावनादे और पच्चीस पुट देवे, अंतमें भांगरेके रसकी भावना देवे, यह लीलाविलास रस पांच रत्तीको सहतमें मिलायके देवे तो अम्लपित्तका नाश करे ॥

रसामृत ।

त्रिकटुत्रिफलामुस्ताविडंगंचित्रकंतथा ॥ एंपांसंचूर्णितानांतुप्र
त्येकंचपलंभवेत् ॥ कर्पद्रयंगंधकस्यतर्द्धपारदस्यच विडाल
पदमात्रंतुलिह्यात्तन्मधुसर्पिषा ॥ शीतोदकंचानुपिवेत्क्रमाद्
व्यंपयस्तथा ॥ अम्लपित्तंचाग्निमांथंपरिणामरुजातथा ॥ का
मलांपांडुरोगंचहन्यादेतद्रसामृतम् ॥

अर्थ—सोठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, नागरमोथा, वायवि-
डंग, चित्रककी छाल, इन मन्थेकका (४) चार २ तोले चूर्ण ले, तथा गंधक
२ तोले, पारा १ तोले सहत और घी इनसे देवे इसके ऊपर शीतल जल पीवे,
अथवा गौका दूध पीवे, तो अम्लपित्त, मंदाग्नि, परिणामशूल, कामला, पांडु-
रोग इनको नाश करे ॥

सूतशेखर रस ।

शुद्धसूतंमृतंस्वर्णटंकणवत्सनागकम् । व्योपमुन्मत्तवाजंचंगं
धकंताम्रभस्मकम् ॥ चातुर्जातंशंखभस्मविल्वमज्जाकचोरं

कम् । सर्वसमंक्षिपेत्खल्वेमर्द्यभृंगरसैर्दिनम् ॥ गुंजामात्रां वटीं
कृत्वा द्विगुंजंतुमथौघृते । भक्षयेदम्लपित्तघ्नोवांतिशूलामया
पहः ॥ पंचगुल्मान्पचकासान्ग्रहण्यामयनाशनः । उग्रहिक्का
मुदावर्तदेहेयाप्यगदापहः ॥ मंडलान्नात्रसंदेहोत्तर्वरोगहरः
परः । राजयक्ष्मंहरः साक्षाद्रसोयंसूतशेखरः ॥

अर्थ—शुद्धपारा, सुवर्णभस्म, सुहागा, सिंगिया विष, सोंठ, मिरच, पीपल,
धतूरेके, बीज, गंधक, तामेकी भस्म, चातुर्जात, शंखभस्म, बेलगिरी, कचूर,
ये समान भाग ले इनको अदरसके रसमें १ दिन खरलकर एक २ रत्तीकी
गोली बनावे, इसको सहत और घीके साथ देवे, तो अम्लपित्त, वांति, शूल-
रोग, पांच प्रकारके गोला, पांच प्रकारकी खांसी, संग्रहणी, त्रिदोषजन्य
अतिसार, मंदासि, हिचकी, उदावर्त, और याप्य व्याधि इनको ४० दिनमें
नाश करे, यह सूतशेखर रस संपूर्ण रोग और क्षय इनको नाश करे ॥

अम्लपित्तपर पथ्य ।

यवगोधूममुद्गाश्वपुराणारक्तशालयः । जलानिततशीतानिश
कैरामधुसक्तवः ॥ कर्कोटकंकारवेळरंभापुष्पंचवास्तुकं ।
वेत्राश्रुवृद्धकूष्मांडिपटोलंदाडिमंतथा ॥ पानान्नानिसमस्ता
निकफपित्तहराणिच । अम्लपित्तामयेनित्यंसेवितव्यानिमानवैः ॥

अर्थ—जौ, गेहूं, मूंग, पुराने लाल चावल तथा हुआ शीतल जल, शक्कर,
शहद, सत्तू, ककोरा, करेला, कैलेका फूल, बथुआ, बेंतका कौपल, पुराना
कुम्हड़ा, परवर, अनार, तथा कफपित्त नाशक अन्नपान ये सब अम्लपित्तके
रोगमें मनुष्योंके सेवन करने योग्य है ॥

अम्लपित्तपर अपथ्य ।

वमिवेगंतिलाम्लानिकुलित्थैतैलभक्षणम् । अविदुग्धंचधान्या
म्लंलवणाम्लकटूनिच । गुर्वन्नं दधिमद्यंचवर्जयेदम्लपित्तवान् ॥

अर्थ—वमनका वेग, तिल, खटाई, कुलथी, तेलका खाना, बकरीका दूध,
जौकी कांजी, नोन, खटाई कडुई वस्तु, भारी अन्न, दही और मद्य इन
सबोंको अम्लपित्तका रोगी त्याग देवे ॥

॥ इति बृहन्निघण्टुरत्नाकरे अम्लपित्तस्य निदानविक्रिया समाप्ता ॥

विसर्प ।

—*—

विसर्पनिदान ।

लवणाम्लकटूष्णादिवातादिदोषकोपतः ।

विसर्पःसप्तधाज्ञेयः सर्वतः परिसर्पणात् ॥

अर्थ—खारी, खट्टा, कड़ुआ, गरम आदि पदार्थ सेवन करनेसे वातादि दोषोंका कोप होकर सात प्रकारका विसर्प रोग होय हे वो सर्वत्र फैल जाय, इसीसे इस्को विसर्प कहते है सो (चरकमें) लिखाभी है ॥

द्वंद्वजोंक नाम विशेष ।

आग्नेयोवातपित्ताभ्यांग्रंथ्याख्यःकफमारुतात् ।

यस्तुकर्दमकोघोरःसपित्तकफसंभवः ॥

अर्थ—अग्निकासा जल उठता है वात पित्तसे और कफ वातसे ग्रंथिक रूप बन जाता है उसको कर्दमक विसर्प कहते है, यह द्वंद्वज है ॥

विसर्प होनेके कारण ।

रक्तंलसीकात्वङ्मांसंदूप्यंदोपास्त्रयोमलाः ।

विसर्पाणांसमुत्पत्ताविज्ञेयाःसप्तधातवः ॥

अर्थ—रुधिर, मांसका जल, त्वचा, मांस ये दूप्य हैं और वातादि तीन दोष ये सात धातु विसर्पके उत्पन्न होनेके कारण है ॥

घमन ।

पटोलपिचुमंदाभ्यांपिप्पल्यामदनेनवा ।

विसर्पेवमनंशस्तंतथाचेंद्रयवैःसह ॥

अर्थ—पटोलपत्र और नीमकी छाल अथवा पीपल और मेनफल इनके काटेमें इन्द्रजो डालके घमन होनेके वास्ते देवे तो विसर्प दूर होय ॥

शास्त्रार्थ ।

पूर्वमेवविसर्पेषुकुर्याल्लघनरूक्षणे । विरेकवमनालेपसेचना

सृग्विमोक्षणैः । उपाचरेद्यथादोषंविसर्पानविदाहिभिः ॥

अर्थ—विसर्प रोगपर प्रथम लघन और रुक्षण करे फिर रेचन, घमन, लेप, सेचन और रुधिरमोक्ष करे, तथा दाह कर्त्ता औषधके विना दोषोंको दस्त कर क्रिया करे ॥

विरेचन ।

त्रिफलारससंयुक्तसर्पिस्त्रिवृतयासह ।

प्रयोक्तव्यं विरेकार्थे विसर्पज्वरशांतये ॥

अर्थ—धीमें त्रिफलेकारस और निसोय डालके विसर्प ज्वरकी शांति-
के वास्ते और दस्त होनेके वास्ते देवे ॥

त्रिवृतादिशोधन ।

त्रिवृद्धरीतकोभिर्वा विसर्पेशोधनंहितम् ॥

अर्थ—निशोय, हरड, इन कर्के विसर्प रोगपर शोधन देवे तो हितकारी होय ॥
वातविसर्प ।

तत्रवातात्परीसर्पो वातज्वरसमाकृतिः ।

शोफस्फुरणनिस्तोदभेदपामार्तिहर्षवान् ॥

अर्थ—वादीसे विसर्प जो होय उसके लक्षण वात ज्वरके समान होते हैं
तथा उसमें मूजन, फरकना, नोचनेकीसी पीडा, तोडनेकीसी पीडा दर्द और
रोमांच खडे हों ये लक्षण होते हैं तथा वो विसर्प लंबा होय है ॥

रास्नादिलेप ।

रास्नानीलोत्पलंदारुचंदनमधुकंचला ।

पिप्पलाज्यक्षीरवैल्लिपोवातवीसर्पनाशनः ॥

अर्थ—रास्ना, नीलाकमल, देवदारु, चंदन, मुलहदी और खिरेटी, इनको
दूधमें पीसके उसमें धी मिलाय लेप करे तो वातविसर्पका नाश होय ॥

पित्तविसर्प ।

पित्ताद्भुतगतिः पित्तज्वरालंगोतिलोहितः ॥

अर्थ—पित्तके विसर्पकी गति शीघ्र होय अर्थात् वो जल्दी फैल जाय तथा
पित्तज्वरके लक्षण इस्में मिलते हों तथा अत्यंत लाल होय ॥

प्रपौडरीकादिलेप ।

प्रपौण्डरीकंमंजिष्ठापद्मकेशरचंदनैः ।

सयष्टीकमलोपेतैः क्षीरपिष्टैः प्रलेपनम् ॥

अर्थ—पुंडरीक वृक्षकी छाल, मजीठ, कमलकी केशर, चंदन, मुलहदी और
नीलाकमल इनको दूधमें पीसके लेप करे ॥

कसेरुवादिश्लेष ।

कशेरुशृंगाटकपद्मगुंजासशैवलाःसोत्पलपद्मकश्च ।
वस्त्रांतराःपित्तकृतेविसर्पेलेपोविधेयःसघृतःसुशीतः ॥

अर्थ—कसेरु, सिंघाड़े, पद्म (कमल) घूँघची, काई (सिवाल) नीलाकमल पद्माख, इनको घृतके साथ पित्तविसर्पपर लेप करे, और वस्त्रसे लपेट देवे यह शीतकारक है ॥

पंचमूलादिकाथ ।

कनीयःपंचमूलस्यपत्रवल्कलकस्यच ।
कपायःपित्तवीसर्पेपानेसेकेपिशस्यते ॥

अर्थ—लघु पंचमूल, अथवा इनके पत्ते अथवा छाल लैके काढा करे इसको पित्त विसर्पपर पीनेको देवे, तथा सेचन करनेके विषयमें उत्तम है ॥

कफविसर्प ।

कफात्कंडूयुतःस्निग्धःकफज्वरसमानरुक् ॥

अर्थ—कफकी विसर्पमें खुजली बहुत होय तथा चिकनी होय और उसमें कफ ज्वरकीसी पीडा करे ॥

कफ विसर्प पर वमन ।

श्लेष्मिकेत्रवामिःकुर्यात्पूर्वरेचनकंततः। मदनंमधुकंनिववत्सक
स्यफलानिच । एतैर्वामिर्विधातव्याविसर्पेकफसंभवे ॥

अर्थ—कफजनित विसर्पपर प्रथम वांति देवे, फिर रेचन देवे, तथा मैनफल मुलहठी, नीबकी छाल, इन्द्रजव इनसे कफात्मक विसर्पपर वमन देवे ॥

गायत्र्यादि लेप ।

गायत्रीसप्तपर्णाह्वासारग्वधदारुभिः ।

कुटनटैर्भवेलेपोविसर्पेश्लेष्मसंभवे ॥

अर्थ—खैरकी छाल, सतौनाकी छाल, नागरमोथा, अडूसा, अमलतासका गूदा, देवदारु, और टेंदूकी छाल, इनका कफ विसर्पपर लेप करे ॥

त्रिफलादि लेप ।

त्रिफलापद्मकोशीरसमंगाकरवीरकम् ।

नलमूलमनंताचलेपःश्लेष्मविसर्पहा ॥

अर्थ-हरड, बहेडा, आंवला, पन्नास; खस, लजाल, कनेरकी जड, नरसल-
की जड और धमासा इनका लेप, कफ विसर्पनाशक है ॥

धृतादि लेप ।

सर्पिपाशतधौतेनेकृतलेपोसुदुर्मुहुः ।

निहंतिसर्ववीसर्पैपन्नगंपक्षिराडिव ॥

अर्थ-सौवार धुले हुए घीको बारंबार लेप करे तो सन्निपातज विसर्पका
नाशकरे, जैसे सपोंका गरुड नाशकरे ॥

दशांग लेप ।

शिरीषयष्टीनतचंद्रनैलामांसीहरिद्राद्र्यकुण्डुवालेः ।

लेपोदशांगःसघृतःप्रयोज्योविसर्पकुष्ठव्रणशोथहारी ॥

अर्थ-शिरस, मुलहठी, तगर, चंदन, इलायची, जटामांसी, हलदी, दारु
हलदी, कुठ, और नेत्रवाला, इन दश औषधोंका कल्क करके इसमें घी डालके
लेप करे, तो विमर्ष, कुष्ठ, व्रण, और सूजन इनको नाश करे ॥

अग्निविसर्प ।

वातपिताज्ज्वरच्छर्दिर्मूर्च्छातीसारतृद्भ्रमैः।अस्थिभेदाग्निसदन

तमकारोचकैर्युतः ॥ करोतिसर्वमंगचदीप्तांगारावकीर्णवत् । यं

यंदेजं विसर्पश्च विसर्पेति भवेच्चसः ॥ शांतांगारासितोनीलोरक्तो

वाशूपचीयते । अग्निदग्धनिभैःस्फोटैःशीघ्रंगत्वात्तुतंसचः ॥

मर्मानुसारीवीसर्पःस्याद्रातोतिवलस्ततः । व्यथेतांगहरेत्संज्ञां

निद्रांचश्वासमीरयेत् ॥ हिक्कांचसततोवस्थामीदृशौलभतेनरः ॥

क्वचिच्छर्मारतिग्रस्तोभूमिशय्यासनादिषु ॥ चेष्टमानस्ततः

क्लिष्टोमनोदेहसमुद्भवा । दुर्बोधामनुतेनिद्रांसोमिषीसर्पउच्यते ॥

अर्थ-वातपित्तसे प्रगट विसर्प, ज्वर, वमन, मूर्च्छा, अतिसार, प्यास,
भौर, हृदफटन, मन्दाग्नि, अधिकारदर्शन, अन्नद्वेष इन लक्षण करके संयुक्त
होय, इसके सयोगसे सर्व शरीर अगारोसे भरासा मालूम होय, जिस जिस
ठिकाने वो विसर्प फले उसी उसी ठिकानेपर अग्नि रहित अंगारके समान
काला, नीला, लाल होकर शीघ्र सूजे, आगसे फूँकेके समान ऊपर फलौला
होय, और उस विसर्पकी शीघ्रगति होनेसे जल्दी हृदयमें जायकर, मर्मानु सारी

विसर्प होय अथवा वो अत्यन्त बलवान् होय अर्थात् अंगोको व्यथा करे, संज्ञा और निद्रा इन्का नाश होय, श्वास, बढावै तथा हिचकी उत्पन्न करे, ऐसी मनुष्यकी अवस्था होय अवस्था होनेके कारण धरती, सेज, आसन, इत्यादिकोमें सुख होय नहीं, हलने चलनेसे क्लेश होय, मन तथा देहको क्लेश होनेसे उत्पन्न भई एसी दुर्बोध निद्रा (मरणरूपी निद्रा) को प्राप्त होय, इस रोगको (अग्निविसर्प) ऐसे कहते है ॥

मांस्यादि लेप ।

मांसीसर्जरसोलोभ्रंमधुकंसहरेणुकम् । मूर्वानीलोत्पलंपद्मंशि
रीपकुसुमानिच ॥ एतैःप्रदेहःकथितोवह्निवीसर्पनाशनः ॥

अर्थ-जटामांसी, राल, लोध, मुलहठी, रेणुकबीज, मूर्वा, नीलाकमल, शिरसवृक्षके फूल, इनका लेप करे, तो अग्निविसर्पको नाश करे ॥

शतधौतघृतविमिश्रःकल्कस्त्वक्पंचकस्यलेपेन ।

बहुदाहकलितपूर्वमग्निविसर्पविनाशयति ॥

अर्थ-बड, गूलर, पीपल, पाखर, और आम इन पांच छालोका कल्क करके उसमे सौवार धुले हुए घीको डाल लेप करे, तो दाहयुक्त विसर्पको नाश करे ॥

प्रथिविसर्प ।

कफेनरुद्धः पवनोभित्वातंबहुधाकफम् । रक्तंवावृद्धरक्तस्य
त्वक्शिरास्नायुमांसगम् ॥ दूपायित्वाचदीर्घानुवृत्तस्थूलखरा
त्मनाम् । ग्रंथीनांकुरुतेमालारक्तानांतीव्ररूक्ज्वरम् ॥ श्वास
कासातिसारास्यशोपहिक्कावमिश्रमैः । मोहवैवर्ण्यमूर्च्छागर्भं
गाग्निसदनैर्युतम् । इत्ययंग्रंथिवीसर्पः कफमारुतकोपजः ॥ -

अर्थ-स्वहेतुसे कुपित भया जो कफ सो पवनकी गतिको रोक करके भदकर अथवा बडे भये रुधिरको भेदकर त्वचा, नस, नाडी और मांस इन्मे प्राप्त हो और इन्को दुष्टकर लंबी, छोटी, गील, मोटी, खरदरी, लाल, गांठोकी माला प्रगट करे उन गांठोमें, पीडा अधिक होय, ज्वर होय, श्वास, खांसी, अतिसार, मुखमे पपडी परे, हिचकी, वमन, श्रमता, मोह, वर्णका पलटना, मूर्च्छा, अंगोका टूटना. मंदाग्नि ये लक्षण होते हैं इस रोगको (ग्रन्थिविसर्प) ऐसा कहते है यह कफ वायुके कोपसे उत्पन्न होय है इन्को सुश्रुतमें अपची कहते है ॥

न्यग्रोधपादि लेप ।

न्यग्रोधपादोगुंजाचकदलीगर्भएवच ।

एतैर्ग्रथिविसर्पघ्नोलेपोधौताज्यसंयुतः ॥

अर्थ-बडके संग, घूंघची, केलाको गाभो, इनमें सौ वारके धुले हुए घीको मिलायके लेप करे तो ग्रंथि विसर्पको नाश करे ॥

कर्दम विसर्प ।

कफापित्ताज्ज्वरस्तंभोनिद्रातंद्राशिरोरुजः ॥ अंगावसादविक्षेप
प्रलापारोचकभ्रमाः ॥ मूर्च्छांमिहानिभेदोस्थनांपिपासेन्द्रियगौ
रवम् ॥ आमोपवेशनंलेपःस्रोतसांसविसर्पति ॥ प्रायेणामाश
यंगृह्णन्नेकदेशंनचातिरुक् ॥ पिंडकैरवकीर्णोतिपीतलोहितपां
डुरैः ॥ गंभीरपाकःप्राज्योप्मास्पष्टःक्लिन्नोविदीर्यते ॥ पंकव
च्छीर्णमांसश्चस्फुटस्त्रायुशिरागणः ॥ श्वगंधिचवीसर्पकर्द
माख्यमुशंतिताम ॥

अर्थ-कफ पित्तसे ज्वर, अंगोंका जिकडना, निद्रा, तंद्रा, मस्तकशूल,
अंगझानि, हाथ पैरोंका पटकना, बकवाद, अरुचि, श्रम, मूर्च्छा, मन्दाभि,
हडफूटन, प्यास, इन्द्रियोंका जिकडना, आमका गिरना, मुखादि स्रोतोंमें
(छिद्रों) में कफका लेप, इत्यादि लक्षण होते हैं तथा वो विसर्प आमाश-
यमें उत्पन्न हो पीछे सर्वत्र फैले, उसमें पीडा थोड़ी होय, उसमें सर्वत्र पीली
तामेके रंगकी, सपेद रंगकी पिडिका होय तथा वो विसर्प चिकनी स्याहीके
समान काली, मलिन, सूजनयुक्त, भारी, गंभीर पाक कहिये भीतरसे पकी
हो उनमें घोर दाह हो और दवानेसे तत्क्षण गीलीहो जाय तथा वो फट जाय
तथा कीचके समान होकर उसका मांस गलजाय, उसमें शिरा नाडी
(नस) ये दीखने लगे, उसमें मुर्दा कीसी वांस आवै, इस विसर्पको कर्दम
विसर्प कहते है ॥

कर्दम विसर्प पर लेप ।

शतधौतघृतोन्मिश्रःश्रीरिपत्वग्रजःकृतः ।

लेपःशमयतिक्षिप्रंविसर्पकर्दमाभिधम् ॥

अर्थ-शिरस वृक्षकी छालका चूर्णको सौवार धुले हुए घृतमें मिलायके
लेप करे तो कर्दम विसर्पको नाश करे ॥

क्षतज विसर्प ।

बाह्यहेतोःक्षतात्कुद्धःसरक्तपित्तमीरयन् ॥ विसर्पमारुतःकुर्यात्कुलित्यसदृशैश्चितम् ॥ स्फोटैःशोथज्वररुजादांहाव्यंश्यावशोणितम् ॥

अर्थ—बाह्य कारण कर्के क्षत (घाव) होकर उसमें वायु कुपित होकर वो रुधिर सहित पित्तको घ्रणमें प्राप्तकर विसर्प रोग उत्पन्न करे, उसमें कुर्त्थीके समान श्याम वर्णके फोडे होते हैं, सूजन हो, ज्वर होय और दाह होय, उसका रुधिर काला निकले, इस विसर्पका पित्त विसर्पके अन्तर्गत जाननेसे संख्यामें विरुद्ध नहीं पडे अन्यथा संख्या बढ जाती है यह भोजका मत है ॥

विसर्पके उपद्रव ।

ज्वरातिसारवमथ्रुस्तृण्मांसदरणकुमः ।

अरोचकाविपाकौचविसर्पाणामुपद्रवाः ॥

अर्थ—ज्वर, अतिसार, वमन, प्यास, मांसका गलना, अनायासश्रम, अरुचि, अन्न न पचना, ये विसर्परोगके उपद्रव हैं ॥

साध्यासाध्य लक्षण ।

सिध्यंतिवातकफपित्तकृताविसर्पाः सर्वात्मकःकफकृतश्चनसिद्धिमेति । पित्तात्मकोजनवपुश्चभवेदसाध्यः कृच्छ्राश्चर्ममसुभवंतिहिसर्वएव ॥

अर्थ—वात पित्त कफ इन्से प्रगट जाँ विसर्प सो साध्य होय है, सन्निपातज और क्षतज, विसर्प साध्य नहीं होय । पित्तसे प्रगट भई विसर्प जिसका फाजलके समान अंग होय वो असाध्य और जो विसर्प मर्मठिकानेपर होय वो सब फटसाध्य होय है ॥

गौराद्य घृत ।

द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वासारिवाचंदनद्वयं । मधुकंमधुपर्णचपद्मकंपद्मकेसरं ॥ उशीरमुत्पलंभेदात्रीफलापंचवल्कलम् । कल्केरक्षसमैरेभिर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ विपवीसर्पविस्फोटकीटलूताघ्राणापहम् । गौराद्यमितिविरुयातंसर्पिः श्लेष्मगदप्रणुत् ॥

अर्थ—हलदी, दारुहलदी, सालपर्णी, मूर्वा, सारिवा, चंदन, लालचंदन, मुलद्दी, कैभारी पमाख, कमलकी केशर, रस, नीले कमल, भेदा, हरड,

बहेडा, आँवला और बड, गूलर, पीपल, पाखर, वेत इनकी छाल ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे इनको कल्क और इसमें धी २५६ तोले झालके पचावे जब तयार हो जावे तब उतारके छान लेवे, यह गौरादि घृत विसर्प, विस्फोट, कीड़ा और लूता, इनके व्रणको नाश करे, तथा कफव्याधिकोभी नाश करे ॥

वृषादि घृत ।

वृषादिरपटोलनिवपत्रत्वग्भृतामलकीकपायकल्कैः ॥

घृतमभिनवमेतदाशुपक्वजयतितदास्रविसर्पकुष्ठगुल्मान् ॥

अर्थ—अडूसा, खैर, पटोलपत्र और नाँव इनके पत्ते और छाल, गिलोय, आँवले, इन सबके फाँटेमें तथा कल्कमें घृतको पचावे यह रक्त विसर्प, कुष्ठ और गुल्म इनको नाश करे ॥

दूर्वादि घृत ।

दूर्वादिदुंबरजंबुशालसप्तच्छदाश्वत्थकपायकल्कैः ।

सिद्धविसर्पज्वरदाहपाकविस्फोटशोफान्विनिहंतिसर्पिः ॥

अर्थ—दूब, बड, गूलर, जामुन, कोहकी छाल, सतोना, और पीपल, इनके फाँटे, तथा कल्कमें घृत तयार करे यह विसर्प, ज्वर, दाह, पाक, विस्फोट, और सूजन, इनको नाश करे ॥

करंजादि तैल ।

करंजसप्तच्छदलांगलीकामुह्यकंदुग्धावलभृंगराजैः ।

तैलनिशामूत्रविषैर्विपक्वविसर्पविस्फोटविचर्चिकाग्रम् ॥

अर्थ—करंजकीछाल, सतोनाकी छाल, कल्यारी, थूहर इनका दूध, चित्रक, भांगरा, हलदी, इनका कल्क और गोमूत्र, सिंगियाविष, इनको मिलायके तैल सिद्ध करे यह विस्फोटक और विचर्चिका इनका नाशकरे ॥

पटोलादि काय ।

कुलकवृषकिरातारिष्टतिक्ताक्षपथ्यामलकमलयजानांकोशि

काढ्यःकपायः । सकलगदसमुत्थंहंतिविसर्पमुग्रं वमिमिवच

विदाहभ्रांतितृष्णारुजश्च ॥

अर्थ—पटोलपत्र, अडूसा, चिरायता, नाँबकीछाल, कुटकी, बहेडा, आँवला, चंदन इनमे गूल मिलायके काढा करे, यह संपूर्ण दोषोंसे उत्पन्न हुए उग्र विसर्प, भ्रांति, दाह, भ्रांति और प्यास इनको नाशकरे ॥

गुडूच्यादे काय ।

अमृतवृषपटोलानेववलकैरुपेतांत्रिफलवेदिरसारिव्याधिघातंच
तुल्यं । कथितमिदमशेषंगुगुलोःपादयुक्तंहरतिविषविसर्पान्
कुष्ठसंघातमाशु ॥

अर्थ-गिलोय, अडूसा, पटोलपत्र, नींबकी छाल, हरड, वहेडा, आंबला,
फत्या, अमलातासका गूदा, ये समान भाग लेवे सबका काढा करके उसमें
चतुर्थांश गुगल डालके देवेतो विषविसर्प और कुष्ठ इनको नाशकरे ॥

पटोलादि ।

पटोलंपिचुमदंचदार्वाकटुकरोहिणी ।

पट्ट्याहंत्रायमाणांचदद्याद्दीसर्पशांतये ॥

अर्थ-पटोलपत्र, नींबकीछाल, दारुहलदी, कुटकी, मुलहदी, त्रायमाण,
इनका काढा विसर्पकी शांतिकरे ॥

दुरालभादि ।

दुरालभांपर्पटकंगुडूचीविश्वभेषजम् ।

निशापर्युपितंदद्यात्तृष्णावीसर्पशांतये ॥

अर्थ-धमासा पित्तपापडा, गिलोय और सोंठ इनको रात्रिके समय फारे
मटकफेमें भिगोप देवे, दूसरे दिन फल्क फरफे देवे तो तृष्णा और विसर्प इनकी
शांति करे ॥

मुस्तादि ।

मुस्तारिएपटोलानांकाथःसर्वविसर्पतुत् ।

धात्रीपटोलमुद्गनामथवाघृतरायुतः ॥

अर्थ-नागरमोथा, नीमकी छाल, पटोलपत्र इनका काढा कर उसमें घृत
डालके देवेतो सब प्रकारकी विसर्पका नाश करे ॥

भूर्निवादि ।

भूर्निववासाकडुकापटोलंफलत्रिकंचंदननिवासिद्धः ॥

विसर्पदाहज्वरशोफकंडूविस्फोटतृष्णावमिनुत्कपायः ॥

अर्थ-चिरायता, अडूसा, कुटकी, पटोलपत्र, त्रिफला, चंदन, नींबकीछाल,
इन सबको बराबर ले काढा करे, यह विसर्प, दाह, ज्वर, मूजन, मुजली,
विस्फोट, तृषा और घमन इनको नाश करे ॥

कनकादिलेप ।

कनकभुजगवल्लीमालतीपत्रमूर्वारसगदकुनटीभिर्मर्दितस्तैल
योगात् ॥ अपहरतिरसेन्द्रःकुष्ठकंदूविसर्पस्फुटितचरणरंभ्रंश्याम
लत्वंचायाः ॥

अर्थ—धतूरा, नागरवेल, चमेली, मूर्वा, कवीला, कुठ, मनसिल इनकी
बराबर तेल युक्त पारेको खरल करके लेप करनेसें कोठ खुजली, विसर्प पैरो-
का फटना और त्वचाका कालापना इनको नाश करे ॥

एरंडादितैल ।

एरंडतुंबीकटुनिवचक्रमर्दौत्थवीजानिचसोमराजी ॥ अंकोष्ठ
बीजानिसमानकृत्वापातालयंत्रेणसुतैलमेपाम् ॥ प्रगृह्यतेनाथ
विमर्दयेच्चविसर्पकादीन्विनिहंतिसद्यः ॥

अर्थ—अंडी, कडुईतोरईके बीज, नीब, पमारके बीज, बावची, अंकोलके
बीज ये समान भागले पातालयंत्रमें इनका तेल निकाल लेवे इसकी मालिस
करे तो विसर्पादिक रोगोंको दूर करे ॥

हरीतकीयोग ।

मंजिष्ठाकुटजोमुस्तागुडूचरिजनीद्रयम् ॥ कंटकारीवचाशुंठी
कुष्ठारिष्टपटोलकम् ॥ नागाविडंकाकमाचीमोरटापुक्षदारु
कम् ॥ कर्लिंगभृंगत्रायंतोपाठाकाश्मीरिकावलिः ॥ गायत्रीत्रि
फलातिक्तासारिवानक्तमालकः ॥ नाशोशीरमहावृक्षसोमराजी
प्रियंगुकाः ॥ चंदनंपर्पटानंताविशालानिवृताजलम् ॥ कटु
त्रिकंखुरासानंपलमेकंपृथक्पृथक् ॥ द्वाविंशतिपलांपथ्यांजलं
द्रोणेविपाचयेत् ॥ अष्टावशेषःकर्तव्यःक्वाथःसद्भिपजाततः ॥
वस्त्रपूताशिवाकार्यातीक्ष्णलोहेनवेधयेत् ॥ मधुमध्येविनिक्षि
प्यदिनांत्रिःसप्तसंख्यया ॥ विनष्टंमधुसंत्यज्यमधुश्रेष्ठंपुनः
क्षिपेत् ॥ ततःसुस्वादसंपन्नांप्रभातेभक्षयेच्छिषाम् ॥ विसर्पा
न्नाशयेत्सर्वान्कुष्ठान्यष्टादशानिच ॥ खुडंपामांचकंइंचदद्रुवि
स्फोटविद्रधीन् ॥ अन्यांस्त्वग्दोषजात्रोगांस्तथारक्तस
मुद्गवान् ॥

अर्थ-मजीठ, कूडाकी छाल, नागरमोथा, गिलोय, हलदी, दारुहलदी, कटेरी, वच, सोंठ, कूठ, नींबकी छाल, पटोलपत्र, चमेली, वायविडंग, मकोय, मूर्वा, पाखर इमली, देवदारु, इन्द्रजो, भाँगरा, त्रायमाण, पाठ, कंभारी गंधक, कत्या, हरड, बहेड आवला, कुटकी, सारिवा, कंजा, अट्टसा, खस, अमल-तास, बावची, फूलमिपगु, चंदन, पित्तपापडा, धमासो, इन्द्रायणकी जड, निसोथ, नेत्रवाला, सोंठ, मिरच, पीपल, खुरासानी अजमायन ये प्रत्येक चार २ तोले और हरड ८८ तोले डालके १०२४ तोले जलमें अष्टमांश काढा करके छान लेवे इसमेंसे हरडोंको निकाल वस्त्रसे पोछके साफ करे फिर चाकूसे चीर गुठली निकालके सहतमें डाल देवे जब १ दिन होजावे तब विगडे हुए सहतको निकालके दूसरा सहत डाले, फिर इस सुस्वाद संपन्न हरडोंमेंसे एक २ हरड नित्य भक्षण करे, तो विसर्प, अठारह प्रकारके कुष्ठ खुडवात, पामा, कंडु, दाद, विस्फोटक विद्रधि, त्वचाके रोग और रक्तज रोग, इनको नाश करे ॥

द्वंद्वज विसर्पकी चिकित्सा ।

त्रिदोषघ्नौ क्रियां कुर्याद्विसर्पद्वंद्वसंभवे ॥ रसायनानिकुष्ठेषु सर्पि
र्वाक्काथनानि च । चूर्णादीन्यपि सर्वाणि विसर्पेष्वपि तान्यलम् ॥

अर्थ-द्वंद्वज विसर्पपर त्रिदोष नाशक क्रिया करे, तथा कुष्ठ रोगपरकी रसायन, घृत, चूर्ण इत्यादि देवे, ॥

पथ्य ।

पुराणायवगोधूमकंगुपष्टिकशालयः । मुद्गामसूराश्वणकास्तुव
र्यांजांगलोरसः ॥ नवनीतं घृतं द्राक्षादाडिमं कारवेल्लकम् ।
वेत्राग्रकुलकंधात्रीखादिरोनागकेशरम् ॥ लाक्षाः शिरीषक
पूरंचन्दनंतिललेपनम् । ह्रीवेरकं मुस्तकंच तित्कानिसकलान्य
पि ॥ यथादोषपथ्यमिदं सेवितव्यं विसर्पिभिः ॥

अर्थ-पुराने जौ, गेहूं, कंगुनी, सांठी तथा शाली चावल, मूंग, मसूर, चना, अरहर, जंगलीजीवोंके मांसका रस, मक्खन, घी, दाख, अनार, करेला, वेतकी कोंपल, परवर, आमला, कत्या, नागकेशर, लाख, शिरस, कपूर, चन्दन, तिलका तेल, हाऊवेर, मोथा, सब चरपरी वस्तु दोषके अनुसार यह पथ्य विसर्प रोग यालोंको सेवन कराना चाहिये ॥

अपेक्ष्य ।

व्यायाममहिशयनंसुरतंप्रवातंक्रोधंशुचं वमनवेगमसूयनंच ॥
शाकं विरुद्धमशनंदधिकृचिकाचसौत्रीरकादिकमथोविविधंकि
लाटम् ॥ गुर्वन्नपानमखिलंशुनंकुलित्थान्मायांस्तिलान्सक
लमांसमजांगलंच ॥ स्वेदंविदाहिलवणाम्लकटूनिमद्यमर्कप्र
भामपिविसर्पगदस्त्यजेत् ॥

अर्थ—कसरत, दिनमें सोना, स्त्री संग, अधिक पचन, क्रोध, शोक, वमन-
वेगका रोकना, इर्षा, शाक, विरुद्ध भोजन, दधि कृचिका अर्थात् जो दही
दूधसे ओटके बनते हैं कांजी, आदि फिलाट अर्थात् फटे दूधका, मांस, खोवा-
सब भारी अन्न, पान, लहसन, कुलथी, उडद, तिल, जंगली मांस छोडके सब
प्रकारका मांस, स्वेदन, विदाही वस्तु, नोन खटाई कडुवा रस, मद्य और
सूर्यका तेज, इन सबको विसर्पका रोगी त्याग करे ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे विसर्पेतिगस्य निदानविक्रमा समाप्ता ॥

विस्फोट ।

विस्फोटनिदान ।

कटम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च ॥ त
थर्तुदोषेणविपर्ययेणकुप्यांतिदोषाःपवनादयस्तु ॥ त्वचमाश्रि
त्यतेरक्तमांसास्थानिप्रदूष्यच । घोरान्कुर्वतिविस्फोटान्सर्वा
न्ज्वरपुरःसरान् ॥

अर्थ—कडुआ, खट्टा, तीखा, (मरिचादि) गरम दाहकारक, रूखा, खारा,
अजीर्ण, भोजनके ऊपर भोजन और गरमी, ऋतुदोष कहिये शीतोष्णका
अतियोग अथवा ऋतुविपर्यय (ऋतुका पलटना) इन कारणोंसे, वातादिदोष
कुपितहो त्वचाका आश्रयकर रुधिर मांस और हड्डी इन्को दूषितकर भयंकर
विस्फोटक (फोडा) उत्पन्न करे उनके प्रगट होनेके पूर्व घोर ज्वर होयहे ॥

विस्फोटकका स्वल्प ।

अग्निदग्धनिभाः स्फोटाः सज्वरारक्तपित्तजाः ।

क्वचित्सर्वत्रवादेहेविस्फोटाइतितेस्मृताः ॥

अर्थ—रक्तपित्तसे प्रगट भये ऐसी अग्नि करके जरके समान फोडा अंगमें किसी एक ठिकाने अथवा सब देहमें होय हैं उनके होनेसे ज्वर होय, उनको विस्फोटक ऐसे कहतेहैं इस रोगमेंभी वातका अनुबंध होयहै सो भोजने कहाहै॥
सामान्यचिकित्सा ।

तत्रादौलंघनंकार्यवमनंपथ्यभोजनम् ।

यथादोषंवलंबीक्ष्यप्रोक्तंयुक्तंचरेचनम् ॥

अर्थ—विस्फोट रोगपर प्रथम लंघन करे, फिर वमन करावे, तथा पथ्य भोजन करे तथा दोष और बलके अनुसार जुझाव करावे ॥

वातविस्फोटक ।

शिरोरूक्षूलभूयिष्ठंज्वरतृट्पर्वभेदनम् ।

सकृष्णवर्णताचेतिवातविस्फोटलक्षणम् ॥

अर्थ—मस्तकमें पीडा, शूल, देहमें पीडा, ज्वर, प्यास, सन्धीन्में पीडा, फोडोंका वर्ण फाला होवे ये वातविस्फोटका लक्षण है ॥

दशमूलका काय ।

द्विपंचमूलंरास्नाचदाव्युंशीरंदुरालभम् ।सामृतंधान्यकंमुस्तां

काथयित्वाशृतंपिबेत् ॥ विस्फोटंवातसंभूतंहंत्येतन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ—दशमूल, रास्ना, दारुहलदी, खस, धमासो, गिलोय, धनिया और नागरमोथा इनका काढा देवे, तो वातोत्पन्न विस्फोटका नाश करे ॥

पित्तविस्फोट ।

ज्वरदाहरुजास्त्रावपाकतृष्णाभिरन्वितम् ।

पीतलोहितवर्णंचपित्तंविस्फोटलक्षणम् ॥

अर्थ—ज्वरदाह, पीडा, स्त्राव, फोडोंका पकना, प्यास, देह पीला होय, अथवा लाल होय, ये पित्त विस्फोटके लक्षण हैं ॥

द्राक्षादि ।

द्राक्षाकाश्मर्यखजूरपटोलारिष्टवासकैः ।लाजाकुलकदुःस्पर्शां

काथःशर्करयायुतः ॥ विस्फोटंपित्तजंहंतिसोपद्रवमसंशयम् ॥

अर्थ—दाख, कंभारी, खजूर, पटोलपत्र, नीबकी छाल, अडूसा, खीर, धमासू उनके काठेमें मिश्री डालके देवेतौ उपद्रवपुक्त पित्तविस्फोटका नाशकरे ॥

कफविस्फोट ।

छर्द्यरोचकजाड्यानिंकंडूकाठिन्यपांडुताः ।

अवेदनश्चिरात्पाकासविस्फोटःकफात्मकः ॥

अर्थ-वमन, अरुचि, जडता तथा फोडा खुजली युक्त हो, कठिन, पीले और उन्में पीडा होय नहीं और वे बहुत कालमें पके, यह विस्फोट कफका जानना ॥
भूनिंवादि ।

भूनिंबनिंबवासाश्चत्रिफलेद्र्यवासकाः । पिचुमंदःपटोलचिक्का

थमेपांसशर्करम् । पीत्वाविमुच्यतेनूनंकफविस्फोटकात्नरः ॥

अर्थ-चिरायता, नींबकी छाल, अडूसा, हरड, वहेडा, आँवला, इन्द्रजौ, धमासो, नींबकी छाल, पटोल पत्र इनका काठा मिश्री डालके देवे तो कफ-विस्फोटसे मुक्त होय ॥

ककपित्तज विस्फोट ।

कंडूर्दाहोज्वरश्छर्दिरेतस्तुकफपित्तकः ॥

अर्थ-खुजली, दाह, ज्वर और वमन इन लक्षणोंसे कफपित्तजन्य वि-
स्फोट जानना ॥

द्वादशांग काथ ।

किराततिक्तकारिष्टयष्ट्याव्हांबुदपपटैः । पटोलवासकोशीर

त्रिफलाकुटजैःशृतम् ॥ द्वादशांगनरःपीत्वाविस्फोटेभ्योविमु

च्यते । द्रंद्भजेभ्यस्त्रिदोषोत्थरक्तजेभ्योहिताशनः ॥

अर्थ-चिरायता, नीमकी छाल, मुलहठी, नागरमोथा, पित्तपापडा, पटोल, पत्र, अडूसा, खस, हरड, वहेडा, आँवला और इन्द्रजौ इन बारह औषधोंका काठा देवे तथा पथ्यसे रहे तो द्रंद्भज, त्रिदोषज, तथा रक्तज, ऐसे विस्फोटोंका नाश करे ॥

वातपित्तात्मक ।

वातपित्तकृतोयस्तुकुरुतेतीव्रवेदनाम् ।

अर्थ-वातपित्तके विस्फोटमें तीव्र पीडा होती है ॥

अमृतादि काथ ।

अमृतवृषपटोलंमुस्तकंसप्तपर्णखदिरमसितवेत्रनिंबपत्रंहरिद्रे ।

शृतमितिसविसर्पांक्नुष्टविस्कोटकंडूरपनयतिमसूरिंशीतपि

त्तज्वरौच ॥

अर्थ-गिलोय, अडूसा, पटोलपत्र, नागरमोथा, सतौना, लाल खैरकी छाल, बेंतकी कोंपल, नींबूके पत्ते, हलदी, दारुहलदी इनका काढा विसर्प, कुष्ठ, विस्फोट, कंडू, मसूरिका और पित्तज्वर इनका नाश करे ॥

कफवातात्मक विस्फोट ।

कंडूस्तौमित्यगुरुभिर्जानीयात्कफवातिकम् ॥

अर्थ-खुजली, गोलापना, भारीपना इन लक्षणोंसे कफवातका विस्फोट जानना ॥

सन्निपातका विस्फोट ।

मध्येनिम्नोन्नतौतेचकठिनोल्पःप्रपाकवान् । दाहरागतृपा
मो हृष्टार्दिमूच्छोरुज्वरः ॥ प्रलापोवेपथुस्तंद्रासोसाध्यश्चर्त्रि
दोपजः ॥

अर्थ-जो फोडा बीचमें नीचा होय और ओरपाससे ऊंचा होय, कठिन, कुष्ठ पका होय हे तथा जिसके योगसे दाह, अंगमें लाली, प्यास, मोह वमन मूच्छा पीडा, ज्वर, प्रलाप, कंप, तन्द्रा ये लक्षण होते हैं वो सन्निपातका विस्फोट असाध्य हे ॥

रक्तज विस्फोट ।

रक्तारक्तसमुत्थानागुंजाफलनिभास्तथा । वेदितव्यास्तुरक्ते
नपौत्तिकेनचहेतुना ॥ नतेसिद्धिसमायांति सिद्धेर्यांगशतैरपि ॥

अर्थ-रुधिरसे प्रगट भया विस्फोट तामेकरंगका गुंजा (चिरामिटि)के समान लाल, वो रुधिरके दुष्ट होनेसे अथवा पित्तके दुष्ट होनेसे होय हे । इस्में सैकड़ों अनुभवकारी औषधके करनेसेभी साध्य नहीं होय ॥

साध्यासाध्य ।

एकदोपोत्थितःसाध्यः कृच्छ्रसाध्योद्विदोपतः ।

सर्वरूपान्वितोघोरस्त्वसाध्योभूर्युपद्रवः ॥

अर्थ-एक दोपसे प्रगट भया जो विस्फोट वो साध्य हे, द्विदोपका कष्ट-साध्य हे और सर्व लक्षणयुक्त होय सो भयंकर तथा जिस्में उपद्रव बहुत होय वो विस्फोट असाध्य हे ॥

विस्फोटके उपद्रव ।

द्विक्वाश्वासोरुचिस्त्वृष्णाअंगसादोद्ददिव्यथा ।

विसर्पज्वरहृष्टलासाविस्फोटानामुपद्रवाः ॥

अर्थ—हिचकी, श्वास, अरुचि, प्यास, अंगग्लानि, हृदयमे पीडा, विसर्प
रोग ज्वर वमन ये विस्फोटके उपद्रव जानना ॥

पटोलादि काय ।

पटोलामृतभूनिववासारिष्टकपर्पटैः ।

खादिराष्टयुतैःकाथोविस्फोटज्वरज्ञांतये ॥

अर्थ—पटोलपत्र, गिलोय, चिरायता, अडूसा, नीवकी छाल, पित्तपापडा,
खादिराष्टक इनका काढा विस्फोट ज्वरके नाशनार्थ देवे ॥

दूर्वादि घृत ।

दूर्वाविचोदुंबरजंबुशालसप्तछदाश्वत्थकपायकल्कैः ।

सिद्धं हि सर्वज्वरदादपाकविस्फोटशोफान्विनिहंतिसर्पिः ॥

अर्थ—दूब, वच, गूलर, जामुन, कोहकी छाल, सतौना, पीपल इनका
काढा करके अथवा कल्क मिलायके सिद्ध करा हुआ घौ सर्वज्वर, दाह,
पाक, विस्फोट और सूजन इनको नाश करे ॥

निवादि काय ।

निवत्वक्खादिरः सारोगुडूचीशक्रजोथवा ।

काथोमाशिकसंयुक्तोविस्फोटादिज्वरापहः ॥

अर्थ—नीवकी छाल, खैरसार, गिलोय और इन्द्रजो इनका काढा सहत
डालके देवे तो विस्फोटादि ज्वरका नाश करे ॥

भूनिवादि काय ।

भूनिववासाकटुकापटोलंफलत्रिकंचंदननिवसिद्धः ।

विसर्पेदाहज्वरशोफकंडूविस्फोटतृष्णावामिनुत्कपायः ॥

अर्थ—चिरायता, अडूसा, कुटकी, पटोलपत्र, हरड, बहेडा, आवला, चंदन
और नीवकी छाल इनका काढा विसर्प, दाह, ज्वर, सूजन, कंडू, विस्फोट,
प्यास, और बांति इनका नाश करे ॥

शर्करादि घृत ।

पद्मकमधुकंलोध्रनागपुष्पस्यकेसरम् ॥ हरिद्रेद्रेविडंगानिसू

क्ष्मैलातगरंतथा । कुष्ठलाक्षापत्रकंचसिक्थकंतुत्थमेवच ॥

बहुवारः शिरीषंचदधित्थफलमेवच । तोयेनालोडयतत्सर्वं

घृतप्रस्थंविपाचयत् ॥ यांश्चरोगान्निहन्त्याद्धितात्रिवोधमहासुने ।

सर्पकीटाखुदष्टेपुनाडीदुष्टविसर्पिषु ॥ विविधेष्विचविस्फोटैः
तामूत्रक्षतेषु च । नाडीपुगंडमालासुप्रभिन्नासुविशेषतः ॥

अर्थ—पन्नाख, मुलहदी, लोध, नागकेशर, हलदी, दारुहलदी, वायविडंग, छोटी इलायची, तगर, कूठ, लाख, तमालपत्र, भोम नीलायोथा, बहुवार, सिरस-वृक्षकी छाल, कैथके फल ये संपूर्ण जलमें पीस कल्क करे इसमें ६४ तोले घीको डालके पचावे, यह सर्प, कीट, मूसा इनका काटना, नाडीव्रण, विसर्प, अनेक प्रकारके विस्फोट, लूता, मूत्रसे उत्पन्न हुए घाव, नाडी, गंड-माला, बहनेवाली गंडमाला इनको नाश करे, यह पन्नकादि महाघृत, आस्तिक वैद्यने निर्माण कराहै ॥

पंचतित्त घृत ।

पटोलसप्तछदनिववासाफलत्रिकच्छिन्नरुहाविपक्वम् ।

तत्पंचतित्तं घृतमाशुहन्यात्रिदोषविस्फोटविसर्पकंडूः ॥

अर्थ—पटोलपत्र, सतोना, नीमकी छाल, अडूसा, हरड, बहेडा, आँवला, इनके कल्क करके सिद्ध करा घी, त्रिदोषजनित विस्फोट, विसर्प, और कंडू इनको नाश करे इसको पंचतित्त घृत कहत हैं ॥

चंदनादि लेप ।

चंदननागपुष्पंचतंदुलीयकवारिणा ।

शिरीषवल्कलंजातिलेषः स्यादाहनाशनः ॥

अर्थ—चंदन, नागकेशर, सिरसकी छाल, चमेलीके पत्ते इनके चूर्णको चौलाईकी जडके रसमें घोटकर लेप करे तो दाहको नाश करे ॥

विस्फोटपर पथ्य ।

क्षुधितेलंपितेवांतेजीर्णेशालियवादिभिः । मुद्गाढकिमसूराणां

रसैर्वाविश्वसंयुतैः ॥ सुनिपण्णकवेत्त्राग्रतंदुलीयकठिलकैः ।

कुलकाभीरुकरैः सपपटकतीनसैः ॥ टंकारवेष्टैः कुसुमैर्नि

वपल्लवविल्वजैः । तित्तयूपसमायुक्तैर्मार्जनसंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—विस्फोटवाले मनुष्यको क्षुधित लंपित वांत (कजडुआ) अजीर्ण रहित होनेपर चावल जव आदि मूग तुवर मसूर इनका रस मूंड मिलाकर देवे और वेत चौलाई करेला ये शाक देवे परवलकी बेल शतावर पित्तपापडा तिरच्छ वृक्षकी छाल करेलाके फूल नांवके पत्ते बेलके पत्ते कसैला यूप इनसे विस्फोटका मार्जन (सेकना) करे तो शांत होय ॥

विस्फोटकेपर अपथ्य ।

तिलान्मापान्कुलित्थांश्चलवणाम्लकटूनिच ॥

विदाहिरूक्षमुष्णंचविस्फोटेपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ-तिल उड़द कुलथी लवण मिरच विदाहि रूक्ष गरम इनको विस्फोटवाला वर्जदेवे ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे विस्फोटयोगस्य विदानीचिकित्सा समाप्त ।

मसूरिका ।

मसूरिकानिदान ।

कटुम्ललवणक्षारविरुद्धाध्यशनाशनैः । दुष्टनिप्पावशाकादि
प्रदुष्टपवनोदकैः ॥ क्रुद्धग्रहेक्षणाद्वापिदेहेदोषाःसमुद्धताः । ज
नयन्तिशरीरेस्मिन्दुष्टरक्तेनसंगताः । मसूराकृतिसंस्थानाःपि
टिकाःस्युर्मसूरिकाः ॥

अर्थ-कटुआ, खट्टा, नोन, खारी, विरुद्ध भोजन, अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन) दुष्ट अन्न, निप्पाव (शिबीबीज उरद मूंग) आदिशाक, विषेल फूल आदिसे मिलापवन तथा जल, शनैश्चरादि खोटि ग्रहोंका देखना इन सब कारणों करके शरीरमें वातादि दोष फुपित होकर दुष्ट रुधिरमें मिलकर मसूरिके समान देहमें अनेक मसूरी उत्पन्न करे, उनके मसूरिका (माता) ऐसे कहते है " दुष्टरक्तेन संगताः" इस पदके धरनेसे रुधिरका कटु अम्लादिहेतु करके विशेष कोप दिखाया इसीसे ग्रन्थांतरोंमें लिखाहै ॥

मसूरिकाके पूर्वरूप ।

तासांपूर्वज्वरःकंडूर्गात्रभंगोरुचिभ्रमः ।

त्वचिशोफश्चवैवर्ण्येनेत्ररोगस्तथैवच ॥

अर्थ-तिस माता (शीतला) के पूर्वज्वर होयहै, खुजली, देहमें फूटनी होय,अन्नमें अरुचि, भ्रम होय, अंगके ऊपरकी त्वचामें सूजन होय तथा वर्ण पलटजाय, नेत्र लाल हांय ये शीतलाके पूर्वरूप होते है ॥

फुंसीहोनेका कारण ।

पित्तंशोणितगंभृत्वायदादूपयतित्वचम् ।

तदाकरोतिपिटिकाःसर्वगात्रेपुदेहिनाम् ॥

अर्थ—पित्त रुधिरको प्राप्त होकर जब त्वचाको दूषित करताहै तब शरीर-धारियोंके संपूर्ण अंगोंमें पिटिका (फुन्सी) उत्पन्न होजातीहै ॥

मसूरिकाका स्वरूप ।

मसूरमापमुद्गादितुल्याःकालोपमाअपि ।

मसूरिकास्तुताज्ञेयारक्तपित्ताधिकावुधैः ॥

अर्थ—मसूर उड़द मूँगआदिके तुल्य जो श्याम फुन्सी होवे ये पंडितोंन अधिक रक्तपित्तवाली मसूरिका जाननी ॥

मसूरिकाचिकित्सा ।

मसूरिकायांकुष्ठोक्तालेपनादिक्रियाहिता ।

पित्तश्लेष्मविसर्पौक्ताक्रियावात्रप्रशस्यते ॥

अर्थ—मसूरिकापर कृष्टके ऊपरकी अथवा पित्तश्लेष्मजनित विसर्पपर जो चिकित्सा कही है वो करे तो हितकारी और प्रशस्त है ॥

सामान्यक्रम ।

सर्वासां वमनपूर्वपटोलारिष्टवासकैः ॥ कपायश्चविधातव्योय

ष्ट्याह्वफलकल्कतैः ॥ सक्षौद्रंपाययेद्ब्राह्मिरसंवाहिलमोचिकम् ॥

अर्थ—सर्व प्रकारकी शीतलाओंमें पटोलपत्र, नीबकी छाल और अडुसा इनका काढा वमन करनेको देवे, अथवा वच, इन्द्रजों, मुलहटी इनमें सहत डालके कल्क देवे, अथवा ब्राह्मीका रस, वा वधुआका रस सहतेके साथ देवें ॥

घातमसूरिका ।

स्फोटाःकृष्णारुणारूक्षास्तीव्रवेदनयान्विताः । कठिनाश्चिरपा

काश्चभवंत्यनिलसंभवाः ॥ संध्यस्थिपर्वणांभेदःकासःकंपोर

तिक्रमः ॥ शोपस्ताल्वोष्ठजिह्वानांतृष्णाचारुचिसंयुता ॥

अर्थ—घातमसूरिकाके फोडा फाले, लाल, और रूक्ष होते है उनमें तीव्र पीडा हाय, कठिन होय, शीम पके नहीं, इसके योगसे संधि हाड और पचोंमें फोडने फीसी पीडा होय, खांसी, कंप, चित्त स्थिर नही बिना परिश्रमके श्रम होय, तालुआ और जीभ ये सूखने लगें प्यास, अरुचि, ये लक्षण होते हैं ॥

वातमसूरिकाका यत्न ।

वातस्यरेचनं देयं शमनं त्ववलेनरे ।

उभाभ्यां हृतदोषस्य विशुष्यंति मसूरिकाः ॥

अर्थ—वात मसूरिका पर जुलाव फरे, यदि रोगीको असक्त जाने तो शमन देवे, इसप्रकार दोनों उपचारोंसे दोष न्यून होनेसे मसूरिका सूख जाती है ॥

धूप ।

वेणुत्वक्सुरसालाक्षाकार्पासास्थिमसूरिकाम् । यवपिष्टं विपंस
पिर्वचाब्राह्मोसुवर्चला ॥ धूपनार्थे यथालाभं धूपमेनं प्रयोजयेत् ॥
आदावन्ते प्रयोक्तव्यो नश्यन्त्यस्मान्मसूरिकाः ॥ नष्टं ह्यतिविपं
केचीद्यथालाभश्रुतेरिह ॥

अर्थ—बाँसकी छाल, तुलसी, लाख, रुईके विनोले, मसूर, जोंकाचून अतीस, घी, वच, ब्राह्मी और हुलहुल, इनमेंसे जो मिले, उनकी धूनी देवे, शीतलाओके आदिमें और अंतमें तो मसूरिका नष्ट होवे, कोई “यथालाभ” इस पदके कहनेसे अतीस नहीं लेना ऐसा कहते हैं ॥

न्यग्रोधादिलेप ।

न्यग्रोधपुक्ष्मं जिष्टाशिरीषो दुंवरत्वचाम् ।

ससर्पिष्कं मसूर्यां तु वातजायां प्रलेपनम् ॥

अर्थ—वात मसूरिका पर बड, पाखर, मर्जाठ, सिरस और गूलर इनकी छाल लेकर, वारीक पीस घीसे लेप करे ॥

चंदनादिवल्गु ।

श्वेतचंदनकल्केन हिलमोचोद्भवंद्रवम् ।

पिवेन्मसूरिकारं भेनैवं वाकेवलं रसम् ॥

अर्थ—मसूरिकाके प्रारंभमें ब्राह्मीके रसमें सपेद चंदनका कल्क डालके अथवा केवल ब्राह्मीका रस देवे ॥

गुडूच्यादिचूर्ण ।

गुडूचीमधुकंद्राक्षामोरटंदाडिमैः सह । पाककाले प्रदातव्यं

भेषजं गुडसंयुतम् ॥ तेन कुप्यति नो वायुः पाकं यांति मसूरिकाः ॥

अर्थ—शीतला पकनेके समय, गिलोय, मुलहठी, दाख और अनार ये सात दिनकी व्याई हुई गौंके दूधमें गुड मिलायके देवे तो वायुका कोप नहीं होय, तथा शीतला उत्तम रीतिसे पके ॥

घृहत्पटोलादिकाय ।

पटोलसारिवामुस्तापाठाकटुकरोहिणी । खदिरःपिचुमंदश्वच
लाधात्रीविकंकतः॥एपांकपायपानंतुहंतिवातमसूरिकाम् ॥

अर्थ—पटोलपत्र, सारिवा, नागरमोथा, पाढ, कुटकी, खैरकीछाल, नीबकी
छाल, खिरेटी, आँवला, विकंकत इनका काढा करके देवे तो वादीकी मसू-
रिकाओंका नाश करे ॥

दशमूलादिकाय ।

द्वेपंचमूल्योरास्नाचथात्र्युशीरंदुरालभा ।

सामृतंधान्यकंसुस्तंजयेद्वातमसूरिकाम् ॥

अर्थ—दशमूल, रास्ना, आँवला, खस, धमासों गिलोय, धनिया और नागर-
मोथा इनका काढा वातमसूरिकाका नाश करे ।

पित्तमसूरिका ।

रक्ताःपीताःसिताःरुफोटाःसदाहास्तीव्रवेदनाः । भवंत्यचिरपा
काश्वपित्तकोपसमुद्भवाः ॥ विश्वभेदश्चांगमर्दश्चदाहस्तृष्णारु
चिस्तथा । मुखपाकोक्षिपाकश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः ॥

अर्थ—पित्तकी मसूरिकाका मुख लाल, पीला, सपेद होय है उसमें दाह तथा
पीडा बहुत होय और ये शीतला शीघ्रपके, इसके, योगसे मल पतला होय
अंग दृढे, दाह, प्यास, अरुचि, मुखपाक और नेत्रपाक होय ज्वर तीव्र हों ये
लक्षण होय ॥

सामान्ययत्न ।

शोधनंपित्तजायांनकार्यवैद्येनजानता ।

तत्रादौतर्पणंकार्यंलाजचूर्णैःसर्कारैः ॥

अर्थ—पित्तकी मसूरिकापर जाननेवाला वैद्य रेचन कदाचित् न देवे; उसपर
प्रथम खीलोंका चूर्ण मिश्री मिलाय उसका पना करके देवे ॥

निंघादिकाय ।

निंबःपर्पटकंपाठापटोलंचंदनद्वयं । वासादुरालभाधात्रीसेच्यं
कटुकरोहिणी ॥ एपांतुकथितंशीतंसितयामधुरीकृतं । मसू
रिकांपित्तकृतांहंतिरक्तोत्तरामपि ॥

अर्थ-नींबकी छाल, पित्तपापडा, पाठ, पटोलपत्र लालचंदन, चंदन, अडुसा, धमासा आंवले, नेत्रवाला, कुटकी इनका काढा शीतल होनेपर मीठा करनेको इसमें मिश्री मिलायके देवे, तो पित्तादिक तथा रक्तादिक ममूरिकाका नाश करे ॥

निंवादि ।

आदावेवमसूर्यातुपित्तजायांप्रयोजयेत् ।

निंवादिकथितंतेनप्रशाम्यंतिमसूरिकाः ॥

अर्थ-प्रथम पित्तजन्य ममूरिकापर निंवादि काढा देवे, कि जिस्से वो शांति होय निंवादिका काढा ऊपर कह आये हैं ॥

द्राक्षादि ।

द्राक्षाकाश्मर्यखजूरपटोलारिष्टवासकैः ॥ लाजामलकदुःस्प

शंकथितंशर्करान्वितं । मसूरिकांपित्तकृतांरक्तजांचविनाशयेत् ॥

अर्थ-दाख, कंभारीके फल, खजूर, पटोलपत्र, नींबकी छाल, अडुसा, खील, आंवले, धमासा इनका काढा मिश्री मिलायके देवे, तो पित्तादिक तथा रक्तजन्य ममूरिकाओंका नाश करे ।

रक्तजन्य मसूरिका ।

रक्तजायांभवंत्येतेविकाराःपित्तलक्षणाः ॥

अर्थ-रक्तज ममूरिकामें पित्तज ममूरिकाके लक्षण होते हैं ॥

कफजन्य मसूरिका ।

कफप्रसेकःस्तैमित्यंशिरोरुग्गात्रगौरवम् । हृल्लासश्चारुचिस्तं

द्रानिद्रालस्यसमन्विता ॥ श्वेताःस्निग्धाभृशंस्थूलाःकंदूरा

मंदवेदनाः ॥ मसूरिकाःकफोत्थाश्चचिरपाकाःप्रकीर्तिताः ॥

अर्थ-कफकी ममूरिकामें मुखके द्वारा कफका स्राव होय, अंगमें आर्द्रता, तथा भारीपना, मस्तकमें शूल, वमन आनेकीसी इच्छा होय, अरुचि, निद्रा, तन्द्रा आलस्य ये होय और फोडा, सपेद चिकने अत्यंत मोटे होय इन्में खुजली बहुत चले, पीडाप्रद होय और वे बहुत दिनमें पके ॥

पंचमूलादि काय ।

बृहतःपंचमूलस्यवृषपत्रयुतस्यच ।

कषायःशमयेत्पीतःकफोत्थांतुमसूरिकाम् ॥

अर्थ—बृहत्पंचमूल, और अडूसेके पत्ते इनका काढा करके पीवे तो कफ-जन्य ममूरिकाका नाश करे ॥

अडूसेका स्वरस ।

वृषपत्ररसंदद्यात्पानार्थमधुसंयुतं ।

कफजायामसूर्यातुकठिनायांविशेषतः ॥

अर्थ—कफसे उत्पन्न हुई शीतलापर अडूसेके रसमें सहत डालके पिलावे, और यदि वो शीतला कठोर होवे तो विशेष करके देवे ॥

खदिरादि लेप ।

खदिरारिष्टपत्रैश्चशिरीषोदुंबरत्वचां ।

कुर्याल्लेपःकफोत्थायामसूर्याभिपगुत्तमः ॥

अर्थ—खैरकी छाल, नींबूके पत्ते, सिरस वृक्षकी छाल, गूलरकी छाल, इनका कफजन्य शीतलापर लेप करे ॥

दुरालभादि काय ।

दुरालभापर्पटकंपटोलंकटुरोहिणी ।

पिवेन्मसूर्यामतेपांक्वाथंपित्तकफात्मके ॥

अर्थ—धमासो पित्तपापडा, पटोलपत्र, कुटकी इनका काढा पित्तकफात्मक शीतलापर देवे ॥

गुडूच्यादि काय ।

गुडूचीपर्पटानंताकटुकीक्वाथितंपिवेत् ।

वातपित्तमसूर्यातुघोरोपद्रवभाजिच ॥

अर्थ—गिलोय, पित्तपापडा, धमासो और कुटकी इनका काढा घोर उपद्रव करनेवाली वातपित्तात्मक शीतलापर देवे ॥

नागरादि काय ।

नागरमुस्तागुडुचीधान्यकभांगीवृषेकृतेःकाथः ।

वातश्लेष्ममसूर्यदूरिकुरुतेतुपानतःसत्यं ॥

अर्थ—सोंठ, नागरमोथा, गिलोय, धनिया, भारंगी और अडूसेके पत्ते इनका काढा प्राशन करनेसे वातकफात्मक शीतलाओंको दूर करे, यह सत्य है ॥

त्रिदोषजन्यममूरिका ।

नीलाश्विपिटविस्तीर्णामध्येनिम्नामहारुजः ।

चिरपाकाः पृतिस्त्रावाःप्रभृताःसर्वदोषजाः ॥

अर्थ—त्रिदोषज मसूरिकाके फोडा नीले, चिपटे, लंबे, बीचमें नीचे ऐसे होय उन्में फोडा अत्यंत होय तथा वे बहुत दिनमें पके और उन्मेंसे दुर्गन्ध युक्त साव होय, वे फोडा सर्व दोषके बहुत होय है ॥

चर्मपिटिका ।

कंठरोधोरुचिस्तंद्राप्रलापारतिसंयुताः ।

दुश्चिकित्स्याःसमुद्दिष्टाःपिटिकाश्चर्मसंज्ञिताः ॥

अर्थ—जिस फोडाके होनेसे कंठ रुकजाय, अरुचि, तन्द्रा, प्रलाप, चैन न पडना ये लक्षण होते है जिन्की औषधी नहीं होसके ऐसी चर्मसंज्ञक पिटिका जाननी ॥

रोमांतिक ।

रोमकूपोन्नतिसमारागिण्यःकफपित्तजाः ।

कासारोचकसंयुक्कारोमांत्योज्वरपूर्विकाः ॥

अर्थ—कफपित्तसे केशोंके (बालोंके) छिद्रके समान बारीक और लाल ऐसी मसूरिका होय इनके होनेसे खांसी, अरुचि होय तथा इनके होनेसे पहिले ज्वर होय इसको रोमांच (कसूमी माता) ऐसे कहते है ॥

रसगत मसूरिका ।

तोयबुद्बुदसंकाशास्त्वग्गताश्चमसूरिकाः ।

स्वल्पदोषाःप्रजायंतेभिन्नास्तोयंस्रवंतिच ॥

अर्थ—रसगत मसूरिका पानीके बबूलके सदृशहो, इनके फूटनेसे पानी वहै यह त्वग्गत मसूरिका है कारण इसका यह है कि, दोष स्वल्प है ॥

रक्तगत मसूरिका ।

रक्तस्थालोहिताकाराःशीघ्रपाकास्तनुत्वचः ।

साध्यानात्यर्थदुष्टाश्चभिन्नारक्तंस्रवंतिच ॥

अर्थ—रुधिरगत मसूरिका तामेके रंगकी, जल्दी पकनेवाली होती है टन्के ऊपरकी त्वचा पतली होय है । यह अत्यन्त दुष्ट होनेसे, साध्य नहीं होय और इसके फूटनेसे इसमेंसे रुधिर निकले ॥

मांसगत मसूरिका ।

मांसस्थाःकठिनाःस्निग्धाश्चिरपाकापनत्वचः ।

गात्रशूलोरतिःकंडूमुच्छांदाहृत्पान्विताः ॥

अर्थ—मांसस्थ मसूरिका कठिन, चिकनी होय है ये बहुत दिनमें पके तथा इसकी त्वचा पतली होय, अंगोंमें शूल होय, चैन पडे नहीं, खुजली चले, मूर्च्छा दाह और प्यास ये लक्षण होते हैं ॥

भेदोगत मसूरिका ।

भेदोजामंडलाकारामृदवःकिंचिदुन्नताः । घोरज्वरपरीताश्च
स्थूलाःकृष्णाःसवेदनाः ॥ संमोहारतिसंतापाःकश्चिदाभ्यो
विनिस्तरेत् ॥

अर्थ—भेदोगत मसूरिका मंडलके आकार अर्थात् गोल होय, नरम कुछ ऊंची मोटी तथा काली होय हैं । इसके होनेसे भयंकर ज्वर, पीडा, इन्दी, मनका मोह, चित्तका अस्थिर होना, संताप ये लक्षण होते हैं । इस मसूरिकासे कोई एक आदि मनुष्य बचता होगा इसमें यह दिखाई कि, यह अत्यन्त कृच्छ्रसाध्य है ॥

अस्थिगत तथा मज्जागतके लक्षण ।

अस्थिगात्रसमारूढाश्चिपिटाःकिंचिदुन्नताः । मज्जात्थाभृशंसं
मोहवेदनारतिसंयुताः ॥ छिदंतिमर्मधामानिप्राणानाशुहरंति
ताः । भ्रमरेणैवविद्धानिभवंत्यस्थीनिसर्वतः ॥

अर्थ—अस्थिमज्जागत मसूरिका बहुत छोटी, देहके समान रक्त, चिपटी कुछ ऊंची होय है अत्यंत चित्तविभ्रम, पीडा, अस्वस्थता ये होते हैं । तिन मर्मस्थानोंके भेद करके शीघ्र प्राण हरण करे इसके होनेसे सर्व हड्डियोंमें भौरोंके काटनेके समान पीडा होय है ॥

शुक्रगत मसूरिका ।

पक्वाभाःपिटिकाःस्निग्धाःश्लक्ष्णाश्चात्यर्थवेदनाः । स्तैमित्यार
तिसंमोहदाहोन्मादसमन्विताः ॥ शुक्रजायांमसूर्यातुलक्षणानि
भवंतिच । निर्दिष्टकेवलंचिह्नं दृश्यतेनतुजीवितम् ॥

अर्थ—शुक्रधातुगत मसूरिका पकेके समान चिकनी, अलग अलग होय है इन्में अत्यंत पीडा होय है, इसके होनेसे मोलापना अस्वस्थता, मोह, दाह, उन्माद ये लक्षण होतेहैं रोगी बचे ऐसे इस्में कोई लक्षण नहीं दीखे इसीसे इस्को असाध्य जानना ॥

धतुगत मसूरिकेके दोषसंबंधसे लक्षण ।

दोषमिश्रास्तुसप्तैताद्रष्टव्यादोषलक्षणैः ॥

अर्थ—ये सप्तधातुगत मसूरिका वातादिकोंके लक्षणो करके तीन दोषोंके मिश्रित प्रगट भई जाननी ॥

धातुगत वा दोषगत मसूरिकाओंमें साध्यासाध्य ।

त्वग्गतारक्तजाश्चैवपित्तजाःश्लेष्मजास्तथा । पित्तश्लेष्मकृता
श्वैवसुखसाध्यामसूरिकाः । एताविनापिक्रिययाप्रशाम्यातिश
रीरिणाम् ॥

अर्थ—रसगत, रक्तगत, पित्तज, कफज, पित्तकफज ये मसूरिका सुखसाध्यहै ये औषध सिवायभी शांत होयहे ॥

कष्टसाध्य ।

वातजावातपित्तोत्थावातश्लेष्मकृताश्वयाः ।

कृच्छ्रसाध्यामतास्तास्तुयत्नादेताउपाचरेत् ॥

अर्थ—वातज, वातपित्तज, वातकफज, मसूरिका कष्ट साध्य हैं इन्की यत्न-पूर्वक चिकित्सा करे ॥

असाध्य मसूरिका ।

असाध्याःसन्निपातोत्थास्तासांवक्ष्यामिलक्षणम् । प्रवालसदृ

शाःकाश्चित्काश्चिजंबूफलोपमाः ॥ लोहजालसमाःकाश्चिदुत

सीफलसन्निभाः । आसां बहुविधावर्णाजायतेदोषभेदतः ॥

अर्थ—सन्निपातज मसूरिका असाध्य है उनके लक्षण कहताहू, कोई मूंगोंके समान लाल होय, कोई जामुनके समान, और कोई लोहजालके समान, तथा अलसीके बीजके समान होय है दोषोंके भेद करके इनके अनेक प्रकारके रंग होते हैं ॥

शीतलाकी विशेषावस्था ।

कासोहिक्राप्रमोहश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः । प्रलापारतिमूर्च्छा

श्चतृष्णादाहोऽतिघूर्णता ॥ मुखेनप्रस्रवेद्रक्तंतथाप्राणेनचक्षुषा ।

कंठेषुधुरकंकृत्वाश्वसित्यत्यर्थदारुणम् ॥ मसूरिकाभिभूतो

योभृशंप्राणेननिःश्वसेत् । सभृशंत्यजतिप्राणांस्तृष्णातोवा

तद्रूपितः ॥

अर्थ—खांसी, हिचकी, मोह, तीव्रज्वर, प्रलाप, असंतोष मूर्च्छा, प्यास, दाह, नेत्रदंडे, तिरछे, वाके फटेसेये लक्षण होते हैं मुख, नाक और नेत्र इनके

मार्ग होकर रुधिर गिरे, कंठमें घर घर शब्द होय, और भयंकर श्वासले, जो मसूरिकापीडित रोगी केवल नाकके द्वारा श्वास लेय, वो पुरुष वायु और तृपा इनसे पीडित होतसंते तत्काल प्राणत्याग करे ॥

मसूरिकाके उपद्रव ।

मसूरिकातिशोथः स्यात्कूर्परमणिवंधके ।

तथांसफलकंवापिदुश्चिकित्स्यःसुदारुणः ॥

अर्थ—मसूरिका (शीतला) के अंतमें कूर्पर, पट्टुचा तथा कंधा, इनमें सूजन होय(इसको व्यवहारमें गुरु ऐसे कहते हैं) यह चिकित्सा करनेमें कठिन है॥ शीतलाके भेद ।

देव्याशीतलयाक्रांतामसूर्यैवहिशीतला । ज्वरएवयथाभूताधि
ष्ठितोविपमज्वरः । साचसप्तीवधाख्यातातस्याभेदान्प्रचक्ष्महे ॥

अर्थ—शीतला देवीके दोषयुक्त मसूरिकाकोई शीतला कहते हैं इसमें भूतलगा ज्वरकी तरह ज्वर होता है और विपमज्वर होता है और यही सप्तीवधा नामसे विख्यात है इसके भेद कहते हैं ॥

बृहतीशीतलाके लक्षण ।

ज्वरपूर्वैर्बृहत्स्फोटैःशीतलाबृहतीभवेत् । सप्ताहांनिःसरत्येषा
सप्ताहात्पूर्णतां व्रजेत् ॥ ततस्तृतीयेसप्ताहेऽप्यतिस्खलित्व
चम् । तासांमध्येयदाकाश्चित्पाकंगत्वास्रवंतिच ॥

अर्थ—आदिमें ज्वर होकर जो बड़ी बड़ी फुन्सियोंवाली शीतला होवे तो इसको बृहती कहते हैं यह सात दिनमें निकलती हैं और सात दिनमें भरती हैं और सात दिनमें ही मूखकर त्वचाको छोड़ देती हैं और तिनोंमेंसे कितनीक फुन्सियां पककर सिरनेभी लग जाती हैं ॥

बृहतीशीतलापर उपचार ।

तत्रावधूलनंकुर्याद्विनगोमयभस्मना । निवसत्पत्रशाखाभिर्म
क्षिकामपसारयेत् ॥ जलंचशीतलंदद्याज्ज्वरेपानंतुतत्पिचेत् ॥

अर्थ—बड़ी शीतला पककर बहने लगे तो आरने उपलेकी रास लगावे, तथा नीवकी डालीसे मस्त्रियोंको निवारण करे, तथा ज्वरमेंभी शीतल जल देवे, इसमें गरमजल कदाचित् न देवे ॥

अर्थ—कोद्रवनामक शीतलमें औषध देनी होवे तो खदिराष्टकका काठा देवे, तो कोद्रव नामक शीतलाकी शांति होय ॥

खदिराष्टक ।

खदिरत्रिफलानिवपटोलामृतवासकः । अष्टकोयंजयेत्कुष्ठकंडु
विस्फोटकानिच ॥ विसर्पपामाकिटिभःशीतपित्तमसूरिकाः ।

अर्थ—खैरकी छाल, हरड बहेडा, आवला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, गिलोय,
और अटूसा इन आठ औषधोंका काठा करके देवे तो कोठ, खुजली,
विस्फोटक, विसर्प, खाज, किटिभकुष्ठ, शीतपित्त मसूरिका इनको नाशकरे ॥

साध्यासाध्यविचार ।

काश्चिद्विनापियत्नेनसुखंसिध्यंतिशीतलाः ॥ दुष्टाःकष्टतराःका
श्चित्काश्चित्सिध्यंतिवानवा । काश्चिन्नैवतुसिध्यंतियत्ततोपि
चिकित्स्ताः ॥

अर्थ—कितनीएक शीतला बिना यत्न करनेके भी सुखसे अच्छी हो जाती
है, तथा कितनीएक दुष्ट होनेसे वो कष्टसाध्य, इनमेंसे कोई २ अच्छी होती
है और कोई अच्छी नहीं होय, और बहुतसी यत्नपूर्वक चिकित्सा करने
परभी अच्छी नहीं हो ॥

निशादि फाय ।

निशाद्रयोशीरशिरीषमुस्तकैः सलोध्रभद्रथियनागकेसरैः ॥
पटोलमूलारुणतंदुलीयकैः पिवेद्धरिद्रामलकल्कसंयुतम् ।
मसूरिविस्फोटविसर्पशांतयेतथासरोमांत्यवमिज्वरापहः ॥

अर्थ—दारुहलदी, हलदी, खस, सिरस, नागरमोथा, लोप, चंदन, नाग-
केशर, पटोलपत्र, पुहकरमूल, लाल चौलाई, इनका काठा हलदी और आंव-
लके साथ पिवे, तो मसूरिका, विस्फोट, विसर्प, रोमांतिक, वमन, ज्वर
इनका नाश करे ॥

निवादि फाय ।

निवः पर्पटकंपाठापटोलंकडुरोहिणी । वासादुरालभाधात्रीस
सेव्यंचंदनद्वयम् ॥ एपनिवादिकःकायःपीतःशर्करयान्वितः ।
मसूरीसर्वजाहंतिज्वरवीसर्पसंयुताम् ॥

अर्थ—नीवकी छाल, पित्तपापडा, पाठ, पटोलपत्र, कुटकी, अडूसा, धमासो
 ऑंवले, खस, चंदन, लालचंदन इनके काठेमें मिश्री मिलायके देवे तो सन्नि-
 पातात्मक मसूरिका ज्वर, और विसर्प इनका नाश करे, इनकी निवादि
 काय कहते हैं ॥

कांचनादिकाय ।

कांचनारत्वचःकाथस्ताप्यचूर्णविचूर्णितः ।

निर्गत्यांतःप्रविष्टांतुमसूरीवाह्यतो नयेत् ॥

अर्थ—कचनारकी छालका काठा करके उसमें सौनामक्खीकी भस्म डालके
 देवे, तो भीतर घुसी हुई शीतला बाहर निकल आवे ॥

पटोलादिकाय ।

पटोलकुंडलीमुस्तावृषधन्ववासकेः । भूनिर्वनिवकटुकापर्प
 टैश्वशृतंजलम् ॥ मसूरींशमयेदामापक्वांचैवविशोधयेत् ।
 नातःपरतरंकिंचिच्छीतलाज्वरशांतये ॥ दाहज्वरेविसर्पेचत्रणे
 पिताधिकेपिच ॥

अर्थ—पटोलपत्र, गिलोय, नागरमोया, अडूसा, धमासों, चिरायता, नीवकी
 छाल, कुटकी और पित्तपापडा, इनका काठा देवे तो आम (कच्ची) मसूरिका-
 की शमन करे । तथा पक होवे तो उनका शोधन करे, तथा यह काठा दाह,
 ज्वर, विसर्प, व्रण, पित्तव्रण इनपर देवे, शीतलाके ज्वर, दूर करनेके विषयमें
 इससे परे दूसरी औषध नहीं है ।

धात्र्यादिकाय ।

धात्रीफलंसमधुकंक्थितमधुसंयुतम् ।

मुखकंठेव्रणेजातेगंडूपाथप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—शीतलामें मुख, गला, इनमें घाव होगए होय तो आवले, मुलद्दी,
 इनके काठेमें सहत डालके कुल्ले करे ॥

नेत्रकीशीतलापर उपचार ।

अक्ष्णोःसेके प्रशंसंतिगवेधुमधुकांचुना ।

अर्थ—जोखोंमें शीतला होय तो गरहेइजाके चीज और मुलद्दी इनके
 काठेसे सेचन करे ॥

अवधूलन ।

पंचवल्कलचूर्णेनक्लेदिनीमवधूलयेत् ।

भस्मनाकेचिदिच्छंतितिलचूर्णेस्तथापरे ॥

अर्थ—लस, राध, वहनेवाली शीतलामें पंचवल्कलके चूर्णसे अथवा भस्मसे अथवा तिलके चूर्णसे मले ॥

मधुकादिलेप ।

मधुकंत्रिफलामूर्वादार्वात्त्वङ्नीलमुत्पलम् ॥ उशीरलोध्रमंजि

ष्टाप्रलेपाश्चोतनेहिताः ॥ नश्यंत्यनेनचगदामसूर्योर्नभवंतिच ॥

अर्थ—सुलहदी, हरड, वहैडा, आवला, मूर्वा, दारुहलदी, दालचीनी, नीला कमल, खस, लोध और मजीठ इनका लेप करे, अथवा इनकेकाठको नेत्रोंमें छिड़के तो हितकारी होय इससे वादीकी मसूरिका नष्ट होय ॥

शंबूकस्वरस ।

शंबूकमांसस्वरसेननेत्रेसमंजयेत्तेनमसूरिकाभ्यः । नजायतेतत्र
भयंभवंतिनैताःप्रजातास्तुशमंप्रयाति ॥

अर्थ—जलकी शीपके भीतरके मांसके स्वरसका नेत्रोंमें अंजन करे तो शीतलासे नेत्रोंको भय नहीं होय, तथा शीतला नेत्रोंको नहीं होय यदि हांवे तो शांति हो जावे ॥

पंच वल्कलादि अवधूलन ।

पंचवल्कलचूर्णेनक्लेदिनीमवधूलयेत् ।

भस्मनाकेचिदिच्छंतिकेचिद्रोमयेणुना ॥

अर्थ—बड, गुलर, पीपल, पाखर और आम इनका चूर्ण वहनेवाली शीतलाको अवधूलन अथवा आरने उपलेकी रास अथवा गोंबरके चूर्णसे अवधूलन करे ॥

शीतलाके व्रणपर ।

निवमुक्तकआस्फोतावित्रीवेतसवल्कलम् ।

शृतशीतंप्रयोक्तव्यमसूरीव्रणधावेन ॥

अर्थ—नीबके पत्ते, मुक्तक, कौयल, कंदूरी, वेतकी छाल, इनका काठा शीतलाके व्रण धोनेके वास्ते देवे ॥

रालादि वृष ।

रालहिं गुरसोनैश्च धूपयेत्तामसूरीकाः !

कृमयो न पतंत्यत्रजाताः शाम्यंतितेलघुः ॥

अर्थ—राल, हींग, और लहसन, इनकी धूनी देवे तो शीतलाके घावमें कृमि नहीं पडती, और यदि पड गई होय तो शीघ्र शांति होय ॥

अथ मसूरीकारोगपरपथ्य ।

पूर्वैलंघनवांतिरेचनशिरावेधश्शशांकोज्ज्वलाजीर्णाप्पष्टिक
शालयोपिचणका मुद्गामसूरायवाः ॥ सर्वेऽपिप्रतुदाः कपोत
चटकाः कौयट्टिदात्यूहकाजीवजीवशुकादयोऽपि कुलकंका
ठिल्लमापाठकम् ॥ १ ॥ कर्कोटीकदलंच शिशुरुचकंद्राक्षाफ
लं दाडिमं मेध्यं बृंहणमन्नपानमखिलं कोलानिमापारसाः ॥
अक्ष्णोस्सेकविधौगवेधुमधुकोद्भूतं सुशीतोदकं शम्बूकोदर
कोपनीरमपिवाकपूरचूर्णानिवा ॥ २ ॥ पक्केमुद्गरसोऽपिजाङ्ग
लरसश्शालिचशाकंघृतं धूपोगोमयभस्मगुंठनमथोशोपेत्र
पोक्तक्रिया ॥ इत्थं सर्वदशाविभागविहितं पथ्यं यथादोपत
स्संयुक्तंसुखमातनोतिनितरांनृणांमसूरेगदे ॥ ३ ॥

अर्थ—मसूरी रोगमें पहिले लंघन फिर वमन, विरेचन, फस्त, सुंदर सफेद पुराने साँठी चावल, चना, मूंग, मसूर, जौ, चोंचसें दानेको फोडकर खाने-वाले सब पक्षी, कन्नूतर, धरेलू चिडिया, टटिहरी, पपैया, चकोर, तोता आदि परवल, करेला, आषाढ महीनेमें होनेवाले फल, ककडी, केला, सहिजना, सांचर निमक, दाख, अनार, पवित्र तथा धातुओंको बढानेवाला अन्न, पान, वेर, उडदका रस, नागबला, तथा मुलेठीके शीतल जलसे आंखोंमें छीटा देना, घोंघेके भीतरका पानी अथवा कपूरका चूर्ण, और पकी मसूरीमें मूंगका तथा जंगली जीवोंके मांसका रस, शालिच शाक, घी, धूप, अर्थात् धूनी देना, अरने कंडोंकी भस्मका लगाना, सुखनेपर नींबूकी पत्ती और हल्दीको पीसकर लेप करना और पछि बाकी रहि जाय तो व्रण अर्थात् फोडेकी क्रिया करे, इस भांति सब दशाओंके विभागसे दोपके अनुसार किया गया पथ्य मसूरीरोगमें मनुष्योंको सुख देता है ॥

अपथ्य ।

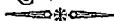
रतंस्वेदंभ्रमंतैलंगुर्वन्नक्रोधमातपम् ।

कट्फलवैगरोधंचमसूरिवान्नरस्त्यजेत् ॥

अर्थ—स्त्रीसंग, स्वेदन, भ्रम, तेल, भारी अन्न, क्रोध, धाम, कडुवा, खट्टा, वेगोंका रोकना इन सबोंका मसूरिका रोगी त्याग करे ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे मसूरिकारोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

क्षुद्ररोग ।



अजगल्लीके लक्षण ।

स्निग्धाःसवर्णाग्रथितान्नीरुजासुद्गसन्निभाः ।

कफवातोत्थिताज्ञेयावालानामजगल्लिकाः ॥

अर्थ—वालकके फफ वातसे चिकनी, त्वचाके वर्णके समान वर्ण होय, गांठसी बंधी, रुजा (पीडा) रहित, तथा मूंगके सदृश जो पिडिका होय उसको अजगल्लिका कहते है ॥

अजगल्लीकी चिकित्सा ।

तत्राजगल्लिकामामांजलौकाभिरुपाचरेत् ।

शुक्तिसौराष्ट्रिकाक्षारकल्कैश्चालेपयेन्मुहुः ॥

अर्थ—प्रथम अजगल्लिका पकी न होवे तो उसके जोख लगावे और साँपका चूना, फिटकरी, सार इनके कल्कका बारंबार लेप करे ॥

कठिनांक्षारयोगैश्चद्रावयेदजगल्लिकाम् ।

श्यामालांगलिकामूर्वाकल्करपिविलेपयेत् ॥

अर्थ—अजगल्लिका यदि कठोर होय तो उसमें सार लगायके उसमेंसे स्राव करे और श्यामा, कलियारी, मूर्वा इनके कल्कका लेप करे ॥

पक्वान्नविधानेनयथोक्तेनप्रसाधयेत् ॥

अर्थ—पकी हुई अजगल्लिका पर जो चिकित्सा ग्रण रोगपर कही है वही चिकित्सा करे ॥

यवप्ररया ।

यवाकारासुकठिनाग्रथितामांससंश्रिता ।

पिडिकाश्लेष्मन्नाताभ्यांयवप्रख्येतिचोच्यते ॥

अर्थ—कफ वातसे प्रगट जौके समान कठिन, गाँठके सदृश मांसमिश्रित, जो पिडिका होय उसको यवप्रख्या कहते हैं भोजके मतसे इसको (अंधालजी कहते हैं) ॥

अंधालजी ।

घनामवक्रांपिटिकामुन्नतांपरिमंडलाम् ।

अंधालजीमल्पपूयांतांविद्यात्कफवातजाम् ॥

अर्थ—कफवातसे प्रगट कठिन जिसमें मुख न हो, तथा ऊंची ऐसी पिडिका होय, तथा जिसके चारों ओर मंडलाकार हो, और जिसमें राध थोड़ी होय, उसको अंधालजी ऐसे कहते हैं ॥

यवप्रख्या और अंधालजीकी चिकित्सा ।

अन्धालजीयवप्रख्यांपूर्वस्वेदैरुपाचरेत् ॥ मनःशिलादेवदारु
कुष्ठैरेनांप्रलेपयेत् । पक्वांत्रणविधानेनयथोक्तेनप्रसाधयेत् ॥

अर्थ—अंधालजी और यवप्रख्या इनको प्रथम स्वेदन करे तथा मनसिल, देवदारु, कूठ, इनका लेप करे, यदि वो पकगई होवे तो ग्रणकी चिकित्सासे अच्छी करे ॥

विवृता ।

विवृतास्यांमहादाहांपक्रोदुंबरसन्निभाम् ।

परिमंडलांपित्तकृतांविवृतांनामतांविदुः ॥

अर्थ—पित्तके योगसे फटे मुखकी, अत्यन्त दाहयुक्त, पके गूलरके समान चारों ओर बलपडी हुई जो पिडिका होय उसको विवृता ऐसे कहते हैं ॥

विवृता इन्द्रवृद्धा, गर्दभ ज्वालगर्दभकी चिकित्सा ।

विवृतामिन्द्रवृद्धांचगर्दभांजालगर्दभाम् ॥

पैत्तिकस्यविसर्पस्यक्रिययासाधयेद्रिपक् ॥

अर्थ—विवृता, इन्द्रवृद्धा, गर्दभा और ज्वालगर्दभा इनको पित्तविसर्पकी क्रिया करके दूरकरे ॥

पाकेतुरोपयेदाज्यैःपक्वैर्मधुरभेषजैः । नीलीपटोलमूलाभ्यांसा

ज्याभ्यांलेपनांहितम् । जालगर्दभरूपेतुसद्योहंतिसवेदनम् ॥

अर्थ—ऊपर कही हुई व्याधियोंका पाक होनेसे उनको घी, तथा मधुर ऐसी औषधोंका लेप करे, तथा नीली, परबलकी जड, इनमें घी मिलायके लेप करे, तो हितकारी होय और दर्दयुक्त जालगर्दभका नाश करे ॥

कच्छपिकां ।

ग्रथिताः पंचवापड्वादारुणाःकच्छपोन्नताः ।

कफानिलाभ्यांपिटिकाज्ञेयाःकच्छपिकाबुधैः ॥

अर्थ—कफवायुसे प्रगट गॉठ बंधी, पांच अथवा छः कछुआके पीठके समान ऊंची जो पिडिका होय उसको कच्छपिका ऐसे कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

कच्छपींस्वेदयेत्पूर्वततएभिःप्रलेपयेत् ॥ कल्कीकृतैर्निशाकु
घृशिलातालकदारुभिः । तांपक्वांसाधयेच्छीघ्रंभिपग्व्रणचि
कित्सया ॥

अर्थ—कच्छपिकाको प्रथम स्वेदन करे, फिर हलदी, कूठ, मनसिल, देव-
दारु, इनके कल्कका लेप करे, यदि कच्छपिका पकगई होय तो उसपर व्रण-
चिकित्सा करे ॥

वल्मीक (बांवी)

श्रीवांसकक्षाकरपाददेशेसंधौगलेवाञ्छिभिरेवदोषैः । ग्रंथिःसव
ल्मीकवदक्रियाणांजातःक्रमेणैवगतः प्रवृद्धिम् ॥ मुखैरनेकेःसु
तितोद्वद्धिर्विसर्पवन्सर्पतिचोन्नताग्रैः । वल्मीकमाहुर्भिपजो
विकारंनिष्प्रत्यनीकंचिरजंविशेषात् ॥

अर्थ—कंठ, कंधा, कूख, हाथ, पैर, संधि, गला इन ठिकाने तीनों दोषोंसे
सर्पकी बांवीके समान गांठ होय, उस्का, उपाय न करे तब वो धीरे धीरे
बढ़े उस्में अनेक मुख हो जाय, उन्मेंसे स्राव होय, जोचनेकीसी पीडा होय
तथा वह मुखके ऊपर कुछ ऊंची होकर विसर्पके समान फैल जाय इस
रोगको वेद्य वल्मीक ऐसे कहते हैं ॥ इसके ऊपर औषधी उपचार नहीं चले
और पुराने होनेसे विशेष असाध्य जाननी ॥

मनःशिलादितैल ।

मनःशिलाक्तभल्लातसूक्ष्मैलागरुचंदनैः ॥ जातीपल्लवकल्कैश्च
निवतेलंविपाचयेत् । वल्मीकनाशयेत्ताद्विवहुच्छिद्रं बहुव्रणम् ॥

अर्थ—मनसिल, भिलाये, छोटी इलायची, अगर चंदन, चमेलीके पत्ते, इन-
का कल्क कर उसमें निवोरीका तेल डालके पचाये, यह बहुत छिद्रके अनेक
व्रणयुक्त वल्मीकको नाशकरे है ॥

असाध्य लक्षण ।

पाणिपादोपरिप्राचुच्छिद्रैर्वह्निभिरावृतम् ।

वल्मीकंयत्सशोफस्याद्भ्रज्यतद्विधिजानता ॥

अर्थ—बहुत छिद्रोंवाला और सोजावाला वल्मीक रोग हाथ पैरोंपर होवेतो विधिके जाननेवाला वैद्यने वह वल्मीक रोग वर्जदेना अर्थात् असाध्य होनेसे उसका इलाज नहीं करे ॥

वल्मीककी चिकित्सा ।

शस्त्रेणोत्कृत्यवल्मीकंक्षाराग्निभ्यांप्रसाधयेत् ।

विधानेनार्बुदोक्तेनशोधयित्वाचरोपयेत् ॥

अर्थ—वल्मीक नामक व्याधीको शस्त्रसे चीरके क्षार और चित्रक इनका लेप करे, और अर्बुदपर कहे अनुसार शोधन करके रोपण विधि करे ॥

वल्मीकंतुभवेद्यस्यनातिवृद्धमर्मिणाम् ।

तत्रवैशोधनंकृत्वाशोणितंमोक्षयेद्विपक् ॥

अर्थ—विनामर्मपर होकर जो बड़ी नहीं ऐसी वल्मीकका शोधन करके वैद्य रधिर निकाले ॥

लेप और पिडी ।

कुलित्यकानामूलैश्चगुडूच्यालवणेनच । आरग्वधस्यमूलैश्चदं

तीमूलैस्तथैवच ॥ श्यामामूलैःसपल्लैःसक्तुमिश्रैःप्रलेपयेत् ।

मुस्निग्धैश्चसुखोष्णैश्चभिपक्तमुपनाहयेत् ॥

अर्थ—वल्मीकव्याधिको कुलथीकी जड़, गिलोय, निमक, अमलतास दंती श्यामा इनकी जड़, तथा मांस, सत्तु, इनके कल्कसे लेप करे और स्निग्ध तथा मंदोष्ण ऐसी पिडी बनायके बाँधे ॥

पनसिका ।

कर्णस्याभ्यंतरेजातांपिटिकामुग्रवेदनाम् ।

स्थिरांपनसिकांतांतुविद्याद्वातकफोत्थिताम् ॥

अर्थ—कानके भीतर वात पित्त कफसे जो फुंसी उग्रवेदना सहित प्रगट होय और वह स्थिर होय उसको पनसिका कहते हैं ॥

पनसिकाकी चिकित्सा ।

भिपक्पनसिकांपूर्वस्वेदनैरपतर्पणैः ।

जयेद्विदारिवल्लेपैःशिशुदेवद्रुमोद्भवैः ॥

अर्थ—वैद्य पनसिकाको प्रथम स्वेदन करे और अपतर्पण करे, फिर सहजना देवदार, इनका लेप करे, तथा विदारिके ऊपर जो लेप कहा है वो करे ॥

जालगर्दभ ।

विसर्पवत्सर्पतियःशोथस्तनुरपाकवान् ।

दाहज्वरकरःपित्तात्सज्ञेयोजालगर्दभः ॥

अर्थ—पित्तके विसर्पके समान इधर उधरको फैलनेवाली पतली तथा कुछ कनेवाली ऐसी मूजन होय उसमें दाह होय और ज्वर होय इसको जालगर्दभ कहते हैं कोई आचारी कहते हैं कि, इसमें पकता नहीं होय ॥

इन्द्रवृद्धा ।

पद्मकर्णिकवन्मध्येपिडिकाभिःसमाचिताम् ।

इन्द्रवृद्धांतुतांविद्याद्वातपित्तोत्थितांभिपक् ॥

अर्थ—कमलकर्णिकके समान बीचमें एक पिडिका होय, उसके चारों ओर छोटी छोटी फुंसी होय उसको इन्द्रवृद्धा ऐसे कहते हैं । यह वातपित्तसे उत्पन्न होय है ॥

गर्दभिका ।

मंडलं वृत्तमुत्सन्नं सरत्तं पिटिकाचितम् ।

रुजाकरीगर्दभिकांतांविद्याद्वातपित्तजाम् ॥

अर्थ—वातपित्तसे प्रगट एक गोल ऊंची तथा लाल और फोडोंसे व्याप्त ऐसा मंडल होय, वो बहुत दूखे, उसको गर्दभिका ऐसे कहते हैं ॥

पापाणगर्दभ ।

वातश्लेष्मसमुद्भूतःश्वयथुर्हनुसंधिजः ।

स्थिरोमंदरुजंःस्निग्धोज्ञेयःपापाणगर्दभः ॥

अर्थ—वात कफसे ठोडीकी संधिमें कठिन, मन्द पीडा करनेवाली, चिकनी ऐसी मूजन होय उसको पनसिका कहते हैं ॥

पापाणगर्दभकीचिकित्सा ।

सुरदारुशिलाकुप्टैःस्वेदयित्वाप्रलेपयेत् ।

कफमारुतशोफप्रोलेपःपापाणगर्दभे ॥

अर्थ—पापाण गर्दभको देवदारु, मनसिल कूड, इनसे स्वेदन करके लेपकरे और कफवातजनित जो मूजनपरलेप लिखा है वो इस पापाणगर्दभ पर करे ॥

इरिवेष्टिका ।

पिडिकामुत्तमांगस्थांवृत्तामुग्रज्वरान्विताम् ।

सर्वात्मिकांसर्वलिंगांजानीयादिरिवेष्टिकाम् ॥

अर्थ—त्रिदोषसे प्रगट मस्तकमें गोल, अत्यंत पीडा और ज्वर करनेवाली, त्रिदोषके लक्षणसंयुक्त ऐसी पिडिका होय उसको इरिवेष्टिका कहते हैं ॥

कक्षा (कखलाई) ।

पैत्तिकस्यविसर्पस्ययाचिकित्साप्रकीर्तिता ।

तामेवभिपगेतांचचिकित्सेदिरिवेष्टिकाम् ॥

अर्थ—पित्तकी विसर्पपर जो वेद्योंने चिकित्सा कही है वही चिकित्सा इरिवेष्टिकापर करे ॥

गंधनाम्नी ।

एकामेतादृशींष्टिपिडिकांस्फोटसन्निभाम् ।

त्वग्गतांपित्तकोपेनगंधनाम्नीप्रचक्षते ॥

अर्थ—पित्तके कोपसे जो एक पिडिका फोडाके समान बड़ी त्वचाके भीतर होय, उसको गन्धनाम्नी ऐसे कहते हैं ॥

कक्षागंधनाम्नीकी चिकित्सा ।

कक्षांचगंधनाम्नीचचिकित्सेच्चचिकित्सकः ।

पैत्तिकस्यविसर्पस्यक्रिययापूर्वमुक्तया ॥

अर्थ—कक्षा (कखलाई) और गंधनामक व्याधी इनपर पित्त विसर्पकी कही हुई चिकित्सा करे ॥

अग्निरोहिणी ।

कक्षाभागेपुयेस्फोटाजायंतेमांसदारुणाः ॥ अंतर्दाहज्वरक

रादीप्तपावकसन्निभाः ॥ सप्ताहाद्द्वादशाहाद्रापक्षाद्द्राहंतिमा

नवम् । तामग्निरोहिणींविद्यादसाध्यांसन्निपाततः ॥

अर्थ—कांखके आसपास मांसके विदारण करनेवाले जो फोडा होते हैं तिसकके अंतर्दाह होय तथा ज्वर होय फोडा प्रदीप्त अग्निके समान लाल होय; इन फोडोंमें वायु अधिक होनेसे सात दिन, पित्ताधिकसे बारह दिन और कफाधिकसे ५ दिनमें, रोगी मरे यह अग्निरोहिणी नामक त्रिदोषज पिडिका असाध्य है यह कठिन है ॥

अग्निरोहिणीकी चिकित्सा ।

पित्तवीसर्पविधिनासाधयेदग्निरोहिणीं । रोहिण्यालंघनंकुर्याद्भ्र
क्तमोक्षश्चरूक्षणं । शरीरस्यचसंशुद्धितांतुवृद्धांपरित्यजेत् ॥

अर्थ—अग्निरोहिणीपर पित्तविसर्पकी चिकित्सा करे तथा प्रथम लंघन, रक्त-
मोक्ष और रूक्षणविधि करे, तथा शरीरकी शुद्धि करके फिर चिकित्सा करे
और यदि अग्निरोहिणी बढ गई होय तो उसको असाध्य जानके त्याग देय ॥

चिप्य ।

नखमांसमधिष्ठायवातपित्तेचदेहिनाम् ।

कुर्वातेदाहपाकौचतंव्याधिचिप्यमादिशेत् ॥

तदेवाल्पतरैर्दोषैःकुनखंपरुषंवदेत् ॥

अर्थ—वायु और पित्त नखोंके मांसमें स्थित होकर दाह और पाकको करे,
इस रोगको चिप्य ऐसा कहतेहै यह अल्पदोषोंसे होयतो इसको कुनखकहतेहै॥
चिप्यकुनखकी चिकित्सा ।

चिप्यंरुधिरमोक्षेणशोधनेनाप्युपाचरेत् । गतोष्माणमथैनंतुसे

चयेदुष्णवारिणा॥शस्त्रेणापियथायोग्यमुच्छिद्यस्त्रावयेत्ततः ॥

व्रणोक्तेनविधानेनरोपयेत्तुविचक्षणः ॥

अर्थ—चिप्यका रुधिर निकालके शोधन करे रुधिर निकालके उसमेंसे
जब गरमी निकल जाय तब गरम जलसे संचन करे, तथा शस्त्रसे यथायोग्य
काटकर रक्तस्राव करके व्रणके ऊपर जो औषधी कहाहैं वो करे तथा
रोपणविधि करे ॥

हरिद्रादि कल्क ।

स्वरसेनहरिद्रायाःपात्रेकृत्वायसेभयाम् ।

घृद्धातप्नेनकल्केनलिप्येन्निप्यंपुनःपुनः ॥

अर्थ—हलदीके स्वरसमें हरडका चूर्ण डालके उसको लोहके पात्रमें खरल
करे उस कल्कसे चिप्यको चारवार लेप करे ॥

अंगुलीवैष्टकपर ।

काश्मर्याःसप्तभिःपत्रैःकोमलैःपरिवेष्टितः ।

अंगुलीवैष्टकःपुंसांधुवमाशुप्रशाम्याति ॥

अर्थ—कंभारीके कोमल सात पत्ते ले उंगलीको लपेटके बाँध देवे तो उंगली वेष्टक रोग शीघ्र शांतिहोय ॥

कुनखपर ।

श्लेष्मविद्रधिवच्चैवकुनखंसमुपाचरेत् ॥ नखकोटिप्रविष्टेनटंकणे
ननशाम्यति । कुनखश्चेत्तदाशैलःसलिलेप्लवतेपिच ॥

अर्थ—कुनखपर कफविद्रधिकी क्रिया करे और नखकी बगलमें सुहागरे-
का चूर्ण भरे तो कुनखका नाश होय यदि असा न होयतो पर्वत पानीपर तरे ॥
अनुशयी ।

गंभीरामल्पसंरंभांसवर्णासुपरिस्थिताम् ।

पादस्यानुशर्यातांतुविद्यादंतःप्रपाकिनीम् ॥

अर्थ—पैरोमें त्वचाके समान वर्ण यत्किंचित् सूजन युक्त, भीतरसे पकीजी
पिडिका होय, उसको अनुशयी ऐसे कहते है ॥

अनुशयीकी चिकित्सा ।

हरेदनुशर्यावैद्यःक्रिययाश्लेष्मविद्रधैः ॥

अर्थ—वैद्यको अनुशर्यै व्याधिका कफ विद्रधिके ऊपरका उपचारसे शमनकरे ।
विदारिका ।

विदारिकंदवद्वृत्ताकक्षावंक्षणसंधिषु ।

विदारीकाभवेद्रक्तासर्वजासर्वलक्षणा ॥

अर्थ—विदारी कंदके समान गोल, कांखमें अथवा वंक्षण स्थानमें जो गांठ
तामेके रंग कीसी होय, उसको विदारिका ऐसे कहते हैं यह सन्निपातसे होय
है अर्थात् इसमें तीनों दोषोंके लक्षण होत है ॥

विदारिकाकी चिकित्सा ।

विदारिकायांप्रथमंजलौकायोजनंहितम् ।

पाटनंचविपक्वायांततोव्रणविधिःस्मृतः ॥

अर्थ—विदारिका पर प्रथम जोख लगायके रुधिर निकाले तो हितकारी
होय तथा उसके पकनेसे उसमें धीरा देकर व्रणोक्त क्रिया करे ॥

सामान्य यत्न ।

जयेद्विदारिकालेपैःशिशुदेवद्वुमोद्भवैः ॥

अर्थ—विदारिका पर सहंजना, देवदार, इनका लेप करके जीते ॥

शर्करावृद्धि ।

दुर्गंधिक्लिन्नमत्यर्थनानावर्णैततःशिराः ।

सृजन्तिरक्तंसहसातद्विद्याच्छर्करावृद्धिम् ॥

अर्थ—शर्करा होनेके अनंतर नाडियोंसे दुर्गन्ध क्लेदयुक्त अनेक प्रकारके वर्णका (घृत, मेद, और वसा इनके वर्णका) रुधिर स्रव, उसको शर्करावृद्धि कहते हैं, परंतु भोजने शर्करावृद्धिको शर्करा रोगके अन्तर्गत कहा है ॥

शर्करा ।

प्राप्यमांसंशिराःस्नायुःश्लेष्मामेदस्तथानिलः । ग्रंथिकरोत्यसौ

भिन्नोमधुसर्पिर्वसानिभम् ॥ स्रवत्यात्त्रावमानिलस्तत्रवृद्धिगतः

पुनः । मांसंविज्ञोप्यग्रथितांशर्करांजनयेत्ततः ॥

अर्थ—कफ मेद और वायु ये मांस शिरा और स्नायु इनमें प्राप्त हो गांठ बांधते हैं, जब वो फूटे तब उसमेंसे सहत, घृत, चर्बी, इनके समान स्राव हो तिस वकें वायु पुनः बढकर मांसको सुखाय उसकी बारीक खिचीसी गांठ करे उसको शर्करा कहते हैं ॥

शर्करावृद्धिकी चिकित्सा ।

भेदावृद्धिविधानेनसाधयेच्छर्करावृद्धिम् ॥

अर्थ—शर्करावृद्धि पर भेदावृद्धिकी चिकित्सा करे ॥

पाददारी ।

परिक्रमणशीलस्यवायुरत्यर्थरूक्षयोः ।

पादयोःकुरुतेदारीसरुजांतलसंश्रिताम् ॥

अर्थ—जिस पुरुषको बहुत चलना पडे है उसके पैर वायुके योगसे अत्यंत रूक्ष होकर पैरोंके तलुओंको विदीर्ण कर दे (फाड दे) उसको पाददारी कहते है अर्थात् विवाई कहते है विपादिका कृष्ट फंट नहीं है, फूटे निकले है यह इसमें भेद जानना ॥

चिकित्सा ।

पाददार्यांशिरांप्राज्ञोभोक्षयेत्तलशोधिनीं ।

स्नेहस्वेदोपपन्नौतुपादौवालेपयेन्मुहुः ॥

अर्थ—पाददारी रोग होनेसे पैरोंके त्रवाकी शिरावधके रुधिर निकाल और पैरोंके स्नेह (चिकनाई) लगायके सैंके अर्थात् पसीने निकाले और औषधोंका लेप करे ॥

मधूच्छिष्टादिलेप ।

मधूच्छिष्टवसामज्जाघृतक्षारविमिश्रितैः ॥ सर्जाह्वसिंधूद्भवयो
शूर्णमधुघृतप्लुतम् ॥ निर्मथ्यकटुतैलाक्तंहितंपादप्रमार्जनम् ॥

अर्थ—मोम, चर्बी, मज्जा, घी, क्षार इनमें राल तथा सेंधानिमकका चूर्ण और सहत सरसौका तेल इन सबको एकत्र करके खरल करे फिर पैरोंके लगावे तो पाददारी दूर होय ॥

मदनादिलेप ।

मदनसैधवगुग्गुलुगैरिकाज्यमधुवालकपंकविलेपनात् ।
स्फुटितमप्यखिलंचरणद्वयं विकचतामरसप्रतिमं भवेत् ॥

अर्थ—मैनफल, सैधानिमक, गुग्गुलु, गेरू, नेत्रवाला इनका चूर्ण, सहत और घी इनमें मिलायके लेप करे तो दोनों पैरोंका फटना दूर होय और पैर कमलके समान कोमल होवे ।

मध्वादिलेप ।

मधुसिक्थकसैधवघृतगुडमहिपाख्यरालनिर्यासैः ।
गैरिकसहितैलेपः पादस्फुटनापहः सिद्धः ॥

अर्थ—सहत, मोम, सैधानिमक, घी, गुड, गुग्गुलु, राल और गेरू इनको एकत्र करके लेप करे, तो पैरोंके फटनेको नाश करे ।

उपोदिकादि तैल ।

उपोदिकासर्पपनिवमोचकर्कारु(?)भस्मतोयैः ।
तैलं विपक्वं लवणेन युक्तं तत्पाददारीं विनिहंति सद्यः ॥

अर्थ—पोईका शोक, शिरस, नींबकी छाल, मोचरस, कर्कोडा, खीरा, राखका पानी, तैल और निमक इनको एकत्र मिलायके तैलको पचावे, जब तैल सिद्ध होजावे तब उतारके पाददारीपर लगावे तो तत्काल पाददारीका नाश करे ॥

मदनादि लेप ।

मदनंच तथासिक्थं सामुद्रलवणंतथा । महिपीनवनीतेन संतप्तं
लेपनेहितम् । सप्ताहांत्स्फुटितौपादौ जायते कमलोपमौ ॥

अर्थ—मैनफल, मोम, निमक इन सबको भँसके मक्खनमें मिलाय अप्ति-पर गरम करके लेप करे, हितकारी होय, तथा पैर सात दिनमें कमलके समान होवे ॥

सैधवादि लेप ।

सैधवंचंदनंरालंमधुसर्पिः पुरोगुडं ।

गैरिकंस्फुटितौपादौलित्तौस्यात्पंकजोपमौ ॥

अर्थ—सैधानिमक, चंदन, राल, सहत, घां, गुगल, गुड, और गेरू इनका लेप करे तो फटनेवाले पैर कमलके समान नरम होवे ॥

कदर ।

शर्करोन्मथितेपादेक्षतेवाकंटकादिभिः ।

ग्रन्थिःकीलवदुत्पन्नोजायतेकदरंतुतत् ॥

अर्थ—पैरोंमें कंकर छिदनेसे अथवा कांटे लगनेसे बैरके समान ऊंची गांठ प्रगट होय, उसको कदर अर्थात् टेक कहते है अथवा “ ग्रन्थिः कीलवदुत्पन्नो ” इस जगें ‘ ग्रन्थिः कीलवदुत्पन्नो ’ ऐसाभी पाठ है अर्थात् कीलके समान जो गांठ होय उसको कदर कहते है यह कदर रोग हाथोंमेंभी होय है सो भोजने’ लिखाभी है ॥

चिकित्सा ।

दहेत्कदरमुद्धृत्यतैलेनदहनेनवा ॥

अर्थ—कदरको काटके तेलसे अथवा अग्निसे दाह करे ॥

. अलसनिदान (स्तारुण)

छिन्नांगुल्यंतरौपादौकंडूदाहरुजान्वितौ ।

दुष्टकर्मसंस्पर्शादलसंतंविभावयेत् ॥

अर्थ—दुष्ट कीचमे डोलनेसे (चर्पा आदिका पानी और सड़ीकीचमे डोलनेसे) पैरोंकी उंगली गीली रहनेसे, उंगलियोंके बीचमें (सपेद सपेद चकत्ता हो जाय) उन्मे खुजली, दाह और गीलापन होय तथा पीडा होय, उसको जलस अर्थात् खारुआ कहते है ये कफरक्तके दोषसे होता है ॥

अलसचिकित्सा ।

पादौसिक्त्वारनालेनलेपनंत्वलसेहितम् । पटोलकुनटीनिंबरो

चनासुरिचैस्तिलैः ॥ क्षुद्रास्वरसासिद्धेनकटुतैलेनलेपयेत् ।

ततःकासीसकुनटीतिलचूर्णैर्विचूर्णयेत् ॥

१ इसलिये पादयोश्चापि शैथिल्यमुक्तं स्थिरम् । मांसविल जनपतः कुपितौ कफप्रदातौ ॥ संज्ञान्तरि तं
देशे मन्थते तेन धीदितम् । शर्करासहं केचि मन्थते यातकटकम् ।

अर्थ—अलस व्याधिपर पैरोंमें कांजी लगाय फिर पटोलपत्र, मनसिल, नीमकी छाल, गोरोचन, मिरच, तिल, और कटेरीका स्वरस इसमें सरसोंक, तेल मिलायके सिद्ध करे, इसको पैरोंके लगावे पश्चात् हीराकसीस, मनसिल और तिलोंका ये ऊपरसें मसल देवे ॥

करंजादिलेप ।

करंजबीजरजनीकासीसंपद्मकंमधु ।

रोचनाहरितालंचलेपोयमलसेहितः ॥

अर्थ—अलस व्याधिपर कंजेके बीज, हलदी, हीराकसीस, पन्नाख, सहत गोरोचन और हरताल इनका लेप करे तो हितकारी होय ॥

इन्द्रलुप्त ।

रोमकूपानुगंपित्तंवातेनसहमूर्च्छितम् । प्रच्यावयतिरोमाणि
ततःश्लेष्मासशोणितः ॥ रुणद्धिरोमकूपांस्तुततोन्धेपामसंभ
वः । तदिन्द्रलुप्तंखालित्यंप्राहुश्चाचेतिचापरे ॥

अर्थ—पित्तवादीके साथ कृपित होकर रोमकूपोंमें अर्थात् बालोंके छिद्रोंमें प्राप्त हो, तब मस्तक अथवा अन्य स्थानके बाल झडने लगे, पीछे कफ और रुधिर रोमकूप कहिये बालोंके प्रगट होनेके स्थानको रोकदे, उससे फिर बाल नहीं उगे, इस रोगको इन्द्रलुप्त खालित्य चाचा (चाई) कहते है । यह रोग स्त्रियोंके नहीं होय, इसका कारण यह है कि, उनका रुधिर महीनेके महीने शुद्ध होताहै है और निकलरहै है, इसीसे रोमकूपोंको नहीं रोकै है सो विदेहाचार्यने लिखाभीहै और इसी रोगको खालित्य और रुह्या कहतेहैं, सो भोजने लिखाहै परंतु कार्तिकाचार्य कहते हैं कि, इन्द्रलुप्त रोग मूछ डाठीमें होयहै और खालित्य रोग शिरमें होय है और रुह्यारोग पीडासहित होयहै ॥

यत्न ।

इद्रलुप्तापहोलेपोमधुनावृहतीरसः । गुंजामूलंफलंवापिभ्रष्टा
तकरसोपिवा । लेपःसनवनीतोवाश्वेताश्वसुरजामपी ॥

अर्थ—इन्द्रलुप्तपर कटेरीका रस अथवा गुंजाकी जड अथवा फल, अथवा भिलायेका रस इनको सहतसे अथवा सपेद घोडेका खुर जलायके उसकी राख मक्खनमें खरलकर लेप करे ॥

लेप ।

हस्तिदंतमर्षीकृत्वाछागदुग्धरसांजतम् ।

रोमाण्येतेनजायंतेलेपात्पाणितलेष्वपि ॥

अर्थ—हाथीदांतको भून उसकी स्याही, बकरीका दूध, और रसोत इनको एकत्र कर लेप करे, इससे पैरके तलवाओंमेंभी बाल आवे ॥

तित्तादिस्वरस ।

तिक्तपटोलीपत्रस्वरसैर्घृष्टाशमंयाति ।

चिरकालजापिनिरुजनियतांदिवसत्रयेणैव ॥

अर्थ—इन्द्रलुप्तपर परबलके पत्तोंका स्वरस चुपडे, तो तीन दिनमें बहुत दिनकीभी इन्द्रलुप्त दूर होय ॥

गोधुरादिलेप ।

गोक्षुरस्तिलपुष्पाणितुल्येचमधुसर्पिणी ।

शिरःप्रलेपितंतेनकेशैःसमपचीयते ॥

अर्थ—गोखरु, तिलके फूल, सहत और घी ये पदार्थ समान भागले मस्तकपर लेपकरे तो बाल उत्पन्न होंगे ॥

जात्यादि तैल ।

जातीकरंजवरुणकरवीराग्निपाचितम् ।

तैलमभ्यंजनाद्भ्रंतिइन्द्रलुप्तनसंशयः ॥

अर्थ—बमेली, करंज, वरना, और कंनर इनके रसमें तैल डालके पचावे, इसको लगावे तो इन्द्रलुप्त नाश होय इसमें संदेह नहीं है ॥

सुहीदुग्धादि लेप ।

स्तुहीपयःपयोर्कस्यान्मार्कवोलांगलीविषम् । अजामूवंसगोमू

त्रंरक्तिकोसंद्रवारुणी ॥ सिद्धार्थकस्तीक्ष्णगंधासम्यगोभिर्विपा

चितम् । तैलंभवतिनियमात्स्वालित्यव्याधिनाशनम् ॥

अर्थ—थहरका दूध, आफका दूध, और भांगरा, कल्यारी, सिंगिया विप गोमूत्र बकरीका मूत्र, इंधचौ, इन्द्रायन, सपेदसरसो, सपेदबच्च, इनमें तैल डालके पचावे, तो यह निपमसे खल्वाटपनेको नाश करे ॥

दारुण ।

दारुणाकंडुरारुक्षाकेशभूमिर्विपच्यते ।

कफमारुतकोपेनविद्यादारुणकंतुतत् ॥

अर्थ—कफवायुके कोपसे केशोंकी जमीन अति कठिन होकर खुजावे, खरदरी होय, तथा बारीक फुंसी होकर पके, उसको दारुणक ऐसे कहते हैं, कफ वातके कोपसे यह राग होय है इसका कारण यह है कि विना पित्तके पाक नहीं होय, सो विदेहने कहाभी है ॥

चिकित्सा ।

दुग्धेनखाखसंवीजंप्रलेपादारुणंहरेत् ॥

अर्थ—खसखसको दूधमें पीसके लेप करे तो दारुणका नाश करे ॥

कटकार्यादिलेप ।

कंटकारीफलरसैस्तुल्यंतैलंविपाचयेत् ।

जपापुष्पद्रवैर्वाथतलेपोदारुणप्रणुत् ॥

अर्थ—कटेरीके रसमें अथवा गुडहरके फूलोंके रसमें समान तेल डालके पचावे इसका लेप करनेसे दारुण रोगका नाश होय ॥

प्रियालादिलेप ।

कार्योदारुणकेमूर्ध्निप्रलेपोमधुसंयुतः । प्रियालवीजमधुकु

ष्टमापैःससंधवैः । कांजिकैस्तुत्रिसप्ताहंलेपोदारुणकापहः ॥

अर्थ—चिरोजी, मुलहदी, कूठ, उदड, सैधानिमक, और कांजी इन सबको एकत्र पीस इसमें सहत डालके १ दिन लेप करे तो दारुण रोगका नाश होय ।

आम्रवीजादि लेप ।

आम्रवीजस्यचूर्णंतुशिवाचूर्णंसमंद्रयम् ।

दुग्धपिष्टप्रलेपोयंदारुणंहंतिदारुणम् ॥

अर्थ—आम्रकी गुठली तथा हरडका समान भाग चूर्ण दूधमें पीसके लेप करे तो उग्र दारुणका नाश करे ॥

भृंगराज तैल ।

भृंगराजरसेनैवलोहकिट्टफलत्रिकम् । सारिवाचपचेत्कल्कैस्ते

लंदारुणनाशनम् । अकालपलितंकंडूर्मिंद्रलुप्तंचनाशयेत् ॥

अर्थ—भांगरेका रस, लोहेकी कीट, हरड, बहेडा, आवला और सारिवा, इनके कल्कमें तेल डालके पचावे जब सिद्ध हो जावे, तब इसका लेप करे तो दारुण, अकालमें वालोंका सपेद होना, कंडू और इन्द्रलुप्त, इनको नाश करे ॥

१ यदत्रपटलाभाससरजस्कन्धिरसत्वधि । पदपत्रायित्ततोस्तस्यरूपविशेषत ॥ तोद्रे समन्वितवातसकपद्गौरवं कश्चत् । सविपाससदाहातिरोगपिपासव्रतथा ॥

गुजादि तैल ।

गुंजाफलैःशृतंतैलंभृंगराजरसेनच ।

कंडूदारुणहृत्कुष्ठकपालव्याधिनाशनम् ॥

अर्थ—भांगरेका रस, घूयचीका कल्क, इनमें तैल मिलापके सिद्ध करे, यह कंडू, दारुण, कोठ, और मस्तककी व्याधि इनको नाश करे ॥

अरुंपिका ।

अरुंपिवहुवक्राणिवहुक्लेदानिमूर्धनि ।

कफासृक्कृमिकोपेननृणांविद्यादरुंपिकाम् ॥

अर्थ—रुधिर कफ और कृमि इनके कोपसे मायमें बहुत फुंसी हो जायँ, उनमेंसे चेष विशेष निकरे और क्लेद युक्त होंय इन फुंसीयोंको अथवा ब्रणोंको अरुंपिका कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

नीलोत्पलस्यकिंजल्कोधात्रीफलसमन्वितः ।

यष्टीमधुकयुक्तश्चलेपाद्भन्यादरुंपिकाम् ॥

अर्थ—नीले कमलकी केशर, आवले और मुलहदी, इनका लेप करे तो अरुंपिकाका नाश होय ॥

त्रिफलादि तैल ।

त्रिफलायारजोयष्टिमार्कवोतालसारिका ।

सैंधवंपक्वमेतैस्तुलेपाद्भन्यादरुंपिका ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आँवला, मुलहदी, भौंगरो, नीले कमल, सारिका और सैंधानिमक इनके कल्कमें तैल सिद्ध करके लेप करे, तो अरुंपिकाको नाश करे ॥

पिण्यावादि लेप ।

पुराणमपिपिण्याकंपुरीपंकुट्टस्यच ।

मूत्रापिष्टःप्रलेपोयंशीघ्रंन्यादरुंपिकाम् ॥

अर्थ—पुरानी खल और मुरगेंकी विष्ठा इनको मूत्रमें खरल करके लेप करे तो तत्काल अरुंपिका नाश करे ॥

सामान्य यत्न ।

अरुंपिकायारुधिरेवसित्तेशिराव्यधेनाथजलौकयावा ।

निवांबुसित्तंशिरसिप्रलेपादयोश्चवचौरससैंधवाभ्याम् ॥

अर्थ—अरुंधिका होनेसे फस्त खोले, अथवा जोख लगायके रुधिर निकाल-
डाले, तथा नाँवके रससे छिडके और घोडेके लीदमेंके रसमें सैधानिमक
डालके लेप करे ॥

हरिद्रादि तैल ।

हरीद्राद्रयभूर्निवत्रिफलारिष्टचंदनेः ।

एतत्तैलमरुंधीणांसिद्धमभ्यंजनेहितम् ॥

अर्थ—हलदी, दारुहलदी, चिरायता, हरड, बहेडा, आँवला, नाँवकी
छाल और चंदन इनके काठेमें अथवा कल्कमें तैल डालके पचावे, इसका
लेप करे तो अरुंधिका नष्ट होय ॥

सदिरादि लेप ।

सदिरारिष्टजंबूनांत्वग्भिर्वामूत्रसंयुतैः ।

कुटजत्वकूसेंधवंवालेपाद्भ्यादरुंधिकाम् ॥

अर्थ—खैर, नाँवकी छाल, जामुन, इनकी छाल, गोमूत्र, कूडाकी छाल
और सैधानिमक इनका लेप अरुंधिकाको नाश करे ॥

पलित (बालोंका सपेद होना) ।

क्रोधशोकश्रमकृतःशरीरोष्माशिरोगतः ।

पित्तचकेशान्पचतिपलितंतेनजायते ॥

अर्थ—क्रोध शोक और श्रमके करनेसे, उत्पन्न भई जो शरीरउष्मा (गरमी)
और पित्तसो मस्तकमें जायकर बालोंको पकायदे, अर्थात् सपेद करदे उस
करके यह पलित रोग होयेहै पलित रोगपर मधुकोशटीकाकारने तथा भाव-
प्रकाशने शास्त्रार्थ लिखा है ॥

अयादि लेप ।

अयोरजोभृंगराजस्त्रिफलाकृष्णमृत्तिकाः ॥

स्थितमिशुरसेमासंलेपनात्पलितं जयेत् ॥

अर्थ—लोहेका चूर्ण, भाँगरा, हरड, बहेडा आँवला, और काली मिट्टी इन
सबको ईखके रसमें पीसके एक महीने लेप करे तो पलितताको नाश करे ॥

धान्यादिलेप ।

धान्नोफलद्वयपथ्येद्वैतैकंविभीतकम् । पंचाम्रमज्जालोहस्य
कर्पकंचप्रदापयेत् ॥ पिष्ट्वालोहमयेभांडेस्थापयेदुपितंनिशि ।
लेपोयंहंतिनचिरादकालपलितंमहत् ॥

अर्थ—आंवले ८ तोले, हरड ८ तोले, बहेडा ४ तोले, आमकी गुठली २० तोले, लौहचूरा १ तोले, इन सबको एकत्र पीस कल्क करके लौहके वासनमें धर रखे, जब एकरात्रि घीत जावे तब इसका लेप करे, तो अकालमें केशोंका पकना नाश होय ॥

निंबतैलयोग ।

निंबस्यतैलंप्रकृतिस्थमेवनस्यंविधेयंविधिनायथावत् ।

मासेनगोक्षीरभुजोनरस्यचिरात्प्रभूतंपलितंनिहंति ॥

अर्थ—केवल नींबका तेल विधिपूर्वक निकालके केशोंपर लेप करे, नस्य देवे, और दूधभात भोजन करे तो एक महिनेमें सब बाल पक गए होय तो बोभी काले होय ॥

त्रिफलादि लेप ।

त्रिफलानीलिकापत्रंभृंगराजोह्वयोरजः ।

अविमूत्रेणसंपिष्टेलेपात्कृष्णीकरंपरम् ॥

अर्थ—त्रिफला, नीलके पत्ते, भोंगरा, लोहका चूर्ण, इनको बकरीके मूतमें पीसके लेप करे, तो बालोंको अत्यंत काले करे ॥

काश्मर्यादि तैल ।

काश्मर्यमूलमादौसहचरकुसुमंकेतकस्यापिमूलंलौहंचूर्णसंभृ
गंत्रिफलजलयुतंतैलमेभिः पचेद्यः । कृत्वालोहस्यभांडेक्षिति
तलनिहितंस्थापयेन्मासमेकंकेशाःकाशप्रकाशात्पिमधुपनि
भाजस्ययोगाद्भवन्ति ॥

अर्थ—कंभारीकी जड़, पीयावांसके फूल केतकीकी जड़ लोहेका चूर्ण, भोंगरा और त्रिफलेका काठा इनमें तेल डालके पचावे, फिर इसको मुख बंद पात्रमें भर १ महिने पृथ्वीमें गड़ा रहने दे, फिर बालोंको लगावे तो काँसके समान पकके सपेद हुए बाल भोंराके समान काले हो जावे ॥

तारुण्यपिटिका ।

शाल्मलीकंटकप्रख्याःकफमारुतकोपजाः ।

जायंतेपिडिकायूनांविज्ञेयामुसदूपिकाः ॥

अर्थ—कफ वायुके कोपसे सेमरके कांटके समान तरुण (जवान) पुरुषके मुखके ऊपर जो फुंसी होय उनको मुखदूपिका जयात् मुहांसे कहते हैं इनके होनेसे मुख बुरा होजाता है ॥

चिकित्सा ।

युवानपिटिकान्यच्छनीलीव्यंगाःसर्कराः ।

शिरावेधैःप्रलेपैश्चजयेदभ्यंजनैस्तथा ॥

अर्थ—तारुण्यपिटिका, न्यच्छ, नीलीव्यंग और शर्करा ये व्याधि, फस्त-खौल, लेप और अभ्यंजन इनसे जीते ॥

जातीफलादिलेप ।

जातीफलचंदनचमरिचंसहपेपितम् ।

मुखलेपेनहंत्याशुपिटिकांयौवनोद्भवाम् ॥

अर्थ—जायफल, चंदन, मिरच इनको एकत्र पीस मुखपर लेपकरे तो शीघ्र तारुण्यपिटिका नष्ट होवे ॥

लोध्रादिलेप ।

लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिटिकापहः ।

तद्द्रोरोचनायुक्तंमरिचंमुखलेपनात् ॥

अर्थ—लोध, धनिया, वच, इनका अथवा गोरोचन और मिरच, इनका लेप तरुणावस्थाकी पिटिकाओंको नाश करे ॥

सिद्धार्थादिलेप ।

सिद्धार्थकवचालोध्रसैधवैश्चप्रलेपनम् । गव्येनचार्जुनत्वग्वा

मंजिष्ठावासमाक्षिका॥कंटकैःशाम्ललैर्यश्चक्षोरपिष्टैःप्रलेपयेत् ।

मुखेतस्यापिपिटिकाःसंक्षयंयांत्यसंशयम् ॥

अर्थ—सपेद सरसों, वच, लोध, सैधान्निमक इनको गौके दूधमें पीसके इसको अथवा कोह वृक्षकी छालको दूधमें पीस उसको अथवा सहत और मजीठ, इनका लेप करे अथवा सेमरके काँटे दूधमें पीस लेप करे तो तरुण-ताके मुहाँसे नष्ट होवे ॥

पद्मिनीकंटक ।

कंटकैराचितंवृत्तमंडलंपांडुकंडुरम् ।

पद्मिनीकंटकप्रख्यैस्तदाख्यंकफवातजम् ॥

अर्थ—कमलके काँटेके समान काँटे चारों ओर युक्त हों, गोल पीले रंगका, खुजली जिसमें चलती होय, ऐसा एकमंडल होय, उसको पद्मिनीकंटक ऐसे कहते है यह कफ वायुसें होय है ॥

व्यंग ।

क्रोधायासप्रकुपितोवायुःपित्तेनसंयुतः । मुखमोगत्यसहसामं
डलंविमृजत्यतः । नीरुजंतनुकंश्यावंमुखेव्यंगंतमादिशेत् ॥

अर्थ-क्रोध और श्रम इन्से कुपितभया वायु सो पित्त संयुक्त होकर मुखमें
प्राप्त होकर एक मंडल उत्पन्न करे वो दूखे नहीं वो पतला तथा श्यामवर्ण
होय उसको व्यंग ऐसे कहते है ॥

चिकित्सा ।

त्रिभुवनविषयापत्रंमूलंस्थविरस्यशिशपांचैभिः ।
उद्धर्तनंविरचितंन्यच्छव्यंगापहंसिद्धम् ॥

अर्थ-त्रिभुवनविजया (भांग) के पत्ते, देवदारुकी जड़ और सीसो,
इनको पीस मुखपर मालिस करे अर्थात् उबटना करे तो न्यच्छ, व्यंग,
इनको नाश करे ॥

वटांकुरादि लेप ।

वटांकुरामसूराश्वप्रलेपाव्यंगनाशनाः ॥
व्यंगमंजिष्ट्यालेपः प्रशस्तोमधुयुक्तया ॥

अर्थ-बड़के अंकुर, मसूर, इनको अथवा सहतसे मजीठका लेप करे तो
व्यंग (झाई)का नाश होय ॥

अर्जुनत्वगादि लेप ।

व्यंगेषुचार्जुनत्वक्चमंजिष्ठावृषमाक्षिकैःलेपः सनवनीतोवाश्वे
ताश्वसुरजामपी ॥ व्यंगानालेपनंशस्तंशस्यरुधिरणवा ।
वरुणास्यकपायेणमुखंप्रक्षाल्यलेपयेत् ॥

अर्थ-मुखपर झाई होनेसे मजीठ, अडूसा और सहत इनका अथवा घोंडेके
सपेद सुरकी स्याहीको मक्खनमें खरल करके लेप करे, अथवा ससेका रुधिर
लगावे, अथवा वरनाके काठसे मुखको धोवे तो व्यंगका नाश होय ॥

जातीफलादि लेप ।

वटस्यपांडुपत्राणिमालतीरक्तचंदनम् । कुष्ठं कालीयकंलोभ्रमे
भिलैपःप्रयोजयेत् । युवानपिटिकानांतुव्यंगानांचविनाशकः ॥

अर्थ-जायफलका लेपकरे तो व्यंगका नाश होय । तथा नीली और हल्दी
इनके चूर्णको आक्के दुधमें खरल करके लेपकरे तो बहुत दिनोंकी मुखकी
काली चिनाश होय ।

मसूरादिलेप ।

मातुलिंगजटाःसर्पिःशिलागोशकृतोरसः ।

मुखकांतिकरोलेपःपिटिकाव्यंगकालजित् ॥

अर्थ—मसूरको दूधमें पीस उसमें घी डाल सात दिन लेप करे तो मुख कमलके पत्रके समान होय ॥

नीलिका ।

कृष्णामेवंगुणांगत्रेमुखेवानीलिकांविदुः

अर्थ—ऊपर लिखे अनुसार जो काले मंडल (काले चकते) अंगमें अथावा मुख पर होय उसको नीलिका कहते हैं ॥

कुंकुमादितैल ।

कुंकुमचंदनलोध्रपतंगरक्तचंदन । कासीसकमुशीरंचमंजिष्ठा
मधुयाष्टिका ॥ पत्रकंपद्मकंपद्मकुण्डगोरोचननिशा । लक्षादारु
हरिद्राचगैरिकंनागकेशरं ॥ पलाशकुसुमंचापिप्रियंगुश्वर्दा
कुराः । मालतीचमधूच्छिष्टंसर्पपाःसुरभिर्वचा ॥ चतुर्गुणपयः
पित्तैरैतैरक्षमितैः पृथक् । पचेन्मंदाग्निनावैद्यस्तैलंप्रस्थद्वयो
न्मितं ॥ वदनाभ्यंजनादेतद्व्यंगनीलिकयासह । तिलकं
मापकंन्यच्छंशाशयेन्मुखदूषिकां ॥ पद्मिनीकंटकंवापिहरेजं
तुमणितथा । विदध्याद्ददनंपूर्णचंद्रमंडलसुंदरम् ॥

अर्थ—केशर, चंदन, लोध्र, पतंग, लालचंदन, दारुहलदी, खंस, मजीठ, सुलहदी, पत्रज, पद्माख, कमल, कूठ, गोरोचन, हलदी, दारु हलदी, गेरू, नागकेशर, पलासके फूल, फूलप्रियंगु, बड़के कोपलं, मालती, सेंहत, सरसी, तुलसी, वच, ये प्रत्येक तोले २ लेय, चौगुना जल डालके काढाकरे, इसमें १२८ तोले तैलडालके मंदाग्निसे पचावे इसको मुखपर लगावेतो व्यंग, नीलि, तिल, मस्ता, न्यच्छ, तरुणताके मुहासे, पद्मनीकंटक, और जंतुमणि इनका नाश करे । तथा मुखको चंद्रमाके समान स्वच्छ करे ।

परिवर्तिका ।

मर्दनात्पोडनाद्वापितथैवाप्यभिघाततः । मेढूचर्मयदावायु
भजतेसर्वतश्चरेन् ॥ तदावातोपसृष्टत्वात्तच्चर्मपरिवर्तते।मणेर

धस्तात्कोशस्तुग्रथिरूपेणलंबते ॥ सवेदनंसदाहंचपाकंचव्रज
तिक्वाचित् ॥ परिवर्तिकेतितांविद्यात्सरुजंवातसंभवाम् । सकंडूः
कठिनावापिसैषश्चेष्मसमुत्थिता ॥

अर्थ—लिंगकी मर्दन करनेसे अथवा रगड़नेसे अथवा लिंगमें किसी प्रकारकी चोट लगनेसे, व्यान वायु कुपित होकर उसके चर्ममें प्रवेश कर सर्वत्र विचरे उस समय वातसंस्पर्श हेतु कर्कें लिंगकी चर्म पृथक् होजाय और शि-
श्रका कोश सूजकर मणिके नीचे गाँठके समान होकर लटके, उसमें पीडा होय
दाह होय और कभी कभी वो पक जाय इस पीडाको परिवर्तिका कहतेहैं यह
वातसे होय है और जो कफसे होय तो उसमें खुजली तथा कठिनता होय ॥

सामान्य यत्न ।

स्वेदोपनाहौपरिवर्तिकायांकृत्वसमभ्यज्यघृतेनपश्चात् ।

प्रवेशयेच्चर्मज्ञानैःप्रविष्टेमापैःसुपिष्टैरुपनाहयेत् ॥

अर्थ—परिवर्तिका व्याधिको सेक, तथा पिंडी, बांधके फिर घृतसे अभ्यंग करे
फिर चर्मको धीरे २ प्रवेश करे फिर उददको पिष्टीकी पुलटिस बांधे ॥

प्रकारांतर ।

परिवर्तेघृताभ्यक्तांसुस्विन्नामुपनाहयेत् । त्रिरात्रंपंचरात्रंवावा
तत्रैःशाल्वणादिभिः ॥ ततोभ्यज्यज्ञानैश्चर्मवेशयेत्पीडयेन्म
णिम् । प्रविष्टेचर्मणिमणौस्वेदयेदुपनाहयेत् ॥ दद्याद्वातहरांब
स्तिस्निग्धान्यन्नानिभोजयेत् ॥

अर्थ—परिवर्तिका रोगको घृतसे अभ्यंग करके फिर पसीने निकाले, तथा
वातनाशक शाल्वणादि योगोसे तीन अथवा पांच दिन पुलटिस बांधे फिर
अभ्यंग करके धीरे २ चर्मको चढावे तथा मणि (सुपारी) को दावे, इस
प्रकार मणि पर चर्म चढ जावे, तब फिर स्वेदन कर और पिंडी बांधे, तथा
वातनाशक बस्ती करे तथा स्निग्धान्न भोजन करे ॥

अवपाटिका ।

अल्पीयस्यांयदाहर्पाद्बलाद्गच्छेत्त्रयंनरः । हस्ताभिघातादथ
वाचर्मण्युद्धर्तितेबलात् ॥ मर्दनात्पीडनाद्वापिशुक्रवेगविघात
तः । यस्यावपाट्यतेचर्मतांविद्यादवपाटिकाम् ॥

अर्थ—जिसकी योनिका छिद्र वारीक होय, ऐसी स्त्रीसे बलपूर्वक मैथुन करनेसे अथवा हाथके अभिघातके (चोटके) बलसे लिंगके चामको उलटनेसे अथवा भीडनेसे अथवा जोर पूर्वक दाबनेसे अथवा शुक्रके वेगको धारण करनेसे उस पुरुषके लिंगकी चाम फट जाय इस पीडाको अवपाटिका कहते हैं यह अवपाटिका रोगमें तीनों दोषोंके लक्षण पृथक्पृथक् होते हैं यह मर्त भोजका है ॥

चिकित्सा।

स्नेहस्वेदैरिमां वैद्यश्चिकित्सेदवपाटिकाम् ॥

अर्थ—अवपाटिकाको स्नेहन और स्वेदन इन उपचारोंकरके चिकित्साकरे ॥
निरुद्ध प्रकाश ।

वातोपसृष्टेमेद्रेतुचर्मसंश्रयतेमणिम्।मणिश्चर्मोपनद्धस्तुमूत्रस्रो-
तोरुणद्धिच॥निरुद्धप्रकृतेस्तस्मिन्मंदधारमवेदनम्।मूत्रंप्रव-
र्ततेजंतोर्मणिर्विव्रीयतेनच ॥निरुद्धप्रकाशंविद्यात्सरुजंवा-
तसंभवम् ॥

अर्थ—वायुके योगसे लिंग पीडित होनेसे चामडी सूजकर मणि भागमें प्राप्त होय, वो मणि चर्मके संकोच होनेसे मूत्रके मार्गको रोके तब मूत्रका रोध होय, तब उस पुरुषका मूत्र ठहर ठहर कर निकले, परन्तु पीडा नहीं होय, और मणि बाहर नहीं निकले, इस रोगयुक्त वातजन्य पीडाको निरुद्ध-प्रकाश कहते हैं चर्मके संकोच होनेको निरुद्ध कहते है, और मूत्रकी धार मंद निकालनेको प्रकाश कहते हैं, अवेदनम् यह जो मूलमें पाठ है इस जगे कोई (सवेदनम्) ऐसा कहते हैं । भोज आचार्यके मतसे कहते हैं सो भोज संहितामें लिखा भी है ॥

संनिरुद्धगुद ।

वेगसंधारणाद्वायुर्विहतौगुदसंस्थितः ।निरुणद्धिमहास्रोतःसू-
क्ष्मद्वारं करोति च ॥ मार्गस्यसौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेणपुरीषंतस्यगच्छ-
ति । सन्निरुद्धगुदं व्याधिमेनं विद्यात्सुदारुणम् ॥

१ मर्देना इभिघाताद्वाकन्यायोनिमर्षादनात् । लक्षणे यदि मेद्रेस्य वर्णभेदोर्भवति ॥ अवपाटिकेतिता निघात्पृथग्दोषं समन्वितात् । वाताम्लाय (१) रुजक्ष्याशूलानसौदकारिणी ॥ पित्तात्सदाहारत्तादा (दाह पत्रकी कठिन) कठुनत्पन्तवेदनी (२) । २ मेद्रेन्तोचर्मणियदा मारुत कुपितो भृशम् । द्वार निरुण-
द्धि शनैः प्रकाश च मुहुर्भवेत् ॥ शूल मूत्र यत्र कृच्छ्रात्प्रकाशन्तुयदाभवेत् । वातोपसृष्टमेद्रं च मणिर्न च विदीर्यते ॥ निरुद्ध च प्रकाशं च व्याधिं विद्यात्सुदारुणम् ।

अर्थ—मलमूत्रादिकोंके वेग रोकनेसे गुदाश्रित अपान. वायु कुपित होकर, महास्रोत्र (गुदा) का अवरोध करे, और वो द्वारको छोटा करे, पीछे मार्ग छोटा होनेसे उस पुरुषका मल बड़े कष्टसे बाहर निकले, इस भयंकर रोगको संनिरुद्ध गुद कहते हैं इस रोगमेंभी निरुद्ध प्रकाशके समान चर्मका संकोच होनेसे सन्निरुद्ध गुद होय है, अर्थात् अपान वायुके रुकनेसे पुरीष (मल) का अनिर्गम होय है ॥

चिकित्सा ।

सन्निरुद्धगुदेतैलैःसेकोवातहरैर्हितः ।

तथानिरुद्धप्रकाशक्रियापिकथिताहिता ॥

अर्थ—संनिरुद्धगुद व्याधि होनेसे वातनाशक तैल सिंचन करे, और निरुद्धप्रकाशपर जो क्रिया कही है वो सब करे ॥

अहिपूतन ।

शकृन्मूत्रसमायुक्तेऽधौतेऽपानेशिशोर्भवेत् । स्वित्रेवाद्वाप्यमा
नेवाकंदूरक्तकफोद्भवा ॥ ततःकंडूयनात्सिप्रंस्फोटाःस्त्रावश्च
जायते । एकीभूतंत्रणैर्वैरंतंविद्यादहिपूतनम् ॥

अर्थ—बालकके मलमूत्र करनेके अनंतर गुदाके न धोनेसे, अथवा पसीना आनेसे तथा धोनेके अनन्तर रुधिर कफसे खुजली उत्पन्न होय तदनन्तर खुजा-नेसे शोथ फोडा उत्पन्न होय, और उनसे स्राव, होय, पीछे ये सब मिलकर इस भयंकर व्याधिको प्रगट करें । इसे अहिपूतना कहते हैं, यह रोग बहुधा बाल लोम (छोटे २ रोम) में होय है भोज कहता है कि यह रोग दुष्ट स्तन्य-पान अर्थात् माताके दुष्ट दूधके पीनेसे बालकके होय है ॥

चिकित्सा ।

तत्रसंशोधनैः पूर्वधात्रीस्तन्यंविशोधयेत् ।

त्रिफलाखदिरक्यैर्ब्रणानांक्षालनंहितम् ॥

अर्थ—अहिपूतना व्याधि होनेसे शोधन करके माताके दूधको शोधन करे और त्रिफला, खैर, इनका काटा करके घावोंका धोवे तो हितकारी होय ॥

शांखदि लेप ।

शांखसौवीरयष्ट्याह्वैर्लेपःकार्योहिपूतने ॥

अर्थ—शांख, सुरमा और सुलहदी, इनका अहिपूतन व्याधिपर लेप करे ॥

पटोलादि फाय ।

पटोलपत्रत्रिफलारसांजनविपाचितम् ।

पीतंपृतनाशयतिकृच्छ्रमप्यहिपूतनम् ॥

अर्थ—पटोलपत्र, त्रिफला, और रसोत इनके कल्कमे घी डालके सिद्ध करे, तो यह कष्टसाध्य अहिपूतनापर पीवे, तो उसको नाश करे ॥

वृषणकच्छू ।

स्नानोत्सादनहीनस्यमलोवृषणसंस्थितः । यदाप्रक्लिद्यतेस्वे
दात्कंडूःसंजायतेतदा ॥ कंडूयनात्ततःक्षिप्रंस्फोटःस्रावश्चजा
यते ॥ प्राहुर्वृषणकच्छूतांश्रेष्मरक्तप्रकोपजाम् ॥

अर्थ—जो मनुष्य स्नान करते समय लगे हुए मलको नहीं धोवे, उस पुरुषका मल अंडकोशमें संचित होय, पीछे वो पसीना आनेसे गीला होय, तब अंडकोशमें घोर पीडा होय, और खुजानेसे तत्काल फोडा होय, पीछे वो फोडा स्रवकर आपसमें मिल जाते है, कफ रक्तसे होनेवाली इस व्याधिको वृषणकच्छू कहते है ॥

सामान्य चिकित्सा ।

भिषग्वृषणकच्छूंतुचिकित्सेत्पामरोगवत् ।

अहिपूतननिर्दिष्टक्रिययापिचतांहरेत् ॥

अर्थ—वैद्य वृषणकच्छू रोगपर पामा रोगपर जो चिकित्सा कही है वो करे और अहि पूतनापर कही हुई क्रिया करे ॥

सर्जादि लेप ।

सर्जांबुकुष्टसैधवसितसिद्धार्थैःप्रकल्पितोयोगः ।

उद्धर्तनेननियतंशमयतिवृषणकंडूतिः ॥

अर्थ—राल, नेत्रवाला, कूठ, सैधानिमक, सपेद सरसों, इनका यह योग लगानेसे नियमसे वृषणकच्छू अर्थात् पोतोकी खुजलीको नाश करे ॥

कासीसादि लेप ।

कासीसरोचनांतुत्थहरितालरसांजनैः ।

अम्लपिष्टैःप्रलेपोयमुष्ककंड्वाहिपूतनैः ॥

अर्थ—हीराकसीस, गौराचन, लीलाथोथा, हरताल और रसोत ये पदार्थ नीचके रसमें पीसके, अंडकोषकी खुजली, और अहिपूतना व्याधिपर लेपकरे ॥

गुदभ्रंश ।

प्रवाहणातिसाराभ्यांनिर्गच्छतिगुदंवहिः ।

रूक्षदुर्बलदेहस्यगुदभ्रंशंतमादिशेत् ॥

अर्थ—जिस पुरुषकी देह रुक्ष और अशक्त होय, उस पुरुषके प्रवाहन (कुन्यन) तथा अतीसार हेतुकके गुदा बाहर निकल आवै, अर्थात् कांछ बाहर निकल आवै उस रोगको गुदभ्रंश रोग कहते हैं, इस रोगमें धातुक्षय होनेसे वात कुपित होय है ॥

चिकित्सा ।

गुदभ्रंशेगुदंस्विन्नंरुनेहेनाक्तंप्रवेशयेत् ।

प्रविष्टंरोधयेद्यत्नाद्द्रव्यसच्छिद्रचर्मणा ॥

अर्थ—जिस गुदा (कांछ) बाहर निकल आई हो उसको तैलादिक लगायके भीतर कर देवे जब भीतर चली जावे तब सच्छिद्र चमड़ेसे बांध देय ॥

पद्मिनीपत्रयोग ।

पद्मिन्याःकोमलंपत्रयःखांदेच्छकैरान्वितम् ।

एतन्निश्चित्यनिर्दिष्टंनतस्यगुदानिर्गमः ॥

अर्थ—कमलनीके कोमल पत्रको जो खांडमें मिलायके भक्षण करे उसके निश्चय पूर्वक गुदभ्रंश (कांछका निकलना) कदाचित् नहीं होय ॥

मूपिकादिलेप ।

मूपिकानां वसाभिर्वागुदभ्रंशे प्रलेपयेत् ।

स्विन्नमूपकमांसिनं अथवास्वेदयेद्बृहदम् ॥

अर्थ—कांछ निकल आई होयतो उसकी भीतर करके मूसके चर्बीलगावे, अथवा मूसके मांससे गुदाको स्वेदन करे ॥

चांगेरी पत ।

चांगेरीकोलदध्याम्लनागरक्षारसंयुतम् ।

घृतमुत्कथितं पेयं गुदभ्रंशरूजापहम् ॥

अर्थ—चूका, बेरु, दही, जांवी, साँठ और क्षार इनसे घृतको सिद्ध करके गुदभ्रंश-पर मले, तो गुदाका निकलना दूर हो ॥

वृक्षाम्लादियोग ।

वृक्षाम्लनलचांगेरीविल्वपाठायवाग्रजम् ।

तत्रेणशीलयेत्पायुभ्रंशार्तोनलदीपनं ॥

अर्थ—तंतुहीक, चित्रक, चूका, बेलगिरि, पाठ, और जवासार इनको छालमें पीसके पीवे, तो गुदभ्रंशको नाश कर के अग्निको दीपन करे ॥

मूपकतैल ।

मूपकान्दशमूलानिगृण्णीयादुभयंसमं ॥ तयोःकाथेनकल्के
नपचेतैलयथोदितं ॥ अभ्यंगात्तस्यतैलस्यगुदभ्रंशोविनयति ।
विनश्यतितथातेनगुदशूलोभगंदरः ॥ गुदंचगव्यपयसावेशये
द्विशंकितः । दुःप्रवेशोगुदभ्रंशोविशत्याशुनसंशयः ॥ रसांजनं
विशेषेणपानालंपनयोर्हितं ॥

अर्थ—मूसेका मांस और दशमूल ये सम.न भागले इनके काठमें
अथवा कल्कमें तैल सिद्ध करे इस तैलके मालिम करनेसे गुदभ्रंश, गुदशूल-
भगंदर इनको नाश होय, अथवा गुदाको गौके द्रधसे छिड़कके निडरतासे
भीतरको प्रवेश कर देवे, गुदभ्रंश दुःप्रवेश होय तोभी भीतर चला जावे
इसमें संशय नहीं, तथा गुदभ्रंशपर रसोतको भक्षण करे तथा रसोत-
का लेप करे ॥

सूकरदंष्ट्र ।

सदाहोरक्तपर्यंतस्त्वत्पाकीतीव्रवेदनः ।

कंडूमान्ज्वरकारीचसस्यात्सूकरदंष्ट्रकः ॥

अर्थ—दाहयुक्त चारों ओर लाल होय, जिस्की त्वचा पकनेवाली होय,
तीव्र पीडायुक्त, खुजलीसंयुक्त तथा ज्वर करनेवाली ऐसी सूजन अथवा ग्रण
होय उसको सूकरदंष्ट्र अर्थात् ब्राह्महाट कहतेहैं ॥

चिकित्सा ।

भृंगराजकमूलस्यरजन्या सहितस्यच ।

चूर्णतु सहसा लेपाद्वाराहद्विजनाशनम् ॥

अर्थ—भोंगरेकी जड, हलदी, इनके कल्कका लेप करे तो सूकरदंष्ट्रका
नाश करे ॥

राजीवादि कल्क ।

राजीवमूलकल्कःपीतोगव्येनसर्पिपाप्रातः ।

शमयतिसूकरदंष्ट्रंदंष्ट्रोद्भूतंज्वरंधोरम् ॥

अर्थ—लाल कमलकी जडके कल्कको गौके घीसे भक्षण करे तो नियमसे
सूकरदंष्ट्रसे जो घोर ज्वर होता है उसको नष्ट करे ॥

रजन्यादि लेप ।

रजनीमार्कवंमूलंपिष्टंशीतैनवारिणा ।

तल्लेपाद्धतिवीसपैवाराहदशनाह्वयम् ॥

अर्थ—हलदी, भाँगेरकी जड़, इनको शीतलजलसे पीसके लेप करे तो विसर्प, और वराहदंष्ट्र इनको नाश करे ॥

पथ्यापथ्य ।

क्षुद्ररोगेषुसर्वेषुनानारोगानुकारिणु । दोषान्दूष्यानवस्थांचनि
रीक्ष्यमतिमान्भिषक् ॥ तस्यतस्यचरोगस्यपथ्यापथ्यानि
सर्वशः । यथादोषंयथादूष्यंयथावस्थंचकल्पयेत् ॥

अर्थ—अनेक रोगोंके अनुकारी क्षुद्ररोगोंमें विगडे हुये दोषोंको और अवस्था-
ओंको देखकर बुद्धिमान वैद्य उन्हीं रोगोंके अनुसार पथ्यापथ्य करावे ॥

मुखरोग ।

मुखरोगका कर्मविपाक ।

कूटसाक्षीभवेद्भ्रूरोमीशोणितपित्तवान् । कृद्भ्रूतिकृद्भ्रूकुर्वीत
चांद्रायणमथापरम् ॥ कुर्यात्कूर्प्मांडहोमंचगायत्रीञ्च्युतंज
पेत् । दद्याद्धिरण्यंवीहींश्चमुखरोगस्यशांतये ॥

अर्थ—जो कूटसाक्षी (झंटीगवाही) देता है वो मुखरोगी होय है, तथा
रक्तमिती होय है; उसको कृद्भ्रू, अतिकृद्भ्रू व्रत करके चांद्रायण व्रत करे,
तथा कूर्प्मांड होम और ३० हजार गायत्रीका जप करके सुवर्ण, धान इनका
दान करे तो मुखरोग दूर होय ।

मुखरोगसंख्या ।

दंतेष्वष्टावोष्टयोश्चमूलेषुदशपंचच । नवतालुनिजिह्वा
यांपंचसप्तदशामयाः । कंठेत्रयःसर्वसराएकपष्टिचतुःपरे ॥

अर्थ—दंतरोग ८, होठके रोग ८, दंतमूलके रोग १५, तालुके रोग ९,
जिह्वाके ५, कंठके रोग १७, और सर्वसर ३, ऐसे सब मिलकर पैंसठ ६४
मुखरोगहैं, ये श्लोक माघवके नहीं हैं भोजसंहिताके हैं ॥

संप्राप्ति ।

अनूपपिडितक्षीरदधिमापादिसेवनात् ।

मुखमध्येगदान्कुर्युःकुद्धादोषाःकफोत्तराः ॥

अर्थ—जलसंचारी प्राणियोंके मांस, दूध, दही, उरद आदि पदार्थके सेवन करनेसे कुपित भये कफादिक दोषोंसे मुखमें रोग उत्पन्न करते हैं, ॥

ओष्ठरोगसंख्या ।

पृथक्दोषैःसमस्तैश्चरक्तजोमांसजस्तथा ।

मेदोजश्वाभिघातोत्थएवमष्टौष्ठजागदाः ॥

अर्थ—वात पित्त कफ अलग २ दोषों करके और इन तीनों मिले हुए दोषों करके होनेवाला और रक्तसे होनेवाला मांससे होनेवाला मेदसे होनेवाला अभिघातसे होनेवाला इस प्रकार होंठमें होनेवाले रोग आठ प्रकारके हैं ॥

वातजओष्ठरोग ।

कर्कशौपरुषौस्तब्धौकृष्णौतीव्ररुजान्वितौ ॥

दाल्येतेपरिपाद्येतेओष्ठौमारुतकोपतः ॥

अर्थ—बादीके कोपसे होठ कर्कश, खरदरे, कठोर, काले, होते हैं, उनमें तीव्र पीडा होय, दो टुकड़के समान हो जाय तथा होठकी त्वचा किंचित् फट जाय ॥

साधारणचिकित्सा ।

स्नेहांस्तथोष्णान्परिपेकलेपान्वृतस्यपानंरसभोजनंच ।

अभ्यंजनस्वेदनलेपनंतदोष्टेविदध्यात्पवनाभिभूते ॥

अर्थ—होंठोंमें वाताधिक व्याधि होनेसे गरम २ स्नेह, तथा उष्ण परिशेक और लेप, घृतपान, रसयुक्त भोजन, अभ्यंजन, स्वेदन, और लेपन इत्यादिक उपचार करे ॥

तैलादि लेप ।

तैलघृतंसर्जरसंसिक्थंरास्नागुडसैंधवगैरिकंच ।

यक्त्वासमांशंदशनच्छदानांत्वग्भेदहंतृणरोपणंच ॥

अर्थ—तेल, घी, राल, मोम, रास्ना, गुड, सैंधानिमक और गेरू ये समान भाग लेकर, ओंठावे जब सिद्ध हो जावे तब इसकी होंठोंके लेप करे तो होंठोंका फटना, तथा होंठोंके घावोंको भरलावे ॥

राखादि लेप ।

रालंमधूच्छिष्टगुडेनपक्वंतैलंघृतंवाविनिहंतिलेपात् ।

त्वक्तोदपारुष्यरुजोधरस्यपूयास्त्रसंस्त्रावमापिप्रसह्य ॥

अर्थ—राल, मोम, गुड, इन पदार्थोंसे तैल अथवा घी मिलायके पक्क करे इसको होठोंपर लेप करे, तो चर्मका दुःख, खरदरापना, पीडा, और राधका वहना तथा रुधिरका स्राव इनको नाश करे ॥

पैत्तिकओष्ठरोग ।

चीयतेपिडिकाभिस्तुसरुजाभिःसमततः ।

सदाहपाकपिडिकौपीताभासौचपित्ततः ॥

अर्थ—पित्तसे होठमें चारों ओर फुंकीनसे प्राप्त हो, उनमें पीडा होय, तथा पक्क जावे, और पीलेसे दीखें, इसमें जो दाह और पाक कहै हैं सो विशेषतः सूचक हैं ॥

साधारण चिकित्सा ।

वेधंशिराणां वमनं विरेकं तिक्तस्य पानं रसभोजनं च ।

शीताः प्रदेहाः परिपेचनं च पित्तोपसृष्टेष्वधरेषु कुर्यात् ॥

अर्थ—होठोंमें पित्तसे विकार होनेपर शिरावेध, वमन, रेचन, तथा कडुये रसोंका पीना रसयुक्त भोजन, शीतल लेप और पित्तनाशक औषधोंके काठका परिषेक इत्यादिक उपचार करे ॥

श्लेष्मिक ओष्ठरोग ।

सवर्णाभिस्तुचीथेतेपिडिकाभिः सवेदनौ ।

भवतस्तुकफादोष्टौपिच्छिलौशीतलौगुरु ॥

अर्थ—कफसे होठ त्वचाके समान वर्णवाले फुन्सियोंसे व्याप्त होय, कुछ दूखे तथा मलाईके समान चिकने और शीतल तथा भारी होय ॥

सामान्य चिकित्सा ।

शिरोविरेचनं धूमः स्वेदः कवलएव च ।

हृत्तेरक्तेप्रयोक्तव्योऽष्टौपेकफात्मके ॥

अर्थ—कफजन्य ओष्ठ रोगपर प्रथम रुधिर निकालके फिर मस्तकशुद्धाव, धूमपान, पसीने निकालना, कवलग्रह, इत्यादिक उपचार करे ॥

साग्निपातिक ओष्ठरोग ।

सकृत्कृष्णौ सकृत्पीतौ सकृच्छैतौ तथैव च ।

साग्निपातेन विज्ञेयावनेकपिटिकान्वितौ ॥

अर्थ—साग्निपातसे होठ कभी काले, कभी पीले, उसीप्रकार कभी सफेद, तथा अनेक प्रकारकी फुन्सियोंसे व्याप्त होय ॥

सर्व ओष्ठरोगोंकी सामान्यचिकित्सा ।
 ओष्ठरोगेष्वशेषेषुद्विदोषमुपाचरेत् ।
 तेषुव्रणत्वंयतिषुव्रणवत्समुपाचरेत् ॥

अर्थ—सन्निपातजन्य ओष्ठ रोग होनेसे दोषानुसार चिकित्सा करे और यदि इन होठोंमें घाव होगये होय तो व्रण चिकित्सा करे ॥

रक्तज ओष्ठरोग ।

खजूरीफलवर्णाभिःपिटिकाभिर्निपीडितौ ।
 रक्तोपसृष्टोरुधिरंस्त्रवतःशोणितप्रभौ ॥

अर्थ—रुधिरसे होठोंमें खजूर फलके वर्णकी फुन्सी होय, उन्मेंसे रुधिर गिरे तथा वो होठ रुधिरके समान लाल होय ॥

मांसज ओष्ठरोग ।

मांसदुष्टौगुरुस्थूलौमांसपिंडवदुद्गतौ ।
 जंतवश्चात्रमूर्च्छतिनरस्योभयतोमुखात् ॥

अर्थ—मांस दुष्ट होनेसे होठ जड (भारी) मोटे होते हैं मांस पिंडके सदृश ऊँचे होय इस रोगवाले मनुष्यके दोनों होठोंमें अथवा हीठोंके प्रांत भागमें कीड़े पड जावें ॥

मेदज ओष्ठरोग ।

सर्पिमैडप्रतीकाशौमेदसाकंडुरौगुरु ॥ स्वच्छंस्फटिकसंका
 शमास्त्रावंस्रवतोभृशम् ।तयोर्व्रणोनसंरोहेन्मृदुत्वंचनगच्छति ॥

अर्थ—मेदसे होठ घृतके ज्ञाग समान खुजली संयुक्त यथा भारी होय तथा उन्मेंसे स्फटिकके समान निर्मल स्राव बहुत होय इस्में भया व्रण भरे नहीं है तथा उस्में मृदुता नहीं रहे ॥

सामान्य चिकित्सा ।

मेदोजस्वेदितेभिन्नेशोधितेकवलोहितः ।
 प्रियंगुत्रिफलालोध्रसक्षौद्रंप्रतिमारणम् ॥

अर्थ—मेदके कोपसे होठोंसे स्राव होने लगे तो उनको शोधन करके स्वेदन करे, तथा कवल धारण करे, और प्रियंगु, हरड, बहेडा, आवँला तथा लोध, इनके चूर्णको सहत मिलायके धीरे २ मले ॥

अभिघातज ओष्ठरोग ।

ओष्ठौपर्यवदीर्येतेपीड्येतेचाभिघाततः ।

अथितौचतदास्यातांकंडूत्केदसमन्वितौ ॥

अर्थ—अभिघातसे (चोट लगनेसे) होठ सर्वत्र चिर जाय पीडा होय उरमें गांठ हो जाय तथा उरमें खुजली चलते समय पीव वहे, कोई कहते हैं कि, अभिघातके ओष्ठरोगमें केवल ऊपरका होठ फटता है, इस रोगमेंभी कफ पित्त सहायक जानने सो भोजने कहाभी है ॥

कफज रक्तज. ओष्ठरोग ।

कीर्णावर्तिकितौवापिरक्तावोष्ठौसवेदनौ ।

भवेतांसपरिस्रावौकफरक्तप्रदूषितौ ॥

अर्थ—होठोंका फटना रक्त लाल होना पीडायुक्त होना रुधिर क्षिरना ऐसे लक्षण हों तो कफ रक्तसे उत्पन्न हुआ रोग कहना ॥

दंतमूल रोगोंकी संख्या और नाम ।

शीतादोगदितःपूर्वदंतपुष्पुटकस्तथा।दंतवेष्टःसौपिरश्चमहासौ
पिरएवच ॥ ततःपरिदरःप्रोक्तस्ततस्त्वूपकुशःस्मृतः । वैदभ्र
श्चततःप्रोक्तःखल्लिवर्धनएवच ॥ अधिमांसकनामाचदंतनाञ्च
श्चपंचच । दंतविद्रुधिरप्यत्रदंतवेष्टेपुपोडज्ञ ॥

अर्थ—शीताद् दन्तपुष्पुट, दन्तवेष्ट, सौपिर, महासौपिर, परिदर, उपकुश, वैदभ्र, खल्लिवर्धन, अधिमांस, दन्तनाडी, दंतविद्रुधि ये सोलह रोग दंतवेष्टों (मसूठों) में उत्पन्न होते हैं ॥

शीतादके लक्षण ।

शोणितंदंतवेष्टेभ्योयस्याकस्मात्प्रवर्तते । दुर्गंधीनिसकृष्णा
निप्रक्लेदीनिमृदूनिच ॥ दंतमांसानिशीर्यतेपंचतिचपरस्परम् ।
शीतादेनामसव्याधिःकफशोणितसंभवः ॥

अर्थ—जिस्के मसूठोंमेंसे अकस्मात् रुधिर वहे और दांतोंका मांस दुर्गन्ध-युक्त काला पीव सहित तथा नरम होकर गिर और एक दांतका मसूठा पक-नेसे वो दूसरे मसूठेको पकावे यह कफ रुधिरसे प्रगट व्याधिको शीता-दनाम कहते हैं ॥

सामान्याचिचिस्ता ।

शीतादेद्धतरक्तेतुतोयंनगरसंपपात् ।

१ शीतादिभिर्होठौ चापि रक्तावोष्ठौ सवेदनौ । भरतः सपरिवायो कफरक्तप्रदूषितापिठि ॥ वातजः
ये रक्तः स्यात्परिवायोः अत्रनु वायुः अभिघाताद्भवति ।

निःकाथ्यत्रिफलांचापिकुर्याद्गंडूपधारणम् ॥

अर्थ—शीतादनामक दंतमूल रोगमें प्रथम रुधिरनिकाल फिर सोंठ, सरसों इनका काटा करके इससे अथवा त्रिफलेके काटेके कुल्ले करे ॥

कासीसादिचूर्ण ।

कासीसलोध्रकृष्णामनःशिलासप्रियंगुतेजोह्वा । एपांचूर्णमधु
युक्शीतादेपूतिर्मांसहरम् । तैलंवृतंवावातघ्नंशीतादेसंप्रशस्यते ॥

अर्थ—हीराकसीस, लौधः पीपल, मनसिल, फूलभियंगु और मालकांगनी, इनका चूर्ण करके उसको सहतसे लेपकरे, तो शीतादसे सडे हुए मांसको नाश करे और उसपर वातनाशक तैल अथवा घी देने चाहिये ॥

दंतपुष्पटकेलक्षण।

दंतयोस्त्रिपुवायस्यश्वयथुर्जायतेमहान् ।

दंतपुष्पटकोनामसव्याधिःकफरक्तजः ॥

अर्थ—जिसको दो अथवा तीन दांतकी जडमें महान् सूजन हाय, उसको दंतपुष्पट नाम कहते हैं यह व्याधि कफ रक्तसे होती है, परंतु आगे जो सोंपिर रोग कहेंगे उससे यह भिन्न है ॥

दंतवेष्टके लक्षण ।

स्रवंतिपूर्यंरुधिरंचलादंताभवंतिच ।

दंतवेष्टःसविज्ञेयोदुष्टशोणितसंभवः ॥

अर्थ—रुधिर दुष्ट होनेसे दांतोंमेंसे रुधिर तथा राध बहे, तथा दांत हलने लगे उसको दंतवेष्टरोग कहते हैं ॥

दंतवेष्टकी चिकित्सा ।

दंतवेष्टेविधिःकार्यो रक्तपित्तनिवर्हणः ॥ शिरोविरेकश्चहितोन

स्यंस्निग्धंचभोजनम् । विस्रावितेदंतवेष्टेव्रणंतुप्रतिसारयेत् ॥

अर्थ—दन्तवेष्ट रोगमें रक्तपित्तको नष्ट करनेवाली विधि करनी और इसमें शिरका फस्त, नस्य, स्निग्ध भोजन हितकारी है और यह दन्तवेष्ट जब क्षिरने लगे तब औषधियोंके जलसे इसका सेक करना योग्य है ॥

दंतवेष्टकी चिकित्सा ।

लोध्रंपतंगमधुकंलाक्षाचूर्णैर्मधुप्लुतैः ।

गंडूपेक्षीरिणोयोज्याःसक्षौद्रघृतशर्कराः ॥

अर्थ—लोध, पतंग, मुलहट्टी, लाख, इनका चूर्णकर उसमें सहत मिलायके कुल्ले करे अथवा क्षीरी वृक्षके काठमें सहत मिश्री और घी डालके कुल्ले करनेको देवे ॥

जीरकादिचूर्ण ।

जरणलवणपथ्याशाल्मलीकंटकानामनुदिनमनुघृष्टदंतमूले
पुचूर्णैः। व्रणदरणरुगस्त्रिस्त्रावचांचलयशोथानपनयतिविवस्वानंध
कारानिवाशु ॥

अर्थ—जीरा, सांठ, हरड और सेमरके कांठ इनका समान भाग चूर्णकर इससे नित्य प्रति दाँतन करे अर्थात् दाँतोंको मला करे, तो दंतमूलके घाव, फटना, पीडा, रक्तसाव चंचलता, सूजन इनको जैसे मूर्य अंधकारका नाश करे इसप्रकार यह दाँतके रोगोंको नाश करे ॥

कणादिचूर्ण ।

कणासिंधूत्थजरणचूर्णतूर्णव्यपोहति ।

घर्षणादंतचांचलयव्यथाशोथान्त्रिस्त्रावकान् ॥

अर्थ—पीपल संधानिमक, जीरा, इनके चूर्णको दाँतोंकी जडमें अर्थात् मसू-
ठोंमें घिसे तो दाँतोंकी चंचलता, पीडा, सूजन और रक्तसाव इनको नाशकरे ॥

भद्रमस्तादि युटी ।

भद्रमुस्ताभयाव्योपंविडंगारिष्टपल्लवैः । गोमूत्रपिष्टैर्गुटिकां
छायाशुष्कांप्रकल्पयेत् ॥ तान्निधायमुखेरात्र्यांचलदंतातुरो
नरः । नातः परतरंकिंचिच्चलदंतस्यभेषजम् ॥

अर्थ—भद्रमोथा, हरह, सांठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, नींबके पत्ते इनको गोमूत्रमें पीसके गोली बनावे इनको छायामें सुखायले, इसको रात्रिके समय मुखमें रखे तो दाँत जमकर दृढ (मजबूत) हो जावे, इससे परे दाँतोंपर दूसरी उत्तम औषध नहीं है ॥

सहचरादि तैल ।

तुलांधृतांनीलकुरंटकस्यद्रोणेभसः संधपयेद्यथावत् । तत
श्वतुर्भागरसेतुतैल्पचञ्छनैरर्धपलप्रमाणैः ॥ कल्केरनंतास
दिरारिभेदजंव्याधयष्टीमधुकोत्पलानाम् । तत्तैलमाश्वेषघृतं
मुखेनस्थैर्यद्रिजानांविदधातिसद्यः ॥

अर्थ—नीले पियावांसा ४०० तोलेको कूटके १०२४ तोले जलमें डालके काढा करे जब चतुर्थांश रहै तब उतारके छान लेय, फिर इसमें तेल मिलायके इसमें धमासाँ लालकट्या, सपैद कट्या, जामुन, आँव, मुलहदी, कमल, इन प्रत्येकका दौदो तोले फल्क डालके तेलमात्र शेष करे, जब सिद्ध होजावे तब इस तेलको मुखमें रखे, तो हलनेवाले दाँत जम जावे ॥

सौपिरके लक्षण ।

श्वथथुर्दंतमूलेपुरुजावान्कफरक्तजः ।

लालाम्नावीसविज्ञेयःसौपिरोनामनामतः ॥

अर्थ—कफ रुधिरसे दाँतोंकी जड़में सृजन होय, उसमें पीडा होय और स्राव होय उसको सौपिर रोग कहते हैं पुरातक दंत पुष्पुटमें पीडा और स्राव नहीं होय है इसीसे यह पृथक् है ॥

सामान्य चिकित्सा ।

सौपिरेहृतरक्तेतुलोध्रमुस्तारसांजनैः ।

सक्षौद्रैःशस्यतेलेपोगंडूपेक्षीरिरोहिणी ॥

अर्थ—सौपिर व्याधिका रुधिर निकलवायके फिर लोध नागरमोथा, रसांजन, इनका चूर्ण करके सहृतमें मिलाय लेप करे और गंडूप धारण करनेको क्षीरी वृक्ष हितकारी कहे हैं ॥

महासौपिर दंतमूलरोग ।

दंताश्चलंतिवेष्टेभ्यस्तालुचाप्यवदीर्यते ।

यास्मिन्ससर्वतोव्याधिर्महासौपिरसंज्ञकः ॥

अर्थ—इस त्रिदोष व्याधि करके मसूठके समीपमें दाँत हलें और तालुयें छिद्र पटजाय चकारसे दाँत और होठभी फटजाय उसको महासौपिर रोग कहते हैं । यह रोग मनुष्यको सातदिनमें मार डाले है सो भोजने कदाभी है परन्तु गदाधर कहताहै कि, सौपिरमें जो भोजने लक्षण कहे हैं सो होय तो उसीको महासौपिर कहते हैं ॥

परिदर दंतमूलरोग ।

दंतमांसानिशीर्यतेयस्मिन्ष्टीव्यतिचाप्यसृक् ।

पित्तासृक्कफजोव्याधिज्ञेयःपरिदरोहिसः ॥

अर्थ—इस रोग करके दांतोंका मांस विखर जाय और धूकनेसे रुधिर गिरे इस व्याधिको परिदर कहते हैं यह रोग पित्त रुधिर कफसे होय है ॥

उपकुशदंतमूलरोग ।

वेष्टेषुदाहःपाकश्चताभ्यांदंताश्चलंतिच । अवाक्कृताःप्रस्रवं
तिशोणितमंदवेदनाः ॥ आध्मायंतेब्रूतेरक्तेमुखेपूतिश्चजाय
ते । यस्मिन्नुपकुशोनामपित्तरक्तकृतोगदः ॥

अर्थ—जिसके मसूढोंमें दाह होकर पाक और दांत हलने लगें, मसूढोंके घिसनेसे रुधिर मंद पीडाके साथ निकले, रुधिर निकलनेके पिछाडी फेर मसूढे फूल आवे, और मुखमें बास आवे, इस पित्तरक्तकृत विकारको उपकुश कहते हैं ॥

परिदर और उपकुशकी चिकित्सा ।

क्रियांपरिदरेकुर्याच्छीतादोक्तांविचक्षणः ।

संशोध्योमग्रतः कार्यैशिरश्चोपकुशेतथा ॥

अर्थ—परिदर व्याधिपर शीतादपर जो क्रिया कही है वो करे और चमन, विरेचन देवे, तथा मस्तकरेचन देना चाहिये तथा उपकुश व्याधिपरभी यही उपचार करे ॥

सामान्य यत्न ।

काकोदुंवरिकापत्रैर्व्रणंविघ्नावयेद्भिपक् ।

लवणैःक्षौद्रयुक्तैश्चसव्योपैःप्रतिसारयेत् ॥

अर्थ—कठूमरके पत्तेसे दांतोंके घावको घिसके रक्तसाव करे और निमक तथा सहत और सोंठ, मिरच, पीपल इनके चुर्णको एकत्र करके धीरे २ विसे ॥

वेदभ्रदंतमूल रोग ।

घृष्टेषुदंतमूलेषुसंभोजायतेमहान् ।

भवंतिचपलादंताःसवैदभ्रोऽभिघातजः ॥

अर्थ—मसूढे रगडनेसे सूजन बहुत होय, और दांत हलने लगें, उरूकी वेदभ्र रोग कहते हैं यह रोग चोटके लगनेसे होय है ॥

सामान्य यत्न ।

शस्त्रेणोत्कृत्यैवेदभ्रदंतमूलानिशोधयेत् ।

ततःक्षारंप्रयुंजीतक्रियाःसर्वाश्चशीतलाः ॥

अर्थ—वैदभ्र नामक दंतमूल रोगको शस्त्रसे चीरा देकर रुधिर निकालदे, फिर क्षार धर देवे और शीतल क्रियाकरे ॥

खल्लोवर्द्धन ।

मारुतेनाधिकोदंतोजायतेतीव्रवेदनः ।

खल्लोवर्द्धनसंज्ञोवैजातेरुक्चप्रशाम्यति ॥

अर्थ—वादीके योगसे दाँतके ऊपर दूसरा दाँत ऊगे, उस समय पीडा होय जब वो दाँत ऊग आवे तब पीडा शांत होय उसको खल्लोवर्द्धन कहते हैं ॥

सामान्य यत्न ।

उद्धृत्याधिकदंतंतुततोग्निमवचारयेत् ।

कृमिदंतकवचात्रविधिःकार्योविजानता ॥

अर्थ—अधिक दाँतको उखाडके निकाल डाले और दागदेवे, तथा कृमि-दंतके समान इतर सब विधि करनी चाहिये ॥

कराल ।

शनैःशनैःप्रकुरुतेवायुर्दंतसमाश्रितः ।

करालान्विकटान्दंतान्करालेनचसिद्धयति ॥

अर्थ—वादी धीरे धीरे मसूढका आश्रय लेकर दातोंको टेढ़े तिरछे करे, उसको कराल रोग कहतेहैं यह रोग साध्य नहीं होय ॥

अधिमांसक रोग ।

हानव्येपश्चिमेदंतेमहाञ्छोथोमहारुजः ।

लालास्रावीकफकृतोविज्ञयोद्वाधिमांसकः ॥

अर्थ—जिस्के पछिकी डाढके नीचे अर्थात् मसूढमें बहुत सूजन होय और घोर पीडा होय तथा लार बहुत गिरे उसको अधिमांसक कहते हैं यह कफके कोपसे होय है ॥

यत्न ।

छित्वाधिमांससंक्षौद्रैरेतैश्चूर्णैरुपाचरेत् । वचातेजोवतीपाठा

स्वर्जिकायावशूकजैः ॥ क्षौद्रं द्वितीयपिप्पल्योकवलेचात्रकीर्ति

तः ॥ पटोलनिवत्रिफलाकपायश्चात्रधावनः ॥

अर्थ—अधिमांस नामक दंतरोगीको छेदन करके उसपर वच, मालकांगनी, पाठ, सजीखार, जवारखार, और पीपल, इनके चूर्णका कल्क मुखमें धारणकरे और पटोलपत्र, नीबकी छाल, हरड, बहेडा, आवला इनका काढा करके धोवे

दंतविद्रधिनिदान ।

विद्रध्युक्तंचविधिवद्विदध्यादंतविद्रधौ ।

शस्त्रकर्मनरस्तत्रकुशलो नैवकारयेत् ॥

अर्थ—दंतविद्रधि पर सामान्य विद्रधिके ऊपर जो क्रिया कहीं है वो सब करे परंतु कुशल वैद्य शस्त्रकर्म अर्थात् चीरना, फाडना न करे ॥

नाडीव्रण ।

दंतमूलगतानाडयःपंचज्ञेयायथेरिताः ।

अर्थ—नाडीव्रण निदानमें वात, पित्त, कफ, सान्निपात और आंगतुज ऐसे पांच प्रकारके जो नाडीव्रण कहे हैं वे दंतमूल (मसूढोंमें) होते हैं पहिले ११ और ५ नाडीव्रण ऐसे मिलाकर १६ दंतमूल (मसूढोंके) रोग होते हैं । परंतु कराल रोग सुश्रुतके मतसे अधिक हैं तथापि संग्रहका रने आपने ग्रन्थमें लिखा है, इसीसे हमनेभी यहाँ लिख दिना है । ये पाँच नाडीव्रण शालाक्यसिद्धान्तके मतसे संख्यापूरणार्थ माघवाचार्यने लिखा है ॥

दालन ।

दीर्यमाणेष्विवरुजायस्यदंतेपुस्यजायते ।

दालनोनामसव्याधिःसदागतिनिमित्तजः ॥

अर्थ—जिस्के दाँतोंमें फोडने कीसी पीडा होय उसको दालन रोग कहतेहैं यह रोग वादीसे होय है ॥

भोजनके दंतरोग ।

वक्रंवक्रंभवेद्यस्यदंतभंगश्चजायते ।

कफवातकृतोव्याधिःसभोजनकसंज्ञितः ॥

अर्थ—जिस व्याधि करके मुख टेढा होकर दाँत फटने लगे व्याधि कफ वात करके होय है दाँत भंगकारी दोषके प्रभावसे मुखभी टेढा होय है ॥

दंतहर्ष ।

शीतलक्षप्रवाताम्लस्पर्शानामसहाद्रिजाः ।

पित्तमारुतकोपेनदंतहर्षःसनामतः ॥

अर्थ—दाँत शीतल, रुक्ष, सटाई इत्यादि पदार्थ और पवन इनके लगनेको जो नहीं सहिसके उसको दंतहर्ष कहते है यह रोग पित्त घायुके कोंपसे होय है, इस रोगको वातज होने परभी उष्ण (गरमी) का नहीं सहिसके यह व्याधिका स्वभाव है इस जगें, द्रुसरा जो पाठान्तर है, वो नीचे लिखे है ॥

सामान्य चिकित्सा ।

स्नेहिकोत्रहितोधूमोनस्यंस्नेहिकमेवच ॥

रसारसयवाग्वश्चक्षीरंसांतानिकंघृतम् ॥

शिरोवस्तिहितश्चापिक्रमोयश्चानिलापहः ॥

अर्थ—दंतहर्षणर स्नेहका नस्य मांसका रसं, यवागू, दूध, मलाईकाधी और शिरोवस्ति इत्यादि वातनाशक औषध क्रमसे करे ॥

चिकित्सांतरं ।

स्नेहानांकवलःकोष्णोसार्पिपस्त्रिवृतस्यच ॥

निर्व्यूहाश्चानिलघ्नानांदंतहर्षः प्रमर्दनः ॥

अर्थ—मंदोष्ण ऐसे लेहके अथवा त्रिवृता घृतका केवल अथवा वातनाशक औषधोंका काढा ये सब दंतहर्षणाशक हे ॥

कृमिदंतक ।

कृष्णच्छिद्रश्चलस्रावीससरंभोमहारुजः ।

अनिमित्तरुजोवातात्सज्ञेयःकृमिदंतकः ॥

अर्थ—वादीके योगसे दांतोंमें काले छिद्र पडजाय तथा हिलने लगे, उन्मेंसे स्राव होय, शोथयुक्त पीडा होनेवाला और कारण विना दूखनेवाला ऐसा होय उसको कृमिदंत रोग कहते हैं । यहां दांतोंमें काले छिद्र पडनेका यह कारण है कि, दुष्ट रुधिरसे कृमि (कीडा) पैदा होकर दांतोंमें छिद्र करतेहैं ॥

चिकित्सा ।

जयेद्विस्रवणैः स्विन्नमचलंकृमिदंतकम् । तथावपीडैर्वातत्रैः

स्नेहगंडूपधारणैः ॥ भद्रदावादिवर्षाभूलेपैः स्निग्धैश्चभोजनैः ॥

कृमिदंतापहंकोपष्णंहिगुदंतांवरोस्थितं ॥

अर्थ—अचल कृमिदंतको स्राव करनेवाली औषधोंसे स्राव करायके स्वेदन करे तथा वातनाशक अवपीड, स्नेह, और गंडूपधारण तथा भद्रदावा दिगण अथवा पुनर्नवा इनका लेप स्निग्ध भोजन भुनि हाँगकी गरम डाढके नाँचे दाबना, इत्यादि कृमिदंत नाशक उपचार करे ॥

बृहत्यादि काय ।

बृहतीभूमिकादंवीगुचांपलकंटकारिकाकाथः ।

गंडूपस्तैलयुतः कृमिदंतकवेदनाशकः ॥

अर्थ—कटेरी, गोरखमुंडी, सपेद अंडकीजड और बडीकटेरी, इनका काटा करके इसमें तेल डालके इसके कुल्ले बरे, तो कृमिदंतकी पीडाका उपशम होयहै
दंतकृमिपर पातन ।

नीलीवायसजंघाकटुतुंबीमूलमेकैकम् ।

संचूर्णैदशनविधृतदशनकृमिपातनंप्राहुः ॥

अर्थ—नील, मकोय और कडवीधीया, इन प्रत्येककी जडका चूर्ण करके दांतोंमें दाबे तो कृमिको दांतोंसे गेरदेवे ॥

सारिवापर्ण धारण ।

पिद्वाचसारिवापर्णदृढदंतेषुधारयेत् ॥

पतंतिदंतकीटाश्चचांचल्यंहरातेक्षिणात् ॥

अर्थ— सपेद सरिवाके पत्तकी लुगदी करके दांतोंमें खूब जोरके साथ दाबलेवे, तो दांतोंकी कृमि गिरजावे, और दांत घट्ट होवे ॥

कासीसादि गुटी ।

कासीसंहिंगुसौराष्ट्रीदेवदारुसमंजलैः ।

गुटिकांधारयेदंतकृमिशूलहरांपराम् ॥

अर्थ—हीराकसीस, हींग, फिटकरी, देवदारु ये समान भागले जलसे पीस गौली बनायके दांतोंके नीचे धरे, तो कृमि रोगसे उत्पन्न दंतशूलको नाशकरे ॥
दंतशक्ता ।

मलेदंतगतोयस्तुपित्तमारुतशोणितः ।

शर्करेवखरस्पर्शासाज्ञेयादंतशर्करा ॥

अर्थ—दाँतोंका मल पित्तवायुके प्रभावसे मूखकर रेतके समान खरदरा स्पर्श माहूम होय, उस रोगको दंतशर्करा ऐसा कहते हैं इस श्लोकमें “सा-
दन्तानां गुणहरा ” ऐसाभी पाठ है इस्का यह अर्थ हुआ कि, दाँतोंके गुण शूल और दृढादि उन्की दूर करे ॥

चिकित्सा ।

अष्टिदंन्तमूलानिशर्करामुद्धरेद्विपक् ।

लाक्षाचूर्णैर्मधुयुतेस्ततस्तांप्रतिसारयेत् ॥

अर्थ—दाँतोंकी जडको अर्थात् मसूढेन्की बचायके दाँतोंके ऊपरके मेलको खरचके निकाल लेवे, और सहतमें लाखके चूर्णको मिलायके मसूढेन्पर धीरे धीरे मले ॥

दंतशर्करा ।

कपालेष्विवदीर्णेषुदंतानांसैवशर्करा ।

कपालिकेतिसाज्ञेयासदादंतविनाशिनी ॥

अर्थ—उसी शर्कराकी पपड़ीके प्रमाण चपड़ी उखडने लगे तो उसीको कपालिका, कहते हैं, या रोगसे सर्व दांत नष्ट हो जावे ॥

श्यावदंत ।

याऽसृङ्मिश्रेणपित्तेनदग्धोदंतस्त्वशेषतः ।

श्यावतांनीलतांवापिगतःसश्यावदंतकः ॥

अर्थ—जो दांत रुधिरसे मिले पित्तसे जलके समान सब काले हो जाय उसको श्यावदन्त कहते हैं ॥

हनुमोक्ष ।

वातेनतैस्तैर्भविस्तुहनुसंधिर्विसंहतः ।

हनुमोक्षइतिज्ञेयोव्याधिरर्दितलक्षणः ॥

अर्थ—वादीके योग करके उसी उसी अभिधातों करके हनु (ठोड़ी) की संधीको चोट लगनेसे दांत चलायमान होजाय, उसको हनुमोक्ष कहते हैं, इसके लक्षण अर्दितरोग जो वातव्याधिमें कहिआये हैं उस प्रकारके होय ॥

दंतनाडीचिकित्सा ।

नाडीव्रणहरंकर्मदंतनाडीषुकारयेत् ।

यदंतमध्येजायेतेनाडीतंदंतमुद्धरेत् ॥

अर्थ—दंतनाडी रोगपर संपूर्ण नाडीव्रण पर जो चिकित्सा कही है वो करे तथा वह नाडी जिस दांतमें होय उसी दाँतको उखाड डाले ॥

छित्त्वामांसानिशस्त्रेणयदिनोपरताभवेत् ।

उद्धृत्यचदहेच्चापिक्षारेणज्वलनेनवा ॥

अर्थ—यदि वह नाडी बहुत भीतरी होवे तो उस जगके मांसको शस्त्रसे छेदन करके निकाल डाले और क्षारसे अथवा अग्निसे दाग देवे ॥

भिनत्युपेक्षितेदंतेहनुंसास्थिगतिंध्रुवम् ।

उद्धृतेतूत्तरेदंतेशोणितंप्रस्रवेदति ॥

अर्थ—दाँत उखाडनेकी उपेक्षा करनेसे उस नाडीकी हड्डीमें गति होजाती है और ऊपरका दाँत उखाडनेसे रुधिर अधिक बहता है ॥

रक्तादिसेकात्पूर्वोक्ताघोररोगाभवन्तिहि ।
काणःसंजायतेजंतुरदितंतस्यजायते ॥

अर्थ—रक्तस्राव अत्यंत होनेसे पूर्व कटुघोर रोग उत्पन्न होते हैं अथवा वो रोगी काणा होवे, अथवा अर्दित (लकवा) वातसे पीडित होय ॥

चलमप्युत्तरदंतमतोनैवोद्धरेद्रिपक् ।
समूलंदशनंतस्मादुद्धरेद्रग्रमस्थिच ॥

अर्थ—इसी कारण ऊपरका दांत हलता होवे तो भी नहीं उखाडना, तथा नीचेका दांत जड मुझां उखाडकै निकाल डाले तथा नीचेकी टुरी हुई हड्डी-की भी निकाल लेवे ॥

जात्यादितैल ।

कापायैर्जातिमदनकंटकीस्वादुकंटकैः ॥ मंजिष्ठालोध्रखदिर
यष्ट्याह्वैश्चापियत्कृतम् । तैलयत्साधितंतत्रहन्यादंतगतांगतिम् ॥

अर्थ—चमेलीके पत्ते, भैरफल, गोखरू, मजीठ, लोभ, खैरकी छाल, मुलहठी, इनका काटा करके उसमें तैल डालके पचावे, यह तैल नाडीके दंत गत गतीको नाश करे ॥

सामान्यचिकित्सा ।

दंतरोगेषुसर्वेषुशस्तोवातहरोविधिः ।
पक्वतैलंकवोष्णंचशस्तंकवलधारणे ॥

अर्थ—संपूर्ण दंतरोगोंपर वातनाशक विधि करे और तैलको ओंटापके उसको मंदोष्ण मुखमें रखे ॥

लक्षादितैल ।

तैललाक्षारसंक्षीरंपृथक्प्रस्थमितंपचेत् ॥ द्रव्यैःपलमितैरैतैः
क्वाथैश्चापिचतुर्गुणैः ॥ लोध्रकट्फलमंजिष्ठापत्रकेसरपत्रकैः ।
चंदनोत्पलयष्ट्याह्वैस्ततैलंवदनेधृतम् ॥ दालनंदंतवा
लंचदंतमोक्षकपालिकाम् । शीतादपूतिवक्रंचविरुचिविरसा
म्यताम् ॥हन्यादाशुगदानेतानकुर्यादंतानपिस्थिरान् । लाक्षा
दिकमिदंतैलंदंतरेगेषुपूजितम् ॥

अर्थ—तेल ६४ तोले, लाखका सीरा ६४ तोले दूध ६४ तोले, और लोध, कायफल, मजीठ, कमलकी केशर, चंदन नीलाकमल, मुलहठी, ये प्रत्येक चार २ तोले लेंके काढा करके तेलसे चौगुना जलले, और इन्ही प्रत्येक औषधका चार २ तोले कल्क डालके पचन करे, जब तयार हो जाये तब उतारके, इसको मुखमें रखे, यह दाँतोंका दालन रोग, दाँतोंका हिलना तथा विनासमयके दाँतोंका गिरजाना, तथा कपालिका, शीताद, पृतिवक्र, अरुचि और मुखकी विरसता इतको नाश करे तथा दाँतोंको दृढकरे, यह लक्षादि तैल दंतरोगपर उत्तमहै ॥

दंतरोगका सामान्य यत्न ।

अरिमेदत्वचंक्षुष्णांपचेच्छतपलोन्मितां । जलद्रोणेनतत्का
थंगृण्णीयात्पादशेषितं ॥ तैलस्यार्धाढकंदत्वाकल्कैःकर्प
मितैः पचेत्।अरिमेदलवंगाभ्यांगैरिकागरुपद्मकैः ॥मंजिष्टालो
ध्रमधुकैर्लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः॥त्वग्जाजीफलकर्पूरकंकोलखदि
रैस्तथा ॥ पतंगघातकीपुष्पसूक्ष्मेलानागकेसरैः । कट्फले
नचसंसिद्धंतैलंमुखरुजंजयेत् ॥ प्रदुष्टमांसंचलितंशीर्णदंतं
चसौपिरं । शीताददंतहर्षचविद्रधिंकृमिदंतकम् ॥ दंतस्फु
टनदोर्गध्यंजिह्वाताल्वोष्ठजंरुजं ॥

अर्थ—खैरकी छाल ४०० तोलेको १०२४ तोले जलमें डालके आँटावे जब चतुर्थाश काढा शेषरहे तो उतारके छान लेय, इसमें तिलीक तेल १२८ तोले, और खैरकी छाल, लौंग, मेरू, फाती अगर, पन्नाख, मजीठ, लोध, मुलहठी, लाख, चडकी कोंपलफली नागरमोथा, दालचीनी, जायफल, कपूर, कंकोल, कल्या, पतंग, धायके पूल, छोटीइलायची, नागकेशर. और कायफल इन प्रत्येकका एक एक तोले कल्क डालके अभि पर पचावे, यह खदिरतेल दाँतोंका दुष्ट मांस, दाँतोंका हिलना, शीर्णदंत, सौपिर, शीताद, दंतहर्ष, विद्रधि, कृमिदंत दंतस्फुटन और जिह्वा, तालू और होंठ, इनके रोग इनको नाशकरे ॥

कुष्ठादि चूर्ण ।

कुपुंदावीलोध्रमभ्रेसमंगापाठातिक्तातेजनोपोतिकाच ।

चूर्णशस्तंघर्षणेताद्विजानारक्तस्रावंहंतिकंद्रुनंच ॥

अर्थ—भूट, दारुहलदी, लोध, नागरमोथा, मजीठ, पाठ, कुटकी, मर्च,

और पीलीचमेली, इनका चूर्ण करके इससे दांतोंको घिसे, तो रक्तसाव, छु, जली और पीडा इन सबको नाशकरे ॥

गुडूची कल्क ।

छिन्नयाविष्यावारादंतशूलेविनश्यति ।

स्वेदिताऽवितोयेनचलतांनाशयेद्ध्युवम् ॥

अर्थ—गिलोयको जलमें पीसकै इस कल्कमें आकका दूध डालकै औटावै इससे दांतोंको मलेतो दांतोंके हिलनेको नाश करे ॥

जातीपत्रादि चूर्ण ।

जातीपत्रपुनर्नवागजकणाकोरंटकोष्टंवाचाशुठीदीप्यहरीतकी
तिलसमंश्लक्ष्णंभृशंचूर्णयेत् । तच्चूर्णवदनेधृतंविजयतेदौर्ग
ध्यदंतव्यथांचाल्यत्वमतिव्रणश्वयथुरुक्कंडूकृमिव्यापदः ॥

अर्थ—चमेलीके पत्ते, पुनर्नवा, पीपल, पीयावाँसा, वच, सोंठ, अजमायन, हरड, तिल ये सब पदार्थ समान लेवे, सबका बारीक चूर्ण करके मुखमें रखे तो दुर्गंध, दांतोंकी पीडा, दांतोंका हिलना, घाव, मूजन, खुजली और दंतकृमि इनको नाश करे ॥

पथ्य ।

फलान्यम्लानिशीतांबुरुक्षान्नदंतधावनम् ।

तथापिकाठिनंभक्ष्यंदंतरोगीविवर्जयेत् ॥

अर्थ—खट्टेफल, शीतलजल, रूक्षान्न, दांतोंको पिसना, तथा कठोर पदार्थका खाना, ये दांतरोगवालेको त्याग देने चाहिये ॥

जिह्वारोगसंख्या ।

वातजःपित्तजश्चापिकफजोल्लाससंज्ञकः ।

उपजिह्विकाचहिगदाजिह्वायांपंचकीर्तिताः ॥

अर्थ—वातज, पित्तज, कफज, उल्लास, उपजिह्विका, इस प्रकार जिह्वीके पांच रोग फहे हैं ॥

वातज ।

जिह्वानिलेनस्फुटिताप्रसुप्ताभवेच्चशाकच्छदनप्रकाशा ।

अर्थ—बादीसे जीभ फटीसी, प्रसुप्त (रसका ज्ञान जाता रहै) और पर्वती वृक्षके पत्र समान कांटयुक्त खदरी होय ॥

पित्ताजिह्वा ।

पित्तेनपीतापरिदह्यतेचदीर्घैःसरत्तैरपिकंटकैश्च ॥

अर्थ—पित्तसे जीभ पीली हो, उसमें दाह होय उसमें लंबे लंबे तामेके समान काटे होय, इस रोगको लौकिकमे जाली कहतेहैं अथवा जोड़ी कहतेहैं ॥
कफज जिह्वा ।

कफेनगुर्वावहलाचिताचमांसोच्छ्रयैःशाल्मलिकंटकाभैः ॥

अर्थ—कफसे जीभ मोटी भारी होय है और उसमें सेमरकेसे काँटेके समान मांसके अंकुर होय ॥

अल्लासके लक्षण ।

जिह्वातलेयःश्वयथुःप्रगाढःसोल्लाससंज्ञःकफरक्तमूर्तिः ।

जिह्वांसतुस्तंभयतिप्रवृद्धौमूलेवजिह्वाभृशमेतिपाकम् ॥

अर्थ—जीभके नीचे कफ रुधिरसे प्रगाढ ऐसी भयंकर मूजन होय उसको अल्लास कहते है । उसके बढनेसे स्तंभ होय तथा जीभके मूलमें मूजन होय यह रोग असाध्य है ॥

उपजिह्वाके लक्षण ।

जिह्वाग्ररूपःश्वयथुःसजिह्वासुन्नम्यजातःकफरक्तमूर्तिः ।

लालाकरःकंडुयुतःसचोपःसातूपजिह्वाकथिताभिपग्भिः ॥

अर्थ—कफ रुधिरसे जिह्वाग्रके समान (जैसा जीभका आगेका भाग होय है) ऐसी मूजन जीभको नीची दबायकर उत्पन्न होय, उसके योगसे लार बहुत बहे और उसमें खुजली चले तथा दाह हीय, दाह इसमें रक्तपित्तका कारण पित्त है उससे यह होय है, इस रोगको वैद्य उपजिह्वा ऐसे करते है ॥

सामान्य चिकित्सा ।

उपजिह्वांतुसंलिल्व्यक्षारेणप्रतिसारयेत् ।

शिरोविरेकगंडूपधूमैश्चैनामुपाधरेत् ॥

अर्थ—उपजिह्वकको क्षारसे लेखन करके फिर प्रतिसारण, शिरोरेचन, गंडूप, और धूमपान ये उपचार करे ॥

व्योषादि चूर्ण ।

व्योषक्षाराभयावन्दिचूर्णमेत्प्रवर्षणम् ॥ उपजिह्वकशांत्यर्थं
मेभिस्तैलंचपाचयेत् ॥ गृहधूमारनालेनक्वाथंसमधुसंधवम् ॥

अर्थ—उपजिह्वक रोगकी शांतिके अर्थ, सोंठ, मिरच, पीपल, जवाखार, हरड, और चित्रक, इनका चूर्ण घिसे, तथा इन्ही औषधोंसे सिद्ध करे तेलके कुरले करे और घरके धूआंको कांजीमें डालके ओंटावे, फिर इसमें सहत, और सैधानिमक डालके हाथसे उपजिह्वको मर्दन करे ॥

निर्गुंड्यादि चवर्ण ।

निर्गुंडीमुसलीकंदंचर्वयेदुपजिह्वजित् ॥

अर्थ—निर्गुंडी और मूसली इनके कंदकी चवावे, तो उपजिह्वकाकोनाशकरे। कांचनार काथ ।

कांचनारत्वचः काथः प्रातरास्येधृतः सुखः ॥

कुर्यात्सखदिरोजिह्वादरणोन्मूलनंमुहुः ॥

अर्थ—कचनारकी छाल, और खैरकी छाल, इनका काढा करके प्रातःकाल सुखमें रखेतो सुख होय, और इससे फटी हुई जिह्वा उत्तम होय ॥

जिह्वारोगकी साधारणक्रिया ।

जिह्वागतविकाराणांशस्तंशोणितमोक्षणम् ॥

अर्थ—जिह्वामें विकार होनेसे रुधिर निकालना उत्तम कहाहै ॥

गुडूच्यादि कवल ।

गुडूचीपिप्पलीनिवकवलःकटुभिःसुखः ।

ओष्ठप्रकोपेनिलयेयदुक्तंप्राक्चिकित्सितम् ॥

अर्थ—गिलोय, पीपल, नींबूकी छाल, और तोड़ण औषध इनका कल्क करके सुखमें रखे तथा वातजनित ओष्ठरोगपर कही हुई चिकित्सा करे ॥

जिह्वाकंटकपर ।

कंटकेष्वनलोत्थेषुतत्कार्यभिपजाखलु । पित्तजेषुविधूषेषुनिः

सृतेदुष्टशोणिते । प्रतिसारणगंडूपनस्यंचमधुरंहितम् ॥

अर्थ—जिह्वापर वादी करके कटि होनेसे वातके ऊपर जो उपचार कहे हैं वो करे, और पित्तसे कंटे टपन्न होवे तो उनको घिसके दुष्ट रक्तका स्वाव करे, फिर मधुर औषधोंसे प्रतिसारण, गंडूप, और नस्य इत्यादिक करे, ये हितकारक होय ॥

प्रतिसारणविधि ।

दंतजिह्वामुखानांयच्चूर्णकल्कावलेहकैः ।

शनैर्घर्षणमंगुल्यातदुक्तंप्रतिसारणम् ॥

अर्थ—दांत, जीभ, और मुख इनको चूर्ण, कल्क, अथवा अवलेह इत्यादिक मसूहोंसे धीरे २ घिसे, इसको प्रतिसारण कहते हैं ॥

कंठशुंडी तालुरोग ।

श्लेष्मासृग्भ्यांतालुमूलात्प्रवृद्धोदीर्घःशोथोध्मातवस्तिप्रकाशः ।

तृष्णाकासश्वासकृत्तंवदंतिव्याधिवैद्याःकंठशुंडीतिनाम्ना ॥

अर्थ—कफ रुधिरसे तालुके मूलमें फूली बस्तीके समान भारी सूजन होय, इसके प्रभावसे प्यास, खांसी, श्वास ये होतेहै । इस रोगको वैद्य कंठशुंडी कहते हैं ॥

तुंडिकेरी तालुरोग ।

शोथःशूलस्तोददाहप्रपाकीप्रागुक्ताभ्यांतुंडिकेरीमतातु ॥

अर्थ—कफ रक्तसे तालुमें बन कपासके फलके समान सूजन होय और उसमें पीडा, सुईके छेदनेकासा दुःख और दाह होकर पके उसको तुंडिकेरी कहतेहै

अध्रुव तालुरोग ।

शोथस्तब्धोलोहितस्तालुदेशेरक्तोज्ञेयःसोध्रुवोरुक्ज्वरश्च ॥

अर्थ—रुधिरसे तालुमें लाल स्तब्ध (लठर) ऐसी सूजन होय, उसमें पीडा और ज्वर होय उसको अध्रुव ऐसा कहते है ॥

कच्छपतालुरोग ।

कूर्मोत्सन्नोवेदनोशीघ्रजन्मारोगोज्ञेयःकच्छपःश्लेष्मणावा ॥

अर्थ—कफसे तालुमें कटुआकी पीठके समान ऊंची सूजन होय, उसमें पीडा थोड़ी होय, वह शीघ्र बढे नहीं, उसको कच्छप रोग कहते हैं ॥

अर्बुद तालुरोग ।

पद्माकारंतालुमध्येतुशोथंविद्याद्रक्तादर्बुदंप्रोक्तलिङ्गम् ॥

अर्थ—रुधिरसे तालुमें कमलकी कर्णिकाके समान सूजन होय, इसके लक्षण अर्बुदनिदानमें जो रक्तार्बुदके कहे है उसके प्रमाण जानने ॥

मांससंघात ।

दुष्टंमांसंनीरुजंतालुमध्येकफाच्छूनंमांससंघातमाहुः ॥

अर्थ—कफ करके तालुमें दुष्ट मांस हो करके जो सूजन होय, और वा दृखे नहीं, उसको मांससंघात कहते है ॥

ताल पुष्पुट ।

नीरुक्स्थायीकोलमात्रःकफात्स्यान्मेदोयुक्तःपुष्पुटस्तालुदेशे ॥

अर्थ—मेदयुक्त कफ करके तालुमें पीडारहित और स्थिर तथा बेरके समान सृजन होय, उसको तालुपुष्पुट ऐसे कहते हैं ॥

कंठशुंड्यादि चिकित्सा ।

तुंडिकायैध्रुवेकूर्मैसंघातेतालुपुष्पुटे ।

एपएवविधिःकार्योविशेषःशस्त्रकर्मणि ॥

अर्थ—तुंडिकारी, अध्रुव, कच्छप और तालुपुष्पुट, इनपर यही विधिकरे कि शस्त्रकर्मके सिवाय विशेष चिकित्सा कहीं नहीं कही ॥

तालुशोपके लक्षण ।

शोपोऽत्यर्थदीर्यतेचापितालुः श्वासश्चोत्रस्तालुशोपोनिलाञ्च ॥

अर्थ—वादीसे तालु अत्यंत सूखकर फट, जाय, तथा भयंकर श्वास होय, उसको तालुशोप कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

स्नेहस्वेदौतालुशोपेविधिश्चानिलनाशनः ॥

अर्थ—तालुशोपपर, वातनाशक, औषध तथा वातनाशक स्नेह और स्वेद इत्यादि विधि करनी चाहिये ॥

तालुपाकके लक्षण ।

पित्तंकुर्यात्पाकमत्यर्थघोरंतालुन्येवंतालुपाकंवदंति ॥

अर्थ—पित्त कुपित होकर तालुमें अत्यंत भयंकर पाक (पकी फुंसी) उत्पन्न करे उसको तालुपाक कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

तालुपाकेतुकर्तव्यविधानंपित्तनाशनम् ॥

अर्थ—तालुपाक होनेसे संपूर्ण पित्तनाशक चिकित्सा करे ॥

तालुरोग ।

गुंज्यात्कफहरंशुंड्यांसंगंडूपधारणे । कुप्योपणवचांसिंधुक
णापाठाचवैःसह । सक्षौद्रैर्भिषजाकार्यगलशुंडीप्रचर्पणम् ॥

अर्थ—शुंडीरोगमें गंडूपधारण करनेको कफनाशक रस देवे योजना करे और कूठ, मिरच, चव, सैधानिमक, पीपल, पाठ और चव्य इनका चूर्ण करके सहतमें मिलायके परजिन्हापर मालिस करे ॥

शुंडीष्टेदन ।

अंगुष्ठांगुलिसंदेशनांकृप्यगलशुंडिकाम् ।

छेदयेन्मंडलाग्रेणजिह्वोपरितुसस्थिताम् ॥

अर्थ-शुंडी (दूसरी जीभ) को चीमटीसे पकड़के और आगेकी तरफ खींचके उसका अग्र छेदन करे ॥

छेदनप्रकार ।

अतिछेदात्त्रवेद्रक्तंततोहेतोऽग्निपेतच । हीनच्छेदाद्भवेच्छोथो
लालास्रावोभ्रमस्तथा । तस्माद्द्वैद्यःप्रयत्नेनदृष्टकर्माविशारदः॥

गलशुंडींतुसंछिद्यकुर्यात्प्राप्तमिमंक्रमम् ॥

अर्थ-दूसरी जीभ अधिक कट जावेतो रुधिरस्राव होय है तथा रोगी मरजावे और न्यूनकटे तो सूजन, लारका बहना और भ्रम ये होते है इसवास्ते कुशल वैद्य उसका छेदन करके क्रमप्राप्त चिकित्सा करे ॥

शुंडीछेदनेके पश्चात् उपचार ।

विप्लयतिविपाकुष्टवचामरिचनागरेः ।

क्षौद्रयुक्तैःसलवणैस्ततस्तांप्रतिसारयेत् ॥

अर्थ-उपजीभ काटनेके पश्चात् पीपल, अतीस, कूठ, वच, मिरच, और सोंठ, इनके चूर्णमें सहत और निमक डालके धीरे २ पोरुओंसे मले ॥

गलरोगकेनाम और संख्या ।

रोहिणीपंचधाप्रोक्ताकंठशालूकएवच । अधिजिह्वश्चवल्योच्छ्रा
सनामैकवृंदकः ॥ ततोवृंदःशतघ्नीचगिलायुःकंठविद्रधिः । ग
लौधश्चस्वरघ्नश्चमांसतालुस्तथैवच । विदारीकंठदेशेतुरोगाश्चा
ष्टादशस्मृताः ॥

अर्थ-पांच प्रकारकी रोहिणी ५ कंठशालूक ६ अधिजिह्वा ७ वलय ८ उच्छ्रासन ९ एकवृंदक १० वृंद ११ शतघ्नी १२ गिलायु १३ कंठविद्रधि १४ गलौध १५ स्वरघ्न १६ मांसतालु १७ विदारी १८ ये अठारह रोग कंठदेशके कहें ॥

कंठगत १७ रोग ।

तिनमें पांचोरोहिणियोंकी सामान्य संप्राप्ति ।

गलेनिलःपित्तकफौचमूर्छितौप्रदूप्यमांसंचतथैवशोणितम् ।
गलोपसरोधकरैस्तथांकुरैर्निहन्त्यसूच्याधिरयंतुरोहिणी ॥

अर्थ—गलेमें वायु पित्त और कफ ये दुष्ट होकर मांसको तथा रुधिरको, दूषित कर गलेमें अंकुर (कांटे) उत्पन्न करेहै, उनसे गला रुकजाय, यह रोहिणी नाम व्याधि प्राणनाशक है सब रोहिणी सन्निपातसे प्रगट होती है उत्कर्षके वास्ते वात आदिका व्यपदेश है इन सबका असाध्यत्व भोजने पृथक् २ लिखा है ॥

उक्तरोहिणियोंकी सामान्य चिकित्सा ।

रोहिणीनांतुसाध्यानांहितंशोणितमोक्षणम् ।

वमनंधूमपानंचगंडूपोनस्यकर्मच ॥

अर्थ—पांच रोहिणीनमें जो साध्य कहींहै उसका रुधिर निकाले और वमन धूमपान, गंडूपधारण और नस्य ये उपचार करे ॥

वातजाके लक्षण ।

चिब्हासमंताद्भ्रशवेदनास्तुमांसांकुराःकंठनिरोधनाय ।

सारोहिणीवातकृताप्रदिष्टावातात्मकोपद्रवगाढयुक्ता ॥

अर्थ—जीभके चारों ओर अत्यंत वेदनायुक्त जो मांसांकुर उत्पन्न होय-उनसे कंठका अवरोध होय, तथा कंप, विनाम, स्तंभादि वातके उपद्रव होय ॥

चिकित्सा ।

वातजातांहृतेरक्तेलवणैःप्रतिसारयेत् ।

सुखोष्णान्नेहगंडूपान्धारयेच्चाप्यभीक्षणशः ॥

अर्थ—वातजन्य रोहिणीका रुधिर निकालके निमकसे घिसे और सुखोष्ण ऐसे गंडूप बारंबार धारण करे ॥

पित्तजरोहिणी ।

क्षिप्रोद्गमाक्षिप्रविदाहपाकातीव्रज्वरापित्तनिमित्तजाता ॥

अर्थ—पित्तसे प्रगट भई रोहिणी शीघ्र बढे तथा शीघ्रही पके उसके योगसे तीव्रज्वर होय ॥

चिकित्सा ।

विस्राव्यपित्तसंभृतांसिताक्षौद्रप्रियंगुभिः ।

वर्षयेत्कवलोद्गाक्षाटरूपैः कथितैर्हितः ॥

अर्थ—पित्तसे उत्पन्न हुई रोहिणीको खांड, सहत, फूलप्रियंगु, इनका जूरे घिसे और दारु, तथा फालसेका काटा करके मुखमें रखे तो हित होय ॥

रक्तजरोहिणी ।

स्फोटैश्चितापित्तसमानलिंगासाध्याप्रदिष्टारुधिरात्मकातु ॥

अर्थ—रुधिरकी रोहिणी पित्तरोहिणीके समान जाननी तथा फोड़ोंसे व्याप्त होय यह साध्य है ॥

चिकित्सा ।

पित्तवत्साधयेद्वैद्योरोहिणीरक्तसंभवां ॥

अर्थ—रक्तजनित रोहिणीपर पित्तरोहिणीकी चिकित्सा करे ॥

कंठशालूक ।

कोलास्थिमात्राकफसंभवोयोग्रंथिर्गलेकंटकशूकभूतः ।

खरःस्थिरःशस्त्रनिपातसाध्यस्तंकंठशालूकमितिद्ववंति ॥

अर्थ—कफसे गलेमें खरकी गुठली समान गांठ होय, उसमें बारीक कांटे होय तथा खरदरी और कठिन होय यह रोग शस्त्रोंसे साध्य होय इस रोगको कंठशालूक रोग कहतेहैं ॥

सामान्य यत्न ।

विस्त्राव्यकंठशालूकंसाधयेत्तुंडिकेरिवत् ।

एककालेयवान्चभुंजीतस्निग्धमल्पसः ॥

अर्थ—कंठशालूक रोगका साव करके फिर तुडकेरी रोगकी जो चिकित्सा कहीहै वो करे तथा एकबार यवान्न भक्षण करे ॥

कफज रोहिणी ।

स्रोतोनिरोधिन्यपिमंदपाकास्थिरांकुरायाकफसंभवासा ॥

अर्थ—जो रोहिणी कंठके मार्गको रोध करे (रोकदे) तथा होले होले पके तथा जिस्के अंकुर कठिन होय, वो कफजन्य जाननी ॥

चिकित्सा ।

आगारधूमकटुकेःकफजांप्रतिसारयेत् ॥ श्वेताविडंगदंतीपुतैलं
सिद्धंससंधवम् । नस्यकर्माणिदातव्यंकवलंचकफोद्भये ॥

अर्थ—कफजन्य रोहिणीको घरका धूआं, तथा तीक्ष्ण औषध इनसे रगड़े और संपेद तुलसी, वायविडंग, दंती, इनसे तेलको सिद्धकर उसमें सैधानिमक डालके इसकी नस्य करे, तथा इसको मुखमेंभी रखे ॥

त्रिदोषजरोहिणी ।

गंभीरपाकिन्यनिवार्यवीर्यात्रिदोषलिंगात्रितयोत्थितासा ॥

अर्थ-त्रिदोषसे उत्पन्न भई रोहिणी गंभीरपाकिनी (जिस्में बहुत राधहो) जिस्में औषधीका प्रभाव नहीं चले और तीन दोषोंके लक्षणोंसे युक्त होय यह तत्काल प्राणोंका हरण करे ॥

अधिजिह्वकेलक्षण ।

जिह्वारूपःश्वयथुःकफाक्षुजिह्वोपरिष्ठादपिरक्तमिश्रात् ।

ज्ञेयोधिजिह्वःखलुरोगएपविवर्जयेदागतपाकमेनम् ॥

अर्थ-रक्तमिश्रित कफसे जीभके अग्रभाग सदृश जीभमें सूजन होय इस्को अधिजिह्व कहते हैं यह पकनेसे असाध्य जानना ॥

सामान्य यत्न ।

उपजिह्वकवच्चापिसाधयेदाधिजिह्वकम् ।

अर्थ-अधिजिह्वक रोगपर उपजिह्वक रोगकी चिकित्सा करे तो दूर होय ॥

बलयकेलक्षण ।

बलासएवायतमुन्नतंचग्रार्थिकरोत्यन्नगातनिवार्य ।

तंसर्वथैवाप्रतिवार्यवीर्यविवर्जनीयंबलयंवदंति ॥

अर्थ-कफसे ऊँची और लंबी ऐसी गांठ कंठमें उत्पन्न होय उसके योगसे कंठमें श्वास गस्सा उतरे नहीं तथा उसमें कोई उपाय नहीं चले । इस रोगको बलय कहते हैं । इस्को वैद्य त्याग दे ॥

बलासके लक्षण ।

गलेतुशोथंकुरुतःप्रवृद्धौश्लेष्मानिलौश्वासरुजोपपन्नम् ।

मर्मच्छिदंदुस्तरमेनमाहुर्वलाससंज्ञनिपुणाविकारम् ॥

अर्थ-कुपित भये जो कफ घायु सो गलेमें सूजन उत्पन्न करे उससे श्वास होय तथा कंठ दूखे, इस मर्मभेद करनेवाली दुस्तर व्याधिको वैद्य बलास ऐसे कहते हैं ॥

एकवृन्दकेलक्षण ।

वृत्तोन्नतोन्तःश्वयथुःसदाहःसकंडुरोपाक्यमृदुर्गुरुश्च ।

नामैकवृन्दःपरिकीर्तितोसौव्याधिर्वलासक्षतजग्रसृतः ॥

अर्थ-गलेमें गोल, ऊँची किंचित् दाह युक्त खुजानेवाली ऐसी मूजन होय वह किंचित् पके और कुछ नरम होय तथा भारी होय इस्का नाम एकवृन्द है यह व्याधि कफ रक्तसे होय है ॥

सामान्य यत्न ।

एकवृंदंतुविश्राव्यविधिंशोधनमाचरेत् ॥

अर्थ—एकवृंद व्याधिका साथ करके फिर शोधन करे ॥

वृंद ।

समुन्नतंवृत्तममंददाहंतीव्रज्वरंवृंदमुदाहरंति ।

तंचापिपित्तक्षतजप्रकोपाद्विद्यात्सतोदंपवनात्मकंतु ॥

अर्थ—गलेमें ऊंची गोल तीव्र दाह तथा ज्वर युक्त जो सूजन होय उसको वृन्द कहते हैं येभी रक्त पित्तके कोपसे होय है । इसमें वायुके संबंध होनेसे मुईके चोटनेकी पीडा होय ॥ ❀ शंका—क्यो जी ! कंठके १७ रोग कहे हैं और वृन्दको मिलायकर अठारह रोग हुये तो कहिये कि, सत्रहकी संख्यामें भेद हुआ ॥ ❀ उत्तर—तुमने कहा सो ठीक है, परंतु तुल्य स्थान आकृती होनेसे एकवृन्दकाही भेद वृन्द रांग जानना, ऐसे माननेसे संख्यामें विरोध नहीं पडे, यद्यपि एकवृन्द कफ रक्तज है और वृन्द रोग पित्त रक्तज है, तथापि जैसे वृन्दका चोटनी होने करके वातात्मकत्व कहा है तो भी एकवृन्दकी अवस्था विशेष होनेसे वृन्दको एकवृन्दके साथ ग्रहण करा है, जैसे कामलाके लक्षणसे भिन्न भी है तथापि हलीमक कामलाकाही भेद जानना और भोजने भी इसको एक वृन्दकाही भेद कहा है, गदाधर कहता है कि, छंदानुरोधके निमित्त एकवृन्द शब्दके एक शब्दका लोपकर वृन्द शब्दही मूलमें धरा है याके वृंद और एकवृंद ये दोनों एकही है ॥

सामान्य चिकित्सा ।

एकवृंदमिवप्रायोवृंदंचसमुपाचरेत् ॥

अर्थ—वृंद रोगपर एकवृंदकी चिकित्सा करे ॥

शतघ्नीके लक्षण ।

वर्त्तिर्यनाकंठनिरोधिनीयाचिताऽतिमात्रंपिशितप्ररोहेः ।

अनेकरुकप्राणहरीत्रिदोपाज्ञेयाशतघ्नीशतघ्नीरूपा ॥

अर्थ—कंठमें लंबी और कठिन सूजन होय, उस करके कंठ रुकजाय, और उस सूजनके ऊपर मांसके अंगुर बहुत होय, तथा उसमें तोद (चोटनी) दाह, खुजली, आदि अनेक वेदना होय, यह प्राण हरनेवाली सूजनको शतघ्नी (लंबे तथा कठि लंबे जिस्में होय ऐसे शस्त्र) के समान होय इसीसे इस रोगको यह संज्ञा दीनी है ॥

गिलायुके लक्षण ।

अथिगलेत्वामलकास्थिमात्रःस्थिरोल्परुक्स्यात्कफरक्तमूर्तिः ।

संलक्ष्यतेसक्तमिवाशनंचसशस्त्रसाध्यस्तुगिलायुसंज्ञः ॥

अर्थ—कफ रक्तके कोपसे गलेमें आंवलेकी गुटलीके बराबर गांठ उत्पन्न होवे, वह गांठ कठिन मंद पीडावाली हो, इसके होनेसे अत्र गलेमें अटकतासा मालूम देवे, यह रोग शस्त्रके द्वारा अर्थात् शस्त्रसे काटनेसे साध्य होवे इसको गिलायु कहते हैं ॥

सामान्य चिकित्सा ।

गिलायुश्चापियोव्याधिस्तंचशस्त्रेणसाधयेत् ॥

अर्थ—गिलायु नामकी व्याधिको शस्त्रसे उपचार करे ॥

गलविद्रधिके लक्षण ।

सर्वगलंव्याप्यसमुत्थितोयःशोथोरुजःसंतिचयत्रसर्वाः ।

ससर्वदोषोगलविद्रधिस्तुतस्यैवतुल्यःखलुसर्वजस्य ॥

अर्थ—जो सूजन सब गलेमें व्याप्त होवे तथा जिसमें सर्व प्रकारकी पीडा होय वह विद्रधिनिदानमें जो त्रिदोषकी विद्रधि कही है उसके समान गल-विद्रधिके लक्षण जानने ॥

सामान्य यत्न ।

अमर्मस्थंतुसंपकंछेदयैद्गलविद्रधिम् ॥

अर्थ—मर्म स्थानके विना अन्यत्र हुई गलविद्रधि पकगई होय तो उसमें चीरा देवे ॥

गलौषके लक्षण ।

शोथोमहानन्नजलावरोधीतीव्रज्वरोवायुगतेर्निहंता ।

कफेनजातोरुधिरान्वितेनगलेगलौषःपरिकीर्त्यतेसौ ॥

अर्थ—रक्तयुक्त कफसे गलेमें भारी सूजन होय, उसके योगसे फंठमें अत्र जलका अवरोध (रोकवट) होय, तथा वायुका संचार होय नहीं, इसको वीच गलौष कहते हैं ॥

स्वरग्नके लक्षण ।

यस्ताम्यमानःश्वसितीप्रसक्तंभिन्नस्वरःशुष्कविमुक्तकंठः ।

कफोपदिग्धेष्वनिलायतेपुज्ञेयःसरोगःश्वसनात्स्वरघ्नः ॥

अर्थ—वायुका मार्ग कफसे लित होनेसे बारबार नेत्रोंके आगे अंधकार आकर जो पुरुष श्वासको छोड़े, अथवा मूच्छा आकर जिसकी श्वास निकले, जिसको भिन्न स्वर होय, कंठ सूखे और विमुक्त कहिये कंठ स्वाधीन न हो, अर्थात् थोडाभी अन्न खाया हो तथापि कंठसे नीचे न उचरे, इस वातज रोगको स्वरघ्न कहते हैं ॥

मांसतानके लक्षण ।

प्रतानवान्यःश्वयथुःसुकष्टोगलोपरोधंकुरुतेक्रमेण ।

समांसतानेतिविभर्तिसंज्ञांप्राणप्रणुत्सर्वकृतोविकारः ॥

अर्थ—जो सृजन गलेमें उत्पन्न होकर क्रमसे फैलकर गलेको रोकले तब बहुत कष्ट हो, इस त्रिदोष विकारको मांसतान कहते हैं यह विकराल रोग प्राणोंका नाश करनेवाला है ॥

विदारीके लक्षण ।

सदाहतोदंश्वयथुंसतीव्रमंतर्गलेपूतिविशीर्णमांसम् ।

पित्तेनविद्याद्दनेविदारींपाश्वैविशेषात्सतुयेनशेते ॥

अर्थ—पित्तसे गलेमें सृजन होवे तिस करके दाह होय, चक्क होय, तथा दुर्गंधि युक्त सडा मांस गिरे और रोगी जिस करबट सोवे उसी तर्फ वह रोग होता है, मांसके विदारण करनेसे विदारी कहलाता है ॥

असाध्य मुखरोगके लक्षण ।

ओष्ठप्रकोपेवर्ज्याः स्युर्मांसरक्तप्रकोपजाः । दंतमूलेषुवर्ज्यास्तु

त्रिलिंगगतिसौपिरौ ॥ दंतेषुनचसिच्यंतिश्यावदालनभंजनाः ।

जिह्वातलेष्वलासश्चतालव्येष्वर्बुदंतथा ॥ स्वरघ्नोवलयोर्बुदोबला

सश्चविदारिका । गलौघोमांसतानंश्चशतघ्नीरोहिणीगले ॥

असाध्याःकीर्तिताह्येतेरोगानवदशैवतु ॥ तेषुचापिक्रियावैद्यः

प्रत्याख्यायसमाचरेत् ॥

अर्थ—ओष्ठरोग (हाँठके रोगोंमें) मांसज, रक्तज और त्रिदोषज, असाध्यहै । मसूढ़ोंके रोगोंमें सन्निपात, नाडी और सौपिर और दाँतोंके रोगोंमें श्याव, दालन, और भंजन, जिह्वाके रोगोंमें अलास और तालुयके रोगोंमें अर्बुद, तथा गलेके रोगोंमें स्वरघ्न, बलय, घुंद, बलास, विदारिका, गलौघ, मांसतान, शतघ्नी और रोहिणी ये दश्रीस रोग असाध्य हैं, इनपर

चिकित्सा करनेवाले वैद्यको प्रत्याख्यान (औषधि) न देनी ये तौ मृत्यु निश्चय होय और देवे तौ कदाचित् वचभी जाय है ऐसे विचारकर औषधी देनी चाहिये ॥

वातिकसर्वसर ।

स्फोटैःसतोर्द्वेदनंसमंताद्यस्याचितंसर्वसरःसवातात् ।

अर्थ—वादीके योगसे मुखमें सर्वत्र छाले हो जाय और वह चिनमिनावै, मुख जिह्वा गला होंठ मसूडे दांत और तालु इन सबमें व्याप्ति होनेसे इस रोगको सर्वसर कहते है ॥

पैत्तिकसर्वसर ।

रक्तैः सदाहैःपिटिकैःसपीतैर्यस्याचितंचापिसापित्तकोपात् ।

अर्थ—पित्तसे मुखमें लाल तथा पीले छाले होय और दाह होंवे ॥

कफजसर्वसर ।

आवेदनैःकंडुयुतैःसवर्णैर्यस्याचितंचापिसवैकफेन ॥

अर्थ—कफसे मुखमें मंदपीडा और त्वचाके समान वर्ण जिनका ऐसे छाले सर्वत्र होय ॥

मतांतर ।

रक्तेनपित्तोदितएकएवकैश्चित्प्रदिष्टोमुखपाकरोगः ।

अर्थ—कितनेक बुद्धिमानोंने रक्तपित्तसे उत्पन्न हुआ मुखपाक रोग एकही प्रकारका कहा है ॥

मुखरोगसंख्या ।

पृथक्दोषैस्त्रयोरोगाःसमस्तमुखजाःस्मृताः ॥

अर्थ—वात, पित्त, कफ इन दोषोंसे तीन रोग और तीनों दोषोंसे होनेवाला रोग ऐसे मुखज रोग कहे है ॥

असाध्यमुखरोगके मारणकी अवधि ।

सद्यस्त्रिदोषजोहंतित्र्यहात्कफसमुद्भवः ।

पंचाहात्पित्तसंभूतःसप्ताहात्पवनःस्थितः ॥

अर्थ—त्रिदोषसे उत्पन्न होनेवाला असाध्य मुखरोग तात्काल प्राणीको नष्ट करता है और कफज रोग तीन दिनमें, पित्तज रोग पांच दिनमें, वातज रोग सात दिनमें प्राणीको नष्ट करता है ॥

समस्तमुखरोगचिकित्सा ।

वातात्सर्वसरं चूर्णैर्लवणैः प्रतिसारयेत् । तैलं वातहरैः सिद्धं हितं
कवलनस्ययोः । पित्तात्मके सर्वसरे शुद्धकायस्य देहिनः ॥
सर्वः पित्तहरः कार्याविधिर्मधुरशीतलः । प्रतिसारणं गंडूपधूम
संशोधनानि च । कफात्मके सर्वसरे क्रमं कुर्यात्कफापहम् ॥

अर्थ—वातजन्य सर्वसर अर्थात् मुखपाक (छाले) होनेसे उनको निमकसे
घिसे, तथा वातनाशक औषधोंसे सिद्ध करे हुए तेलकी नस्य, और कुट्टे करे
तो हितावह होय । तथा पित्तजनित छालेनमें प्रथम दस्त करावे, फिर सम्पूर्ण
मधुर और शीतल ऐसे पित्तनाशक विधि करे, कफात्मक सर्वसर (छालेन)
में प्रतिसारण, गंडूप, धूमपान, शोधन और सम्पूर्ण कफनाशक चिकित्सा करे ॥

गलरोगकी सामान्यचिकित्सा ।

कंठरोगेष्वसृङ्मोक्षैस्तीक्ष्णैर्नस्यादिकर्मभिः ।

चिकित्सकश्चिकित्सांतुकुशलोत्रसमाचरेत् ॥

अर्थ—गल रोगका रुधिर निकालना, तथा तीक्ष्ण औषध देवे, तथा कुशल
वेद्य नस्यादि कर्म करे, ॥

दाव्यादिकाय ।

काथंदद्याच्चदावींस्त्रिंश्वताक्षर्यकालिगजम् ।

हरीतकीकपायोवाहितोमाक्षिकसंयुतः ॥

अर्थ—दारुहलदी, दालचीनी, नाँवकीछाल, रसोत और इन्द्रजौ इनका
काठा करके देव अथवा सहत छालके देवे तो हितकारक होय ॥

कटुकादिकाय ।

कटुकातिविपादारुपाठामुस्तकालिगकाः ।

गोमूत्रकथिताः पीताः कंठरोगविनाशनाः ॥

अर्थ—कुटकी, अतीस, देवदारु, पाठ, नागरमोथा और इन्द्रजौ इनका
गोमूत्रमें काठा करके पीये तो गलेके रोगोंका नाश करे ॥

मृद्रीकादि घूर्ण ।

मृद्रीकाकटुकाव्योपदावींस्त्रिफलाधनम् ॥ पाठारसांजनं

दूर्वातेजोह्वेति सुचूर्णितम् । क्षौद्रयुक्तं विधातव्यं गलरोगे महोपधम् ॥

अर्थ—दाख, कुटकी, सोंठ, मिरच, पीपल, दारुहलदी, हरड, बहेडा आँवला नागरमोथा, पाठ, रसोत, दूब और तेजवल, इनका चूर्ण करके उसमें सहत डालके गलेके रोगोंपर देवे, तो महान् औषध है ॥

यवक्षारादिगुटी ।

यवाग्रजंतेजवतीं सपाठारसांजनंदासुनिशांसकृष्णाम् ।

क्षौद्रेन कुर्याद्भ्रूटिकां मुखेन तां धारयेत्सर्वगलामयेषु ॥

अर्थ—जवाखार, तेजवल, पाठ, रसोत, दारुहलदी और पीपल इनका चूर्ण करके उसको सहतसँ गोली बनायके मुखमें रखे, तो सर्व गलेके रोग दूर होय ये ऊपर लिखे तीन योग क्रमसे वात पित्त और कफ इनको नाश करे ॥

सुस्रपाकपरसामान्ययत्न ।

मुखपाके शिरावेधः शिरसश्च विरेचनम् ।

मधुमूत्रघृतक्षरैः शीतैश्च कवलग्रहः ॥

अर्थ—संपूर्ण मुखपाकेमें फस्त खोले मस्तकरेचन और सहत गोमूत्र, घी, दूध और शीतल पदार्थ इनका कवल करके मुखमें रखे ॥

दावींस्वरस ।

स्वरसः कथितो दाव्या धनीभूतोरसक्रिया ।

सक्षौद्रो मुखरोगामृदोपनाडीत्रिणापहः ॥

अर्थ—दारुहलदीका स्वरस काठके ओटावे जव गाढा होजावे तब इसमें सहत डालके देवे तो मुखदोष, रक्तदोष और नाडीघण इनका नाश करे ॥

सप्तच्छदादिकाय ।

सप्तछदोशीरपटोलमुस्ताहरतीतित्तकरोहिणीभिः ।

यष्ट्याह्वराजद्रुमचंदनैश्च काथं पचेत्पाकहरं मुखस्य ॥

अर्थ—सतवनकी छाल, खस, पटोलपत्र, नागरमोथा, हरड, कुटकी, सुलहदी, अमलतासका गूदा और चंदन इनका काढा पीनेको देवे तो मुखपाक (छालेन) को नाश करे ॥

सामान्यचिकित्सा ।

पंचवल्कलजः काथस्त्रिफलासंभवोथवा ।

मुखपाके प्रयोक्तव्यः सक्षौद्रो मुखधावने ॥

अर्थ—पंचवल्कलका काढा अथवा त्रिफलाका काढा करके उसमें सहत मिलायके मुख धोनेको अर्थात् कुल्ला करनेको देवे ॥

पटोलादि काय ।

पटोलनिवजंवाग्रमालतीनवपल्लवैः ।

पंचपल्लवजःश्रेष्ठःकपायोमुखधावने ॥

अर्थ—पटोलपत्र, नीमकी छाल, जामुन, आंव और चमेली इनके नवीन पत्तोंका काटा करके मुखप्रक्षालन करनेको श्रेष्ठ है ॥

जातीपत्रादि काय ।

जातीपत्रामृताद्राक्षयासदावींफलत्रिकैः ।

क्वाथंक्षौद्रयुतःशीतोगंडूपोमुखपाकनुत् ॥

अर्थ—चमेलीके पत्ते, गिलोय, दाख, धमासो, दारुहलदी, हरड, बहेडा, आंवला इनका काटा सहत डालके कुरला करनेके वास्ते देवे, तो मुखपाकका नाशकरे ॥

पटोलादि काय ।

पटोलशुंठीत्रिफलाविशालात्रायंतितित्ताद्विनिशामृतानां ।

पीतःकपायोमधुनानिहंतिमुखेस्थितश्चास्यगदानशेषान् ॥

अर्थ—पटोलपत्र, सांठ, हरड, बहेडा, आंवला, इद्रापनकी जड़, त्रायंती कुटकी, हलदी, दारुहलदी, और गिलोय, इनका काटा सहतमें मिलायके मुखमें धारण करे तो मुखरोगका नाश होय ॥

तिलादि गंडूप ।

तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच ।

सलोध्रोदग्धवक्रस्यगंडूपोदाहनाशनः ॥

अर्थ—तिल, नीलेमल, घी, सांठ, दूध और लोथका चूर्ण, इनको एकत्र करके कुल्ले करे तो भुरसे (जले हुए) मुखके दाहको नाश करे ॥

यष्टीमध्वादि तैल ।

यष्टीमधुपलमेकं त्रिंशन्नीलोत्पलस्यतैलस्य । प्रस्थंताद्विगुणप

योविधिनापक्वंतुनस्येन ॥ निशिवदनस्यस्रावंक्षपयतिगात्रस्य ।

दोपसंघातम् । वपुःस्वर्णत्वमवश्यंक्रमशोभ्यंगेनजंतुनाम् ॥

अर्थ—सुलहदी ४ तौले नीले कमल १२० तौले, तैल ६४ तौले और दूध, १२८ तौले इन सबको एकत्र कर मंदाग्निपर पचावे, जब सिद्ध हो जावे तब इसको रात्रिके समय नस्य करे तो मुखका स्राव (बहना) और अंगमें लगानेसे शरीरके दोष इनका नाश करे और क्रांतिको स्वर्णके समान करे ॥

हरिद्रादि तैल ।

हरिद्रानिवपत्राणिमधुकं नीलमुत्पलम् ।

तैलमेभिर्विपक्तव्यं मुखपाकहरं परम् ॥

अर्थ—हलदी, नीबूके पत्ते, मुलहदी, नीलाकमल इनके कल्कमें तैलको पचावे यह मुखपाकका नाश करनेमें उत्तम है ॥

जातीपत्रचर्चण ।

कार्यैच बहुधानित्यं जातीपत्रस्य चर्चणम् ।

अर्थ—मुखमें छाले होगये होय तो नित्य चनेलीके पत्तोंको चबाय करे ॥

कृष्णादि चर्चण ।

कृष्णाजीरककुपेंद्रयवचर्चणतरुयहात् ।

मुखपाकव्रणक्लेदं दौर्गन्ध्यमुपशाम्यति ॥

अर्थ—पीपल, मिरच, कूठ, इन्द्रजो इनको तीन दिन चबावे तो मुखपाक, छस, और दुर्गन्ध इनकी शांति होय ॥

चनेसे मुख जल गया हो उसपर ।

तांबूलमध्यस्थितचूर्णकेन दग्धं मुखं यस्य भवेत्कथंचित् ।

तैलेन गंडूपमसौ विदध्यादम्लारनालेन पुनः पुनर्वा ॥

अर्थ—जिस मनुष्यका मुखपान (घोंडी) के चनेसे जल गया हो उसको तैलके कुल्ले करने चाहिये । अथवा खट्टी कांजीके बारंबार कुल्ले करे ॥

सादिरादि गुटिका ।

सादिरस्य तुलांतोयद्रोणेपक्त्वाष्टशोपितम् । जातीकोशेंदुपूगश्च

चातुर्जातमृगांडजैः ॥ पृथक्कंपमितैः पिष्टैर्मलयित्वा चणो

पमाम् ॥ गुटीं कृत्वा मुखे धार्यासानि हंत्यसिलान्गदान् । जिह्वो

घृदंतवदनगलतालुसमुद्भवान् ॥

अर्थ—खैरकी छाल ४०० तालेको १०२४ तोले जलमें डालके अष्टाव-
क्षेप काटा करे, फिर छानके इसमें जावित्री, कपूर, चिकनी सुपारी, दाल-
चीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, फस्तूरी ये प्रत्येक ताले २ लेंवे सबका
चूर्ण कर उस काटेमें मिलाय और घोटके चनेके बराबर गौली करे इसको
मुखमें रखे तो संपूर्ण मुखके रोग, जिह्वारोग, ओष्ठ (हाठों) के रोग, दांत-
के रोग गलेके रोग और तालुके रोग इनको नाश करे ॥

मुखरोगपर पथ्य ।

स्वेदोविरेकीवमनंगंडूपःप्रतिसारणम् । कवलसूक्स्तुतिर्नस्यं
धूमःशस्त्राग्निकर्मणो॥तृणधान्यंयवामुद्राःकुलित्याजांगलीरसः।
बृहत्प्रोष्टोकारवेष्टं पटोलंवालमूलकम् ॥ कर्पूरनीरंताबूलंततां
बुखदिरोधृतम् । कटुतिक्तौचवर्गोयमित्रंस्यान्मुखरोगिणाम् ॥

अर्थ—स्वेद, विरेचन, वमन, कुल्ला, प्रतिसारण अर्थात् मंजन, कवल औष-
धियोंका मुखमें रखना, रुधिर निकालना, नास, धुआं देना, नस्तर देना, व
आगसे दागना, तृण धान्य, जो, मूंग, कुलथी, जंगलके जीवोंका मांसरस,
बटा मछली, फरेला, परवर, कोमल मूली, कपूरका जलपान, गरम जल,
फत्था, घी, कडुआ तथा चरपरा रस ये सब मुख रोगमें पथ्य है ॥

मुखरोगपर अपथ्य ।

दंतकाष्ठंस्नानमम्लंमत्स्यमानूपमामिषम् । दधिक्षीरंगुडंमापं
रूक्षान्नंकठिनाशनम्॥अधोमुखेनशयनंगुर्वभिष्यंदिकानिच ॥
मुखरोगेषुसर्वेषुदिवानिद्रांचवर्जयेत् ॥

अर्थ—दूतून, न्हाना, खटाई, मछली, अन्नूप देशका मांस, दही, दूध, गुड,
टडद, रूखा अन्न, करडा भोजन, अधो मुखे सोना, भारी तथा अभिष्यंदी वस्तु
और सब मुख रोगोंमें दिनका सोना वर्जित है ॥

[ति श्रीबृहन्नियदुदलाकरे मुखरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

कर्णरोग ।

कर्णरोगका कर्मविपाक ।

मातापितृगुरूणांचदेवब्राह्मणयोस्तथा । शृणोतिर्निदाबुध्या
यःकर्णाभ्यांतस्यशोणितम् ॥ पूयंचैवस्रवत्यस्यशांतिःकृष्ट्रच
सुष्टयात् । हिरण्यरक्तवस्त्राणांदानाद्ब्राह्मणभोजनात् । जपाद्धो
माञ्चभवतिसौरमंत्रेणशक्तिः ॥

अर्थ—माता, पिता, गुरु, देव, और ब्राह्मण इत्यादिकोंकी निदाकी बुद्धि-
पूर्वक अर्थात् जान बूझके सुनता है उसके कानसे रुधिर तथा राधका स्राव
होय है उसके शक्ति चार कृष्ट्र व्रत करके सुवर्ण, लाल कपडा, इनका दान
करे, ब्राह्मणभोजन करावे, तथा सौर मंत्रोंसे यथाशक्ति हवन करे ॥

कर्णरोगनिदान ।

अवश्यायजलक्रीडाकर्णकंडूपणैर्हजम् । मिथ्यायोगेनशस्त्रस्य
कुपितोन्यैश्चकोपनैः ॥ प्राप्यश्रोत्रशिराःकुर्याच्चूलंस्त्रोतसिवे
गवान् । तैवैकर्णगतारोगाअष्टाविंशतिरीरिताः ॥

अर्थ-पाला, जलक्रीडा, कर्णकंडूपण, शस्त्रका मिथ्या योग, अन्यकोपन
इन करके कर्णमें उत्पन्न हुआ रोग कुपित होकर नाडियोंके मध्यगत हुआ
शूल पैदा करता है और स्त्रोतोंमें फैल जाता है वे कर्णरोग २८ प्रकारके
ऐसे कहते हैं ॥

कर्णरोगके नाम ।

कर्णशूलःप्रणादश्चवाधिर्यक्ष्वेडएवच । कर्णस्त्रावःकर्णकंडूःक
र्णगूर्थस्तथैवच ॥ प्रतिनाहोजंतुकर्णोविद्रधिर्द्विविधस्तथा ।
कर्णपाकःपूतिकर्णस्तथैवाश्रुश्चतुर्विधः ॥ तथाअर्बुदःसप्तविधःशो
षश्चापिचतुर्विधः । एतेकर्णगतारोगाअष्टाविंशतिरीरिताः ॥

अर्थ-कर्णशूल, प्रणाद, वाधिर्य, क्ष्वेड, कर्णस्त्राव, कर्णकंडू, कर्णगूर्थ, प्रतिनाह,
जन्तुकर्ण, विद्रधि २ प्रकारका, कर्णपाक, पूतिकर्ण, अश्रु रोग ४ प्रकारका, अर्बुद ७
प्रकारका, शोष ४ प्रकारका, इन भेदोंसे कर्णमें होनेवाले रोग २८ अट्टाईस कहें ॥

कर्णशूल निदान ।

समीरणःश्रोत्रगतोन्यथाचरन्समततःशूलमतीवकर्णयोः ।

करोतिदोषैश्चयथास्वमावृतः सकर्णशूलःकथितोदुरासदः ॥

अर्थ-कानमें वायु दोषों करके (कफ पित्त रुधिरसे) आवृत होकर
कानोंमें लट्टी फिर तब अत्यन्त शूल (दरद) होय, इस रोगको कर्णशूल
कहते हैं, यह रोग कष्टसाध्य है । कर्णशूलके उपद्रव विदेहने इस प्रकार लिखे हैं ॥
शृंगवेरसःश्लोद्रंसेधवंतैलमेवच ।

शृंगवेरसःश्लोद्रंसेधवंतैलमेवच ।

कटूष्णंकर्णयोर्धोषमेतत्स्याद्वेदनापहम् ॥

अर्थ-अदरखका रस, सहत, सैधानिमक और सरसोंका तैल इनको आँटावे
जव तैलमात्र शेष रहे तब गरम गरम कानमें डाले तो कर्णशूलको नाश करे ॥

लशुनादि स्वरस ।

लशुनाद्रंकाशिशृणांवारूणांमूलकस्यच ।

कदल्याःस्वरसः श्रेष्ठःकटूष्णःकर्णपूरणे ॥

अर्थ—लहसन, अदरस, सहंजना, बरना, मूली और केला इनके रस तीक्ष्ण, गरम ऐसा कानमें डालनेमें उत्तम है ॥

अर्काकुरादि स्वरस ।

अर्काकुरानम्लपिष्टान्सतैलान्त्वणान्वितान् । सन्निदध्यात्सु
धाकांडेकोरितेमृत्स्नयावृते ॥ पुटपाकक्रियास्विन्नंपीडयेदा
रसागमात् । सुखोष्णंतद्रसंकर्णेप्रक्षिपेच्छूलशांतये ॥

अर्थ—आकके अंकुरोंको ले नींबूके रसमें पीसके उसमें तेल और निमक डालके इस कल्कको धूरके लकड़ीके भीतर भरके उसपर मिट्टीका लेपकर पुटपाककी विधिसे पचावे, फिर निकालके निचोड लेवे, इस रसको सुखोष्ण कानमें डाले तो शूलको शांति करे ॥

अर्कपत्रस्वरस ।

अर्कस्यपत्रपरिणामपीतमाज्येनलितंशिखियोगतप्तम् ।

आपीड्यतस्यांबुसुखोष्णमेवकर्णेनिपिक्तंहरतेतिशूलम् ॥

अर्थ—आकके पत्रके पत्तेपर घी लगायके अग्निपर तपाय लेवें, फिर इसको निचोडकर इसका सुखोष्ण रस कानमें डाले तो शूलको नाश करे ॥

कर्णशूलचिकित्सा ।

तीव्रशूलतुरेकर्णसरागेक्रेदवाहिनि ।

छागमूत्रंप्रशंसंतिकोष्णसंधवसंयुतम् ॥

अर्थ—कानमें तीव्रशूल, रक्तता, लस बहना इत्यादिकोंपर बकराका मूत्र संधानिमक और फूठ, डालके मंदाष्ण करके कानमें डाले ॥

स्योनाकतेल ।

तैलस्योनाकमूलेनमद्ग्रीविधिनागृतम् ।

हरेदाशुत्रिदोपोत्थंकर्णशूलंप्रपूरणात् ॥

अर्थ—स्योनाक (टेंदू) की जड़के कल्कको तेलमें मिलाय मंदाग्निपर पचावे, इसको कानमें डाले तो त्रिदोषजनित कर्णशूलको नाशकरे ॥

हिंवादि तैल ।

हिंयुसंधवशुंठीभिस्तैलंसर्पपसंभवम् ।

विपक्वंहरतेवश्यंकर्णशूलंप्रपूरणात् ॥

अर्थ—हॉग संधानिमक, सोंठ, इनके फल्कमें सरसोंका तेल डालकै पचावे इसको कानमें डालेती अवश्य कर्णशूलको नाशकरे ॥

नागरादि तैल ।

नागरसैंधवमागधिमुस्ताहिंशुवचालशुनंतिलतैलम् ।

अर्कसुपक्वपलाशरसेनकर्णरुजंवधिरंविनिहति ॥

अर्थ—सोंठ, संधानिमक, पीपल, नागरमोथा, हॉग, वच और लहलम इनके फल्कमें तिलका तेल डालकै तथा आकका और पलासका रस डालकै सिद्ध करे तो कर्णरोग, बहरेपना इनको नाश करे ॥

सामान्य यत्न ।

कर्णशूलेकर्णनादेवाधिर्येक्ष्वेडएवच ।

चतुर्ष्वपिचरोगेषुसामान्यंभेपजंस्मृतम् ॥

अर्थ—कर्णशूल कर्णनाद, बधिरता और स्वेड इन चार व्याधियोंपर सामान्य औषध देवे ॥

कर्णपूरणविधि ।

स्वेदयेत्कर्णदेशंतुकिंचिन्नापार्श्वशायिनः। मूत्रैःस्नेहैरसैःकोष्णे
स्तच्चश्रोत्रंप्रपूरयेत् ॥ कर्णचपूरितंरक्षेच्छतंपंचशतानिच । स
हस्रंवापिमात्राणांश्रोत्रकंठशिरोगदे ॥

अर्थ—किंचित्पार्श्वकी तरफ सोयकर कानको सेके अर्थात् पसीने निकाले और मूत्र, स्नेह अथवा नस्य ये मंदोष्ण करके कानमें भरे और निकाल देवे, उसी प्रकार भरके सौ पांचसौ, अथवा हजार मात्रा पर्यंत राखे और कंठ तथा शिरो-रोग इनपर यही विधि करे ॥

मात्राका प्रमाण ।

स्वजानुतःकरावर्तकुर्याच्छ्रोतिकयायुतम् ।

एषामात्राभवेदेकासर्वत्रैवाविनिश्चयः ॥

अर्थ—अपने घोटपर चारोंतरफ हाथको फेरके जुटकी वजाना चौ एकमात्रा होय है इस प्रकार और जानना ॥

पूरणकाल ।

रसाद्यैःपूरणंकर्णेभोजनात्प्राक्प्रशस्यते ।

तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेस्तमुपागते ॥

अर्थ—कानमें रसादिक डालने होंवे तो भोजनके पूर्व डाले और तैलादिक डालने होय तो सूर्यास्त होनेपर डाले ॥

कर्णनादके छक्षण ।

कर्णस्रोतःस्थितेवातेशृणोतिविविधान्स्वरान् ।

भेरीमृदंगशंखानांकर्णनादःसुउच्यते ॥

अर्थ—वायु कानके छिद्रमें स्थित होनेसे अनेक प्रकारके स्वर तथा भेरी, मृदंग और शंख इनके शब्द सुनाई देवे, इस रोगको कर्णनाद कहते हैं ॥

अपामार्गतैल ।

अपामार्गक्षारजलेतत्कृतककेनसाधितंतिजम् ॥

अपहरतिकर्णनादंवाधिर्यंचापिपूरणतः ॥

अर्थ—ओंगाके स्वारका जल, तथा ओंगाका फल्क, इनमें तिलका तेल डालके सिद्ध करे इसको कानमें डालनेसे कर्णनाद तथा बहरापना इनको नाश करे ॥

मधुसूक्त ।

जंबीराणांफलरसःप्रस्थैकःकुडवोन्मितम् । माक्षिकंतत्रदातव्यं

पिप्पलीचपलोन्मिता ॥ घृतभांडेनिधायैतद्धान्यराशौविधार

येत् । मासेनतज्जातरसंमधुसूक्तंप्रजायते ॥

अर्थ—नींबूका रस ६४ तोले और सहत ६४ तोले तथा पीपल ४ तोले डालके घीके भांडेमें भरके बंदकर देवे फिर धानकी राशिमें गाड़ देवे, एक महिनेके बाद इसको निकाल लेंवे, इसको मधुसूक्त कहते हैं ॥

हिंवादि तैल ।

हिंवाब्ददारुनिशिमूलकभस्मभूर्जत्वक्क्षारसिंधुरुचकोद्रिद

शियुविश्वैः । सस्वर्जिकाविश्वचांजनमातुलंगैरंभारसैःसमधु

सूक्तमिदंविपक्वम् ॥ तैलंप्रसिद्धमितितच्छ्रवणामयग्रंकर्णप्र

णादवाधिरत्वहरंनराणाम्भूमस्तकश्रवणशष्कुलिकांतरालशू

लापहंचरकसुश्रुतपूजितंचम् ॥

अर्थ—हींग, नागरमोथा, देवदारु, सौंफ, मूलीकी भस्म, भोजपत्र, जवाखार, संधानिमफ, संचरनिमफ, सोरा, सहजना, सौंड, सजीखार, विढनोन, सुरमा, विजोरा, केला इनका रस और मधुसूक्त ये वस्तु डालके उसमें तिलोंका तेल

डालकै सिद्ध करे, यह कर्णरोग, कर्णनाद, बहरापना और मोह, मस्तक, कान, कानकी पाली, कानका शूल, इनको नाश करे यह चरक और सुश्रुत इनको मान्य है ॥

वाधिर्य ।

यदाशब्दवहंवायुःस्रोतआवृत्यतिष्ठति ।

शुद्धःश्लेष्मान्वितोवापिवाधिर्यतेनजायते ॥

अर्थ—जिस समय केवल वायु, अथवा कफयुक्त वायु, शब्द वहानेवाली नाडियोंमें स्थित होय, तब उस पुरुषको शब्द सुनाई नहीं देय, अर्थात् बहरा होजाया ॥

विलतैल ।

गवामूत्रेणविल्वानिपिष्ट्वातैलंविपाचयेत् ।

सजलंचसदुग्धंचतद्वाधिर्यहरंपरम् ॥

अर्थ—गौके मूत्रमें बेलगिरीको पीस उसका जल बकरीका दूध तथा तेल डालकै पचावे, सिद्ध करके कानमें डाले तो वाधिर (बहरापना) दूर होय ॥

दीपिकातैल ।

बृहतःपंचमूलस्यकांडान्यष्टागुलानिच ।क्षौमेणावेष्ट्यसंसिच्य

तैलेनादीपयेत्ततः ॥ यत्तैलंच्यवतेतेभ्यःसुखोष्णतेनपूरयेत् ।

ज्ञेयंतद्दीपिकातैलंकुप्टदेवतरोस्तथा ॥

अर्थ—बृहत्पंचमूलोकी डालीको लायके उसको आठ अंगुल मात्र लेवे, उसमें कपडा लपेट तेलमें डबोयके जलावे, उससे जां तेल टपके उसको सुखोष्ण कानमें डाले, इसको दीपिका तेल कहते हैं । इसी प्रकार कूट, देवदारुसे-भी तेल निकाल लेवे ॥

चार योग ।

तैलंकांजिकवीजपूरकरसेःक्षौद्रैःसमूत्रैःशृतंस्यात्सौद्राद्रिकशि

युमूलकदलीकंदद्रवैर्वासमम् । शुंठीतुंबरुहिंगुभिःशृतमपिस्या

त्कर्णशूलापहंसिद्धं विल्वगरेणसाजपयसामूत्रेणवाधिर्यजित् ॥

अर्थ—कांजी विजोरका रस, सहत, गोमूत्र इनसे अथवा सहत, जदरसका रस, सहजनेके कंदका रस, तथा केलके कंदका रस इनसे अथवा सोंठ धनिया, हिंग इनके कल्कमें अथवा बेलगिरि बकरीका दूध और मूत्र इनमें तेल सिद्ध करके कानमें डाले तो बहरापनेको नाश करे ॥

निर्गुडिचादि तैल ।

निर्गुडिजातिरविभृंगरसोनरंभाकार्पासशिशुसुरसार्द्रककारवेल्यः ।

एपारसेतिलभवंसविपंसुकर्णवाधिर्यनादकृमिवदेनपूययुक्ते ॥

अर्थ—निर्गुडी चमेलीके पत्ते, आक, भांगरा, लहसन, केला, कपास, सह-जना, तुलसी, अदरक, करेला इनके रसमें तिलोंका तेल डालके उसमें सिंगिया विप डाले फिर अमिपर पचावे जब सिद्ध हो जावे तब कानमें डाले दो वहरापना कर्णनाद कानकी कृमि, दर्द और राधका बहना इनको नाश करे ॥

कर्णक्षेडके लक्षण ।

वायुःपित्तादिभिर्युक्तोवेषुघोपसमंस्वनम् ।

करोतिकर्णयोःक्ष्वेडंकर्णक्ष्वेडःसञ्च्यते ॥

अर्थ—पित्तादि दोषोंकरके युक्त वायु कानोंमें वेषु (वंसी) का शब्द सुनाई देता है उसको कर्णक्ष्वेड कहते हैं ॥

कर्णस्रावको उपचार ।

शंवूकस्यतुमांसिनकटुतैलंविपाचयेत् ।

तस्यपूरणमात्रेणकर्णक्ष्वेडःप्रशाम्यति ॥

अर्थ—कडुवा तैलमें जलशुक्तिका मांस पकायके कर्णमें पूरण करनेसे कर्ण-स्राव बंद हो जाता है ॥

कर्णकंडके लक्षण ।

मारुतःकफसंयुक्तःकर्णकंडंकरोतिच ॥

अर्थ—कफसे मिलाहुआ वायु कानोंमें खुजली उत्पन्न करता है ॥

कर्णगूथके लक्षण ।

पित्तोष्मशोपितः श्लेष्माजायतेकर्णगूथकः ॥

अर्थ—पित्तकी गरमीसे कफ सूखकर कानमें मेल जमे, उसको कर्णगूथ कहते हैं ॥

सामान्यपत्र ।

कर्णस्रावेपूतिकर्णेतथैवकृमिकर्णकम् ।

सामान्यंकुर्मकर्वतियोगान्वैशोपिकानापि ॥

अर्थ—कर्णस्राव, पूतिकर्ण, उसी प्रकार कृमिकर्ण, इनपर सामान्य उपचार करे, तथा विशेषभी करने चाहिये ॥

बीजपूररस ।

स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तबीजपूररसंक्षिपेत् ॥

कर्णस्रावरुजादौतुप्रशस्तंनान्नसंशयः ॥

अर्थ—विजोरेके रसमें सजीखार डालके फानमें डाले, तो कर्णस्राव, और पीडा इनपर उत्तम है ॥

समुद्रफेनचूर्ण ।

समुद्रफेनचूर्णैतुन्यस्तंश्रवणसश्रवे ॥

पूयस्रावंत्रणसांद्रंहांतिध्वांतमिवांशुमान् ॥

अर्थ—समुद्रफेनके चूर्णको फानमें डाले तो राधका बहना, व्रण, चीकट इनको नाश करे ॥

सर्जत्वक्चूर्ण ।

सर्जत्वक्चूर्णसंयुक्तःकार्पासीफलजोरसः ।

मधुसंमिश्रितःसाधुःकर्णस्रावेप्रशस्यते ॥

अर्थ—कपासके फलके रसमें रालके वृक्षकी डालका चूर्ण, तथा सहत डालके फानमें गेरे तो कर्णस्रावपर परमोत्तम है ॥

कर्णप्रक्षालन ।

कर्णप्रक्षालनेशस्तंकवोष्णंसुरभजिलम् ।

पथ्यामलकमंजिष्ठालोध्रतिंडुकवास्तुवा ॥

अर्थ—गोमूत्रको ओटाय मंदोष्ण फरके इससे फान धोवे, तथा हरद, आंवले, मजीठ, लोध, कुचला, किंवा पुननवा, इनका रस, तथा फाटे, कर्ण प्रक्षालन विषयमें उत्तम है ॥

राजवृक्षादि प्रक्षालन ।

राजवृक्षादितोयेनसुरसादिजलेनवा ।

कर्णप्रक्षालनंकुर्ष्याच्चूर्णैरेतैस्तुपूरणम् ॥

अर्थ—जमलतासका फाटा अथवा तुलसीका रस, इनसे फान धोवे, अथवा इनके चूर्णको फानमें डाले ॥

रसांजनयोग ।

घृष्टंरसांजनंनार्याः क्षीरेणक्षौद्रसंयुतम् ।

प्रशस्यतेचिरोत्थेतत्सस्त्रावेपूतिकर्णके ॥

अर्थ—रसोतको खीके दूधमें घिसके उसमें सहत मिलायके इसको बहुत दिनके कर्णस्त्रावपर कानमें डालना उत्तम है ॥

कुष्ठादि तैल ।

कुष्ठं हि गुवचादारुशताह्वाविश्वसैधवेः ।

पूतिकर्णहरतैलंबस्तमूत्रेणसाधितम् ॥

अर्थ—कूठ, हींग, वच, देवदारु, शतावर, सोंठ सैधानिमक, इनका कल्क बफरीके मूत्रमें पचायके तेल सिद्ध करे तो पूतिकर्णका नाश करे ॥

कर्णस्त्रावचिकित्सा ।

जंब्वाप्रपत्रंतरुणंसमांशंकपित्तकार्पासफलंचसार्द्रैः । हृत्वार

संतन्मधुनाविमिश्रंस्त्रावापहंसंप्रवदंतितज्ज्ञाः ॥ एतैःशृतान्वि

करंजतैलंससार्पपंस्त्रावहरंप्रदिष्टम् ॥

अर्थ—जामुन, आंव इनके पके पत्ते समान भाग ले, गीला कपासका फल ले उसका रस निकाल ले, फिर सहत डालके उसको कानमें डाले, तो कर्णस्त्रावको नाश करे और ऊपर कही हुई औषध, तथा नीवकी छाल और फंजा इनके कल्कको तेलमें डालके सिद्ध करे, यह कर्णस्त्रावको नाश करे ॥

कर्णकंडूचिकित्सा ।

स्नेहःस्वेदोद्यवमनंधूमंभूर्ध्रिविरेचनम् ।

विधिश्चकफहासर्वःकर्णैःकंडुमतीप्यते ॥

अर्थ—कंडूयुक्त कर्णपर स्नेह, स्वेद, वांति, धूम, मस्तकैरेचन और संपूर्ण कफनाशक विधि करनी चाहिये ॥

कर्णमलपर ।

प्रक्लेद्यधीमान्तैलेनप्रविलाप्यचशोधनम् ।

कर्णगूथंतुमतिमान्भिपक्वजह्याच्छलाकया ॥

अर्थ—कानमें मैल होनेसे प्रथम उसमें तेल डाल फिर शोधनकी वस्तु डाले और हलकी सलाई डालके उस मैलको निकाल देवे ॥

कर्णरोगकी सामान्य चिकित्सा ।

रास्नामृतेरंडसुराह्विश्वंतुल्यंपुरेणोपविमृश्यखादेत् ।

वातामयीकर्णशिरोगदाचनाडीव्रणीचापिभगंदरीच ॥

अर्थ—रास्ना, गिलोय, अंडकीजड, देवदार, सोंठ ये समान भाग एकत्र करके घातरोगी, कर्णरोगी, शिरोरोगी, नाडीव्रणी और भगंदरी ये भक्षणकरे ॥

कर्णप्रतिनाह ।

सकर्णग्रथोद्रवतांयदागतोविलायितोत्राणमुखंप्रपद्यते ।

तदासकर्णप्रतिनाहसंज्ञितोभवेद्विकारःशिरसोऽर्द्धभेदकृत् ॥

अर्थ—वही कानका मैल पतला होनेसे, अथवा स्नेह खेदादिकोंकरके पतला होकर मुख और नाकमें प्राप्त होय, तब उसको कर्णप्रतिनाह कहतेहैं, इस रोगसे अर्द्धशिर (आधासीसी) का विकार होताहै ॥

चिकित्सा ।

अथकर्णप्रतीनाहस्नेहस्वेदौप्रयोजयेत् ।

ततोविरक्तशिरसःक्रियांप्रोक्तांसमाचरेत् ॥

अर्थ—कर्णप्रतिनाह होनेसे स्नेहन, स्वेदन और मस्तकरचन देकर फिर उक्त क्रिया करनी चाहिये ॥

कृमिकर्णके लक्षण ।

यदातुमूर्च्छैत्यथवापिजंतवःसृजंत्यपत्यान्यथवापिमक्षिकाः ।

तदंजनत्वाच्छ्रवणोनिरुच्यतेभिपागभिराद्यैःकृमिकर्णकोगदः ॥

अर्थ—जिस समय कानमें कीड़े पड़जाय अथवा मक्खी अंडाधरे, तब कृमि लक्षण करके इस रोगको कृमिकर्ण कहते हैं ॥

सामान्य यत्न ।

कृमिकर्णविनाशायकृमिघ्नीकारयेत्क्रियाम् ।

वार्ताकधूमश्चहितःसारपःस्नेहएवच ॥

अर्थ—कानकी कृमिका नाश करनेको कृमिनाशक क्रिया करे और कटेरीके फलोंकी धूनी तथा सरसोका तेल ये हितकारक है ॥

हरितालादि धूप ।

पूरितंहरितालेनगव्यमूत्रयुतेनच ।

धूपयेत्कर्णदौर्गन्धेगुग्गुलुःश्रेष्ठउच्यते ॥

अर्थ—गोमूत्रमें हरितालको घिसके कानमें डाले तथा गुग्गुलीकी धूनी देवे तो कानकी दुर्गन्धको नाशकरनेमें उत्तम है ॥

कृमिकर्णयोगचतुष्टय ।

सूर्यावर्तकस्वरसंरसंवासिंधुवारजम् । लांगलीमूलतोयंवाञ्छू

पणंवापिचूर्णितम् ॥ एतेयोगास्तुचत्वारोपूरणात्कृमिकर्णके ।

कृमीन्निर्मूलयंत्याशुशतपद्यसृपादिकान् ॥

अर्थ—नीला भांगरेका रस, अथवा सहजनेका रस, अथवा कलियारीके कंद-
का रस, अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, इनके चूर्णको ये चार योग कृमिकर्णपर
कानमें डाले तो कृमि, कानसलाई, काँतर आदिको नाश करे ॥

गोमक्षिकाकानमें चली गई होयतो चिक्विस्ता ।

दंतेनचर्वयेन्मूलंनद्यावर्तपलाशयोः ।

तल्लालापूरितेकर्णेध्रुवंगोमक्षिकांजयेत् ॥

अर्थ—तगर और पलास इनकी जड़ दाँतोसे चवायके उसकी लारको
कानमें धूके तो तत्काल गोमक्षिकाको नाश करे ॥

कृमिकर्णकायत्न ।

हलिरविभक्तिव्योपानेकीकृत्यप्रकल्पयेदेतान् । वसनांतरसेन
श्रवणेपरिपूरयेद्युत्तया ॥ कर्णजलौकानियतंकृमिकोटपिपीलि
कस्तथान्योपि । निपतंतिनिर्विशेषाःकारंडाश्चापिमुंडस्थाः ॥

अर्थ—कलियारी, नीला भाँगरा, सोंठ, मिरच, पीपल, इनको एकत्र करके
कपड़ेमें बाँध उस पोटलीको युक्तिसे कानमें निचोड़देवे, तो कर्ण जलौका
कृमि, कीडा, चैदी और मस्तकके कारंड ये गिरजावे ॥

कानमेंपतंगादिकीटचलेजानेपरयत्न ।

पतंगाःशतपद्यश्चकर्णस्रोतःप्रविश्यहि ॥ अरतिंवाकुलत्वंचभृशं
कुर्वंतिवेदनाम् ॥ कर्णोनिस्तुद्यतेयस्यतथाफुरफुरायते । की
टेचरतिरुक्तीत्रानिप्येदेमंदवेदना ॥

अर्थ—पतंग, गिजाई, अथवा कनखजूरा ये कानमें चली जावे तो चैन
नहीं पड़े, जीव व्याकुल होय तथा कानमें पीडा तथा नोचनेकीसी पीडा
तथा फरफराहट और कीड़ेके कानमें फिरनेसे अत्यंत पीडा होय और जब
वह बंद होजावे तब पीडा बंद होवे ।

कर्णविद्रधि ।

क्षताभिघातप्रभवस्तुविद्रधिर्भवेत्तथादोषकृतोपरःपुनः ।

सरक्तपीतारुणरक्तमास्रवेत्प्रतोद्धूमायनंदाहचोपवान् ॥

अर्थ—कानमें खुजानेसे घ्रण होजाय, अथवा चोट लगनेसे कानमें घ्रण
होकर विद्रधि होय, उसीप्रकार वातादि दोषों करके दूसरे प्रकारकी विद्रधि
होय है, जब वह फूटे तब उसमेंसे लाल पीला रुधिर बहे, नोचने कीसी पीडा
होवे, धुआंसा निकलता मालम होवे, दाह, होवे, चूसने कीसी पीडा होवे ॥

चिकित्सा ।

विद्रधौवापिकुर्वीतिविद्रध्युक्तंचिकित्सितम् ।

अर्थ—कर्ण विद्रधिपर सामान्य विद्रधिकी चिकित्सा करे ॥

कर्णपाक ।

कर्णपाकस्तुपित्तेनकोथविक्लेदकृद्भवेत् ।

कर्णविद्रधिपाकाद्राजायतेचांबुपूरणात् ॥

अर्थ—पित्तसे अथवा कान पकनेसे अथवा कानमें पानी जानेसे कर्णपाक रोग होवे उस कर्णके कान सड़ जावे और गीला रहे ॥

पूतिकर्णके लक्षण ।

पूर्यस्रवतिवापूतिसज्ञेयःपूतिकर्णकः ॥

अर्थ—जिसके कानमें राध निकले, वा वास आवे, उसको पूतिकर्ण कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

आम्रजंबूप्रवालानिमधूकस्यवटस्यच ।

एभिस्तुसाधितंतैलंपूतिकर्णगदंहरेत् ॥

अर्थ—आंव, जामुन, महुआ और बट इनके नरम २ पत्तोंके कल्कमें तैल सिद्ध करे, यह पूतिकर्णको नाश करे ॥

जाती पत्रादि तैल ।

जातीपत्ररसेतैलंविपकंपूतिकर्णजित् ॥

अर्थ—चमेलीके पत्तोंके रसमें तैलको पचायके सिद्ध करे, यह पूतिकर्णके नाश करे ॥

कर्णपाककी सामान्य चिकित्सा ।

कर्णपाकस्यभैषज्यंकुर्यादिति विसर्पवत् ॥

अर्थ—कर्णपाकपर विसर्पके ऊपरकी औषधक्रिया करे ॥

गंधक तैल ।

सूर्णेनगंधकाशिलारजनीभवेनमुष्टयंशकेनकटुतैलपलाएकंतु ।

धनूरपत्ररसतुल्यमिदंविपकंनाडीजयेच्चिरभवामपिकर्णजाताम् ॥

अर्थ—गंधक, मनसिल, दलही इनका चार २ तोले सूर्ण ले; इसमें सरसोंका तैल ३२ तोले डाले और धत्तीस तोलेही धनूरका रस डाले और पचावे तो बहुत दिनकी कर्णनाडीका नष्ट करे इसे गंधकतैल कहते हैं ॥

कर्णावुदादि रोग ।

कर्णशोथावुदाशांसिजानीयादुक्तलक्षणैः ॥

अर्थ—कानकी सूजन, कानका अर्बुद और कानकी अर्श (बवासीर) ये रोग होय तो इनके लक्षण उसी उसी निदानके द्वारा जानने, कुछ थोड़ेसे यहां लिख भी देते हैं । कर्णशोथ चार प्रकारकी है वात पित्त कफ रक्तजके भेदसे इसी प्रकार कर्णार्श कानकी बवासीर भी चार ही प्रकारकी है, चारसे विशेष शोथ अर्शका होना असंभव है यासे चार ही है । कर्णावुदरोग—सात प्रकारका है, वात, पित्त, कफ रुधिर, मांस, मेदा और शिरा इनके भेदसे अब कहते हैं कि, कर्णरोग सुश्रुतके मतसे २८ प्रकारके हैं, परंतु चरकके मतसे चार ही हैं उनको कहते हैं ॥

सामान्य यत्न ।

चिकित्साकर्णशोथानां तथा कर्णांशसामपि ।

कर्णावुदानां कुर्वीत शोथाशांशवुदवद्विपक् ॥

अर्थ—कर्ण शोथ, कर्णांश, कर्णावुद इनकी सूजन कानकी बवासीर और अर्बुदके सदृश चिकित्सा करनी चाहिये ॥

चरकोक्त रोग चतुष्टय ।

नादोतिरुक्कर्मलस्यशोपः स्रावस्तनुश्चाश्रवणंचवातात् ॥

अर्थ—वादीसे कानमें शब्द होय, पीडा होय, कानका मैल सूख जाय, पतला स्राव होय, सुनाई नहीं देवे, अर्थात् बहरा होजाय ॥

चिकित्सा ।

कर्णशूलेकर्णनादेवाधियेक्ष्वेडएवच ।

पूरणंकटुतेलेनहितं वातघ्नमौषधम् ॥

अर्थ—कर्णशूल, कर्णनाद, बहरेयना, क्ष्वेड इनपर कानमें सरसोंका तेल डाले तथा वातनाशक उपचार करे तो हितकारी होय ॥

पित्तज कर्णरोग ।

शोथः सरागोदरणं विदाहः सपीतपूतिस्रवणंचपित्तात् ॥

अर्थ—पित्तसे कानमें सूजन होय, कान लालहो, दाह हो, चिरासा होजाय तथा किंचित पीला दुर्गाधियुक्त स्राव होय ॥

कफजके लक्षण ।

वैश्रुत्यकंडूस्थिरशोथशुक्लास्निग्धाद्युतिःश्रेष्मभवेतिरुक्च ॥

अर्थ—कफके प्रभावसे विरुद्ध सुनना खुजली चले कठिन सृजन होय, स-
पेद और चिकना ऐसा स्राव होय ॥

संनिपातजके लक्षण ।

सर्वाणिरूपाणिचसन्निपातात्स्रावश्चतत्राधिकदोषवर्णः ॥

अर्थ—सन्निपातसे सब लक्षण होय, स्राव होय, वा जौनसा दोष अधिक
होय वैसाही दोषानुसार वर्णका स्राव होय ॥

परिपोटक कर्णशोथ ।

सौकुमार्याच्चिरोत्सृष्टेसहसापिप्रवर्धिते ।

कर्णशोथोभवेत्पाल्यांसरुजःपरिपोटवान् ॥

अर्थ—सुकुकार स्त्री अथवा बालकके कानकी लौरको एक साथ बहुत बढावे
तो कानकी पालीमें (लौरमें) मूजन होकर फूल जावे और दूखे ॥

परिपोटकलक्षण ।

कृष्णारुणनिभःस्तब्धःसवातात्परिपोटकः ॥

अर्थ—वादीसे काला लाल और कठिन ऐसा फूल जाय, उसको परिपोटक
कहते है ॥

यत्न ।

जीवनीयस्यकक्केनतैलदुग्धेनपाचयेत् ।

चिकित्सितेनतैलेनहृत्तास्रपरिपोटकम् ॥

अर्थ—परिपोटकका प्रथम रुधिर निकालके फिर जीवनीय गणका फल्क
दूध और तेल इनको एकत्र करके पचावे, इस तेलको कानमें डाले, तो परि-
पोटक शांति होय ॥

शतावरी तैल ।

शतावरीवाजिगंधापयस्यैरंडवीजकैः ।

तैलंविपक्वंसक्षीरंपालीसंवर्धयेत्सुखम् ॥

अर्थ—शतावर, असगंध, दहीका जल, अंडी इनके फल्कमें दूध और तेल
डालके पचावे, यह कर्णपालीको सुखपूर्वक बढावे ॥

उत्पात ।

गुर्वाभरणसंयोगात्ताण्डवाद्धर्षणादपि । शोथःपाल्यांभवेच्छया
वोदाहपाकरुजान्वितः । रक्तोवारक्तपित्ताभ्यामुत्पातःसगदोमतः ॥

अर्थ—कानमें भारी आभरण (गहना) पहननेसे, अथवा चोटके लगनेसे
अथवा कानको खींचनेसे, रक्तपित्त कुपित होकर कानकी पालीमें हरा, नीला,
अथवा लाल सूजन होय उसमें दाह होवे, पीडा होवे और रक्तवहे, इस
रोगको उत्पात कहते हैं ॥

उत्पातकी चिकित्सा ।

शीतैर्जलैर्जलौकाभिरुत्पातंसमुपाचरेत् ॥

अर्थ—जीतल जल और जोखका लगाना, इनसे उत्पात रोगपर चिकित्सा करे।

उन्मथकके लक्षण ।

कर्णबलाद्धर्षयतःपाल्यांवायुःप्रकुप्यति ॥ सकफंगृह्यकुरुतेस
शोफस्तब्धवेदनम् । उन्मथकःसकंडूकोविकारःकफवातजः ॥

अर्थ—कानको बलपूर्वक बढानेसे पालीमें (लौरमें) वायु कुपित होकर कफको
संग लेकर कठिन तथा मंद पीडा युक्त सूजनको प्रगट करे, उसमें खुजली
चले, इस कफवातजन्य विकारको उन्मथक कहते हैं ॥

जीवनीय तैल ।

जीवन्त्याचाश्वगंधार्कवाकुचीबीजसैधवैः ॥ हलिनीसुरसाभ्यांच
गोधाकंकवसान्वितम् । तैलंविपक्वमभ्यंगादुन्मथंनशयेद्भ्रुवम् ॥

अर्थ—जीवन्ती, असगंध, आक, बावचीके बीज सैधानिमक कलियारी
तुलसी और गोह, तथा कंक पक्षीकी चर्बी और तैल इनको एकत्र करे इसकी
मालिस करनेसे उन्मथक रोग नष्ट होय ॥

दुःखवर्द्धन ।

संवर्ध्यमानेदुर्विद्धेकंडूदाहरुजान्वितः ।

शोफोभवतिपाकश्चत्रिदोषोदुःखवर्धनः ॥

अर्थ—दृष्टरीति करके कानको छेदनेसे, तथा बढानेसे, खुजली दाह पीडा
युक्त ऐसी सूजन होय, वह पकजाय उसको दुःखवर्द्धन कहते हैं ॥

दुःखवर्धनकी चिकित्सा ।

दुःखवर्धनकंसिक्त्वाजंम्ब्वाम्राश्वत्थपत्रजैः ।

काथैस्तैलेनसुस्निग्धंतडूर्णैश्चावधूलयेत् ॥

अर्थ—जामुन आंव और पीपल इनके काठेसे सिंचन करके फिर तेल और स्निग्ध, चूर्ण ऊपर डाले ॥

परिलेहीके लक्षण ।

कफासृक्कमिसंभूतःसविसर्पत्रितस्ततः ।

लिहेश्शङ्कुलीपालीपरिलेहीत्यसौस्मृतः ॥

अर्थ—कफ रक्त कृमिसे उत्पन्न भई तथा सर्वत्र विचरनेवाली ऐसी जो सृजन कानकी पालीमें होय, वो कानकीपालीको खाया जाय, अर्थात् उसका मांस झरने लगे, उसको परिलेही कहते हैं ॥

मतांतर ।

कफासृक्कमयःकुद्धाःसर्पपाभाविसर्पिणः ॥ कुर्वन्तिपिटिकाः

पाल्यांकंडूदाहरुजान्विताः । लिह्यात्सशङ्कुलीपालीपरिलेही

सचस्मृतः ॥

अर्थ—कफ, रुधिर, कृमि, कुपित होनेसे कर्णलतामें सरसोंके सहस्र फेलनेवाली पिटिका उत्पन्न होजाती है और इनमें कंडू दाह, पीडा होजाती है ऐसे होनेसे शङ्कुली सहित कर्णपालीको ये पिटिका खाजाती है—इसको परिलेही कहते हैं ॥

परिलेहीकी चिकित्सा ।

बहुशोगोमयैस्तप्तस्वेदितंपरिलेहितम् ।

घनसारैःसमालिंपेदजामूत्रेणकल्कितैः ॥

अर्थ—परिलेहीको बारबार सेक करके पसीने निकाले धोयडाले, फिर बकराके मूत्रमें चंदन घिसके लेप करे ॥

असाध्यकर्णरोग निदान ।

मूर्च्छादाहोज्वरःकासःकुमोथवमथुस्तथा ।

उपद्रवाःकर्णशूलेभवंत्येतेमरिष्यतः ॥

अर्थ—मूर्च्छा, दाह, ज्वर, कास, ग्लानि, वमन ये उपद्रव जिस कर्णशूलमें हों वह असाध्य कहना ॥

कर्णरोग पथ्य ।

स्वेदोविरेकोवमनंनस्यंधूमः शिराव्यथः । गोधूमाः शालयो

मुद्गायवाश्चप्रतनंहविः । लवौमयूरोहरिणस्तित्तिरिर्वनकुक्कु
टः ॥ पटोलंशिथुवार्ताकंसुनिपण्णंकठिल्लकम् । रसायनानि
सर्वाणिब्रह्मचर्यमभापणम् ॥ उपयुक्तंयथादोषामिदंकर्णामये
हितम् ॥

अर्थ—स्वेदन, विरेचन, वमन, नास, धुआ, नसका वेधना, गेहूँ, चावल, मूँग,
जौ, पुराना घी, लवा, मोर, हरिण, तीतर, वनमुर्गा, परवर, सर्हिजना, बै-
गन, विषखपरेका साग, करैला और सब रसायन वस्तु, ब्रह्मचर्य्य और न
बोलना, दोषके अनुसार ये सब कर्णरोगमे पथ्य है ॥

कर्णरोगमें अपथ्य ।

दंतकाष्ठंशिरःस्नानंव्यायामंश्चेप्मलंगुरु ।

कंडूयनंतुपारंचकर्णरोगीपरित्यजेत् ॥

अर्थ—दँतून करना, शिरधोना, कसरत, कफ करनेवाला भोजन, भारी
भोजन, खाजकराना, ठढ, इनको कर्णरोगवाला त्याग देवे ॥

इति श्रीबृहन्निघट्टनामक कर्णरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

नासारोग ।



पीनसनिदान ।

आनह्यतेयस्यविशुष्यतेचप्रक्लिद्यतेधूप्यतिचैवनासा । नवेत्ति
योगंधरसांश्चजंतुर्जुष्टंयस्येत्यसत्तुपीनसेन । तंचानिलश्चेप्म
भवंविकारंभ्रूयात्प्रतिश्यायसमानलिगम् ॥

अर्थ—जिसकी नाक रुकजाय, वातशोषित कफसे नाक भीतरसे सूखीसी
रहे, गीली रहे, धुआंसा निकले, जिसकी नाकमे सुगंधि दुर्गंध मिष्टरसादि-
कर्की गंधि मालूम न हो, उसके पीनस प्रगट भई जाननी, इस वातजन्य
विकारको प्रतिश्याय (पीनस) कहते है ॥

संप्राप्ति ।

अवश्यायानिलरुजोभापातिस्वप्नजागरैः । निर्वात्युच्चोपधाने
नपीतेनान्येनवारिणा ॥ अत्यंबुपानाद्धमण्डलाद्दीवाप्पग्रहादि
भिः । क्रुद्धावातोल्बणादोपानासायांसुतरांगताः ॥

तन्नासिकापाकमिति व्यवस्येद्विक्रेदकोथावथवापियत्र ॥

अर्थ—जिसकी नाकमें पित्त दूषित होकर फुंसी प्रगटकरे और नाकभीतरसे पकजाय, उसको नासिकापाक कहते हैं इसमें नाकसे राधबहं ॥

चिकित्सा ।

नासापाकेपित्तनाशविधानंकार्यैसर्वैवाह्यमभ्यंतरंच ।

हरेद्रक्तक्षीरवृक्षत्वचश्चयोज्याःसेकेसघृताश्चप्रलेपाः ॥

अर्थ—नासापाक होनेसे सर्व पित्तनाशक चिकित्सा करनी और बाहरसे तथा भीतरसे रुधिर निकालना तथा सेकके विषयमें क्षीर वृक्षोंकी छालोंके काठे और घृतयुक्त लेप देवे ॥

सर्जकपाय घृत ।

सर्जार्जुनोदुंबरवत्सकानांत्वचाकपायैःपरिधावनेन ।

कपायकल्कैरपिचेभिरेवसिद्धंघृतंघ्राणविपाकनाशि ॥

अर्थ—राल, कोहपृष्ठ, गूलर, कड़ा, इनकी छालका काठा करके उससे नासापाकको घोंवे तथा इन्हीं पदार्थोंका काठा अथवा कल्कमें घृत सिद्ध करे तो नासापाकको नाशकरे ॥

व्योपादि गुटी ।

व्योपाचित्रकतालीसतिन्तिंडीचाम्लवेतसम् । सचव्याजाजितु

ल्यांशमेलत्त्वक्पत्रपादिकम् ॥ व्योपादिकमिदंचूर्णपुराणगु

डमिश्रितम् । पीनसश्वासकासग्रहचिस्वरकरंपरम् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रकभी छाल, तालीसपत्र, इमली, अमल वेत, चव्य, जीरा ये समान भाग लेवे, तथा इलायची, दालचीनी, पत्रज ये चतुर्थांश, इनके चूर्णको पुराने गुडमें मिलायके गौली बनायले तो पीनस, श्वास, खाँसी इनको नाशकरे तथा रुचि उत्पन्न करे ॥

कदफलादिचूर्ण ।

कदफलंपौष्करंगुंगोव्योपंयासश्चकारवी ॥ एपांचूर्णकपायंतु

दद्यादाद्रकजैरसैः । पीनसेस्वरभेदेचतमकेसहलीमके ॥

अर्थ—कायफल, पुहकरमूल, कांकडासिंगो, सोंठ, मिरच, पीपल और सोंफ इनका काठा अथवा चूर्ण करके अदरकके रससे पीनस, स्वरभंग, तमक श्वास हलीमक, संनिपात, फफ, वात, खाँसी और श्वास इनपर देना उत्तम है ॥

।।

पाठादितैल ।

पाठाद्विरजनीमूर्वापिप्पलीजातिपल्लवैः ॥

एभिश्चतैलंसंसिद्धंनस्यतःपीनसापहम् ॥

अर्थ—पाठ, हलदी, दारुहलदी, मूर्वा, पीपल इनका काढा चमेलीके पत्तोंका रस, इनमें तेल सिद्ध करके उसकी नस्य देवे, यह पीनसको नष्ट करे ॥

पूररक्तके लक्षण ।

दोषैर्विदग्धैरथवापिजंतोर्ललाटदेशेभिहतस्यतैस्तैः ।

नासास्रवेत्पूयमसृग्विमिश्रंतंपूररक्तंप्रवदंतिरोगम् ॥

अर्थ—दोष दुष्ट होनेसे अथवा कपालमें चोट लगनेसे नाकमेंसे राध बहे और रुधिरवहे इस रोगको पूररक्त कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

पूयास्ररक्तपित्तघ्नाःकपायानावनानिच ।

पाकदाहादिरोगेषुशीतलेपादिकाःक्रियाः ॥

अर्थ—पूयास्रयुक्त नासारोगपर रक्तपित्तनाशक ऐसे काय, नस्य, इत्यादिक उपचार करे तथा पाक दाह ये उत्पन्न होनेसे शीतल लेप, सेक, इत्यादिक क्रिया करे ॥

पद्मविदुष्ट । १

भृंगलवंगमधुकंचकोष्ठसनागरंगोघृतमिश्रितंच ।

पद्मविदुनास्यास्थिगतंचपीनसंशिरोगतंरोगशतंनिहंति ॥

अर्थ—भांगरा, लांग, मुलहठी, कूठ और सोठ इनके काठमें तेल सिद्ध करके उसकी नस्य देवे तो अस्थिगत, तथा शिरोगत पित्त रोगोंको नाश करके और भी सैकड़ों रोगोंको नाश करे ॥

कलिगादि अवपीडन ।

कलिंगहिंगुमरिचंलाक्षास्वरसकट्फलैः ।

कुष्ठोत्राशियुजंतुप्रैरवपीडःप्रशस्यते ॥

अर्थ—कूडाकीछाल, हींग, मिरच, लाखकाशीरा, कायफल, कूठ, वच और चायविडंग, इनका कल्क नाकमें निचोडे तो पूररक्त नासिकाका रोग दूर होय ॥

क्षव्यू ।

घ्राणाश्रितेर्मर्मांशंप्रदुष्टोयस्यानिलोनासिकयानिरेति ।

कफानुयातोबहुशोऽतिशब्दंतरोगमाहुःक्ष्वथुंविधिज्ञाः ॥

अर्थ-नासिकाभ्रित मर्मके (शृंगाटक मर्म) के विषे वायु दुष्ट होकर कफ-सहित भारी शब्दको नासिकाके बाहर निकाले, उसको क्ष्वथु (छीक) कहते हैं ॥
क्ष्वथुचिन्तिता ।

घृतगुग्गुलुमिश्रस्यसिक्थकस्यप्रयत्नतः ।

धूमःक्ष्वथुरोगघ्नोभ्रंशथुन्नश्चनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-घी, गुग्गुल और मौम, इनकी धूनी देवे, तो क्ष्वथू कहिये छीक और भ्रंशथु इन रोगोंका नाश करे ॥

शुंठीघृत ।

शुंठीकुप्टकणाविल्वद्राक्षाकल्ककपायवत् ।

तैलंपक्वमथाज्यंवानस्यात्क्ष्वथुनाशनम् ॥

अर्थ-सोंठ, कूठ, पीपल, बेलगिरी, दाख इनका कल्क अथवा काठमें तेल अथवा घी मिलायके सिद्ध करे इसकी नस्य देनेसे क्ष्वथु रोगको नाश करे ॥
आगंतुक क्ष्वथु ।

तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतोवाभावान्कटूनर्कनिरीक्षणाद्वा ।

सूत्रादिभिर्वातरुणास्थिमर्मण्युद्धाटितेऽन्यःक्ष्वथुर्निरेति ॥

अर्थ-तीखे राई, आदि पदार्थ खानेसे, अथवा कटुवा खानेसे मिरच आदि तीखे वस्तुओंके सूंघनेसे, सूर्यके देखनेसे, अथवा कपडेकी बत्ती बनाकर नाकमें तरुणास्थि मर्म (फणा) में लगानेसे, आगंतुज क्ष्वथु (छीक) आती है आगंतुज और दोपज छीक एकही है ॥

भ्रंशथु ।

प्रभ्रश्यतेनासिकयाहियस्यसांद्रोविदग्धोलवणःकफश्च ।

प्राक्संचितोमूर्द्धनिसूर्यतप्ततंभ्रंशथुंव्याधिमुदाहरंति ॥

अर्थ-सूर्यकी गरमी करके मस्तक तप्त होनेसे पूर्व संचित भया विदग्ध गाढा खारी ऐसा कफ नाकसे गिरि उस व्याधिको भ्रंशथु रोग कहते हैं ॥

पाठांतरम् ।

प्रभ्रस्यतेनासिकयातुयस्यसांद्रोविदग्धोलवणःकफस्तु ।

प्राक्संचितोमूर्धनिसंप्रतप्तस्तंभ्रंशथुंव्याधिमुदाहरंति ॥

अर्थ-जिस मनुष्यकी मस्तकमें गाढा विदग्ध खारी कफ पहले संचित होकर नासिका द्वारा गरम २ निकले उसको भ्रंशथु व्याधि कहते हैं ॥

दीप्तनासारोग ।

घ्राणेभृशंदाहसमन्वितेतुविनिश्चरेद्धूमइवेहवायुः ।

नानाप्रदीप्तेवचयस्यजंतोर्व्याधितुतं दीप्तमुदाहरति ॥

अर्थ—नाक अत्यन्त दाहयुक्त होनेसे उसमें वायु धुआँके सदृश विचरे और नाक प्रदीप्त होवे अर्थात् गरम होवे इस रोगको दीप्त कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

नस्यंहितंनिवरसांजनाभ्यां दीप्तंशिरःस्वेदनमधुपस्तु ।

नस्येकृतेक्षीरजलावसेकाच्छंसंतिभुञ्जीतचमुद्गयूपैः ॥

अर्थ—दीप्तनामक नासा रोगपर नींबूका रस, रसोत इनकी नस्य करे, तथा मस्तकको थोडा सेक देवे, नस्य देनेके पश्चात् दूध और जल इनको एकत्र करके सिंचन करे, तथा मूंगके यूषकी पथ्य देय, इस प्रकार कहा है ॥

प्रतीनाहनासारोग ।

उच्छ्वासमार्गतुकफःसवातोरुंध्यात्प्रतीनाहमुदाहरेत्तम् ॥

अर्थ—वायुसाहित कफ श्वासके मार्गको बंद करे, तब नाकका स्वर अच्छी रीतिसे चले नहीं, इसको प्रतिनाह कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

नासावनाहेकर्तव्यंपानंगव्यस्यसार्पिपः ॥

अर्थ—प्रतिनाह व्याधिपर गौका धी पीवे ॥

नासास्त्रावके लक्षण ।

घ्राणाद्धनःपीतसितस्तनुर्वादोपःस्रवेत्स्त्रावमुदाहरेत्तम् ॥

अर्थ—नाकसे गाढ पीला अथवा सपेद पतला दौष (कफ) स्रवे, उसको स्त्राव कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

नासास्त्रावेघ्राणयोश्चूर्णमुक्तंनान्द्र्यादेयंयेषपीडाश्चपथ्याः ।

तीक्ष्णान्धूमान्देवदार्वग्निकाभ्यांमांसंचाजपथ्यमत्रादिशंतिः ॥

अर्थ—जो नासा रोगपर चूर्ण तथा अवपीडन, पथ्य, तीक्ष्ण धूम इत्यादिक उपचार कहेहैं वो सब नासास्त्राव पर करे ॥

नासापरिशोष ।

घ्राणाश्रितेस्रोतसिमारुतेनगाढंप्रतप्तेपरिशोषितेच ।

कृच्छ्राच्छसेदूर्ध्वमधश्चजंतुर्यस्मिन्सनासापरिशोपउक्तः ॥

अर्थ—वायुसे नासिकाका द्वार अत्यन्त तप्त होकर सूख जाय, तब मनुष्य वडे कष्टसे ऊपर नीचेको श्वास लेय उस रोगको नासापरिशोप कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

नासाशोपेशीरपानंससितंचप्रशस्यते ।

अर्थ—नासाशोपपर मिश्री डालकै दूध पीवे तो हितकारक होय ॥

आमपीनसलक्षण ।

शिरोगुरुत्वमरुचिर्नासास्त्रावस्तनुःस्वरः । क्षामःश्रीवेत्तथाभो
क्ष्णंआमपीनसलक्षणम् ॥ आमलिंगान्वितःश्लेष्माघनश्चाप्सु
निमज्जति । स्वरवर्णविशुद्धिश्चपक्वपीनसलक्षणम् ॥

अर्थ—शिरमें भारीपना, अन्नमें अरुचि, नासिकासे गरम २ जलका झरना आवाज कुछ मंदीहो और शरीरका कृश होना, धार २ थूकना यह आम (कच्च) पीनसके लक्षण हैं और जिस्में इसी पूर्वोक्त आम पीनसके भी लक्षण हो और कफ गाढा होगयाहो और जलमें गरनेसे दूधजाय और मुखसे साफ आवाज निकले और मुखका रंग (रुहानी) अच्छा होय तो जानना कि, यह पीनस पक गया है ॥

प्रतिशाय (सरवेमा जुकाम)

संधारणाजीर्णरजोतिभाप्यक्रोधतुर्वैपम्यशिरोभितापैः ॥ प्रजा
गरातिस्वपनांबुशीतावश्यायतोमैथुनवाप्पशोपैः । संस्त्यान
दोपेशिरसिप्रवृद्धोवायुःप्रतिश्यायमुदीरयेच्च ॥

अर्थ—वेगोंके रोकनेसे, अजीर्णकारक पदार्थोंके खानेसे, रज (धूल) के नासिकाके भीतर जानेसे अत्यन्त भाषण (अत्यन्त पढने) से और अत्यन्त गुस्सा करनेसे, तथा ऋतुविपर्यय अर्थात् एक ऋतुमें दूसरे ऋतुके लक्षण होनेसे, शिरोभिताप अर्थात् ग्रीष्मऋतुमें शिरसे अत्यन्त धूप सेवन करनेसे, रात्रिमें जागनेसे, दिनमें विशेष मोनेसे और शीत पदार्थोंके अधिक सेवन करनेसे, इसी तरह फोहरके खानेसे अत्यन्त मैथुन करनेसे, पसीना अथवा आंशुओंके रुकनेसे, शिरमें दोष इकट्ठे हों फिर वायु घृद्धिगत होकर प्रतिश्यायपरोग पीनस उत्पन्न करे ये कारण सद्योजनक अर्थात् तत्काल पीनस करनेवालेहै ॥

तथा निदान ।

चयंगतामूर्द्धनिमारुतादयःपृथक्समस्ताश्चतथैवशोणितम् ।

प्रकुप्यमानाविविधैःप्रकोपनैस्ततःप्रतिश्यायकराभवन्ति ॥

अर्थ-मस्तकमे पृथक् वातादि दोष तथा सर्व दोष उसी प्रकार रुधिर संचय होकर अनेक प्रकारके कारणोंसे (बलवानसे घेर करना दिवास्वापादि) कुपित होकर प्रतिश्याय उत्पन्न करे ॥

प्रतिश्यायके पूर्वरूप ।

क्ष्वप्रवृत्तिःशिरसोऽतिपूर्णतास्तंभोगमर्दःपरिहृष्टरोमता ॥

उपद्रवाश्चाप्यपरेपृथग्विधानृणांप्रतिश्यायपुरःसराःस्मृताः ॥

अर्थ-छीकका आना, मस्तकका भारी होना अंगोंका जिकड जाना, तथा अंगोंका टूटना, रोमांच अवमंथसे आदिले और धूमादिक (१) तत्काल होनेवाले उपद्रव होय जब पीनस होनहार होतीहै तब ये लक्षण होतेहै ॥

चिकित्सा ।

प्रतिश्यायेषुसर्वेषुगृह्णवातविवर्जितम् ।

वस्त्रेणगुरुणोष्णेनशिरसोवेष्टनंहितम् ॥

अर्थ-संपूर्ण प्रतिश्याय रोगपर निर्वात स्थानमे रहे तथा भारी गरम ऐसे वस्त्रको मस्तकपर बांधे तो हितकारी होय ॥

वालमूलकयूप ।

वालमूलकयोर्यूपःकुलित्येत्यश्चपूजितः ।

स्वेदोष्णंचहिमंभोज्यंपाचनायप्रशस्यते ॥

अर्थ-प्रतिश्याय व्याधिपर कोमल मूलीका और कुलथीका यूप पसीने निकालना उष्ण ऐसे भोजन शीतल जलका पीना ये उत्तम है ॥

पिप्पल्यादि विरेचन ।

ततःपक्वंकफंज्ञात्वाहरेच्छीर्षविरेचनैः॥पिप्पल्यःशिशुबीजानि

विडंगमरिचानिच । अवपीडःप्रशस्तोयंप्रतिश्यायनिवारणः॥

अर्थ-कफ पकगया होयतो मस्तकरेचन देकर उसकफको निकाल डाले और पीपल, सहिजनके बीज, वायविडंग, मिरच, इनका अवपीडन देवे यह प्रतिश्याय नाशकरनेके विषयमे उत्तम है ॥

वातिक प्रतिश्यायके लक्षण ।

आनद्धापिहितानासातनुस्त्रावप्रसेकिनी ॥ गलताल्वोष्ठशोपश्चानि
स्तौदःशंखयोरपि । भवेत्स्वरोपघातश्चप्रतिश्यायेऽनिलात्मजे ।

अर्थ—जिसकी नाकका मार्ग रुकजाय, आच्छादित होजाय और उसमेसे पतला पानी निकले, गला तालु होठ ये सूख जाय और धनपटी दूखे, गला बैठजाय, ये वातके पीनसके लक्षण है ॥

चिकित्सा ।

वातिकेतुप्रतिश्यायेपिवेत्सर्पियथाक्रमम् ।

पंचभिल्वणैःसिद्धंप्रथमेनगणेनच ॥

अर्थ—वातजनित प्रतिश्याय पर पंचलवणसे अथवा पंचमूलसे सिद्ध करा ऐसा धी देवे ॥

पित्तनासारोग ।

उष्णःसपीतकःस्त्रावोग्राणात्स्त्रवतिपैत्तिके । कृशोतिपांडुःसं

ततोभवेदुष्णाभिपीडितः । सधूममग्निहसावमतीवचनासया ॥

अर्थ—जिसकी नाकसे दाह और पीला स्राव होवे, वह मनुष्य कृश और पीला होजाय उसका देह गरम रहे, नाकसे आम्रिके समान धुआं निकले, यह पित्तकी पीनसके लक्षण है ॥

चिकित्सा ।

हितंपित्तप्रतिश्यायेपाचनार्थघृतंपयः ।

शृंगवेरेणपयसाशृंगवेरमथापिवा ॥

अर्थ—पित्तसे उत्पन्न प्रतिश्यायको पाचन करनेको अदरखका रस, दूध, घी पीवे अथवा दूधमें अदरखका रस डालके पीये ॥

कफनासारोग ।

ग्राणात्कफःकफकृतेश्चेतशीतःध्रुवेद्बहुःशुक्लावभासःशूनाक्षो

भवेद्गुरुशिरानरः । कंठताल्वोष्ठशिरसांकंठभिरभिपीडितः ॥

अर्थ—नाकसे सफेद पीला बहुत कफ गिरे, उसकी देह सफेद होजाय, नेत्रोंके ऊपर मूजन होय और मस्तक भारी रहे और गला तालु होठ और शिर इनमे गुजली विशेष चले ये कफकी पीनसके लक्षण है ॥

१ पूर्ण रूपानि दृश्यन्ते प्रतिश्याये मविष्यन्ति । प्राग्भूसायनं शेषवत्पुष्पाट्टं दालमुनं ॥ कच्छार्थेनो मुख्यात्
भिरस्या पूर्णे तथा ॥

चिकित्सा ।

कफजेसर्पिपास्निग्धंतिलमांपविपक्वया ।

यवाग्वापाययित्वातुश्लेष्मघ्नंक्रममाचरेत् ॥

अर्थ—कफजनित नासा रोगपर प्रथम घृतसे स्निग्ध करके फिर तिल उड़द इनसे सिद्ध करी यवागू पिवायकै कफनाशक औषध करे ॥

धूमपानवर्ती ।

दावीगुंद्रनिकुंभैश्चकिणिह्यासरलेनच ।

वर्तयोत्रकृतायोज्याधूमपानंयथाविधि ॥

अर्थ—दारुहलदी, गोंद, दंती, आंगा और राल, इनकी बत्ती बनायके यथाविधि धूमपान करे ॥

संनिपातनासारोग ।

भूत्वाभूत्वाप्रतिश्यायोयस्याकस्मान्निवर्तते ।

संपक्वोवाप्यपक्वोवासतुसर्वंभवःस्मृतः ॥

अर्थ—जिसकी नाकमें पूर्वोक्त कहे सो सर्व लक्षण मिलें, तथा वह पीनस वारंवार होकर पककर अथवा बिना पके नष्ट हो जाय, उसको सन्निपातकी पीनस कहते हैं यह विदेह आचार्यक मतसे असाध्य है ॥

दुष्टप्रतीश्याय ।

प्रकृद्यतेपुनर्नासापुनश्चपरिशुष्यति । पुनरानह्यतेचापिपुन-

र्वित्रीयतेतथा ॥ निश्वासोवातिदुर्गंधोनरोगंधनवेत्तिच । एवंदु-

ष्टप्रतिश्यायंजानीयात्कृच्छ्रसाधनम् ॥

अर्थ—वारंवार जिसकी नाक झडा करे और सूख जाय और नाकसे अच्छी तरह श्वास नहीं आवे, नाक रुकजाय, और फिर खुल जाय, श्वास लेनेमें वास आवे, तथा उस रोगीकी सुगंध दुर्गंधका ज्ञान जाता रहे, ऐसे लक्षण होनेसे इसको दुष्ट प्रतिश्याय कहते हैं यह कष्टसे साध्य होती है यह पीनस पांच पीनसोंके अंतर्गत जाननी इनकाही भेद है यह छठी नहीं है ॥

चित्रकहरितकी ।

चत्वार्यत्रशतानिचित्रकजटायुकृपंचमूलामृताधात्रीणामुदक

१ नृणां दुष्टप्रतिश्यायः सर्वज्ञश्च न सिध्यति इति विदेह ॥२७८ः क्षतगुदस्तच्छः इतिवर्णकफेरिस । सक्रासः स' इति हेप उरोधासः सपीनसः ॥ अथ पित्तप्रतिश्यायार्त्तगान्धपि बोद्धव्यानि तुल्यात् पित्तरक्तयोः ॥

मणोत्रिभिरपांद्रोणेनचक्वाथयेत् । पादस्थेकथनेगुडस्यचशतं
पथ्याढकेनान्वितंपक्तव्यंशृतशीतलेचमधुनःप्रंस्थार्धमात्रंक्षि
पेत् ॥ व्योपस्यत्रिसुगंधिकस्यचपलान्यत्रैवपट्प्रक्षिपेत्क्षार
स्यार्धपलंरसायनमिदंसंसेव्यतेसर्वदा । शोपश्वासमलवकाश
वमथुश्लेष्मप्रतिश्यायिभिःक्षीणोरःक्षतहिकभिःकफशिरोरुग्भिः
प्रनष्टाग्निभिः ॥

अर्थ-चित्रककी छाल, पंचमूल, खिरौटीकी जड़ और गिलोय, इनका
१६०० तोले लेकर १०२४ जलमें डालके काढा करे जब चतुर्याश शेष रहे
तब उतारके उसमें ४०० तोले गुड और हरड, १०२४ तोले डालके पचावे
जब शीतल होजावे तब ३२ तोले सहत और त्रिकुटा, त्रिसुगंध ये २४ तोले
और जवास्वार दो तोले डाले यह हरीतक रसायन, शोप, श्वास, मलवद्धता,
वांति, कफ, पीनस, क्षीणता, उरःक्षत, हिचकी, कफजनित मस्तक रोग,
और मंदाग्नि इनमें दैवे ॥

हिंवादितैल ।

हिंगुव्योपविडंगकट्फलवचारुक्तीक्षणगंधैयुंतैलाक्षाश्वेतपुन
नैवाब्दकुटजैःपुष्पोद्भवैःसौरसैः ॥ इत्येभिःकटुतैलमेतदनलेमं
देसमूत्रंशृतंपीतंनासिकयायथाविधिभवेन्नासामयिभ्योहितम् ॥

अर्थ-हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, कायफल, वच, कूठ, काला
सहिजना, लाख, सपेद पुनर्नवा, नागरमोथा, इन्द्रजो और लौंग इनके फाँटेमें
अथवा बल्कमें सरसोंका तेल और गोमूत्र डालके मंदाग्नि पर पचावे जब
सिद्ध हो जावे तब यथाविधिनाकमें टपकावे तो नासारोगपर हितकारक होय ।

पीनसका सामान्य यत्न ।

रक्तपित्तानिशोथश्चतथाशास्यवुदानिच ।

नासिकायांस्थुरेतेपांस्वंस्वंकुर्व्याच्चिकित्सितम् ॥

अर्थ-रक्तपित्त, सूजन, बवासीर और अर्बुद ये नासिकामें होते हैं. इनपर
रोगोक्त चिकित्सा करनी चाहिये ॥

-गृहधूममादितैल ।

गृहधूमकणादारुक्षारनस्नाह्वसंधवैः ।

सिद्धंशिखरिवीजश्चतलनासाशैसाहितम् ॥

अर्थ—घरका धूआं, पीपल, देवदारु, जवाखार, नख सुगंध द्रव्य, सैधा-
निमक और आंगोके बीज, इनसे ते उ सिद्ध करे तो नासार्शपर हितकारक है ॥

करवीरादि तेल ।

रक्तकरवीरपुष्पज्वातथाचमल्लिकायाः ।

एतैःसमंतिलतैलनासाशौनाशनं परम् ॥

अर्थ—लाल कनेरके फूल, चमेलीके फूल, तथा मालतीके फूल, इनसे सिद्ध
करा तिलोंका तेल नासार्श अर्थात् नाककी बवासीरको दूर करे ॥

नासाशोप ।

नाशाशोपेशीरसर्पिःप्रधानंतैलंसिद्धंचाणुतैलननस्ये ।

सर्पिःपानंभोजनंजांगलैश्चस्नेहस्वेदैःसैहिकश्चात्रधूमः ॥

अर्थ—नासाशोप होनेसे दूध, घी, तेल ये प्रधान उपचार है, तथा अणु
तेलकी नस्य, घृतपान, जंगली जीवोंके मांसयुक्त भोजन तथा स्नेहयुक्त स्वेदन
और स्नेयुक्त धूम ये उपचार हितकारी है ॥

रक्तप्रतिश्यायके लक्षण ।

रक्तजेतुप्रतिश्यायेरक्तस्रावःप्रवर्तते । ताम्राक्षश्चभवेजंतुरुरो

घातप्रपीडितः ॥ दुर्गधोच्छ्वासवदनोगंधानपिनवेत्तिष्ठः ॥

अर्थ—रुधिरकी पीनसमें नाकसे रुधिर गिरे, नेत्र लाल होय, उरःक्षतकी
पीडाके सदृश पीडा होय, श्वास अथवा मुखमें वास आवै, दुर्गधिका ज्ञान
नहीं होय, उरःक्षतके लक्षण ग्रंथान्तरमें लिखे हैं सो जानने, किसी पुस्तकमें
' पित्तप्रतिश्यायकृतैर्लिगैश्चापिसमन्वितः ' ऐसा पाठ है इसका अर्थ यह है
कि जिसमें पित्तकी पीनसके लक्षण मिलते हों ॥

चिकित्सा ।

रक्तापित्तोत्थयोःपयंसर्पिर्मधुकरैःशृतम् ।

परिपेकान्प्रदेहांश्चकुर्यादपिचशीतलान् ॥

अर्थ—रक्त और पित्त, इनसे उत्पन्न पीनस पर भांगरोंके काठमें सिद्ध करे
इस पीकी पीवे, तथा शातल परिपेक और प्रदेह करे ॥

घात्रोलप ।

सर्पिषाभ्रष्टयाधान्याशिरसोलपतःक्षणात् ।

नासायांसवृत्तंचरुधिरंचविनश्यति ॥

अर्थ—धीमें आँवलोंको भूनके फिर पीसके मस्तक पर लेप करे तो नाकसे रुधिरका गिरना नष्ट होय ॥

प्रतिश्यायकासामान्ययत्न ।

विडंगसंधवांहिंगुगुगुलुःसमनःशिलः । प्रतिश्यायेवचायुक्तं
सक्तुधूमंपिवेत्रः ॥ एतच्चूर्णमाघ्रातंप्रतिश्यायंविनाशयेत् ॥

अर्थ—घच और जों, धूम पीके फिर वायविडंग, सैधानिमक ह्रांग, गूगल और मनसिल, इनका चूर्ण मूँधे तो प्रतिश्यायका नाश करे ॥

सक्तुधूम ।

घृततैलसमायुक्तंसक्तुधूमंपिवेत्रः ।

सधूमःस्यात्प्रतिश्यायकासहिक्काहरःपरः ॥

अर्थ—धी, तेल इनसे युक्त सक्तुका धूम पीवे तो पीनस, खाँसी और हिचकी इनको नाश करे ॥

धूम तथा चूर्ण ।

प्रतिश्यायेपिवेद्धूमंसर्वगव्यसमायुतम् ।

चातुर्जातकचूर्णवाग्नेयंवाकृष्णजीरकम् ॥

अर्थ—संपूर्ण पीनसोंपर गौके घृतसे युक्त द्रव्यका धूम पीवे, चातुर्जात अथवा कालाजीरा इनके चूर्णको मूँधे ॥

चूना और नोसहर ।

प्रतिश्यायेपुसशिरःपीडेपुनवसागरम् । समानंकलिकाचूर्णैसू

क्ष्मंसंचूर्णितंद्वयम् ॥ गुंजामात्रंतुतच्चूर्णैरनस्यप्रथमनंचरेत् ॥

नश्यंत्यनेनयत्नेनप्रतिश्यायशिरोरुजः ॥

अर्थ—मस्तकशूलयुक्त प्रतिश्याय होनेसे नोसहर, तथा चूनेको समान भागले एकत्र कर इनको खरल करे, इसमेंने एक रत्ती चूर्ण नाकमें डाले, तो पीनस और मस्तकशूल नष्ट होवे ॥

सूपनेकी पोटली ।

सवचाचूर्णमाघ्रायवाससापोटलीकृतम् ।

कारवीवस्त्रवद्धांवाप्रतिश्यायमपोहरेत् ॥

अर्थ—घचका अथवा अजमायनका चूर्ण करके दसपाँ फण्डेमें चौधफ सूपनेको देवे, तो पीनसका नाश करे ॥

शक्यादि चूर्ण ।

शठीतामलकोव्योपचूर्णसर्पिर्गुंडान्वितम् ।

हरेद्धोरप्रतिश्यायंपार्श्वहृद्द्विस्तिशूलनुत् ॥

अर्थ—रुचूर, हरड, सोंठ, मिर्च, पीपल इनके चूर्णको धी और गुडमें मिलायके भक्षण करे तो महाघोरपीनस, पार्श्वशूल, हृदयशूल और वस्तिशूल इनको नाश करे ॥

पुटपक्वजयापत्रतैलसैधवसंयुतम् !

प्रतिश्यायेपुसर्वेषुशीलितंपरमौषधम् ॥

अर्थ—जयानाम (अरनी) के पत्तोंको पुटपाकमें भूनके उनमें तेल और सैधानिमक डालके संपूर्ण प्रतिश्याय पर भक्षणार्थ देवे यह परम उत्कृष्ट औषध है ॥

ससाध्यलक्षण ।

सर्वेवप्रतिश्यायानरस्याप्रतिकारिणः ॥ दुष्टतांयांतिकालेन

तदाऽसाध्याभवंतिच । मूर्च्छति कृमयश्चात्रश्वेताःस्निग्धास्त

थाऽणवः । कृमिजोयःशिरारोगस्तुल्यंतेनास्यलक्षणम् ॥

अर्थ—सर्व पीनस ओषधी न करनेसे असाध्य होताहै, इसमें नाकमें कीडा पडजाय वो कृमि सपेद चिकने और बारीक होताहै, कृमिज शिरारोगोंके सदृश लक्षण होंय, कृमिज शिरारोगके लक्षण शिरारोगमें कह आये हैं ॥

प्रतिश्याय और विमारोंकोभी करता है उनको कहते है ।

वाधिर्यमांघ्रमघ्रत्वंगोरांश्वनयनामयान् ।

शोथाग्निसादकासादीन्वृद्धाःकुर्वतिपीनसाः ॥

अर्थ—पीनस बढनेसे बहरा होजाय, मंद दीये, नास आवे नहीं, भयंकर नेत्र रोग होय, सूजन मंदाग्नि खांसी इत्यादि विकार होतेहैं सुश्रुतमें नासिकाके ३१ रोग कहेहैं और इस जगह पीनससे लेकर प्रतिश्याय पर्यंत १५ रोग कहेहै बाकी १६ रोगोंकी संख्या पूर्णके वास्ते लिखते हैं ॥

अर्बुदंसप्तधाशोथाश्वत्वारोऽर्शाश्वतुर्विधम् । चतुर्विधरक्तपित

मुक्तंघ्राणेऽपितद्विदुः॥ शिरोललाटतालूनांगौरवंदोपनिद्रता ।

सारशांसांसांशुदानांचदोपक्रोपाकृतिःसमा । अर्शांसिगोस्तना

कारण्यर्बुदंकोलसन्निभम् ॥

अर्थ—सात प्रकारके अर्जुद रोग, चार प्रकारके शोथ (सूजन), चार प्रकारके अर्श और चार प्रकारके रक्तपित्त ये पूर्वोक्त कहे रोग सोलह होतेहैं ॥

वातपित्त कफ रुधिर मांस मेदकरके छः हुये और सातवां शालाक्य सिद्धांतके मतसे सन्निपातका ऐसे सात प्रकारके अर्जुद रोग हुये ॥

वातपित्त कफ सन्निपातके भेदसे चार प्रकारकी सूजन भई तथा वातपित्त कफ सन्निपातके भेदसे चारही प्रकारकी अर्श (बवासीर) और चारही प्रकारका रक्त, रक्तपित्तकी समानतासे एकही जानना, पूर्वोक्त पीनससे लेकर प्रतिशयापर्यंत १५ भये और अर्जुदादि १६ हुये ऐसे सब मिलकर नासिका रोग ३१ हुये ॥

कृमिनासाचिकित्सा ।

कृमिघ्नायेक्रमाः प्रोक्तास्तान्वैकृमिधुयोजयेत् ।

धावनानिकृमिघ्नानिभेषजानिचबुद्धिमान् ॥

अर्थ—नासाकृमिपर कृमिरोगोक्त औषध तथा कृमिनाशक औषधोंसे धोना और कृमिनाशक औषध इत्यादिक देवे ॥

रक्ताम्रस्वरसः शुद्धस्तक्रेणसहनस्यतः । तस्यपर्णानिपिष्टाचव
ध्रीयान्नासिकामुखे ॥ पतंतिकीटकाः सद्योयोगोयंत्रिदिनेहि
तः । पीनसान्मुच्यतेरोगीशतशोत्रुमितं त्विदम् ॥

अर्थ—लाल आंबका स्वरस छाँछमें डालके नस्य करे तथा उसके पत्तोंको पीसके नाकपर बाँधे ऐसे तीन दिन प्रयोग करनेसे कीड़े गिरजावे, तथा रोगी पीनससे मुक्त होय यह सैकड़ोंबार अनुभव कराहुआ है ॥

नासारोगपर पथ्य ।

स्थितिर्निवातेनिलयेप्रगाढोष्णीपधारणम् । गंडूपोलंघनंनस्यं
धूमंछर्दिशिश्राव्यथः ॥ कटुचूर्णघ्राणरन्ध्रेनिक्षिप्यत्रिःप्रवेश
नम् । स्वेदःस्नेहशिशरोऽभ्यङ्गः प्रतनायवशालयः ॥ कुलत्थ
मुद्गयोर्यूपाग्राम्याजाङ्गलजारसाः । वार्ताकंकुलकंशिष्टः कर्को
टंबालमूलकम् ॥ लगुनंदधितप्ताम्बुवारुणीचकटुत्रयम् । क
टूम्ललवणंस्निग्धमुष्णंलघुचभोजनम् ॥ नासारोगे पीनसा
दोषेव्यमेतत्सुखावहम् ॥

अर्थ-पवनरहित स्थानमें रहना, कड़ी पगड़ी बांधना, कुल्हा, लंपन, नास, धूआं, वमन, नसका वेधना, कडुआ चूर्ण नाकके छेदमें रखके तीनवार खींचना, स्वेद, स्नेह, शिरसे नहाना, पुराने जौ तथा चावल, कुल्थी और मूंगका यूप, गांवके तथा जंगली पक्षियोंके मांसका रस, बेंगन, परवर, सहिजना, कफोडा, कोमल मूली, लहसन, दही, गरम जल, मदिरा, बिकटु, कडुआ, खट्टा, नमकीन, चिकना, गरम और हलका भोजन, पीनस आदि नाकके रोगोंमें सुख देनेवाला यह गण सेवन करने योग्य है ॥

विरुद्धात्रंदिवास्वापमभिप्यन्दि गुरुणिच । स्नानंक्रोधंशकृ
मूत्रवातवेगाञ्छुचंद्रवम् ॥ भूशय्यांचप्रयत्नेननासारोगीपरि
त्यजेत् ॥

अर्थ-विरुद्धात्र, दिनमें सोना, अभिप्यन्दी तथा भारी वस्तुका सेवन, नहाना, क्रोध, मल, मूत्र तथा वातके वेगको रोकना, शोक करना, पतली वस्तुका सेवन और भूमिमें सोना ये नासिकाके रोगवाला मनुष्य यत्नसे बचावे ॥

इति श्रीआशुर्वेदोद्गायत्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे नासारोगे पथ्यापथ्याधिकारः समाप्तः ॥

नेत्ररोग ।

नेत्ररोगनिदान ।

उष्णाभितप्तस्यजलेप्रवेशादुरेक्षणात्स्वप्नविपर्ययाच्च । स्वेदा
द्रजोधूमनिपेवणाच्चच्छर्देर्विघाताद्रमनातियोगात् । द्रवात्रपा
नातिनिपेवणाच्चविण्मूत्रवातक्रमनिग्रहाच्च ॥ प्रसक्तसरोदनशो
ककोपाच्छिरोभिघातादतिमध्यपानात् । तथाऋतूनांचविपर्य
येणक्लेशाभिघातादतिमैथुनाच्च । वाष्पग्रहात्सूक्ष्मनिरीक्ष
णाच्चनेत्रेविकाराञ्जनयतिदोषाः ॥

अर्थ-गरमीसे तप्त होकर जलमें प्रवेश (स्नानादि करना ऐसा करनेसे शीतलतामें शरीर व्याप्त होकर शरीरको गरमी ऊपर चढ़कर नेत्रके तेजको पराभव करनेसे नेत्ररोग उत्पन्न होता है) दूरकी वस्तुको देखनेसे, दिनमें सोना और रात्रिमें जागनेसे नेत्रमें पसीना जानेंसे अथवा भाफ लगनेसे, अथवा नेत्रोंमें धूल जानेंसे अथवा धूआं जानेंसे, वमनके वेगको रोकनेसे, अथवा बहुत वमन (रद्द) होनेसे पतले अन्नपानके अत्यंत सेवन करनेसे,

विष्ठा मूत्र और अधोवायु इनके वेगको धीरे २ निग्रह कहिये वेग धारण करनेसे निरंतर रुदन करनेसे, शोकसे, कोपसे, मस्तकमें चोट लगनेसे, अति मद्यपान करनेसे, उसी प्रकार ऋतुके विपर्यय (अर्थात् शीतकालमें गरमी और गरमीमें शीतकाल) होनेसे, क्लेश कहिये कामादिक दुःख उससे अभिवात कहिये दुःख होनेसे अति मैथुन करनेसे अश्रुपातका वेग धारण करनेसे और सूक्ष्म पदार्थके अवलोकन करनेसे वातादि दोष नेत्रोंमें रोग पैदा करते हैं, मुश्रुतमें रोगकी संप्राप्ति इस प्रकार लिखी है ॥

नेत्ररोगकी संप्राप्ति और नेत्रका प्रमाण ।

शिरानुसारिभिर्दोषैर्विगुणैरूर्ध्वमाश्रितैः ।

जायंतेनेत्रभागेषुरोगाःपरमदारुणाः ॥

अर्थ—कुपित हुये वातादि दोष नेत्रोंकी नसोंमें प्राप्त हो नेत्रोंका भाग व्याप्त करनेसे उनमें भयंकर रोग उत्पन्न होता है, ये वात पित्त कफ रुधिर सन्निपात और आगंतुक इनसे होनेवाले ऐसे नेत्ररोग ७६ हैं ॥

नेत्रमंडलमें ७८ व्याधि ।

द्वादशव्याधयोदृष्टातथैवान्यौगदाचुभौ । कृष्णभागेतुचत्वारो
दशैकाःशुक्लभागजाः ॥ वर्त्मन्येकविंशतिस्तुपक्ष्मजौद्रौप्रकी
र्तितौ । नवसंधिषुसर्वस्मिन्नेत्रेसप्तदशोदिताः ॥ एवंनेत्रेसम
स्तास्युरष्टसप्ततिरामयाः ॥

अर्थ—दृष्टिमें होनेवाले रोग १२ हैं, तथा नेत्रके बाहर होनेवाले २ हैं, दृष्टिके कृष्ण भागमें होनेवाले रोग ४ और सफेद भागमें ११ हैं, कोपमें होनेवाले २१ और पक्ष्ममें होनेवाले २ हैं, संधिमें ९ और सर्व नेत्रमें होनेवाले रोग १७ हैं इस प्रकार सर्व नेत्र रोग ७८ हैं ॥

नेत्ररोगसंख्या ।

वाताद्दशतथापित्तात्कफाच्चैवत्रयोदश । रक्तात्पोडशविज्ञे
याःसर्वजाःपंचविंशतिः ॥ बाह्यौपुनर्द्वान्यनेरोगाःपट्सप्ततिः
स्मृताः ॥

अर्थ—नेत्रमें वात दोषसे होनेवाले रोग १० हैं, तथा पित्तसे १० और कफसे १३, रक्त दोषसे १६, त्रिदोषसे होनेवाले २५ और दृष्टि बाहर होनेवाले रोग २ इस प्रकार सब मिलकर नेत्ररोग ७६ होते हैं ॥

दृष्टिलक्षण ।

मसूरदलमात्रांतुपंचभूतप्रसादजाम् ॥

अर्थ—आधे मसूरदलके समान पंचभूत (पृथ्वी जल तेज वायु आकाशसे) प्रगट हैं, ॐ शंका—इस श्लोकमें तो मसूरदलके समान लिखा है । फिर आधे मसूरके समान ऐसा अर्थ आपने कैसे किया ॐ उत्तर—तुमने कहा सा ठीक है परंतु यह अर्थ हमने निमि आचार्यके मतसे लिखा है—यथा “पंचाभूतात्मिकादृष्टिमंसूराद्धदलोन्मिता ” इति ॥

चारपटलोके स्थान ।

तेजोजलाश्रितंवाह्यंतेज्यन्यत्पिशिताश्रितम् ।

भेदस्तृतीयंपटलमाश्रितंत्वस्थिचापरम् ॥

अर्थ—प्रथम पटल रुधिर और जलाश्रित है दूसरा पटल पिशित (मांस) के आश्रित है, तीसरा पटल (भेद) के आश्रित है, चौथापटल अस्थि (हड्डी) के आश्रित है इति । मुश्रुतमें नेत्र रोगके भेद बहुत लिखे हैं ॥

नेत्ररोगपर लंघन ।

अक्षिकुक्षिभवारोगाःप्रतिश्यायव्रणज्वराः ।

पंचैतेपंचरात्रेणरोगानश्र्यंतिलंघनात् ॥

अर्थ—नेत्र, कूख इनमें होनेवाले रोग, पीनस, व्रण, ज्वर, ये पांच रोग लंघन करनेसे पांच रात्रिमें नाश होते हैं ॥

पटूसप्ततिलौचनजाविकारास्तेपामभिष्यंदसमुद्भवानाम् ।

श्लेष्माश्रयत्वादिहलंघनंप्राक्प्रशस्यतेमुद्गरसौदनंच ॥

अर्थ—नेत्ररोग ७६ हैं उनमें अभिष्यंदसे होनेवाले कफाश्रित है इस वास्ते उनको लंघन करावे और मूंगकी दालका रस और भात भोजनमें देवे ॥

अंजनंपूरणंकाथःपानमामेनशस्यते । आचतुर्थादिनादासम

भिष्यंदेपिलौचने॥गंडूपांजननस्यादिहीनानांकफकोपतः ॥ प

ट्सप्ततिनेत्ररोगादुःसहास्युरुपेक्षिताः । सेकआश्वोतनांपिडी

चिडालस्तर्पणंतथा । पुटपाकांजनंचैभिःकल्पैर्नेत्रमुपाचरेत् ॥

अर्थ—आमधे नेत्रवहते होता चार दिन पर्यंत अंजन, पूरण, कायपान ये उपाय नकरे, परंतु तीन दिनके बाद अर्थात् चौथे दिन यही अंघ्रि और अभिष्यंदनेत्र होवे तथापि गंडूप, अंजनादि करे न करेतो कफ कृपित होकर ७६

नेत्र रोग होते हैं उनकी उपेक्षा करनेसे बहुत दुःख होय है इस वास्ते इसपर सेक आश्रोतन, पिंडी, विडाल, तर्पण, पुटपाक, अंजन इन उपचारोंसे नेत्रोंका उपचार करे तात्पर्य यह है कि कच्चे नेत्रमें यत्न न करे परंतु चौथे दिनसे पक्क संज्ञा होजातीहै इस वास्ते अवश्य चिकित्सा करे ॥

दृष्टिगत रोगकी चिकित्सा ।

वर्जयेदुपसर्गोत्थान्गंभीरान्द्वस्वसंज्ञितान् । काचांस्तुव्याप
येत्सर्वानकुलांध्यंतथैवच ॥ तिमिरंनेत्ररोगेषुकष्टंतद्यत्ततो
हेरेत् । मूलंदृष्टिविनाशस्यतिमिरंसमुदाहृतम् । ऋषिभिस्त्व
दितंतस्मात्तस्यकुर्याच्चिकित्सितम् ॥

अर्थ—उपसर्गसे उत्पन्न हुए और गंभीर तथा ह्रस्व संज्ञक नेत्ररोग त्याज्य है तथा काच और नकुलांध्य, इनसे व्यापन करे और सर्व नेत्र रोगोंमें तिमिरको यत्नपूर्वक हरणकरे यह तिमिर दृष्टिनाशका मूलहै इस वास्ते उसकी प्रथमहीसे चिकित्सा करे ॥

शलाका (सलाई) के लक्षण ।

त्रिफलंभृंगशुंठीनारसैस्तद्वच्चसर्पिपा।गोमूत्रमध्वजाक्षीरैःसित्तो
नागःप्रतापितः । तच्छलाकाहरत्येवसकलान्नयनाभयान् ॥

अर्थ—शीशेको गलायके त्रिफला, भाँगरा, सोंठ, इनके काटेमें तथा घी, गोमूत्र, सहत और बकरीका दूध इनमें बुझाय २ के शुद्ध करे, फिर इसकी शलाई करे, तो सर्व नेत्र रोगोंका नाश करे ॥

अंजन करनेका प्रवार ।

कृष्णभागादधःकुर्यादपांगंयावदंजनम् ॥ प्रथमंसव्यमंजीया
त्पश्चादक्षिणमंजयेत् । शलाकयासांजनयानचतन्नयनंस्पृशेत् ॥

अर्थ—काले भागके नीचे तथा नेत्रोंके कोने पर्यंत अंजन करे, उनमें भी प्रथम बाँये नेत्रमें अंजन करे, फिर दहने नेत्रमें लगावे, वो अंजनयुक्त शलाकाले नेत्रोंमें किसीप्रकार दुःख नहो इस प्रकार फेर ॥

अंजनका बाल ।

हेमंतेशिशिरेवापिमध्याह्नेअनमिप्यते । पूर्वाह्नेवापराह्नेवाग्री
प्येशरदिचेप्यते॥वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवंसेतचसदैवाहि । प्रातः
सायंचतत्कुर्यान्नचकुर्यात्सदैवाहि॥श्रांतिंरुदितेभीतेपीतमद्ये

नवज्वरे । अजीर्णवेगघातेचनांजनसंप्रशस्यते ॥ सौवीरमंजननि
त्यंहितमक्ष्णोःप्रयोजयेत् । पंचरात्रेवाष्टरात्रेस्त्रावणार्थरसांजनम् ॥

अर्थ—हेमंत और शिशिग ऋतुमें दो प्रहरके समय अंजन करे, तथा ग्रीष्म और शरद ऋतुमें पूर्वाह्न अथवा अपराह्नमें अंजन करे और वर्षाऋतुमें जब बादल न होवे, उस दिन तथा जिस दिन गरमी न होय उस दिन करे और वसंतऋतुमें सर्वकाल अंजन करे, तथा परिश्रमी, रुदनकर चुका हो, भयभीत, मद्यपान करनेवाला, नवीन ज्वरवाला, अजीर्णवाला और मलमूत्रादिकोंके रोकनेसे ऐसे रोगियोंके नेत्रमें अंजन न लगावे, तथा सुर्मा लगाना नेत्रोंको हितकारी है, इस वास्ते निश्चय लगाना चाहिये और पाँच अथवा आठ दिन व्यतीत होनेपर नेत्रोंमें स्त्राव करनेके वास्ते रसोत्त लगावे ॥

वर्तिप्रमाण ।

हरेणुमात्रांकुर्वीतवर्तिस्तीक्ष्णांजनेभिपक् ।

प्रमाणमध्यमेसार्धद्विगुणंतुमृदौभवेत् ॥

अर्थ—तीक्ष्ण अंजनके वास्ते मटरके बराबर मोटी बत्ती बनावे, तथा मध्यम अंजनके वास्ते इससे डेढ़गुनी मोटी करे और मृदु अंजनमें दुगुनी मोटी सलाई बनानी चाहिये ॥

रसक्रियाका प्रमाण ।

रसक्रियातूत्तमास्यात्रिविडंगमिताहिता ।

मध्यमाद्विविडंगासाहीनात्वेकविडंगिका ॥

अर्थ—नेत्रोंमें रसकी उत्तम मात्रा डालनी होय तो तीन वायविडंग इतनी डाले और मध्यम डालनी होय तो दो वायविडंग इतनी तथा हीन मात्रामें १ वाय विडंगके बराबर डाले ॥

शलाकाप्रमाण ।

शलाकास्नेहनेचूर्णेचतस्रःप्राहुरंजने ।

रोपणेतास्तुतिस्रस्युस्तेउभेलेखनेस्मृत्रेः ॥

अर्थ—स्नेहन, चूर्ण, तथा अंजन इनकी सलाई नेत्रमें चार बार करे स्त्राव रोपण कार्य विषयमें तीन बार और लेखन विषयमें दो बार करे ॥

तर्पण ।

दुर्दिनात्युष्णशीतेषुचितायांसिभ्रमद्भुज ।

आशांतोपद्रवेचाक्षिणतर्पणंनप्रदुःखे ॥

अर्थ—चादल होवे उस दिन अत्यंत गरमी तथा अत्यंत शरदी तथा चिंता प्रस्त, भ्रमवाला इनको और औषधसे नेत्रोपद्रव की शांति न हुई होय तो नेत्रोंमें तर्पणविधि कदाचित् न करे ॥

तर्पण करनेकी विधि ।

वातातपरजोहीनेदेशेचोत्तानशायिनः । आधारोमापचूर्णेनक्लि
त्रेनपरिमंडलौ ॥ समौदृढावसंवाधौकर्तव्येनेत्रकोशयोः । पू
रयेद्धृतमंडेनविलीनेनसुखोदकैः ॥ अथवाशतधौतेनसर्पिपा
क्षीरजेनवा । निमज्जंत्यक्षिपक्ष्माणियावत्स्युस्तावदेवहि ॥ पू
रयेन्मीलितेनेत्रेततउन्मीलयेच्छनैः ॥

अर्थ—रोगीको हवा और धूप न लगने पावे, तथा धूर न उड़ती हो ऐसे स्थानमें उताना स्वस्थ चित्त सोय जावे नेत्रोंकी चारों ओर उडदके चूनको सानके समान गाढी न फूटने पावे ऐसी मंडसी बांधके उसको धीके मंडमें मंदोष्ण जल डालके पतली करे इससे अथवा सौवार धुले हुए धीसे अथवा दूधसे नेत्रोंको मीचकर फिर नेत्रोंके बाल बूड जावे तबतक भरके काढ डाले फिर मूँददुए नेत्रोंको धीरे २ उघाडे ॥

सेकविधि ।

सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिःसर्वस्मिन्नयनेहितः । मीलिताक्षस्यमर्त्य
स्यप्रदेयश्चतुरंगुलः ॥ सर्वोपिस्नेहनोवातेरक्तेपित्तेचरोपणः ।
लेखनश्चकफेकार्यस्तत्रमात्राधुनोच्यते ॥

अर्थ—नेत्रोंको मूँद सर्व नेत्रोंपर चार अंगुल ऊंचसे बारीक धार डाले उसको सेक कहते हैं वो वातरोग पर स्नेहन पित्त रोगपर रोपण और कफ रोगपर लेखन करे, उसका प्रमाण कहता हूँ ॥

सेककी मर्यादाका बाल ।

पद्माकशतैःस्नेहनेषुचतुर्भिश्चैवरोपणे । वाक्शतैश्चद्विभिःकार्यो
सेकोलेखनकर्मणि । कार्यस्तुदिवसेसेकोरात्रौवात्ययिकेगदे ॥

अर्थ—नेत्रमें स्नेहनार्थ सेक करना होय तो ६०० वाक् मात्रा फाल पर्यंत धारण करे, तथा रोपण विषयमें ४०० मात्रा और लेखन विषयमें २०० वाक् मात्रा पर्यंत धारण करे, यह सेकविधि दिनमें करे, तथा नाशकारी व्याधि होय तो रात्रिमेंभी करे ॥

पिडिकाविधि तथा स्वरूप ।

पिंडीकवलिकाप्रोक्तावध्यतेवस्त्रपट्टकेः ।

नेत्राभिष्यंदयोग्यासात्रणेष्वपिनिगद्यते ॥

अर्थ—जो औषध नेत्रोपर रख वस्त्रसे बाँधी जावे, उसको पिंडी अथवा कवलिका कहते हैं जो नेत्राभिष्यंद और नेत्र व्रण इनपर करे ॥

विडालविधि और स्वरूप ।

विडालकोवहिलेपोनेत्रेपक्षमविवर्जिते ।

तस्यमात्रापरिज्ञेयामुखलेपविधानवत् ॥

अर्थ—जो नेत्रकी पलककी बन्नीनको त्यागके बारह औषधोका लेप करा जावे उसको विडालक कहते हैं, उसका मान मुखलेपके सदृश जानना ॥

तर्पणकी विधि ।

अथतर्पणकंवच्चिनेत्रतृत्तिकरंपरम् । यच्चक्षुपरिशुष्कंचनेत्रंकु

टिलमाविलम् ॥ शीर्णपक्षमशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ।

तिमिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्यंदाधिमंथकैः ॥ शुष्काक्षिपाकशो

थाभ्यांयुतंवातविपर्ययैः ॥ तत्रेत्रतर्पणोद्योज्यंनेत्ररोगविशारदैः ॥

अर्थ—अब नेत्रोको तृत्ति करनेवाला ऐसा तर्पण कहताहूँ जो शुष्क नेत्र, कुटिल, गदले जिनके कोपेनके बाल गिरगए, शिरोत्पात, कष्टसे नेत्र खुले मूँदे इनपर तथा तिमिर, अर्जुन, शुक्र, अभिष्यंद, अधिमंथ, शुक्रादिपाक, सूजन और वातविपर्यय, इनपर देवे ॥

तर्पणमें मात्राकी अवधि ।

धारयेद्वर्त्मरोगेषुवाङ्मात्राणांशतंबुधः । स्वच्छेकफेसंधिरोगे

मात्रापंचशतंहितम् ॥ कफेचपट्टशतंकृष्णरोगेसप्तशतंमतम् ।

दृष्टिरोगेष्वष्टशतमधिमंथेसहस्रकम् ॥ सहस्रंवातरोगेषुधार्य

मेवहितर्पणम् । एकाहंवात्र्यहंवापिपंचाहंचेष्यतेपरम् ॥

अर्थ—केवल कफात्मक वर्त्म रोगोंमें तर्पण करना होय तो १००वाङ् मात्रा पर्यंत औषधको नेत्रमे धारणकरे, नेत्रसंधिरोगोंपर ५०० मात्रा, कफात्मकपर ६००मात्रा, काली जगहके ऊपर रोगमें ७००, दृष्टि रोगपर ८००, अधिमंथपर १०००वातरोगपर १००० मात्रा पर्यंत धारण करे, यह तर्पण एक, तीन अथवा पाँच दिवस पर्यंत करे ॥

तर्पित नेत्रके लक्षण ।

तर्पणात्तृप्तिर्लिंगानिनेत्रस्यैतानिलक्षयेत् । सुखंस्वप्नावबोधत्ववै
शद्यवर्णतर्पितम् ॥ निर्वृत्तिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच ॥
अथसासृग्गुरुस्निग्धनेत्रस्यादतितर्पितम् । रूक्षामस्राविलंरूक्षं
नेत्रस्याद्हीनतर्पणम् । रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोःस्या
त्प्रातिक्रिया ॥

अर्थ-नेत्रोंका उत्तम तर्पण होनेसे सुख, भले प्रकार निद्राका आना, नेत्रोंमें
स्वच्छता, रोगकी शांति और नेत्राक्रियाका लाघव ये लक्षण होतेहैं तथा
नेत्रोंका तर्पण अधिक होगया होवेतो लाल, भारी और चिकनाहृद्युक्त होते
हैं और न्यून तर्पण होनेसे रूक्ष और रुधिरके समान लाल होते हैं इसवास्ते
अधिक और हीन ऐसा तर्पण होगया होय तो क्रमपूर्वक रूक्ष और स्निग्ध
क्रिया करे, अर्थात् अधिक तर्पण रूक्ष क्रिया और हीनमें स्निग्ध क्रियाकरे ॥

आश्रोतनविधि ।

अथआश्रोतनंकार्यैर्निशायानंकथंचन ।

उन्मीलितेक्षिणहृद्मध्येविंदुभिर्द्व्यंगुलाद्धितम् ॥

अर्थ-आश्रोतन नेत्रमें बृंद डालनेको कहते हैं इस क्रियाको रात्रिके समय
कदाचित् नकरे तथा नेत्रोंको अच्छे प्रकार उघाडके दृष्टिपर दो अंगुलके
प्रमाण बिंदु डाले तो हितकारी होय ॥

लेखनादिकोंमें बिंदुका प्रमाण ।

विंदवोष्टौलेखनेषुस्नेहनेदशविंदवः । रोपणेद्वादशप्रोक्तास्तेशी
तेकोष्णरूपिणः ॥ उष्णेचशीतरूपाःस्युःसर्वत्रैपनिश्चयः । वा
तेतिक्तंतथास्निग्धंपित्तमधुरशीतलम् । तित्तोष्णरूपंचकफे
क्रमादाश्रोतनंहितम् ॥

अर्थ-लेखन विषयमें ८ बिंदु, तथा स्नेहनमें १०, रोपणमें १२ बिंदु (बृंद)
डालनी चाहिये वो शीतकाल होय तो मंदोष्ण तथा गरमियोंमें शीतल ऐसी
डाले और वादीपर कडुई और स्निग्ध, पित्तपर मधुर और शीतल, तथा कफ
पर कडुई और गरम ऐसी हीनी चाहिये । इस प्रकार आश्रोतन कर्म हित
कारी होयहे ॥

वाङ्मात्राका स्वरूप ।

निमेपोन्मेपणंपुंसामंगुल्यांत्रोटिकाथवा ।

गुर्वक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृतावुधैः ॥

अर्थ—जो नेत्रोंका उघाडने और मूंदनेको काल लगे, अथवा ऊंगली की चूटकी बजानेमें अथवा गुरु अक्षर उच्चारणमें जितना काल लगे उसको वाङ्मात्रा कहते हैं ॥

नेत्ररोगोंका कारण अभिष्यंद ।

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यंदश्चतुर्विधः ।

प्रायेणजायतेघोरःसर्वनेत्राभयाकरः ॥

अर्थ—वात, पित्त, कफ, और रुधिर इनसे चार प्रकारका अभिष्यंद रोग होताहै उसकी पीडा सही नहीं जावे, तथा यह अभिष्यंद सर्व नेत्र रोगोंके अर्थात् अधिमंथादिक रोगोंके उत्पत्ति स्थान है अभिष्यंद कहिये नेत्रोंका दूखना, पकना, लालहोना और खुजाना ॥

वाताभिष्यंद ।

निस्तोदनस्तंभनरोमहर्षसंघर्षपारुष्यशिरोभितापाः ।

विशुष्कभावःशिशिराश्रुताचवाताभिपत्रेनयनेभवन्ति ॥

अर्थ—वादीसे नेत्र दूखने आये होय उनमें सुई चुभाने कीसी पीडा हो, नेत्रोंका स्तंभन (ठहरजाना) रोमांच, नेत्रोंमें रेत गिरनेके समान खटके, तथा रूक्ष होय मस्तकमें पीडा हो, नेत्रोंसे पानीगिरे, परंतु नेत्र सूखेसे रहें और नेत्रोंसे जो पानी गिरे वो शीतल हो ॥

पिंडिका ।

वाताभिष्यंदशांत्यर्थस्निग्धोष्णापिंडिकाभवेत् ।

एरंडपत्रमूलत्वङ्निर्मितावातनाशिनी ॥

अर्थ—वाताभिष्यंदके नाशनार्थ अंडके पत्ते, जड और छालकी स्निग्धोष्ण पिंडीको नेत्रोंपर बाँधे तो वादीको नाश करे ॥

एरंडादिसेक ।

एरंडत्वक्पत्रमूलैःशृतमाजंपयोहितम् ।

सुखोष्णसेचनंनेत्रेवाताभिष्यंदनाशनम् ॥

अर्थ—अंडकीछाल, पत्ते और जडको डालके बकरीका दूध ओंटावे यह सुखोष्ण लेकर नेत्रोंको सिंचन करे तो वाताभिष्यंदका नाश करे ॥

हरिद्राघञ्जन ।

हरिद्रामधुकं पंथ्यादेवदारुचपेपयेत् ।
आजेनपयसाश्रेष्ठमभिष्यंदेतदंजनम् ॥

अर्थ—हलदी, मुलहठी, हरड, देवदारु इनका चूर्ण करके बकरीके दूधसे खूब चारीक घोंटे इसका वाताभिष्यंद नाश करनेको अंजन करे ॥

सैंधवादिपरिषेक ।

परिषेकेहितनेत्रेपयःकोष्णंससैंधवम् ॥ रजनादारुसिद्धं वासैंधवे
नसमन्वितम् । वाताभिष्यंदशमनंहितंमारुतपर्यये ॥

अर्थ—नेत्रोंके परिषेक घिपयमें गुनगुने दूधमें सैंधानिमक डालके देवे तो हितकारी होय और हलदी, देवदारु डालके दूधको ओंटावे उसमें सैंधानिमक डालके इससे सिंचन करे, तो वाताभिष्यंदका नाश करे, तथा वातव्याधि पर हितकारक है ॥

विल्वादिभाश्चोतन ।

विल्वादिपंचमूलेनबृहत्पैरंडांशिशुभिः ।
क्वाथस्याश्चोतनंकोष्णंवाताभिष्यंदनाशनम् ॥

अर्थ—विल्वादि पंचमूल, फोटीरी, अंडकीजड, सहिजनेकी छाल इनका फाटा कर सुहाते २ नेत्रमें चूँद डाले, तो वाताभिष्यंदको नाश करे ॥

निंबपत्रादिपूरण ।

अंबुपिष्टैर्निंबपत्रैस्त्वचंलोध्रस्यपेपयेत् ॥ प्रतप्यवह्निनापिष्ट्वा
तद्रसोनेत्रपूरणात् । वातोत्थंरक्तपित्तोत्थमभिष्यंदंविनाशयेत् ॥

अर्थ—नींबके पत्तोंको और लोध्रको जलमें पीसके कल्ककरे, फिर इसको आमिपर गरम करके इसका रस निकाल नेत्रोंमें डाले, तो वातज और रक्त पित्तज अभिष्यंदको नाश करे ॥

पित्ताभिष्यंद ।

दाहप्रपाकौशिशिराभिनंदाधूमायनंवाप्पसमुच्छ्रयश्च ।
उष्णाश्रुतापीतकनेत्रताचपित्ताभिपत्रेनयनेभवंति ॥

अर्थ—पित्तसे नेत्र दूखने आनेसे उनमें बहुत दाह हो; नेत्र पकजाय उनमें शीतल पदार्थ लगानेकी इच्छा हो, नेत्रोंसे धुआं निकले अथवा नेत्रोंमें धुआं जाने फीसी पीडा हो, तथा नेत्रोंसे अश्रु (आंमू) बहुत पड़े और गरम पानी निकले, आंख पीलीसी माहूम पड़े ॥

चंदनादिसेक ।

चंदनारिष्टपत्राणियष्टीदाव्याससैंधवैः ।

पिष्ट्वांभसाभवेत्सेकःपित्तेशोद्रसमन्वितः ॥

अर्थ—चंदन, नीमके पत्ते, मुलहठी, दारुहलदी, सैंधानिमक इनको जलमें पीस और इसमें सहत मिलाय नेत्रोंको सिंचन करे तो पित्ताभिष्यंद नष्टहोवे ।
आश्रोतन ।

निंवस्यपत्रैःपरिलिप्यलोध्रंस्वेदोग्निनाचूर्णमथापिकल्कम् ।

अश्रोतनंमानुपदुग्धमिश्रंपित्तास्रवातापहमय्यमुक्तम् ॥

अर्थ—नीमके पत्तोंके लोधको लगायके सेक करे, अथवा उसके चूर्णसे सेंके अथवा उसके कल्कमें उसमें मनुष्यका दूध डालके कपड़ेमें सानके नेत्रमें बूंद डाले तो रक्तपित्त वातरक्त इनको नाश करे ॥

द्राक्षादिआश्रोतन ।

द्राक्षामधुकमंजिष्ठाजोवनीयेःशृतंपयः ।

प्रातराश्रोतनंपथ्यंदाहशूलक्षरोगजित् ॥

अर्थ—दाख, मुलहठी, मजीठ और जीवनीयगण इनके कल्कमें दूध डालके आँटावे, फिर इसकी बूंद नेत्रोंमें प्रातःकाल डाले तो दाह, शूल और नेत्रके संपूर्ण रोग इनको नाश करे ॥

पिंडिका ।

पित्ताभिष्यंदनाशायधात्रोपिंडिसुखावहा ।

महानिंवदलोद्भूतापिंडिकापित्तनाशिनी ॥

अर्थ—आँवलेकी अथवा नीमके पत्तेकी पिंडी नेत्रोंपर धारण करे तो पित्ताभिष्यंदका नाश होय ॥

विडालकादिलेप ।

पैत्तिकेचंदनानंतामंजिष्ठाभिर्विडालकः ।

कार्यःसपद्मयष्ट्याह्वमांसीकालीयकैस्तथा ॥

अर्थ—पित्ताभिष्यंदपर चंदन, धमासो और मजीठ इनका अथवा पद्मार मुलहठी, जटामांसी और दारुहलदी इनका लेप करे ॥

चंदनादिलेप ।

चंदनंमधुकंलोध्रजातीपुष्पाणिगैरिकम् ।

प्रलेपोदाहरोगघ्नस्तोदनिष्पन्दनाशनः ॥

अर्थ—चंदन, सुलहदी, लोध, चमेलीके फूल और गेरु, इनका लेप करे तो दाह दर्द और कंप इनको नाश करे ॥

कफाभिष्यंद ।

ऊष्णाभिनंदागुरुताक्षिशोथःकंडूपदेहावतिशीतताच ।

स्त्रावोवहुःपिच्छलएवचापिकफाभिपत्रेनयनेभवंति ॥

अर्थ—कफसे नेत्र दूखने आये हों उसको गरम वस्तु नेत्रोंमें लगानेसे आम मालूम हो (अर्थात् नेत्रमें सेकसा मालूम हो) तथा नेत्र भारी होंय सूजन ही, खजली चले, कीचडसे दूषित हों और शीतल हों, उन्मेंसे स्राव होय, सो गाढा और बहुत होय ॥

श्लेष्मिकाभिष्यंदचिकित्सा ।

कफजेलंघनंस्वेदोनश्यांतिक्तादिभोजनम् । तीक्ष्णैःप्रथमनं

कुर्यात्तीक्ष्णैरेवोपनाहनम् ॥ रूक्षतीक्ष्णविरैकैश्चमलंसम्यक्

विनिर्हरेत् ॥

अर्थ—कफजन्य अभिष्यंदपर लंघन, स्वेदन नस्य कटुरसादि भोजन, तीक्ष्ण औषधका प्रथमन, तथा तीक्ष्ण औषधों करके रैचन देकर मलको निकालना, इत्यादि उपचार करे ॥

स्वेदन ।

फणीजकास्फोतकदित्थविल्वधचूरभृंगार्जुनपत्रयोगैः ।

स्वेदंविदध्यादथवात्रलेपंसलोध्रशुंठीसुरदारुकुष्ठैः ॥

अर्थ—फणिजक-सारिया, कैथ, बेलगिरी, धत्रुरा, भांगरा और कोहहूयस इनके पत्तोंकी लुगदीसे सेके अथवा लोध, सोंठ, देवदारु और कूठ इनकोलेप करे ॥

सामान्ययत्र ।

वल्कलंपारिजातस्यतैलसंधवकांजिकम् ।

कफजाक्षिजशूलघ्नंतरुघ्नंकुलिशंयथा ॥

अर्थ—पारिजात (हारसिंगार) की छाल, तैल, संधानिमक और कांजी इनको एकत्र पीस, नेत्रोंमें लेप करे तो नेत्रशूलको नाश करे ॥

नेत्रशूलपर ।

सौवीरसंधवतैलमूर्वामूलंतथैवच ।

कांस्यपात्रेविष्टृष्टस्यादक्ष्णोःशूलनिवारणम् ॥

अर्थ—कांजी, सैंधानिमक, तेल और सूवाकी जड इनको एकत्र कर कांसेके पात्रमें घोटके नेत्रोंको लेप करे तो नेत्रशूलको नाश करे ॥

सलवणकटुतैलंकांजिकंकांस्यपात्रेघनितमुपलघृष्टंधूपितंगोम
याग्रौ । सपवनकफकोपंच्छागदुग्धावसिक्तंजयतिनयनशूलं
स्त्रावशोथंसरागम् । स्पंदाभिमंथेक्रममाचरेच्चसर्वेषुचैतेपुसदा
प्रशस्तम् ॥

अर्थ—निमक, सरसोंका तेल और कांजी इनको कांसेके पात्रमें डालके पत्थरसे घोटे और उपलोंकी अग्निपर गरम करके उसमें बकरीका दूध डाले, फिर लेप करे तो नेत्रशूल, स्त्राव, मृजन और नेत्रोंकी लाली, इनको नाश करे, यह स्पंद अथवा अधिमंथ इनपरही करे, अतोव उत्तम है ॥

निवारि धूप ।

निंबार्केपत्रसंपकंलोध्रंभागचतुष्टयम् ।

धूपःसर्पिःपयोभागैःकफेसेकःसुखांबुनाम् ॥

अर्थ—नींब, आकके पत्ते, १ भाग और लोध ४ भाग, सबको एकत्र करके धूनी देवे तथा घी, दूध और जल इनको एकत्र गरम करे फिर सुहाता २ नेत्रोंपर सेक करे तो कफाभिष्यंदको नाश करे ॥

आश्रोतन ।

ससैंधवंलोध्रमथाज्यभृष्टंसौवीरपिष्टंसितवह्वद्धम् ।

आश्रोतनंतन्नयनस्यकुर्यात्किंङ्चदाहंचरुजंचहन्यात् ॥

अर्थ—सैंधानिमक, लोध, इनको एकत्र करके घीमें भूनलेवे फिर कांजीमें पीसके सपेद कपडेमें बांधके नेत्रोंमें घुंदा निचोडे तो खुजली दाह और दर्द इनको नाश करे ॥

पिंडिका ।

शिष्टुपत्रकृतापिंडीश्लेष्माभिष्यंदहारिणी । शुंठीनिंबफलैःपि

डोसुखोष्णास्वल्पसैंधवाधार्याचक्षुपिसंयोगाशोथकंडूव्यथाहरा ॥

अर्थ—सहिजनके पत्तोंको पीस उसकी पिंडी बनायके नेत्रोंमें बांधे तो कफाभिष्यंदका नाश करे और सोंठ, तथा निबोरियोंको एकत्र पीसके कुछ गरम करके उसमें सैंधानिमक डाले, फिर इसकी पिंडी बनायके नेत्रोंपर धारण करे तो मृजन और फंडू (खुजली) इनको नाश करे ॥

विडालक ।

रसांजनेनवालेपःपथ्याविश्वदलैरपि ।
वचाहरिद्राविश्वैर्वातथानागरगैरिकैः ॥

अर्थ—रसोतका अथवा हरडका अथवा अदरखके पत्तोंका वा वच हलदी और सोंठ, इनका अथवा सोंठ और गेरू इनका लेप करे ॥

रक्तजाभिष्यंद ।

ताम्राश्रुतालोहितनेत्रताचराज्यःसमंतादतिलोहिताश्च ।
पित्तस्यलिंगानिचयानितानिरक्ताभिषन्नेनयनेभवांति ॥

अर्थ—रक्ताभिष्यंदसे नेत्रोंसे लाल पानी गिरे, नेत्र लाल हों और नेत्रोंमें औरपास रेखासी लाल लाल दीखें और जो पित्ताभिष्यंदके लक्षण कहे हैं वो सब लक्षण इसमें हों ॥

वासादि काय ।

आटरूपभयानिवधात्रीमुस्तकमूलकैः ।
रक्तस्त्रावंकफंहंतिचक्षुष्यंवासकादिकम् ॥

अर्थ—अडुसा, हरड, नीमकी छाल, आंवले, नागरमोथा और मूली, इनका काढा करके देवे तो रक्तस्त्राव और कफ इनका नाश करे, यह वासादि नेत्रोंको परम हितकारी है ॥

त्रिफलादि सेक ।

त्रिफलालोध्रयष्टीभिः शर्कराभद्रमुस्तकैः ।
पिष्टैःसितांबुनासेकोरक्ताभिष्यंदनाशनः ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आंवला, लोध्र, मुलहठी, मिश्री और भद्रमोथा ये सब औषध शीतल जलमें पीसके नेत्रोंमें सेककरे तो रक्ताभिष्यंदको नाशकरे ॥

आश्रोतन ।

स्त्रीस्तन्यश्रोतनंनेत्रेरक्तापित्तानिलार्तिजित् ।
क्षीरसपिघृतंवापिरक्तपित्तरुजंजयेत् ॥

अर्थ—स्त्रीके दूधकी बूंद नेत्रमें डाले अथवा घी और दूध एकत्र करके उसकी अथवा घीकी बूंद डाले तो रक्तपित्त विकारया नाशहोय ॥

प्रकारांतर ।

लोध्रचूर्णघृतेघृष्टंरुजमाश्रोतनेहरेत् ।

शर्करात्रिफलाचूर्णमिदमाश्रोतनंपरम् ॥

अर्थ—लोधको घीमें घिसके इसकी बूंद नेत्रमें डाले, अथवा त्रिफलाका चूर्ण मिर्चीके साथ मिलायके इसकी बूंद नेत्रमें डाले तो हितकारी होवे ॥

अंजन ।

श्रीपर्णीपाटलाधात्रोधातकीविल्वकार्जुनान् । पुष्पाणितुबृह
त्याश्रुविंबीलोध्रंचतुल्यसः ॥ मंजिष्टंचापिमधुनापिष्ठापीशुर
सेनवा । रुधिरस्यंदशांत्यर्थमेतदंजनमिष्यते ॥

अर्थ—शाकपर्णी, पाठ, आँवले, धायके फूल, लोध, कोहबृक्षकी छाल, फटेरीके फूल, कंदूरी, लोध और मजीठ, इनको सहतसे अथवा ईखके रसमें पीसके इसका नेत्रोंमें अंजन करे तो रक्ताभिष्यंदका नाश होय ॥

अभिष्यंदसे अधिमंथकी उत्पत्ति ।

वृद्धैरेतैरभिष्यंदैर्नराणामक्रियावताम् ।

तावंतस्त्वधिमंथाःस्युर्नयनेतीव्रवेदनाः ॥

अर्थ—इस अभिष्यंदमें औषधोपचार न करनेसे यह बढकर उतनेही (चार) अभिष्यंद रोग नेत्रोंमें प्रगट होय, इससे नेत्रोंमें तीव्र पीडा होय, यह अधिमंथके सामान्य लक्षण है। वेदना शब्द इस जगह व्यथामात्रका वाचक है इससे यह प्रगट हुआ कि, वातके अभिष्यंदसे वातिकअधिमंथ प्रगट होय उसमें तीव्र वातज सर्व निस्तोदादि पीडा होय, इसी प्रकार पित्तकेसे, कफकेसे, रुधिरकेसे, पित्त कफ रुधिरके अधिमंथ स्वलक्षण करके जानने ॥

सामान्य लक्षण ।

उत्पाद्यतइवात्यर्थेनेत्रंनिर्मथ्यतेतथा ।

शिरसोर्धचतंविद्यादधिमंथंस्वलक्षणैः ॥

अर्थ—आधे शिरमें उपाडनेकीसी पीडा होय, अथवा तोडनेकीसी, तथा मथनेकीसी पीडा हो, व्याधिके प्रभावसे आधेशिरमें पीडा हो, इससे अधिमंथ कहते है इनके लक्षण वातज अभिष्यंदके समान जानने ॥

कालमर्यादा ।

हन्याहृष्टिंश्लैष्मिकःसप्तरात्राद्योऽधिमंथोरक्तजः पंचरात्रात् ।

पद्मरात्रादावातिकोवैनिहन्यान्मिथ्याचारात्पैत्तिकःसद्यएव ॥

अर्थ—कफका अधिमंथ सात दिनमें दृष्टिका नाश करे, रक्तज अधिमंथ पांच दिनमें, वातिक अधिमंथ छः दिनमें और पैत्तिक अधिमंथ मिथ्योप-

चारसे तत्काल (तीन दिनमें) दृष्टिका नाश करे, (अर्थात् आंख जाती रहे) इस जगह जो कालकी अवधि कही है सो व्याधिके स्वभावसे तथा लंघन मलेपादि क्रिया करके तथा अंजन निषेधके निमित्त कहा है ॥

नेत्ररोगके सामान्यलक्षण ।

उदीर्णवेदननेत्ररंगोद्रेकसमन्वितम् ।

घर्षनिस्तोदशूलाश्रयुक्तमामान्वितंविदुः ॥

अर्थ—जिस नेत्ररोगमें पीडा विशेष होय, लाली बहुत होकर चमका चले, तथा उसमें घर्ष (रेत गिरनेसे जैसी पीडा होती है वैसी) पीडा होय, मुई चुभाने कीसी पीडा होय, शूलसा चले और स्रावयुक्त होवे, उन नेत्रोंको आमयुक्त जानना । अंजन लगानेसे तथा हलका अन्न खानेसे ये लक्षण कहेहैं ॥

निरामके लक्षण ।

मंदवेदनताकंडूःसरंभाशुप्रज्ञांतता ।

प्रसन्नवर्णताचाक्ष्णोःसंपक्वदोषमादिशेत् ॥

अर्थ—नेत्रोंमें पीडा कम होवे, सुजली चले, सूजन मंद होय, आंसुओंका गिरना बंद होय, नेत्रोंका वर्ण स्वच्छ होय ये दोष पक्व होनेके लक्षण हैं ॥

शोथयुक्त अक्षिपाकके लक्षण ।

कंडूपदेहाश्रयुतःपक्वोदुंबरसन्निभः ॥ सरंभीपच्यतेयस्तुनेत्र

पाकःसशोफजः । शोथहीनानिलिगानिनेत्रपाकेत्वशोथजे ॥

अर्थ—नेत्रोंमें सूजन आकर पक्वजाय, उनमें आंसू वहे और पके गूलरके समान लाल होय, ये लक्षण शोथसहित नेत्ररोगके हैं और शोथ (सूजन) के विना जो नेत्रपाक होय उसमें शोथको छोड़कर सब लक्षण होय यह व्याधि त्रिदोषजन्य जाननी ॥

शोथपाकचिकित्सा ।

जलैकालापनंत्रेष्टनेत्रपाकेविरेचनम् ।

शिराव्यधंवाकुर्वीतसेकालेपश्चशुक्रवत् ॥

अर्थ—नेत्रोंमें सूजन और पाक ये होवे तो जौख लगावे, रेचकदवाई दे, अथवा फस्त रोलें और नेत्रशुक्रपर कहे हुए सेक और लेप ये करे ॥

विभीतत्वादे काथ ।

विभीतकशिवाधात्रीपटोलारिष्टवासकैः ।

क्वाथोगुगुलुसंयुक्तःशोथशूलाक्षिरोगनुत् ॥

अर्थ—बहेडा, हरड, आंवला, पटोलपत्र, नीमकी छाल और अडूसा इनके काठेमें गूगल डालके पीवे तो नेत्रोंकी सूजन और नेत्रपाकको नाश करे ॥

हताधिमंथके लक्षण ।

उपेक्षणादक्षियदाऽधिमंथोवातात्मकःसादयतिप्रसह्य ।

रुजाभिरुग्राभिरसाध्यएपहताधिमंथःखलुनेत्ररोगः ॥

अर्थ—वातज अधिमंथकी उपेक्षा करनेसे वह नेत्रोंको सुखाय देवे, उस मनुष्यके नेत्रोंमें तौद (सुईके चुभानेकीसी पीडा) दाहादि भारी पीडा होय, यह हताधिमंथनामक नेत्र रोग असाध्य है इसी रोगको विदेह दृष्ट्युत्क्षेपण कहता है अथवा दृष्टिनिर्गम तथा सकलाक्षिशोषभी जानना यही सुश्रुतकाभी मत है इस रोगसे नेत्र सूखे कमलके समान हो जाते हैं ॥

अधिमंथचिकित्सा ।

अधिमंथेषुसर्वेषुललाटेव्यधयेच्छिराम्।अशांतेसर्वथामंथेषुवो
रुपरिदाहयेत् ॥ अभिप्यंदेषुयाःप्रोक्ताश्चतुर्पुत्रप्रतिक्रियाम् ।
ताःसर्वाश्चाधिमंथेषुप्रयोज्याश्चभिपग्वरैः ॥ सर्वएवविधिःसर्वमं
थादिष्वपिचेप्यते ॥

अर्थ—संपूर्ण अधिमंथ व्याधियोंमें ललाट स्थानकी शिराका वेध करे, इस प्रकार करनेसे यदि शांति न होवे तो भौहोंके ऊपर दाग देवे और जो चारों प्रकारके अभिप्यंदों पर क्रिया कही है वों सब इसपर योजना करे और सर्वजअधिमंथपर कही हुई विधि वैद्य करे ॥

वातपर्यय लक्षण ।

वारंवारंचपर्येतिभ्रुवौनेत्रेचमारुतः ।

रुजश्चविविधास्तीव्राःसज्ञेयोवातपर्ययः ॥

अर्थ—वायु क्रमसे कभी कभी भ्रुकुटिमें प्राप्त हो और कभी २ नेत्रोंमें प्राप्त होकर और अनेक प्रकारकी तीव्र पीडा करे उसको वातपर्यय कहते हैं ॥

वातपर्यय चिकित्सा ।

वाताभिप्यंदवच्चात्रवातेमारुतपर्यये । अनेनैवविधानेनभिपैकै

१ अंतर्गतः शिराणां तु यदा तिष्ठति मारुतः । सतदानयनमाप्यशीघ्रघट्टं निरस्त्यति ॥ तस्यो निरस्त्यमानाप निमंथेनैवमारुतः । नयनानिर्गमत्यागु शूलतो दधिपयनेः ॥ २ अन्तः शिराणांश्चनः स्थितो घट्टे च प्राक्षिपन् । हताधिमंथजनयेवमसाध्य विट्बुधाः ॥ इति विदेहः ॥ अथवा शोषेदरुग्णो क्षीणान्तेजोबलादयम् ॥ तत्रप्रविष्ट संगुष्कसवदेदितिलोचनम् ॥

वाभिसाधयेत् ॥ पूर्वतत्रहितं सर्पिः क्षीरं वाप्यथ भोजनम् । परि-
पेकोहितं नेत्रेपयः कोष्णसं सैधवम् ॥ रजनीदारुसिद्धं वा सैधवेन
समन्वितम् । वाताभिष्यंदशमनं हितं मारुतपर्यये ॥

अर्थ—वातपर्यय पर वाताभिष्यंदनाशक विधि करे और प्रथम घी, दूध,
भोजन, परिपेक और सैधानिमक डालके मंदोष्ण दूध और हलदी, दारुह-
लदी इनके कोठेमें दूध डालके ओंटावे, फिर इसमें सैधानिमक डालके देवे
इस प्रकार वाताभिष्यंदनाशक उपचार करे ॥

शुष्काक्षिपाकलक्षण ।

यत्कूणितंदारुणरूक्षवर्त्मसंदह्यते चाविलदर्शनंच ।

सुदारुणं यत्प्रतिवाधने च शुष्काक्षिपाकोपहतंतदक्षि ॥

अर्थ—जो नेत्र खुले नहीं अर्थात् संकुचित हो जाय, जिनकी वाफणी कठिन
और रुस होय, जिसके नेत्रोंमें दाह विशेष होय, ययार्थ देखें नहीं, जो खो-
लनेमें बहुत दुःख होय, उन नेत्रोंको शुष्काक्षिपाक नामक रोगसे पीडित
जानना यह रोग रक्तसहित वादांस होता है सो करालोचाय्येन लिखा है ॥

शुष्काक्षिपाकचिकित्सा ।

शुष्काक्षिपाके च सदाइदं सेचनं कं हितम् । सैधवं दारुशुंठीचमातु
लिं गारसो घृतम् । स्तन्योदकार्धकुर्वीत शुष्कपाके तदंजनम् ॥

अर्थ—नेत्रोंका शुष्कपाक होनेसे सैधानिमक दारुहलदी, सोंठ, विजौ-
रेका रस घी खीका दूध तथा आधा जल इनको एकत्र कर इसका सिंचन
करे और अंजन करे ॥

जीवनीयादि तैल ।

शुष्काक्षिपाके हविषः पानमक्षुणोश्च तर्पणम् ।

सृतेन जीवनीयेन नस्यते तैलेन योजयेत् ॥

अर्थ—शुष्काक्षिपाक होनेसे घी पिवावे और जीवनीयगण करके घी सिद्ध
करके वो नेत्रोंमें डाले और तैलकी नस्य करे ॥

अन्यतो वातलक्षण ।

यस्यावटूकर्णशिरोहनुस्थो मन्यागतो वाप्यनिलोन्यतोका ।

कुर्याद्दुर्ज्वेभ्रुविलोचने च तमन्यतो वातमुदाहरंति ॥

अर्थ-घाटी (घार), कान, मस्तक, ठोडी, मन्यानाडी इनमें अथवा इतर ठिकाने स्थित जो वायु भृकुटी (भौंह) नेत्रोंमें तोड़ भेदादि पीडा करे इस रोगको अन्यतो वातरोग कहते है अर्थात् अन्यस्थानोंमें स्थित होकर अन्य स्थानोंमें पीडा करे इसीसे इसको अन्यतो वातरोग कहते है सो विदेहका मत भी है ॥

चिकित्सा ।

तथाचाप्यन्यतोवातेसामान्योवक्ष्यतेविधिः ॥

अर्थ-अन्यतो वातपर सामान्य विधिको कहताहूँ ॥

दार्व्याद्यजन और आश्रोतन ।

यष्टीगुडूचीत्रिफलासदावींअक्ष्यामयेसर्वगतेपिवेद्रा ।

आश्रोतनंसर्वरसेनदार्व्याशस्तंसदाक्षौद्रयुतंनराणाम् ॥

अर्थ-सर्वज नेत्ररोगोंपर मुलहठी, गिलोय, त्रिफला, दारुहलदी इनका काढा पीवे और रार, दारुहलदी इनको सहतमें पीसके इसकी बूंद नेत्रोंमें डाले, यह उत्तम है ॥

गुडूच्यादि फाय ।

गुडूचीत्रिफलाकाथोमधुनासहयोजितः ।

पीतःसर्वाक्षिरोगघ्नःकृष्णाचूर्णावचूर्णितः ॥

अर्थ-गिलोय और त्रिफला इनका काढा सहत और पीपलका चूर्ण डालके पीनेकी देवे तो संपूर्ण नेत्ररोगोंको नाश करे ॥

पोडरीक सेक ।

प्रपौंडरीक्यष्ट्याह्वदावींलोभ्रैःसचंदनैः ।

एरंडांबुयुतेःसेकःसर्वनेत्ररुजापहः ॥

अर्थ-पुंडरीक वृक्ष, मुलहठी, दारुहलदी, लोध, चंदन और अंडकी जड़, इनका काढा नेत्रोंमें डाले तो संपूर्ण नेत्ररोगोंको नाश करे ॥

श्वेतलोभादि सेक ।

श्वेतलोभ्रघृतेप्रष्टचूर्णितंताप्यतुत्थकम् ।

कृष्णांबुनाविमृदितंसेकःशूलहरःपरः ॥

अर्थ-सोपेद लोधको घीमें भून उसके चूर्णको और सोनामक्खी लीलायोया ये सब पीपलीके जलसे घोटकर सेवन करे तो संपूर्ण शूलोंका नाश करे ॥

१ मन्यानामन्तरेत्रापुरणित्त वृष्टतोपिशा । कर्तोति भेदे निस्तोदे शब्दे आरुणोद्यस्तथा ।

तथाहुरन्यतोवाते रोगे इतिविदोक्तः । इति ॥

अन्यतावोतचिकित्सा ।

यष्टीगैरिकसिंधूत्थदावीताक्ष्यैःसमांशकैः ।

जलपिष्टैर्वहिलेपोसर्वनत्रामयापहः ॥

अर्थ—मुलहठी, गेरू, संधानिमक, दारुहलदी और रसोत ये समान भाग ले जलमें पीस नेत्रोंको बाहर लेप करे तो संपूर्ण नेत्ररोगोंका नाशकरे ॥

सिंधवाद्यंजन ।

दग्ध्वाससैंधवंलोध्रमधूच्छिष्टयुतेघृते ।

पिष्टमंजनलेपाभ्यांसद्योनेत्ररुजापहम् ॥

अर्थ—सहत और घी इनमें संधानिमक और लोधको भूनके पीसलेवे इसका लेप और अंजन करे तो तत्काल नेत्ररोगको शमन करे ॥

निंबुरसलेप ।

लोहस्यपात्रेसंघृष्टोरसोनिवसमुद्भवः ।

किंचिद्वनोवहिलेपोनेत्रव्याधिर्व्यपोहति ॥

अर्थ—लोहेके पात्रमें नींबूका रस डालके ओंटावे जब गाढा होजावे तब इसका नेत्रोंपर लेप करे तो नेत्ररोगकी शांतिकरे ॥

निंवादिपिंडी ।

निंबस्यचोदुंबरवल्कलस्यएरंडयष्टीमधुचंदनस्य ।

पिंडोविधेयोनयनप्रकोपेकफेनपित्तेनसमीरणेन ॥

अर्थ—वात, पित्त, कफ इनसे नेत्रकोप होनेसे नीमकी छाल और गूलरकी छाल, अंडकी जड़, मुलहठी और लालचंदन इनको पीसके पिंडी बनाय नेत्रोंपर बांधे ॥

अम्लाध्युपित्तके लक्षण ।

श्यावंलोहितपर्यंतसर्वचाक्षिप्रच्यते ॥

सदाहशोथंसस्त्रावमम्लाध्युपित्तमम्लतः ॥

अर्थ—मध्यमें कुछ नीलवर्ण और आस पास लाल भराहो ऐसे सर्व नेत्र पकजाय और उनमें पीले रंगकी फुंसी होय, उनमें दाह होकर सूजन होय, तथा नेत्रोंसे पानी झरे यह रोग अम्ल (खटाई आदि खानसे होताहै, सुशु-
तके मतसे यह रोग पित्तसे होताहै) इसको अम्लाध्युपित्त कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

तिक्तस्यसर्पिपःपानंबहुशश्चविरेचनम् ।

अम्लाध्युपितशान्त्यथैकुर्याल्लिपान्सुशीतलान् ॥

अर्थ—खटाई खानेसे यदि नेत्र विकारहो गया होवे तो कटुये रस और धी
मका पान करे धारंवार दस्त करावे और शीतल लेपकरे ॥

तिल्वकादि पान ।

तिल्वकंत्रिफलांसर्पिजोर्णवाकेवलंपिबेत् ।

शिराव्यर्धंविनाकार्यःपित्तस्यंदहरोविधिः ॥

अर्थ—लोध, त्रिफला इनके काठेमें पुराना धी डालके देवे फस्त खोलनेके
लेना सब पित्ताभिष्यंद नाशक विधिकरे ॥

शिरोत्पातलक्षण ।

अवेदनावापिसवेदनावायस्याशिराज्योहिभवंतिताम्राः ।

मुहुर्विरज्यंतिचयाःसदादृग्व्याधिःशिरोत्पातइतिप्रदिष्टः ॥

अर्थ—जिसके नेत्रकी नस पीडासहित अथवा पीडारहित तांबेके समान
लरंगकी होजाय और वह बराबर अधिकाधिक (जियादासे जियादा)
ल होजाय, इस रोगकी शिरोत्पात (सबलवायु) कहते हैं । यह रोग
तजन्य है ॥

शिराहर्ष लक्षण ।

मोहाच्छिरोत्पातउपेक्षितस्तुजायेतरोगस्तुशिराप्रहर्षः ।

ताम्राक्षमसंभवतिप्रगाढंतथानशक्रोत्यभिबीक्षितुंच ॥

अर्थ—अज्ञान करके शिरोत्पात (सबल) वायुकी उपेक्षा करनेसे अर्थात्
श्रम न करनेसे शिराप्रहर्ष रोग होताहै उसमें नेत्रोंसे लाल स्वच्छ ऐसे आंशु
रे और उस रोगीको नेत्रोंसे कुछ दिखलाई न देवे ॥

शिरोत्पात शिराहर्षकी चिकित्सा ।

शिरोत्पातंशिराहर्षमन्यांश्चास्रभवान्गदान् ।

स्निग्धस्यकोष्णेनाज्येनशिरावेधैःशमनयेत् ॥

अर्थ—शिरोत्पात और शिराहर्ष तथा जो रुधिरसे प्रगट रोग है धी मं-
ष्ण धीसे स्निग्ध करके फिर शिरावेध करे इस प्रकार उपचार करके
मन करे ॥

शिरोत्पात पर ।

सर्पिःशैद्रं चांजनं स्याच्छिरोत्पातस्य भेषजम् ।

तद्भस्मैधवकासी संस्तन्यपिष्टं च पूजितम् ॥

अर्थ—शिरोत्पातपर घी, सहत और रसोत अथवा सैधानिमक और हीरा-कसीस ये स्त्रीके द्रुधमें घोटकर देवे यह औषध उत्तम है ॥

फणिताद्यंजन ।

शिराहर्षे अंजनं कार्यं फाणितं मधुसंयुतम् । मधुना तार्क्ष्यं शैलं च का
सीसं वासमाक्षिकम् ॥ वेतसाम्लस्तस्य युतं फाणितं तु सैधवम् ।
पित्ताभिष्यंदशमनोविधिश्चात्रापियोजयेत् ॥

अर्थ—शिरोत्पात और शिराहर्षे इनपर राव और सहत डालके इसका
अथवा रसोत और गिलाजीत सहतमें पीस इसका अथवा हीराकसीसको
सहतसे अथवा अमलवेत, राव और सैधानिमक इनका अंजन लगावे तथा
पित्ताभिष्यंद नाशक सर्व विधिकरे ॥

सत्रणशुक्रलक्षण ।

निमग्ररूपंतु भवेद्धि कृष्णे सूच्ये व विद्धं प्रतिभातियद्वे ।

स्रावं स्रवेदुष्णमतीव यच्च तत्सत्रणं शुक्रमुदाहरंति ॥

अर्थ—नेत्रके काले भागमें शुक्र कहिये फूलसा होजाय और वह भीतरसे
गडासा होजाय उसमें सुई चुभानेकीसी पीडा होवे, तथा नेत्रोंसे अति गरम
और बहुत स्राव होवे; इस रोगको सत्रण शुक्र कहते हैं इसमें पीडा बहुत
होती है सतमें पीडा होना ठीक है और नेत्र सरीखे सुकुमार ठिकानेपर तो
विशेष पीडा होती है ऐसे भोजविदेहादिकोंका मत है ॥

असाध्यमेंभी साध्यत्व ।

दृष्टेः समीपेन भवेत्तु यत्तु न चावगाढं न च संस्रवेद्धि ।

अवेदनं वानचयुग्मशुक्रंतत्सिद्धिमायातिकदाचिदेव ॥

अर्थ—जो शुक्र (फूल) दृष्टिके समीप होय नहीं और एक त्वचामें होय
बहुत स्रवे (क्षरे) नहीं, जिसमें पीडा न होय और एकही स्थानमें दो वृंद
(फूल) न होय, ऐसा शुक्र कदाचित् अच्छाभी होजाय परन्तु इनसे विपरीत
लक्षण दृष्टिके समीप होना, दूसरी त्वचामें होय बहुत स्रवे पीडा होय एक
स्थानमें दो वृंद होय यह शुक्र अच्छा नहीं होय ॥

करंजबीजवर्ती ।

पालाशपुष्पस्वरसैर्बहुशःपरिभाविता ।
करंजबीजवर्तिस्तुदृष्टेःपुष्पंव्यपोहति ॥

अर्थ—कजेके बीजोको पीसके बत्ती बनावे, उमको पलासके फूलोंके रसकी बहुत भावना देवे, फिर इसको नेत्रोमे फेरा करे तो नेत्रके फूलेका नाश करे ॥
समुद्रफेनादि वर्ती ।

समुद्रफेनसिंधूत्थशंखदक्षांडवल्कलैः ।
शिशुबीजयुतैर्वर्तिःशुक्रादीञ्छस्त्रवल्लिखेत् ॥

अर्थ—समुद्रफेन, सैधानिमक, शंख, सुरगेके अडकी जरदी और सहज-नके बीज इनकी बत्ती बनायके शुक्रादिकोपर फेरे तो यह शंखके समान शुक्रादिकोंका लेखन कर ॥

चद्रोदयवर्ती ।

रसांजनंसशैलेयंकुंकुमंसमनःशिला । शंख सश्वेतमरिचंशर्क
राचैवसप्तमम् ॥ एपाचंद्रोदयानामवर्तिर्वेदेहनिर्मिता । हन्यात्पि
ल्लंचकंडूंचशुक्रंसतिमिरार्बुदम् ॥

अर्थ—रसोत, शिलाजीत, केशर, मनसिल, शंख, सपेद मिरच और मिश्री इन सबको एकत्र घोटके बत्ती बनावे यह 'चद्रोदयवर्ती' विदेहराजाने निर्माण करी है । यह पिल्ल, कडू, शुक्र, तिमिर और अर्बुद इनको नाश करे ॥

अत्रणशुक्र लक्षण ।

स्यंदात्मकंकृष्णगतंसचोपंशंखेन्दुकुंदप्रतिमावभासम् ।
वैहायसाभ्रप्रतनुप्रकाशमथाव्रणंसाध्यतमंवदंति ॥

अर्थ—अभिष्यदसे उत्पन्न होकर नेत्रोंके काले भागमे चोप (कहिये सींग तुमडीकी पीडा) युक्त, शंख चन्द्र कुन्दपुष्प इनके समान सफेद आकाशके समान पतला ऐसा जो व्रणरहित शुक्र होय, उसको मुखसाध्य कहते है ॥

अत्रणशुक्रके असाध्यलक्षण ।

गंभीरजातंवहलंचशुक्रंचिरोत्थितंवापिवदंतिकृच्छ्रम् ।

अर्थ—जो शुक्र गंभीर हो अर्थात् दो तीन त्वचाके भीतर हुआ हो तथा मोटा हो उसको कृच्छ्रसाध्य कहते है ॥

तथा असाध्यलक्षण ।

विच्छिन्नमध्यं पिशितावृतं वाचलं शिरासूक्ष्ममदृष्टिकृच्च ।

द्वित्वग्गतं लोहितमंततश्च शिरोत्थितं चापि विवर्जनीयम् ॥

अर्थ—जो शुकके बीचका मांस गिर जाय, इसीसे शुकके स्थानमें गढेला हो जाय, अथवा इसके विपरीत कहिये पिशितावृत (अर्थात् उसके चारों ओर मांस होय) चंचल कहिये एक ठिकाने न रहे, शिरान्करके व्यात हो, बारीक होगया हो दृष्टिनाश करनेवाला (यह दृष्टेः समीपे न भवेत्) इसका उलटा है, दो पटल कहिये परदोंके भीतर भया हो चारों ओरसे लाल हो और बीचमें सफेद बहुत दिनका शुक हो ऐसेको वैद्य त्यागदे ॥

प्रकारांतर ।

उष्णाश्रुपातः पिडिका च नेत्रे यस्मिन् भवेन्मुद्गनिभंचशुकम् ।

तदाप्यसाध्यं प्रवदंतिकेचिदन्यच्च यत्तिरिपक्षतुल्यम् ॥

अर्थ—जिसके नेत्रोंसे गरम अश्रुपात (आंसू) गिरकर पिडिका उत्पन्न होवे (दो पटलमें शुक जानेसे ये लक्षण होतेहैं) तथा जिसमें मूंगके बराबर शुक होवे ऐसा नेत्रका शुक असाध्य है और जो तीतरके पंखके समान (कहिये काले रंगका) होवे, उसकोभी असाध्य कोई २ कहते हैं ॥

शशकादि घृत ।

शशकस्य कपाये तु घृतप्रस्थं विपाचयेत् । कल्कंदद्यात्तु सक्षीरं

यथोक्तान्कर्पसंमितान् ॥ सारिवामधुकंलाक्षाचंदनं नीलमुत्प

लम् । बलाचातिबलाचैव मृणालं पत्रकं तथा ॥ कार्पिकं सविपा

लोभ्रं जीवनीयगणान्वितम् । घृतमेतत्प्रयोक्तव्यं पानेन स्येच पूर

णे । अजकामर्जुनं काचं पटलं शुकमेव च ॥ तथा शिरो गान्सक

लान्वातपित्तोत्तराञ्जयेत् ॥

अर्थ—शशके मांसके काठेमें ६४ तोले घी डालके उसमें दूध और सारिवा, मुल्हदी, लाख, चंदन, नीलाकमल, चिरडी, अतिबला, कमलकंद, पत्रज, अतीस, लोभ्र और जीवनीयगणकी औषधी इनका एक २ तोले कल्क डालके पचावे, जब सिद्ध हो जावे तब स्नानको देव अथवा नस्यार्थ, अथवा नेत्र पूरणार्थ देवे तो अजका, अर्जुन, काच, पटल, शुक और पित्ताधिक संपूर्ण नेत्र रोगोंको नाश करे ॥

लामज्जकाद्यंजन ।

लामज्जकोत्पलसितासारिवाचंदनद्रव्यैः । कार्पिकैःसारिवाप्र
स्थंक्वाथयेत्सलिलाढके ॥ पादशेषंपरिस्राव्यपचेदादर्विलेप
नात् । भाजनेलोहशैलेवाप्रातस्तत्सायमंजनम् ॥ प्रधानमेत
च्छुक्रघ्नंघ्रणशुक्रंशमंनयेत् ॥

अर्थ—नेत्रवाला, कमल, मिश्री, सारिवा, चंदन, रक्तचंदन ये प्रत्येक
तोले २ ले तथा सपेदसारिवा (गौरीसर) ६४ तोले ले १०२४ तोलेजलमें
डालके ओंटावे जब चतुर्थांश काठा रहे तब उतारके छान लेवे, फिर इसको
ओंटावे जब कलछासे चिपटने लगे तब उतारके लोहेके पात्रमें अथवा
पत्थरके वासनमें भरके धर रखे, इसका सायंकालमें अंजन करे तो शुक्र
और घ्रणशुक्र इनको नाश करनेमें परमोत्तम है ॥

श्यामामूलकपाय ।

श्यामामूलकपायंघामधुनाव्रणशुक्रिणाम् ॥

अर्थ—सारिवाकी जडका काठा सहत डालके घ्रणशुक्रपर देवे ॥

चंदनादिवर्ती ।

चंदनंगैरिकंलाक्षामालतीकलिकान्विता ।

घ्रणशुक्रहरीवर्तिःशोणितस्यप्रसादनी ॥

अर्थ—चंदन, गेरू, लाख, चमेलीकी कली इनको पीसके वत्तीवनावे तो
घ्रणशुक्रका नाश करे तथा रुधिरको स्वच्छ करे ॥

सघ्रणशुक्रप्रतीकार ।

घ्रणाशुक्रप्रशांत्यर्थपडंगगुगुलुंपचेत् ।

शिरसोवाहरेद्रक्तंजलौकाभिश्चलोचनात् ॥

अर्थ—घ्रणशुक्र नाश विषयमें पडंगगुगुल देवे, तथा मस्तकका और
नेत्रोंका जोख लगायके रुधिर निकालना चाहिये ॥

सैंधवादि घृत ।

सैंधवांत्रिवृत्काथेत्रिवारंपाचयेद्घृतम् ।

पित्वासर्वेषुशुक्रेषुशीघ्रंक्षुर्याच्छिराव्यधम् ॥

अर्थ—संपूर्ण शुक्र रोगपर निशोधके फाटमें सैंधानिमक डालके तीनवार
धी पचाये, इस घीको पीतेही फस्त खोले ॥

यष्ट्याहादि आश्चोतन ।

यष्ट्याह्वदाव्युत्पलपद्मलाक्षाप्रपौंडरीकंनलदांबुनाच ।

आश्चोतनंस्त्रीपयसाविपक्वंनिहंतितत्सत्रणदाहशुक्रम् ॥

अर्थ—मुलहठी, दारुहलदी, नीलाकमल, कमल, लाख, पुंडरीकवृक्ष और जटामांसी, नेत्रवाला इनका काठा करके स्त्रीका दूध डालके आंटावे और इसकी बूंद नेत्रमें डाले तो व्रणशुक्र और दाह इनको नाश करे ॥

लोहादि गुग्गुल ।

अयःसयष्टीत्रिफलाकणानांचूर्णानितुल्यानिपुरेणनित्यम् ।

सर्पिर्मधुभ्यांसहभक्षितानिसर्वाणिशुक्राणिनिहंतिशीघ्रम् ॥

अर्थ—लोहभस्म, मुलहठी, हरड, बहेडा, आंवला और पीपल इनका समान भाग चूर्ण करके एकत्र करे, तथा सब चूर्णके समान गुग्गुल डालके एकत्र करे, इसको सहत और घीडालके भक्षण करे तो नेत्ररोग संबंधी सर्व शुक्रोंको नाश करे ॥

पटोलादि घृत ।

पटोलंकटुकादावीनिववासाफलत्रिकम् । दुरालभांपर्पटकंत्रा

यंतींचपलोन्मिताम् ॥ प्रस्थमामलकानांचक्वाथयेत्तुल्वणंभसि ॥

तेनपादावशेषेणघृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ कल्कैर्भूनिवकुटजमु

स्तयष्ट्याह्वचंदनैः । सपिप्पलीकैस्तत्सिद्धंचक्षुष्यंशुक्रयोजि

तम् ॥ नाशाकर्णाक्षिवर्तमत्वङ्मुखरोगव्रणापहम् । कामलाज्व

रवीसर्पगंडमालापहंपरम् ॥

अर्थ—पटोलपत्र, कुटकी, दारुहलदी, नीम, अहूसा, त्रिफला, धमासा, पित्तपापडा और त्रायमाण ये प्रत्येक ४ तोले लेंवे, आंवलोंका रस ६४ तोले और जल १०२४ तोले, घी ६४ तोले, चिरायता, कूडाकी छाल, नागरमोथा मुलहठी, चंदन और पीपल, इनका एक २ तोले कल्क डालके घृत सिद्ध करे, इसको शुकुरोगपर देवे तो नेत्रोंको हित होय है, तथा नाक, कान, नेत्रकेपलक नेत्रकी त्वचा, मुखरोग, व्रण, कामला ज्वर, विसर्प, गंडमाला इन सबको नाशकरे ॥

वटशीरादिअंजन ।

वटक्षरिणसंयुक्तंमुख्यंकर्पूरजंरजः ।

क्षिप्रमंजनतोहंतिकुंसुमंतद्विमासिकम् ॥

अर्थ—बड़के दूधमें कपूरको डालके खरल करे और इसका अंजन करे तो नेत्रोंसे दो महीनेका फूला कटकर गिरजावे ॥

पिप्पल्यंजन ।

संघृप्यपिप्पलीचूर्णैसफेनंकांस्यभाजने ।

सक्षौद्रंसेंधवोपेतमंजनंशुकनाशनम् ॥

अर्थ—पीपल, समुद्रफेन और सैधानिमक इनका चूर्ण और सहत इनको कोंसेके पात्रमें डालके खरल करे, फिर इसका नेत्रोंमें अंजन करे तो शुक रोगका नाश करे ॥

अंजनचतुष्टय ।

ताप्यमधुकसारोवावीजंचाक्षस्यसैंधवम् ।

मधुनांजनयोगास्युश्वत्वारःशुकनाशनः ॥

अर्थ—सुवर्णभाक्षिक, महुआकासार, बहेडा, किंवा सैधानिमक इनको सह- तमें घिसके अंजन करे ये चार योग नेत्रशुकको नाश करे ॥

कुक्कुटाद्यंजन ।

कुक्कुटांडकपालानिशंखकाचोत्थचंदनम् ।

सैंधवाधीशसंयुक्तमंजनंशुकलेखनम् ॥

अर्थ—मुरगेके अंडेका लिलका, शंख, कचिया निमक, चंदन ये समान भाग तथा सैधानिमक आधा भाग, एकत्र खरल करके अंजन करे तो शुक रोगका लेखन करे ॥

जात्यादि आश्रोतन ।

जात्याःप्रवालंमधुकंचसर्पिर्मुष्णंसुखोष्णांबुसुशीलितंच ।

आश्रोतनंशुकहरंप्रदिष्टंशुक्रापहंस्त्रीपयसामहार्हम् ॥

अर्थ—चमेलीके पत्ते, मुलहठी इनको घीमें भून गरम जलमें अथवा स्त्रिके दूधसे पीसके नेत्रोंमें बूंद छोड़े तो शुकनाश करे ॥

धात्रीफलादिषेचन ।

धात्रीफलंनिंबकापित्थपत्रंपट्याह्वलोध्रंसदिरंतिलांश्व ।

--ःकायःसुशीतो नयनेभिपिक्तःसर्वप्रकारंविनिहंतिशुकम् ॥

अर्थ-आँवला, नाँव और कैथ इनके पत्ते, मुलहठी, लोध, खैरकी छाल और तिल इनके काढेको शीतल करके नेत्रोंमें डाले तो अनेक प्रकारके नेत्र शुकको नाश करे, इसमें संदेह नहीं है ॥

अक्षिपाकात्यय ।

श्वेतःसमाक्रामतिसर्वतोहिदोपेणयस्यासितमंडलंतु ।

तमक्षिपाकात्ययमक्षिपाकंसर्वात्मकंवर्जयितव्यमाहुः ॥

अर्थ-नेत्रके कृष्णभागमें दोषोंके योगसे चारों ओर सफेद (शुक) फैल जावै यह सन्निपातजन्य अक्षिपाकात्यय नामक रोग त्याज्य है ऐसे कहा है ॥

शुकुजरोगचिकित्सा ।

श्रस्तार्यमाणंस्नाय्वर्मतथैवार्माधिमांसकम् । लोहितार्मसशु
क्लार्मकृष्णप्राप्तानिवेदयेत् ॥ अर्मवाच्यंदधिनिभंनीलरक्तम
थापिवा । धूसरंतनुयच्चाशुशुकवत्समुपाचरेत् ॥

अर्थ-काली पुतलीपर फैलनेवाले, स्नाय्वर्म, मांसार्म, लोहितार्म, शुक्लार्म, दध्यर्म, नीलार्म, रक्तार्म, धूसरार्म, इन सबपर शुकके समान उपचार करे ॥

कृष्णादि लेप ।

कृष्णालोहरजस्ताम्रशंखविंदुमसिंधुजैः । समुद्रफेनकासीसघ्नो
तोजदधिमस्तुभिः । लेखनेवाकृतेतस्यपरंधारणमिष्यते ॥

अर्थ-पीपल, लोहभस्म, ताम्रभस्म, शंख, मूंगा, सैंधानिमक, समुद्र-फेन, हीराकसीस, सुरमा इनको दहीके जलमें खरलकर लेखन करे विना धारण करे यह उत्तम है ॥

पिप्पल्यादि गुटिका ।

पिप्पलीत्रिफलालाशालोहचूर्णससैंधवम् । भृंगराजरसेर्पिष्टंगु
टिकांजनमिष्यते ॥ अर्मसतिमिरंकाचकंडूंशुकमथाजुनम् ।
आजकानेत्ररोगांश्चहन्यान्निरवशेषतः ॥

अर्थ-पीपल, हरड, बहंडा आँवला, लाख, लोहभस्म और सैंधानिमक इनको भोंगरके रसमें खरल करके गोलो बनावे, इसका अंजन करनेसे, अर्म, तिमिर, फाच, खुजली, शुक, अर्जुन, अजकानात और नेत्ररोग इनको निःशेष नाश करे ॥

कृष्णादि तैल ।

कृष्णाविडंगमधुयष्टिकसिंधुजन्मविश्वौषधैःपयसिसिद्धमिदंछ

गल्याः । तैलंनृणांतिमिरशुक्रशिरोक्षिवर्त्मपाकात्ययाञ्जय
तिनस्यविधौप्रयुक्तम् ॥

अर्थ—पीपल, वार्याविगड, मुलहठी, संधानिमक और सोंठ इनके काढ़में बकरीका दूध और तेल डालके पचावे, इसकी नस्य करनेसे तिमिर, शुक्र और मस्तकरोग, नेत्रकर्मरोग, अक्षिपाक और दृष्टिनाश इनकी नाश करे ॥
अक्षिपाकात्यय चिकित्सा ।

एवार्पुंडरीकंचगवांक्षीरावशेषितम् ।

रावाश्रुवेदनाहन्यादक्षिपाकात्ययंतथा ॥

अर्थ—खीराककडी, ईस इनके रसको और दूधको एकत्रकर ओंटावे जब केवल दूध मात्र शेष रहे तब शीतलकर नेत्रमें डाले, तां नेत्रोंकी लाली, दर्द, नेत्रपीडा और दृष्टिनाश इनकी नाश करे ॥

अजकाजात ।

अजापुरीपप्रतिमोरुजावान्सलोहितोलोहितपिच्छलाश्रुः ।

विगृह्यकृष्णंप्रपयोऽभ्युपैतितच्चाजकाजातमितिव्यवस्येत् ॥

अर्थ—काले भागमें बकरीके शुष्क चिष्टाके समान दूखनेवाला लाल हो, और गाढ़ा कुछ कालसे आँसू बहें, उसको अजकाजात ऐसे जानना चाहिये ॥
अजकाजातमें साध्यासाध्य ।

मूर्धाक्षिकर्णभ्रूगंडशंखचर्माश्रिताजका ॥ जायतेव्यथतेनेत्रंम

थ्यमानमिवांतरा । उष्णमश्रुस्रवत्यक्षिदूयतेक्लेद्यतेभृशम् ॥

असाध्यरोगसंभूतांदृष्टिजांचविवर्जयेत् । स्वयंप्रवृद्धांकठिनां

चिरकालोत्थितामपि ॥

अर्थ—मस्तक, नेत्र, कर्ण, भ्रू, गाल, ललाट और चर्म इनके आश्रयसे अजका रोग उत्पन्न होता है उससे नेत्रमें बहुत पीडा होती है नेत्रसे गरम पाणी गिरताहै । इसमें असाध्य रोगोंसे उत्पन्न होनेवाली, दृष्टिमें स्वयं उत्पन्न होनेवाली और बहुत दिनवाली अजका असाध्य जानना ॥

अजकाचिकित्साक्रम ।

साध्यरोगसमुत्पन्नांकृष्णाजांत्वजकांजयेत् । अजकायांशिरां

१ अजकाजातका भेद (विवेक) इसका कहता है । यथा—रूपैरगोभिरेष्ट्युक्तं दृष्टिगोचरेऽप्यनमम् ।
सर्वं विच्छिन्नलक्षणान्नाश्रुवत्प्रयत्नेन सा ॥

मुत्कात्रिवृचूर्णैर्विरेचयेत् ॥ घृतंवातहरैःसिद्धमजकायांप्रयोज
येत् ॥ सेकेपानेतथाभ्यंगेभोज्येदृष्टिविदांवरः ॥

अर्थ—साध्यरोगमें उत्पन्न हुआ अथवा कृष्णगतमें प्रगट ऐसा अजकाको औषध देवे अजका व्याधिपर प्रथम शिरावेध करके फिर निशोधके चूर्णसे दस्त करावे और वातनाशक औषधोंसे सिद्धकरा हुआ ये घृतका सेचन, प्राशन और अभ्यंग इत्यादि करे ॥

बल्हरमांसपुटपाकः ।

पक्ववटपत्रपुटकेविधायमांसंचवल्लकर्कटकात् ।

पुटवद्विदह्यवद्धातद्रससेकोजयेदजकाम् ॥

अर्थ—केकड़के मांसको बडके पके हुए पत्तोंमें बांधके पुटपाककी रीतिसे पककर उसका रस निकालके नेत्रोंमें डाले तो अजकाजातको नाशकरे ॥

गोस्थ्यादि-पूरण ।

गवामस्थित्वचंकांस्येविनिर्वृप्यसुखांबुना ।

पूरयेदक्षितेनाशुप्रशाम्येदजकामयः ॥

अर्थ—गौकी हड्डी और चर्म कांसेके पात्रमें शीतल जलमें विसके उस जलसे नेत्रोंको भरके निकालडाले तो अजक व्याधिका नाश होय ॥

शंखरसाश्चोत्तन ।

अंगारपक्वशंखकरसेनाश्चोत्तनांजनम् ।

कर्पूरचूर्णयुक्तेनशाम्यतेत्वजकामयः ॥

अर्थ—छोट शंखोंको अंगारपर भूनके उसका रस नेत्रोंमें निचोड़े अथवा कर्पूरके चूर्णको पीस इसका अंजन करे तो अजक रोग शांति होवे ॥

संधवादि पूरण ।

सैंधवंवाजिपादंचगोरोचनसमायुतम् ।

शैलुत्वग्रससंयुक्तंपूरणंचाजकापहम् ॥

अर्थ—सैंधानिमक, घोंडेका सुर, गोरोचन इन की छालके रसमें औटा-पके इसको नेत्रोंमें डाले तो अजका नाश करे ॥

प्रथमपटलगत दोषोंके लक्षण ।

॥ ॥

प्रथमेपटलेस्यदोषोदृष्टिव्यवस्थितः ।

अव्यक्तानिचरूपाणिकदाचिदथपश्यति ॥

अर्थ—प्रथम पटलमें दोष स्थित होनेसे वह पुरुष अव्यक्तरूप (घटपटादि पदार्थ) देखे । दृष्टिका प्रमाण सुश्रुतमें कहा है ॥

द्वितीयपटलस्थित दोषलक्षण ।

दृष्टिर्भृशंविह्वलतिद्वितीयंपटलंगते । मक्षिकामशकान्केशान्
जालकानिचपश्यति ॥ मंडलानिपताकाश्चमरीचीन्कुंडलानि
च । परिप्लवांश्चविविधान्वर्षमभ्रंतमांसिच ॥ दूरस्थानिचरूपा
णिमन्यतेचसमीपतः । समीपस्थानिदूरेचदृष्टेर्गोचरविभ्रमात् ।
यत्रवानपिचात्यर्थसूचीपाशंनपश्यति ॥

अर्थ—दूसरे पटलमें दोषके जानेसे दृष्टि विह्वल होजाय, (अर्थात् पदार्थोंके देखनेमें असमर्थ होय) उसी प्रकार नेत्रोंके आगे मक्खी मच्छर वाल जाली मंडल पताका किरण कुण्डल आदि अनेक प्रकारके जलके समूह वर्षा मेघ (बादल) अंधकार ये नहीं दीखे ये दृष्टि विह्वल होनेसे होते हैं और विषय-भ्रांतिसे दूरकी वस्तु समीप दीखे और समीपकी दूर दीखे और अनेक यत्र करनेसेभी सुईकी छिद्र न दीखें ॥

तृतीयपटल गतलक्षण ।

ऊर्ध्वपश्यतिनाधस्तात्तृतीयंपटलंगते । महान्त्यपिचरूपाणिछा
दितानीवचांवरैः ॥ कर्णनासाक्षिहीनानिविकृतानिचपश्यति ।
यथादोषंचरज्येतदृष्टिर्दोषेवलीयसि ॥ अधस्थेतुसमीपस्थं
दूरस्थंचोपरिस्थिते । पार्श्वस्थितेपुनर्दोषेपार्श्वस्थंनैवपश्यति ॥
समंततःस्थितेदोपेसंकुलानीवपश्यति । दृष्टिमध्यस्थितेदोपे
महद्भ्रस्वंचपश्यति ॥ द्विधास्थितेद्विधापश्येद्बहुधावानवस्थिते ।
दोपेदृष्टिस्थितेतिर्यगेकं वैमन्यतेद्विधा ॥

अर्थ—तीसरे पटलमें दोष जानेसे ऊपरकी वस्तु दीखे नीचेकी वस्तु नहीं दीखे, जो वस्तु बड़ी और भव्य होवे वह बखसे ढकीसी दीखे, कान नाक और नेत्र इनकरके रहित पुरुषोंको देखे, टेढ़े बाँके दीखे और जिस वातादि दोषका रुधिर मांस भेदादिकोंके सहाय होनेसे उनमें जो दोष बलवान् होय उसका जैसा रूप (रंग) हावे उसीप्रकारका दीखे अर्थात् जिस जिस दोषका जैसा वर्ण वैसा दीखे दोष नीचे स्थित होय तो समीपस्थ वस्तु नहीं दीखे और ऊपर दोष स्थित होय तो दूरकी वस्तु न दीखे और दोष पार्श्व पसवाडे

में स्थित होनेसे पसवाडेकी वस्तु नहीं दीखे और दोष दृष्टिमें सर्वत्र स्थित होवे तो उस पुरुषको सब चीज मिलीसी दीखे दृष्टिके मध्यमें दोष जानेसे बड़ी वस्तु छोटी दीखे, दो ठिकाने दोष रहनेसे एक वस्तुकी दो दीखे और दोष अव्यवस्थित (अर्थात् एकही स्थानमें स्थित न होनेसे एक वस्तुके दो टुकड़ेसे दिखलाई देवे, दृष्टिपात, दोष तिरछे स्थित होनेसे एक वस्तुके दो टुकड़े दिखलाई देवे, यह स्वरूपोंका दीखना तीसरे (पटल) से प्रारंभ होता है, सो विदेहने लिखा भी है ॥

चतुर्थपटलगततिभिरलक्षण ।

तिमिराख्यःसर्वरोगश्चतुर्थपटलगतः । रुणद्धिसर्वतोदृष्टिलिंग
नाशमतःपरम् ॥ अस्मिन्नपितमोभूतेनातिरूढेमहागदे । चंद्रा
दित्यौसनक्षत्रावंतरिक्षेचविद्युतः ॥ निर्मलानिचतेजांसिभ्राजि
ष्णुनिचपश्यति ॥

अर्थ—वह तिमिर रोग चौथे पटल (परदे) में पहुँचनेसे दृष्टिको चारों ओरसे रोक दे, इसको कोई आचारी लिंग नाश कहते हैं और कोई तिमिर कहते हैं यह अंधकारमय रोग अति बढजाय तब उस मनुष्यको आकाशमें चंद्र, सूर्य, नक्षत्र, विजली और निर्मल तेज भी यथार्थ नहीं दीखे, तेजके पुंजसे दीखे लौकिकमें इस रोगको नजला कहते हैं लिंगनाशकी निरुक्ति 'लिंग्यते ज्ञायते इत्यनेनेति', 'लिंगमिन्द्रियशक्तिस्तस्य नाशो यस्मिन्निति लिंगनाशः' अर्थात् जिस करके जाने सो काहिये लिंग (इंद्रि) उसका नाश जिसमें होय उसको लिंगनाश कहते हैं, और इसी रोगको लौकिकमें मोतिया बिंदु भी कहते हैं ॥

काचदोषकी दूसरी संज्ञा ।

सएवलिंगनाशस्तुनीलिकाकाचसंज्ञितः ॥

अर्थ—तीसरे पटलगत कांच (मोतियाबिन्दु) की उपेक्षा करनेसे वही फिर चौथे पटलमें पहुँचता है, तब उसे लिंगनाश और नीलिका कहते हैं यह रोग असाध्य है सो निमिआचारी लिखते हैं परंतु गदाधर आचारी कहते हैं विशेष काचको नीलिकाकाच कहते हैं ॥

काचोपक्रम ।

काचेरक्तंजलौकाभिर्हृत्वापूर्वोक्तमाचरेत् । शाणवैमारिचंद्रो

१ यद्यारं रक्तो दृष्टिर्देदिपटलस्थिते । चतुर्थे पटले प्राप्य मण्डलं त्यजेत्तुलः ॥ इति ।

२ काचदोषेनभिजयो यस्मिन्नपटलस्थिते । चतुर्थपटले प्रातोऽलिंगनाशः स उच्यते ॥

चपिप्पल्यार्णवफेनयोः ॥ शार्णार्धसंधवाच्छाणनवसौवीरकां
जनात् । पिष्टसूक्ष्मंशिलायांचूर्णाजननिमंशुभम् ॥ कंडू
काचकफार्तानामलानांचविशोधनम् ॥

अर्थ—काचविट्ट होनेसे जोंख लगायके रुधिर निकाले, तथा प्रथम कही
हुई सब चिकित्सा करें और मिरच पाव तोला, पीपल आधा तोला, समुद्र
फेन आधा तोला, संधानिमक पाव तोला, तथा २। तोले मसूर इन सबको
एकत्र कर बारीक खरल करे इसको चूर्णाजन कहते हैं यह खजली, काच,
कफ और मल इनका नाश करे ॥

मेपशृंगादि और शिलादि अंजन ।

समेपशृंगांजनभागसंमितः शंखांजनंकाचमलंव्यपोहति । शि
लासंधवकासीसंशंखव्योपरसांजनैः ॥ सक्षौद्रैःकाचशुक्रार्मतिं
मिरघ्नोरसक्रिया ॥

अर्थ—मेढासिंगी, सुरमा और शंख इनके अंजन काचमलका नाश करे
और मनसिल, संधानिमक, हरिकसीस, शंख, सोंठ, मिरच, पीपल और
रसोत, इनका सहतसे अंजन करे, यह काँच, शुक्र, अर्म और तिमिर इनको
नाश करे ॥

दोषरूपदर्शन ।

तत्रवातेनरूपाणिभ्रमंतीवहिंपश्यति । आविलान्यरूपाभानि
व्याविद्धानीवमानवः ॥ पित्तेनादित्यखद्योतशक्रचापताडिद्ग
णान् । नृत्यंतश्चैवशिखिनःसर्वनीलंचपश्यति । कफेनपश्ये
द्रूपाणिस्निग्धानिचसितानिच ॥ सलिलप्लावितानीवपारिजा
ड्यानिमानवः । पश्येद्रक्तेनरक्तानितमांसिविविधानिच ॥ ससि
तान्यथकृष्णानिपीतान्यपिचमानवः । सन्निपातेनचित्राणिवि
ष्टुतानिचपश्यति ॥ बहुधाचद्रिधावापिसर्वाण्येवसमंततः । ही
नांगान्यधिकांगानिज्योतीप्यपिचपश्यति ॥

अर्थ—बादासे रोगीको मलिन, फुल, छाल तिरछी और भ्रमती ऐसी
वस्तु देखे, पित्तसे सूर्य, खद्योत, (पटवोजना) इन्द्रधनुष, बिजली इनको
और नाचने वाले मोर तथा सब वस्तु नीली देखे कफसे चिनकी औ

सफेद तथा पानीमें डुबोई हुई निकालनेके समान और भारी ऐसा रूप दीखे, रुधिरसे लाल और अनेक प्रकारका अंधकार, तथा किंचित् सफेद, काली और पीली ऐसी वस्तु दीखे सन्निपातसे अनेक प्रकारके विपरीत (अर्थात् एककी अनेक दो अथवा अनेक प्रकारके रूप दीखें) होन अंगके अथवा अधिक अंगके रूप रोगी देखे और ज्योतिस्वरूपसे सब पदार्थ दीखें ॥

पित्तजन्य परिम्लायिसंज्ञक दूसरा तिभिर ।

पित्तंकुर्यात्परिम्लायिमूर्च्छितंरक्ततेजसा । पीतादिशस्तथो
द्व्योतान्नीवीनपिसपश्यति । विकीर्यमाणान्बद्योतैर्वृक्षांस्ते
जोभिरेवच ॥

अर्थ-रक्तके तेजसे मिश्रित हुये पित्तसे परिम्लाय रोग होय. इसके योगसे रोगीको दिशा, आकाश और सूर्य ये पीले दीखें और सर्वत्र सूर्य ऊगेसे दीखे तथा वृक्ष भी तेजस्वरूपसे दीखें, परिम्लायि पित्तको नील कहते हैं सो सात्यकिने लिखा है इस रोगको कोई आचारी रक्तपित्तसे होता है ऐसे कहते है सो भी लिखा है ॥

सामान्य अंजन ।

अथसंपक्वदोपस्यप्रातमंजनमाचरेत् ।

अंजनंक्रियतेयेनतद्द्रव्यंचांजनंमतम् ॥

अर्थ-दोप पक्व होनेसे प्रात कालमें अंजन करे, यह जिस औषधसे करा जाय है उस औषधको अंजन कहते है ॥

अंजनप्रकार ।

गुटिकारसचूर्णानित्रिविधान्यंजनानितु । स्नेहनरोपणंचापिले
खनंतत्रिधामतम् । कुर्याच्छलाकयांगुल्याहीनानिचययोत्तरम् ॥

अर्थ-दो अंजन, गुटिका, रस और चूर्ण ऐसे तीन प्रकारका है, फिर वह प्रत्येक स्नेहन रोपण और लेखन ऐसे तीन प्रकारके है उसको शलाकासे अथवा अंगुलीसे करे इनमें अंगुलीसे अंजन करना हीन गुण है ॥

स्नेहन, रोपण लेखनका स्वस्व ।

मधुरंस्नेहसंपन्नमंजनंस्नेहनमतम् । कपायतित्तरसयुक्सस्ने
हंरोपणंस्मृतम् । अंजनंक्षारतीक्ष्णाम्लरसेर्लेखनमुच्यते ॥

१ पापयुक्त कृमिया नीला पित्तसमुद्रा इति ॥ २ परिम्लायि परिम्लायि पित्ततेन संज्ञकम् ॥
तेनयंता दिशा पश्येत्पानिर भारहरन् इति ॥

अर्थ—तिनमें जो मधुर और स्नेहयुक्त है उसको स्नेहन कहते हैं तथा कपेला, कहुआ इन रसों करके युक्त तथा सस्नेहको रोपण और क्षार, तीक्ष्ण मरीचादि और अम्लरस इन करके युक्त है उसको लेखन कहते हैं ॥

वातजन्यतिमिर चिकित्सा ।

स्निग्धानिनस्यांजनशोधनानिपाकाःपुटानामथतर्पणंच ।

घृतस्यपानान्यथवस्तिकर्मकुर्याद्भीक्ष्णंतिमिरेनिलोत्थे ॥

अर्थ—वादीसे उत्पन्न तिमिर रोगमें स्निग्ध ऐसी नस्य, अंजन और रेचन, पुटपाक, अपतर्पण, घृतपान और वस्तिकर्म ये क्रिया करे ॥

दशमूलादि घृत ।

दशमूलादिनापक्वंघृतंदुग्धंचतुर्गुणम् ।

त्रिफलाकल्कसंयुक्तंतिमिरेवातजेपिवेत् ॥

अर्थ—दशमूलादिकोंसे सिद्ध करे हुये घृतमें चौगुना दूध और त्रिफलक कल्क डालके देवे तो वादीकी तिमिरका नाश करे ॥

रास्नादि घृत ।

रास्नाफलत्रयक्वाथेदशमूलरसेघृतम् ।

कल्केनजीवनोयानांघृतंतिमिरनाशनम् ॥

अर्थ—रास्ना, हरड, आँवला, इनका काठा, दशमूलोंका रस, जीवनीय गणोंका कल्क इनमें सिद्ध करा हुआ घृत तिमिरका नाश करे ॥

दशमूलादि घृत ।

वातिकेतिमिरेपंचदशमूलरसेघृतम् ।

त्रिवृच्चूर्णसमायुक्तंविरेकार्थंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—वातिक तिमिरपर दशमूलके रसमें घृत तयार करके उसमें निसोथका चूर्ण डालके रेचनार्थ देवे ॥

त्रिफलादि विरेचन ।

त्रिफलादशमूलानानिर्यूहंदुग्धमिश्रितम् ।

गंधर्वतैलसंयुक्तंप्रयुंजीतविरेचनम् ॥

अर्थ—त्रिफला और दशमूल इनके काठमें दूध और अंडीका तेल डालके रेचनार्थ देवे ॥

पित्तजतिमिरचिकित्सा ।

शीतांजनाश्वातनतर्पणैश्चनस्यैर्विरेकैर्मधुभिर्घृतैश्च ।

तिक्तप्रधानैस्तिमिरनिहन्यात्पित्तात्मकंशोणितमोक्षणैश्च ॥

अर्थ—पित्तात्मक तिमिर रोग होनेसे शीत अंजन, आश्वातन, अपतर्पण, नस्य, सहत और घृत, विरेचन ये कटुरस प्रधान ऐसा देवे और रुधिर निकाले ॥
प्रकारांतर ।

तिमिरेपित्तजंसर्पिर्जीवनीयवराशृतम् । पाययित्वाशिरांविध्या

त्सितैलाकुंभसैधवैः । चूर्णैर्माक्षिकसंयुक्तैरेचनंकारयेन्नरः ॥

अर्थ—पित्तात्मक तिमिर रोग होनेसे जीवनीयगण और त्रिफला, इनका काटा देकर फिर शिराबंध करे और मिश्री, इलायची, निसोथ और सैंधा-निमक, इनका चूर्ण सहतसे देकर रेचन करे ॥

बलादि घृत ।

बलाशतावरीधीरासिताशैलेयकैःपचेत् ।

त्रिफलासहितंसर्पिस्तिमिरघ्नमनुत्तमम् ॥

अर्थ—खिरेटी, शतावर, संपद, अतीस, शिलाजीत और त्रिफला, इनके काटेमें घृत सिद्ध कर देवे तो यह उत्तम तिमिरनाशक है ॥

सारिवादि वर्ती ।

सारिवात्रिफलोशीरमुक्ताचंदनपद्मकैः ।

पिष्टवर्तीकृतंहंतिपितोत्थंतिमिरंनृणाम् ॥

अर्थ—सारिवा, हरड, बहेडा, आंवला, खस, मोती, चंदन और पद्मास, इनकी बर्त्तावनायके नेत्रोंमें फेरे तो पित्तजनित तिमिरका नाश करे ॥

कफजतिमिरचिकित्सा ।

तीक्ष्णानिनस्यांजनशोधनानिपाको निपाकःपुटपाकतर्पणम् ।

घृतानिवासत्रिफलापटोलसंज्ञानिकुर्यात्तिमिरेकफोत्थे ॥

अर्थ—कफसे तिमिर रोग होनेसे तीक्ष्णनस्य, अंजन, शोधन, पुटपाक, अपतर्पण और वासाघृत, त्रिफलादिघृत और पटोलादिघृत ये औषध देवे ॥

प्रकारांतर ।

कफोद्भवेवराचव्यागृतेक्वाथेगृतंहविः ।

पाययित्वाशिरांविध्यैरेचनंतिमिरेभिपक्त् ॥

अर्थ—कफात्मक तिमिर रोगपर त्रिफला, चव्य, इनके फाँटमें घृत सिद्ध करके पीवे, तथा शिरावेध करे और रेचन देवे ॥

यूध्यादि विरेचन ।

यूथीपथ्याकणाशुंठीकुसुंभस्यांबुनिर्झरः ।

गोमूत्रकथितांशुंठीत्रिवृत्सिद्धांविरेचनम् ॥

अर्थ—जुही, हरड, पीपल, सोंठ, कसूम, इनको लेकर झरनेके जलमें डालके काढा करे, जब सिद्ध हो जावे तब सोंठ और निसोथ इनका चूर्ण डालके रेचनार्थ देवे ॥

कफतिमिरपर नस्य और अंजन ।

नस्यंमरिचयष्ट्याह्वविडंगामरदारुभिः । नैपालरुत्रिफलाशंख

कांताव्योपंचपेपिताः । वार्तिकृत्वात्रलांसोत्थमजनंतिमिरापहम् ॥

अर्थ—मिरच, मुलहठी, वायविडंग, देवदारु, इनके फल्कसे नस्य देवे और ताम्र, त्रिफला, सीप फूलमियंगू और सोंठ, मिरच, पीपल, इन सबको एकत्रकर पीस डाले, फिर इसकी बत्ती बनावे, इसको नेत्रोंमें फेरे तो तिमिरनाश होय ॥

संनिपाततिमिराचिकित्सा ।

संसर्गसन्निपातेचयथादोषोदयक्रिया ।

धात्रीरसांजनक्षौद्रसर्पिर्भिस्तुरसक्रिया ॥

अर्थ—द्वंद्वज और सन्निपात इनसे नेत्ररोग होनेसे जैसा दोष दीखे, उसीके अनुसार ओषध करे और आँवला, रसांत, इनसे रस क्रियाकरे तो वातपित्त, नेत्ररोग तिमिर और पटल इनको नाशकरे ॥

सर्वजनेत्ररोगपर ।

वातपित्तकफसान्निपातजानेत्रयोर्बहुविधामपिव्यथाम् ।

शीघ्रमेवजयतिप्रयोजितःश्लिष्टुपल्लवरसःसमाक्षिकः ॥

अर्थ—सर्हिजनके पत्तोंके रसमें सहत डालके नेत्रोंमें गेरे तो, वात, पित्त कफ इनसे उत्पन्न नेत्रकी पीडा दूर होय ॥

वर्णभेदसे लिंगनाशरोपद्विधत्व ।

वक्ष्यामिपङ्क्तिधरगौल्लिगनाशमतःपरम् । रागोरुणोमारुतजःप्र

दिष्टोम्लायीचनीलश्वतथैवापित्तात् ॥ कफाच्छीतःशोणितजः

सरक्तोसमस्तदोषप्रभवोविचित्रः ॥

अर्थ—इसके अनंतर राग भेदसे छः प्रकारका लिंगनाश होता है सो इस प्रकार वातजन्य रंग लाल होय है पित्तसे म्लायी, पीला, नीला, अथवा नीलाही रंग होय कफसे सफेद और रुधिरसे लाल, तथा सब दोषोंसे अनेक प्रकारका रंग होता है ॥

वातीक रोगके विशेषलक्षण ।

अरुणमंडलं दृष्ट्यांस्थूलकाचारुणप्रभम् । परिम्लायिनिरोगे
स्यान्म्लायिनीलंचमंडम् ॥ दोषक्षयात्कदाचित्स्यात्स्वयंतत्र
प्रदर्शनम् ॥

अर्थ—परिम्लायि रोगमें दृष्टिके ऊपर मोटा, कांचके समान लाल मण्डल होता है, वह म्लान (लाल पीला) अथवा नीला होता है, उसमें दोष घटनेसे कदाचित् देखनेकी शक्ति होय इस जगह दोष शब्द करके कोई कर्मका ग्रहण करते हैं ॥

दृष्टिमंडलगतरोगलक्षण ।

अरुणमंडलं वाताच्चंचलंपरुपंतथा । पित्तान्मंडलमानीलं कांस्या
भंपीतमेवच ॥ श्लेष्मणावहलंस्निग्धंशंखकुंदद्रुपांडुरम् । चल
त्पद्मपलाशस्थःशुक्रोर्विदुरिवांभसः ॥ मृद्यमानेचनयनेमंडलं
तद्विसर्पति । प्रवालपद्मपत्राभंमंडलंशोणितात्मकम् ॥ दृष्टिरा
गोभवेच्चित्रोलिंगनाशोत्रिदोषजे । यथास्वंदोपलिंगानिसर्वेष्वेव
भवंतिहि ॥

अर्थ—वादीसे दृष्टिमंडल लाल, चंचल और खरदरा होता है पित्तसे दृष्टि-मंडल किंचित् नीला, तथा कांचके समान पीला होवे कफसे भारी, चिकना, शंख, कुंदफलके समान और चंद्र इनके समान सफेद होय और उसके नेत्र-में हलनेवाला कमल पत्रके ऊपर पानीकी बूंदके समान ट्रेडीतिरछा सफेद बूंद फेंकीसी दिखलाईदे रुधिरसे दृष्टिमंडल मूंगाके समान अथवा लाल कमलके समान लाल होवे और त्रिदोषज लिंगनाशमें तरह २ के मंडल होय तथा सर्व दोषोंके लिंग मंडलमें वातादि दोषोंके न्यारे २ लक्षण होय ॥

आगे पीछेकहेहुए दृष्टिरोगोंकी संख्या ।

पट्टलिंगनाशाःपडिमेचरोगादृष्ट्याश्रयाःपट्टचपडेवचस्युः ।

अर्थ—पूर्वकहे लिंगनाश रोग छः और आगे विदग्ध दृष्ट्यादि बहंगये वह छः ऐसे सब मिलकर बारह दृष्टिरोग होतेहैं ॥

पित्तविदग्ध दृष्टीके लक्षण ।

पित्तेनदुष्टेनगतेनवृद्धिपीताभवेद्यस्यनरस्यदृष्टिः ।

पीतानिरूपानिचतेनपश्येत्सवैनरःपित्तविदग्धदृष्टिः ॥

अर्थ—पित्त दुष्ट होकर बढ़नेसे जिस मनुष्यकी दृष्टि पीली होय, तथा उसके योगसे उस मनुष्यको सर्व पदार्थ पीले रंगके दीखे, उस दृष्टिको पित्तविदग्ध कहते हैं ॥

पित्तविदग्ध दृष्टिकी चिकित्सा ।

रसांजनघृतक्षौद्रतालीसस्वर्णगौरिकैः ।

गोशकृद्रससंयुक्तंपित्तोपहतदृष्टये ॥

अर्थ—रसोत, घी, सहत, तालीसपत्र और सुवर्णगरू, इनको गौके गोबरके रसमें खरलकर इसका पित्त विदग्ध दृष्टीपर अंजन करे ॥

वाश्मर्यादि अंजन ।

काश्मरीपुष्पमधुकदार्वीलोध्ररसांजनैः ।

सक्षौद्रमंजनंकुर्यात्पित्तव्याधिप्रशांतये ॥

अर्थ—कंभारोके फूल, मुलहठी, लोध और रसोत, इनको पीस सहतसे अंजन करे तो पित्तव्याधिका नाशकरे ॥

श्लेष्मविदग्धदृष्टिकी चिकित्सा ।

हरेणुमगधावीजमजायाःशकृतान्वितम् ।

सकृद्रसेनांजनंवाश्लेष्मोपहतदृष्टये ॥

अर्थ—मटर और पीपलीके बीज इनको, बफरीकी लेंडीके रसमें अथवा गौके गोबरके रसमें खरलकर अंजन करे तो कफसे नष्ट दृष्टिको नाशकरे ॥

दिवांधके लक्षण ।

प्राप्तेतृतीयंपटलंचदोपेदिवानपश्येन्निशिवाक्षतेसः ।

रात्रौसशीतानुगृहीतदृष्टिःपित्तालपभावादपितानिपश्येत् ॥

अर्थ—तीसरे पटलमें दोपीपित्त जानेसे, दिनमें रोगीको नहीं दीखे, रात्रिमें शीतलताके कारण पित्त कम होनेसे दीखे ॥

रात्र्यंध (रात्रौंध) के लक्षण ।

मालतीपत्रक्षौद्रंचनिशाद्वयरसांजनैः ।

नक्तांध्यमंजनंहन्यात्कृष्णावागोमयान्विता ॥

अर्थ—चमेलीके पत्तोंका रस, हलदी, दारुहलदी और रसोत, इनको सहतमें घिसके अंजन करे अथवा गौके गोबरमें पीपल घिसके अंजन करे तो रतौंधका नाशकरे यह सर्वसंग्रहमें लिखा है ॥

दध्राघृष्टमरीचंवारात्र्यंधांजनमुत्तमम् ॥

अर्थ—मिरचको दहीमें पीसके अंजन करे, यह रात्र्यंधका नाश करे ॥

दिवांध और रात्र्यंधचिकित्सा ।

नलिनोत्पलकिंजल्कगैरिकंसशकृद्रसम् ।

गुटिकांजनमेतत्स्याद्दिनरात्र्यंधयोर्हितम् ॥

अर्थ—नीले कमलकी केशर और गेरू, इनकी गौके गोबरके रसमें गोली बनावे इसका अंजन करनेसे दिवांध्य और रात्र्यंध इनपर हितकारी होय है ॥

शुद्रशंखादिशुटी ।

नदीजशंखत्रिकटुत्रसांजनमनःशिलाद्वेचनिशेगवांशकृत् ।

सचंदनेयंगुटिकाशुकृत्वाप्रशस्यतेरात्रिदिनेनपश्यताम् ॥

अर्थ—नदीके छोटे २ शंख, सोंठ, मिरच, पीपल, रसोत, मनसिल, हलदी, दारुहलदी और चंदन इनको गोबरके रसमें पीसको गोली बनाय लेवे, इसका अंजन रात्र्यंध, दिवांध्य इनपर उत्तम है ॥

सूर्यविदग्ध दृष्टीपर ।

सूर्यदर्शनदग्धेत्क्रियांशीतांप्रथोजयेत् ।

हेमघृष्टंघृतोपेतमंजनंचोपशस्यते ॥

अर्थ—सूर्यके सन्मुख देखनेसे जिसकी दृष्टि दग्ध होगई अर्थात् दृष्टी मारी गई हो उसकी शीतल क्रिया करे, तथा अहतमें सोनेको घिसके अंजन करना परमोत्तम है ॥

रसांजनादि अंजन ।

रसांजनंहरिद्वेद्वेमालतीनिवपल्लवाः । गोशकृद्रससंयुक्तावटीन

क्तांध्यनाशिनी । एतस्याश्चांजनेमात्राप्रोक्तासार्धहरेणुका ॥

अर्थ—रसांत, हलदी, दारुहलदी, चमेलीके फूल और नीमके पत्ते इनको गोबरके रसमें घोटकर गोली बनावे, इसको डेढ मटरके बराबर घिसके अंजन करे तो रतौंधका नाश करे ॥

कणादि अंजन ।

कणाच्छागशकृन्मध्येपक्त्वातद्रसपेविता ।

अजिराद्धंतिनक्तांध्यंतद्रत्सक्षौद्रमूपणम् ॥

अर्थ—पीपलोंको बकरेकी लेंडियोंमें आंटावे और उनको बकरेकी लेंडियोंके रसमें खरल करके गोली बनावे और अंजन करे, अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, इनको सहतमें पीसके अंजन करे तो शीघ्र रतोंधको नाश करे ॥

करंजादि अंजन ।

करंजपद्मकिंजल्कचंदनोत्पलगैरिकैः ।

गोशकृद्रससंपिष्टैर्नक्तांध्येहितमंजनम् ॥

अर्थ—करंजी, कमलका पराग, चंदन, कमल और गेरू, इनको गौंके गोबरके रसमें खरल करके अंजन करे तो रतोंधवालेको हितकारी होय ॥

रसांजनादि ।

रसांजनंशिलादारुजातीपत्ररसोमधु ।

नक्तांध्यतांजयेदेतदंजनंसाधुयोजितम् ॥

अर्थ—रसोत, मनसिल, देवदारु इनको चमेलीके पत्तोंके रसमें खरलकर उसमें सहत डालके अंजन करे, इसको नेत्रोंमें लगानेसे रतोंधका नाश करे ॥

धूमदर्शके लक्षण ।

शोकज्वरायासशिरोभितापैरभ्याहतायस्यनरस्यदृष्टिः ।

धूम्रांस्तथापश्यतिसर्वभावान्सधूमदर्शीतिनरःप्रदिष्टः ॥

अर्थ—शोक, ज्वर, परिश्रम और मस्तकताप इन कारणोंसे पित्त कुपित होकर जिसकी दृष्टिमें विकार होंवे, उससे उस मनुष्यको सर्व पदार्थ धूआंके रंगके दीखे, इस रोगको धूमदर्शी वा शोकविदग्धदृष्टि कहते हैं इसमें दिनको धूआंके रंगके पदार्थ दीखे इसका कारण यहहै कि, रात्रिमें पित्तका तेज पटनेसे निर्मल दीखे ॥

ह्रस्वदृष्टिके लक्षण ।

योह्रस्वजात्योदिवसेपृक्चूद्राद्भ्रस्वानिरूपाणिचतेनपश्येत् ॥

अर्थ—जो ह्रस्वजात्य पुरुष होता है उसको दिनमें बड़े पदार्थ छोटे दीखे इसका कारण यह है कि, उस समय दृष्टिके मध्यगत दोष होता है, यह रोगभी पित्तजन्य है ॥

नकुलाध्यलक्षण ।

विद्योततेयस्यनरस्यदृष्टिर्दोषाभिपन्नानकुलस्ययद्भत् ।

चित्राणिरूपाणिदिवासपश्येत्सवैविकारोनकुलाध्यसंज्ञः ॥

अर्थ—जिस पुरुषकी दृष्टि दोषोंसे व्याप्त होकर नौलेकी दृष्टिके समानचमके वह पुरुष दिनमें अनेक प्रकारके रूप देखे इस विकारको नकुलाध्य कहतेहैं ॥

नकुलाध्यरोगकी चिकित्सा ।

वचात्रिवृच्चंदनकुंडलीचभूर्निर्वनिंवरंजनीसवासा ।

प्रस्थंजलस्यकथिताष्टभागंपिवेत्सुजीर्णेनकुलाध्यरोगे ॥

अर्थ—वच, निसोथ, चंदन, गिलोय, चिरायता, नीमकी छाल, हलदी और अडूसा इनको ६४ ताले जलमें अष्टमांश काढा करके बहुत दिनके नकुलाध्यकी पिलावे ॥

गंभीरदृष्टीके लक्षण ।

दृष्टिर्विरूपाश्वसनोपसृष्टासंकोचमभ्यंतरतश्चयाति ।

रुजावगाढंचतमक्षिरोगंगंभीरकेतिप्रवदंतितज्ज्ञाः ॥

अर्थ—जो दृष्टि वायुसे विकृत होकर भीतरको संकुचित होवे तथा उसमें पीडा होवे, उसको गंभीरदृष्टि कहते हैं ॥

आगंतुक लिंगनाश ।

वाह्यौपुनर्द्वाविहसंप्रतिष्टौनिमित्ततश्चाप्यनिमित्ततश्च ।

निमित्ततस्तत्रशिरोभितापज्ज्ञेयस्त्वभिप्यंदनिदर्शनःसः ॥

अर्थ—अभिघातज, लिंगनाश दो प्रकारका है, एक निमित्तजन्य, दूसरा अनिमित्तजन्य, तिनमें शिरोभिताप करके (विपवृक्षके फलसे मिला पवनका मस्तकमें स्पर्श होनेसे) होय उसको निमित्तजन्य कहते हैं । इसमें रक्ताभिप्यंदके लक्षण होते हैं ॥

अनिमित्तके लक्षण ।

सुरार्पिगंधर्वमहोरगाणांसंदर्शनेनापिचभास्करस्या हन्येतदृष्टि

मनुजस्ययस्यसालिंगनाशस्त्वनिमित्तसंज्ञः ॥ तत्राक्षिविस्पष्ट

मिवावभातिवैडूर्यवर्णाविमलाचदृष्टिः ॥

अर्थ—देव, ऋषि, गंधर्व, महासर्प और सूर्य इनके सम्मुख दृष्टिको लगाकर (टक टकी लगाकर) देखनेसे जिस मनप्यकी दृष्टि नष्ट होय, उसको अनि-

मित्त लिंगनाश कहते हैं, इस रोगमें नेत्र स्वच्छ दीखते हैं और दृष्टि वैदूर्य-
माणिके समान स्वच्छ कहिये श्यामवर्ण होय । अब कहते हैं कि देवादिक
भौतिक इंद्रियोंको नहीं विगाडे परन्तु उनको शक्तिका नाश करते हैं सो
चरकमें लिखा है ॥

नेत्रार्मपर मरिचादि लेप ।

संचूर्ण्यमरिचाक्षेचरजन्यारसमर्दिते ।

लेपनादर्मणानाशं करोत्येवप्रयोगराट् ॥

अर्थ—काली मिरच और बहेडेको हलदीके रसमें खरल करे, इसका
अर्मरोगपर लेप करे तो अर्मरोगका नाश होय ॥

पुष्पाक्षतादि रसक्रिया ।

पुष्पाक्षताक्ष्यंजसितोदधिफेनशंखसिंधूत्थगैरिकशिलामरिचैः
समांशैः। पिष्टैस्तुमाक्षिकरसेनरसक्रियेयंहंत्यर्मकाचतिमिरार्जु
नवर्त्मरोगान् ॥

अर्थ—सोंफ, सुरमा, रसांजन, मिश्री, समुद्रफेन, शंख, सैंधानिमफ, गेरू,
मनसिल और मिरच ये समान भाग ले फिर सहतसे घोंटे और इसकी बूँद
नेत्रोंमें डाले तो काच, तिमिर, अर्जुन और वर्त्मरोग इनको नाश करे ॥

शुक्ति रोग ।

श्यावाःस्युःपिशितनिभास्तुविन्दवोये

शुक्त्याभाःसितिनियताःसशुक्तिसंज्ञः ॥

अर्थ—नेत्रके सफेद भागमें श्यामवर्ण मांसतुल्य सीपीके समान जो विंदु
होय उसको शुक्ति कहते हैं ॥

शुक्तिरोगपर सामान्य यत्न ।

क्रियांशुक्त्यामयेकुर्यात्पित्ताभिप्यंदजिच्छुभाम् । वलासा
ह्वयपिष्टेकार्यंशोणितमोक्षणम् ॥ कफाभिप्यंदजित्सर्वक्रमं
कुर्याद्विचक्षणः । अंजनंकट्फलव्योपवीजपूररसांजनेः ॥

अर्थ—शुक्तिरोगपर पित्ताभिप्यंदनाशक क्रिया करे, यदि शुक्तिरोग कफा-
धिक होवे तो रक्तस्राव करे और कफाभिप्यंद नाशक सर्व औषध देवे, तथा
कायफल, सोंठ और रसांत इनको विजारेके रसमें घोंटकर अंजन करे ॥

अर्जुन ।

एकोयःशशरुधिरोपमश्चविंदुःशुक्लस्थोभवतितदर्जुनेवदंति ॥

अर्थ—शुक्ल भागमें शशके रुधिरके समान जो विंदु (बूँद) नेत्रमें उत्पन्न होय उसको अर्जुन कहते हैं ॥

अर्जुनकी सामान्य चिकित्सा ।

अर्जुनेशर्करामस्तुक्षौद्रैराश्वातनंहितम् । शंखःक्षौद्रैणसंयुक्तः
कतकःसैधवेनवा । शितयार्णवफेनोवापृथगंजनमर्जुने ॥

अर्थ—नेत्रार्जुनपर खाँड़, दहाका जल और सहत इनको एकत्र करके इसकी बूँद नेत्रमें निचोड़े अथवा सहतमें शंखको घिसके लगावे अथवा निर्मलीके बीजकी और सैधनिमकको अथवा समुद्रफेन और मिश्रीको घिसकर अंजन करे ॥

पिष्टक ।

श्लेष्ममारुतकोपेनशुक्लेमांससमुन्नतम् ।

पिष्टवत्पिष्टकंविद्धिमलाक्तादर्शसन्निभम् ॥

अर्थ—कफ वायुके कोपसे शुक्ल भागमें पिष्ट (पिसा) सा जो मांस बढे उसको पिष्टक कहते हैं, वो मलसे मिले अर्श (चवासीर) के समान होता है ॥
जाल ।

जालाभःकठिनशिरोमहान्सरक्तःसंतानःस्मृतइहजालसंज्ञितस्तु ॥

अर्थ—नेत्रके सफेद भागमें शिरा (नस) का समूह जालीके समान होय और वह कठिन तथा रुधिरके समान लाल होवे, उसको जाल कहते हैं ॥

शिराजपिटिका ।

शुक्लस्थाःसितपिटिकाःशिरावृताया

स्तात्रूयादसितसमपिजाःशिराजाः ॥

अर्थ—नेत्रके शुक्ल भागमें शिरा (नसों) से व्याप्त ऐसी सफेद कुंसी होय, उसको शिराज पिडिका कहते हैं वह कृष्णभागके समीप होती है ॥

चलास ।

कांस्याभोमृदुरथवारिविंदुकल्पोविज्ञेयोनयनसितेचलाससंज्ञः ॥

अर्थ—नेत्रके शुक्ल भागमें कांसके समान कठिन अथवा पानीकी बूँदके समान कुछ ऊँची जो गाँठ होय, उसको चलास कहते हैं ॥

१ मादती पाठित. श्लेष्मा शुक्लभागे व्यवस्थित. ॥ जलविंदुरोपेच्छूतो मृदुः स्यात्संभवः ॥ जलासंज्ञितं भवति शोके दृष्टमाश्लेषम् ॥

पूयालस ।

पक्कःशोथःसंधिजोयःसतोदःस्रावेत्पूयंपूतिपूयालसारख्यः ॥

अर्थ-नेत्रकी संधिमें सूजन होवै और पक्कर फूटजाय, उसमेंसे दुर्गंधि और राध बहे तथा तोद सुई छेदनेकीसी पीडा होय उसको पूयालस कहते हैं ॥

पूयालसकी चिकित्सा ।

पूयालसेशिरांभित्वालेपोपनाहकर्मभिः ।

नेत्रपाकविधिकुर्यात्परमुक्तांजनंहितम् ॥

अर्थ-पूयालस नेत्ररोग होगया होय तो शिराबंध करके फिरलेप और पिडी बांधे तथा नेत्रपाककी विधि तथा मुक्तांजन इत्यादि उपचारकरे ॥

पूयालसपर अंजन ।

आर्द्रकस्वरसैर्घृष्टंसिंधुकासीससंमितम् ।

छायाशुष्कांवाटोकुर्यात्पूयाख्येहितमंजनम् ॥

अर्थ-संधानिमक, हीराफसीस इनका समान भागले अदमखके रसमें खरल करके गोली बनावे इसको छायामें सुखायके इसको पूयाख्य व्याधिपर नेत्रमें अंजन करे ॥

उपनाह ।

ग्रंथिर्नाल्पोद्दृष्टिसंधावपाकीकंडूप्रायोनेरुजस्तूपनाहः ॥

अर्थ-नेत्रकी संधिमें बडी गांठ होवै, वह थोडी पके उसमें खुजली बहुत हो दूखे नहीं, उसको उपनाह ऐसे कहते हैं ॥

उपनाह और अलजीवा यत्न ।

हितोपनाहोत्वलजौपिप्पलीमधुसंधवैः ।

विलिखेन्मंडलाग्रेणप्रयच्छेद्वासमततः ॥

अर्थ-उपनाह और अलजी इन व्याधियोंपर पीपल, सहत और संधानिमक, इनको एकत्र कर इसको मंडलाग्र शस्त्र (सलाई) पर रखके इससे लेखन कर्म करे, किंवा पूर्वोक्त औषधोंको नेत्रोंमें डाले ॥

स्राव अथवा नेत्रनाडी ।

गत्वासंधीनश्रुमार्गेणदोषाःकुर्युःस्रावाँलक्षणेःस्वरूपेतान् ।

तंहिस्रावंनेत्रनाडीतिचैकेतस्यालिंगंकीर्तयिष्येचतुर्था ॥

अर्थ-वातादि दोष अश्रुमार्गसे संधियोंमें प्राप्त होकर स्वकीय लक्षणयुक्त

साव उत्पन्न करे, उस सावको कोई नेत्र नाडी कहते हैं यह रोग चार प्रकार का है उसके लक्षण कहते हैं * शंका-कपोजो वातका साव क्यों नहीं कहा * उत्तर-वातमें साव नहीं होताहै इसीसे विदेहने चारही प्रकारके साव कहेहैं ॥

पाकःसंधौसंस्त्रवेद्यस्तुपूर्यंपूयास्रावोऽसौगदःसर्वजस्तु । श्वेतंसां
द्रं पिच्छलं संस्त्रवेद्विश्लेष्मास्रावोऽसौविकारो मत्स्तु ॥ रक्तास्रा
वःशोणिताद्योविकारःस्रवेदुष्णंतत्ररक्तंप्रभूतम् । हरिद्राभंपीत
मुष्णंजलंवापित्तात्स्रावःसंस्त्रवेत्संधिमध्यात् ॥

अर्थ-पूयास्राव नेत्रकी संधिमें मूजन होकर पके, तथा उसमेंसे राध बहे यह रोग सन्निपातात्मक है, श्लेष्मास्राव जिसमेंसे सफेद गाढी और चिकनी राधबहे । रक्तास्राव जिस विकारमें विशेष गरम रुधिर बहे, उसको रक्तास्राव कहते हैं । पित्तास्राव जिसकी संधिसे हलदीके समान पीला गरम जल बहे उसको पित्तास्राव कहते हैं ॥

सावचिकित्सा ।

स्रावेषुत्रिफलाकाथंयथादोषंप्रयोजयेत् ।

क्षौद्रेणाज्येनपिप्पल्यामिश्रंविधेच्छिरातथा ॥

अर्थ-स्रावके दोषको विचारके उसीके अनुसार त्रिफलेके काठमें सहत, धी, अथवा पीपल डालके देवे, उसी प्रकार शिरावेध करे (फस्त खोले) ॥

पथ्यादिवर्ती ।

पथ्याक्षधात्रीफलमध्यबीजैस्त्रिद्व्येकभागैर्विदधीतवर्ति ।

तयांजयेदस्रमतिप्रवृद्धमक्षुणोर्हरेत्कष्टमपिप्रकोपम् ॥

अर्थ-हरड, बहेडा और आंवला इनके फलके भीतरकी मिर्गी लेवे उसको पीसके वर्ती करे इसको नेत्रोंमें फेरे नेत्रोंसे अति पित्त रुधिरको हरण करे ॥

पर्वणी और अलजी ।

ताम्रातन्वीदाहपाकोपपत्राज्ञेयावैद्यःपर्वणीवृत्तशोथा ।

जातासंधौशुकुकृष्णेलजिस्त्यात्तस्मिन्नेवऽख्यापितापूर्वलिङ्गे ॥

अर्थ-नेत्रकी सफेद काली संधियोंमें ताँबेके समान छोटी गोल जो फुंसी होवे और वह फुंसी दाह होकर पके उसको पर्वणी कहते हैं ॥

और उसी ठिकाने पूर्वरूप संयुक्त बड़ी फुन्सी उठें, उसको अलजी कहतेहैं ॥

पर्वणी और अलजीमें इतनाही अंतर है कि, अलजी बड़ी फुन्सी होती है और पर्वणी छोटी फुन्सी होती है यह विदेहका मत है ॥

शिराविध ।

पर्वणीपिटिकासंधिभागेच्छिद्यादसंशयम् ।

हितमाश्चोतनंतत्रयोजयेन्मधुसैंधवैः ॥

अर्थ—पर्वणिका नामक पिटिका (फुन्सी) का निःसंशय संधि भागमें छेदन करे और सहत, सैंधानिमक पीसके नेत्रमें घूंद डाले ॥

कृमिग्रंथी ।

कृमिग्रंथिर्वर्त्मनःपक्ष्मणश्चकंडूंकुर्युःकृमयःसंधिजाताः ।

नानारूपावर्त्मशुक्लांतसंधौचरंत्यंतर्नयनंदूपयंतः ॥

अर्थ—जिसके नेत्रके शुक्ल भागकी संधिमें और पलकोंकी संधिमें उत्पन्न हुई अनेक प्रकारकी कृमि खुजली और गांठ उत्पन्न करे और नेत्रके पलक और सफेदी भागकी संधिमें प्राप्त होकर नेत्रके भीतरके भागको दूषित करे, भीतर फिरे उसको कृमिग्रंथि कहते हैं यह सन्निपातात्मक कहते हैं सो विदेहका भी मत है ॥

जंतुग्रंथी चिकित्सा ।

त्रिफलामृतकासीससैंधवैःसारसाञ्जनैः ।

रसक्रियांकृमिग्रंथौमिन्नेस्यात्प्रतिसारणाम् ॥

अर्थ—कृमिग्रंथि पर त्रिफला दूध, हीराकसीस, सैंधानिमक और रसातल डाले और यदि कृमिग्रंथि फूट गई होवे तो प्रतिसारविधि करे ॥

उत्संग पिटिका ।

अभ्यंतरमुखीताम्रावाह्यतोवर्त्मतश्चया ।

सोत्संगोत्संगपिटिकासर्वदास्थूलकंडुराः ॥

अर्थ—नेत्रके ढकने वाली बाफणी अर्थात् कोणमें फुन्सी होय और उसका मुख भीतर होय, वह लाल बड़ी तथा खुजलीसंयुक्त होय, उसको उत्संग पिटिका कहते हैं यह सन्निपातसे होती है । गदाधर और विदेहके मतसे

१ पर्वणी पिटिका तत्र जायते तं कुपोषणम् । शूद्रकृष्णांतसंधौच जननयोस्तथावृत्तिम् ॥ पिटिकामलजं तो तु विद्धितोदायुसंकुलम् ॥ इति ॥

२ ततः पूषममृच्छणाः पतति कृमयस्तथा । लक्षणैर्विधेयुक्ताः सन्निपातसमुत्पिताः ॥ कृमिग्रंथे तु संनिपातैर्दिना नेत्रदूषणम् ॥ इति ॥

पलकोंके कोएके वाहर भी यह रोग होताहै। "च" इस श्लोकमें लिखा है उसका यह प्रयोजन है कि, इस जगह भी सुंगीके अंडेकासा रस स्राव जानना ॥

कुंभिका ।

वर्तमानेपिडिकाध्माताभिद्यंतेचस्रवंतिच ।

कुंभिकबीजसदृशाःकुंभीकाःसन्निपातजाः ।

अर्थ—पलकोंके समीप कुंभिकाके बीजके समान फुंसी होय, वह पककर फूटजाय और फूटकर बहे, उसको कुंभिका कहते हैं । कोई आचारी कहते हैं कि, कच्छदेशमें दाडिम (आनार) के बीजके आकार कुंभिका होती है ॥

पोथकी ।

स्नाविण्यःकंडुरागुर्व्योरक्तसर्पसन्निभाः ।

रुजावंत्यश्चपिडिकाःपोथक्यइतिकीर्त्तिताः ॥

अर्थ—जिसके कोएमें लाल सरसोंके समान रुधिर स्राव हो, गुजली संयुक्त भारी तथा पीडासंयुक्त फुंसी होय, उसको पोथकी कहते हैं ॥

वत्सशर्करा ।

पिडिकायाखरास्थूलासूक्ष्माभिरभिसंवृता ।

वर्त्मस्थाशर्करानामसरोगोवर्त्मदूपकः ॥

अर्थ—जिसके कोएमें जो पिडिका फठिन और बडी होकर सर्वत्र छोटी २ फुन्सियोंसे व्याप्त होय, उसको वर्त्मशर्करा कहतेहैं इससे कोए चिगड जाते हैं ॥

अशोवर्त्म ।

उर्वारुबीजप्रतिमाःपिडिकामंदवेदनाः ।

श्लक्ष्णाःखराश्चवर्त्मस्थास्तदशोवर्त्मकीत्यंते ॥

अर्थ—कफडीके बीजके घराघर मंदपीडा पृथक् २ फठिन ऐसी फुंसी कोएमें उठे उसको अशोवर्त्म कहते हैं, निमि (विदेह) के मतसे यह सन्निपातात्मक है ॥

शुष्काश ।

दीर्घाक्षुरःखरःस्तब्धोऽदारुणोभ्यंतरोद्भवः ।

व्याधिरपोऽतिविख्यातःशुष्काशानामनामतः ॥

अर्थ—नेत्रके कोएमें लंबे खरदरे फठिन दुःग्दपायक ऐसे जो मांसाक्षुर हों उस व्याधिको शुष्काश कहते हैं यहभी सन्निपातज है ॥

अंजन (गुहेरी) ।

दाहतोदवतीताम्रापिडिकावर्त्मसंभवा ।

मृद्धीमंदरुजासूक्ष्माज्ञेयासांऽजननामिका ॥

अर्थ—दोह तोद (चोटनी) संयुक्त लाल, नरम, छोटी, मंद पीडा करने-वाली, ऐसी फुंसी नेत्रके कोणमें होय, उसको अंजना कहते हैं, यहभी सन्निपातज है ॥

वर्त्मपक्षजरोगचिकित्सा ।

स्वेदयेद्घृष्टयांगुल्याहरेद्रक्तजलौकया । कारसंवृष्यदुर्वर्ण्यमं
जयेछोचनंमुहुः । द्वित्रिवाराञ्छमयतिकंडूदोपान्वितांजनम् ॥

अर्थ—अंजना नामक व्याधिको हाथपर डँगली घिसकर उससे सेंके तथा जोख लगायके रुधिर निकाल डाले, अथवा कार और कूठको घिसके इसका चारंवार अंजन करे, इस प्रकार दो तीनवार करनेसे खुजली, तथा सदाय अंजना शमन होय ॥

अंजननामिका पर यत्न ।

रसांजनंव्योपयुतंसंपिप्यवटकीकृतम् ।

कंडूपाकान्वितांहंतितनूमंजननामिकाम् ॥

अर्थ—रसोत सोंठ, मिरच, पीपल इनको एकत्र घोटकर गोली बनावे, इसका अंजन करनेसे कंडू और पाक इन करके युक्त अंजन रोगको नाशकरे ॥

बहलवर्त्म ।

वर्त्मोपचोयतेयस्यपिडिकाभिःसमंततः ।

सवर्णाभिःस्थिराभिश्चाविद्याद्बहलवर्त्मतत् ॥

अर्थ—जिसके नेत्रका फोंया त्वचाके समान वर्ण तथा फटिन फुन्सीन्से व्याप्त होय, उसको बहलवर्त्म रोग कहतेहैं यैर्भा सन्निपातक है ॥

वर्त्मबंध ।

कंडूमताऽल्पतोदिनवर्त्मशौथेनयोनरः ।

नसंप्रच्छादयेदक्षियत्रासौवर्त्मबंधकः ॥

अर्थ—जिसके नेत्रके फोंयोमें सूजनसे नेत्रके बराबर सूजन आय जावे, उससे उस मनुष्यको कुछ नहीं दीखे, इस रोगको वर्त्मबंधक कहते हैं इस सूजनमें खुजली चले तथा तोद (चोटनी) होय यह रोग त्रिदोषज है ॥

क्लिष्टवर्त्म ।

मृद्वल्पवेदनंताम्रयद्वर्त्मसममेवच ।

अकस्माच्चभवेद्रक्तंक्लिष्टवर्त्मैतितद्विदुः ॥

अर्थ—नेत्रके नीचे ऊपरके दोनोंको ये नरम अल्प पीडा ताविके वर्ण होकर अकस्मात् लाल होजाय तो इस रोगको क्लिष्टवर्त्म रोग कहते हैं यह रोग कफरक्तज है, यहीमत विदेहका है ॥

वर्त्मकर्दम ।

क्लिष्टंपुनःपित्तयुतंशोणितंविदेहघटा ।

तदाक्लिन्नत्वमापन्नमुच्यतेवर्त्मकर्दमः ॥

अर्थ—क्लिष्टवर्त्म फिर पित्तयुक्त रुधिरको वहन करे तब वह दही दूध माखनके समान गीला होजाय, अतएव इस व्याधिको वर्त्मकर्दम कहते हैं यह पित्ताधिकसन्निपातात्मक है ॥

श्यामवर्त्म ।

वर्त्मयद्वाह्यतोतश्चश्यावंशूनंसेवेदनम् ।

तदाहुःश्याववर्त्मैतिवर्त्मरोगविशारदाः ॥

अर्थ—जिसके नेत्रके कोणके बाहर अथवा भीतर काली सूजन होय, तथा पीडा होय, उसको वर्त्मरोगके जाननेवाले श्याव वर्त्म कहतेहैं यह वाताधिक त्रिदोषजन्य है विदेहने लिखाभी है ॥

प्रक्लिन्नवर्त्म ।

अरुजंवाह्यतःशूनंवर्त्मयस्यनरस्यहि ।

प्रक्लिन्नवर्त्मतद्विद्याक्लिन्नसत्यर्थमंतत् ॥

अर्थ—जो कोये अल्पपीडा तथा बाहरसे सूजा हुआ अत्यन्त कीचडसे व्याप्तिही उसको प्रक्लिन्नवर्त्म कहते हैं यह कफज विकारहै ॥

उसकी चिकित्सा ।

तालदारुवचाःपिप्प्यासुरसापत्रवारिणा ।

छायाशुष्काकृतावर्तिःक्लिन्नवर्त्मनिवारिणी ॥

अर्थ—हरताल, देवदारु और चच, इनके रूणको तुलसीके रसमें घोटकर

१ श्लेष्मानुष्टेन रत्नेन त्रिदोषासप्ततः समम् ॥ कर्णजोषणिके वर्त्म त्रिदोषासं तदुच्यते ॥

२ दुष्टे श्लेष्मानिलातिर्णं वर्त्मनोधीयते यदा ॥ अग्निदग्धनिर्भं इषां इषागरभैतं तद्विदुः ॥

वती बनावे इसको छायामें सुखाय वर्त्मपर फेंरे, तो क्लिन्नवर्त्मव्याधि-
को नाशकरे ॥

रसांजनाद्यंजन ।

रसांजनं सर्जरसोजातीपुष्पमनःशिला । समुद्रफेनोलवणगैरि
कंमरिचानिच ॥ एतत्समांशं मधुनापि द्वासाक्लिन्नवर्त्मनि । अंज
नं क्लेदकं दूधं पक्ष्मणां च प्ररोहणम् ॥

अर्थ—रसोत, राल, चमेलीके फूल, मनशिल, समुद्रफेन, निमक, गेरू और
कालीमिरच, इन औषधोंको समान भागले चूर्णकरे फिर सहतसे घोंटे इसका
अंजन करे, तो क्लिन्नवर्त्म, खाव और खुजली, इनको नाशकरे तथा पलकोंके
झडे हुए बाल फिर आवे ॥

अक्लिन्नवर्त्म ।

यस्य धौतान्यधौतानिसंबध्यते पुनः पुनः ।
वर्त्मन्यपरिपक्वानिविद्यादक्लिन्नवर्त्मतत् ॥

अर्थ—जिसके नेत्रके पलक धोनेसे अथवा नहीं धोनेसे वारंवार चिपक जावे
कोए पककर राधसे नहीं चिकटे तो इस रोगको अक्लिन्नवर्त्म कहतेहैं— इस रोग
को विदेह पिल्लायया कहताहै ॥

वातहतवर्त्म ।

विमुक्तसंधिनिश्चेष्टवर्त्मयस्य नमील्यते ।
एतद्वातहतं वर्त्मजानीयादक्षिंचितकः ॥

अर्थ—जिसके नेत्रके पलक पृथक् २ होय, तथा जिसके पलक मिचे और
खुले नहीं, ऐसे नेत्रके कोए मिले नहीं उसको वातहत वर्त्मशालाक्य सिद्धांत-
वाला कहता है ॥

वर्त्मपद्मजचिकित्सा ।

उत्संगिनी बहलकर्दमवर्त्मनी च श्रावं च यच्च पठितं वनिहच्च वर्त्म ।

क्लिष्टं च पोथकियुतं खलु वर्त्मयच्च कुंभीकिनी च सहशर्करया च लेल्या ॥

अर्थ—उत्संगिनी, बहलवर्त्म, कर्दमवर्त्म, श्याववर्त्म, क्लिष्ट वर्त्म, पोथकी-
वर्त्म और कुंभिनी इनको खाडसे लेखन कर्मकरे ॥

श्रेष्ठापनाहलगणं च विसंचभेद्यं ग्रंथिश्च यः कृमिकृत्तौ जननामिका च ॥

अर्थ—श्लेष्मोपनाह, लगण, विसवर्त्म, कृमिग्रंथि और अंजननामिका इनका भेदनकरे अर्थात् तोड़े ॥

सामान्य यत्न ।

स्विन्नंभित्वाविनिष्पीड्यभिन्नामंजननामिकाम् । शिलैलान
तसिंधूत्थैःसक्षौद्रैःप्रतिसारयेत् ॥ रसांजनमधुभ्यांवाभित्वाश
स्त्रेणवर्त्मवित् । प्रतिसार्याजनैर्युज्यादुष्णैर्दीपशिखोद्भवैः ॥

अर्थ—अंजननामिका फूटगई होय तो शकके दाब देय और मनसिल,इलायची, तगर, सेंधानिमक और सहत इससे अथवा रसांजन और सहत इनको युक्तिसे धिसे अथवा शस्त्रसे फोडकर गरम अंजनसे या गरम २ काजलसे धिसे ॥

पिच्छरोग ।

पित्तश्लेष्मप्रकोपेनवर्त्मांतंसंप्रकुप्यति । नात्रातिलोमशंवापि
विकृष्टंपिच्छमेवच ॥ वर्त्मावलेखंवहुशस्तद्रच्छोणितमोक्षण
म् । पुनःपुनर्विरेकंचपिच्छरोगातुरोभजेत् ॥

अर्थ—पित्त और कफ द्रूपित होनेसे नेत्रके पलकोंमें शोथ उत्पन्न होता है उसको अतिलोमश अथवा पिच्छरोग कहते हैं इस रोगमें वारंवार वर्त्मका लेखन करे, उसी प्रकार वारंवार रुधिर निकाले और वारंवार रेचन लेना ये पिच्छरोगसे पीडित मनुष्यको हितकारक है ॥

पिच्छचिकित्सा ।

पिच्छीस्निग्धोवमेत्पूर्वक्रियांव्यवसृतेसृजि । शिलारसांजनंव्यो
पगोपित्तैर्वर्तिरंजनम् ॥ पिच्छग्रंथ्यागमूत्रेणभावितंदेवदारुच ।
हरितालवचादारुसुरसारसपेपितम् ॥ अभयारससंपिष्टंतगरं
पिच्छनाशनम् ॥

अर्थ—पिच्छ रोगीको पूर्व क्रिया करके रुधिर निकाले, फिर स्नेहपान करके धमन करे और मनसिल, रसांत, सोंठ, मिरच, पीपल इनके चूर्णको गोरान्जनकी भावना देकर उसकी बत्ती करे, इनकी नेत्रोंमें फेरा करे अथवा देवदारुके चूर्णको बकरेके मूत्रका भावना देवे, वो अथवा हरताल, वच और देवदारु इनके चूर्णको तुलसीके रसकी भावना देवे, वो किंवा हरडके रसमें तगरकी भावना देवे इसको नेत्रोंमें डाले तो पिच्छरोगका नाश करे ॥

पिच्छकायत्न ।

ताम्रपात्रेगुहामूलंसिंधूत्थमरिचान्वितम् ।

आरत्नालेनसंघृष्टमंजनंपिच्छनाशनम् ॥

अर्थ—शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी इनकी जड़, संधानिमक और कालीमिरच, इनका चूर्ण करके ताम्रके पात्रमें डाल कांजीसे घोंटे, इसके लगानेसे पिच्छ-रोगका नाश होय ॥

तुत्थादि लेप ।

तुत्थकस्यपलंश्वेतमरीचानिबविंशतिः । त्रिंशद्भिकांजिकपलैः

पिद्धाताम्रेनिधापयेत् ॥ पिच्छानपिच्छान्कुरुतेबहुवर्षोत्थितान

पि । उत्सेकेनोपदेहेनकंडूशोथांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ—लीलायोथा ४ तोले, सपेद मिरच ८० तोले और कांजी १२० तोले, इन सबको एकत्र करके, उसको ताम्र पात्रमें खरल करे इसको नेत्रोंमें डाले, तो बहुत वर्षोंकाभी पिच्छरोगको नाश करे, तथा इसको सेक और पट्टी बांधनेसे खुजली दाह और सूजन इनको नाश करे ॥

पक्ष्मरोगचिकित्सा ।

रक्षत्रक्षिदहेत्पक्ष्मतप्तलोहशलाकया । पक्ष्मकोपेपुनर्नैवकदा

चिद्रोगसंभवः ॥ पुष्पकासीसचूर्णवासुरसारसभावितम् । ताम्रे

दसाहंतद्योज्यंपक्ष्मशातनलेपनम् ॥

अर्थ—पक्ष्मकोप होनेसे नेत्रोंको बचायके लोहेकी शलाईसे पलकोंको दाग देवे तो फिर परवल नहींहो, अथवा नीलाहीराकसीसको तुलसीके रससे ताँबेके पात्रमें दशदिन पर्यंत भावना देवे, फिर इसका लेप करे तो पक्ष्मको-पका अर्थात् परवालोंका नाश करे ॥

अर्बुद ।

वर्तमान्तरस्थंविपमंग्रंथिभूतमवेदनम् ।

आचक्षतेऽर्बुदमितिसरक्तमवलंबितम् ॥

अर्थ—जिसके फोफेके भीतर गोल मंदवेदनायुक्त कुछ लाल जल्दी बढ-नेवाली ऐसी जो गांठ होय, उसको अर्बुद कहते हैं यह भी सन्निपातज है ॥

निमेप ।

निमेपिणोःशिरावायुःप्रविष्टोवर्त्मसंश्रयः ।

प्रचालयतिवर्मानिनिमेपंनामतंविदुः ॥

अर्थ—वर्माभित (कौएमें स्थित) जो वायु सो निमेष (कहिये पलकके उघाडने मूंदनेवाली नसमें प्रवेश होकर वारंवार पलकोंको चलायमान करे, उसको निमेष (नेत्रका मिचकाना) कहते हैं, विदेहने भी लिखा है कि, यह रोग सन्निपातज है ॥

वर्त्मपक्ष्मजरोग चिकित्सा ।

निमेपंनाशमायातिसर्पिस्तेनचपूरणम् ॥

अर्थ—नेत्रोंमें घृत डालके भरनेसे निमेष शांति होवे ॥

शोणितार्श ।

वर्त्मस्थोयोविवर्धेत लोहितोमृदुरंकुरः ।

तद्रक्तजंशोणितार्शच्छिन्नंछिन्नंप्रवर्धते ॥

अर्थ—रुधिरके संबंधसे नेत्रके कोणके भीतरीभागमें लाल तथा नरम अंकुर बढे, उसको शोणितार्श कहते हैं इसको जैसे २ काटें तैसे २ बढता है इस रक्तजव्याधिको विदेह आचारी असाध्य कहते हैं ॥

लगण ।

अपाकीकठिनःस्थूलोग्रंथिर्वर्त्मभवोऽरुजः ।

सकंडूःपिच्छिलःकोलसंस्थानोलगणस्तुसः ॥

अर्थ—नेत्रके कोएमें बरके समान बडी कठिन खुजली संयुक्त चिकनी गांठ होय, उसको लगण कहते हैं । यह रोग कफजन्य है, इसमें पीडा और पकना नहीं होय ॥

लगणका यत्न ।

रोचनाक्षारतुत्थानिपिप्पल्यःशौद्रमेवच ।

प्रतिसारणमेकैकंभिन्नेलगणइष्यते ॥

अर्थ—गोरोचन, जवाखार, लीलायोथा और पीपल इन १ त्येकको सहतसे लगन फटनेपर प्रतिसारण करे ॥

विसवर्त्म ।

त्रयोदोपावहिःशोथंकुर्युश्छिद्राणिवर्त्मनोः ।

१ निमेषिणीः शिरावायुः प्रविश्य व्यरतिष्ठते । अत्यर्थं चलते घर्मे निमेषः स न सिध्यति ॥

२ वायुः शोणितमादाय शिरागो ममुद्ये स्थितः । जनयत्यूरं तात्र वर्त्मनि च्छिद्ररोहणम् ॥

३ रक्तशोणितार्शोऽसाध्यः स्वादान्नाप्यन्यथ रक्तजम् ॥

प्रस्रवत्यंतरुदकंविसवद्विसवर्त्मतत् ॥

अर्थ—तीनों दोष कुपित होकर नेत्रके कोयोंको सुजाय देवे, तथा उनमें छिद्र होजाय, उनकोयोंमें कमलतंतूके समान भीतरसे पानी श्शरे, इस रोगको विसवर्त्म कहते है ॥

विसवर्त्मचिह्नित्सा ।

स्वेदयित्वाविसग्रंथिच्छिद्राण्यस्यनिराश्रयेत् ।

पक्वभित्वातुशस्त्रेणसैधवेनप्रपूरयेत् ॥

अर्थ—विसवर्त्मकी गाँठको स्वेदन करके छिद्रको चोडाकरे, तथा वो पक्क जावे तो शस्त्रसे चीरके उसमें सैधानिमक भरे ॥

कुंचन ।

वाताद्यावर्त्मसंकोचंजनयंतियदामलाः ।

तदाद्रष्टुंनशक्नोतिकुंचनंनामतद्विदुः ॥

अर्थ—वातादि दोष जब कोएके मार्गको संकुचित करें, तब मनुष्य नेत्रको उघाडकर नहीं देखसके, इस रोगको कुंचन कृच्छ्रोन्मीलन कहते है यह रोग शुश्रुताचारिनिं नहीं लिखा माधवाचारिनेही लिखा है ॥

पक्ष्मकोप ।

प्रचालितानिवातेनपक्ष्माण्यक्षिविशंतिहि ।

घृष्यंत्यक्षिमुहुस्तानिसंरंभंजनयंतिच ॥

असितेसितभागेचमूलकोशात्पतंत्यपि ।

पक्ष्मकोपःसविज्ञेयोव्याधिःपरमदारुणः ॥

अर्थ—बादीसे चलायमान कोएके बाल नेत्रमें प्रवेश करें और वह वारंवार नेत्रसे रगडे जाय, इसीसे नेत्रके काले वा सफेद भागमें सूजन होय, वो केश (बाल) जडसे टूट जावें अतएव इस व्याधिको पक्ष्मकोप अथवा उपपक्ष्म कहते है यह बडा दुःखदायक है ॥

पक्ष्मशात ।

वर्त्मपक्ष्माशयगतंपित्तरोमाणिशातयेत् ।

कंडूदाहंचकुरुतेपक्ष्मशातंतमादिशेत् ॥

अर्थ—पलकीकी जडमे रहनेवाला पित्त कुपित होकर नेत्रोंके बाल जिनको वरूनी अथवा वाफणी कहते है उनका नाश करे, तथा नेत्रोंमें सुजली चले

दाह होय उसको पक्ष्मशात कहते हैं इस रोगको भी सुश्रुतने संख्या बढनेके भयसे नहीं लिखा, आधवाचारीने अन्य ग्रन्थोंके मतसे लिखा है ॥

त्रिफलाघृत ।

त्रिफलाक्वाथकल्काभ्यांसपयस्कंवृतंशृतम्
तिमिराण्यचिराद्ग्रन्थाद्धितभेतत्रिशामुखे ॥

अर्थ-त्रिफलेका काढा और कल्क तथा दूध इनको एकत्र करके उसमें घृत डालके सिद्ध करे, इसको रात्रिके समय पीवे तो तिमिरका नाश करे ॥

भृंगराज तैल ।

भृंगप्रस्थतैलात्कुडवंचतथापलंचमधुकस्य ।
क्षीरप्रस्थविपक्वंगतमपिचक्षुर्निवर्तयेच्च ॥

अर्थ-भांगरेका रस ६४ तोले, तेल १६ तोले, मुलहदी १६ तोले, दूध ६४ तोले इस क्रमसे लेकर एकत्र कर तेल सिद्ध करे, यह गर हुए नेत्रोंको फिर अच्छा करे ।

स्नान धावन ।

स्नानंकृष्णतिलैश्चापिचक्षुष्यमनिलापहम् । मधुकामलक
स्नानंपित्तघ्नंतिमिरापहम् ॥ वचाद्यैःस्नानमिच्छंतिश्लेष्मघ्नंति
मिरापहम् । आमलैःसततंस्नानंपरदृष्टिवलापहम् ॥ त्रिफला
याःकपायस्तुधावनान्नेत्ररोगजित् । कवलोन्मुखरोगघ्नःपातनः
कामलापहः॥भुक्त्पापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुपोर्यदिदीयते । अचि
रेणैवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति ॥

अर्थ-कालेतिलोंके कल्कसे स्नान करनेसे नेत्रोंको हितकारी होय, तथा वादीका नाश होय, तथा मुलहदी और आँवला इनसे स्नान करे तो पित्त और तिमिर इनको नाश करे तथा वचादि औषधोंसे स्नान करनेसे कफ और तिमिर इनका नाश करे और जो निरंतर आँवलोंसे स्नान दृष्टिको बढावे त्रिफले काढेसे नेत्रोंको धोवे तो नेत्ररोग नष्ट होवे और त्रिफलेका कवल वनायके मुखमें रखे तो मुखरोगको दूर करे, तथा त्रिफलाका खाना कामलाको नाश करे तथा भोजन करके हाथोंको जलसे धोय हाथोंको आपसमें घिसकर नेत्रोंके लगावे तो थोडे दिनोंमें तिमिर रोगको नाश करे । [तथा भोजनोत्तर शर्याति, सुकन्या, च्यवन और इन्द्र तथा अश्विनीकुमारका स्मरण करना सर्व नेत्र विकारोंको दूर करे] ॥

द्वितीय त्रिफलादि घृत ।

शतमेकहरीतक्याद्विगुणंचविभीतकम् । चतुर्गुणंत्वामलकंवृ
पमार्कवयोःसमम् ॥ चतुर्गुणोदकंदत्वाशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ।
भागंचतुर्थसंरक्ष्यकाथंतमवतारयेत् ॥ शर्करामधुकद्राक्षामधु
यष्टीनिदिग्धिका ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीत्रिफलानागकेशरम् ।
पिप्पलीचंदनंमुस्तंत्रायमाणातथोत्पलम् ॥ तथास्त्रावंचकंडूंच
श्वयथुंचकपायताम् । कलुपत्वंचनेत्रस्यविसवर्त्मपटलान्वि
तम् ॥ बहुनात्रकिमुक्तेनसर्वात्रेत्रामयान्हरेत् । यस्यचोपहता
दृष्टिःसूर्याग्निभ्यांप्रपश्यतः ॥ तस्मैतद्भेषजंप्रोक्तंमुनिभिःपरमं
हितम् । मर्जितदर्पणंयद्दत्परांनिर्मलतां व्रजेत् ॥ तद्भेदेतेनपो
तेननेत्रंनिर्मलतामियात् । वारिद्रोणाद्रयंचात्रवृपमार्कवयोस्तुले ॥

अर्थ—हरड १०० तोले बहेडा २०० तोले, आँवला ४०० तोले तथा अडूसा ४००
तोले भांगरा २०० तोले इनको चौगुने जलमें डालके मंदाग्निपर रखके आँटावे
जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके छान लेवे, इसमें खॉड, महुआके फूल,
दाख, मुलहटी, कटेरी, काकोली, क्षीरकाकोली, हरड, बहेडा, आँवला, नाग
केशर, पीपल, चंदन, नागरमोथा, त्रायमाण, नीलाकमल इनका कल्क और
घी ६४ तोले, तथा दूध ६४ तोले डालके मंदाग्निपर पचावे और खानेको देवे,
तो तिमिर, काच, स्तोद, नेत्रशुक्र, स्त्राव, खुजली, सूजन, रक्तता, गदलाहट,
विसवर्त्म, पटल इनको नाश करे और सूर्य अग्नि इनके योगसे जिनकी दृष्टी
नाशहोगई हो तथानेत्रसंबंधी सर्व रोगपर इसको देवे तो अत्यंत हितकारी
होय जैसे धोवनेसे दर्पण शुद्ध होवे हे उसी प्रकार इस घृतसे नेत्र निर्मल होवे ॥

विभीतकादि घृत ।

विभीतकाशिवाधात्रीपटोलारिष्टवासकैः ।

पक्वमेभिर्घृतंसर्वानक्षिरोगान्व्यपोहति ॥

अर्थ—बहेडा, हरड, आँवला, पटोलपत्र, नीबकी छाल और अडूसा इनके
काठमें घृतको सिद्ध करे ये संपूर्ण नेत्रके रोगोंका नाश करे ॥

त्रिफलाद्य महाघृतम् ।

त्रिफलायारसप्रस्थंभृंगराजरसस्यच । वृपस्यचरसप्रस्थंशता

वर्याश्चतत्समम् ॥ अजाक्षीरंगुडूच्याश्चआमलक्यारसस्तथा ।
 प्रस्थंप्रस्थंसमाहृत्यसर्वैरेभिर्घृतंपचेत् ॥ कल्कः कणसिताद्राक्षा
 त्रिफलानीलमुत्पलम् । मधुकंक्षीरकाकोलीमधुपर्णीनिदिग्धि
 का ॥ तत्साधुसिद्धं विज्ञायशुभेभाण्डेनिधापयेत् । उर्ध्वपानम
 धःपानंमध्येपानंचशस्यते ॥ यावंतोनेत्रजात्रोगान्पानादेवा
 पकर्षति । सरक्तेरक्तदुष्टेषुरक्तेवाविकृतेतथा ॥ नक्तांध्येतिमि
 रेकाचेनीलिकापटलार्बुदे । अभिष्यंदेधिमंथेचपक्ष्मकेपिसुदा
 रुणे ॥ नेत्ररोगेषुसर्वेषुदोषत्रयकृतेष्वपि । परंहितमिदंप्रोक्तंत्रि
 फलाद्यंमहाघृतम् ॥

अर्थ—त्रिफलाका रस ६४ तोले, भांगरेका रस ६४ तोले, अडूसेका रस
 ६४ तोले, शतावरीका रस ६४ तोले, बकरीका दूध ६४तोले, गिलोय, ६४तोले,
 आंवलेका रस ६४ तोले और घी ६४ तोले ये सब समान भाग लेवे, सबको
 एकत्र कर इसमें पीपल, खांड, दास, त्रिफला, नीले कमल, मुलहटी, सपेद
 काकोली, कंभारी, कटेरी इनके कल्क डालके पचावे, जब सिद्ध हो जावे
 तब उत्तम पात्रमें भरके रख देवे, इसको भोजनके प्रथम भोजनके पीछे और
 भोजनमें देवे तो जितने नेत्रोंके रोग हैं उनको इसको खातेही नाश करे,
 और नेत्रोंकी लाली दुष्टरक्त, रक्तस्त्राव, रतोंध, तिमिर, कान्च, पटल, नीलका
 पटल, नेत्रार्बुद, अभिष्यंद, अधिमंथ, उपपक्ष्म, संनिपातात्मक संपूर्ण नेत्रके
 रोग इनको नाश करे यह त्रिफला घृत अत्यंत हितकारी है ॥

सप्तामृत लोह ।

मधुकत्रिफलाचूर्णैर्लोहचूर्णसमंलिहन् । मधुसर्पिर्युतंसम्यग्ग
 व्यक्षीरंपिवेदनु ॥ छांदिसतिमिराशूलमम्लपित्तज्वरं क्लमम् । आ
 नाहंमूत्रसंगंचशोथंचैवनिहंतिहि ॥

अर्थ—मुलहटी, हरड, वहेडा, आवला, इनके चूर्णको और लोह भस्मको
 मिलायके इस चूर्णको सहत और घी इनमें मिलायके देवे और रूपरसे गी
 का दूध पीवे तो वांति, तिमिर, शूल, अम्लपित्त, ज्वर, क्लम, अफरा, आनाह,
 मूत्रकी रुकावट और सूजन इनको नाश करे ॥

शताहादि चूर्ण ।

शतावरीसूर्यसमाप्रदेयाएलास्तथावारणमूर्धंतुल्या । देयावि

डंगंवसुभिःसमानमृतोःसमंचामलकास्थिवीजम् ॥ विष्णोर्भूजै
स्तुल्यगुणंमरीचंतद्वत्कमैर्मांगंधिकाप्रदेया । चूर्णसमध्वंजन
मर्धकर्मक्षामयानांविनिवारणार्थम् ॥ कंडूंसधूमंतिमिरंसुघो
रंमर्माणिकाचंपटलंत्रिदोपम् । येचापरेरक्तभवाविकारास्ते
पामयंचूर्णवरोनिहंता ॥

अर्थ—शतावर १२ तोले, इलायची २१ तोले, वायविडंग ८ तोले, आवलेके
बीज ६ तोले, मिरच ४ तोले, पीपल ३ और रसोत आधा तोला इन सब
पदार्थोंका चूर्ण कर एकत्र करे, फिर शहतमें मिलायके नेत्ररोगोंपर देवे,
तो खुजली, धूँआसा दीखना, तिमिर, अर्मरोग, काचविंदु, त्रिदोपात्मक
नेत्रपटल और सर्व नेत्रविकार इनको नाश करे ॥

त्रिफलाचूर्ण ।

त्रिफलात्वचमायसंचूर्णसमयष्टीमधुकंसमांशयुक्तम् । मधुना
सहसर्पिपादिनांतेपुरुपोनिष्परिहारमाददीत ॥ तिमिरार्बुदरक्त
राजिकंडूक्षणदांध्यामयदाहशूलतोदान् । पटलंचसशुकुका
चपिल्लंशमयत्येवनिपेवितः प्रयोगः ॥ नचकेवलमेवलोचनानां
विहितोरोगनिवर्हणाययोगः । दशनश्रवणोर्ध्वजनुजानांप्रशमे
हेतुरयंतथामयानां ॥ प्रमदाभिरयंजराधिरूढस्फुटचंद्राभरणा
सुयामिनीषु । सुरतानिपदेपदेनिपेव्यपुरुषोयोगमिमनिपे
व्यमाणः ॥ स्मृतिविक्रमबुद्धिशक्तियुक्तःशरदांजीवतिवैशतं
समग्रम् । गुदजानिभगंदरप्रमेहान्सहकुष्ठानिहलीमकंकिला
सम् ॥ पलितानिविनाशयेत्तथाग्निचिरनष्टंकुरुतेरविप्रचंडम् ।
मुखेननीलोत्पलचारुगंधिनाशिरोरुहैरंजनमेचकप्रभैः ॥ भवे
त्सगृध्रस्यसमानलोचनाश्चिरंनरोवर्षशतंचजीवति ॥

अर्थ—त्रिफला, दालचीनी, मुलहठी, महुआके फूल ये समान भागले सब
चूर्णकर इसमें शहत और धी मिलायके सायंकालके समय खानेको देवे, तो
तिमिर, अर्बुद, रक्तता, खुजली, रात्र्यंध, दाह, शूल, पीडा, पटल, शुकुपटल,
काच और पिल्ल इनको नाशकरे, यह चर्ण केवल नेत्र रोगोंकाही नाश नहीं

करे, किंतु हसलीके ऊपरके यावन्मात्र रोगहै सबका नाश करे है, यह वृद्धा स्त्री खावे तो तरुण होंजावे और वारंवार सुरतमें पुरुषोंको आनंद करे और पुरुष सेवन करे तो स्मृति, पराक्रम, बुद्धि और शक्ति इन करके युक्त सौ वर्ष पर्यंत जीवे, तथा बवासीर, भगंदर, प्रमेह, कुष्ठ, हलीमक, किलासकुष्ठ और वृद्धावस्थापना इनको नाश करे, नष्टाप्रिको बटावे, मुखमें कमलके समान सुगंध आवे, भौराके समान काले बाल और गीधके समान दृष्टी होंवे और सौ वर्ष जीवे ॥

महावासादि काय ।

वासाघनान्विवपटोलपत्रंतिक्तामृताचंदनवत्सकत्वक् । कलिं
गदावीदहनंसनागरंभूनिवधात्रीह्यभयाविभीतकम् ॥ तथाय
वक्त्राथमथाष्टमांशपिवेदिमंपूर्वदिनेकपायकम् । तेनैवकंडूपट
लार्जुदंचशुक्रंतथासत्रणमव्रणंच ॥ दाहंसरागंसरुजंसपिच्छंहन्या
त्समस्तानपिनेत्ररोगान् ॥

अर्थ—अडूसा, नागरमोथा, नीमकी छाल, पटोलपत्र, कुटकी, गिलोय, चंदन, कूडाकी छाल, इन्द्रजौ, दारुहलदी, चित्रक, सोंठ, चिरायता, आवला, हरड, भिलाए ये सब चीजे जोके काठमें डालके अष्टमांश कपाय रहजाय तो इसमेंसे सबेरे पीनेसे कंडू, पटल, अर्जुद, पीव, व्रण, दाह, लाली, पीडा आदि सब नेत्ररोगोंका नाश हो जाता है ॥

त्रिफलादि काय ।

अयःस्थंत्रिफलाक्वाथंसर्पिपासहयोजितम् ।
भुक्तोपरिपिवेत्सायंमासेनांधोपिपश्यति ॥

अर्थ—त्रिफलके काथमें लौहकी भस्म डाल घृतके साथ सायंकालमें ब्यालू करके पीवे तो १ महीनेमें अंधा मनुष्यभी देखने लगे ॥

चित्रवादि काय ।

चित्रकमूलत्रिफलापटोलयवसाधितंपिवेदंभः ।
सघृतंनिशिचक्षुष्यंतिमिरंचविशेषतोहति ॥

अर्थ—चित्रकके जड़की छाल, हरड, बहेडा, आवला, पटोलपत्र और जौ इनका काथ कर घृत मिलाय रात्रिके समय पीवे तो नेत्रोंको हितकरे, तथा विशेष करके तिमिर रोगको नाश करे ॥

पिप्पल्याद्यंजन ।

पिप्पलीत्रिफलालाक्षालोध्रकंचससैधवम् । भृंगराजरसेष्टृपुंगु
टिकांजनमिष्यते ॥ अर्मसतिमिरंकाचंकंडूशुक्रंतथाजुर्नम् ।
अंजननेत्रजात्रोगान्निहंत्येवनसंशयः ॥

अर्थ—पीपल, हरड, बहेडा, आवला, लाख, लोध, सैधानिमक इन सबको भांगरैके रसमें बारीक पीसके गोली बनावे, फिर भांगरैके रसमें घिसके नेत्रोंमें अंजन करे तो अर्मरोग, तिमिर, खुजली, शुक्र, अर्जुन और समस्त नेत्रके रोगोंको दूर करे इसमें संदेह नहीं है ॥

गुजामूलद्यंजन ।

गुजामूलं वस्तमूत्रेणपिष्टंनिर्घृष्टावावारिणाभद्रमुस्ता ।
आंध्यंसद्यस्तैमिरंहंतिपुंसामत्युद्गाढंनेत्रयोरंजनेन ॥

अर्थ—धूपचीकी जड़को बकरैके मूत्रमें पीसके अथवा जलमें भद्र मोथेकी पीसके अंजन करे तो अंधापना और तिमिर रोग इन घोर रोगोंको दूर करे ॥

तुलस्यादि अंजन ।

तुलस्याविल्वपत्रस्यरसोग्राह्यःसमांशकः । ताभ्यांतुल्यंपयो
नार्यास्त्रितयंकांस्यपात्रके ॥ गजवह्य्यादृढमर्द्यताम्रेणप्रहरंपु
नः । कज्जलत्वंसमुत्पाद्यतेनांजितविलोचनः । सद्योनेत्ररुजंहं
तिसशूलांपाकसंभवाम् ॥

अर्थ—तुलसी और बेलपत्रोंका समान भाग रस लेवे, फिर इन दोनोंकी बराबर स्त्रीका दूध डाले, तीनोंको कांसीके पात्रमें गजबेल लोहेके मूसलेसे खरल करे, फिर तामेके घुटनासे १ प्रहर खरल करे, जब कज्जलके समान बारीक हो जाय तो नेत्रोंमें अंजन करे तो शूलयुक्त पके हुए नेत्रोंके विकारको तत्काल दूर करे ॥

कतकफलादि अंजन ।

कतकस्यफलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमंजयेत् ।
ईपत्कपूरसहितंतत्स्यान्नेत्रप्रसाधनम् ॥

अर्थ—विर्गलीके फलोको सहतमें घिसके अंजन करे परंतु इसमें थोडासा कपूर और मिलाय लेवेतो यह नेत्रोंको आच्छाकरे ॥

कतवाद्यंजन ।

कतकस्यफलंशंखंसैधवंश्रूपांसिता । फेनोरसांजनंक्षौद्रंविडं

गानिमनःशिला ॥ सर्वमेतत्समंकृतवानारीक्षरिणपेपयेत् ॥ ति
मिरंपटलंकाचंमर्मशुक्रंव्यपोहति । कंडूंकुंदावुदंहतमलंवाह्यं
जितेसति ॥

अर्थ—निर्मलीका फल, शंख, सैंधानिमक, सोंठ, मिरच, पीपल, मिथी, स-
मुद्रफेन, रसोत, सहत, वायविडंग और मनसिल ये समान भागले छीके दूधसे
बहुत वारीक पीसके अंजन करे तो तिमिर, पटल, कांच, अर्मरोग, शुक्र,
खुजली क्लेद और नेत्रावुद इनको उत्काल दूरकरे ॥

पुनर्नवादि अंजन ।

दुग्धेनकंडूंकुंदाद्रणेनेत्रस्रावंचसर्पिपा । पुष्पतैलेनतिमिरंकांजि
केननिशांधताम् ॥ पुनर्नवाहरत्याशुभास्करंतिमिरंयथा ॥

अर्थ—पुनर्नवाकी जडको दूधमें घिसके नेत्रोंमें अंजन करे तो खुजली, सह-
तसे लगावे तो नेत्रस्राव, घीसे लगावे तो फला, तेलसे तिमिर, कांजीसे
रतौध रोगको दूर करे, इस प्रकार पुनर्नवाके अनेक गुण है, पुनर्नवाको
हिंदीमें सोंठ कहते हैं ॥

गूडूच्यादि अंजन ।

गुडूचीस्वरसः कर्पःशौद्रंस्यान्मापकोन्मितम् । सैंधवंशौद्रतु
ल्यंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥ अंजयेन्नयनंतेनपिच्छामंतिमिरंज
येत् । काचंकंडूंलिङ्गनाशंशुक्रकृष्णागतान्गदान् ॥

अर्थ—गिलोयका स्वरस १ तोले, सहत १ मासे, सैंधानिमक १ मासे
सबको खरलकर नेत्रोंमें अंजन करे तो पिच्छ, अर्म, तिमिर, काच, खुजली,
लिङ्गनाश, तथा नेत्रके सपेद भाग और काले भागके संपूर्ण रोगोंको दूर करे ॥

नयनशाणनामक अंजन ।

कणासलवणोपणासहरसांजनासांजनासरित्पतिकफःशिफासि
त्पुनर्नवासंभवा । रजन्यरुणचंदनंमधुचतुत्थपथ्याशिलाधरि
ष्टदलसांवरस्फाटिकशंखनाभीदवः ॥ इमानितुविचूर्णयेन्निवि
डवाससाशोधयेत्ततोयसिविमर्दयेत्समधुताम्रखंडेनतत् । इदं
मुनिभिरिरीरितंनयनशाणनामांजनं करोति तिमिरक्षयंपटलपुष्प
नाशंभलात् ॥

अर्थ—पीपल, सैधानिमक, काली मिरच, रसोत, सुरमा, समुद्रफेन, सपेद पुनर्नवा (सांठ, या, गदहपूर्णा) की जड़, हलदी, लालचंदन, सहत, लीलाथोथा, हरड, छोटी मनसिल, नांवके पत्ते, सावरसींग, स्फटिकमणि, शखकी नाभि और कपूर, इनको समान भागले चूर्ण कर बारीक कपडेमे छानले, फिर तामेके पात्रमे तामेके मूसलेसे सहत और जल डालके बारीक कज्जलके समान पीसे इसको मुनीश्वरोने नयनशाणांजन कहाहै यह तिमिरका क्षय पुष्प और काचको नष्ट करे ॥

मुक्तादि महाजन ।

मुक्ताकपूरकाचागरुमरिचकणासैधवंशैलवालंशुंठीकंकोलका
स्यंत्रपुरजनिशिलाशंखनाभ्यभ्रतुत्थम् । दक्षांडत्वक्कसाक्षक्षण
दजयुतशिवाक्रीतकराजवर्तजातीपुष्पंतुलस्याः कुसुममभिन
वंवाजिमत्यास्तथैव ॥ पूतीकनिवांजनभद्रमुस्तंसताम्रसारं
सगर्भयुक्तम् । प्रत्येकमेपांखलुमापकैकंपलेनपिष्यान्मधुना
तिसूक्ष्मम् ॥ भवंतिरोगानयनाश्रितायेनितांतमत्रोपहिताश्च
तेपाम् । विधीयतेशातिरवश्यमेवमुक्तादिनानेनमहांजनेन ॥

अर्थ—बूकामोती, शुद्धभीमसेनी कपूर, शीशेका भस्म, अगर, कालीमिरच, पीपल, सैधानिमक, एलावालुक, सोठ, ककोल, कांसिकी भस्म, रागेकी भस्म, हलदी, मनसिल, शखकीनाभि, अत्रकभस्म, लीलाथोथा, सुरगेके अडेकी सपेदी, बहेडा, हलदी, हरड छोटी, मुलेठी, राजावर्त, जायफल (वा चमेलीके फूल) तुलसीकी नवीन मजरी, परवल, कजा, नीमक पत्ते, सुरमा, भद्रमोथा, तामेकी भस्म, सारहीगलू प्रत्येक भासे २ ले, सबको ४ तोले सहत मिलायके बारीक पीसे, इसके लगानेसे नेत्रके आश्रित जो रोग है वह सब इस मुक्तादि महाजनके लगानेसे नष्ट होय इसमे सदेह नहीं है ॥

दाव्यादि अजन ।

दार्वावरामधुकमंभसिनारिकेलंपक्त्वाष्टभागपरिशिष्टरसंपुन
स्तत् । सांद्रविपाच्यशशिसैधवमाक्षिकाद्यंयुंज्याद्द्वणातिंति
मिरार्तिपुपित्तजेषु ॥

अर्थ—दारुहलदी, हरड, बहेडा, आमला, मुलहदी, नारियलकी गिरी इनको समान भागले आठगुने जलमें डालके पचावे, जब जल जरके गाढा हो जाय तब उस जलको छानके उसमें कपूर, सैधानिमक और सहत डालके

खरल करे वारीक होनेपर नेत्रोंमें लगावे तो नेत्रका, घाव, पीडा, तिमिर और पित्तजन्य जितने नेत्रके रोग है सब दूर होय ॥

शंखादि वटी ।

शंखस्यभागाश्चत्वारस्तदर्धेनमनःशिला । मनःशिलार्धमरि
चमारिचार्धेनपिप्पली ॥ सर्वमेकत्रसमर्घ्यगुटिकांकारयेद्बुधः ॥
वारिणातिमिरहंतिह्यर्बुदंहंतिमस्तुना ॥ पिच्चटंमधुनाहंतिस्त्री
क्षीरेणतथार्जुनम् ॥

अर्थ—शंखकी नाभी, ४ तोले, मनसिल २ तोले, काली मिरच १ तोले, पीपल ६ मासे लेवे सबको एकत्र कर खरलमें जलसे वारीक पीस गोली बनाय लेवे, इसको जलमें घिसके लगावे तो तिमिर दूर होय, छाँछमें घिसके लगावे तो नेत्रार्बुद दूर हो, सहतसे नेत्रोंका कीचडसे भरा रहना दूर हो, तथा नेत्रमें लालर्बुद पडजाती है वह स्त्रीके दूधमें घिसके लगानेसे दूर करेहै ॥

शशिकलावर्ती ।

रसकजलजनाभिः पौरतुत्थंसमांशंवमनगलितमेतान्निबुनीरेण
पिष्टम् । हरतिशशिकलैतद्धर्तिसंयोजिताक्ष्णोस्तिमिरनयन
कंडूस्त्रावरोगार्मपिच्छान् ॥

अर्थ—खपरिया, शंखकी नाभि, गूगल, लीलायोथा इन सबको समान भाग लेवे, सहतमे मिलाय नीचेके रससे वारीक पीसे यह शशिकलावर्तीको नेत्रोंमें लगानेसे तिमिर, नेत्रोंकी खुजली, पानीका बहना, और अर्म तथा पिछ आदि सब नेत्रके रोग दूर हो ॥

चन्द्रोदयावर्ती ।

हरीतकीवचाकुण्ठपिप्पलीमारिचानिच । विभीतकस्यमज्जाच
शंखनाभिर्मनःशिला ॥ सर्वमेतत्समंकृत्वागव्यक्षीरेणपेपयेत् ।
नाशयेत्तिमिरंकंडूपटलान्यर्बुदानिच ॥ अपिन्निवार्षिकशुक्रंमा
सेनेकेननाशयेत् । अधिकानिचमांसानिरान्यंधत्वंतथैवच ॥
वर्तिश्चन्द्रोदयानामनृणांहृष्टिविशोधिनी ॥

अर्थ—छाँटीहरड, वच, कुठ, पीपल, कालीमिरच, बहेडाकीमिर्गी, शंखकी नाभि, मनसिल ये समान भागले, सबको गौके दूधसे वारीक पीसे, यह तिमिर

खुजली, नेत्रपटल, अर्जुद तीनवर्षका मोतियाबिंदु इन सबको एकहा महानम नष्ट करे, तथा नेत्रके मांसाधिकको रतौधको यह चंद्रोदया वर्त्ती नष्टकरे है, तथा मनुष्योकी दृष्टिको शोधनकरे ॥

नयनामृत ।

रसेद्रभुजगौतुल्यौतयोर्द्विगुणमंजनम् । सूततुर्यांशकपूरमंजनं
नयनामृतम् ॥ तिमिरंपटलंकाचंशुक्रमर्मार्जुनानिच । क्रमात्प
थ्याशिनोहंतितथान्यानपिदृग्गदान् ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धशीशा दोनों समान भागले और दोनोसे दुगना सुरमा मिलावे तथा पारेकी चतुर्थांश भीमसेनी कपूर मिलावे तो यह नयनामृतांजन तिमिर पटल, काच, शुक्र, अर्म, अर्जुन इन रोगोको क्रमसे नष्ट करे तथा जो पथ्य सेवन करनेवाले है उनको अन्य जो नेत्रके रोग है उन सब को नष्ट करे ॥

कुसुमिकावर्त्ती ।

तिलपुष्पाण्यशीतिस्युःपष्टिःपिप्पलितंडुलाः । जात्याःकुसुम
पंचाशन्मरीचानिचपोडश ॥ सूक्ष्मपिष्टाजलैर्वर्तिःकृताकुसुमि
काभिधा । तिमिरार्जुनशुक्राणांनाशिनीमांसवृद्धिनुत् ॥ एत
स्याश्चांजनेमात्राप्रोक्तासार्धहरेणुका ॥

अर्थ—तिलके फूल ८० पीपलके बीज ६० चमेलीके फूल ५० और काली मिरच १६ इन सबको जलमे पीसके बत्ती बनावे, तो यह कुसुमिकावर्त्ती तिमिर, अर्जुन शुक्र और मांसवृद्धिको नष्टकरे इसके अंजन करनेकी मात्रा (१॥) डेड मटरके प्रमाण है ॥

चंद्रोदयावर्दी ।

शंखनाभिर्विभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिला । पिप्पलीमरिचंकु
ष्टंबवांचेतिसमांशकम् ॥ छागक्षीरेणसंपिष्यवटींकुर्याद्यथोचि
ताम् । हरेणुमात्रांसंघृष्यजलेनांजनमाचरेत् ॥ तिमिरंमांसवृ
द्धिचक्राचंपटलमर्बुदम् । रात्र्यंधंवार्षिकंपुष्पवटीचंद्रादयाहरेत् ॥

अर्थ—शंखकी नाभि, वहेडेकी मिंगी, हरड, मनसिल, पीपल, मिरच, कूठ, और वच ये समान भागले सबको बकरीके दूधमें पीसके यथोचित गोलीबना, इसमेसे १ मटरके अनुमान जलमे घिसके अंजन करे तो तिमिर, मांसवृद्धि, काच, पटल, अर्जुद, रतौध और १ वर्षके फुलेको यह चंद्रोदयावर्त्ती दूरकरे ॥

चंद्रप्रभावर्त्ता ।

रजनोर्निवपत्राणिपिप्पलीमरिचानिच । विडंगंभद्रमुस्तंचसप्त
मीत्वभयास्मृता ॥ अजामूत्रेणसंपिप्यछायायांशोपयेद्रटी ।
वारिणातिमिरंहंतिगोमूत्रेणतुपिष्टिकाम् ॥ मधुनापटलंहंतिना
रीक्षीरेणपुष्पकम् । एपाचंद्रप्रभावर्त्तिःस्वयंरुद्रेणनिर्मिता ॥

अर्थ—हलदी, नींबूके पत्ते, पीपल, कालीमिरच, वायविडंग, नागरमोथा,
और छोटी हरद इन सबको समान भागले चकराके भूत्रसे पीस गौली बनाय
छायामें सुखाय लेवे, जलसे तिमिररोग, गोमूत्रसे नेत्रका पिष्टकरोग,
सहसे पटलके रोग, छाँके दूधसे फूलेको दूर करे, यह चंद्रप्रभावर्त्ता स्वयं
शिवने कही है ॥

नयनाभिघात निदान ।

स्रवत्यश्रुचयत्रेत्रंघृत्तलोहितराजिभिः ।

निमेपोन्मेपणाशक्तंसशल्यंतद्विनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—जिसके नेत्रोंसे हर समय आंसू बहाकरे और लाल लाल गोल लकीर
(रेखा) नेत्रोंमें हो तथा जिसके दुःखसे यह प्राणी नेत्रोंको खोल मूंद नसके
उसको सशल्य नेत्र अर्थात् नेत्रमें किसी प्रकारकी चोट है ऐसा जाने ॥

सामान्य चिकित्सा ।

नेत्रेत्वभिहतेकुर्याच्छीतमाश्रोतनंहितम् ।

पुनर्नवामूलकल्कात्पिण्डीलेपेकुचंदनम् ॥

अर्थ—जिसने नेत्रोंमें किसी प्रकारकी चोट लगीहो उसके शीतल आश्रोतन
करना हितहै तथा पुनर्नवाकी जड़के कल्कसे आश्रोतन करे और लेपमें लाल
चंदन लेना चाहिये ॥

शावरदि सेक ।

शावरंमधुकंतुल्यंघृतभ्रष्टंसुचूर्णितम् ।

छागक्षीरोक्षितंसेकःपित्तरक्ताभिघातजित् ॥

अर्थ—पठानी लोथ, मुलहठी, लीलापोथा इनके चूर्णको पीसमें भूनेके चक-
रीके दूधमें मिलायके सेककरे तो पित्त रक्तजन्य चोट अच्छी होय ॥

प्रतिनिद्राचिकित्सा ।

क्षौद्राश्वलालासघृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमंजयेत् ।

अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योदयादिव ॥

अर्थ—सहत घोडेकी छार में काली मिरचको घिस अंजन करे तो अत्यंत निद्राका आना दूर होय जैसा सूर्योदयसे अंधकार नष्ट होताहै ॥
जातीपत्रादि अंजन ।

जातीपुष्पंप्रवालंचमरिचंकटुकांचाम् । सैधवंवस्तमूत्रेणपिष्टंतद्राघ्नमंजनम् ॥

अर्थ—चमेलीके फूल, मूंगा, मिरच काली कुटकी, वच और सैधानिमक इनको चकरेके सूत्रमें पीसके अंजन करे तो तंद्रारोग दूरहोय ॥
नयनाभिघातचिकित्सा ।

अंतस्त्रीस्तन्यसेकश्चरक्तमोक्षश्चशस्यते । दृष्टिप्रसादजननंवि धिमाशुकुर्यात्स्निग्धैर्हिमैश्चमधुरैश्चयथाप्रयोगैः॥ स्वेदोग्निधूम भयशोकरुजादितापैरभ्याहतामपितथैवभिपक्चिकित्सेत् ॥

अर्थ—नेत्रोंमें किसी प्रकारकी चोट लगी होय तो स्त्रीके दूधकी धार नेत्रके भीतर डाले विगडे हुए रुधिरको निकाले तथा दृष्टिको प्रसन्न करनेवाली विधि, तथा स्निग्ध, शीतल और मधुर (मीठे) प्रयोग करे इसी प्रकार स्वेदन, अग्नि, धूआ, भय और शोक आदिसे जिसके नेत्र दूखते हो उसकोभी यही उक्त चिकित्सा वैद्य करे ॥

सूर्याचिरादि संतर्पण ।

सूर्याचिराशांवरविद्युतादिविलोकनेनोपहतेक्षणस्य । संतर्पणांस्निग्धहिमादिकार्यसायंनिपेव्यस्त्रिफलाप्रयोगः ॥

अर्थ—जिस प्राणीकी सूर्यकी किरण तथा दिशाओंमें और आकाशमें बिजली आदि तेजस्वी पदार्थोंके देखनेसे जिसकी दृष्टि नष्ट होगई हो उसके चिकित्से और शीतल आदि पदार्थोंसे तर्पण करे तथा सायंकालमें त्रिफलेका प्रयोग वैद्य अपनी युक्तिसे सेवन करावे तो अच्छा होय ॥

निशादि पूरण ।

निशाब्दत्रिफलादावीसितामधुसमन्वितम् । अभिघाताभिगूलघ्नंनारीक्षीरेणपूरणम् ॥

अर्थ—हलदी, नागरमोथा, त्रिफला, दारुहलदी, मिश्री, सहत इनमें स्त्रीका दूध मिलायके नेत्रोंको भर अर्थात् तर्पण करे तो नेत्रोंमें जो चोट लगी है, तथा नेत्रगूलका होना दूर होय ॥

नेत्ररोगपर, पथ्य ।

शालितंडुलगोधूममुद्गसैधवगोघृतम् ।

गोपयश्चसिताक्षौद्रंपथ्यंनेत्रगदेस्मृतम् ॥

अर्थ—शालीचावल, गेहूँ, मूंग, सेंधानिमक, गौका घी और गौका दूध एवं खॉड और सहत ये नेत्ररोगवाले प्राणीको पथ्य कहे हैं अर्थात् इनका भोजन पान करना अच्छा है ॥

अपथ्य ।

सर्वशाकमचक्षुष्यंचक्षुष्यंशाकपंचकम् ।

जीवंतीवास्तुमत्स्याक्षीमेघनादःपुनर्नवाः ॥

अर्थ—संसारमें यावन्मात्र शाक (तर्कारी) है सब नेत्रोंको अहित है परंतु किसी किसी वैद्यकी संमतिसे पांच शाक नेत्रोंको हितकारी है, जैसे जीवंती (ठोडी) बथुआ, मछली, चॉलाई और पुनर्नवा (सांठ) का साग ॥

तथा ।

मापारनालकटुतैलजलावगाहक्षुद्राक्षुरैश्चसुरतौर्नीशिजागरैश्च ।

शाकाम्लमत्स्यदधिफाणितवेसवारैश्चक्षुःक्षयंनजतिसूर्यविलो

कनाच्च ॥ तांबूलमम्लंलवणंविदाहितीक्ष्णंकटूष्णंगुरुचात्रपा

नम् । नरोनसेवेतहिताभिलापीसर्वेपुरोगेपुट्टगाश्रयेषु ॥

अर्थ—उडद, कांजी, कडवा तेल, जलमें धसके स्नान, कटेरी, सब मस्तक क्षौर कर्म, स्त्री संग, रात्रिमें जागना, सर्व प्रकारके साग, खटाई, मछली, दही, फाणित (रावका भेद) मसाला और सूर्यके सन्मुख देखनेसे नेत्रकी दृष्टि भारी जाती है । पानका खाना, खटाई, निमक, दाहकर्त्ता (राई आदि) पदार्थ, तीखे पदार्थ, चरपरे और भारी ऐसे अन्न और जलोंको जो नेत्ररोगी अपने हितकी इच्छा करनेवाले है कदापि सेवन न करे ॥

दृष्टिरोगनामसंख्या ।

दृष्ट्याश्रयाःषट्चपडेवरोगाःषड्लिंगनाशाहिभवंतितत्र ।

वातेनपित्तेनकफेनसर्वैरक्तात्परिम्लाय्यभिधश्चपट्टः ॥

अर्थ—नेत्रकी दृष्टिके आश्रित ६६ रोग हैं, तथा ६ लिंग नाश हैं, जैसे वातसे, पित्तसे, कफसे, सन्निपातसे, रुधिरके विकारसे और अम्ल पित्तसे लिंग नाश होता है ॥

इति श्रीमाधुर्वेदीद्वारे बृहन्निघण्टुरत्नाकरे नासारोगे पथ्यापथ्याधिकारः समाप्तः ॥

शिरोरोग ।

मस्तकरोगनिदान ।

शिरोरोगाश्चजायंतेवातपित्तकफैस्त्रिभिः । सन्निपातेनरक्तेनक्ष
येणकृमिभिस्तथा ॥ सूर्यावर्तानंतवातार्धावभेदकशंखकैः ।
एकादशविधस्यास्यलक्षणानिप्रचक्षते ॥

अर्थ—मस्तकरोग, वात, पित्त, कफ, सन्निपात, रुधिर, क्षय और कृमिके
होनेसे होता है तथा सूर्यावर्त, अनंतवात, अर्धावभेदक, शंखक इस प्रकार
नेत्ररोग ११ प्रकारके हैं उनके लक्षणोंको कहते हैं ॥

निदान ।

धूमातपतुपारांबुक्नीडातिस्वप्रजागरैः । उत्सेधातिपुरोवातवा
प्पनिग्रहरोदनैः ॥ अत्यंबुमद्यपानेनकृमिभिर्वैगधारणैः । उप
धावमृजाभ्यांगद्वेषाच्चप्रततेक्षणेः॥ असात्म्यगंधदुष्टान्नमापाद्यै
श्चशिरोगतः । एकादशविधस्यास्यलक्षणानिप्रचक्षते ॥

अर्थ—धूम आतप, वर्फ, उदकमें कीडा करना, अतिनिद्रा, अतिजागरण,
उत्सेध (कारण विना देह उंचा नीचा करने) से, वात और बाष्प इनका
अवरोध करनेसे, बहुत रोदन करनेसे, उदक और मद्यका अति पान करनेसे,
क्रिमि रोगसे, मूत्रादिकोंका निग्रह करनेसे शिरोरोग उत्पन्न होते हैं इस प्रकार
ग्यारह प्रकारके शिरोरोगके लक्षण कहे हैं ॥

वातजशिरोरोग ।

यस्यानिमित्तंशिरसोरुजश्चभवंतीतीव्रानिशिचातिमात्रम् ।
बंधोपतापैःप्रशमश्चयत्रशिरोभितापःससमीरणेन ॥

अर्थ—जिसका मस्तक अकस्मात् दूखे और रात्रिमें विशेष दूखे, बांधनेसे
अथवा सेकनेसे शांति हों, उसको वातज शिरोरोग जानना चाहिये ॥

वातजशिरोरोगचिकित्सा ।

वातजातशिरोरोगेस्नेहस्वेदविमर्दनम् ।

पानाहारोपनार्हाश्चकुर्याद्वाताभयापहान् ॥

अर्थ—वातजन्य शिरके रोगमें स्नेहन, स्वेदन, मर्दन करे तथा यावन्मात्र

पानिके पदार्थ, भोजनके पदार्थ और उपनाह आदि सब कर्म वातनाशकर्ता करने चाहिये ॥

कुप्रादिलेप ।

कुपुमेरंडमूलंचनागरंतकपेपितम् ।

कटूष्णंचशिरःपीडांमात्रालेपनतोहरेत् ॥

अर्थ—कूठ, अंडकीजड, सोंठ, इनको समान भागले छालमें पीसे फिर थोडा गरम करके लेप करे तो वातजन्य मस्तकपीडा दूर होय ॥

श्वासकुठारनस्य ।

रसःश्वासकुठारोयस्तस्यनस्यंविशेषतः ।

शिरःशूलंहरत्येवविधेयोनात्रसंशयः ॥

अर्थ—श्वासकुठार रसकी नस्य देना इस वातके मस्तक रोग अत्यंत गुणदायक है ॥

कुप्रादिलेप ।

कुपुमेरंडमूलंचलेपःकांजिकपेपितः ।

शिरोतिवातजाह्न्यात्पुष्पंवामुचकुंदजम् ॥

अर्थ—कूठ, अंडकीजड, इन दोनोंको काँजीमें बारीक पीसके लेप करे तो वातजन्य पीडा दूर होय । अथवा मुचकुंदके फूलोंको पीसलेप करे तो भी मस्तक पीडा दूर होय ॥

वातजाशिरोरोगेवस्ति ।

आशिरोव्याधितच्चर्मपोडशांगुलमुच्छ्रितम् । तेनवेष्टयशिरोध
स्तान्मापकल्केनलेपयेत् ॥ निश्चलस्योपविष्टस्यतैलैःकोष्णैः
प्रपूरयेत् । धारयेदारुजःशांतिर्यामंयामार्धमेवच ॥ शिरोवस्ति
हरत्येपःशिरोरोगंमरुद्भवम् । हनुमन्त्याशिकर्णानामादितंमूर्धकंप
नम् ॥ विनाभोजनमेवैपःशिरोवस्तिःप्रयुज्यते । पंचाहंपडहं
वापिसप्ताहंचैवमाचरेत् ॥

अर्थ—एक १६ अंगुल चौडा बहुत साफ करा हुआ मृगचर्म इतना बढालेवे कि, मस्तकके चारों तरफ आय जावे, उससे मस्तकको बाँधके नीचेके छिद्रोंको उडदकी पिट्टीसे बंदकर देवे, फिर इस प्राणीको इस तरह बैठावे कि, सीधा और सतर बैठ जावे गरदन उठी रहे तथा हले चले नहीं, तब

तिलके मुहाते २ गरम तेलको मस्तकमें भर देवे इसको जब तक मस्तक पीडा दूर न हो तब तक धारण करे या १ प्रहर या आधे प्रहर जैसा रोगका तारतम्य हो उसके अनुसार धारण करनी चाहिये यह शिरोवस्ति सब शिरके रोग जो वादीसे प्रगट हुए है दूर करे, तथा ठाड़ी गरदन, नेत्र, कान, लकवा मस्तकका कापना, इनको दूर करे है, इस क्रियाको भोजन करनेके प्रथमही करना चाहिये तथा पांचादिन छःदिन या सातदिन पर्यंत शिरोवस्ति करनी चाहिये ॥

पित्तजशिरोरोग ।

यस्योष्णमंगारचितंतथैवभवेच्छिरोदह्यतिवाऽक्षिनासा ।

शीतेनरात्रौचभवेच्छ्रमश्चशिरोभितापःसतुपित्तकोपात् ॥

अर्थ—जिसका मस्तक अंगारसे तपायेंके समान गरम होवे और नाकमें दाह होय, शीतल पदार्थसे किंवा रात्रिमें शान्ति होय, उस मस्तकशूलको पित्तकोपका जानना ॥

पित्तजन्य शिररोगकी चिकित्सा ।

पित्तात्मकेशिरोरोगेस्निग्धंसम्यक्विरेचनम् ।

मृद्धीकात्रिफलेक्षूणारसैःक्षीरैर्घृतैरपि ॥

अर्थ—पित्तजन्य मस्तक रोगमें चिकने पदार्थोंसे उत्तम दस्त करावे तथा मुनक्का दाख, त्रिफला, ईखका रस, दूध और घृत ये पदार्थ खानेको देवे ॥

शर्करादि सेचन ।

शर्कराक्षीरसलिलैःशिरश्चपरिपेचयेत् ।

सर्पिपःशतधौतस्यलेपःसाधारणोहितः ॥

अर्थ—खांड, दूध और पानीको एक करके मस्तकपर धार डालनी चाहिये अथवा सौवारका धुला हुआ घोंका लेप करे तो पित्तजन्य पीडा दूर होय ॥

कुमुदादि उपशम ।

कुमुदोत्पलपद्मानांशीतानांचंदनांबुभिः ।

स्पर्शाःसुखाश्चपवनाःसेव्यादाहार्तिशांतये ॥

अर्थ—कुमुद (कमोदनी) लाल कमल और शीतल कमल, तथा चंदन इनको शीतल जलमें मिलायके मस्तकपर डाले, तथा शीतल स्पर्श और सुखकारी पवन दाहके नष्ट करनेको सेवन करना चाहिये ॥

चंदनादि लेप ।

चंदनोशीरयष्ट्याह्वलव्याघ्रनखोत्पलैः ।

क्षीरपिष्टैःप्रदेहःस्यात्स्रुतैर्वापरिपेचनम् ॥

अर्थ—चंदन, खस, मुलहदी, खिरौंटी, नखी, कमल, इनको दूधमें पीसके स्वेदन करै अथवा नास देवे या मस्तकपर डाले तो पित्तजन्य मस्तक पीडा दूर होय ॥

यष्ट्यादि घृत ।

यष्ट्याह्वंचंदनानंताक्षीरसिद्धंहितंघृतम् ।

नावनंशर्कराद्राक्षामधुकैर्वापिपित्तजे ॥

अर्थ—मुलहदी, चंदन, धमासा इनको दूधमें मिलायके फिर घृत डालके सिद्ध करे इस घृतकी नास देय । अथवा खांड, दाख और मुलहदी जलमें पीसके नाश देनेसे पीडा दूर होय ॥

धान्यादि लेप ।

धात्रोकशेरुह्नीवेरपद्मपत्रकचंदनैः । दूर्वाशीरनलानांचमूलैः

कुर्यात्प्रलेपनम् । शिरोर्तिपित्तजांहन्याद्रक्तपित्तरुजंतथा ॥

अर्थ—आमले, कसेरु, सुगंधवाला, कमल गद्दा, पद्माख, चंदन, दूर्व, खस, और नरसल इनकी जडको जलमें पीसके लेप करे तो पित्तजन्य पीडा और रक्तपित्तके विकार दूर हो ॥

कफजन्य शिररोग ।

शिरोभवेद्यस्यकफोपदिग्धंगुरूप्रतिस्तव्धमथोहिमंच ।

शूनाक्षिकूटंवदनंचयस्यशिरोभितापःसकफप्रकोपात् ॥

अर्थ—जिसका मस्तक भीतरसे कफ करके लिप्त (व्हिसासा) होवे, भारी धमासा और शीतल होवे, तथा नेत्र सुजाकर मुखको सुजाय देवे, इस मस्तकरोगको कफके फोपका जानना चाहिये । (शूनाक्षिकूटं) इस जगह कोई (शूलाक्षिकूटं) ऐसा पाठ कहते हैं इसका अर्थ यह है कि, मस्तकमें मंदशूल होय शोषं सुगमम् ॥

चिकित्सा ।

श्लेष्मिकेलंपनंरूक्षलेपस्वेदादिकारयेत् ॥

अर्थ—कफजन्य मस्तक रोगमें लंपन और रुखे पदार्थोंका लेप तथा स्वेदादिक कर्म करने चाहिये ॥

हरेणु आदि लेप ।

हरेणुनतशैलेयमुस्तैलागरुदारुभिः ।

मांसीरास्नोरुघुकैश्वकोष्णोलेपःकफार्तिनुत् ॥

अर्थ—मटर, छड, छार, छवीलो, नागरमोथा, इलायची, देवदारु, जटा-मांसी, रास्ना, अंडकी जड इनको जलमें पीस थोड़ी गरम कर लेप करे तो कफकी पीडा दूर होय ॥

मपुंनटादि लेप ।

शुंठीकुपुंम्रपुत्राटदेवकाष्ठैःसमाहिपैः ।

मूत्रपिष्टैःसुखोष्णैश्चलेपःश्लेष्मशिरोर्तिनुत् ॥

अर्थ—सोंठ, फूठ, पमाड, देवदारु और भैसका मूत्र सबको पीसकै कुछ २ गरम कर मस्तकमें लेप करे तो कफजन्य मस्तक पीडा दूर होय ॥

सन्निपातिक शिरोरोग ।

शिरोभितापेत्रितयप्रवृत्तेसर्वाणिलिङ्गानिसमुद्भवंति ॥

अर्थ—त्रिदोषसे उत्पन्न मस्तक रोगमें तीनों दोषोंके सब लक्षण होते है ॥

चिकित्सा ।

सन्निपातसमुत्थेत्रघृततैलंचवस्तयः ।

धूमनस्यंशिरोरेकोलेपस्वेदाद्यमाचरेत् ॥

अर्थ—सन्निपातजन्य मस्तकरोगमें घृत, तेल वस्तिकर्म, धूमपान, नस्य और मस्तकजुलाव, लेप और स्वेदादिक कर्म करने चाहिये ॥

स्वेदन ।

स्वेदनंघृतगोधूमैर्निर्गुंड्याक्कथितेनवा ।

सन्निपातोद्भवांहन्तिपीडांहिहितपाचनैः ॥

अर्थ—घी और गेंहूँ, इनसे अथवा निर्गुंडीके काथसे मस्तकको स्वेदन करें तथा जो हितकारी पदार्थ सन्निपात पीडाको नष्ट करे है ॥

घृतपान ।

पुराणसर्पिपःपानंविशेषेणादिशंतिहि ॥

अर्थ—इस सन्निपातजन्य मस्तकपीडामें पुराने घृतको पीना बहुत गुण दिखाता है ॥

स्मरफलादिप्रथमन ।

स्मरफलतिलपर्णीबीजसंयुक्तभृताकुशदलवटबीजत्वग्रजोर्धा
शतुल्यम् । प्रथमनविधिनातदत्तमात्रंशिरोरूक्प्रलपनकफतं
द्रासन्निपातंनिहन्यात् ॥

अर्थ—मैनफल, तिलवनके बीजमें कुशके पत्ते घटके बीज, तजका चूर्ण
आधा २ भाग मिलायके प्रथमननस्य देवे तो मस्तकपीडा प्रलाप, कफ, तंद्रा
और सन्निपातको नष्ट करे ॥

रक्तजशिरोग ।

रक्तात्मकःपित्तसमानलिंगःस्पर्शासहत्वंशिरसोभवेच्च ॥

अर्थ—रक्तजन्य मस्तक रोगमें पित्तकृत मस्तक रोगके सब लक्षण होते
हैं, तथा मस्तकका स्पर्श सहा नहीं जाय, यह विशेष होता है ॥

चिकित्सा ।

रक्तजेपित्तवत्सर्वभोजनालेपसेचनम् ।

शीतोष्णयोश्चविन्यासोविशेषाद्रक्तमोक्षणम् ॥

अर्थ—रक्तके मस्तकरोगमें सब कर्म पित्तरोगके समान करे तथा भोजन
लेप और सेचन ये सबभी पित्तजन्य मस्तकपीडाके समान उष्ण और
गरम मिले कर्म तथा इस रक्तजन्यमें विशेष करके मस्तकमेसे रुधिर
निकालना चाहिये ॥

घृत तथा जलधारण ।

सर्पिपःशतधोतस्यशिरसाधारणंहितम् ।

निमज्जनंचशिरसःशीतलेशस्यतेभसि ॥

अर्थ—रुधिरजन्य मस्तकरोगवालेको सौवारका धुला हुआ घृत मस्तकपर
रसे अथवा शीतल जलमे गोता लगावे तो मस्तक पीडा दूर होय ॥

कृष्णादि लेप ।

कृष्णांबुशुंठीमधुकंशताह्वोत्पलवालकैः ।

जलपिष्टैःशिरालेपःसद्यःशूलनिवारणः ॥

अर्थ—पीपल, मुगंयवाला, सोंठ, मुलहठी, सतावर, फमलगट्टा, खस,
इनको जलमें पीसके लेप करे तो रुधिरकी पीडा तत्काल दूर होय ॥

नागरादि नस्य ।

नागरकल्कविमिश्रंक्षीरंनस्येनयोजितं पुंसाम् । नानादोषोद्धू^१
तांशिरोरुजं हंतितीव्रांच ॥ शिरोर्तिनाशयत्याशुपुष्पवामुचु
कुंजम् ॥

अर्थ—सोंठके कल्कको दूधमें मिलायके नस्य देवे तो इस प्राणीके अनेक
अनेक दोषजन्य तीव्रमस्तकपीडा नष्ट होय । अथवा मुचुद्दके फूलकी
नास और लेप मस्तकपीडाको दूर करे ॥

कमलादि लेप ।

कमलंसुरसामूलंलितं हंतिशिरोरुजम् ॥

अर्थ—कमल और तुलसीकी जड़का लेप मस्तक पीडाको दूर करे ॥

मस्तकशूलमें नासिकाद्वारा रुधिर गिरे उसका यत्न ।

शिरःशूलेतुसंजातेनासारक्तं स्रवेद्यदि ॥ दाडिमीपुष्पदुर्वोत्थं^१
रसंकपूरमाक्षिकम् । क्षौद्रं दुग्धं शिरोमर्द्यनस्येपानेसितापयः ॥

अर्थ—मस्तकशूल हानेपर यदि नाकसे रुधिर गिर करे तो अनारके फूल,
द्रव, इन दोनोंके रसमें कपूर और सहज दूध डालके नस्य देय अथवा मस्त-
कमें मालिश करे तथा नस्य और पीनेमें मिश्री और दूध देवे ॥

उदुंबर फलादि ।

उदुंबरफलंपक्वघृतपक्वसितायुतम् । एलामरिचसंयुक्तंभुक्तं^१
स्याद्रक्तशांतये । कंटकारीफलरसंलिप्त्वाहंतिशिरोरुजम् ॥

अर्थ—गूलरके पके फलको घृतमें भूनके मिश्री, इलायची और काली
मिरिचका चूर्ण मिलायके सेवन करे तो मस्तकसे रुधिरका गिरना बंद होय
अथवा कटेरीके फलके रसका मस्तकमें लेप करे तो शिरपीडा दूर होय ॥

क्षयज शिरोरोग ।

असृग्वसाश्लेष्मसमीरणानां शिरोगतानामिहसंक्षयेण । क्षवप्र
वृत्तिः शिरसोऽभितापः कष्टो भवेदुग्रजोतिमात्रम् । संस्वेदन
च्छर्दनधूमनस्यैरसृग्विमोक्षैश्च विवृद्धिमेति ॥

१ अर्थ—मस्तकके रुधिर घसा कफ और वायु इनके क्षय होनेसे अत्यन्त
भयकर मस्तकगूल होता है, छींक बहुत आवे, मस्तक गरम होवे तथा उसमें

स्मरफलादिप्रथमन ।

स्मरफलतिलपर्णीबीजसंयुक्तभूतांकुशदलवटबीजत्वग्रजोर्धा
शतुल्यम् । प्रथमनविधिनातद्वत्तमात्रंशिरोरुक्प्रलपनकफतं
द्रासन्निपातनिहन्यात् ॥

अर्थ—मैनफल, तिलवनेके बीजमें कुशके पत्ते घटके बीज, तजका चूर्ण
आधा २ भाग मिलायके प्रथमननस्य देवे तो मस्तकपीडा प्रलाप, कफ, तंद्रा
और सन्निपातको नष्ट करे ॥

रक्तजशिरोरोग ।

रक्तात्मकःपित्तसमानलिङ्गःस्पर्शासहत्वांशिरसोभवेच्च ॥

अर्थ—रक्तजन्य मस्तक रोगमें पित्तकृत मस्तक रोगके सब लक्षण होते
है, तथा मस्तकका स्पर्श सहा नहीं जाय, यह विशेष होता है ॥

चिकित्सा ।

रक्तजेपित्तवत्सर्वभोजनालेपसेचनम् ।
शीतोष्णयोश्चविन्यासोविशेषाद्रक्तमोक्षणम् ॥

अर्थ—रक्तके मस्तकरोगमें सब कर्म पित्तरोगके समान करे तथा भोजन
लेप और सेचन ये सबभी पित्तजन्य मस्तकपीडाके समान उष्ण और
गरम मिले कर्म तथा इस रक्तजन्यमें विशेष करके मस्तकमेंसे रुधिर
निकालना चाहिये ॥

घृत तथा जलधारण ।

सर्पिपःशतधौतस्यशिरसाधारणंहितम् ।
निमज्जनंचशिरसःशीतलेशस्यतेभसि ॥

अर्थ—रुधिरजन्य मस्तकरोगवालेको सौवारका घृता हुआ घृत मस्तकपर
रखे अथवा शीतल जलमें गोता लगावे तो मस्तक पीडा दूर होय ॥

कृष्णादि लेप ।

कृष्णांबुशुंठीमधुकंशताह्वोत्पलवालकैः ।
जलपिष्टैःशिरालेपःसद्यःशूलनिवारणः ॥

। अर्थ—पीपल, सुगंधवाला, सोंठ, सुलहटी, सतावर, कमलगट्टा, खस,
इनको जलमें पीसके लेप करे तो रुधिरकी पीडा तत्काल दूर होय ॥

नागरादि नस्य ।

नागरकल्कविमिश्रीरंनस्येनयोजितंपुंसाम् । नानादोषोद्धू
तांशिरोरुजंहंतितीव्रांच ॥ शिरोर्तिनाशयत्याशुपुष्पवामुचु
कुंदजम् ॥

अर्थ—सोंठके कल्कको दूधमें मिलायके नस्य देवे तो इस प्राणिके अनेक
अनेक दोषजन्य तीव्रमस्तकपीडा नष्ट होय । अथवा मुचकुंदके फूलकी
नास और लेप मस्तकपीडाको दूर करे ॥

कमलादि लेप ।

कमलंसुरसामूलंलितंहंतिशिरोरुजम् ॥

अर्थ—कमल और तुलसीकी जड़का लेप मस्तक पीडाको दूर करे ॥

मस्तकशुभे नासिकाद्वारा रुधिर गिरे उसका यत्न ।

शिरःशूलेतुसंजातेनासारक्तंभ्रवेद्यादि ॥ दाडिमीपुष्पदुर्वोत्थं
रसंकर्पूरमाक्षिकम् । क्षौद्रंदुग्धंशिरोमर्दनस्येपानेसितापयः ॥

अर्थ—मस्तकगूल हानेपर यदि नाकसे रुधिर गिर करे तो अनारके फूल,
द्रव, इन दोनोंके रसमें कपूर और सहत दूध डालके नस्य देय अथवा मस्त-
कमें मालिश करे तथा नस्य और पानेमें मिश्री और द्रव देवे ॥

उदुंबर फलादि ।

उदुंबरफलंपक्वघृतपक्वसितायुतम् । एलामरिचसंयुक्तंभुक्तं
स्याद्रक्तशांतये । कंटकारीफलरसंलिप्त्वाहंतिशिरोरुजम् ॥

अर्थ—गूलरके पके फलको घृतमें भूनके मिश्री, इलायची और काली
मिरचका चूर्ण मिलायके सेवन करे तो मस्तकसे रुधिरका गिरना बंद होय
अथवा कटेरीके फलके रसका मस्तकमें लेप करे तो शिरपीडा दूर होय ॥

क्षयज शिरोरोग ।

असृग्बसाश्लेष्यसमीरणानांशिरोगतानामिहसंक्षयेण । क्षवप्र
वृत्तिःशिरसोऽभितापःकष्टोभवेदुग्ररुजोतिमात्रम् । संस्वेदन
च्छर्दनधूमनस्यैरसृग्विमोक्षैश्वविवृद्धिमेति ॥

अर्थ—मस्तकके रुधिर घसा कफ और धातु इनके क्षय होनेसे अत्यन्त
भयंकर मस्तकगूल होता है, छींक बहुत आवे, मस्तक गरम होवे तथा उसमें

स्वेदन वमन धूमपान नस्य और रुधिर निकलना ये उपद्रव करनेसे यह मस्तकशूल होता है इसको क्षयजमस्तकशूल कहते हैं ॥

षिकित्सा ।

क्षयजेक्षयनाशायकर्तव्यो बृंहणो विधिः ।

पानेनस्येचसर्पिःस्याद्वातघ्नैर्मधुरैःशृतम् ॥

अर्थ—क्षयजन्य मस्तक रुधिर आदिकी क्षीणता नष्टकरनेको बृंहण विधि अर्थात् जिन औषधोसे मस्तकमें रुधिर आदिबड़े वो कर्म करे तथा पीने और नस्यमे वातनाशक मधुर काथोसे सिद्धकरा हुआ घृत देना चाहिये ॥

सामान्य यत्न ।

योजयेत्सगुडसर्पिर्वृतपूरांश्चभक्षयेत् ।

नावनंक्षीरसर्पिर्भ्यां पानंचक्षीरसर्पिपोः ॥

अर्थ—क्षयजन्य मस्तकरोगमे गुड और घृत मिलायके सेवनकरे तथा घृतपूर (घेवर) भक्षण करे, तथा दूध और घी मिलायके नस्य देवे तथा दूध और घी मिलायके पीना चाहिये ॥

स्वेद ।

क्षीरपिष्टैस्तिलैःस्वेदोजीवनीयैश्चशस्यते ॥

अर्थ—जीवनीयगणकी औषधोमे तिल मिलायके दूधमे पीसडाले फिर इसकी पोटली बनायके अग्निसे स्वेदनकरे ॥

निवादि गुग्गुलु ।

निंबत्वक्त्रिफलावासाचूर्णकटुपटोलिका । तोयैश्चतुर्गुणेकाथे
यादाशंवस्त्रगालितम् ॥ आदायगुग्गुलुंतुल्यंक्षिप्वातस्मिन्पु
नःपचेत् । पिंडितंभक्षयेत्कर्पस्निग्धमुष्णंचभोजयेत् । वातश्ले
ष्मोत्थितांपीडांडुःसहांचशिरोरुजम् ॥

अर्थ—नीमकी छाल, हरड, बहेडा, आंवला, अहुसा, कटुवा, पटोल पत्र समान भाग ले ये चौगुने जलमे डालके काय करे जब चतुर्थांश रहे तब टतारके कपडेमे छात्र लेंय फिर सब औषधोंके समान गुग्गुलु शुद्ध डालके पचावे, जब गाढी हो जाय तब घूटके छः छः मासेकी गोली बनाय लेवे, दो गोली नित्य भक्षण करे ऊपरसे चिकना और गरम पदार्थ भोजन करे, यह वातकफजन्य मस्तकपीडाको दूर करे ॥

शिशुपत्रादि लेप ।

शिशुपत्ररसैर्मर्द्यमरीचंमूर्धशूलजित् ॥

अर्थ—काली मिरचोंको सहिजनेके पत्तोंके रसमें खरल कर लगानेसे मस्तक-पीडा दूर होय ॥

पिप्पल्यादि नस्य ।

पिप्पलीसैंधवंपाच्यंतैलेनाज्येननस्यतः ।

शिरःशूलनिहंत्याशुतमःसूर्योदयोयथा ।

अर्थ—पीपर और सैधानिमक, इनको घीमें अथवा तेलमें पकावे इसको घृत या तेलकी नास देनेसे मस्तक शूल इसप्रकार नष्ट होय जैसे सूर्योदयसे अंधकार नष्ट होय ॥

कुष्ठादिलेप ।

कुष्ठमेरंडमूलंवाचकमर्दकमूलकम् ।

आरनालेनपिष्टं तलेपोहंतिशिरोरुजम् ॥

अर्थ—कूठ, अंडकी जड़, पमारकी जड़ इनको कांजीमें पीस लेप करे तो मस्तकपीडा दूर होय ॥

कुंकुमादिघृत ।

कुंकुमंचसितातुल्यं द्वाभ्यां तुल्यं घृतं भवेत् । घृताच्चतुर्गुणं तो

यंपाच्यं स्याद्घृतशेषितम् । नस्यंतु शंखशिरसःश्चक्षुःशूलं

चनाशयेत् ॥

अर्थ—केशर और खांड समान भागले इन दोनोंके बराबर घी लेवे तथा घृतसे चौगुना जल डालके सिद्ध करे जब घृतमत्र शीप रहे तब उतारके छान लेय, इसकी नस्य देनेसे मस्तक कनपटी और नेत्रपीडा दूर होय ॥

कृमिजन्यशिरोरोग ।

निस्तुद्यतेयस्यशिरोऽतिमात्रंसंभक्ष्यमाणंस्फुरतीवचांतः ।

घ्राणाच्चगच्छेद्दुधिरंसपूर्यंशिरोभितापःकृमिभिःसघोरः ॥

अर्थ—जिसके मस्तकमें टांकीके तोड़ने कीसी पीडा होवे, तथा कृमि भीतरसे मस्तक को खाकर पोलाकर देवे, तथा मस्तक भीतरसे फटके तथा नाकमें रुधिर राप और कीड़ पड़े यह कृमिजरोरोग बड़ा भयंकर है ॥

कृमिजन्यशिररोगकी चिकित्सा ।

कृमिजेतुशिरोरोगेव्योपनक्ताहृशियुजैः ।

अजामूत्रेणसंपिष्टैर्नस्यंकृमिहरंपरम् ॥

अर्थ—कृमिजन्य मस्तकरोगमें सोढा, मिरच, पीपल, कंजा और सहजनेके बीज इनको समान भागले बकराके मूत्रमें पीस नस्य देय तो मस्तककी कृमि दूर हो ॥

विडंगादि तैल ।

विडंगंस्वर्जिकादंतीर्हिगुगोमूत्रसंयुतम् ।

विपक्वंसार्पपंतैलंकृमिघ्नंनस्यतःस्मृतम् ॥

अर्थ—वायविडंग, सब्जीखार, दंती, हींग और गोमूत्रमें सरसोंका तेल डालके सिद्ध करे इसकी नस्य देनेसे मस्तककी कृमि नष्ट हाय ॥

सूर्यावर्तशिररोग ।

सूर्योदयंप्रतिमंदमक्षिभ्रुवंरुक्समुपैतिगाढा । विवर्द्धते
चांशुमतासहैवसूर्योपवृत्तौविनिवर्ततेच ॥ शीतेनशांतिलभते
कदाचिदुष्णेनजंतुःसुखमाश्रुयाद्वा । सर्वात्मकंकष्टतरविकारं
सूर्यापवृत्तंतमुदाहरंति ॥

अर्थ—सूर्यके उदय होनेसे धीरे २ मस्तक दूखनेका आरंभ होय और जैसे जैसे सूर्य बढे तैसे २ वह शूल नेत्र और ध्रुवटी (भाह) इनमें दो प्रहर दिन चढे तक बढता जाय और सूर्यके साथ बढकर फिर जैसे २ सूर्य अस्त होय तैसे २ पीडा मन्द होती जाय, शीतल और गरम उपचार करनेसे मनुष्यको सुख होय इस सन्निपातके विकारोंको सूर्यावर्त कहते है ॥

सूर्यावर्तरोगकी चिकित्सा ।

सूर्यावर्तप्रशमनंपाययेत्सगुडंहाविः ।

तिलदुग्धप्रलेपेनसूर्यावर्तजयेत्र्यहात् ॥

अर्थ—सूर्यावर्त रोगमें गुड और घी मिलायके पींचे तो सूर्यावर्त रोग दूर होय। अथवा तिलोंको दूधमें बारीक पीस लेप फरे तो ३ दिनमें सूर्यावर्त रोग दूर होय।

तथा ।

सूर्यावर्तेशिरावेधोनावनंक्षीरसर्पिपोः ।

हितःक्षीरघृताभ्यासस्ताभ्यामेवविरेचनम् ॥

अर्थ—सूर्यावर्त्त रोगमें फस्त खोलना, दूध और घी मिलायके नस्य देवे तथा दूध और घृतकार्पाना तथा दस्त कराना सूर्यावर्त्त रोगीको हितकारीहै ॥
दशमूल्यादि नस्य ।

दशमूलीकपायंतु सर्पिःसैधवसंयुतम् ।
नस्यमर्धावभेदघ्नसूर्यावर्त्तशिरोर्तिनुत् ॥

अर्थ—दशमूलके काथमें घी और संधानिमक डालके नस्य देना आधा-सीसी, सूर्यावर्त्त आदि मस्तकपीडा दूर होय ।
सारिवादिलेप ।

सारिवोत्पलकुष्ठानिमधुकंचाम्लपेपितम् ।
सर्पिस्तैलयुतोलेपःसूर्यावर्त्तार्धभेदयोः ॥

अर्थ—सारिवा. कमलगट्टा, कूठ और मुलहटीको समान भागले नीचूके रसमें पीस घी और तैलमें मिलाय लेप करे तो सूर्यावर्त्त और आधासीसी दूर होय ॥

भृंगराजादिनस्य ।

भृंगराजरसश्छागक्षीरतुल्योर्कतापितः ।
सूर्यावर्त्तनिहंत्याशुनस्येनैवप्रयोगराट् ॥

अर्थ—भांगरेका रस और बकरीका दूध दोनोंको समान भागले धूपमें गरम कर नस्य देवे तो यह प्रयोगराज सूर्यावर्त्तको नष्ट करे ॥
मूषनेकी पोदली तथा उपनाह ।

शिरीषस्यफलैर्मूलैरवपीडंप्रयोजयेत् । अवपीडोहितोवास्या
द्वचापिप्पलिभिःकृतः ॥ जांगलानिचमांसानिकारयेदुपनाह
नम् । तेनास्यशाम्यतेव्याधिःसूर्यावर्त्तःसुदारुणः ॥

अर्थ—सिरसके फल और जडको पीस अवपीडनस्य देवे अथवा वच और पीपलकी अवपीडनस्य देय । जंगली जीवोंके मांसके रससे उपनाहन (वफारा) देवे तो इस प्राणीका दारुण सूर्यावर्त्त रोग दूर हो ॥
सूर्यावर्त्तरस ।

मृतसूताभ्रकंतीक्ष्णंमुंडंताम्रमृतंसमम् । स्नुहिक्षीरेदिनमर्द्यं
पिंडितंमापमात्रकम् । सप्ताहात्सूर्यवर्त्तादीञ्छिरोरोगान्निवारयेत् ॥

अर्थ—पारदभस्म, अभ्रकभस्म तीक्ष्णलोह, मुंडलोह और तामेकी भस्म

समान भाग लेवे, इनकी थूहरके दूधमें १ दिन पीस उडदके समान गोली बनावे, सात दिन इस सूर्यावर्त्त रसका सेवन करनेसे सूर्यावर्त्तादि मस्तकके सब रोग नष्ट होय ॥

अनंतवात ।

दोपास्तुदुष्टास्त्रयएवमन्यांसंपीड्यगाढंसरुजंसुतीव्राम् । कुव
तिसाक्षिभ्रुविशंखदेशेस्थितिकरोत्याशुविशेषतस्तु ॥ गंडस्य
पार्श्वचकरोतिकंपंहनुग्रहंलोचनजांश्वरोगान् । अनंतवातंतमु
दाहरंतिदोपत्रयोत्थांशिरसोविकारम् ॥

अर्थ-तीनों दोष (वात, पित्त, कफ) दुष्ट होकर मन्या नाडीको पीडित कर नेत्र, भौंह, कनपटी, इनमें घोर पीडा करें तथा गंडस्थल और पसवाडेमें पीडा कंफ होय, ठोडी जकर जाय, नेत्र रोग होय, इस त्रिदोषजन्य मस्तक रोगको अनंतवात कहते हैं । सुश्रुतने अनंतवात रोगको छोडकर मस्तक रोग १० ही कहे हैं ॥

शिरोरोगचिकित्सा ।

अनंतवातेकर्तव्यःसूर्यावर्तहितोविधिः ।

शिराव्यधश्चकर्तव्योऽनंतवातप्रज्ञांतये ॥

अर्थ-अनंतवात रोगमें सूर्यावर्त्तमें जो औषध कही है सो करे, तथा अनंतवातके दूर करनेको मस्तकमेंसे रुधिर निकलवाना चाहिये ॥

अत्र ।

मधुमस्तुकसंयावधृतपूरैर्विशेषतः ।

आहारश्चप्रदातव्योवातपित्तविनाशनः ॥

अर्थ-मुलहटी, छाछ, सेमई (यायूली), घेवर ये घृतप्लुत पदार्थ भोजन करावे तो, घटी हुई वादी और पित्तसे जो अनंतवातका रोग है सो दूर हो ॥

अर्थावभेदकः ।

रूक्षाशनात्यध्यशनप्रागवातावश्यमैथुनैः । वेगसंधारणायास
व्यायामैःकुपितोऽनिलः ॥ केवलःसकफोवाद्द्वैगृहीत्वाशिरसो
वली । मन्याभ्रुशंखकर्णाक्षिललाटेर्धैतिवेदनाम् ॥ शस्त्रारणिनि
भांकुर्यात्तीव्रांसोऽर्थावभेदकः । नयनंवाथवाश्रोत्रमतिवृद्धोवि
नाशयेत् ॥

अर्थ—रूखे अन्नसे, अत्यन्त भोजन, अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन) पूर्व दिशाकी पवन सेवन करनेसे, बर्फसे, मैथुनसे, मलमूत्रादिका वेग धारण करनेसे, परिश्रम और दंड कसरत करनेसे, इन कारणोंसे कुपित भई जो केवल वायु अथवा कफयुक्त वायु सो आधे मस्तकको ग्रहण कर मन्यानाडी, भ्रुकुटी, कनपटी, कान, नेत्र, ललाट, ये सब एक ओरसे आधे दूखें, कुल्हाडीसे घाव करनेकीसी अथवा अरणी (आंच निकालनेके काष्ठके) मथनेकीसी पीडा होय उसको अर्धावभेदक ' आधासीसी ' कहते हैं यह रोग जब बहुत बढ जाता है तब एक ओरके कानसे बहरापन हो जाता है, अथवा एक ओरकी आंख मारी जाती है जिस ओरकी पीडा होय उधर ये उपद्रव होते है । सुश्रुतने इस रोगको त्रिदोषज कहा है ॥

शुंठघ्रादि नस्य ।

शुंठ्यानस्यमजाक्षीरेकृतंतद्धिशिरोर्तिनुत् ॥

अर्थ—बकरीके दूधमें सोंठका कल्क मिलाय नस्य देवे तो आधासीसी दूर होय ॥

कुंकुमघृत ।

कुंकुमंघृतसंयुक्तंनस्यार्धस्यशिरोव्यथाम् ।

नाशयेत्तत्क्षणादेवहितमेतच्छिरोरुजि ॥

अर्थ—केशरको घीमें आँटाके नस्य देनेसे आधासीसी तत्क्षण दूर होय, यह सर्व मस्तक रोगोंको हितकर है ॥

शिरोरोगचिकित्सा ।

एषएवविधिःकार्यःकृत्स्नश्चार्धावभेदके । अर्धावभेदकेपूर्वस्ने

हस्वेदोहिभेषजम् । विरेकःकायशुद्धिश्चधूपःस्निग्धोष्णभोजनम् ॥

अर्थ—यह विधि समग्र आधासीसीमें करे, परंतु प्रथम स्नेहन और स्वेदन करनाही हित है, तथा दस्तोंका कराना, देहका शोधन, धूप और चिकने तथा गरम पदार्थ भोजन करना हित है ॥

गांधार्यादि नस्य ।

गांधारीचजटामांसीघृतेनसहपाचयेत् ।

तदाज्यंनस्यमात्रेणनिहंत्यर्धाशिरोरुजम् ॥

१ स्थादुत्तमांग इजतेद्विमाष सतीदभेदधममोऽशूले । पक्षाद्गहाहादय वाप्यकरमात्स्यादद्वेभेदे त्रितया व्यवयेत् ॥

अर्थ—जवासा और जटामांसी इनको घृतमें पचायके इसकी नस्य देय तो आधासीसी अवश्य नष्ट होय ॥

तुवर्यादिनस्य ।

अर्धावभेदेतुवरीदलोद्भवंरसंचद्वारसमिश्रितंचानस्येनयुक्त्वा
पुरुपस्तुबुद्धिमाच्छिरोरुजंनाशयतिस्मतत्क्षणम् ॥

अर्थ—आधासीसीके रोगमें अरहरके पत्तोंके रसमें दूधका रस मिलाय नास देवे तो तत्काल आधासीसीका रोग दूर होय ॥

विडंगादिनस्य ।

विडंगानितिलान्कृष्णान्समान्पिष्ट्वाविलेपयेत् ।
नस्यंचाथाचरेत्तस्मादर्धभेदंव्यपोहति ॥

अर्थ—वायविडंग और काले तिल समान भाग ले पीसे इसका लेप करनेसे तथा नास लेनेसे आधाशीशी दूर होय ॥

गिरिकर्ण्यादि नस्य ।

गिरिकर्णफलंमूलंसजलंनस्यमाचरेत् ।
मूलंवाबंधयेत्कर्णेनिहंत्यर्धशिरोरुजम् ॥

अर्थ—कोयलके फल और जडको जलमें पीस नस्य लेवे । अथवा कोयलकी जडको कानमें बांधे तो आधाशीशी दूर होय ॥

मरीच्यादि लेप ।

मरीचंभृंगजैर्द्रावैर्मरीचंशालितंदुलैः ।
अर्धशीर्षव्यथाहंतिलेपोवाशुंठिवारिणा ॥

अर्थ—कालीमिरच और भांगरेका रस अथवा काली मिरच और प्राचीन बारीक चावलको बारीक पीस लेप करे । अथवा सोंठके जलका मस्तकमें लेप करे तो आधासीसी दूर होय ॥

दुग्धादि पान ।

पिवेत्सशर्करंक्षीरंनीरंवानारिकेलजम् ।
सुशीतंवापिपानीयंसर्पिर्वानस्यतस्तथा ॥

अर्थ—ओंटे दूधमें मिथी मिलायके पीवे । अथवा मिथी मिला नारिपलका जल पीवे, अथवा शीतल जल पीवे, अथवा धीकी नास लेवे तो आधासीसी दूर होय ॥

सारिवादि लेप ।

सारिवाकुष्ठमधुकवचाकृष्णोत्पलैस्तथा ।

लेपःसकांजिकःस्नेहःसूर्यावर्तार्धभेदयोः ॥

अर्थ-सारिवा, कूठ, सुलहदी, वच, काला कमल, इनको कांजीमें पीस घृतमें मिलाय लेप करे तो आधासीसी और सूर्यावर्त रोग दूर होय ॥

दुग्धमर्दनादि नस्य ।

सितोपलायुतंघृष्टंमदनंगोपयोन्वितम् ।

नस्यतोनुदितेसूर्येनिहंत्येवार्धभेदकम् ॥

अर्थ-मिश्री और मैनफलको गौंके दूधमें घिस सूर्य उदय होनेके प्रथम नास देवे, तो अवश्य आधासीसी दूर होय ॥

शशाका रस ।

शशमुंडरसंपीत्वामरिचैरवचूर्णितम् । भोजनादौतुसप्ताहात्सू

र्यावर्तार्धभेदकौ । हंतिसर्वात्मकोशीघ्रंदुःखदौभृशदारुणौ ॥

अर्थ-सप्ताके शूंडका मांसरसमें काली मिरचका चूर्ण डालके भोजनके प्रथम ७ दिन नित्य पीवे तो अत्यंत दुःखदाई सर्वदोषजन्य सूर्यावर्त और आधासीसी शीघ्र दूर होय ॥

गुडादि नस्य ।

गुडंकरंजबीजंनस्यमुष्णजलेहितम् ।

अर्थ-गुड और कंजाके बीज दोनोंको जलमें पीसके नस्य देना हितकारी है, अर्थात् सूर्यावर्त और आधासीसी दूर होय ॥

बृहज्जीवक तैल ।

जीवकपैभकौवापिद्राक्षाचमधुकंवल । नीलोत्पलंचंदनंचविदा

रीशकैरतथा ॥ तैलप्रस्थंपच्येदेभिःशूनैःपयसिपद्मशुषे । जां

गलस्यतुमांसस्यतुलार्धस्वरसेनतु ॥ सिद्धमेतद्भवेन्नस्यंतैलम

र्धावभेदकम् । बाधिर्यंकर्णशूलंचतिमिरंगलगंडिकाम् ॥ वाति

कंपैत्तिकंचैवशीर्षरोगंनियच्छति । दंतचालंशिरश्चालंबृहज्जी

वनियच्छति ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, दास, सुलहदी, खिरेटी, नीलकमल, चंदन, विदारी-कंद, खांड ये प्रत्येक एक एक तोले लेय, मीठा तैल १ सेर, जल, ६ सेर तथा

जंगली जीवोंका मांसरस २०० तोले, सबको एकत्रकर तेल सिद्धकरे इसकी नस्य आधासीसी, बहरापना, कानका दर्द, तिमिर, गलगंड, तथा वातपित्तजन्य मस्तकके रोग, दातोंका हिलना, मस्तकका काँपना इनको यह बृहज्जीवक तेल दूर करे ॥

रास्नादि काय ।

रास्नाविश्वविडंगानिरुवूकं त्रिफला तथा । दशमूलीपृथक्छया
मांकाथोवातामयापहः ॥ अर्धावभेदकेप्याढचेचार्दितेवातखं
जके । नेत्ररोगेशिरःशूलेज्वरापस्मारनाशनः ॥

अर्थ—रास्ना, सोंठ, वायविडंग, अंडकी जड़, त्रिफला, दशमूलकी दश औषध और पीपल इनका काय वादीके रोगको दूर करे, आधासीसी, लकवा, वातखंज, नेत्ररोग, शिरकी पीडा, ज्वर और मृगीरोग ये सब दूर हो ॥

शंखक शिरोरोग ।

पित्तरक्तानिलादुष्टाः शंखदेशे विमूर्च्छिताः । तीव्ररुग्दाहरागं हि
शोथं कुर्वतिदारुणम् ॥ सशिरोविपवद्वेगीनिरुध्याशुगलं तथा ।
त्रिरात्रार्जावितंहंति शंखको नामनामतः ॥ त्र्यहाज्जीवतिभैषज्यं
प्रत्याख्यायास्यंकारयेत् ॥

अर्थ—दुष्ट भये जो पित्त रक्त और वायु सो (इस जगह कफकोभी दुष्ट हुआ जानना यह सुश्रुतमें कहा है) विशेष बढकर नेत्रोंमें भयंकर सूजन उत्पन्न करे और इसमें घोर पीडा होय, घोर दाह होय, तथा नेत्र लाल बहुत हों और यह विपके वेगके समान बढकर गलेमें जाकर गलेको रोक दे, इस शंखक रोगसे रोगीके तीन दिनमें प्राणोंका नाश होय, इन तीन दिनमें कुशल वैद्यकी औषधि पहुंचनेसे रोगी बचे, परंतु प्रथम निश्चय करके चिकित्सा करना ॥

दार्व्यादि लेप ।

दार्वाहरिद्रामंजिष्ठासनिषोशीरपद्मकम् ।

एतत्प्रलेपनंकुर्याच्छंखकस्यप्रशान्तये ॥

अर्थ—दारुहलदी, हलदी, मजीठ, नींबकी छाल, खस और पद्माख, इनको जलमें पीसके लेप करे तो शंखक अर्थात् कनपटीका दूखना दूरहोय ॥

सामान्य उपचार ।

शीततोयाभिषेकश्च शीतलक्षीरसेवनम् ।

कल्कैश्चक्षीरिवृक्षाणांशंखकेलेपनंहितम् ॥

अर्थ—शंखक रोगमें शीतल जलका तरडा डालन, शीतल दूध पीवेक्षीरी-
वृक्ष (गूलर वड आदि)का कल्क करके लेप करना हितकारी है ॥

बलादि लेप ।

बलानीलोत्पलंदूर्वातिलाःकृष्णपुनर्नवा ।

शंखकेनंतवातेचलेपःसर्वशिरोर्तिनुत् ॥

अर्थ—खिरंटी, नीलकमल, दूध, तिल, पीपल और पुनर्नवा इनको चागीक
पीस शंखक रोग और अनंतवात मस्तकके रोगमें लेप करे ॥

करंजादि शीर्षरेचक ।

करंजशियुवीजानिपत्रकंसर्पपत्वचः ।

सर्वेषांशीर्षरोगाणामेतच्छीर्षविरेचनम् ॥

अर्थ—कंजा, सहिजनके बीज, पत्रज, सरसों और दालचीनी इन सबका
एकत्रकर नास देवे तो मस्तक जुझाव होय और सर्व रोग दूर होय ॥

गुडादिनस्य ।

नावनंसगुडंविश्वपिप्पलीसंधवांबुना ।

भुजस्तंभादिरोगेषुसर्वमृद्भ्रगदेपुच ॥

अर्थ—सोंठ, गुड, पीपल, संधानिमक इनको जलमें पीसके नस्य देवे तो
भुजाका स्तंभ, लकवा और सब मस्तकके रोग दूर हों ॥

शर्करादिनस्य ।

सशर्करंकुंकुममाज्यभृष्टंनस्यंविधेयंपवनासृगुत्थे ।

भ्रूशंखकर्णाशिशिरोर्धशूलेदिनाभिवृद्धिप्रभवेचरोगे ॥

अर्थ—कच्ची खांड, केशर दोनोंको घीमें भूनेके वातरक्तके मस्तक रोगमें
तथा, भौंह, कनपटी, कान, नेत्र, शिरका आधा दूखना और आधासीसी आदि
रोगोंमें नस्य देवे तो उक्त सब रोग शांत हों ॥

वृक्षादि लेप ।

कुपुमेरंडजंमूलंलेपःकांजिकपेपितः ।

शिरोर्तिनाशयत्याशुपुष्पंवामुचुकुंदजम् ॥

अर्थ—कूठ और अंडकी जडको फौजीमें पीसके लेप करे तो मस्तकपीडा
दूर करे तथा मुचुकुंदके फूलको नास मस्तकपीडाको दूर करे ॥

देवदारुपर्णादिलेप ।

देवदारुनतंविश्वंनलदंविश्वभेषजम् ।

लेपःकांजिकसंपिष्टस्तैलयुक्तःशिरोर्तिनुत् ॥

अर्थ—देवदारु, छड, सोंठ, नरसलकी जड और सोंठको कांजीमें पीस तेल मिलाय लेप करे तो शिरकी पीडा दूर होय ॥

नवसादरचूर्णयोग ।

नस्येनकलिकाचूर्णनवसागरजरजः ।

वातश्लेष्मभवांपीडांशिरसोहंतिसर्वथा ॥

अर्थ—कलीका बिना बुझा चूना और नौसदर इनको जलसे बारीक पीस उसी समय इसको सूँघे अर्थात् नास लेवे तो वातकफकी घोर पीडा सर्वथा नष्ट होय ॥

त्रिकट्वादिकाढा ।

त्रिकटुकपुष्कररजनीरास्नासुरदारुउग्रगंधानाम् ।

क्वाथःशिरोर्तिजालंनासापीतोनिवारयति ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, पुहकरमूल, हलदी, रास्ना, देवदारु, वच इनको समान भाग ले क्वाथ करे इसको नाकके रास्तेसे पीवे तो सब मस्तकके रोग दूर होय ॥

क्षीरादिनस्य ।

गुडनागरकल्कस्यनस्यमस्तकशूलनुत् ॥ नागरकल्कविमि

श्रंक्षीरंनस्येनयोजितंनृणाम् । नानादोषोद्धृतांशिरोरुजहंति

तीव्रतराम् ॥

अर्थ—सोंठ और गुडकी नस्य मस्तकपीडाको नष्ट करे तथा सोंठके कल्कमें दूध मिलाय नस्य देनेसे अनेकदोषजन्य घोर मस्तकपीडा नष्ट होय ॥

पथ्यादिकाय ।

पथ्याक्षधात्रीभृनित्रैनिशानिवामृतायुतैः । कृतःक्वाथःपडंगोयं

सगुडःशीर्षशूलहा ॥ भ्रूशंखकर्णशूलानितथार्धशिरसोरुजम् ।

सूर्यावर्तशंखकंचदंतपातंचतद्रुजः ॥ नक्तांध्यंपटलंशुक्रचक्षुः

पीडांव्यपोहति ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आंवला, चिरेता, हलदी, नीमकी छाल और गिलोय इनका पडंग काथ कर गुड मिलाय पीवे तो मस्तकपीडा दूर होय, भौंह कनपटी, कानका शूल, आधासीसी, सूर्यावर्त, शंखक, दांतोंका गिरना, रतौंधा, पटल, मोतियाबिंदु आदि नेत्रपीडाकोभी नष्ट करे ॥

मयूराद्यघृत ।

मयूरंपक्षपादांत्रशकृत्पित्तास्थिवर्जितम् । जलेपक्त्वाघृतप्रस्थं
तस्मिन्क्षीरंसमंपचेत् ॥ दशमूलबला रास्नामधुकैस्त्रिफलेः
सह । मधुरैःकार्पिकैःकल्कैःशिरोरोगार्दितापहम् ॥ कर्णनासा
स्यजिह्वाक्षिगलरोगविनाशनम् । मयूराद्यमितिरख्यातमूर्ध्व
जत्रुगदापहम् ॥

अर्थ—मोरके सब शरीरको, आंत पैररहित तथा मल, पित्त और हड्डी रहितको जलमें परिपक्व कर काथ बनावे इसको १ सेर घी और १ सेर दूध डालके पचावे, तथा दशमूलकी दश औषध, बला, रास्ना, मुलहठी, हरड, बहेडा, आंवला, इत्यादि मधुर वस्तु एक एक तोले कल्क डालके पचावे, तो शिर-पीडा, कान, नाक, मुख, जीभ, नेत्र गलेके रोगोंको यह मयूरादिघृत नष्ट करे तथा हसलीके ऊपर होनेवाले रोग दूर हो ॥

महामायूरघृत ।

एतेनैवकपायेणघृतप्रस्थंविपाचयेत् । चतुर्गुणेनपयसाकल्कैरे
भिश्चकार्पिकैः ॥ समंगाचविकाभाङ्गीकाश्मरीसुरदारुभिः ।
शतावरीविदारीक्षुवृहतीसारिवायुतैः ॥ मूर्वाशार्दूलशृंगाटकसेरुं
चजलोद्भवम् । रास्नास्थिराख्यामलकीसूक्ष्मैलाशिशुपुष्करैः ॥
पुनर्नवातुगाक्षीरीकांकोलीधन्वयासकैः । मधुकाक्रोडवातामगुं
जानाभिश्चकैरपि ॥ द्रव्यैरेभिर्यथालाभंपूर्वकल्केनसाधितम् ॥
तत्पक्वनावनेभ्यंगेवस्तौपानेचयोजयेत् । शिरोरोगेषुसर्वेषुश्वा
सेकासेचदारुणे ॥ मन्याग्रहेतथाचैवस्वरभेदेतथादिते । यो
न्यसृक्छुक्रदोषेचशस्तवंध्यासुखप्रदम् ॥ ऋतुस्नातातुयाना
रीपीत्वापुत्रंप्रसूयते । महामायूरमित्येतत्स्मृतमात्रेणपूजि
तम् ॥ आसुभिःकुक्कुटैर्हसैःशशकैश्चापिबुद्धिमान् । कल्केनाने
नविपचेत्सार्पिरूर्ध्वगदापहम् ॥

अर्थ—इसी प्वांक्त मयुरादिकपायद्वारा १ सेर घृतको चौगुने दूध और आगे लिखीहुई तोले २ औषधोंके कल्कसै घृतको पचावे वह औषध यह हैं लजालू, चव्य, भारंगी, कंभारी, देवदारु, सतावर, विदारीकंद, ईस, भटक-टैया, सारिवा, मूर्वा, सार्दूलकंद, सिंघाडे, कसेरु, रास्त्रा, सालपर्णी, आमले, छोटी इलायची, सहेंजना, पुहकरमूल, पुनर्नवा, वंशलोचन, काकोली, धमासा, मुलहटी, वाराहीकंद, बदाम, घुंघची, कस्तूर, गठिवन इन सब औषधोंको जो मिले उनको ले कल्क करके घृतके साथ पचावे, घृत सिद्ध होनेपर इसकी नस्य मालिश, वस्ती और पानिमें देना चाहिये, यह सब मस्तकके रोग दारुण श्वास, खांसी, गरदनका जिकडना, स्वरभंग, लकवा, प्रदररोग, शुकके दोष, इनपर देना हितकारी है. वंध्यास्त्रीको सुखदाई है. जो ऋतुस्नानकर इसको पीवे उस स्त्रीके पुत्र प्रगट होय, यह महामायूर घृत सर्वोंपरिहै. तथा इसी घृतमें जुहे, सुरगे, वतक, खरगोश आदिके मांसरस पचावे तो मस्तक आदि सर्वरोगोंको दूरकरे है ॥

पद्बिंदु तेल ।

एरंडमूलंतगरंशताव्हाजीवंतिरास्नासहसैंधवंच । भृंगंविडंगंम
धुयष्टिकाचविश्वौषधंकृष्णतिलस्यतैलम् ॥ अजापयस्तैल
विमिंथितंतुचतुर्गुणेशृंगरसेविपक्रम् ॥ पद्बिंदवोनासिकयोः
प्रदेयाःसर्वान्निहन्त्युःशिरसोविकारान् ॥ च्युतांश्चकेशांश्चलितां
श्चदंतात्रिवद्धमूलान्सुहृद्वान्करोति । सुपर्णदृष्टिप्रतिमंचक्षुः
कुर्वतिवाहोरधिकंवलंच ॥

अर्थ—अंडकी जड, तगर, सतावर, जीवंती, रास्त्रा, सैंधानिमक, भांगरा, वापविडंग, मुलहटी, सोंठ, पीपल इनको चार२ तोले ले कल्क करे । बकरीका दूध १ सेर, तिलीका शुद्ध तैल १ सेर, भांगरेका रस ४ सेर लेकर घृतको पचावे इस पद्बिंदुतेलकी छःबूंद नाकमें टपकावे तो सर्व मस्तकके विकारोंको दूर करे, बालोंका झरजाना, दांतोंका हिलनेको बंद करे, तेज दृष्टि होय और भुजाओंमें अधिक बल करेहै ॥

शताह्लादि तेल ।

शताह्वैरंडमूलोत्राचक्राव्याघ्रीफलैःशृतम् ।
तैलंनस्यान्मरुच्छेप्सतिमिरोध्वगदापहम् ॥

अर्थ—सतावर, अंडकी जड़, वच, नागरमोया और कटेरीके फल इनके काथ-
मे तेल सिद्ध करे तो वात कफके मस्तकरोग, तिमिर आर हसलीके उपरके
रोगोका दूर करे ॥

नीलोत्पलादि तेल ।

नीलोत्पलकणायष्टिचंदनपुंडरीककम् । प्रतिनिष्कंचतुष्कं
स्यात्तैलं स्यात्पोडशंपलम् ॥ चतुःषष्टिपलंधात्रीफलानारस
माहरेत् । पचेत्तैलावशेषंतुनस्येनाभ्यंजनेनवा ॥ योज्यंहंतिशि
रस्तोदंपलितंचविनाशयेत् ॥

अर्थ—नीला कमल, पीपल, मुलहठी, चदन, सपेद कमल, प्रत्येक १६ भासे
तेल १६ पल ले और आँवलोका रस ६४ पल लेय फिर अमिपर चढायके तेल
सिद्धकरे इसको नस्य और मालिश द्वारा प्रयोग करे तो मस्तकपीडा और
वालौका सपेद होनेको दूर करे ॥

सारिवादि तेल ।

सारिवाअमृतायष्टित्रिफलानीलमुत्पलम् । भृंगराजस्तृणकुंभी
महानिवफलानिच ॥ कटुतैलंपचेदेभिःसार्धयवरसेनतु । कंडू
चदारुणंहंतिशिरोरोगंचनाशयेत् ॥

अर्थ—सारिवा, गिलोय, मुलहठी, हरड, बहेडा, आँवला, नीलकमल,
भांगरा, रोहिपट्टण, गूगल, बवायनके फल, इनके फल्कसे कडवे तेलको पचावे
तथा इसमे जाँओका रसभी डालदेय यह दारुण मस्तककी खुजली और म-
स्तकरोगको नष्टकरे ॥

शिरोवस्तिपर पथ्य ।

भावप्रकाशाच्छिरोवस्तिविधौसत्पथ्यमुच्यते । आमिपंजांगलं
पथ्यंतत्रशाल्योदनोपिच ॥ मुद्गान्मापाङ्कुलित्थांश्चसादेद्धानि
शिकेवलान् । कटुकोष्णान्सर्पिष्कान्पण्णंशीरंपिञ्चेत्तथा ॥

अर्थ—भावप्रकाश ग्रथमें शिरोवस्तीपर पथ्य कहतेहैं—जंगली जीवोका
मांस, शाली चावलोका भात, मूग, उडद, कुलथां, ये सब अथवा इनमेसे
केवल एकेकही रात्रिमे सेवन करे तथा कडवे गरम और पृत मिले गरम
दूधको पीवे (भावप्रकाश भाषाटीका हमारे यहाँ बहुत उत्तम उपारै इच्छा
होय तो मंगायलीजिये) ॥

शिरोरोगपर पथ्य ।

स्वेदोनस्यंधूमपानंविरेकोलेपःसेकोलंपनंशीर्षवस्तिः । रक्तो

न्मुक्तिर्वह्निकर्मोपनाहौजीर्णसर्पिःशालयःपष्टिकाश्च ॥ यूषो
दुग्धधन्वमांसपटोलंशिथुर्द्राक्षावास्तुकंकारवेष्टम् । आम्रंधात्री
दाडिमंमातुलिंगतैलंतक्रंकांजिकंनालिकेरम् ॥ पथ्याकुष्ठंभृंग
राजःकुमारीमुस्तोशीरंचंद्रिकागंधसाराः।कपूरंचख्यातिमानेष
वर्गःसेव्योमर्त्यैःशीर्षरोगेयथास्वम् ॥

अर्थ—स्वेदन, नास, धुआँ पीना, विरेचन, लेप, वमन, लंघन, शिरकी वस्ति
रुधिर निकालना, दागना, उपनाह, पुराना घी, चावल, साठी, यूप, दूध,
मरुदेशका मांस, परवर, सहिजना; दाख, वथुआ, करेला, आम, आँवला,
अनार, विजौरा, तेल, मट्टा, कांजी, नारियल, हड, कूठ, भांगरा, धीगुवारि,
मोथा, खस, चांदनी, चन्दन और कपूर यह प्रसिद्ध वर्ग मनुष्योंको शिरके
रोगमें सेवन करना चाहिये ॥

शिरोरोगपर अपथ्य ।

क्षवंजृभामूत्रवाष्पनिद्राविड्वेगभंजनम् । दुग्धनीरंविरुद्धान्नं
विरुद्धजलमज्जनम् ॥ दंतकाष्ठंदिवानिद्रांशिरोरोगीपरित्यजेत् ॥

अर्थ—छाँक, जँभाई, मूत्र, आँसू, नींद, विष्टा, इनके वेगका रोकना, बुरा
जल, विरुद्ध अन्न, नदियोंमें नहाना, दँतून करना, दिनमें सोना, इन सबोंको
शिरके रोगवाला मनुष्य त्याग करे ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे शिरोरोगे पथ्यापथ्याधिकारः समाप्तः ॥

स्त्रीरोग ।



प्रदररोग ।

विरुद्धमद्याध्यशनदजीर्णाद्गर्भप्रपातादतिमैथुनाच्च ॥ याना
तिशोकादतिकर्षणाच्चभाराभिघाताच्छयनादिवाच । तंश्रेष्म
पित्तानिलसन्निपातैश्चतुःप्रकारंप्रदरंवदंति ॥

अर्थ—विरुद्ध (क्षीरमत्स्यादि) मद्य, अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन),
अजीर्ण, गर्भपात, अतिमैथुन, अतिगमन (चलना), अतिशोक, उपवा-
सादिक करके कर्षण, अर्थात् घतके करनेसे मूख जाना भारके चहनेसे (अ-
र्थात् भारी वस्तु उठाकर चलनेसे), काष्ठ कहिषे लकड़ीआदिके लगनेसे

दिनमें सोनेसे, इन कारणोंसे कफ पित्त वायु और सन्निपात इन भेदोंसे चार प्रकारका प्रदर रोग होता है ॥

प्रदरका सामान्यरूप ।

असृग्दरं भवेत्सर्वसांगमर्दसवेदनम् ॥

अर्थ—सब प्रदरोंमें अंगोंका दूटना तथा हाथ पैरोंमें पीडा होती है ॥

उपद्रव ।

तस्यातिवृद्धौ दौर्बल्यं श्रमो मूर्च्छा मदस्तृषा ॥

दाहः प्रलापः पांडुत्वं तंद्रारोगाश्च वातजाः ॥

अर्थ—जब यह प्रदर बहुत बढ जाता है तब दुर्बलता होय, थकजाय, मूर्च्छा आवै, मत्तपन, प्यास, दाह, प्रलाप (बकना), देह पीला होजाय, तन्द्रा और वातज रोग (आक्षेप अपतान कंपादिक) होतेहैं ॥

कफजन्यप्रदरलक्षण ।

आमंसपिच्छप्रतिमंसपांडुपुलाकतोयप्रतिमंकफात्तु ॥

अर्थ—कफसे आमरस (कच्चारस) संयुक्त चिकना, किंचित् पीला, मांसके धुले जलके समान स्याव होय, इसको श्वेत प्रदर अथवा सोमरोग कहते हैं ॥

मलयूरस ।

कफप्रदरनाशायपिवेद्रामलयूरसम् ॥

अर्थ—कफके प्रदर रोग दूर करनेको मलयू (कट्टमर) का रस पीवे तो प्रदर दूर होय ॥

कफप्रदरपर ।

काकजंधामूलरसं मधुना सह भामिनी ।

सलोध्रचूर्णमापीय कफप्रदरं कंजयेत् ॥

अर्थ—काकजंधाकी जड़के रसमें लोधका चूर्ण डालके और सहत मिलायके जो स्त्री पीवे तो कफका प्रदररोग दूर होय ॥

पित्तजप्रदरनिदान ।

सपीतनीलासितरक्तमुष्णपित्तातिर्युक्तभृशवेगिपित्तात् ॥

अर्थ—किंचित् पीला, नीला, काला, लाल, गरम ऐसा प्रदर पित्तसे घटे, बसमें पित्तके दाह चिमचिमादि पीडा होंय, तथा टसफा वेग अत्यन्त होय ॥

वासत्रादि स्वरस ।

पित्तासृग्दरशांत्यर्थसक्षौद्रं ललनापिवेत् ।

वासकस्यगुडूच्यावारसंकिंवावरीभवम् ॥

अर्थ—पित्तरक्तप्रदरशांतिके वास्ते स्त्री अडूसेका, या गिलोयका, अथवा वनतुलसीका रस पीवे तो पीडा शांति होय ॥

मधुकादि कल्क ।

मधुकंकर्पमेकंतुचतुःकर्पासितातथा ।

तंदुलोदकसंपिष्टपैत्तिकेप्रदरेपिवेत् ॥

अर्थ—मुलहटी १ तोले, कच्ची खांड ४ तोले दोनोंको चावलोंके धोवनसे पीसके पीवे तो पित्तप्रदर शांति होय ॥

वातजप्रदरनिदान ।

रूक्षारुणंफेनिलमल्पमल्पंवातार्तिवातात्पिशितोदकाभम् ॥

अर्थ—वातसे रूक्ष लाल ज्ञागसे युक्त मांसके और सफेद पानीके समान थोडा थोडा प्रदर वहे, उसमें वादीके (आक्षेपकादि) पीडा होती है ॥

सौवर्चलादि कल्क ।

दध्रासौवर्चलाजाजिमधुकं नीलमुत्पलम् ।

पिवेत्क्षौद्रयुतंनारीवातासृग्दरशांतये ॥

अर्थ—काला निमक, जीरा, मुलहटी, और नील कमल, समान भाग ले, वारीक पीस दहीमें मिलायके पीवे तो वातरक्तप्रदरशांति होय ॥

नागरादि मंत्र ।

नागरंमधुकंतैलंसितादधिचतत्समम् ।

खजेनोन्मथितंवातप्रदरस्यविनाशनम् ॥

अर्थ—सोंठ, मुलहटी, मीठा तेल, मिश्री और दही सबको बराबर ले रई डालके मथके पीवे तो वातप्रदर दूर होय ॥

एलादि कल्क ।

एलामंशुमर्तीद्राक्षामुशीरंतिक्तरोहिणीम् ॥ चंदनं कृष्णलवणंसा

रिवालोभ्रसंयुतम् । वातासृग्दरशांत्यर्थमिवेदध्रासहांगना ॥

अर्थ—बडी इलायची, शरिबन, दाख, रस, फुटकी, चंदन, कालानिमक, सारिवा और लोधःइनको वारीक पीस दहीमें मिलायके यदि स्त्री पीवे तो वातरक्तप्रदर दूर होय ॥

त्रिदोषजप्रदर लक्षण ।

सक्षौद्रसार्पिर्हरितालवर्णमज्जाप्रकाशंकुणपत्रिदोषम् ।

तच्चाप्यसाध्यं प्रवदंति तज्ज्ञानतत्र कुर्वीतभिपक्वचिकित्सा ॥

अर्थ—जो प्रदर शहद, घृत, हरिताल और मज्जा, इनके रंगके समान तथा मुर्दाकीसी दुर्गधियुक्त होय, उसको त्रिदोषज प्रदर जानना यह असाध्य है अर्थात् इसकी वैद्य चिकित्सा न करे ॥

त्रिदोषजप्रदरचिकित्सा ।

कुशमूलंसमुद्धृत्यपेपयेत्तंदुलांबुना ।

एतत्पीत्वात्र्यहान्नारीप्रदरात्परिमुच्यते ॥

अर्थ—कुशाकी जड़को चावलके धोवनसे पीसके ३ दिन पीवे तो स्त्रीका त्रिदोषजन्य प्रदर रोग दूर हो ॥

काकोदुंबरिकास्वरस ।

क्षौद्रयुक्तंफलरसंकाकोदुंबरजंपिबेत् ।

असृग्दरविनाशायसशर्करपयोत्रभुक् ॥

अर्थ—कट्ठमरके फलोंका रस सहत डालके पीवे तथा मिश्री मिला दूध भात भोजन करे तो रक्तप्रदर दूर होय ॥

संनिपातजप्रदरपर ।

पथ्यामलकविभीतकविश्वोपधदारुजननीनाम् ।

सक्षौद्रलोध्रचूर्णःकाथोहंत्येपसर्वजंप्रदरम् ॥

अर्थ—हरड, आमले, बहेडा, सोंठ, दारुदलदी इनके काथमें सहत और लोधका चूर्ण मिलायके पीवे तो सन्निपातजन्य प्रदररोग दूर होय ॥

मलयूफलचूर्ण ।

मलयूफलचूर्णस्यशर्करासहितस्यच ।

मधुनागुटिकांकृत्वाखादेत्प्रदरशांतये ॥

अर्थ—कट्ठमरके फलका चूर्ण खांड मिलाय सहत डालके गोली बनावे इसके भक्षण करनेसे प्रदररोग शांत होय ॥

दाव्यादि काय ।

दावीरसांजनवृषाब्दकिरातविल्वभल्लातकेरवकृतोमधुनाकपायः ।

पीतो जयत्यतिबलप्रदरंसञ्जूलं पीतासितारुणविलोहितनीलयुक्तम् ॥

अर्थ—दारुहलदी, रसोत, अडूसा, नागरमोथा, चिरायता, वेलगिरी, भिलापे और कमोदनी इनका काय कर सहत डालके पीवे तो घोर शूलयुक्त पीला, काला, लाल और नीले रंगका प्रदर रोग दूरहो ॥

भूम्यामलक्यादिपान ।

भूम्यामलकमूलंतुपीतंतन्दुलवारिणा ।

द्विस्त्रिरेवदिनैर्नार्याःप्रदरंदुस्तरंजयेत् ॥

अर्थ—भूयआवलेकी जडको चावलके धोवनके साथ पीवे तो २।३ दिनमें स्त्रीका घोर प्रदर रोग दूर होय ॥

धातक्यादि काय ।

धातकीचतथापूर्गीकुसुमानांपिवेच्छृतम् ।

नाशयेत्प्रदरंसद्यस्त्रिदिनाद्योपितांध्रुवम् ॥

अर्थ—धायके फूल अथवा सुपारीके फूलोंका काय पीवे तो तीन दिनमें स्त्रीका प्रदर रोग दूरहोय ॥

आसुपुरीषयोग ।

आसोःपुरीषंपयसानिपीयवन्हेर्वलादेकमहोद्वयहंवा ।

स्त्रियरुयहंवाप्रदरास्रनद्याःप्रसह्यपारंपरमाश्रुवन्ति ॥

अर्थ—मूसंकी मँगलीको दूधमें घोटके पीवे इसमें बलावल विचारके एक दिन दो दिन या तीन दिन पीना चाहिये तो प्रदरकी बहती हुई नदीके पार पडूचे अर्थात् प्रदर दूर होय ॥

बृहच्छतावरी घृत ।

शतावरीरसंप्रस्थंक्षोदयित्वावपीडयेत् । घृतप्रस्थसमायुक्तंक्षी
रंद्विगुणितंभिषक् ॥ अंतःकल्कानिमान्दद्यात्स्यूलोदुंबरस
न्निभान् । जीवनीयगणानष्टौयष्टीचंदनपद्मकैः ॥ श्वदंष्ट्राचात्म
गुप्ताचवलानागवलातथा । शालिपर्णीपृश्निपर्णीविदारीसारिवा
द्वयम् ॥ शर्कराचसमादेयाकाश्मर्याश्वफलानिच । सम्यक्सि
द्धंतुविज्ञायतद्घृतंचावतारयेत् ॥ रक्तपित्तविकारेषुवातपित्त
कृतेषुच । वातरक्तक्षयंश्वासंहिकांकासंचदुस्तरम् ॥ अंतर्दाहं
शिरोदाहंरक्तपित्तसमुद्भवम् । असृग्दरंसर्वभवंसूत्रकृच्छ्रंचदा
रुणम् ॥

अर्थ—सतावरका रस १ सेर, गौका घी १ सेर, गौका दूध २ सेर ले, फिर कल्कके वास्ते जीवनीय गणकी औषध, मुलहठी, चंदन, पद्मास्र, गोखरू, कौचके बीज, खिरेटी, नागवला, शालिपर्णी, पृष्टिपर्णी, विदारिकंद, सारिवा, कालीसारिवा, और कंभारीके फल, इन सबको एकत्रकर घृत सिद्धकरे यह संपूर्ण रुधिरके विकार, वातपित्तके विकार, वातरक्त, क्षय, श्वास, हिचकी, खांसी, अंतर्दाह, शिरोदाह, रक्तपित्त, संनिपातजन्य रक्तप्रदर और दारुण मूत्र-कृच्छ्र दूर करे ॥

कुमुदादि घृत ।

कुमुदंपद्मकोशीरिंगोधूमारक्तशालयः । मापपर्णीयशस्याच
शालिपर्णीसजीरकैः ॥ पलत्रपुपवीजानिप्रत्येकंकदलीपलम् ।
एकंतद्धीनभागोहिगव्यंक्षीरंचतुर्गुणम् । पानीयद्विगुणंदत्त्वा
घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ प्रदरंरक्तदोषंच पांडुरोगंहलीमकम् ।
बहुरूपंचयत्पित्तंकामलांवातशोणितम् ॥ अरोचकंज्वरंजीर्णं
स्त्रीणारोगमदंभ्रमम् । तरुणीचाल्पपुण्याचयाचगर्भनविंदति ॥
साचापि विंदतेक्षेमं विंदतेनात्रसंशयः ॥

अर्थ—कमल, पद्मास्र, खस, गेंहूँ, लाल चावल, मापपर्णी, क्षीरकाकोली, शालिपर्णी, जीरा और खीरेके बीज और केलीकी फली प्रत्येक एक एक पल लेवे, गौका दूध सब औषधोंसे चौगुना और दूना जल डाले, फिर १ सेर घी डालके पचावे, यह प्रदर, रुधिरके दोष, पांडुरोग, हलीमक, अनेक प्रकारका पित्त, कामला, वातरक्त, अरुचि, ज्वर, अजीर्ण, स्त्रीनके रोग, मस्तपना, भ्रम, इनकी दूरकरे. जिस स्त्रीके गर्भ नहीं रहता होय वह इस घृतके प्रभावसे पुत्रको निःसंदेह प्राप्त होय ॥

श्वेतप्रदरपर स्वरस ।

वासकःस्वरसापेयोशुद्धचरिसमेवच ।
रोहितानांमूलकल्कंपांडुरेसृग्दरेपिचेत् ॥

अर्थ—अड़सेके स्वरसको अथवा गिलोपके स्वरसको अथवा रोहिडाके जड़के कल्कको पीवे तो पीले रंगका प्रदर दूर होय ॥

सर्वप्रदरोंपर ।

फलत्रिकंदारुवचासवासालाजासदूर्वाकलशीसमंगा ।

शौद्रान्वितं काथमुशंतिशांत्यै सर्वात्मकस्त्रीप्रदरेपुवैद्याः ॥

अर्थ—त्रिफला, दारुहलदी, वच, अडूसा, खील, इव, पृष्ठीपर्णा, मजीठ इनके काथमें सहित डालके पीवे तो सन्निपातका प्रदर दूर होय ॥

दान्यादि रक्तप्रदरपर ।

मूलानितंडुलजलेन समन्वितानि पिष्ट्वां कुशस्य च समानि पिबन् प्रयत्नात् । योपि द्रुजस्य तितरांसमभिप्रवृत्तौ सर्पिथुतानियदिवा कदलोफलानि ॥

अर्थ—कुशाकी जडको चावलके धौवनमें पीसके पीवे तो रक्तप्रदर दूर होय अथवा केलेकी पकी गहरोंको घृतमें मिलायके खाय तो रक्त प्रदर दूर होय ॥

काकजंघादि सपेदप्रदरपर ।

काकजानुकमूलं वामूलं कार्पासमेव च ।

पांडुप्रदरशांत्यर्थं पिवेत्तंडुलवारिणा ॥

अर्थ—काकजंघाकी जड, अथवा कपासकी जडको चावलके धौवनसे पीसके पीवे तो पीले रंगका प्रदर दूर होय ॥

अशोककाय रक्तप्रदरपर ।

अशोकवल्कलकाथं शृतं दुग्धं सुशीतलम् ।

यथावलं पिवेत् प्रातस्तीव्रामृगदरनाशनम् ॥

अर्थ—अशोकवृक्षकी छालका काथ औटहुण दूधमें मिलाय शीतल करके बलावल विचारके तो प्रातःकाल पीवे तो तीव्र रक्तप्रदर दूर होय ॥

रसांजनादि वातपित्त प्रदरपर ।

रसांजनं चलाक्षाचछागेन पयसा पिवेत् ॥ कल्कपत्रैर्घृतभ्रष्टैराजा

दनकपित्थयोः । पित्तानिलहरावेतौ सर्वचैवास्त्रपित्तजित् ॥

अर्थ—रसोत और लास, दोनोंको पीस दूधमें मिलायके पीवे अथवा कथ और खिरनीके पत्तोंके कल्कको घीमें भूनके पीवे वात पित्तजन्य रक्तप्रदर दूरहो ॥

कुरंतमूलादिपान ।

कुरंतकस्य मूलानि मधुकं श्वेतचंदनम् । यष्ट्यापिष्टान्यक्षयावा

पाययेत्तंडुलांबुना ॥ सकृत्पीत्वात्विदं योगं प्रदरात्प्रतिमुच्यते ॥

अर्थ—नीले रंगके पियावासेकी जड़में महुआ, सफेद चदन, ये सबको चावलके धोवनके जलसे पीवे तो प्रदररोग नष्ट होय ॥

बलादि कल्क ।

बलाचांशुमतीद्राक्षाउशीरंतिक्तरोहिणी । लवणचंदनंकृष्णासा
रिवालोध्रसंयुता ॥ एतत्कल्कंसमधुकंपाययेत्तंडुलांबुना ।
त्र्यहात्प्रशमयत्येपयोपितापैत्तिका रुजः ॥

अर्थ—खिरेटी, शरिवन, दाख, उशीर (खस), कुटकी, निमक, चदन, काली सारिवा और लोध इनके कल्कमें महुआ मिलायके चावलधोवनके जलसे तीन दिन पीवे तो पित्तजन्य प्रदरका रोग दूर होय ॥

कपित्थादि कल्क ।

कपित्थेवेषुपत्रंचसममेकत्रपेपयेत् ।

मधुनासहपातव्यंतीत्रिप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ—कैथ, वासके पत्ते, दोनो समान भाग ले जलसे वारीक पीस सहत मिलायके पीवे तो घोर पित्तका प्रदर रोग दूर होय ॥

आमलक चूर्ण ।

मधुनामलकीचूर्णरसंवालेहयेच्छ्रिते ॥

अर्थ—आमलेके चूर्णमें सहत मिलायके चाटे अथवा आँवलेका रस सहत डालके पीवे ॥

सर्वप्रदरपर ।

अशोकवल्कलंपिष्ठासताक्षर्यंतंडुलांभसा ।

सक्षौद्रितद्रसंपीत्वाप्रदरान्मुच्यतेगना ॥

अर्थ—अशोक वृक्षकी छालके कल्कको रसोतका चूर्ण डाल चावलधोवनके जलमें पीवे अथवा अशोककी छालके रसमें सहत मिलायके पीवे तो प्रदर रोग दूर होय ॥

व्याघ्रनखीमूलयोग ।

शुचिस्थानेव्याघ्रनख्यामूलमुत्तरदिग्भवम् ।

नीतमुत्तरफल्गुन्यांकटिवद्धंहरिदसृक् ॥

अर्थ—व्याघ्रनखी रुखड़ी जो उत्तम स्थानमें प्रगट हुई हो उसमें जो उत्तर दिशासे उखाडके उत्तराफल्गुनीमें लाकर स्त्रीकी कमरमें बांधे तो रक्त-प्रदरको दूरकरे ॥

तंदुलीय मूलयोग ।

मधुनाताक्षर्यसंयुक्तमूलस्यात्तंदुलीयकम् ।

तंदुलांबुयुतंपानात्सर्वप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ-रसोत, चौलाईकी जड़ इन दोको समान भाग ले बारीक पीस पीवे तो सर्व प्रकारके प्रदर दूर होय ॥

आलुपुरीपादि चूर्ण ।

आखोःपुरीपंधातक्याःपुष्पंबोलंतथैवच । समभागानिसंचूर्ण्य

टंकमेकंचभक्षयेत् । दिनसप्तप्रयोगेणसर्वप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ-मूसेकी मैगनी, धायके फूल और बीजाबोल समान भाग ले चूर्णकर इसमेंसे ४ मासे नित्य सातदिन पर्यंत पीवे तो सर्व प्रकारके प्रदर नष्ट होय ॥

प्रदर चिकित्सा सर्वप्रकारके प्रदरपर पुष्पानुगचूर्ण ।

पाठारसांजनंमुस्तंमज्जाजंवाप्रयोस्तथा । अंबष्टिकाशिलोद्रे

दंसमंगापद्मकेशरम् ॥ विल्वंमोचरसंलोथ्रंकेशरंगैरिकंतथा ।

विश्वौषधंकट्पलंचमरिचंरक्तचंदनम् ॥ कदुंगंधातकीद्राक्षानं

तामधुकमर्जुनम् । वत्सकातिविपेचेतिपुष्येणोद्धृत्यबुद्धिमा

न् ॥ तुल्यभागानिसर्वाणिसूक्ष्माणिचविचूर्णयेत् । तच्चूर्णमा

क्षिकोपेतंपीतंतंदुलवारिणा ॥ जयेदशीस्यतीसारंतथारक्तप्र

वाहिकाम् । बालानांकृमिरोगांश्चयोनिदाहंचयोपिताम् ॥ रजो

दोषांस्तथासर्वान्प्रदरान्दुस्तरानपि । पीतनीलारुणश्चेतान्स

र्वानेवधिनाशयेत् ॥ चूर्णपुष्पानुगं नामपूर्वमात्रेयभापितम् ॥

अर्थ-पाठ, रसोत, नागरमोथा, जामन और आमकी छाल, पाठ, पाखानभेद, मजीठ, कमलकी केशर, बेलगिरी, मोचरस, लोथ, नागकेशर, गेरु, सांठ, कायफल, काली मिरच, लाल चंदन, अरळ धायके फूल, दास, पमासो, महुआ, कोहकी छाल, कुडाकी छाल, अतीस इन सब औषधोंको वैद्य पुष्य नक्षत्रमें लावे सबका समान भाग चूर्णकर सहत मिलायके चावलके धोवनसे पीवे तो रक्तार्श (खुनी बवासीर) अतिसार, रक्तप्रवाहिका, बालकोंके कृमिरोग, योनिदाह, रजके दोष, सर्व प्रकारके दुस्तर प्रदररोग, पीले, नीले, सपेद सर्व प्रकारके प्रदररोग दूर हो, यह आत्रेयभगवान्का कहा पुष्पानुग चूर्ण है ॥

जीरकावलेह ।

जीरकंप्रस्थमेकंतुक्षीरं ह्याढकमेवच । प्रस्थार्धलोहघृतयोःपचे
न्मदेनवाह्निना ॥ लेहीभूतेथशीतेत्रसिताप्रस्थंविनिक्षिपेत् ।
चातुर्जातंकृष्णविश्वमजाजीमुस्तवालकम् ॥ दाडिमंसर्जं
धान्यंरजनीपटवासकम् । वंशजंचतवक्षीरीप्रत्येकंशुक्तिसंमि
तम् ॥ जीरकस्यावेलेहोयंप्रमेहप्रदरापहः । ज्वरावल्यरुचि
श्वासतृष्णादाहक्षयापहः ॥

अर्थ-सपेद जीरा १ सेर, गौका दूध ४ सेर, लोहभस्म आधसेर और
घी आधसेर इन सबको एकत्रकर अवलेह बनायें शीतल होनेपर १ सेर सपेद
खाँड डाले और दालचीनी, नागकेशर, बडी इलायची, तेजपात, पीपल,
जीरा, नागरमोथा, अनारदाना, सुगंधवाला, अनार, रसोत, धनिया, हलदी
अनार, रसोत, वंशलोचन और तवाखीर प्रत्येक चाररतोले लेवे सबका चूर्णकर
अवलेहमें मिलाय देवे; यह जीरकादि अवलेह संपूर्ण प्रदरोंको नष्ट करे, तथा
प्रमेह, ज्वर, अरुचि, निर्वलता, श्वास, तृषा, दाह और क्षयको नष्ट करे ॥
मुद्गादि घृत ।

मुद्गमापस्यनिर्यूहेरास्नाचित्रकमुस्तकैः ।

सिद्धंसपिप्पलीविल्वैःसर्पिःश्रेष्ठमसृग्दरे ॥

अर्थ-भूंग और उडदके यूपमें रास्ना, चित्रक, नागरमोथा, पीपल और
बेलगिरी इनका कल्क डालके घृत सिद्ध करे यह रक्तप्रदर दूर करनेमें
उत्तम कहा है ॥

शाल्मल्यादि घृत ।

शाल्मलीपुष्पनिर्यासःपृश्निपर्णीतथैवच । काश्मरीचंदनंचैषां
कल्केनस्वरसेनवा ॥ गव्यंपचेद्घृतंप्रस्थंतत्सिद्धंतरुणीपिबे
त् । सर्वप्रदरनाशायचलवर्णाग्निवर्धनम् ॥

अर्थ-सेमरके फूलका रस और पृश्निपर्णी, कंभारी, चंदन, इनके कल्क
अथवा स्वरससे गौके १ सेर घी सिद्धकर स्त्री पीवे तो सर्व प्रदर दूर होय
और बलवर्णकी वृद्धि हो ॥

प्रदरारि रस ।

रसंगंधमृतं नागंसमंतेस्तुरसांजनम् । सर्वेऽस्याचुलितलोभ्रंदिनं

पिष्टं वृषद्रवैः ॥ द्विवल्लोमधुयुक्तोयंप्रदरारिरसः शुभः।दुःसाध्यं
प्रदरंहंतिरक्तातीसारनाशनः ॥

अर्थ—पारा, गधक, शीशिका भस्म, ये समान भाग ले सबकी बराबर रसोत मिलावे; तथा इन सब औषधोंके समान पठानी लोथका चूर्ण मिलाय अटूसेके रससे खरलकर ६ छः छः रक्तीकी गोली बनावे एक गोलीको पीस सहतम मिलायके चाटे तो यह प्रदरारि रस असाध्य प्रदर रोगका तथा अतिसारको दर करे ॥

सोमरोग निदान ।

स्त्रीणामतिप्रसंगाद्वाशोकाचापिभ्रमादपि । अन्नस्यापकयो
गाद्वागरदोपात्तथैवच ॥ आपःसर्वशरीरस्थाःक्षुभ्यंतिप्रस्रवंति
च । तस्मात्ताःप्रच्युताःस्थानान्मूत्रमार्गव्रजंतिहि ॥

अर्थ—अतिमैथुन करनेसे, शोक करनेसे, भ्रम होनेसे, अजीर्णके योगसे, विषके दोषसे सर्व शरीरगत जल क्षुब्ध होकर अपना स्थान छोड़के मूत्र मार्गमें जाता है ॥

वेगंधारयितुंतासांनविंदतिसुखंक्वचित् । शिरःशथिलतातस्या
मुखंतालुश्चशुष्यति॥मूर्च्छाजृम्भाप्रलापश्चत्वग्रक्षाचातिमात्रतः।
भक्ष्यैर्भोज्यैश्चनृत्तिलभतेरुग्युतासदा ॥ संधारणाच्छरीरस्य
ताआपःसोमसंज्ञिताः।ततःसोमक्षयात्स्त्रीणांसोमरोगइतिस्मृतः ॥

अर्थ—मूत्रका वेग रोकनेसे मनुष्यको कभी सुख नहीं होता, शिर हलका होता है, मुख और तालु शुष्क होती है, मूर्च्छा, जृम्भा, अति बोलना, त्वचा रूक्ष होना, भक्षण किये अन्नसे तृप्ति न होना, सुस्वरूपकी हानि होना ये सोमरोगके लक्षण है ॥

मूत्रातिसार ।

तस्मात्सोमक्षयाद्देहोनिश्चेष्टश्चभवेत्सदा । सएवहिसरुक्सो
मोमूत्रेणस्रवतेमुहुः ॥ सोमलक्षणसंप्रुष्टाकालातिक्रांतयोग
तः । सोमकांतिक्रमेणैवस्रवेन्मूत्रमभीक्षणः । मूत्रातिसारइ
त्येवंतमाहुर्वलनाशनम् ॥

अर्थ—ये सोमरोग होनेसे देह सदा निश्चेष्ट रहता है, यह सोमरोग मूत्रके मार्गसे स्रवता है यह सोमरोगकी चिकित्सा करनेको कालका अतिक्रम

होनेसे सोमके कांतिके समान मूत्र स्रवता है, ये बलके नाश करनेवाले रोगको मूत्रातिसार ऐसा कहते है ॥

बहुलाविमलाःशोतानिर्गंधानोरुजःसिताः ।

स्रवंतिचातिमात्रंस्यात्साशक्त्याचातिदुर्बला ॥

अर्थ—जिसके बहुत, स्वच्छ, शीतल गंधरहित और पीडारहित सपेद अत्यंत मूत्र उत्तरे और रोगी दुर्बल होय तो यह सोमरोग अथवा मूत्रातिसार असाध्य जानना ॥

सोमरोगका यत्न ।

सएवसरुजःसोमःस्रवेन्मूत्रेणचेन्मुहुः ।

तत्रैलापत्रचूर्णेनपाययेत्तरुर्णासुराम् ॥

अर्थ—जिस प्राणिके पीडाके साथ मूत्रमें वारंवार सोम जाता होय उसको इलायची, पत्रज, इनका चूर्ण डालके दारू पिलानी चाहिये ॥

तालकादि योग ।

तालकंदंचखर्जूरीमधुकंचविदारिकाम् ।

सितामधुयुतांखादेन्मूत्रातीसारनाशनीम् ॥

अर्थ—तालमूली, खिजूर, महुआ, विदारीकंद, इनमें मिश्री सहत मिलायके खाय तो मूत्रातिसार दूर होय ॥

चक्रमर्दकमूलंतुसंपिष्टंतुलांबुना ।

प्रभातसमयेपीतंजलप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ—पमारकी जड़को चाबलके धोवनमें पीसके प्रातःकाल पीये तो प्रदर रोग दूर होय ॥

कूष्माण्डस्वरस ।

कूष्माण्डपत्रस्वरसैःपक्वपारदनिष्कलम् । द्विनिष्कंगंधकंशित्वा
खल्वकेकजलीकृतः । असौचमरिचःसोमरोगातिसृतिनाशनः ॥

अर्थ—एके पट्टेके पत्तोंके स्वरसमें पारा ४ मासे और गंधक ८ मासे डाले फिर घोटके कजली करे इसमें काली मिरच डालके पीये तो सोमरोग दूर होय ॥

कदलीयोग ।

कदलीनांफलंपक्वंधात्रीफलरसंमधु ।

शर्करासहितंसादेत्सोमधारणमुत्तमम् ॥

अर्थ—केलेकी पकीहुई फली आवलोंका रस सहत और मिश्री मिलायके पीवे तो सोम गिरताहुआ बंद होय ॥

आमलकयोग ।

जलेनामलकीबीजकल्कंसमधुशर्करम् ।

पिवेद्दिनत्रयेणैवश्वेतप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ—आवलेकी गुठलीको जलसे पीस कल्क करे इसमें सहत मिश्री मिलायके खाय तो ३ दिनमें सपेद प्रदररोग दूर होय ॥

नागकेशरयोग ।

तक्रौदनाहाररतासंपिवेन्नागकेशरम् ।

त्र्यहंतकेणसंपिष्टंश्वेतप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ—जो स्त्री छाछ भातकी पथ्यपर नागकेशरको पीस छाछके साथ पीवे तो सपेद प्रदर रोग दूर होय ॥

कदलीकंदघृत ।

कदलीकंदनिर्यासद्रोणेशतपलान्वितम् । कदलीकुसुमंपक्का

थंपादावशेषितम् ॥ घृतप्रस्थंपयस्तुल्यंपिप्पल्येलालवंगक

म् । कपित्थस्यफलमांसीकदलीकंदचंदनम् ॥ न्यग्रोधादिग

णैःसार्धसर्वान्वारिसमुद्भवान् । सर्वसमंकर्पमात्रंकल्कीकृत्वाप

चेच्छनैः॥घृतंकार्थंचकल्कंचपक्त्वाचैवावतारयेत् । प्रातःका

लेपिवेत्रित्यंसेवयेत्कर्पमात्रकम् ॥ सोमरोगहरंदाहंमूत्रकृच्छ्रा

श्मरींतथा । प्रमेहान्विशतिहन्यात्प्रमेहगजकेसरी ॥ मूत्राति

सारमप्यन्यव्याधीन्विध्वंसयेद्भुवम् । कदलीकंदनामेदंघृतं

सर्वरुजापहम् ॥

अर्थ—केलेका कंदका रस निकालके १ द्रोण लेवे, इसको १०० पल केलेके फूलमें डाल चतुर्थांशावशेष काय करे, फिर इसके कायको छानके इसमें १ सेर घी और दूध १ सेर मिलावे, कल्कके वास्ते पीपल, इलायची, लौंग, कैथका गूदा, जटामांसी, केलेका कंद, चंदन सपेद, और न्यग्रोधादि गणकी सब औषध इन सबको एक एक तोले लेकर कल्क कर घृतमें मिलायके सिद्ध करे, जब तैयार हो जाय तब छानके उत्तम पात्रमें भरके रख देवे, इसमेंसे

१ तोले नित्य प्रातःकालमें पीवे तो सोमरोग, दाह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वीस प्रकारके प्रमेह, और मूत्रातिसार आदि अनेक व्याधियोंको निश्चयद्वारा करे। यह कदलीकंदनामक घृत सर्वरोगनाशक है ॥

शुद्ध आर्तवके लक्षण ।

मासाग्निःपिच्छदाहार्तिपंचरात्रानुबंधिच । नैवातिवहेलनाल्प-
मार्तवंशुद्धमादिशेत् ॥ शशासृक्प्रतिमंयच्चयद्बालाक्षारसो
पमम् ॥ तदार्तवंप्रशंसंतियच्चाप्सुनविरज्यते ॥

अर्थ—जो आर्तव रजोदर्शनका रुधिर चिकना नहीं होवे, तथा जिसमें दाह शूलादिक न हों तथा जिसका अनुबंध महीनामें पांच दिवस पर्यंत होय तथा बहुत न निकले और थोडा भी न होय, (मध्यम प्रमाणका होय) उसको शुद्ध आर्तव जानना चाहिये और जो आर्तव शशेके रुधिरके समान होवे अथवा लाखके रंगकासा लाल होवे और जिसका रंगा कपडा जलमें डालनेसे वर्ण नहीं पलटे, उसको शुद्ध आर्तव कहते हैं ॥

योनिरोग ।

उदावर्तात्तथाबंध्याविष्टताचपरिष्टता । वातलायोनिरुक्त्वेया
वातरोगेणपंचधा ॥ पंचधापित्तदोषेणतत्रादौलोहितक्षया ।
प्रसंसिनीवामिनीचपुत्रघ्नीपित्तला तथा ॥ अल्पानंदाकर्णिनीच
चरणानंदपूर्विका । अतिपूर्वाचतज्ञेयाःश्लेष्मलाश्चकफादिमा ॥
खंडिनीचैवमहतीसूचीमुखात्रिदोषजा । पंचैतायोनयःप्रोक्ताः
सर्वदोषप्रकोपतः ॥

अर्थ—उदावर्तमें वात कुपित होकरके स्त्रियोंके बंध्या, विष्टता, परिष्टता वातला, योनिरुक ये पांच रोग होते है, पित्त दोषसे लोहितक्षया, प्रसंसिनी, वामिनी, पुत्रघ्नी, पित्तला ये पांच रोग होते है, कफ दोषसे अत्यानंदा, कर्णिनी, चरणानंदपूर्विका, अतिपूर्वा, श्लेष्मला ये पांच रोग होते है, त्रिदोषके कोपसे खंडिनी, महती, सूचीमुखा और त्रिदोषजा ये सर्व रोग योनिमें उत्पन्न होनेवाले है ॥

व्यापत्तिनिदान ।

विंशतिर्व्यापदोयोनेर्निर्दिष्टारोगसंग्रहे ॥ मिथ्यांचारेणताः
स्त्रीणांप्रदुष्टेनार्तवेनच । जायतेबीजदोपाच्चदैवाच्चगुणताःपृथक् ॥

अर्थ-रोगसंग्रहमें योनिके बीस रोग हैं वह मिथ्या आहार और मिथ्या विहार करके तथा दुष्ट आर्तव (रुधिर) से, बीज दोपसे और दैवकी इच्छासे स्त्रियोंके होतेहैं उनके लक्षण पृथक् २ कहताहूँ सुनो ॥

वातजयोनिरोग ।

साफेनिलमुदावृत्तारजःकृच्छ्रेणमुंचति । वंध्यांनष्टार्तवांविद्या
द्विष्टुतानित्यवेदनाम् ॥ परिष्टुतायांभवतिग्राम्यधर्मेणरुग्भृ
शम् । वातलाकर्कशास्तब्धाशूलनिस्तोदपीडिता ॥ चतसृ
ष्वपिचाद्यासुभवन्त्यनिलवेदनाः ॥

अर्थ-जिस योनिसे झाग मिला रुधिर बड़े कष्टसे वहे उसको उदावृत्ता योनि कहते हैं और जिसका आर्तव नष्ट हो उसको वंध्या कहते हैं जिसके निरन्तर पीडा हो उसको विष्टुता कहते हैं जिसके मैथुन करनेमें अत्यन्त पीडा होय उसको परिष्टुता कहते हैं, जो योनि कठोर स्तब्ध होकर शूल तो-दयुक्त हांवे उसको वातला कहते हैं स्वस्वलक्षणसंयुक्त पित्तला श्लेष्मला योनि भी जाननी चाहिये और पहले जो चार योनि (उदावृत्ता, वंध्या, विष्टुता, परिष्टुता) कही हैं इनमें वातकी पीडा होती है और वातलामें वातकी पीडा विशेष होती है ॥

पित्तज योनिरोग ।

सदाहंक्षीयतेरक्तयस्याःसालोहितक्षया । सवातमुद्धमेद्रीजंवा
मिनीरजसान्वितम् ॥ प्रसंसिनीभ्रंशतेगर्भक्षोभितादुष्प्रजा
यिनी । स्थितंस्थितंहंतिगर्भपुत्रघ्नीरक्तसंक्षयात् ॥ अत्यर्थपि
त्तलायोनिर्दाहपाकज्वरान्विता । चतसृष्वपिचाद्यासुपित्तलिं
गोच्छ्रयोभवेत् ॥

अर्थ-जिस योनिसे दाहयुक्त रुधिर वहे उसको लोहितक्षया कहते हैं, जिसमेंसे रजोयुक्त शुक्र वायु बराबर बहें उसको वामनी कहते हैं जो योनि स्थान भ्रष्ट होय उसको प्रसंसिनी कहते हैं जिसमें अंग बाहर निकल आवे और यह विमर्दित करनेसे प्रसव योग नहीं होय है जिस योनिमें रुधिरक्षय होनेसे गर्भ न रहे उसको पुत्रघ्नी कहते हैं, जो योनि अत्यन्त दाह पाक (पकना) और ज्वर इन लक्षणों करके संयुक्त होय, उसको पित्तला कहतेहैं इनमें पहली चार (रक्तक्षया वामनी प्रसंसिनी और पुत्रघ्नी) इनमें पित्तके

लक्षण अधिक होते हैं, और पित्तलामें पित्तके विशेष लक्षण होते हैं और पित्तलामें जो ज्वर, दाह, पाक, कहे हैं सो उपलक्षण मात्र हैं अर्थात् इसमें नीला, पीला सफेद आर्तव बहता है ये जानना सो तंत्रान्तरोमे लिखा है ॥

कफज और त्रिदोषज योनि ।

अनार्तवास्तनीपंठीखरस्पर्शातुमैथुने । अतिकायगृहीताया
स्तरुण्याःखण्डिनीभवेत् । विवृतातिमहायोनिःसूचीवक्रातिसं
वृता । सर्वलिंगसमुत्थानासर्वदोषप्रकोपजा ॥ चतसृष्वपिचा
द्यासुसर्वलिंगनिदर्शनम् । पंचासाध्याभवंतीहयोनयःसर्वदोषजाः॥

अर्थ—जो स्त्री अनार्तवा, बड़े स्तनवाली जिसको आर्तव कम है ऐसी, मैथुनके समय खर स्पर्शवाली ऐसी स्त्रीको खण्डिनी कहते हैं, जिसकी योनि बड़ी है और विवृत मुखवाली है उसको महती कहते हैं, जिसकी योनि संकुचित है उसको सूचिसुखी कहते हैं, उपर कहे सर्व लक्षण जिसमें होते हैं उसको त्रिदोषजा कहते हैं ऊपर कहे सर्व रोगोमे त्रिदोषसे होनेवाले सर्व रोग असाध्य होते हैं ॥

१ व्यापङ्गणकट्टम्लक्षारयै पित्तजामेदादाहपाकप्वरीष्णातिनीलपीतासिताभवेत् ॥ यवनशाखानुसारेणस्त्रीरोगा ॥

रिह्मगर्भाऽऽशयस्तस्थहार सुयुलामिजाजत । वारिदस्तवयामिस्वाहेतव प्रतिबधका ॥ १ ॥ तत्रापिदि
विध सादेमादीतिपरिकीर्तित । तत्र योगप्रतीकारतत्रवैय समाचरेत् ॥ २ ॥ गर्भेरिह्मकोष्ठस्यासौदीसगमव
तिनी । गिलजत् सौदत्तदंज हिक्त्वा चापिभृशभवेत् ॥ ३ ॥ संभवौरिवक्त्वेद आमदन्वैज एव च । दाहामाविंश
शैत्यत्व लिंगनिर्देश इत्यसौ ॥ ४ ॥ यकसत्सभरेमुष्मिन्वरागेऽशोषण रज । सूक्ष्म प्रवर्ततेऽतिपरसौदाप्रकोप
जम् ॥ ५ ॥ रतुवत् प्रभवेत्वास्मि मेलानारिह्मद्रुवेत् । हंइद्वारहेजनाभेयगर्भस्थितिघातका ॥ ६ ॥ कदाचिदैव
योगेनसम्भवेद्गर्भलक्षणम् । मासत्रयोत्तर पातोऽस्तूयत्सगतोऽधुवम् ॥ ७ ॥ मनीते नाशयैवविशोत्पियेन सयु
ता । सुरतायसरेतत्रेदनाविप्रकृद्भवेत् ॥ ८ ॥ सभोगानन्तर नारीवेगादुत्तिष्ठतेदुतम् । रिह्ममुखा मनायातो
बाहरेवम्भवेत्पुन ॥ ९ ॥ अकरत् बधत्यमाख्यात म्पुन स्याद्भिजमरे । परीक्षणार्थसदीत्याप्रतिकार्ययथा
यम् ॥ १० ॥ मनीहेजक्षिपेत्पुमिजमिब्रं च सरेत् । दूषिततद्विजानीयात् तद्व शीन दोषल ॥ ११ ॥
रिह्मं हुष्मयोदोष प्रदराख्यां दृढांजम् । औपथोकीचवदनीद्विधियाविदघात्यम् ॥ १२ ॥ कस्याधिदग्ना
यास्तप्रसवे सकटभ्रेत् । अष्टमांसासतस्तस्यैक्षीरपातुदित्तोद्भिषक् ॥ १३ ॥ परिपाकाऽनुरूपतदजसोद्वैकृन्न
च । तद्विकृत्यारिह्मदंभवेदुष्णेन वारिणा ॥ १४ ॥ जरायुसुखेऽन्धेनश्रुतधूणसयोदरे । जन नमोततमोक्तशूल्य
शूल्यविघातदृत् ॥ १५ ॥ अवलजडवत्तिष्ठेन्नापसाक्षयकारणम् । इजतिस्तस्यकृतव्योवनिताशर्मणेश्चै ॥ १६ ॥
हिमहस्तपदस्य शीतबाभाभवेद्भृशम् । मदाभिर्वलहानिश्चानुत्साह श्वाससमव ॥ १७ ॥ व्ययगर्भाशयस्थातु
मैयुनातिशयात्तथा । भवेद्भ्रजोविकाराचप्रभूते प्रागनारतम् ॥ १८ ॥ दुष्टापांराहुखातोस्याऽऽमघणपातयस्त्वच ।
समप्रविग्रहाभावमकालेपिचकल्पयेत् ॥ १९ ॥ इहृतबासूतमममुख्य इतिरकाभ्रातिरेव च । अवलो बौहदाऽऽभानो
भवेद्गर्भसमाहृति ॥ २० ॥ प्रदोष्य समाख्यातोऽसमयेऽन्निस्वमासत । हैजजारीश्रवद्वत् पीतार्णविमिश्रित
म् ॥ २१ ॥ अनामुक्षोत्रणोघोर सर्तानिरिह्म स्मृत । कर्षीकार फटोर स्याच्छोद्यतसचिरतनात् ॥ २२ ॥
अन्येष्यप्रविकारयेत केषांश्चिन्नकोपजत् । तर्कियत् चापितार्ईविधेयानिविधाऽगदै ॥ २३ ॥ इति

१ एते श्लोका शुद्धा वा अशुद्धायेति न शक्वा विवेक्तु वयम् ।

योनिव्यापच्चिकित्सा ।

योनिव्यापत्तुभूयिष्ठंशस्यतेकर्मवातजित् ।

स्नेहस्वेदनवस्त्यादिविशेषाद्वातजासुच ॥

अर्थ--योनिव्यापत्ति अर्थात् योनिरोगमें विशेष करके संपूर्ण वातनाशक कर्म करे, जैसे स्नेहन, स्वेदन और वस्तिकर्म आदि ये कर्म सर्व योनिके रोगोंमें करे तथापि वातजन्यमें तो अवश्यही करे ॥

प्रकारांतरसे यत्न ।

स्निग्धस्विन्नांतथायोनिंदुःस्थितांस्थापयेत्समाम् । मधुरौषध
संसिद्धान्वेसवारांश्चयोनिषु ॥ निक्षिप्यधारयेच्चापिपिचुतैलंय
थावलम् । योनिशूलरुजादौस्थ्यशोफस्त्रावप्रशांतये ॥

अर्थ--प्रथम योनिको स्नेहन करे, फिर स्वेदन कर बाहर निकल आने आदिसे विगड रहीहे उसको भीतर अपने स्थानपर ठीक करे तथा तेलमें रुई-का फोहा भिगोकर योनिमें धारण करे तो योनिका शूल, पीडा, योनिकी दुष्टता, सूजन और योनिका बहना बंद होय ॥

प्रयोगांतर ।

वचावाकुंचिकाजाजीकृष्णावृषभसैधवम् । अजमोदायवक्षार
चित्रकंशर्करान्वितम् ॥ पिद्वाप्रसन्नयालोव्यखादेत्तद्घृतभर्जि
तम् । योनिपार्थातिहृद्रोगगुल्माशौविनिवृत्तये ॥

अर्थ--वच, कलौजी, जीरा, पीपल, अडूसा, सैधानिमक, अजमोद, जवा-खार, चित्रक और खांड इनको समान भाग पीस प्रसन्ना (दारुकी किश्म) में मिलायके घीमें भूनके खाय तो योनिकी पसवाडेकी पीडा हृदयरोग, गोला और बवासीरको दूरकरे ॥

राम्नादे योग ।

रास्नाश्वगंधावृषकैर्योनिशूलहरणयः ।

गुडूचीत्रिफलादंतीकाथैश्चपरिपेचनम् ॥

अर्थ--रास्ना, असगंध और अडूसा इनके चूर्णको दूधमें ढालके पीवे तो यो-निशूल नष्ट होय तथा गिलोय, हरड, बहेडा, आंवला और दंती इनके काथसं योनिको सेके तो पीडा जाय ॥

विष्णुताकी चिकित्सा ।

नतवार्ताकिनीकुष्ठसैधवामरदारुभिः । तैलात्प्रसाधितोधार्यः
पिचुर्योनौरुजापहः । विष्णुतायांसदायोनौव्यथातेनप्रशाम्यति ॥

अर्थ—छड, भटकटाई, कूठ, सैधानिमक, देवदारु, इनके कल्कसे तेल सिद्धकर इसमें रूईका फोहा भिगाकर योनिमें रखे तो विष्णुता योनिकी पीडा तत्काल शांति होय ॥

वातजयोनि ।

तासुयोनिपुचाद्यासुस्नेहादिक्रमइप्यते ।

वस्त्यभ्यंगपरीपेकप्रलेपाःपिचुधारणम् ॥

अर्थ—वातजन्य योनियोंमें स्नेहन, स्वेदन, आदि क्रम करे तथा वस्ती, मालिश, परिपेक, लेप और फोहेका रखना आदि कर्मोंको करे ॥

योनिशूलपर ।

विल्वमार्गवजंवीजंकल्कमद्येनपाययेत् ।

तेनयोनिगतंशूलमाशुशाम्यतियोपिताम् ॥

अर्थ—बेल और आंगेके बीजोंका कल्क मद्यके साथ पिलानेसे योनिक, शूल बहुत जल्दी दूर हो ॥

कफात्मकयोनिपर ।

सुरामंडोभितोधार्यःपिचुर्योनौकफात्मिके ।

कंडूपैच्छिल्यसंस्त्रावशैथिल्यविनिवृत्तये ॥

अर्थ—कफकी योनिव्यापत्तीमें मद्य, मंडमें भीगे फोहाको योनिमें रखे, तो खुजली, लिवलिवाट (हिसासा) रहना, बहना और शिथिलता आदि नष्ट होय ॥

योनिदुर्गंधपर ।

सुगंधानांपदार्यानांकल्कचूर्णकृतैःकृतः ।

योनौदौर्गंध्यशमनःपूयपैच्छिल्यभांजिच ॥

अर्थ—सुगंधित पदार्थोंके कल्क अथवा चूर्ण योनिमें रखे तो योनिकी दुर्गंधता दूर होय ॥

सन्निपातजयोनिरोगचिकित्सा ।

सन्निपातसमुत्थायांकार्यायोन्यापदिक्रिया ॥

अर्थ—सन्निपातकी योनिरोगमे वातपित्तकफजन्य तीनोंकी मिली चिकित्सा करे तो शांति होय ॥

साधारणोदशांघ्रिश्रीमदक्वाथपिचुहितः ॥

अर्थ—इसमे साधारण यत्न यह है कि दशमूल, भद्रमोथा, इनके काथमे भिगोया पिचु फोहा हितकारक कहा है ॥

पित्तलायोनिकी चिकित्सा ।

पित्तलानांतुयोनीनांसेकाभ्यंगपिचुक्रिया ।

शीताःपित्तहराःकार्याःस्नेहनाथैघृतानिच ॥

अर्थ—पित्तजन्य योनिके रोगमे यावन्मात्र जल डालना, तेलकी मालिश, फोहेका रखना इत्यादि सब कर्म शीतलही करेतथा पित्तहरण कर्ता कर्म करे, तथा स्नेहन कर्ममे घृत लेने चाहिये तेल नहीं ॥

दाह और पाकका यत्न ।

पिचवश्चघृताभ्यक्ताश्चंदनांभःसमुक्षिताः ।

योनौस्थाप्याःस्त्रियादाहकृच्छ्रपाकप्रशांतये ॥

अर्थ—घृतसे सने रुईके फोहे और उनपर चदनका जल छिडकर स्त्रियोनि-
मे रखे तो दाह और घोर योनिपाक दूरहो ॥

कफदुष्ट योनिपर सामान्य चिकित्सा ।

योन्यांवलासजुष्टायांसर्वरूक्षोष्णमौषधम् ।

तैलंसाधुयवांत्रंचपथ्यारिष्टंचयोजयेत् ॥

अर्थ—कफदुष्ट योनिपर सर्व रूक्ष और उष्ण चिकित्सा करनी चाहिये तेल, यव, हरड, और अरिष्ट आदि देने चाहिये ॥

पिप्पल्यामरिचैर्मापैःशताह्लाकुष्टसैधवैः ।

वर्तिस्तुल्याप्रदेशिन्याधार्यायोनिविशोधिनी ॥

अर्थ—पीपल, मरिच, उडद, सतावर, कूठ, और सैधानिमक इनको पीस छोटी अंगलीके समान बत्ती बनायके योनिमे रखे तो योनि शुद्ध होय ॥

प्रसंसिनी योनिकी चिकित्सा ।

प्रसंसिनीघृताभ्यक्ताक्षीरस्वित्रांप्रवेशयेत् ।

विधायवेसवारेणततोबंधंसमाचरेत् ॥

अर्थ—जो योनि बाहरको निकल आई हो उसपर घी लगाय और दूधका वाफारा देकर भीतरको प्रवेश करे, फिर बसवार (गरम मसाला) भरके उसको लंगोटेसे कस देवे ॥

पूयस्त्राविणी योनिर्की चिकित्सा ।

योन्यांतुपूयस्त्राविण्यांशोधनद्रव्यनिर्मितैः ।

सगोमूत्रैःसलवणैःपिंडैःसंपूरणंहितम् ॥

अर्थ—जिस योनिमेंसे राध बहती होय उसमें शोधन द्रव्योंसे और गोमूत्र तथा निमक आदिकी पिंडोंसे योनिको पूरण करे अर्थात् भरे ॥

खुजलीका यत्न ।

गुडूचीत्रिफलादंतीकथितोदकधारया ।

योनिप्रक्षालयेत्तेनतत्रकंडूप्रशाम्यति ॥

अर्थ—जिसके योनिमें खुजली चलचो होय उसको गिलोय, त्रिफला और दंती इनके गरम गरम काथकी धार डालके धोवे तो खुजली शांति होय ।

योनिसेकोचन ।

मुद्गपुष्पसखादिरंपथ्याजातीफलंतथा । वृकीपूगंचसंचूर्ण्यवस्त्र

पूतक्षिपेद्भ्रगे ॥ योनिर्भवतिसंकीर्णानस्त्रवेच्चजलंततः ॥

अर्थ—मूंगका फूल, खैरसार, हरड, जायफल, पाठा, और सुपारी इनका कपडछन बारीक चूर्ण करके भगमें रखे तो योनि अत्यंत संकुचित (छोटी) होय कि जिसमेंसे जलभी न निकले ॥

कपिकच्छूभवंमूलंकाथयेद्विधिनाभिपक्व ।

योनिःसंकोर्णतांयातिकाथेनानेनधावनात् ॥

अर्थ—कौलकी जडका काथ करके वैद्य योनिको धुलावे तो योनि अत्यंत संकुचित होय ॥

वातलाआदिकी चिकित्सा ।

वातलांकर्कशांस्तब्धामल्पस्पर्शांतथैवच । कुंभींस्वेदैरुपचरे

दंतवैश्मनिसंवृते ॥ धारयेद्वापिचुंयोनीतिलतैलस्यसर्वदा ॥

अर्थ—वातलायानि, कर्कशायोनि, स्तब्धायोनि और अल्पस्पर्शायोनिमें कुंभीस्वेद(जो स्वेदनाध्यायमें कह आयेहै) करे परंतु यह मकानके भीतर करे जो चारों तरफसे ढकाहुआहो अथवा तिलीके तेलका फोहा भिगीकर भगमें रखे ॥

योनिशूलपर ।

उपकुंचिकांपिप्पलीचमदिरांलाभतःपिवेत् ।

सौवर्चलेनसंयुक्तंयोनिशूलनिवारणम् ॥

अर्थ—कलौजी, पीपल और कालानिमक इनका चूर्ण डालके मद्य (दारु) पीवे तो योनिशूल नष्ट होय ॥

योनिदाहपर ।

धात्रीरसंसितायुक्तंयोनिदाहेपिवेत्सदा ।

सूर्यक्रांताभवंमूलंपिवेद्भ्रातंडुलांबुना ॥

अर्थ—योनिदाहमें यह स्त्री खांडको आमलेके रसमें मिलायके पीवे अथवा सूर्यक्रांताकी जड़को चावलके धोवनके साथ पीवे तो योनिदाहशांति होय ॥

नष्टार्तवचिकित्सा ।

आर्तवादशनेनारीमत्स्यान्सेवेतनित्यशः ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके रजोदर्शन न होता होय वह नित्य छोटी मछलियोंका सेवन कराकरे ॥

प्रकारांतर ।

कांजिकंचतिलान्मापानुदधिश्चतथादधि । पीतंज्योतिष्मती

पत्रंराजिकोत्रासनंज्यहम् । शीतेनपयसापिष्टंकुसुमंजनयेद्भ्रुवम् ॥

अर्थ—कांजी, तिल, उडद, उदधित् (छाछका भेद) दही, मालकांगनीके पत्ते, राई, वच और विजेशार इनको शीतल दूधके साथ पीसके पीवे तो रजोदर्शन निश्चय होय ॥

तिलगुडयोग ।

सगुडःश्यामतिलानांकाथःपीतःसुशीतलोनायाः ।

जनयतिकुसुमंसहसागतमपिसुचिरंनिरातंकम् ॥

अर्थ—काले तिल और गुडका काथकर जब शीतल होजाय तब पीवे तो बहुत दिनका गयाहुआ भी नष्टार्तव फिर निकलने लगे ॥

दृष्टरा प्रयोग ।

तिलशेलुकारवीनांकाथंपीत्वानष्टरजामाहिला ।

शिशिरंसगुडंत्रिदिनाजनयतिकुसुमंसंदेहः ॥

अर्थ—तिल, लिसोडा और कलौजी इनका काथकरे जब शीतल होजाय तब गुड डालके तीन दिन पीवेतो अवश्य रजोदर्शन होय ॥

वर्त्ता ।

इक्ष्वाकुबीजदंतीचपलागुडमदनकिण्वयावशुकैः ।

सस्नुवक्षीरैर्वर्तियोनिगताकुसुमसंजननी ॥

अर्थ-तोरईके बीज, दंती, पीपल, गुड, मैनफल, किण्व (सरावकाभेद)
और जवाखार इनको बारीक पीस धूहरके दूधमें पीसके घत्ती बनाय योनिमें
रखेतो रजोदर्शन होय ॥

योनिकंद ।

दिवास्वप्नादतिक्रोधाद्ब्यामादतिमैथुनात् । क्षताच्चनखदंता
द्यैर्वाताद्याःकुपितायदा ॥ पूयशोणितसंकाशंलकुचाकृतिस
न्निभम् । उत्पद्यतेतदायोनौनाम्नाकंदःसयोनिजः ॥

अर्थ-दिनमें सोनेसे, अतिक्रोध करनेसे, बहुत फिरनेसे, अति मैथुनसे,
नख दंतों करके क्षत होनेसे, वातादि दोष कुपित हो करके योनिमें पूय और
शोणितका लकुचफलके आकारका कंद उत्पन्न होता है उसको योनि-
कंद कहते हैं ॥

वातयोनिकंद ।

रूक्षंविवर्णस्फुटितंवातिकंतंविनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-उसमें वातका दोष अधिक होय तो रूक्ष, निस्तेज और स्फुटित
ऐसा कंद होता है ॥

योनि कंदचिकित्सा ।

गैरिकाप्रास्थिजठररजन्यंजनकट्टफलाः । पूरयेद्योनिमेतेपां
चूर्णैःक्षौद्रसमन्वितैः॥त्रिफलायाःकपायेणसशौद्रेणचयेसचेत् ।
प्रमदायोनि कंदेनव्याधिनापरिसुच्यते ॥

अर्थ-गेरू, आमकी गुठलीका भगज, हलदी, सुरमा और कायफल इनका
बारीक चूर्णकर सहतमें शानके इसको योनिमें भरे । अथवा त्रिफलेके कायमें
सहत डालके योनिमें तरडा देवे तो स्त्री योनि कंदरोगसे छूट जाय ॥

दूसरा यत्न ।

आखोर्मासंसपदिवहुधासूक्ष्मखंडीकृतंतत्तैलेपाच्यंद्रवतिनिय
तंयावदेतेनसम्यक् । तत्तैलाक्तंवसनमनिशंयोनिभागेदधाना
सत्यंत्रीडाजनकमवलायोनि कंदंनिहंति ॥

अर्थ—मूसेके मांसके वारीक टुकड़े करके तेलमें पचावे, जब परिपक्व हो जाय तब उतार लेवे, इसमें कपड़ेको भिगोकर जो स्त्री नित्य योनिमें रखे तो लज्जाकारी योनिकद निश्चय दूर हो ॥

कफयोनिकंद ।

नीलपुष्पप्रतीकाशकंडूमंतंकफात्मकम् ॥

अर्थ—कफदोष अधिक होनेसे नीलवर्णका और खजवाला ऐसा कंद होता है ॥
पित्तयोनिकंद ।

दाहरागज्वरयुतंविद्यात्पित्तात्मकंतुतम् ॥

अर्थ—पित्तदोषसे दाह करनेवाला, लाल वर्णका, ज्वरयुक्त ऐसा कंद होता है ॥
सन्निपातात्मक योनिकंद ।

सर्वलिङ्गसमायुक्तंसन्निपातात्मकंवदेत् ॥

अर्थ—वातपित्तकफोंके लक्षण एकत्र मिलें तो सन्निपातात्मक है ऐसा जानना ॥

गुडूचीत्रिफलादंतीकाथेनपरिपेपितैः । पिप्पलीमरिचैर्दोषैः श-

ताह्वाकुष्ठसैधवैः । वर्तिस्तुल्याप्रदेशिन्याधार्यायोनिविशोधनी ॥

अर्थ—गिलोय, त्रिफला, दंती, पीपेल, काली मिरच, हलदी, सतावर, कूठ और सैधानिमक ये समान भाग ले वारीक पीस जलके साथ छोटी उंगलीके समान बत्ती बनावे इसको योनिमें रखनेसे योनि शुद्ध होय ॥

योनिकंदपरलेप ।

मिष्टजंबूकसंपिष्टंप्रकृतिडिसंयुतम् ।

लेपमात्रेणनारीणांयोनिकंदहरंपरम् ॥

अर्थ—मीठे जामुन और पकी इमली दोनोंको समान भाग पीस लेप करे तो योनिकंद रोग दूर होय ॥

गर्भिणीके रोगोंकी चिकित्सा मधूकादिकाढा गर्भिणीके ज्वरपर ।

मधूकचंदनोशीरसारिवायष्टिपद्मकैः ।

शर्करामधुसंयुक्तःकपायोगर्भिणीज्वरे ॥

अर्थ—मुहआ, चंदन, खस, सारिवा, मुलहठी, पद्माख, इनके काथमें मिश्री और सहत डालके पीचे तो गर्भवती स्त्रीका ज्वर दूर होय ॥

ज्वरपर दूसरा काय ।

चंदनसारिवालोध्रमृद्धीकाशर्करान्वितम् ।

काथंकृत्वाप्रदद्याच्चर्भिणीज्वरशांतये ॥

अर्थ-चंदन, सारिवा, लोध, मुनक्कादाख और मिश्री इनका काय करके पीवे तो गर्भिणीका ज्वर शांत होय ॥

तीसरा काय ।

पयस्यासारिवापाठातोयतोयदनागरैः ।

शृतंशीतंपिवेद्धारिर्गर्भिणीज्वरवारणम् ॥

अर्थ-क्षीरकाकोली, सारिवा, पाठ, नेत्रवाला, नागरमोथा, और सोंठ, इनका कायकर शीतल होनेपर पीवे तो गर्भवतीका ज्वर शांत होय ॥

पित्तज्वरपर ।

मृद्धीकापद्मकोशीरश्रीपर्णीचंदनंतथा । मधुकंचपयस्याचसा

रिवामलकंतथा ॥ पित्तज्वरहरःकाथोगर्भिणीनांप्रशस्यते ॥

अर्थ-दाख, पद्माख, खस, कायफल, चंदन, महुआ, क्षीरकाकोली, सारिवा और आमले इनका काय गर्भवतीके पित्तज्वरको शांत करे है ॥

विषमज्वरपर ।

पातंविश्वमजाक्षीरैर्नाशयेद्विषमज्वरम् ॥

अर्थ-सोंठका चूर्ण, गरम बकरीके दूधसे पीवे तो विषमज्वर दूर होय ॥

ज्वरातिष्ठार आदिपर ।

ज्वरातिसारेगर्भिण्याःशस्तंसामेसशोणिते । संमंगामधुकंलो
ध्रफाणितंशर्करान्वितम् । प्रवाहिकायांगर्भिण्यांशस्तंसामेस
शोणिते ॥

अर्थ-लजालू, मुलहदी, लोध इनके फांटमें मिश्री मिलायके पीवे तो गर्भवतीकी प्रवाहिका कि जो आम और रुधिरयुक्त है नष्ट होय ॥

ग्रहणीपर ।

आम्रजंबूत्वचःकाथैर्लेहयेच्छाजसक्तुकम् ।

अनेनलीढमात्रेणगर्भिणीग्रहणीजयेत् ॥

अर्थ-आम्र जामुनकी छालके काथमें, खीलोका सत्तु मिलायके चाटे तो गर्भवतीकी संग्रहणी दूर होय ॥

गर्भवतीके छदि और अतिष्ठारपर ।

शुंठीविल्वकंपायंतुयवंसक्तुसमन्वितम् ।

गर्भिणीपाययेद्वैद्यश्छर्द्यतीसारनाशनम् ॥

अर्थ-सोंठ, बेलगिरी दोनोंका काथ कर उसमें जोंका सजू मिलायके पीवे तो गर्भवतीको वमन होना और अतिसार नष्ट होय ॥

कामला मूजनआदिपर ।

पृश्निपर्णीबलावासानिर्यूहोरक्तपित्तजित् ।

गर्भिण्याःकामलाशोथकासश्वासज्वरापहः ॥

अर्थ-पिठवन, खिरेटी और अडूसा इनका यूप बनायके पीवे तो गर्भवतीके रक्तपित्त, कामला, मूजन, खाँसी, श्वास और ज्वर ये दूर ही ॥

वांतीपर ।

कुस्तुंवरीणांकल्कंतुतंदुलोदकसंयुतम् ।

पिवेत्सशर्करंहृद्यंगर्भिणीछर्दिवारणम् ॥

अर्थ-धनियेके कल्कको चाँवलके धोवनमें मिलाय, मिश्री डालके पीवे तो हृदयको हितकरे तथा गर्भवतीकी वमनको दूर करे ॥

खाँसी श्वासपर ।

विल्वमजावलाजांबुपिवेच्छर्दिषुगर्भिणी ।

भार्ङ्गीशुंठीकणाचूर्णगुडेनश्वासकासजित् ॥

अर्थ-बेलगिरी, खिरेटी, जामुनकी छाल, इनके काथको पीवे तो गर्भवतीकी वमन होना दूर हो । अथवा, भारंगी, सोंठ, पीपल इनके चूर्णमें गुड डालके खाय तो गर्भवतीका श्वास खाँसी दूर हो ॥

वायुपर ।

विल्वाग्निमंथपक्वपाटल्यानागरेणवा ।

सिद्धमंबुपिवेच्छीतंगर्भिणीवातरोगनुत् ॥

अर्थ-बेलगिरी, अरनी इनसे परिपक्व करा अथवा पाड़र और सोंठ डालके सिद्ध करा हुआ शीतल जल पीवे तो गर्भवतीके वादीके सर्ष रोग दूर हो ॥

सूजनपर लेप ।

चंदनमधुकोशीरनागपुष्पंतिलास्तथा ॥ अजशुंगीचमंजिष्ठा

रविमूलंपुनर्नवा । श्रेष्ठःशोफहरोलेपोगर्भिणीनांविशेषतः ॥

अर्थ-चंदन, मुलहटी, खस, नागकेशर, तिल, मेढासिंगी, मजीठ, आककी जड़ और सांठ इनको पीस लेप करे तो गर्भवतीकी सूजन दूर होय ॥

गर्भविनासरस ।

रसश्चगंधकस्तुतथ्यहंजवीरमर्दितम् -॥ त्रिभाषितंत्रिकटुना
देयंगुंजाचतुष्टयम् । गभिण्याःशूलविष्टंभज्वराजीर्णेषुकेवलम् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, लीलाथोथा इन तीनोंको समान भागले बारीक पीस
जंभीरी नाँवूके रसकी ३ भावना देवे, फिर सोंठ, मिरच और पीपलके साथ ४
रत्ती खानेको देय तो गर्भवतीका शूल, विष्टंभ, ज्वर और अजीर्ण ये दूर हो॥

मंदाग्नि पर ।

अजमोदनागरंचपिप्पलीजीरकंसमम् ।

तच्चूर्णसगुडंक्षौद्रंगभिण्यावन्हिदापनम् ॥

अर्थ-अजमोद, सोंठ, पीपल, जीरा, समान भाग ले चूर्ण करे, गुड और
सहतमें मिलायके खाय तो गर्भवतीकी जठराग्नि दीपन होय ॥

गर्भपातोपद्रवचिकित्सा गर्भशूलपर ।

स्निग्धशीताःक्रियास्तेषुदाहादिपुसमाचरेत् । कुशकाशोरुवू
कानामूलैर्गोक्षुरकस्यच । शृतंदुग्धंसितायुक्तंगभिण्याःशूल
हृत्परम् ॥

अर्थ-गर्भवतीके दाहादि रोगोंमें सच्चिक्कण और शीतल क्रिया करनी
चाहिये । जैसे, कुसा, कांस, अडंकी जड और गोखरू इनको दूधमें डालके
औंटावे फिर उसमें मिश्री मिलायके पीवे तो गर्भवतीका शूल नष्ट होय ॥

पीडापर ।

श्वदंश्रामधुकद्राक्षाम्लानैःसिद्धंपयःपिबेत् ।

शर्करामधुसंयुक्तंगभिणीवेदनाहरम् ॥

अर्थ-गोखरू, मुलहठी, दाख, बाणपुष्प इनसे सिद्ध करे दूधमें मिश्री
सहत डालके पीवे तो गर्भवतीकी पीडा नष्ट होय ॥

प्रदरपर ।

मृत्कोष्ठगारिकागेहसंभवानवमल्लिका । समंगाधातकीपुष्पं

गैरिकंचरसांजनम् ॥ तथासर्जरसश्चेतान्यथालाभंविचूर्णयेत् ।

तच्चूर्णमधुनालिह्यान्नारीप्रदरशांतये ॥

अर्थ-भृंगीके घरकी मिट्टी, लजालू, धायके फूल, गेरू, रसोत और राल,
ये समान भाग ले चूर्ण करे, इस चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो स्त्रीका
प्रदर रोग शांत होय ॥

आनाह वायुपर ।

पक्षंवचारसोनाभ्यांहिंगुसौवर्चलान्वितम् ।

आनाहेपुपिवेदुग्धगर्भिणीसुखिनीभवेत् ॥

अर्थ—वच, लहसन, हींग और काला निमक इनको डालके दूध आँटावे, वह पीनेसे गर्भवतीका अफरा नष्ट होकर सुखी होय ॥

मूत्ररोधपर ।

तृणपंचकमूलानांकल्केनविपचेत्पयः ।

तत्पयोग्युर्विणीपीत्वामूत्रसंगाद्रिसुच्यते ॥

अर्थ—तृणपंचककी जड़के कल्केसे दूधको पचायके पीवे तो गर्भवतीका मूत्ररोध दूर होय ॥

दूसरा यत्न ।

शालीक्षुकुशकाशैभ्याच्छरेणतृणपंचकम् ।

एषामूलंतृषादाहपित्तासृङ्मूत्रसंगहृत् ॥

अर्थ—शालीचावल, कुशा, कांस, सरपला और ईख इन पांचोंकी जड़को तृणपंचक कहते हैं यह तृषा, दाह, रक्तपित्त और मूत्ररोध दूर हो ॥

अतिसारपर ।

कशेरुशृंगाटकपद्मकोत्पलंसमुद्रपर्णीमधुकंसशर्करम् ।

सशूलगर्भासृतिपीडिताबलापयोविमिश्रंपयसान्नभुक्षपिबेत् ॥

अर्थ—कसेरु, सिंघाडे, पद्माख, कमल, मुद्रपर्णी, मूलहठी, इनमें खांड मिलायके पीवेतो पीडासहित गर्भगिरनेकी बाधाको दूरकर इस दूधमिलायले और दूधभातकी ही पथ्य करे ॥

प्रथम माहिनेकी चिकित्सा ।

चलनंप्रथमेमासिगर्भस्ययदिजायते । औषधंचतदादेयंविचक्ष

णभिपगवरैः ॥ मृद्रीकाज्येष्ठिकाचैवचंदनंरक्तचंदनम् । गवांच

पयसापेयंस्थिरताजायतेध्रुवम् ॥

अर्थ—यदि गर्भवतीका पहले माहिनेमें गर्भस्राव होता होयतो यह औषध देवे, मूलहठी, दाख, चंदन, लालचंदन इनकी गौके दूधमें मिलायके पीवेतो गर्भ स्थिर होय ॥

उपायांतरं ।

नीलोत्पलंसवालंचशृंगाटंचकशेरुकम् । शीततोयेनपिष्ट्वातुक्षी
रेणालोढ्यतत्पिबेत् । एवंनपततेगर्भःसचशूलःप्रशाम्यति ॥

अर्थ—नीलाकमल सुगंधवाला, सिंघाडे, कसेरू, इनको शीतल जलमें पीस
दूधमें मिलायके पीवेतो गर्भपात नहीं होय और पेटका दर्द दूर होय ॥

दूसरे महिनेकी चिकित्सा ।

द्वितीयेमासिगर्भस्यचलनंचभवेद्यदि । पयसाचतदापेयंमृणालं
नागकेशरम् ॥ वेदनायाम् ॥ तगरंकमलंविल्वंकपूरेणसमन्वि
तम् । अजाक्षीरेणतत्पिष्ट्वाक्षीरेणालोढ्यपूर्ववत् ॥

अर्थ—यदि गर्भवतीका दूसरे महिने गर्भचालन होयतो नागकेशरके चूर्ण-
को दूधके साथ पीवे पेटमें दर्द होता होयतो, तगर, कमल, बेलगिरी और
कपूर इनको बकरीके दूधमें पीस दूधमें मिलायके पीवे ॥

तीसरे महिनेकी चिकित्सा ।

तृतीयेमासिचलनंजायतेगर्भजयदि । पयसालोडितंपेयंशर्करा
नागकेशरं॥वेदनायाम्॥ पद्मार्कचंदनंचैववालकंपद्मनालकम् ॥
पिष्ट्वाशीतेनतोयेनक्षीरेणालोढ्यतत्पिबेत् ॥ एवं नपततेगर्भः
सचशूलःप्रशाम्यति ॥

अर्थ—यदि तीसरे महिने गर्भ गिरनेको होयतो नागकेशर और मिश्रीके
चूर्णको दूधमें मिलायके पीवे, यदि पीडा होती होयतो, पद्मास्र, चंदन, सुगं-
धिवाला, कमलकी नाल, इनको शीतल जलके साथ पीस दूधमें मिलायके
पीवेतो गर्भका गिरना और दर्द होना दूरहो ॥

चतुर्थ महिनेका यत्र ।

यदिगर्भस्यचलनंचतुर्थेमासिजायते । तृष्णाशूलविदाहैश्च
ज्वरेणचनिपीडनम् ॥ क्षीरंचकदलीमूलमुत्पलंवालकंतथा ।
आलोढ्यसमभागेनपिबेद्रोगोपशांतये ॥

अर्थ—यदि चतुर्थ महिनेमें गर्भ गिरता होय तो उसके यह लक्षण है तृष्णा
लगे, शूलहो, दाह ज्वरसे पीडित होवे उसको फेलेकीजड़, कमलगट्टा, सुगंध-
वाला जलसे बारीक पीस दूधके साथ पीवेतो गर्भगिरता रुके ॥

पंचममहिनेकी चिकित्सा ।

पंचमेमासिगर्भस्यचलनंकुत्रचिद्रवेत् । दध्नाचमधुनापेयंदाडि
मीपत्रचंदनम् ॥ नीलोत्पलंमृणालं चकोलाक्षीरंतथैवच । के
सरंपद्मकंचैवतोयेनालोडयतत्पिबेत् ॥ एवंनपततेगर्भःसच
शूलःप्रशाम्यति ॥

अर्थ—यदि गर्भपात पांचवे महिनेमें होय तो अनारके पत्ते और चंदनको पीस दही और सहतमें मिलायके पीवे, तथा नीलकमल, कमलकी डंडी, वेर, दूध, नागकेशर और पद्मास इनको जलसे पीसके पीवे तो गर्भ नहीं गिरे और गर्भका शूल नष्ट होय ॥

छठे महिनेकी चिकित्सा ।

षष्ठेमासेतुगर्भस्यचलतांजायतेयदा । गौरिकंगोमयंभस्मकृ
ष्णामृत्स्नातथैवच ॥ एतत्प्रसाधितंप्राज्ञभिपजाचशृतंतदा ॥
पेयंशीतंचपयसासितयाचंदनेनच ॥

अर्थ—यदि छठे महिने गर्भका पात होता होय तो गेरू, आरने उपलोंकी भस्म, काली मिट्टी, इनका काथकर शीतल होनेपर दूधसे पीवे । अथवा शीतल दूधमें मिश्री और चंदन मिलायके पीवे ॥

सातम महिनेकी चिकित्सा ।

सप्तमेमासिगर्भस्यचलनंजायतेयदा । उशीरगोक्षुरघनःसमं
गानागकेशरम् । सपद्मकंसमधुरंपाययेच्चविचक्षणः ॥

अर्थ—यदि सातवे महिनेमें गर्भपातका भय होय तो, खस, गोखरू, नागर-मोथा, लज्जालू नागकेशर और पद्मास इनके चूर्णमें मिश्री मिलायके पीवे तो गर्भका गिरना दूर होय ॥

आठम महिनेकी चिकित्सा ।

अष्टमेमासिगर्भस्यचलनंजायतेयदा ।

लोध्रमागंधिकाचूर्णमधुनापयसापिबेत् ॥

अर्थ—यदि आठवे महिनेमें गर्भ गिरनेका भय होय तो लोध्र, पीपल छोटी इनके चूर्णको सहत और दूधके साथ पीवे ॥

नवम महिनेकी चिकित्सा ।

नवमेसुप्रसूतिःस्यादेवंगर्भस्यपोषणम् ॥

अर्थ-नवम महीनेमें प्रसूति अर्थात् स्त्रीके बालक उत्पन्न होता है इस प्रकार गर्भका पोषण होता है ॥

गूढगर्भनिदान ।

भयाभिघाततीक्ष्णोष्णपानाशननिषेवणात् ।

गर्भेपततिरक्तस्यसशूलदंशनंभवेत् ॥

अर्थ-भय होनेसे, अभिघात (चोट) लगनेसे, तीक्ष्ण और उष्ण भोजनका सेवन करनेसे रक्त कुपित होकर गर्भको टेढा करता है और योनिमें शूल उत्पन्न करता है ॥

स्त्राव और पातके लक्षण ।

आचतुर्थात्ततोमासात्प्रसवेद्गर्भविद्रवः ।

ततःस्थिरशरीरस्यपातःपंचमपद्योः ॥

अर्थ-चवथे मास पर्यंत गर्भ पतली अवस्थामें होनेसे जो स्रवें उसे स्त्राव कहते हैं और चौथे महीनासे लेकर पाँचवे छठे महीनेपर स्त्राव और शरीर बननेपर निकले उसे पात कहते हैं ॥

गर्भोभिघातविपमासनपीडनाद्यैःपक्वद्रुमादिवफलंपततिक्षणेन ॥

अर्थ-अभिघात (चोट) विपमाशन (विपम भोजन) पीडनादिक इन कारणोंसे जैसे पका हुआ फल वृक्षसे चोट लगनेसे क्षणभरमें गिरजाताहै, इसी प्रकार गर्भ अभिघातादि कारणोंसे गिरताहै ॥

गर्भपातके उपद्रव ।

प्रसंसमानेगर्भस्यादाहःशूलश्चपार्श्वयोः ।

पृष्ठं गुरुप्रदरानाहौमूत्रसंघञ्चजायते ॥

अर्थ-गर्भके पतन होनेसे सर्वांगका दाह, पार्श्वमें शूल, पृष्ठभागमें गुरुता, प्रदररोग, आनाह (मल मूत्रका अवरोध) और बड़मूत्रता ये रोग होते हैं ॥

मधुकंशाकवीजंचपयस्यासुरदारुच । अश्मंतकःकृष्णतिला
स्ताम्रवल्लीशतावरी ॥ वृक्षादनीपयस्याचलताचोत्पलसारि
वा । अनंतासारिवारास्नापञ्जामधुकमेवच ॥ बृहतीद्वयका
श्मर्यःक्षीरीशृंगास्त्वचोधृतम् । पृश्निपर्णीविलाशिधुश्वदंष्ट्राम
धुपर्णिका ॥ शृंगाटकं विसंद्राक्षकशेरुर्मधुकंसिता । सप्तैतान्प
यसायोगान्नर्धश्लोकसमापनान् ॥ क्रमात्सप्तसुमासेपुगर्भेत्स्रव

तियोजयेत् । एता औषधयः कर्पमिताः शीततोयेन संपिप्यपल
मितेन दुग्धेना लोडिताः पातव्याः ॥

अर्थ—मुलहठी, सागौनके बीज, क्षीरकाकोली, देवदारु । अश्मंतक वृक्षकी छाल, काले तिल, मजीठ, सतावर।वंदा, क्षीरकाकोली, नीलकमल, सारिवा । धमासो, रास्ना, सारिवा पन्नाख और मुलहठी। छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, कंभारी, क्षीरयुक्त वृक्षोंकी छाल और घृत । पृष्टपर्णी, खिरेटी, सहँजनेकी छाल, गोखरु और मधुपर्णी । सिघाडे, मसीडा, दाख, कसेरु, मुलहठी और मिश्री ये सात योग पृथक् २ फहे हैं इनमेंसे किसी एक योगकी औषधोंको वारीक पीसके क्रमसे, पहले दूसरे तीसरे महिने आदि सात महिनेवाली स्त्रीके गर्भस्त्रावपर देवे तो गर्भ गिरता रुक जावे । यह औषध सब एक तोले लेवे, शीतल जलसे पीस १ छटाक दूधमें मिलायके पीना चाहिये ॥

अष्टममहिनेपर ।

कपित्थविल्ववृहतीपटोलेक्षुनिदिग्धिजैः ।

मूलैः शृतं प्रयुंजीतक्षीरं मासे तथाष्टमे ॥

अर्थ—केथ, वेलगिरी, बड़ी कटेरी, परवल, ईख और छोटी कटेरी इनकी जड़के काथको दूधमें मिलायके अष्टम महिनेमें गर्भवतीको देय तो गर्भ-स्त्रावका भय दूर हो ॥

नवम महिना ।

नवमे मधुकानंतापयस्यासारिवापिवेत् ॥

अर्थ—नवम महिनेमें मुलहठी, धमासो, क्षीरकाकोली और सारिवाके कल्कको पीवे ॥

दशम महिनेपर ।

क्षीरंशुंठीपयस्याभ्यांसिद्धस्याद्दशमेहितम् ।

सक्षीरविहिताशुंठीमधुकंसुरदारुच ॥

अर्थ—दूध गौका, सोंठ और क्षीरकाकोली डालके सिद्ध करे, इसे दशमे महिनेमें पीवे । अथवा सोंठ, मुलहठी और देवदारु इनके कल्कको दूधमें डालके पीवे तो दशम महिने बालककी रक्षा होय ॥

ग्यारवे महिनेकी चिकित्सा ।

क्षीरिकासुत्पलंदुग्धंसमंगामूलकंशिवाम् ।

पिवेदेकादशमासि गर्भिणीशूलशांतये ॥

अर्थ—खिरनीकी छाल, कमलगट्टा, दूध, लज्जालू, मूली, और आमले इनके कल्कको ग्यारवे महिनेमें गर्भिणीके शूलशांति होनेके वास्ते देवे ॥

बारवे महिनेकी चिकित्सा ।

सिताविदारिकाकोलीक्षीरोचैवमृणालिका । गर्भिणीद्वादशमासि
पिवेच्छूलघ्नमौषधम् । एवमाप्यायतेगर्भस्तीव्ररुग्ंचोपशाम्यति ॥

अर्थ—मिश्री, विदारीकंद, काकोली, क्षीरकाकोली, मसीडा, इनके कल्कको गर्भवती १२ वे महिनेमें पीवे तो शूल नष्ट होय और गर्भ पुष्ट होय तथा तीव्र पीडा शांत होय ॥

रक्तस्रावपर ।

गुर्विण्यगर्भतोरक्तंघ्नवेद्यदिसुहुर्मुहुः ।

तन्निरोधायसादुग्धमुत्पलादिशृतंपिबेत् ॥

अर्थ—यदि गर्भवतीके गर्भसे वारंवार रुधिर गिरे तो उसके रोकनेको उत्पलादि गण (जो मुश्रुतमें लिखा है) उसका काय करके पीवे ॥

उत्पलादि गण ।

उत्पलं नीलमारक्तंकल्हारंकुमुदंतथा । श्वेतांभोजंचमधुकमुत्प
लादिरयंगणः ॥ सशीलितोहरत्येवदाहंतृष्णांहृदामयम् । रक्त
पित्तंचमूर्च्छांचतथाछर्दिमरोचकम् ॥

अर्थ—कमल, नील कमल, कुछ लाल कमल, लाल कमल, सपेद कमल, कमोदनी, और मुलहठी, यह उत्पलादि गण है, इसका सेवन दाह, तृषा, हृदयके रोग, रक्तपित्त, मूर्च्छा, वमन और अरुचिको नष्ट करे ॥

गर्भपातपर ।

लज्जालुधातकीपुष्पमुत्पलंमधुलोधकम् ।

जलस्थयास्त्रियापीतंगर्भपातंनिवारयेत् ॥

अर्थ—लज्जालू, धायके फूल, कमलगट्टा, मुलहठी, और लोध इनको जलमें घोटके स्त्री शीतल जलमें खडी होकर पीवे तो गर्भपात दूर होय ॥

उपायांतर ।

पतंतंस्तंभयेद्गर्भकुलालकरमृत्तिका ।

मधुछागीपयःपीताकिंवाश्वेतापराजिता ॥

अर्थ—कुल्लारके हाथोंकी मिट्टी (जिस समय बरतन बनाता है) को जलमें

घोटके पीवे तो गिरते गर्भको रोक लेवे, अथवा! सहत, बकरीका दूध, इनमें सपेद अपराजिताको पीसके पीवे ॥

उपायांतर । ।

पारावतमलःपीतरुयहंतांबूलवारिणा।

गर्भिणीगर्भतोरक्तंस्तंभयेन्निरुपद्रवम् ॥

अर्थ—कबूतरकी घोटको पानके जलमें धोलके तीन दिन पीवे तो उपद्रव सहित गर्भवतीके गर्भके रुधिरको रोक लेवे ॥

अन्य उपाय ।

शर्कराविसतिलंसमांशकंमाक्षिकेनसहभक्ष्यतेयदा । नास्तिग

र्भपतनोद्भवंभयंपापभीतिरिवतीर्थसेवया ॥

अर्थ—कच्चीखांड, भसीडा (कमलकी जड) और तिल ये समान भागले चूर्णकर सहतके साथ सेवन करनेसे इस प्रकार भय नहीं रहे जैसे तीर्थ सेवन कर्त्ताको पापका भय नहीं रहे ॥

यलांतर ।

कंकतीमूलमावद्धंकुमारीसूत्रकैःसमैः ।

कटिदेशेनितंविन्यागर्भपातनिवारयेत् ॥

अर्थ—कगर्हीकी जडको कारीकन्याके कते मूतसे लपेट कमरमें बांधे तो गर्भपातको नष्ट करे ॥

• ह्रीविरादि काय ।

ह्रीविरातिविषामुस्तामोचशक्रेःशृतंजलम् ।

दद्याद्भ्रं प्रचलितेप्रदरेकुक्षिरुज्यपि ॥

अर्थ—नेत्रवाला, अतीस, मोथा, मोचरस, और इन्द्रजौ इनके काथको गर्भवतीके गर्भछावपर, प्रदरमें और कूखके गूलपर देना चाहिये ॥

मूढगर्भका निदान ।

मूढःकरोतिपवनःखलुमूढगर्भंशूलंचयोनिजठरादिषुमूत्रसंगम् ॥

अर्थ—मूढ (अर्थात् प्रवाहरहित) चायु मूढगर्भको पैदा करता है, उससे योनि और पेट आदिमें गूल होता है और मूत्र जफडताहै ॥

मूढगर्भोंके भेद ।

भुग्नोनिलेनविगुणेनततःसगर्भःसंख्यामतीत्यबहुधासमुपैति

योनिम् । द्वारंनिरुध्यशिरसाजठरेणकश्चित्कश्चिच्छरीरप
रिर्वीरितकुब्जदेहः ॥ एकेनकश्चिदपरस्तुभुजद्वयेनतिर्यग्गतो
भवतिकश्चिदवाङ्मुखोन्यः ॥ पार्श्वप्रवृत्तगतिरेतितथैवकश्चि
दित्यष्टधागतिरियं हिपराचतुर्धा । संकीलकःप्रतिखुरःपरिघो
थवीजस्तेपूर्ध्ववाहुचरणैः शिरसाचयोनिम् ॥ संगीचयोभवाति
कीलकवत्सकीलोद्देश्यैःखुरैःप्रतिखुरःसहिकायसंगी । गच्छे
द्भुजद्वयशिराःसचवीजकारुष्योयोनीस्थितःसपरिघःपरिघेणतुल्यः

अर्थ—विगुण वायुसे गर्भ विपरीत (टेढा) होकर अनेक प्रकार करके योनिके द्वारमें आयकर अडजाय है उसकी आठ प्रकारकी संज्ञा है सो इस प्रकार है, १—कोई गर्भ मस्तकसे योनिके द्वारको बन्द कर देय है, २—कोई पेटसे योनिके मार्गको रोक देय, ३—कोई शरीरके विपरीतपनेसे योनिके मार्गको रोक देय, ४—कोई एक हाथसे योनिके मार्गको रोक दे, ५—कोई मूठगर्भ दोनों हाथोंको बाहर निकालकर योनिके द्वारको रोकदे, ६—कोई गर्भ तिरछा होकर योनिके मार्गको रोक दे, ७ और कोई गर्भ मन्यानाडीके मुडनेसे नीचेको मुख होय, वह योनिके द्वारको रोकदे, ८ ठसी प्रकार कोई पार्श्वभंग (पसवाडे भंग) होनेसे योनिके द्वारको रोक देय, इस प्रकार मूठ गर्भके आठ लक्षण है * दूसरी चार प्रकारकी गति और होती है उनको कहते हैं १ संकील, २ प्रतिखुर, ३ परिघ, ४ वीज, इनमें जो गर्भ हाथ पैर ऊपरको कर मस्तकसे योनिको कीलके समान रोकदे, उसको संकीलक कहते हैं जिस गर्भके हाथ पैर खुरके सदृश बाहर निकल आवे और शरीर योनिके भीतर अटका रहे उसको प्रतिखुर कहते हैं । जो गर्भ दोनों हाथ और मस्तक आगे करके अटक जाय उसको बीजक कहते हैं और परिघ (आगड) के समान योनिमें गर्भ अटक जाय उसको परिघ कहते हैं ॥

असाध्य मूठ गर्भवतीके लक्षण ।

अपविद्धाशिरायातुशीतांगीनिरपत्रपा ।

नीलोद्धतशिराहंतिसागर्भसचतांतथा ॥

अर्थ—जिस गर्भिणीका मस्तक नीचेको होजाय, देह शीतल होय तथा लज्जा जातीरहे और जिसकी कान्धमें हरीनीली शिरा (नस) उठ खड़ी होय तो वह गर्भिणी उस गर्भको और गर्भ गर्भिणीको अन्योन्य नाशकरते हैं ॥

मृतक गर्भके लक्षण ।

गर्भास्यंदनमावीनांप्रणाशःश्यावपाडुता ।
भवेदुद्धासपूतित्वंशूनतांतमृतेशिशौ ॥

अर्थ—गर्भ हले चले नहीं, प्रसव वेदना (पीडा) बंद होजाय, देह हरीनीलीहोय और जिसकी श्वासमें दुर्गन्ध आवे और पेटके भीतर सूजन हाय अर्थात् पेटमें आंतोंके फूलनेसे पेट सूज जाय ये गर्भमें बालक मरजाय उसके लक्षणहै ॥

गर्भमरण हेतु ।

मानसागंतुभिर्मातुरुपतापैःप्रपीडितः ।
गर्भोव्यापद्यतेकुक्षौव्याधिभिश्चप्रपीडितः ॥

अर्थ—माताके मानसिक तथा आगंतुक दुःखसे अथवा रोगोंसे गर्भकी पीडा होय वो बालक गर्भाशयमें मरजाय ॥

गर्भिणीके दूसरे असाम्य लक्षण ।

योनिस्वरणंसंगःकुक्षौमकल्लमेवच ।
हन्त्युःस्त्रियंमूढगर्भोयथोक्ताश्चाप्युपद्रवाः ॥

अर्थ—वायुके योगसे यौनिका संकोच, गर्भका अटकना और मकल्ल शूल (वात रक्तकी पीडा) तथा आंक्षेपक खाँसी, श्वासादिक उपद्रव होनेसे वो गर्भिणी बचनेही अथवा योनिस्वरण नाम रोग ग्रन्थान्तरोंमें लिखाहै सो होय ॥
परिघर्भलक्षण ।

योनिमावृत्ययस्तिष्ठेत्परिधोगोपुरंयथा ।
तथांतर्गर्भमायांतंविद्यात्परिघसंज्ञितम् ॥

अर्थ—परिघ रोग योनिके मुखमें बैठके बाहिर आनेवाले गर्भको रोक देता है उसको परिघर्भ कहते हैं ॥

विकृतांकृतिगर्भलक्षण ।

ऋतुस्नातातुयानारीस्वप्नेमैथुनमावहेत् । आर्तववायुरादाय
कुक्षौगर्भकरोतिहि ॥ मांसिमासिविधैतगर्भिण्यागर्भलक्षण

३ यातलान्यन्पनानियाम्यधर्मजागम् ॥ अत्यसैवेवमानायोगर्भिण्यायोनिमार्गजः ॥ मातरिद्वामपु-
त्तियोनिद्वारस्यसञ्चतिम् ॥ कुपतेद्वद्वमार्गत्वात्पुनरंतगतोऽनिलः ॥ निरुणद्वाशयद्वारपीडयन्गर्भसंस्थितिम् ॥
निरुद्धवदनोद्गुसोगर्भश्चाशुविपद्यते ॥ - विपन्नशून्यसर्वाद्गु सर्वाण्येवाम्बानिच ॥ उद्गुसुसुद्धद्वारानाशयत्याशु-
गर्भिणीम् ॥ योनिस्वरणं नाम व्याधिमेवमचक्षते ॥ अतकप्रतिमधोरनाभेत्तुचिकित्सितुम् ॥

म् । कललंजायतेतस्यवर्जितंपैतृकेगुणैः ॥ सर्पवृश्चिककूप्मांड
विकृताकृतयश्चये । गर्भास्त्वेवंविधास्त्वेतेज्ञेयाःपापकृतोभृशम् ॥

अर्थ—ऋतुस्नाता स्त्री चतुर्थ दिवससे लेकर बारह रात्रिपर्यंत कदाचित् स्वप्नमें मैथुन करे, उससमय उसस्त्रीके शुद्ध आर्तवकोही पवन लेकर गर्भाशयमें गर्भ स्थापन करे है । उस गर्भ करके गर्भिणीके लक्षण प्रति महीनेके महीने बढ़ते हैं और उस गर्भसे कलल उत्पन्न होता है तथा पिताके लक्षण (केश, श्मश्रु, लोम, नख, दन्त, शिरा, स्नायु और धमनी) इन लक्षण करके रहित मनुष्याकृति (मांसका लोय जैसा होय है उसको कलल कहते हैं) ये श्लोक जेम्हट सुश्रुतकी टीकाकारने नहीं लिखे ॥

गर्भसंकोचका यत्न ।

वातेनगर्भसंकोचात्प्रसूतिसमयेपिवा । गर्भजनयेन्नारीतस्याः
शृणुचिकित्सितम् ॥ कुट्टयेन्मुशलेनैपाकृत्वाधान्यमुलूखले ।
विपमंचाज्ञनंयानंसेवेतप्रसवार्थिनी ॥

अर्थ—जिस गर्भवतीका गर्भ वादीसे सूख जाय और गर्भ बाहर नहीं निकले उसकी चिकित्साको सुनो, वह गर्भवती मूसल हाथमें ले ओखलीमें धानोंको कूटे, तथा विपरीततासे बैठे खराब सवारीमें बैठे और टेढ़ी तिरछी होकर चले तो गर्भ बाहर निकले ॥

शुष्कगर्भका यत्न ।

गर्भोवातेनशुष्कोयोनोदरंपूरयेद्यदि ।
सावृंहणीयैःसंसिद्धंदुग्धमांसरसंपिवेत् ॥

अर्थ—जो वादीके कारण गर्भ सूख गया हो वह पेटको नहीं रोंके उसकी यही चिकित्सा है कि बृंहण (पुष्टकर्ता) पदार्थोंसे सिद्ध करे दूध और मांसरस (सोरुका) को पीवे ॥

प्रसवमास ।

नवमेदशमेमासिनारीगर्भप्रसूयते ।
एकादशेद्वादशेवाततोन्न्यत्रविकारतः ॥

अर्थ—नारी गर्भके आरंभके दिनसे नववे वा दशवे मासमें प्रसूत होती है तथा वातादि दोषका कुछ विकार होय तो एकादश वा द्वादशवे मासमें भी प्रसूत होती है और इस अवधीके उपरांत यदि प्रसूत होवे-ती-विकारवाली स्त्री प्रसूत होती है ॥

प्रसवविलंब होनेमें यत् ।

प्रसवस्यविलंबेतुधूपयेदभितोभगम् । कृष्णसर्पस्यनिर्मोकै
स्तथापिण्डीतकेनवा ॥ तंतुनालांगलीमूलंवध्नीयाद्धस्तपाद
योः । सुवर्चलंविशल्यांवाधारयेदाशुसूतये ॥

अर्थ—यदि प्रसव (प्रसूत) होनेमें देरी होय और गर्भवतीको कष्ट होरहा होयतो काले सांपकी कांचलीकी अथवा मैनफलकी धूनी देवे अथवा कल्यारीकी जडको हाथ पैरोंमें बांधे । अथवा डुलडुल और विशाल्यारुखडीको बांधे तो तत्काल प्रसूत होय ॥

सुखप्रसवकारकयोग ।

कृष्णावचाचापिजलेनपिष्टासैरंडतैलाखलुनाभिलेपात् ।
सुखप्रसूतिकुरुतेगनानानिपीडितानां बहुभिः प्रमादैः ॥

अर्थ—पीपल, वच इनको जलमें पीस अंडीका तेल मिलायके नाभिपर लेप करनेसे स्त्री सुखपूर्वक बालक जने यह अनुभव करा प्रयोग है ॥

मातुलुंगादि प्रयोग ।

मातुलिगस्यमूलंतुमधूकंसंयुतंतथा ।
घृतेनसहितंपीत्वासुखंनारीप्रसूयते ॥

अर्थ—विजोरेकी जडको महुएके साथ पीस घृतके साथ पीवे तो स्त्री सुखपूर्वक प्रसूत होय ॥

इक्षुमूलबंधन ।

इक्षोरुत्तरमूलंनिजतनुमानेनतंतुनावध्वा ।
काटिविपयेगर्भवतीसुखेनसूतेविलंबितेनापि ॥

अर्थ—ईखके नीचेकी जडको अपने देहके बराबरके नापे हुए डोरेसे बांधके कमरमें बांधे तो बहुत शीघ्र प्रसूत होय ॥

सुखप्रसव ।

तालस्यचोत्तरंमूलंस्वप्रमाणेनतंतुना ।
वध्वाकट्यांतुनियतंसुखंनारीप्रसूयते ॥

अर्थ—ताडवृक्षकी जडको अपने बराबरके डोरेमें कसके कमरमें बांधे तो स्त्री सुखपूर्वक प्रसूत होय ॥

प्रयोगांतर ।

प्रत्यक्पुण्याः पारिभद्रस्य यद्रामूलं यद्वाकाकजं घासमुत्थम् ।

कट्यांबद्धं योपितां सत्प्रसूतियोगे युक्त्या संहृतं साधुकुर्यात् ॥

अर्थ—चिरचिराकी नीमकी जड़को अथवा काकजंघाकी जड़को जो स्त्री मृतके समय अपनी कसरमें बांधे तो स्त्री सुखपूर्वक प्रसव करे ॥

मृतगर्भ चिकित्सा ।

याभिः संकटकाले वैद्यैर्नार्यः प्रसाविताः सम्यक् ।

लब्धं यशः समग्रास्ता एवात्र क्रियाः कुर्युः ॥

अर्थ—जिन वैद्योंने संकटके समय अनेक कष्टवती स्त्रियोंको भले प्रकारसे प्रसव कराया हो और जो लब्ध यशवाला हो वह संपूर्ण क्रिया इस मूढगर्भकी करे ॥
गर्भोद्धारण ।

हस्तेन सर्पिपाक्तेन यौने रंतर्गतेन सः । मृते तु गर्भे गर्भिण्या योनौ

शस्त्रं प्रवेशयेत् । शस्त्रं शस्त्रार्थं विद्वान्योलघुहस्तो भयोद्भिन्नतः ॥

अर्थ—घीसे हाथ चिकना करके जननेन्द्रियमेंसे गर्भ निकाल लेना, गर्भगत बालक मृत हुआ होय तो शस्त्र चलानेके काममें कुशल, वैद्यने निर्भय होयके जननेन्द्रियमें शस्त्र डालके काटा हुआ गर्भ निकाल लेना ॥

सचेतनं तु शस्त्रेण न कथंचन दारयेत् । सदार्यमाणो जननीमात्मा

न चापि मारयेत् ॥ नोपेक्षेत मृतं गर्भं मुहूर्तमपि पांडितः । स चा

शुजननीं हंति प्रभूतांत्रं यथापशुम् ॥

अर्थ—वैद्य जीते हुए गर्भको शस्त्रसे कदापि न मारे, यदि जीते गर्भको काट डाले तो वह गर्भ अपनी माताकोभी मार डालता है। इसी प्रकार विद्वान् वैद्य मरे हुए बालकको दो घड़ीभी पेटमें न रहने दे वह दो घड़ीमेंही अपनी माको मार डालता है, जैसे अधिक परिमाणका अन्न खाया हुआ पशुको मार डाले है ॥

मृतगर्भोद्घेदनप्रकार ।

यद्यदंगं हि गर्भस्य योनौ सज्जति तद्भिषक् ।

सम्यग्विनिर्हरेच्छित्त्वारक्षेत्रारिप्रयत्नतः ॥

अर्थ—मूढगर्भका जौन जौनसा अंग योनिके मार्गमें अटकता होय उसीरका काट २ के निकाले उत्तम वैद्यका मुख्य यही कर्म है कि मूढगर्भकी सावधानीके साथ निकालके गर्भवतीका यत्नपूर्वक रक्षण करे ॥

छेदनानंतरचिकित्सा ।

सर्वनिर्हृतशल्यांतांसिचेदुष्णेनवारिणा । ततोभ्यक्तशरीराद्या
योनीस्नेहनिधापयेत् । एवंमृद्रीभवेद्योनिस्तच्छूलंचोपशाम्यति ॥

अर्थ—जब सब मूढगर्भ बाहर निकल आवे तब उस गर्भवाली स्त्रीकी योनिफो गरम जलसे सेंके फिर तेलका फोहा उसकी योनिमें रख देवे कि जिस्से योनि नरम हो जाय और शूल दूर होय ॥

मृतगर्भपातन ।

आसुरीहिंशुसंसिद्धकांजिकेनावलोडितम् ।

गर्भाशयेमृतगर्भपातयेत्पानयोगतः ॥

अर्थ—राई, हींग दोनोंको छदाम २ भर पीस कांजीमें मिलायके स्त्री पीवे तो उस स्त्रीका मृतशालक बाहर निकल आवे ॥

पेरूपकशिफालेपः स्थिराम्बूलकृतोथवा ।

नाभिवस्तिभगाद्येषुमूढगर्भोपकरणः ॥

अर्थ—फालसको जड़को अथवा पृष्टपर्णाकी जड़को पीसके नाभि, वस्ती और भगादि स्थानोंमें लेप करे तो मूढगर्भ गिरजावे ॥

गर्भपातकारक औषध ।

गृजनवीजंटकत्रितयंतावच्चदाडिमीमूलम् । तुवरीटंकद्वितयं

सिंदूरंटंकद्वितयंच ॥ संमर्द्यखल्वमध्येतोयेनैतन्निपीयगर्भवती ।

रंडायोपिद्रुभवेश्यावापातयत्याशु ॥

अर्थ—गाजरके बीज १ तोले, अनारकी जड़की छाल १ तोले, फिटकरी ८ मासे इसदूर ८ मासे ले खरलमें डाल वारीक चूर्ण करे फिर इसको जलमें छानके गर्भवती रंडा स्त्री पीवे अथवा बेश्या स्त्री पीवे तो उसका गर्भ गिरजायगा इसमें संदेह नहीं ॥

गर्भघाव ।

निर्गुंडीद्रवसंपिष्टचित्रमूलमधुप्लुतम् ।

कर्पपीत्वाभवत्याशुगर्भोरंडाकुलोद्भवः ॥

अर्थ—निर्गुंडीके रसमें चित्रकी जड़को पीस उसमें सहत डालके १ तोले, पीवे तो रंडा स्त्रीका गर्भ तत्काल गिर जावे ॥

गर्भपातन ।

कांडमेरंडपत्रस्ययोनावष्टांगुलक्षिपेत् ।

चतुर्मासोद्भवंगर्भस्त्रावयत्येवतत्क्षणात् ॥

अर्थ—अंडके पत्तेका डाढरा जो नरममें उसको आठ अंगुल भगके भीतर प्रवेश करे तो चार महीनेका रहा हुआभी गर्भ तत्काल गिर जावे ॥

गर्भपातन ।

देवदालेस्तुयच्चूर्णकपिकंतोयपेपितम् ।

पिवेद्गर्भवतीनारोगर्भःस्त्रवतितत्क्षणात् ॥

अर्थ—वंदाल (घंघर वेल) के १ तोले चूर्णको जलमें पीसके पीवे तो उस स्त्रीका गर्भ तत्काल गिर जावे ॥

गर्भपातन ।

आलोड्यकांजिकैर्घोटीपुरीपंवस्त्रगालितम् ।

ससिंधूयासुरीतैलविपमागतगर्भनुत् ॥

अर्थ—घोडीकी लीदको बारीक पीस कांजीमें मिलाय देवे, फिर कपडेमें छान और उसमें सैधानिमक, वच, राई, कडवा तेल और विष ये छदाम भर पीसके मिलावे, पीनेसे तत्काल गर्भ पातन करे ॥

जरायुपातनप्रकार ।

प्रसूतायानपतिताजठरात्तुजरायदि ।

तदासाकुरुतेशूलमाध्मानंवंहिमंदताम् ॥

अर्थ—यदि गर्भवतीके बालक होनेके बादभी जरा (आवर वेवर) यदि सबन गिरे तो वह पेटमें दर्द और अफरा करे तथा उस स्त्रीकी जठरामि मंद पड जाती है ॥

उसकी चिकित्सा ।

केशवेष्टितयांगुल्यातस्याःकंठप्रघर्षयेत् । निर्मोककटुकाला

बुकृतवैचनसर्पपैः । चूर्णितैःकटुतैलैस्तैर्धूपयेदभितोभगम् ॥

अर्थ—उंगलीमें बालोंको लपेटके उस स्त्रीके कंठको रगडे (तथा योनिके ओर पास रगडे) तथा सांपकी कांचली, कडवी धीयाके बीज, सरसों इनको बारीक पीस कडवा तेल मिलायके उस स्त्रीको भगमें धूनी देवे तो जरा गिर जावे ॥

अपरापातन ।

लांगलीमूलकल्केनपाणिपादतलानिह ।

प्रलिपेत्सूतिकायोपिदपरापातनायवै ॥

अर्थ—कलियारीके जडके कल्कसे प्रसूता स्त्रीके हाथ, पैरोंके तलवेंमें लेप करना अपराको पातन कर देता है ॥

अपरा निष्वासन ।

हस्तंछिन्नखंस्निग्धंसूतायोनौशनैःक्षिपेत् ।

अपरातेनहस्तेनजनयित्रीविनिर्हरेत् ॥

अर्थ—दाई, हाथके नाखून कटायके फिर हाथोंमें घी चुपडके प्रसूतास्त्रीकी योनिमेंसे उस अपरा (आमरवेवर) को निकाल लेवे इसमें उसको बड़ी होसयारीके साथ काम करना चाहिये ॥

योनिक्षतपर ।

तुंबीपत्रंतथालोभ्रंसमभागंतुपेपयेत् ।

तेनलेपोभगेकार्यःशीघ्रंस्याद्योनिरक्षता ॥

अर्थ—तूंबेके पत्ते और लोघ दोनोंको समान भाग बारीक पीस भगमें लेप करे तो गर्भ होनेसे जो भग चिर जातीहै उसका घाव तत्काल दूरहोय ॥

योनिदृढीकरण ।

पलाशोदुंबरफलंतिलतैलसमन्वितम् ।

योनौप्रलिप्तमधुनागाढीकरणमुत्तमम् ॥

अर्थ—पलास, गूलर, इनको तिलके तेलमें बारीक पीस योनिमें लेप करेतो योनिदृढ होय अर्थात् कठोर होवे ॥

मक्कलकनिदान ।

पृथिव्यांपतितेवत्सेयोनौपीडनमिष्यते । अप्रवेशोयथावायो

स्तथासंरक्षणक्रिया ॥ वायुःप्रकुपितःकुर्यात्संरुध्यरुधिरंच्यु

तम् । प्रसूताहृच्छिरोवस्तिशूलंमक्कलसंज्ञितम् ॥

अर्थ—वालकके पृथ्वीमें गिरतेही योनिका डबाय देवे जिस प्रकार उस प्रसूता स्त्रीके वादीका प्रवेश न होय इस प्रकार उसकी रक्षा करे, यदि उस प्रसूतके होनेपर पवन लगजावेतो वह कुपित पवन गिरते हुए रुधिरको रोक लेवे फिर वह हृदय, शिर और वस्तिस्थान इनमें मक्कल संज्ञक दर्दको प्रगट करे है ॥

मल्लकविक्रिष्ठा ।

संचूर्णितयवक्षारंपिवेत्कोष्णेनवारिणा ।

सर्पिपावापिवेत्रारीमल्लकस्थनिवृत्तये ॥

अर्थ—जवाखारका वारीक चूर्ण कर गरम जलसे पीवे, अथवा गौंके धीके साथ पीवेतो उस स्त्रीका मल्लक शूल दूर होय ॥

पिप्पल्यादि काष ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंगजंपिप्पली । नागरंचित्रकंचव्यरे
णुकैलाजमोदिका ॥ सर्पपोहिगुभाङ्गीचपाठेद्रयवजीरकाः ।

महानिवश्चमूर्वाचविपत्तिकाविडंगकम् ॥ पिप्पल्यादिगणोद्भे
पकफमारुतनाशनः । गुल्मशूलज्वरहरोदीपनश्चामपाचनः ॥
काथमेपापिवेत्रारीलवणेनसमन्वितम् । मकल्लशूलगुल्मघ्नक
फानिलहरंपरम् ॥

अर्थ—पीपल, पीपरामूल, मोरच, गजपीपल, साँठ चित्रक, चव्य, रेणुक,
इलायची, अजमोद, सरसाँ, हींग,भारंगी, पाठ,इन्द्रजौ, जीरासफेद, वकापन,
मूर्वा, विप, कुटकी और चाथविडंग यह पिप्पल्यादिगण है, यह कफ, वादी,
गोला, शूल, ज्वर इनको नष्ट कर आमको पचाता है । इन सबका काष
करके उसमें संधानिमक डालके पीवेतो मकल्ल शूल, गोला, कफ और
वादीको नष्ट करे ॥

योगांतर ।

त्रिकटुकचातुर्जातककुस्तुंवरिचूर्णसंयुक्तम् ।

खादेद्दुडंपुराणंनित्यंनारीमकल्लदलनाय ॥

अर्थ—साँठ, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, इलायची नागकेशर और धनिया
इनके चूर्णमें पुराना गुठ मिलायके खायतो मकल्लक शूल नष्ट होय ॥

हिंयुघृतयोग ।

हिंयुशुद्धंसर्पिष्कंभुक्तंमकल्लशूलनुत् ॥

अर्थ—शुर्नाहुई हींगको घीमें मिलायके सेवन करनेसे मकल्ल शूल त
त्काल दूर होय ॥

प्रसूतास्त्रीको दिहायह ।

प्रसूतायुक्तमाहारंविहारंचसमाचरेत् ।

अपरापातन ।

लांगलीमूलकल्केनपाणिपादतलानिह ।

प्रलिपेत्सूतिकायोपिदपरापातनायवै ॥

अर्थ—कलियारीके जडके कल्कसे प्रसूता स्त्रीके हाथ, पैरोंके तलवोंमें लेप करना अपराको पातन कर देता है ॥

अपरा निष्कासन ।

हस्तंछिन्नखंस्निग्धंसूतायोनौशनैःक्षिपेत् ।

अपरातेनहस्तेनजनयित्राविनिर्हरेत् ॥

अर्थ—दाई, हाथके नाखून कटायके फिर हाथोंमें घी चुपडके प्रसूतास्त्रीकी योनिमेंसे उस अपरा (आमरवेवर) को निकाल लेवे इसमें उसको बड़ी हीसयारीके साथ काम करना चाहिये ॥

योनिद्वारपर ।

तुंबीपत्रंतथालोभ्रंसमभागंतुपेपयेत् ।

तेनलेपोभगेकार्यःशीघ्रंस्याद्योनिरक्षता ॥

अर्थ—तुंबूके पत्ते और लोध दोनोंको समान भाग वारीक पीस भगमें लेप करे तो गर्भ होनेसे जो भग चिर जातीहै उसका घाव तत्काल दूरहोय ॥

योनिद्वारपर ।

पलाशोदुंबरफलंतिलतैलसमन्वितम् ।

योनौप्रलिप्तंमधुनागाढीकरणमुत्तमम् ॥

अर्थ—पलास, गुल्म, इनको तिलके तैलमें वारीक पीस योनिमें लेप करेतो योनिद्वार होय अर्थात् कठोर होवे ॥

मक्कल्लनिदान ।

पृथिव्यांपतितेवत्सेयोनौपीडनामिष्यते । अप्रवेशोयथावायो

स्तथासंरक्षणक्रिया ॥ वायुःप्रकुपितःकुर्यात्संरुध्यरुधिरंच्यु

तम् । प्रसूताहृच्छिरोवस्तिशूलंमक्कल्लसंज्ञितम् ॥

अर्थ—बालकके पृथ्वीमें गिरतेही योनिको दवाय देवे जिस प्रकार उस प्रसूता स्त्रीके वार्दाका प्रवेश न होय इस प्रकार उसकी रक्षा करे, यदि उस प्रसूतके हीनेपर पवन लगजायतो बहु कुपित पवन गिरते हुए रुधिरको रोक लेवे फिर वह हृदय, शिर और वस्तिस्थान इनमें मक्कल्ल संज्ञक दर्दको प्रगट करे है ॥

मकल्लकचिकित्सा ।

संचूर्णितयवक्षारंपिवेत्कोष्णेनवारिणा ।
सर्पिषावांपिवेत्रारीमकल्लकस्यनिवृत्तये ॥

अर्थ—जवाखारका बारीक चूर्ण कर गरम जलसे पीये, अथवा गौंके घीके साथ पीवेतो उस स्त्रीका मकल्लक शूल दूर होय ॥

पिप्पल्यादि काथ ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंगजंपिप्पली ॥ नागरंचित्रकंचव्यं
णुकैलाजमोदिका ॥ सर्पपोहिंयुभाङ्गीचपाठेद्रयवजीरकाः ।
महानिबश्चमूर्वाचविपत्तिक्ताविडंगकम् ॥ पिप्पल्यादिगणोद्धे
पकफमारुतनाशनः । गुल्मशूलज्वरहरोदीपनश्चामपाचनः ॥
काथमेपांपिवेत्रारीलवणेनसमन्वितम् । मकल्लशूलगुल्मघ्नं
फानिलहरंपरम् ॥

अर्थ—पीपल, पीपरामूल, मीरच, गजपीपल, सोंठ चित्रक, चव्य, रेणुक,
इलायची, अजमोद, सरसों, हींग,भारंगी, पाठ,इन्द्रजी, जीरासफेद, बकापन,
मूर्वा, विप, कुटकी और वायविडंग यह पिप्पल्यादिगण है, यह कफ, वादी,
गोला, शूल, ज्वर इनको नष्ट करे आमको पचाता है । इन सबका काथ
करके उसमें सैधानिमक डालके पीवेतो मकल्ल शूल, गोला, कफ और
वादीको नष्ट करे ॥

योगांतर ।

त्रिकटुकचातुर्जातककुस्तुंवरिचूर्णसंयुक्तम् ।
खादेद्गुडंपुराणंनित्यंनारीमकल्लदलनाय ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, इलायची नागकेशर और धत्रिया
इनके चूर्णमें पुराना गुड मिलायके खायतो मकल्लक शूल नष्ट होय ॥

हिंयुघृतयोग ।

हिंयुशुद्धंसर्पिष्कंभुक्तंमकल्लशूलतुत् ॥

अर्थ—भुनी हुई हींगको घीमें मिलायके सेवन करनेसे मकल्ल शूल त
त्काल दूर होय ॥

प्रसूतास्त्रीको दिवावह ।

प्रसूतायुक्तमाहारंविहारंचसमाचरेत् ।

अर्थ—पारस पीपलके फलोंको जीरेके साथ और सरफोंकेके जडके साथ पीसके दूधमें डालके पीवे और पथ्य आहार विहार करे तो पुत्र होय ॥
सपेदकंटकारी रोग ।

क्षीरेणश्वेतबृहतीमूलनासापुटेपिवेत् ।

पुत्रार्थदक्षिणानासावामास्यात्कन्यकाप्रदा ॥

अर्थ—सपेद कटेरी (कि जिसका फूल सपेद होता है) उसकी जडको दूधमें पीसके नास लेवे अर्थात् पुत्रकी इच्छा होय तो इसको दहनी नाकके मार्गसे पीवे और कन्याकी इच्छावाली वामनाकके छिद्रसे पीवे ॥

गर्भनाशकयोग ।

पिप्पलिविडंगटंकणसमचूर्णयापिवेत्पयसा ।

ऋतुसमयेनहितस्यागर्भःसंजायतेक्वापि ॥

अर्थ—पीपल, वायविडंग, मुहागा, इनका समान भाग चूर्णकर ऋतुके समय दूधसे पीवे तो इसके कदापि गर्भ नहीं रहे ॥

आरनालपरिपेपितंत्र्यहंयाजपाकुसुममत्तिपुष्पिणी ।

सत्पुराणगुडमुष्टिसेविनीसादधातिनहिगर्भमंगना ॥

अर्थ—जो स्त्री गुडहरके फूलको कांजीमें पीसके गुड पुराना मिलायके तीन दिन सेवन करे उसको कदापि गर्भ नहीं रहे ॥

गर्भनिवारण ।

तेलाविलसैधवखंडमादौनिधायरंडानिजयोनिमध्ये ।

नरेणसार्धरतिमातनोतिमासानगर्भलंभतेकदाचित् ॥

अर्थ—सैधनिमककी डलीको तेलमें मिर्गोयके रंडा स्त्री प्रथम भगमें रस लेवे फिर थोड़ी देरके बाद निकालके पुरुषका संग करे तोभी गर्भ नहीं रहे ।
वंध्यायोग ।

तंदुलीयकमूलानिपिद्धातंदुलवारिणा ॥

ऋत्वंतेतुत्र्यहंपीत्वावंध्याःकुर्वतियोपितः ॥

अर्थ—चौलाईकी जडको चावलके धोवनमें पीसके ऋतुके समय तीन दिन पीवे तो वह स्त्री अवश्य वंध्या होय ।

मूर्तिकारोगनिदान ।

अंगमर्दोज्वरःकंपःपिपासागुरुगात्रता । शोथःशूलातिसारौच

सूतिकारोगलक्षणम् ॥ मिथ्योपचारात्संक्लेशाद्विपमाजीर्णभोजनात् । सूतिकायाश्चयेरोगजायतेदारुणास्तुते ॥ ज्वरातिसारशोथाश्चशूलानाहवलक्षयाः । तंद्रारुचिप्रसेकाद्याः कफवातामयोद्भवाः ॥ कृच्छ्रसाध्याहितेरोगाः क्षीणमांसवलाग्निः । ते सर्वे सूतिकानाम्नारोगास्ते चाप्युपद्रवाः ॥

अर्थ—अंगोंका दृटना, ज्वरहो, कफ, प्यास, अंगोंका भारी होना, मूजन, तथा शूल और अतिसार, ये सूतिका रोगके लक्षण होतेहैं ॥ जिस स्त्रीके बालक प्रगट होचुका हो ऐसी स्त्रीके मिथ्या उपचार करनेसे अथवा संक्लेश कहिये दोषजनक अन्न पानके सेवन करनेसे, अथवा संक्लेश कहिये अत्यंत कोपके करनेसे अथवा विपमाशन अजीर्ण भोजनादिक करनेसे प्रमूत रोग होताहै वह घोर दुःखदायक है ॥ ज्वर, अतिसार, मूजन, शूल, अफरा, और बलक्षय, तथा कफ वातजन्य रोगसे उत्पन्न होनेवाले तन्दा अन्नद्वेष और मुखसे पानीका गिरना इत्यादि विकार, अशक्तता, तथा आमि मंद होनेसे कृच्छ्रसाध्य होताहै । इन सब ज्वरादिकोंको प्रमूति रोग कहते हैं । इन सबमें एक रोग प्रधान होताहै बाकीके उपद्रवरूप कहलातेहैं ॥ ४ ॥

इति सूतिकारोगनिदान समाप्तम् ।

प्रमूताकी चिकित्सा ।

सूतिकारोगशान्तिर्यथैकुर्याद्वातहरांक्रियाम् ॥

अर्थ—वैद्य प्रमूत रोगके शान्ति करनेको सब वातहरण क्रिया करे शीतल उपचार न करे ।

दशमूल ।

दशमूलकृतंकाथंकोष्णंदद्याद्घृतान्वितम् ।

अर्थ—दशमूलके काथमे घृत मिलायके सुहाता २ गरम पीवे तो प्रमूताके रोग दूर हो ॥

अमृतानागरसहचरभद्रोत्कटपंचमूलकंजलदः ।

शृतशीतंमधुयुक्तंशमयत्यचिरेणसूतिकातंकम् ॥

अर्थ—गुहूची, साँठ, कटसरैया, भद्रमुस्ता, दालचीनी और लघु पंचमूलकी पांच औषध और नागरमोथा इनके काथमें सहत डालके पीवे तो प्रमूतके सब रोग दूर होय ॥

देवदावादि ।

देवदारुवचाकुष्ठपिप्पलीविश्वभेषजम् । कटुफलंमुस्तभूनिव
तिक्ताधान्यंहरीतकी ॥ गजकृष्णाचटुःस्पर्शागोक्षुरंधन्वयास
कम् । बृहत्पतिविपाछिन्नाककटुकृष्णजीरकम् ॥ समभागा
न्वितैरैतैःसिंधुरामठसंयुतैः । काथमष्टावशेषंतुप्रसूतांपायये
त्त्रियम् ॥ शूलकासज्वरश्वासमूर्च्छाकंपशिरोर्तिभिः । युक्तं
प्रलापतृद्दाहतद्रातीसारवांतिभिः ॥ निहंतिसूतिकारोगंवात
पित्तकफान्वितम् ॥

अर्थ-देवदारु, वच, कूठ, पीपल, सोंठ, कायफल, नागरमोथा, चिरापता,
कुटकी, धनिया, हरड, गजपीपल, कटेरी, गोखरु, धमासो, भटकटैया, अतीस,
गिलोय, काफडासिंगी और काला जीरा ये समान भाग लेंवे, इनमें संधा-
निमक और हाँग मिलायके अष्टावशेष काथ कर प्रसूता स्त्री पीवे तो शूल,
खाँसी, ज्वर-श्वास, मूर्च्छा, कंप, मस्तकपीडा, प्रलाप, तृषा, दाह, तंद्रा,
अतिसार और वमन तथा वातपित्त और फफात्मक प्रसूत रोगको नष्ट करे॥
सहचरादि काथं ।

सहचरकुलित्यपुष्करदार्वाद्विद्वयदारुवेतसःकाथः ।

पीतःसहिगुलवणःशमयतिशूलज्वरौसूत्याः ॥

अर्थ-कटु सरैया, कुलथी, पुहकरमूल दोनों हलदी, देवदारु और वेत
इनके फायमें हाँग और संधानिमक डालके पीवे तो प्रसूता स्त्रीके शूल और
ज्वर दूर हों ॥

वज्रकांजिक ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यंशुंठीयवानिका।जीरकेद्वेहरिद्रेचविड
सौवर्चलंतथा ॥ एतैरेवौषधैःपिष्टैरारनालंविपाचयेत् । आम
वातहरंवृष्यंकफघ्नंवाह्निदीपनम् ॥ वज्रकंकांजिकंनामस्त्रीणामं
ग्निविवर्धनम् । सूतिकारोगशमनंशूलघ्नंशीरवर्धनम् ॥

अर्थ-पीपल, पीपरामूल, चव्य, सोंठ, अजमांयन, जीरा, काला जीरा,
हलदी, दारुहलदी, विडनिमक, संचरनिमक इन सब औषधोंसे फाँजी
मिलायके पचावे, यह आमवातको हरण करे, वृष्य है, कफनाशक, अग्नि-
दीपनकर्ता है, यह वचकांजिक स्त्रियोंकी अग्निको बढ़ावे और प्रसूतके रोग
नष्ट करे, शूल दूर हो तथा दूधको बढ़ावे है ॥

सामान्य यत्न ।

वातव्याधिविधानेनसूतिकांसमुपाचरेत् ।

जलौकाभिर्हेरुद्रक्तं वस्तिनाचोपनाहयेत् ॥

अर्थ—प्रसूतिके रोगको वातव्याधिकी विधिसे यत्न करे, यदि इसके देहमें रुधिरका उपद्रव होय तो जोख लगायके रुधिर निकाल डाले, फिर बस्ती-द्वारा उपनाहन कर्म करे ॥

पंचजीरक पाक ।

जीरकंस्थलजीरश्चशतपुष्पाद्रयंतथा । यवानीचाजमोदाच
धान्यकंमेथिकापिच ॥ शुंठीकृष्णाकणामूलंचित्रकंहपुपा
पिच । विदारीफलचूर्णचकुप्टकंपिल्लकंतथा ॥ एतानिपल
मात्राणिगुडंपलशतंमतम् । क्षीरंप्रस्थद्वयंदद्यात्सर्पिपःकुडवो
मतः॥पंचजीरकपाकोयंप्रसूतायांप्रशस्यते। युज्यतेसूतिकारो
गेमंदेग्नौचज्वरेक्षये । कासेश्वासेपांडुरोगेकाश्यैवातामयेषुच॥

अर्थ—जीरा, कलौजी, छोटी सोंफ, बडी सोंफ, अजमायन, अजमोद, धनिया, मेथी, सोंठ, पीपल, पीपरामूल, चित्रक, हाऊवेर, विदारीकंद, कूठ और कबीला, ये सब चार२ तोले लेंवे, और गुड ४०० तोले, दूध २ सेर, धी पावभर, सबको एकत्र कर पाक बनावे, यह पंचजीरक पाक प्रसूति रोग पर कहा है, यह मंदाग्नि, ज्वर, क्षय, खांसी, श्वास, पांहरोग, कृशता और आमवात रोग इनको दूर करे ॥

सौभाग्यशुठी ।

आज्यस्यांजलियुग्ममत्रपयसःप्रस्थद्वयंखंडतःपंचाशत्पलम
त्रचूर्णितमथप्राक्षेप्यतेनागरम् । प्रस्थार्धगुडवद्विपाच्यविधिना
मुष्टित्रयंधान्यकंमिश्याःपंचपलंपलंकृमिरिपोःसाजाजिजीराद
पि॥व्योपांभोददलोरगेद्रसुमनःसद्राविडानांपलंपकंनागरखंड
संज्ञकामिदंसौभाग्यदंयोपिताम् । तृद्धर्दिज्वरदाहशोपशमनं
दुःश्वासकासापहंप्रीहव्याधिविनाशनंकृमिहरंमंदाग्निसंदोपनम्॥

अर्थ—पूत गौका ६४ तोले, दूध २ सेर, खांड सपेद २०० तोले, सोंठ आध सेर, इनको एकत्र कर गुडपाककी विधिसे पचावे, तथा धनिया १२

तोले, कलौजी २० तोले, वापविडंग २० तोले, जीरा, कालाजीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, पत्रज, नागकेशर, और इलायची प्रत्येक चार २ तोले, ले चूर्ण करके उसी पाकमें मिलाप देवे, यह नागरखंड खानेसे स्त्रियोंकी देहको सुंदर करे, तृषा, वमन, ज्वर, दाह, शोष, श्वास, खांसी, पिलही और कृमि रोग इनको नष्ट करे, तथा मंदाग्निको दीपन करनेवाली है ॥

सौभाग्यशुंठीका द्वितीय पाठ ।

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिः । क्षीराढकेनसंयुक्तंखंडस्यार्धतुलंपचेत् ॥ शताह्वारिकव्योपत्रिसुगंधियवानिकाः । कारवीमिशिचव्याग्निमुस्तानांचपलंपलम् ॥ लेहीभूतमिदंसिद्धंघृतभांडेनिधापयेत् । तद्यथाग्निबलंखादित्सूतिकातुविशेषतः ॥ बल्येवर्ण्यतथापुष्ट्यं वलीपलितनाशनम् । वयसःस्थापनं हृद्यंमंदाग्नेर्दीपनंपरम् ॥ आमवातप्रशमनंसौभाग्यकरमुत्तमम् । मक्कल्लशूलशमनंसूतिकारोगनाशनम् ॥

अर्थ-सतवा सोंठ ३२ तोले, घृत १ सेर, गौका दूध ४ सेर, सपेद चीनी खांड २०० तोले, सतावर, जीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, इलायची, अजमायन, कलौजी, सोंफ, चव्य, चित्रक, नागरमोथा ये चार २ तोले लेवे सबका अवलेह सिद्ध करके घृतके चिकने वासनमें भरके धर रखे, इसमेंसे बलावल विचारके स्वाय और प्रसूता स्त्रीको तो अवश्य खानी चाहिये, बल करे, वर्णको उज्वल करे, पुष्टाई करे, वली (गुजलट) और पलित (सपेद वालोंके होने) को दूर करे, अवस्थाको स्थापन करे, हृदयको हितकारी, मंदाग्निवो दीपन करे, आमवातनाशक, देहको सुंदर करे, मक्कल्लशूल और प्रसूत रोग इनको नष्ट करे है ॥

सामान्य यत्न ।

सर्वतःपरिशुद्धास्यात्स्निग्धपथ्याल्पभोजना ।

स्वेदाभ्यंगपरानित्यंभवेन्मासमतंद्रिता ॥

अर्थ-प्रसूता स्त्री (जिसके बालक हुआ हो) वह शुद्ध करे, सचिक्कण गरम, पथ्य और थोड़ा ऐसा भोजन करे, स्वेदन तेलकी मालिश नित्यकरा करे इस प्रकार १ महिने पर्यंत यह विधि करे ॥

हीनप्रसूति ।

प्रसूतासार्धमासातिदृष्टेवापुनरार्तवे ।

सूतिकानामहीनास्यादितिधन्वंतरेर्मतम् ॥

अर्थ—जिस दिन बालक होय उस दिनसे लेकर १॥ महिना व्यतीत होने-पर अथवा फिर रजोदर्शवती होनेसे यह स्त्री प्रसूता इस नाम करके रहित होती है यह धन्वंतरिका मत है ॥

उपचार देनेकी अवाधि ।

उपद्रवैर्विशुद्धांचविज्ञायवरवर्णिनीम् ।

उर्ध्वचतुर्भ्यांमासेभ्यःपरिहारंविसर्जयेत् ॥

अर्थ—यदि इस प्रसूता स्त्रीके चार महिने पर्यंत कोई ज्वरादि उपद्रव न होय और शुद्ध रजोदर्शन हुआ करे तो चार महिनेके बाद इसके पथ्यको त्याग कराय देवे ॥

स्तनरोगनिदान ।

सक्षीरौवाप्यदुग्धौवादोषःप्राप्यस्तनौस्त्रियः । प्रदूष्यमांसरुधि
रेस्तनरोगायकल्पते ॥ पंचानामपितेपांहिरक्तजंविद्रधिंविना ।
लक्षणानिसमानानिबाह्यविद्रधिलक्षणेः ॥

अर्थ—वातादि दोष गर्भिणी अथवा प्रसूता स्त्रीके सदुग्ध अथवा अदुग्ध स्तनोमें प्राप्ति हो मांस रक्तको दुष्ट करके स्तनरोग उत्पन्न करे स्तनरोग घात, पित्त, कफ, सन्निपात, आगंतुजके भेदसे पांच प्रकारके हैं इन पांचोंके लक्षण रक्त विद्रधिको त्याग कर बाह्य विद्रधिके समान होतेहैं सो विद्रधिनिदान जो पीछे कह आयेहै उससे जान लेना चाहिये ॥

स्तनरोगचिकित्सा ।

लेपोविशालमूलेनहंतिपीडांस्तनोत्थिताम् ।

वनकापांसिकेक्ष्वाकुमूलंसावीरकेनवा ॥

अर्थ—यदि स्तनोमें दर्द होता होय तो इन्द्रायनकी जड़को जलमें पीसके लेप करें अथवा वनकापास (नादन घन) कडवी तोरईकी नड इनको कांजी-में पीसके लेप करे तो स्तनकी पीडा दूर होय ॥

शीरषर्द्धनम् ।

विदारिकंदंसुरयापिवेत्स्तन्याविवर्धनम् । पाठामूर्वान्दभूनिंब

दारुशुंठीकलिंगकैः॥सारिवाभृततित्ताख्यैःकायःस्तन्याविवर्धनः ॥

अर्थ—मद्यके साथ विदारीकदके चूर्णको पीवे (या दूधके साथ पीवे) तो स्त्रीके स्तनोमे दूध बढे अथवा पाँठ, मूर्वा, नागरमोथा, चिरायता, देवदारु, सोठ, इन्द्रजो, सारिवा, गिलोय और कुटकी इनका काय दूधको बढाताहै॥

स्तन्यरोग ।

गुरुभिविविधैरत्रैर्दुष्टैर्दोषैः प्रदूषितम् ।

क्षीरिंधान्याः कुमारस्य नानारोगाय कल्पते ॥

अर्थ—गुवाँदिक अनेक प्रकारके अन्नसे दोष (वात पित्त कफ) दुष्ट होकर माताके दूधका नाश करे उस दुष्ट दूधसे बालकको नाना प्रकारके रोग होतेहै॥
वातादिकसे दूषित दुग्धके लक्षण ।

कपायंसलिलप्लाविस्तन्यंमारुतदूषितम् । कट्फल्लवणंपीत
राजिमत्पित्तसंज्ञितम् ॥ कफदुष्टंघनंतोयेनिमज्जतिसुपिच्छि
लम् । द्विलिंगद्वंद्वजंविद्यात्सर्वलिंगत्रिदोषजम् ॥

अर्थ—जो दुग्ध कपेला अथवा पानीके ऊपर तैरनेवाला होय, उसको वात दूषित जानना, तथा जो कटुआ, खट्टा और खारी होकर जिसमें पीली रेखासी प्रतीत होंवे, उसको पित्तदूषित जानना, और जो दूध सघन चिकनासा होंवे और पानीमें डालनेसे नीचेको बैठ जाय, उसको कफसे दुष्ट जानना चाहियो दो दोषोंके लक्षण जिसमे मिले उसे द्वंद्वज जाने और जिसको तीनों दोषोंके लक्षण मिले उसे त्रिदोषदूषित जाने ॥

वातदूषित स्तन्यके रोग ।

वातदुष्टंशिशुःस्तन्यं पिवन्वातगदातुरः ।

क्षामस्वरः कृशांगः स्याद्द्विष्णुमूत्रमारुतः ॥

अर्थ—जो बालक वातदूषित दूधको पीताहै उसको वातके रोग होते है उसया शब्द क्षीण होजाय, शरीर कृश होय, मूलमूत्र और अधोवायु नहीं उतरे॥
पित्त दूषितस्तन्यके रोग ।

स्विन्नोभिन्नमलोवालः कामलापित्तरोगवान् ।

तृष्णालुरुष्णसर्वांगः पित्तदुष्टंपयःपिवन् ॥

अर्थ—जो बालक पित्तदूषित दूधको पीवे उसको पक्षाणा आवे, मलपतला होजाय, कामला रोग होय तथा पित्तके और भी प्यासका लगना, सर्वांगमें दाह आदि अनेक रोग होय ॥

कफदूषितस्तन्यके लक्षण ।

कफदुष्टंपिवन्क्षीरलालुःश्लेष्मरोगवान् ।

निद्रादितोजडःशूनःशुक्लाक्षरच्छर्दनःशिशुः ॥

अर्थ—जो बालक कफदूषित दूधको पीवे उसके मुखसे लार बहुत गिरे तथा कफके रोग होय, निद्रा आवे अंग भारी होय, सृजन होय, वमन होय खजली चले ॥

स्तन्यवातरोगचिकित्सा ।

जातेवातात्मकेस्तन्येदशमूलत्र्यहंपिवेत् ।

वातव्याधिहरंसर्पिःपीत्वामृदुविरेचयेत् ॥

अर्थ—वादीसे दूषित दूधमें यह छी दशमूलका काथ तीन दिन पीवे, तथा वातव्याधिहर कर्ता घृतोंको पीकर नरम जुलाव करावे तो दूध शुद्ध होय ॥

शुद्ध दुग्धके लक्षण ।

अदुष्टंचांबुनिक्षिप्तमेकीभवतिपाण्डुरम् ।

मधुरंचविवर्णंचतत्प्रसन्नंविनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—जो दूध पानीमें डालनेसे मिल जाय, उसको कफसे दुष्ट जानना, दो दोषोंके लक्षण जिसमें मिले उसे द्रंद्रज जाने और जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण मिले उसे त्रिदोषदूषित जाने ॥

कफदुष्टस्तन्य पर ।

कफेदुष्टेघृतंपेयंयष्टीसैधवसंयुतम् । रामपुष्पैःस्तनौलिपेच्छि

शोश्चदशनच्छदौ । सुखमेवंवमेद्बालःकफफोपश्चशाम्यति ॥

अर्थ—कफदुष्ट दूधपर सुद्धटी, और सैधानिमक मिला घृत पीवे, तथा रामपुष्पोंसे स्तनोंको और बालकके होठोंको लीपे, इस प्रकारसे बाष्क सुखसे वमन करे और कफका दोष नष्ट होय ॥

पित्तदुष्टस्तन्यपर ।

पित्तेदुष्टेभृताभीरुपटोलंनिवचंदनम् ।

धात्रीकुमारश्चपिवेत्काथयित्वासशर्करम् ॥

अर्थ—पित्तदुष्ट स्तन्य (दूध) पर गिलोय, सतावर, पटोलपर, नीमकी छाल, लालचंदन इनके काथमें सहत डालके काथ और बालक पीय ॥

द्वंद्वज दुष्टस्तन्य ।

द्वंद्वदुष्टहियोगाभ्यांपूर्वोक्ताभ्यांविशोधयेत् ॥

अर्थ—जिस स्त्रीका दूध दोषोंके मिलनेसे विगडा होय उसको पूर्वोक्त उन दोनों दोषोंके शोधन कर्ता औषध देवे ॥

त्रिदोषजन्य दुष्टस्तन्य लक्षण ।

स्तन्येत्रिदोषसंदुष्टेशकृदामंजलोपमम् ।

नानावर्णरुजंचार्धविवद्धमुपवेद्यते ॥

अर्थ—जिस स्त्रीको दूध तीनों दोषोंके दूषित होनेसे विगडा होय उसका रंग मल मिला आम और जलके समान अनेक वर्णका और पीडा कर्ता होताहै वह जलमें डालनेसे मिलकर आधा नीचे और आधा ऊपर रहताहै ॥

दुग्धशोधककाय ।

पाठापूर्वाचभूनिवदारुशुंठीकालिंगकाः ।

सारिवानंतत्तिकारुख्याख्याताःस्तन्यविशोधनाः ॥

अर्थ—पाठा, मूर्वा, चिरायता, देवदारु, सोंठ, इन्द्रजौ, सारिवा, धमासों और कुटकी इनका काय स्त्रीके दूधको शोधन करनेवालाहै ॥

स्तन्यजननविधि ।

भूमिकूष्मांडमूलस्यक्षीरपिष्टस्ययारसम् ।

पिवेत्सशर्करंतस्याःक्षीरंवहुविवर्धते ॥

अर्थ—विदारिकंदकी जड़की दूधमें पीस भिन्नी मिलायके पीवे तो उस स्त्रीके दूधकी अधिक वृद्धि होय ॥

शतावरीपान ।

शतावरीक्षीरपिष्टापीतास्तन्यविवर्धिनी ।

कवोष्णंकणयापीतंक्षीरंक्षीरविवर्धनम् ॥

अर्थ—सतावरको दूधमें पीसके पीवे तो दूध बढे । अथवा पीपलका चूर्ण डालके दूधपाककी विधिसे सिद्ध करा हुआ दूध स्त्रीके दूधका बढानेवाला जानना ॥

अन्य योग ।

वनकापांसिकेश्रुणामूलसौवीरकेणवा ।

विदारिकंदंसुरयापिवेद्रास्तन्यवर्धनम् ॥

अर्थ—वनकपास (नरमाकपास) ईख, इनकी जड़को कांजीमें पीसके पीवे, अथवा विदारीकंदको दारुके साथ पीवे तो दुग्ध बढे ॥

स्तनशोथका यत्न । -

शोथंस्तनोत्थितमवेक्ष्यभिपग्निदध्याद्यद्रिद्रधावभिहितं बहुधा
विधानम् ॥ आमैविदह्यतितथैवगतेचपाकेयस्याःस्तनौसतत
मेवचनिर्गृहीतौ ॥

अर्थ—स्तनके ऊपर सूजन आई हुई देखकर वैद्यने जो विधान विदधी रोगपर कहा है वह सब विधान करना और स्तनकी सूजनमें आमता होवे अथवा दाह होता होवे या पकगई होवे तौभी निरंतर उनके ऊपर विदधि-रोगोक्त विधान करना ॥

स्तनशोथचिकित्सा ।

पित्तग्रानिसुशीतानिद्रव्याण्यत्रप्रयोजयेत् ।

जलोकाभिर्हरेद्रक्तं तत्स्तनावुपनाहयेत् ॥

अर्थ—स्तनशोथमें पित्तनाशक और शीतल सब औषध देवे । तथा दुष्ट रुधिरको जोख लगायके निकाल डाले तथा उन स्तनोंमें उपनाहन स्वेदन-विधि करनी चाहिये ॥

विशालादि लेप ।

लेपोविशालामूलस्यहंतिपीडांस्तनोत्थिताम् ।

निशावलकलकल्काभ्यांलेपः प्रोक्तः स्तनोर्तिहा ॥

अर्थ—इन्द्रायनकी जड़का लेप स्तनकी पीडाको दूर करे । अथवा हलदीके चकलका कल्क करके लेप करनेसे स्तनकी पीडा दूर होय ॥

श्रीपर्णादि स्तनवर्द्धन ।

श्रीपर्णांसकल्काभ्यांतैलंसिद्धंतिलोद्भवम् । तत्तैलंतूलकेन्य
स्यस्तनस्योपरिधारयेत् ॥ पतितावुत्थितौस्त्रीणांभवेतांतुप
योधरौ । गजकुंभसमाकारावुत्तुंगौस्तनमंडलौ ॥

अर्थ—श्रीपर्णाके रस और कल्कको डालके तिलीका तेल सिद्धकरे फिर तेलको रुईके फाहेमें लगाय स्तनोंके ऊपर रखे तो गिरे हुए स्तन शरीरके मस्तकके समान खडे हो जावे ॥

वनकार्पासिकादिपान ।

वनकार्पासिकेभ्रूणांमूलंवापर्पटोद्भवम् ।

विदारिकंदसुरयापिवेद्रास्तन्यवर्धनम् ॥

अर्थ—वनकपास और ईस्त्र, इनकी जड़को अथवा पित्तको या विदारी-
कंदको मद्यके साथ पीवे तो स्तनोंमें दूध बढे ॥

नागबलादिमर्दन ।

जलेनागबलामूलंपिड्वामर्दनमाचरेत् ।

कठिनंपीनतुंगाढ्यंभवातिस्तनमंडलम् ॥

अर्थ—नागबला (कगही) की जड़को जलमें पीसके स्तनोंपर मालिश
करनेसे स्तन कठोर पुष्ट और खडे हो जावे ॥

स्तनदृढीकरणपद्मबीजादि ।

सपद्मबीजंसितयाभक्षितंदुग्धवारिणा ।

दृढंस्त्रीणांस्तनद्वंद्वंमासेनकुरुतेकिल ॥

अर्थ—कमलगट्टेका चूर्ण मिश्री मिलाय दूध और जलके साथ भक्षण करे
तो १ महीनेमेंही स्त्रीके दोनों स्तन कठोर हो जावे ॥

गोधूममादियूष ।

गोधूमचूर्णतुल्यःशाखोटकदलनिर्मितोयूषः ।

भक्तोगोधृतसहितासप्ताहात्स्त्रीषुदुग्धकरः ॥

अर्थ—गैहूका भुना चूनके बराबर सहोडेके पत्तोंका यूष लेवे और इसके
साथ भात और गौका घी मिलायके खाय तो सात दिनमें स्त्रीको अत्यंत
दूध होय ॥

स्त्रीरोगे पथ्यापथ्य ।

यत्पथ्यंयदपथ्यंचरत्तापित्तेषुकीर्तितम् । प्रदरेपियथादोषंतत्तु

नारीरुजित्यजेत् ॥ वातव्याधिवतांपथ्यमपथ्यंचयदीरितम् ।

शालयःपष्टिकासुद्वागोधूमालाजसक्तवः॥ नवनीतंघृतंक्षीरंरसा

न्समधुशर्करान् । पनसंकादलंधान्नीद्राक्षाम्लंस्वादुशीतलम् ॥

कस्तूरोचंदनंमालाकर्पूरंमधुलेपनम् । चंद्रिकास्नानमभ्यंगो

मृदुशय्याहिमानिलाः ॥ संतर्पणंप्रियाश्लेषोविहारार्थमनोरमाः।

प्रियंकरंचात्रपानंगर्भिणीनांहितंसदा ॥

अर्थ—रक्तपित्त रोगमें जो पथ्यापथ्य कहाहे वही स्त्रीके प्रदर रोगमें पथ्या-पथ्य करावे तथा वातव्याधिवालनको जो पथ्यापथ्य कहाहे एवं साली चावल, सांठीचावल, मूंग, गेंहूँ, खील, सन्तू, मक्खन, घृत, दूध, सहत और मिश्री मिले रस, फनस, केलाकी गहर, आमले, दाखखट्टी, मिट्टी, शीतल, कस्तूरी, चंदन, कपूरकी माला, सहतका लेप, चांदनीमें बैठना, स्नान, मालिस, नरम सेज, शीतल पवन, तर्पण करना, प्यारसे मिलाप, मनको रमानेवाले विहार और जो जो अन्नपान हितकारी होवे सब गर्भवती स्त्रियोंको सदैव हित हैं ॥

• स्त्रीरोगमें अपथ्य ।

स्वेदनं वमनं क्षारं कदन्नं विपमाशनम् । अपथ्यमिदमुद्दिष्टं गुर्विणी
नामर्हर्षिभिः ॥ सूतिकाख्ये पुरोगेषु वातश्लेष्मोद्भवेषु च । तत्र
रोगानुकल्पेन पथ्यापथ्यानि निर्दिशेत् ॥

अर्थ—स्वेदन, वमन, खारका पदार्थ, दुष्ट अन्न, विपम भोजन ये सब गर्भवतीके वास्ते अपथ्य कहेहैं प्रसूतके रोगमें तथा वात कफके रोगमें जहाँ जसा पथ्यापथ्य उचित है उस रोगानुसार वैद्यको करना चाहिये ॥

इति श्रीमाधुरदत्तरामपाठकनिर्मिते बृहन्निघण्टुशालाकरे स्त्रीरोगाधिकारे समाप्तः ॥

बालरोग ।



बालरोगनिदान ।

धात्र्यास्तु गुरुभिर्भोज्यैर्विपमैर्दोषलैस्तथा ।

दोषादेहे प्रकुप्यंति ततः स्तन्यं प्रदुप्यति ॥

अर्थ—जड़, विपम और दांपयुक्त अन्न खानेसे धात्रीके शरीरमें दोष, (वात, पित्त, कफ) कुपित होकर स्तनके दूध नष्ट करदेते हैं ॥

मिथ्याहारविहारिण्याद्दुष्टावातादयः स्त्रियः ।

दूषयंति पयस्तेन जायंते व्याधयः शिशोः ॥

अर्थ—स्वेच्छाचारसे आहार और विहार करनेवाली स्त्रीके शरीरमें वातादि दोष दूषित होकर दूधको दुष्ट करदेतेहैं इससे बालकके शरीरमें व्याधि उत्पन्न होतेहैं ॥

त्रिविधफालक ।

त्रिविधःकथितोवालःक्षीरान्नोभयवर्तनः ।

स्वास्थ्यंताभ्यामदुष्टाभ्यांदुष्टाभ्यांरोगसंभवः ॥

अर्थ—बालक तीन प्रकारका है जैसे—दूध पीनेवाला, अन्न खानेवाला, और अन्न तथा दूध दोनोंका सेवन करनेवाला, तहां दूध और अन्न ये यदि शुद्ध होय तो रोग नहीं होय, और अन्न तथा माताके दूध ये दूषित होंवे तो वह बालक अवश्य रोगी होय ॥

दंतोद्भेदको मुख्यत्व ।

दंतोद्भेदश्चरोगाणां सर्वेषामेवकारणम् । विशेषज्वरविड्भेदका
इर्यच्छर्दिशिरोरुजाम् । अभिप्यंदश्वशोथश्वविसर्पश्चप्रजायते ॥

अर्थ—बालकोंके दातोका निकलनाही सब रोगोंका मुख्य कारण है ॥

बालककी अन्तर्गत पीडा जाननेका उपाय ।

शिशोस्तोत्रामतोत्रांचरोदनालक्षयेद्रुजम् । सयंस्पृशेद्रुशंदेशं
यत्रचस्पर्शनाक्षमः ॥ तत्रविद्याद्रुजंमूर्धिरुजंचाक्षनिमीलनात् ।
कोष्ठेविवंधवमथुस्तनदंशांत्रकूजनः ॥ आध्मानपृष्ठनमनजठ
रोन्नमनैरपि । वस्तौगुह्येचविण्मूत्रसंगोत्रासदिगीक्षणैः । स्रोतां
स्यंगानिसंधींश्चपश्येद्यत्नान्मुहुमुहुः ॥

अर्थ—बालककी घोर पीडा और साधारण पीडा उसके रुदन करनेसे अनुमान करना [यदि बालक थोडा रोवे, तो अल्परोग और अधिक रुदन करे तो घोर रोग जानना चाहिये] बालक जिस २ जगहका स्पर्श करे और जिस २ स्थानको छूने न देवे उसी स्थानमें रोग जानना । तथा नेत्रोंके बंद करनेसे मस्तकमें रोग जानना । मलका शुद्ध न उतरना, सरेकमां, माताके स्तनोंको काटना, होठ आदिको डसना, आतोका बोलना, तथा अफरा हो, पीठका नव जाना, तथा पेटका ऊंचा होना इन लक्षणोंसे बालकके पेटमें रोग है ऐसा जानना । मल मूत्रके न उतरनेपर और बालकको बारवार डर लगे तो उसके मूत्राशय और गुदामें रोग जानना । यह वैद्य बालकके कान, मुख आदि छिद्र और अंगकी संधियोंको बारवार देखकर बालकके रोगकी परीक्षा करे ॥

बालककी लघनमें विधिनिषेध ।

सर्वनिवार्यतेनालेस्तन्यंनैवनिवार्यते ।

मात्र्यालंघयेद्वात्रीशिशोरेतद्विलंघनम् ॥

अर्थ—बालककी सब वस्तु देना वर्जित हो सका है परंतु माताका दूध देनेका निषेध कही नहीं है यदि बालक लंघन करानेसेही अच्छा होता दीखे तो उसकी माताको लंघन करनाही बालकका लंघन जानना ॥

सामान्यभिक्षिता ।

भैषज्यंपूर्वमुद्दिष्टमहतांयज्ज्वरादिषु । तदेवकार्यंवालानांकिंतु
दाहादिकंविना ॥ अग्निदाहक्षारवमनविरेचनशिराव्यधादिकं
विनामहाकष्टेचोत्पन्नेवमनविरेकाद्यपिदद्यात् ॥

अर्थ—जो औषध बड़े मनुष्योंके ज्वर आदि रोगोंपर लिखी है वही औषध बालकोंको देनी चाहिये परंतु बालककी मात्रा छोटी करके देवे। और दागना, जलाना, खार लगाना, वमन और विरेचन आदि कर्म करना मना है। परंतु यदि बालकके घोर रोग दाह और वमन विरेचन आदिसेही अच्छे होते दीखे तो येहभी करे ॥

प्रमाणांतर ।

विरेकवस्तिवमनादृतेकुर्व्याच्चनात्ययात् । तएवदोषदूष्याश्च
ज्वराद्याव्याधयश्चये । अतस्तदेवभैषज्यमात्रात्वेत्यकनीयसी ॥

अर्थ—यदि बहुत भारी रोग न होय तो बालकके विरेचन और वमनादि कदापि न करे जो बड़ोंके दोष दूष्यादिके विगडने ज्वरादि रोग होते है वोही सब दोष दूष्य बालकोंके रोग प्रगट करनेवाले जानने इसी वास्ते जो औषध बड़ोंके लिये लिखी है वही छोटे २ बालकोंकी जाननी परंतु मात्रा छोटी कल्पनाकर लेनी चाहिये ॥

बालकोंकी मात्राका प्रमाण ।

रसलोहादिभैषज्यमहतांयज्ज्वरादिषु ।

युंज्यात्तदेववालानांतत्रमात्राकनीयसी ॥

अर्थ—रस (मालिनी वसंतादि) लोह आदिकी भस्म यह जो बड़ोंके वास्ते कही है वही छोड़ोंको जाननी परंतु बालककी मात्रामें फरख है, अर्थात् जो मात्रा बड़ोंको मासेनकी कही है वही बालकोंकी रतीनकी जाननी ॥

तथा प्रमाणांतर ।

विडंगफलमात्रंतुजातमात्रस्यभेषजम् ।

अनेनैवप्रमाणेनमासिमासिप्रवर्धयेत् ॥

अर्थ—उत्पन्न हुए बालकको वायविडंगके बराबर मात्रा देवे इसी प्रमाणसे महिनेकी महिने एक विडंग बढावे । यह विश्वामित्रका मत है ॥

बालकी मात्रास्थिरत्व और न्हासत्व ।

प्रथमेमासिबालायदेयाभेपजरक्तिका । अवलेह्यातुकर्तव्यामधु
क्षीरसिताघृतैः ॥ एकैकां वर्धयेत्तावद्यावत्संवत्सरो भवेत् । तदूर्ध्वं
मापवृद्धिः स्याद्यावत्पोडशवत्सराः ॥ गुंजाः पंचाद्यमापकाः ॥

अर्थ—पहले ही महानेमें वैद्य बालकको एक रत्तीके प्रमाण औषधकी मात्रा देय । यदि चूर्ण होयतो सहत, दूध, मिश्री और घृत डालके चाटने योग्य अवलेहसी होजावे इस प्रकार १ वर्ष करे फिर २ मापा मात्रा दूसरे वर्षमें, तीन मासे तीसरे वर्ष इस प्रकार सोलह वर्षपर्यंत सोलह मासे देवे (परंतु यहाँ पर पांच रत्तीका मापा लेना चाहिये) ॥

कपायादि मात्राका प्रमाण ।

ततःस्थिराभवेत्तावद्यावद्वर्षाणिसप्ततिः ।

ततोबालकवन्मात्रान्हासनीयाशनैःशनैः ॥

अर्थ—इस प्रकार १६ वर्षकी अवस्थामें मात्रा स्थिर होजाती है (घटवटे नहीं है) जब इस प्राणीकी ७० वर्ष व्यतीत होय सोई कमसे बालके समान मात्राकोभी घटाय देनी चाहिये ॥

क्षीरकेसाय देनेके नियम ।

चूर्णकल्कावलेहानामियंमात्राप्रकीर्तिता ।

कपायस्यपुनःसैवविज्ञातव्याचतुर्गुणा ॥

अर्थ—यह ऊपर लिखी मात्रा चूर्ण, कल्क, और अवलेहकी जाननी । यदि कपाय काय आदि देनी होयतो उसकी चौगुनी मात्रा अर्थात् चार रत्तीसे बढानी चाहिये ॥

कुक्कुणक ।

कुक्कुणकःक्षीरदोषाच्छिशूनामेववर्त्मनि । जायतेतेननेत्रंचकंदू

रंचस्रवेन्मुहुः ॥ शिशुःकुर्याल्ललाटाक्षिकृटनासाविधर्षणम् ।

शक्तोनाकेप्रमांद्रष्टुंनेत्रोन्मलिनक्षमः ॥

अर्थ—कुक्कुणक यह रोग बालकोंके दूधके दोषसे होताहै; इस रोगके होनेसे बालकके नेत्र खुजाये और पानी बहे नेत्रोंमें फीचड आनेसे दो ललाट, नेत्र

और नाकका रगड़े, धूपके सामने देखा न जाय, उसके नेत्र खुले नहीं इसको लौकिकमें कोयझाव कहते हैं । यह रोग बालकोंकेही हाताहै । सो वाग्भट्टमें लिखा है ॥

विक्रिया ।

फलत्रिकंलोध्रपुनर्नवेचसशृंगवेदरंवृहतीद्वयंच ।

आलेपनंश्लेष्महरंसुखोष्णंकुकूणकेकार्यमुदाहरंति ॥

अर्थ-त्रिफला, लोध, पुनर्नवा, अदरख छोटी और बडीकटेरी, इनकी बारीक पीस थोडी गरम करके लेप करतो कफ दूर हो यह कुकूणक रोगपर अनुभव करी हुई होती है ॥

पारिगर्भिक ।

मातुःकुमारोगर्भिण्याःस्तन्यंप्रायःपिवन्नापि । कासाग्निसादव
मधुतंद्राकाश्यारुचिभ्रमैः॥युज्यतेकोष्ठवृद्ध्याचतमाहुःपारिग
र्भिकम् । रोगंपारिभवारख्यंचदद्यात्तत्राग्निदीपनम् ॥

अर्थ-बालकके गर्भिणी माताका दूध पीनेसे उसके खांसी, मंदाग्नि, वमन, तन्द्रा, अरुचि, कृशता और भ्रम ये होय और उसके पेटकी वृद्धि होय इस रोगको वैद्यगण पारिगर्भिक अथवा परिभव कहतेहैं, इस रोगमें अग्निदीपन कर्ता औषधि बालकको देनी चाहिये ॥

पारिगर्भिकरोगका यत्र ।

पारिगर्भिकरोगेतुयुज्यतेबन्धिदीपनम् ॥

अर्थ-पारिगर्भिक रोगमें इस बालकको जठराग्निके दीपन कर्ता औषधि देनी चाहिये ॥

तालुकंटक ।

तालुमांसिकफःकुद्धःकुरुतेतालुकंटकम् । तेनतालुप्रदेशस्य
निम्नतामूर्ध्निजायते ॥ तालुपातःस्तनद्वेषःकृच्छ्रात्पानंशकृद्
वम् । तृडक्षिकंठास्यरुजाग्रीवादुर्धरतावमिः ॥

अर्थ-तालुके मांसमें कफ कुपित होकर तालु कंटके रोगको कर उसके होनेसे तालुके ऊपरका भाग नीचा हो जाय तथा भीतरसे बालकका तालु आविध जाय, इसीसे बालक स्तन छातीको नहीं दाबे और पीयेभी तो घडे

कष्टसे पीवे, पतला मल होजाय, प्यास लगे, नेत्र कंठ मुख इनमें पीडा होय,
नार गिरि पडे और जो दूध पीवे उसे डालदे ॥

हरीतक्यादिकल्क ।

हरीतकीवचाकुष्टकल्कंमाक्षिकसंयुतम् ।

पीत्वाकुमारस्तन्येनमुच्यतेतालुकंठकात् ॥

अर्थ-हरद, वच, कूठ, इनका कल्क कर सहत और माताके दूधमें मिलाय
पीवे तो यह बालकका तालुकंठक रोग दूर होय ॥

बालककी विसर्प और पद्मरोग ।

विसर्पस्तुशिशोःप्राणनाशनोवस्तिशीर्षजः ॥ पद्मवर्णोमहाप

द्मोरोगोदोपत्रयोद्भवःशंखाभ्यांहृदयंयातिहृदयाद्वागुदंनजेत् ॥

अर्थ-बालकोंके जो मस्तक और वस्ति (मूत्रस्थान) में विसर्प होय तो
बालककी प्राणनाशक जाननी, जो विसर्प लाल कमलके पत्रके समान लाल
होय यह महापद्म रोग, त्रिदोषज है यह कनपटीमें उत्पन्न होकर हृदय पर्यत
जाय है, अथवा हृदयमें होकर गुदा पर्यत जाता है ॥

क्षुद्ररोग ।

क्षुद्ररोगेचकथितेअजगल्लीअहिपूतने ॥ ज्वराद्याव्याधयःसर्वेमह

तायिपुरेरिताः । बालदेहेपितेतद्भिक्षेत्रेयाःकुशलैःसदा ॥

अर्थ-क्षुद्ररोगनिदानमें जो अजगल्ली और अहिपूतन कहें हे सो और
ज्वरादिक सर्व रोग जो बड़े मनुष्योंके होते हैं अर्थात् जिन रोगोंको पूर्व
कह आये हैं वो सब रोग बालकोंके देहमेंभी होते हैं ऐसे कुशल वैद्योंको
जानना चाहिये ॥

ग्रहजुष्ट बालकके लक्षण ।

बालग्रहाअनाचारात्पीडयंतिशिशुंयतः ।

तस्मात्तदुपसर्गैभ्योरक्षेत्रालंप्रयत्नतः ॥

अर्थ-बालकोंके ग्रह (स्कंदादिक) बालको आचार विचार रहित अर्थात्
भ्रष्ट रखने दुख देते हैं अतएव इसकी माताको उचित है उन ग्रहोंके छूतसे
यत्रपूर्वक बालकी रक्षा करे ॥

सामान्यग्रहजुष्टबालकके लक्षण ।

क्षणादुद्विजतेवालःक्षणात्रस्यतिरोदिति।नखैर्दंतैर्दारियतिधात्री

मात्मानमेवच॥ऊर्ध्वनिरीक्षतेदंतान्खादेत्कूजतिजृम्भते । ध्रुवौ

क्षिपतिदंतोष्ट्रफेनवमर्त्तिचासकृत् ॥ क्षामोत्तिनिशिजागर्तिशू
नांगोभिन्नविट्स्वरः । मांसशोणितगंधश्चनचाश्रातियथापुरा
सामान्यग्रहशुष्टानालक्षणंसमुदाहृतम् ॥

अर्थ—कभी क्षणभरमें बालक विद्वल हो जाय, कभी क्षणभर डरे, रोवे,
नख और दांतोंसे अपने शरीर और माताको खसाटे, ऊपरको देखे, दांतोंको
चवावे, किलकारी मारे, जैभाई लेय, भ्रुव भौंहको तिरछी करे, दांतोंसे हाँठोंको
स्त्राय, बारंबार मुखसे झाग डाले, वो अत्यंत क्षीण होय, रात्रिमें सोवे नहीं,
देहमें सूजन होय, मल पतला होय, स्वर बैठ जाय, उसके देहमें रुधिर-
मांसकीसी वास आवे, जितना पहले खाता होय उतना नहीं खाता, ये
सामान्य ग्रहव्याप्त बालकके लक्षण है अब कहते है कि स्कंददादिक ग्रह पूजाके
अर्थ बालकोंको मारे है सो चरकमें लिखा है ॥

स्कंदग्रहयुक्त बालके लक्षण ।

एकनेत्रस्यगात्रस्यस्त्रावःस्यदनर्कपनम् । अर्धदृष्ट्यानिरीक्षेत
वक्रास्योरक्तगंधिकः ॥ दंतान्खादतिविस्त्रस्तःस्नन्यनैवाभिनं
दति । स्कंदग्रहगृहीतानारोदनंचाल्पमेवच ॥

अर्थ—बालकके एक नेत्रसे पानी गिरे और अंगमें स्त्राव कहिये पसीना
वहे, एक औरका अंग फडके, तथा थर थर कापे वो बालक आधी दृष्टिसे
देखे, मुख टेडा हो जाय, रुधिरकीसी दुर्गंधि आवे वो बालक दांतोंको चवावे,
अंग सिधिल हो जाय, स्तनको नहीं पीवे, और थोडा रोवे यह स्कंद ग्रह
लगे बालकके लक्षण है । इस जगह स्कंद ग्रह करके शिवजीके प्रगट करें जो
ग्रह है उनमेंसे श्रीशिवपुत्र स्वामि कार्तिकका ग्रहण न करना चाहिये ॥

सोमवल्ली आदिकी माला ।

सोमवल्लीमिन्द्रवृक्षं वृहतीमिल्वजेशमी ।

मृगादन्याश्चमूलानिग्रथितानिविधारयेत् ॥

अर्थ—सोमलता, कीह वृक्ष, कटेरी, घेल, छोकरा और इन्द्रायनकी जड़,
इनकी माला बनायके उस बालको पहनावे ॥

देवदारु आदिका घृत ।

देवदारुगिरास्नायामधुरेपुगणेपुच ।

१ घात्रीमात्रोभाकश्रीशेष्टोपघातच्छोचप्रशान्त्यगटावारहोतव । द्विद्वारंतास्तोस्तमितस्तदितान्प्रयुज्जहो
हिसुरेतेकुमापन् ॥ इति ॥

सिद्धं सर्पिंश्च सक्षीरं पातुमस्मै प्रदापयेत् ॥

अर्थ—देवदारु, रास्ना और मधुर गणकी (काकोली क्षीरकाकोली आदि) औषधोंके कल्कसे घृत सिद्ध करे फिर इसको माताके दूधमें मिलायके बालको पिलाय देवे, तो स्कंदग्रहकी बाधा दूर हो ॥

स्कंदग्रहकी धूनी ।

सर्पपाः सर्पनिर्मोको वचाकाकादनीघृतम् ।

उष्ट्राजादिगवांचापिरोमाण्युद्धूपनं भवेत् ॥

अर्थ—सपेद सरसों, सांपकी कांचली, वच, कौआठोड़ी, घृत, तथा ऊंट अथवा गौ आदिके बाल इन सबकी धूनी बनायके धूप देवे ॥

मृगादनीमाला ।

मृगादन्याश्च मूलानि ग्रथितानि विधारयेत् ॥

अर्थ—इन्द्रायनकी जडके छोटे २ टुकड़े करके माला बनायके पहने ॥
धूनी ।

यस्ताम्रचूडविहगोभयपार्श्वपक्षपुच्छैर्गवाज्यसहितैः कृतधूपनो
ऽग्रे । आरभ्य जन्मदिवसाद्दिनसप्तकंहि बालस्य तस्य न कुतश्चन
भीतिरस्ति ॥

अर्थ—जो प्राणी मुरगके दोनों तरफके पंख और पूछके पंखोंको गींके घृतमें मिलाय जन्म दिनसे लेकर ७ दिनतक धूनी देवे तो उस बालक फिर कभी डरे नहीं ॥

स्कंदापस्मारलक्षणम् ।

नष्टसंज्ञो वमेत्फेनसंज्ञावानतिरोदिति ।

पूयशोणितगंधित्वं स्कंदापस्मारलक्षणम् ॥

अर्थ—बालक वसुध होय, मुखसे छाटा डाले, जब होस हो तब रोवे, उसकी देहमें रुधिरकीसी दुर्गंधि आवे, इन लक्षणों करके स्कंदापस्मारके लक्षण जानने ॥
स्कंदापस्मार ।

विल्वः शिरीषगोलोमीसुरसादिश्च योगणः ।

परिपेकः प्रयोक्तव्यः स्कंदापस्मारशांतये ॥

अर्थ—वेल, सिरख, सपेदवच, और सुरसादि गणकी समय औषध लेकर औटायके इससे स्नान करावे तो स्कंदापस्मार दूर होय ॥

सुरसादिगण ।

सुरसाश्वेतसुरसापाठाफंजीफणिज्जकः । सौगंधिकंभूस्तृणकर्करा
जिकाश्वेतवर्वरी ॥ कट्फलंखरपुष्पाचकासमर्दश्वश्लकी ।
विडंगमथनिर्गुडीकर्णिकारुदुंवरः ॥ बलाचकाकमाचीचतथा
चविषमुष्टिका । कफक्रिमिहरःख्यातःसुरसादिरयंगणः ॥ अष्ट
मूत्रेविषकंचतेलमभ्यजनेहितम् ॥

अर्थ—तुलसी सपेद, तुलसी स्याह, पाठ, भादंगी, जंभोरी, मरुवा, सुगंधि-
टण, भूटण, राई, सपेद चर्वरी, कायफल, आंगा, फसोंदो, सलईकी छाल,
वायविडंग, निर्गुडी, कनेर, गूलर, खिरेटी, मकोय, और बकायन, यह सुर-
सादि गण कफ और कृमि रोगको हरण करे इसको अष्ट मूत्रमें परिपक करके
तेल बनाना चाहिये उस तेलकी बालकके देहमें मालिश करे ॥

काकोल्यादि गण ।

काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकश्चर्पभस्तथा । ऋद्धिर्बुद्धिस्तथा
मेदामहामेदागुडूचिका ॥ मुद्गपर्णीमापपर्णीपद्मकवंशलोचना ।
शृंगीप्रपौंडरीकंचजीवंतीमधुयष्टिका ॥ द्राक्षाचेतिगणोनाम्ना
काकोल्यादिरुदीरितः । स्तन्यकृद्बृंहणोवृष्यःपित्तरक्तानिलापहः ॥

अर्थ—काकोली, क्षीकाकोली, जीवक, ऋपभक, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा,
गिलोय, मुँगपर्णी, मापपर्णी, पद्माख, वंशलोचन, काकडासिंगी, प्रपौंडरीक
(कमलका भेद) जीवंती, मुलहटी और दास यह काकोल्यादि गण है दूधको
बढावे और स्तनकी पीडाको दूर करे बृंहण, वृष्य, रक्तपित्त और घातरक्त
ये रोग दूर होय ॥

बचादि घूप ।

उत्सादनं वचाहिंगुमुक्तमत्रप्रकीर्तितम् । गृध्रोल्कपुरीपाणिके-
शाअस्थिनखंचृतम् ॥ वृषभस्यचरोमाणियोज्यानुद्वृषनेसदा ॥

अर्थ—वच, हींग इनको पीस उद्दूपन करे । गीध दड़के वीठकी तथा
-मनुष्यके बाल बकरी और गीध आदिकी हड्डी पी और बेलके रोम इनकी
सदैव दूनी दये ॥

अनंतादि धारण ।

अनंतांकुहुटीविंवीमर्कटीचापिधारयेत् ॥

अर्थ—अनन्ता (जवासा) कुकुरी रुखड़ी, कंदूरी और फिवाळ इनकी जडको बालक धारण करे ॥

शकुनिग्रहलक्षण ।

स्रस्तांगोभयचकितोविहंगगंधिःसंस्त्रावव्रणपरिपीडितः समन्ता
त् । स्फोटैश्चप्रचिततनुःसदाहंप्राकैर्विज्ञेयोभवतिशिशुःक्षतः
शकुन्या ॥

अर्थ—शकुनिग्रहसे पीडित बालकके अंग शिथिल होय, भयसे चकित होय, उसके अंगमें पक्षीके अंगके समान वास आवे, घाव होकर उसमेंसे लस वहै । सर्व अंगोमें फोडा उत्पन्न होय और वो पके तथा दाह होय ॥

चिकित्सा ।

स्कंदग्रहोक्तधूपाश्चहिताह्यन्नभवन्तिच ।

स्कंदापस्मारग्रहमनघृतमत्रापिपूजितम् ॥

अर्थ—इस शकुनिग्रहमें स्कंद ग्रहके वास्ते जो धूनी कही है सो धूनी देय । तथा स्कंदापस्मार ग्रहके नष्ट कर्ता घृत है वो सब देने चाहिये ॥

शतावरी आदिका धारण ।

शतावरीमृगेर्वारुनागदंतीनिदिग्धिकाः ।

लक्ष्मणांसहदेवींचवृहतींचापिधारयेत् ॥

अर्थ—सतावर, इन्द्रायन, नागदंती, कटेरी, लक्षणा, सहदेई और बड़ी कटेरी इत्यादि रुखडोंको धारण करे ॥

शकुनिग्रहमें स्नान ।

शकुनिग्रहद्रुपस्यकार्यवैद्येनजानता ।

वेतसाप्रकपित्थानांक्रथेनपरिपेचनम् ॥

अर्थ—वैद्य शकुनिग्रहग्रस्त बालकको वेत, आम और क्रथ इनकी काथसे उस बालकको स्नान करावे ॥

उप ।

द्वीवरमधुकोशीरसारिवोत्पलपद्मकैः ।

लोध्रप्रियंगुमंजिष्टागैरिकैःसंलिपेच्छिशुम् ॥

अर्थ-नेत्रवाला, मुलहठी, खस, सारिवा, कमलगट्टा, लोध, मजीठ, प्रियंगू और गेरू इनको बारीक पीस शकुनिग्रह पीडित बालकके देहमें लेप करे ॥

रेवतीग्रहलक्षण ।

व्रणैःस्फोटैश्चितंगात्रंपंकगंधमसृक्स्त्रक्त् ।

भिन्नवर्चाज्वरीदाहीरेवंतीग्रहलक्षणम् ॥

अर्थ-रेवती ग्रहसे पीडित बालकके अंगमें घाव और फोड़ा होय, उनमेंसे रुधिर बहे उसमें कीचकीसी वास आवै, दस्त, होय, ज्वर होय, अंगमें दाह होय ॥

रेवतीग्रहस्तान ।

अश्वगंधाजशृंगीचसारिवाथपुनर्नवा ।

सहाविदारीह्येतासांक्राथेनपरिपेचनम् ॥

अर्थ-असगंध, कांकडासिंगी, सारिवन, पुनर्नवा, धीरुवार और विदारीकंद इनका काय करके बालक स्नान करावे ॥

कुष्टादितैल ।

तैलमभ्यंजनेकार्यकुष्टसर्जरसेतथा ।

पलंकपायनलदेतथागौरकदंबके ॥

अर्थ-कूट, राल, लोख, नरसल या गौरकदंबकी छालका, कल्क डाल तैल सिद्धकरे इस तैलको रेवतीग्रहस्त बालकको लगावे ॥

धवादिघृत ।

धवाश्वकर्णककुभश्लकीर्तदुकेपुच ।

काकोल्यादिगणैर्वापिसिद्धं सर्पिःपिवेच्छिशुः ॥

अर्थ-धों, अश्वकर्ण (सालकाभेद), कोह, सलई, तेंदू और काकोल्यादि गणकी औषध मिलायके धी सिद्धकरे यह उस बालकके पनिको देय ॥

कुलित्यादि धूप ।

कुलित्याःशंखचूर्णचप्रदेयःपूर्वगंधिकः । मृध्रालूकपुरीपाणिय

वानीमिथितंघृते ॥ संध्ययोरुभयोःकार्यमेतदुद्धूपनंशिशोः ॥

अर्थ-कुलधी, शंखचूरा, गंधक, गीध और उल्लकी विष्टा, अजमायन इसमें घृत मिलायके दोनों संध्यामें बालकको धूनी देय ॥

पूतनाग्रहलक्षण ।

अतिसारोज्वरस्तृष्णातिर्यक्प्रेक्षणरोदनम् ।

नष्टनिद्रस्तथोद्विग्नस्त्रस्तःपूतनयाशिशुः ॥

अर्थ—पूतना ग्रहकी पीडासे बालको दस्त, ज्वर, प्यास होय, टेढ़ी दृष्टिसे देखे, रोवे, सोवे नहीं, व्याकुल होय, शिथिल होजाय ये लक्षण होतेहैं ॥

पूतनाग्रहजुष्टमं स्नान ।

कपोतवंकास्योनाकोवरुणःपारिभद्रकः ।

आस्फोटनाचयोज्याःस्युर्बालानांपरिपेचने ॥

अर्थ—कबूतर, बक, टेंदू, चरना, नीमकी छाल और सारिवा इनका काय करके बालकको स्नान करावे ॥

पयस्पादि तैल ।

नवापयस्यागोलोमीहरितालंमनःशिला । कुपुंसर्जरसश्चैवतै
लार्थेकल्कइष्यते । हितंघृतंतुगाक्षीर्यांसंसिद्धमधुनापिच ॥

अर्थ—नवीन क्षीरकाफोली, सपेद बच, हरिताल, मनसिल, कूठ, राल, इन सबका कल्क कर तेल सिद्ध करे । वंशलोचन और सहतके साथ सिद्ध कर घृत बालकको हितकारी जानने ॥

कुष्ठादि धूप ।

कुपुंतालीसखदिरंचंदनंस्यंदनंतथा । देवदारुवचाहिंगुकुष्ठंगि
रिकदंबकम् । एलाहरेणवश्चापियोज्याउद्धूपनेसदा ॥

अर्थ—कूठ, तालीसपत्र, खैरसार, चंदन, तिरिच्छ वृक्ष, देवदारु, बच, हिंग, कुष्ठ, गिरिकदंब (पर्वतफा कदंब) इलायची रेणुका इनकी धूनी देना सदैव हितहै ॥

अंधपूतनाग्रहलक्षण ।

छर्दिःकासोज्वरस्तृष्णावसागंधोतिरोदनम् ।

स्तन्यद्वेषोतिसारश्चांधपूतनयाभवेत् ॥

अर्थ—अंधपूतनाग्रहकी पीडासे बालकके वमन होय, खांसी, ज्वर, प्यास, चर्बीकीसी दुर्गंधि, बहुत रोना, स्तन्य (छाती) को मुखसे दावे नहीं और अतिसार ये लक्षण होते हैं ॥

गंधपूतनाग्रह ।

तिक्तद्रुमाणांपत्रैस्तुक्वाथःकार्योभिपेचने ।

अर्थ—तिक्त (कड़वे) वृक्षोंके पत्तोंकी काथसे बालकको स्नान करावे ॥

पंचतित्तगण ।

विल्वःपटोलंक्षुद्राचगुडूचीवासकस्तथा ।

विसर्पकुप्टनुत्ख्यातोगणोयंपंचतित्तकः ॥

अर्थ-वेलगिरी, पटोलपत्र, कटेरी, गिलोय और अडूसा इनका काय पंच-
तित्तक कहाता है यह विसर्प और कुछ रोगको दूर करे ॥

पुरीपादिघूप ।

पुरीपंकौकुटेकेशाश्वर्मसर्पभवंतथा ।

जीर्णेनसर्पिमाचेतद्रूपनायोपकल्पयेत् ॥

अर्थ-सुरगेकी वाँठ, बकरीके बाल, साँपकी काँचली, इनमें पुराना घृत
मिलायके धूप देवे ॥

सर्वगंध ।

कुंकुमागरुकर्पूरकस्तूरीचंदनैःसमैः ।

सर्वगंधइतिख्यातोगणोह्युत्तमगंधदः ॥

अर्थ-कैशर, अगर, कपूर, कस्तूरी और चंदन यह समान भाग लेवे इसे
सर्वगंधगण उत्तम गंधका देनेवाला है ॥

शीतपूतनामहलक्षण ।

वेपतेकासतेक्षीणोनेत्ररोगोविगंधिता ।

छर्द्यतीसारयुक्तश्चशीतपूतनयाशिशुः ॥

अर्थ-शीतपूतना ग्रहकी पीडासे बालके मुखकी कांति क्षीण होजाय, उस-
की नवरोग होय देहमें दुर्गंधि आवै, यमन होय और दस्त होय ॥

रोहिण्यादिघृत ।

रोहिणीनिंबखदिरपलाशककुभत्वचः ।

निःक्वाथ्यतस्मिन्निःक्वाथेसदीरंविपचेद्घृतम् ॥

अर्थ-कुटकी, नीमकी छाल, खैर, पछासपापडा, कोहकी छाल इनका
काय करके फिर इसकी छानके दूध और घृत मिलाय घृत सिद्ध करे यह
बालकको पिलावे ॥

शमादिघूपन ।

गृध्रोलूकपुरीपाणिवस्तगंधामहित्वचम् ।

निंबपत्राणिचतथाधूपनार्थसमाहरेत् ॥

अर्थ—गीध उछकी वीठ वर्वरी सांपकी कांचली और नीमके पत्ते इनकी धूनी देवे तो शीतपूतनाशांति हो ॥

मुखमंडिकाग्रहलक्षण ।

प्रसन्नवर्णवदनःशिरभिरिवसंवृतः ।

मूत्रगंधिश्चवह्वाशीमुखमंडिकयाभवेत् ॥

अर्थ—मुखमंडिका ग्रहकी पीडासे बालके मुखकी कांति सुंदर होय और देहकी कांति श्रेष्ठ होय, शिरान्में शरीर बंधा होजाय, उसके देहमें मूत्रकीसी दुर्गंधि आवै, यह बालक बहुत भक्षण करे ॥

मुखमंडिकाग्रहस्नान ।

कपित्यविल्वतर्कारीवासागंधर्वहस्तकः ।

कुबेराक्षीचयोज्याःस्युर्वालानांपरिपेचने ॥

अर्थ—कैथ, वेल, अरनी, अडसा, अंडकी जड और सागरगोटा, इनके गरम जलसे बालकको स्नान करावे ॥

भृंगादि तैल ।

स्वरसेभृंगवृक्षाणांतथैवहयगंधिका ।

तैलवचांचसंयोज्यपचेदभ्यंजनेशिशोः ॥

अर्थ—भांगरेके स्वरसमें अर्पवा असगंध और वच इनका कल्क डालके तैल पचावे इसको बालकके देहमें लगावे ॥

वचादिधूप ।

वचासर्जरसंकुप्टसर्पिश्चोद्धूपनेहितम् ॥

अर्थ—वच, राल, कूठ और गौका घृत इनकी धूनी देना हितकारी है ॥

नैगमेयग्रहलक्षण ।

छादिस्व्यंदनकंठास्यशोपमूर्च्छाविगंधिता ।

उर्ध्वपश्येदशेदंतात्रैगमेयग्रहंवदेत् ॥

अर्थ—चमन, कंठ, मुखका सूखना मूर्च्छा, दुर्गंधि, ऊपरकी देखे, दंतोंको चबावे, इन लक्षणोंसे नैगमेय ग्रहकी पीडा जाननी ॥

नैगमेयग्रह चिकित्सा ।

विल्वाग्निमथपूतकैःकार्यस्यात्परिपेचनम् ॥

अर्थ—वेल, अरनी, कैजा, इनके कायसे न्हिलावे ॥

प्रियंग्वादितैल ।

प्रियंगुसरलानंताशतपुष्पाकुटनटैः

पचेत्तैलंसगोमूत्रं दधिमस्त्वम्लकांजिकैः ॥

अर्थ—फूलप्रियंगु, सरल, धमासौ, सौंफ, कैवर्तीमोथा, इन सबका कत्क डाले फिर गोमूत्र दही छाछका पानी और खट्टी कांजी इनके साथ तिलीका तैल पचावे इस तैलको बालककी देहमें लगावे ॥

वचादि उत्सादन ।

वचांवयस्थांजटिलांगोलोमींचापिधारयेत् ।

उत्सादनंहितंचात्रस्कंदापस्मारनाशनम् ॥

अर्थ—वच, वयस्था, भूतकेशी, सपेद रंगकी वच इनका उत्सादन स्कंदापस्मारनाशक है ॥

मर्कटादि धूप ।

मर्कटोलूकगृध्राणांपुरीपाणिपितृग्रहे ।

धूमःसुज्ञजनैःकार्योबालस्यहितमिच्छुभिः ॥

अर्थ—वानर, उलू और गीधके षीठकी धूनी देना बालकको पितृग्रहमें अत्यंत गुणकारी है ॥

उत्फुल्लिकालक्षण ।

आध्मानवातसंफुल्लोदक्षकुशौशिशोर्भवेत् ।

उत्फुल्लिकासाविरव्याताश्वासश्वयथुसंकुला ॥

अर्थ—आध्मान रोग (पेटका फूलना) होय, बालकके दाहिने कूखमें शोथ होय, श्वास और सूजन आवे ये लक्षणसे उत्फुल्लिका रोग जानना ॥

चिकित्सा ।

निस्सारयेन्नलौकाभीरक्तंचजठरेतदा । कर्कोटनागरामेवकं

कोलातिविपाभवम् ॥ चूर्णदुग्धेनसंमिश्रंपाययेन्मातरंभिपक्व ॥

धात्रीवापाययेत्सद्यःक्षीरदोपनिवारणम् ॥

अर्थ—प्रथम वैद्य जोख लगायके उसके उदरका रुधिर निकाले । फिर ककोडा, सोंठ, नागरमोथा, कंकौल, अतीस इनका चूर्ण दूधमें मिलायके वैद्य उस बालककी माताको पिलावे, या उसकी धायको पिलावे तो उनके क्षीर-दोषकी दूर करेहै ॥

अर्थ—गीध उड़की बीठ वर्वरी सांपकी कांचली और नीमके पत्ते इनकी धूनी देवे तो शीतपूतनाशांति हो ॥

मुखमंडिकाग्रहलक्षण ।

प्रसन्नवर्णवदनःशिराभिरिवसंवृतः ।

मूत्रगंधिश्चवह्नाशीमुखमंडिकयाभवेत् ॥

अर्थ—मुखमंडिका ग्रहकी पीडासे बालके मुखकी कांति सुंदर होय और देहकी कांति श्रेष्ठ होय, शिरान्में शरीर बंधा होजाय, उसके देहमें मूत्रकीसी दुर्गंधि आवे, यह बालक बहुत भक्षण करे ॥

मुखमंडिकाग्रहस्नान ।

कपित्थविल्वतर्कारीवासागंधर्वहस्तकः ।

कुबेराक्षीच्योज्याःस्युर्वालानांपरिषेचने ॥

अर्थ—केथ, बेल, अरनी, अडूसा, अंडकी जड़ और सागरगोटा, इनके गरम जलसे बालकको स्नान करावे ॥

भृंगादि तैल ।

स्वरसेभृंगवृक्षाणांतथैवहयगंधिका ।

तैलंचांचसंयोज्यपचेद्भयंजनेशिशोः ॥

अर्थ—भांगरेके स्वरसमें अथवा असगंध और वच इनका कल्क डालके तैल पचावे इसको बालकके देहमें लगावे ॥

वचादिधूप ।

वचासर्जरसंकुण्डसर्पिश्चोद्धूपनेहितम् ॥

अर्थ—वच, राल, कठ और गौका पृत इनकी धूनी देना हितकारी है ॥

नैगमेयग्रहलक्षण ।

छदिस्यंदनकंठास्यशोपमूर्च्छाविगंधिता ।

उर्ध्वपश्येदशेदंतात्रैगमेयग्रहंवदेत् ॥

अर्थ—चमन, कंठ, मुखका सूखना मूर्च्छा, दुर्गंधि, ऊपरकी देखे, दंतोंकी चबावे, इन लक्षणोंसे नैगमेय ग्रहकी पीडा जाननी ॥

नैगमेयग्रहं चिचिंत्सा ।

विल्वाग्निमंथपूतकैःकार्यस्यात्परिषेचनम् ॥

अर्थ—बेल, अरनी, कंजा, इनके कायसे न्हिलावे ॥

प्रियंवादितैल ।

प्रियंगुसरलानंताशतपुष्पाकुटंनटैः

पचेत्तैलसगोमूत्रं दधिमस्त्वम्लकांजिकैः ॥

अर्थ—फूलप्रियंगू, सरल, धमासौ, सोंफ, कैवर्तीमोथा, इन सबका कल्क डाले फिर गोमूत्र दही छाछका पानी और खट्टी कांजी इनके साथ तिलीका तेल पचावे इस तेलको बालककी देहमें लगावे ॥

वचादि उत्सादन ।

वचांवयस्थांजटिलांगोलोर्माचापिधारयेत् ।

उत्सादनंहितंचात्रस्कंदापस्मारनाशनम् ॥००

अर्थ—वच, वयस्था, भूतकेशी, सपेद रंगकी वच इनका उत्सादन स्कंदापस्मारनाशक है ॥

मर्कटादि धूप ।

मर्कटोलूकगृध्राणांपुरोपाणिपितृग्रहे ।

धूमःसुज्जनैःकार्यौबालस्यहितमिच्छुभिः ॥

अर्थ—वानर, उल्लू और गीधके बीठकी धूनी देना बालकको पितृग्रहमें अत्यंत गुणकारी है ॥

उत्फुल्लिकालक्षण ।

आध्मानवातसंफुल्लोदक्षकुक्षौशिशोर्भवेत् ।

उत्फुल्लिकासविख्याताश्वासश्वयथुसंकुला ॥

अर्थ—आध्मान रोग (पेटका फूलना) होय, बालकके दाहिने कूखमें शोथ होय, श्वास और सूजन आवै ये लक्षणसे उत्फुल्लिका रोग जानना ॥

चिफिरता ।

निस्सारयेज्जलौकाभोरक्तचजटरेतदा । कर्कोटनागरामेयकं

कोलातिविपाभवम् ॥ चूर्णदुग्धेनसंमिश्रंपाययेन्मातरंभिषक् ॥

धात्रीवापाययेत्सद्यःक्षीरदोपनिवारणम् ॥

अर्थ—प्रथम वैद्य जोख लगायके उसके उदरका रुधिर निकाले । फिर ककोडा, सोंठ, नागरमोथा, कंकौल, अतीस इनका चूर्ण दूधमें मिलायके वैद्य उस बालककी माताको पिलावे, या उसकी धायकी पिलावे तो उनके क्षीरदोषको दूर करेहै ॥

शेक दंभ चिल्लादि काढा ।

अग्निनास्वेदयेद्वापिदाहयेच्चशलाकया । जठरेविंदुकाकारं
पृष्ठभागेयथाध्रुवम् ॥ विल्वमूलकं नीरदोवृकीत्रैफलंतथा
सिंहिकाद्वयम् । गौडमिश्रितं काथितं संपाययेच्छिशुं फुल्लि
कापहम् ॥

अर्थ—उत्फुल्लिकावाले बालकको अग्निसं स्वेदन करे । तथा शलाई करके
जलावे । परंतु उस बालकके पेटपर विंदुके आकार गोल दाग देय इसी प्रकार
पृष्ठभागमे देवे । वेलकी जड़, नागरमोथा, पाठ, त्रिफला, दोनों कटेरी इनका
काथकर इसमे गुड मिलायके बालकको पिलावे तो उत्फुल्लिका रोग दूर होय ॥

पिप्पल्यादिपान ।

पिप्पलीग्रंथिकं विश्वात्रायमाणा च दार्विका । पथ्येभपिप्पलीभां
गीलवंगंटकणस्तथा ॥ कुमारीवालपथ्याचसैंधवस्त्वजवारि
णा । घर्षितं पाययेत्प्रातर्द्विदं कंफुल्लिकापहम् ॥

अर्थ—पीपल, पीपरामूल, सोठ, त्रायमाण, दारुहलदी, हरड, गजपीपल,
भारंगी, लौंग, सुहागा, पीगुवार, छोटीहगड और सैंधानिमक इनको बकरीके
मूत्रके साथ घोटके दोदंके अनुमान पीवे तो उत्फुल्लिका दोष दूर होय ॥

सर्पत्वचादिधूप ।

सर्पत्वग्लशुनं मूर्वासर्पपारिष्टपल्लवाः ॥ विडालविडजालोममेप
शृंगीवचामधु । धूपः शिशोर्ज्वरघ्नो यमशोपग्रहनाशनः ॥

अर्थ—सांपकी कांचली, लहसन, मूर्वा, सरसो, नीमके पत्ते, विलावकी बटि
बकरीके बाल, भेडासिगी, वच और सहत इन सबको एकत्र पीसके धूनी देय
तो बालकका ज्वर और सब ग्रह दूर होय ॥

बालकके ज्वरकी चिकित्सा ॥

वचाकुष्ठं तथा ब्राह्मीसिद्धार्थकमतोपिच । सारिवासैंधवंचैवपि
प्पलीघृतमष्टमम् ॥ सिद्धं घृतमिदं मेध्यं पिवेत्प्रातर्दिनेदिने ।
दृढास्मृतिः क्षिप्रमेधाकुमारो बुद्धिमान् भवेत् ॥ नपिशाचानरक्षां
सिनभूतानचमातरः । प्रभवंति कुमारानां पिवतामष्टमंगलम् ॥
बालिशांतीष्टकर्माणिकार्याणि ग्रहशांतये ॥

अर्थ—बच, कूठ, ब्रह्मी, सपेदसरसों, सारिवा, सैधानिमक, पीपल, और आठवा घी ले सबको घृतकी विधिसे पचायके इस पवित्र घीको बालक नित्य पीवे तो उसकी स्मरणशक्ति दृढ हो तत्काल बुद्धिको बढ़ावे तथा वह बालक अत्यंत बुद्धिवान् हो इसके सेवनसे न राक्षसोंका न पिशाचोंका न भूत प्रेतादिकोंका भय होय इस घृतको अष्टमंगल कहते है । तथा उस बालकके ग्रह-शांति करनेको बलिदान शांतिकर्म करने चाहिये ॥

सहादिलेप ।

सहागुंडीतिकोदार्वाङ्गाथस्नानग्रहापहम् ।

सप्तच्छदाभयनिशाचंदनैश्चानुलेपनम् ॥

अर्थ—सहा, निर्गुंडी, दारुहलदी, इनका काथ कर बालकको स्नान करावे सतवन, हरड, हलदी, और चंदन इनको पीस देहमें लेप करे ॥

बालज्वराकुश ।

मृतसूताभ्रवंगचरौप्यंयोज्यंचतत्समम् । मृतताम्रस्यतीक्ष्णस्य
प्रत्येकंचद्विभागिकम् ॥ व्योपंविभीतकंचैवकासीसंमृतमेवच ।
नागवल्लीदलरसैर्भावयेच्चपुनः पुनः ॥ बलप्रमाणोदातव्यःसर्वरो
गहरःपरः । गर्भिणीबालकानांचसर्वज्वरविनाशनः ॥

अर्थ—पारदकी भस्म अभ्रकभस्म, वंगभस्म, रूपरस ये सब समान भाग लेवे, ताम्रकी और खेडी लोहकी भस्मये प्रत्येक दो-दो भाग लेवे, सोंठ, मिरच, पीपल, बहेडा, कासीसकी भस्म, इन सबका बारीक चूर्णकर पानके रसकी अनेक भावना देकर ३ रत्तीकी गोली बनावे यह सर्व रागमात्रोंको दूर करे । तथा गर्भवतीके तथा बालकके सब ज्वरोंको नष्ट करे ॥

पद्मकादिचिकित्सा ।

क्वाथःकृतःपद्मकनिचधान्यच्छिन्नोद्भवालोहितचंदनोत्थः ।

ज्वरेभवेत्सर्वभवेकृशानुर्धात्रीशिशुभ्यांप्रकरोतिपीतः ॥

अर्थ—पद्मास, नीमकी छाल, धनिया गिलोय, लालचंदन इनका क्वाथ सर्व ज्वरों तथा पित्तज्वर, दाह, प्यास दूर करे यह धाय पीवे, या उस रोगी बालककोही स्वयं पिलावे ॥

यष्ट्यादिलेह ।

यष्टीमधुतुगाक्षोरीलाजांजनसिताकृतः ।

लेहःप्रदत्तोवालानामशेषज्वरनाशनः ॥

अर्थ—मुलहदी, संहत, वंशलोचन, खील, सुरमा और मिश्री मिलायके अवलेह बनावे यह अवलेह बालकोंके संपूर्ण ज्वरोंका नाश कर्ता है ॥

स्थिरादिचिकित्सा ।

क्वाथःस्थिरागोक्षुरविश्ववालक्षुद्रादयश्छिन्नरुहाकिरातैः ।

वातज्वरंवाशमयेत्प्रपीतोवालेनधात्र्याचक्रशानुकारी ॥

अर्थ—शालपर्णी, गोखरू, सोंठ, नेत्रवाला, कटेरी, गिलोय और चिरायता, इनका क्वाथ करके बालक पीवे या धाय पीवे तो वातज्वरको नष्ट करे और जठराग्निको बढानेवाला कहा है ॥

पंचभूलादिचिकित्सा ।

पंचमूलीकृतःक्वाथःपीतोवातज्वरापहः ।

तद्दृच्छिन्नरुहाद्राक्षागोपकन्यावलाभवः ॥

अर्थ—लघुपंचमूलका क्वाथ करके पीवे तो वातज्वर दूर होय । अथवा गिलोय, दाख, सारिवा और खिरेटीका क्वाथ वातज्वरको नष्ट करे ॥

सारिवादिचिकित्सा ।

सारिवोत्पलकाश्मर्यच्छिन्नापन्नकपर्पटैः ।

क्वाथःपीतोनिहंत्याशुशिशूनापैत्तिकंज्वरम् ॥

अर्थ—सारिवा, कमलगट्टा, कंभारी, गिलोय, पद्माख, पित्तपापडा इनका क्वाथ पिलावे तो बालकका पैत्तिक ज्वर दूर होय ॥

मुस्तादि हिम ।

मुस्तापर्पटकोशीरवारिपन्नकसाधितम् ।

शीतवारिनिहंत्याशुत्रिधादाहवमिज्वरान् ॥

अर्थ—नागरमोया, पित्तपापडा, खस, नेत्रवाला, पद्माख इनका हिम तीन प्रकारके दाह, वमन, और ज्वरको दूर करे ॥

विषमज्वरचिकित्सा ।

निवपत्रामृतानंतापटोल्लेद्रयवैःकृतः ।

क्वाथःसविनिहंत्याशुप्रभवव्यसनंतथा ॥

अर्थ—नीमके पत्ते, गिलोय, धमासा, पटोलपत्र, इन्द्रजौ इनका क्वाथ घोर विषम ज्वरके दाहको नष्ट करे ॥

ऽयाहिकपर गुडूच्यादिकाथ ।

गुडूचीचंदनोशीरधान्यनागरतोयदि ।

क्वाथस्तृतीयकंहन्याच्छर्करामधुमिश्रितः ॥

अर्थ—गिलोय, चंदन, खस, धनिया, सोंठ, इनके काथमें मिश्री और सहत मिलाय पिलावे तो तिजारी ज्वरका दूर करे ॥

पलंकपादि धूप ।

पलंकपावचाकुप्टंगजचर्माविचर्मच । निवस्यपत्रंमाक्षोकंसर्पि
र्युक्तंतुधूपकम् । ज्वरवेगनिहंत्याशुवालानांतुविशेषतः ॥

अर्थ—लास, वच, कूठ, हाथीका चाम, मंडेका चमडा, नीमके पत्ते, सहत, और घृत इनको एकत्र पीस धूनी देवे, यह ज्वरके वेगका दूर करे और बालकोंको ज्वरवेग तो विशेष कर हरण करे है ॥

मूर्वादि वद्वर्तन ।

मूर्वानिशासर्पपरामसेनश्वेतासमंगांबुदकारवीनाम् ।

छागीपयोभिःसहपेपितानामुद्वर्तनंस्याज्ज्वरजिच्छिशूनाम् ॥

अर्थ—मूर्वा, हलदी, सरसों, चिरायता, सपेद खिरैटी, नागरमोथा, अजमायन, इनको बकरीके दूधमें पीस देहमें मालिश करे तो बालकोंके ज्वरको दूर करे ॥

भद्रमुस्तादि ।

भद्रमुस्ताभयानिवपटोलमधुकैःकृतः ।

क्वाथःकोष्णःशिशोरेपनिःशेषज्वरनाशनः ।

अर्थ—भद्रमोथा, हरड, नीमकी छाल, पटोलपत्र, और मुलहटी इनका काथ थोडा गरम बालकोंको पिलावे तो सब ज्वर दूर हो ॥

सैधवादि जिह्वालप ।

बालोयश्चिरजातःस्तन्यंगृह्णातिनोदितस्तस्य ।

सैधवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनघर्षयेज्जिह्वाम् ॥

अर्थ—जो बालक बहुत देरीका जन्म लेकर भी माताके स्तनको यदि न पकड़े (अर्थात् पीवे नहीं) उसकी जीभपर सैधानिमक, आमले, सहत, घृत और हरड इनका कल्क करके घिसे ॥

एकाहिकज्वरपर अपामार्गमूलिकाबंध ।

कन्यावर्तितसूत्रेणवध्वापामार्गमूलिकाम् ।

लेहःप्रदत्तोवालानामशेषज्वरनाशनः ॥

अर्थ—मुलहठी, सहत, वंशलोचन, खील, सुरमा और मिथी मिलायके अवलेह बनावे यह अवलेह बालकोंके संपूर्ण ज्वरोंका नाश कर्ता है ॥

स्फिरादिचिकित्सा ।

क्वाथःस्थिरागोक्षुरविश्ववालक्षुद्रादयश्छिन्नरुहाकिरातैः ।

वातज्वरंवाशमयेत्प्रपीतोवालानध्याचकृशानुकारी ॥

अर्थ—शालपर्णी, गोखरू, सोंठ, नेत्रवाला, वटेरी, गिलोय और चिरायता, इनका क्वाथ करके बालक पीवे या धाय पीवे तो वातज्वरको नष्ट करे और जठराग्निको बढानेवाला कहा है ॥

पंचमूलादिचिकित्सा ।

पंचमूलीकृतःक्वाथःपीतोवातज्वरापहः ।

तद्वच्छिन्नरुहाद्राक्षगोपकन्यावलाभवः ॥

अर्थ—लघुपंचमूलका क्वाथ करके पीवे तो वातज्वर दूर होय । अथवा गिलोय, दाख, सारिवा और खिरेटीका क्वाथ वातज्वरको नष्ट करे ॥

सारिवादिचिकित्सा ।

सारिवोत्पलकाश्मर्यच्छिन्नापद्मकपर्पटैः ।

क्वाथःपीतोनिहंत्याशुशिशूनांपैत्तिकंज्वरम् ॥

अर्थ—सारिवा, कमलगट्टा, कंभारी, गिलोय, पन्नाख, पित्तपापडा इनका क्वाथ पिलावे तो बालकका पैत्तिक ज्वर दूर होय ॥

मुस्तादि हिम ।

मुस्तापर्पटकोशीरवारिपद्मकसाधितम् ।

शीतवारिनिहंत्याशुत्रिधादाहवमिज्वरान् ॥

अर्थ—नागरमोथा, पित्तपापडा, खस, नेत्रवाला, पन्नाख इनका हिम तीन प्रकारके दाह, वमन, और ज्वरको दूर करे ॥

विषमज्वरचिकित्सा ।

निवपत्रामृतानंतापटोलेंद्रयवैःकृतः ।

क्वाथःसविनिहंत्याशुप्रभवव्यसनंतथा ॥

अर्थ—नीमके पत्ते, गिलोय, धमासो, पटोलपत्र, इन्द्रजो इनका क्वाथ घोर विषम ज्वरके दाहको नष्ट करे ॥

ऽप्राहिकपर गुडूच्पादिक्वाथ ।

गुडूचीचंदनोशीरधान्यनागरतोयदि ।

क्वाथस्तृतायकंहन्याच्छकैरामधुमिश्रितः ॥

अर्थ-गिलोय, चंदन, खस, धनिया, सोंठ, इनके क्वाथमें मिश्री और सहत मिलाप पिलावे तो तिजारी ज्वरको दूर करे ॥

पलंकपादि धूप ।

पलंकपावचाकुण्डगजचर्माविचर्मच । निवस्यपत्रंमाक्षीकंसर्पि
युक्तंतुधूपकम् । ज्वरवेगनिहंत्याशुबालानांतुविशेषतः ॥

अर्थ-लास, वच, कूठ, हाथीका चाम, मेंढेका चमडा, नीमके पत्ते, सहत, और घृत इनको एकत्र पीस धनी देवे, यह ज्वरके वेगको दूर करे और बालकोंको ज्वरवेग तो विशेष कर हरण करे है ॥

मूर्वादि उद्धतन ।

मूर्वानिशासर्पपरामसेनश्वेतासमंगांबुदकारवीनाम् ।

छागीपयोभिःसहपेपितानामुद्धतनस्याज्ज्वरजिच्छिन्नानाम् ॥

अर्थ-मूर्वा, हलदी, सरसों, चिरायता, सपेद खिरैटी, नागरमोथा, अजमायन, इनको बकराके दूधमें पीस देहमें मालिश करे तो बालकोंके ज्वरको दूर करे ॥

भद्रमुस्तादि ।

भद्रमुस्ताभयानिवपटोलमधुकैःकृतः ।

क्वाथःकोष्णःशिशोरेपनिःशेषज्वरनाशनः ।

अर्थ-भद्रमोथा, हरड, नीमकी छाल, पटोलपत्र, और मुलहदी इनका क्वाथ थोडा गरम बालकको पिलावे तो सब ज्वर दूर हो ॥

सैधवादि जिह्वालप ।

बालोयश्चिरजातःस्तन्थंगृह्णातिनोदितस्तस्य ।

सैधवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनघर्षयेजिह्वाम् ॥

अर्थ-जो बालक बहुत देरीका जन्म लेकर भी माताके स्तनको यदि न पकड़े (अर्थात् पीवे नहीं) उसकी जीभपर सैधानिमक, आमले, सहत, घृत और हरड इनका कल्क करके घिसे ॥

एकाहिकज्वरपर अपामार्गमूलिकाबंध ।

कन्यावर्तितसूत्रेणवध्वापामार्गमूलिकाम् ।

एकाहिकंज्वरं हंतिशिखायामपिवेगतः ।

अर्थ—कन्याके काते हुए सूतसे आगा (चिरचिरे) की जड़ बांधके जिसकी चूटियामे बांधे उसका एकाहिक (इकतरा) ज्वरको शीघ्र दूरकरे ॥

द्वंद्वज्वात पित्तज्वर ।

मुस्तापर्पटकं छिन्नाकिरातो विश्वभेषजम् ।

एपांकपायोदातव्योवातपित्तज्वरापहः ॥

अर्थ—नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय, चिरायता और सोठ इनका काथ देनेसे वातपित्तज्वर दूरहो ॥

उशीरादिवातपित्तचिकित्सा ।

उशीरं मधुकंद्राक्षाकाश्मरीनीलमुत्पलम् । पल्लवकंपद्मकंचम
धुकं मधुकं वला ॥ एभिः शृतः कपायोयं वातपित्तज्वरं जयेत् ।

प्रलापमूर्च्छासंमोहवृष्णापित्तज्वरापहः ॥

अर्थ—खस, मुलहदी, दाख, कंभारी, नीलाकमल, फालसे, पन्नाख, महुआ, सहत, खिरेटी इनका काथकर रोगीको पिलावे तो वातपित्तज्वर, प्रलाप, मूर्च्छा बेहोसी, तृषा और पित्तज्वरको दूरकरे ॥

त्रिफलादि श्लेष्मपित्तचिकित्सा ।

त्रिफलापिचुमंदश्वपटोलं मधुकं वला ।

एभिः कायः कृतः पीतः पित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥

अर्थ—त्रिफला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, मुलहदी, खिरेटी, इनका काथ पीवितो पित्त कफ ज्वरको दूरकरे ॥

अमृतादिचूर्ण पित्तश्लेष्मज्वरपर ।

अमृतेन्द्र्यवारिष्टपटोलंकटुरोहिणी । नागरचंदनं मुस्तं पिप्पली

चूर्णसंयुतम् ॥ अमृताष्टकमित्येतत्पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ।

हृत्सासारीचकच्छर्दिवृष्णादाहनिवारणम् ॥

अर्थ—गिलोय, इन्द्रजो, नीमकीछाल, पटोलपत्र, कुटकी, सोठ, लालचंदन नागरमोथा इनके काथमें पीपलका चूर्ण डाले यह अमृताष्टक पित्तकफके ज्वरको हल्लास, अरुचि, वमन, तृषा और दाहको नष्टकरे ॥

धान्यादिदिग् पित्तज्वरपर ।

धान्यकचंदनपद्मकमुस्ताशक्यवामलकैः सपटोलैः ।

शीतकपायंमुखेखलुदद्याद्बालकपित्तकफज्वरहत्यै ॥

अर्थ—धनिया, लालचंदन, पन्नाख, मोथा, इन्द्रजौ, आमला और पटोलपत्र इनका हिम बनायके बालकको देवे तो उसका पित्तकफज्वर दूरहो ॥

आरग्वधादिवातपित्तज्वपर ।

आरग्वधःसातिविपःसमुस्तस्तिक्ताकपायोज्वरमाशुह्न्यात् ।

सामंसशूलंसवमिसदाहंसकामलंहंतिसरक्तपित्तम् ॥

अर्थ—अमलतासका गूदा, अतीस, नागरमोथा, और कुटकी इनका काढा करके पीवे तो यह साम और शूल तथा चमन, दाह और कामलायुक्त ज्वरको नष्टकरे और रक्तपित्त दूरहो ॥

विषमज्वरचिकित्सा ।

वासाव्याधिकणालेहःशीतज्वरविनाशनः ।

तद्रत्क्षुद्रामृतानंतातिक्ताभूनिवसाधितः ॥

अर्थ—अडूसा, कूठ, पीपल, इनका काय शीतज्वरको नष्टकरे अथवा कंटेरीकी जड़, गिलोय, धमासों, कुटकी और चिरायता इनका काय शीतज्वरको नष्टकरे हे ॥

कटुव्यादि एकाहिक ज्वरपर ।

कटुकीविहितःकाथःकणाचूर्णसमन्वितः ।

एकाहिकंज्वरंहंतिकासश्वासादिदूषितम् ॥

अर्थ—कुटकीके काथमें पीपलका चूर्ण डालके पीवे तो खांसी श्वासयुक्त एकाहिक (इकतरा) ज्वरको नष्टकरे ॥

द्राक्षादि एकाहिक ज्वरपर ।

द्राक्षापटोलत्रिफलापिचुमंदवृषैःकृतः ।

काथएकाहिकंहंतिपरार्थमिवदुर्जनः ॥

अर्थ—दाख, पटोलपत्र, त्रिफला, नीमकी छाल और अडूसा इनका काय एकाहिक ज्वरको इसप्रकार नष्टकरता है जैसे दुर्जन प्राणी औरोंके हितको ॥

किराततिक्तादि काय वातश्लेष्म ज्वरपर ।

किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् ।

चातुर्भद्रकमित्याहुर्वातश्लेष्मज्वरापहम् ॥

अर्थ—चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, और सोंठ यह चातुर्भद्रक काय कहाता है, यह वात कफ ज्वरको नष्ट करताहे ॥

वातकफ ज्वरमें पथ्य ।

मुद्गतंदुलसंसिद्धकेवलैर्वामकुप्टकैः ।

पथ्यमात्रमिदं दद्याद्गुंवातकफज्वरम् ॥

अर्थ—मूंग, और चावलसे बनी अथवा केवल मोटकी दाल पथ्यहै, इसको वातकफ ज्वरवालेको देना चाहिये ॥

दशमूलिका काथ सन्निपातपर ।

दशमूलीयुतःकाथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः ।

संमोहतद्रासमयेसन्निपातज्वरं हरेत् ॥

अर्थ—दशमूलके काथमे पीपलका चूर्ण डालके रोगीको पिलावे यह बेहोसी तद्रायुक्त संनिपात ज्वरको नष्टकरे ॥

मुस्तादिचिकित्सा ।

मुस्तकंचंदनंवासाह्वीवेरंयष्टिका मृता ।

एपांकाथस्तुपित्तघ्नस्तृपादाहज्वरापहः ॥

अर्थ—नागरमोथा, चंदन, अडूसा, नेत्रवाला, मुलहठी, गिलोय, इनका काथ पित्तनाशक तथा तृषा, दाह और ज्वरको हरण करे ॥

वासादिचिकित्सा ।

वासापपटकोशीरनिंबभूर्निवसाधितः ।

काथोहंतिवमिश्वासकासपित्तज्वराच्छिशोः ॥

अर्थ—अडूसा, पित्तपापडा, खस, नीम और चिरायता इनका काथ वमन, श्वास, खोसी और बालकके पित्तज्वरको नष्ट करे ॥

अभयादिकाथ ।

अभयामलकीकृष्णाचित्रकोयंगणोमतः ।

दीपनःपाचनोभेदीसर्वश्लेष्मज्वरापहः ॥

अर्थ—हरड, आमले, पीपल, और चित्रक यह चार वस्तुका काथ दीपन, पाचन, दस्तावर और सर्व कफज्वरोंको नष्ट करता है ॥

कटफलार्दिकाथ ।

कटफलंपुष्करंशृंगीपिप्पलीमधुनासह ।

एपालिहोज्वरंश्वासंकासंमंदानलंजयेत् ॥

अर्थ—कांयफल, पुहकरमूल, कांकडासिंगी, पीपल, इनको पीस सहत मिलाय अवलेह बनायले यह ज्वर, श्वास, खांसी और मंदातिको जीते ॥

मधुकादिकाय ।

मधुकंसारिवाद्राक्षामधुकंचंदनोत्पलम् । काश्मीरोपद्रुकंलोध्रं
त्रिफलापद्मकेसरम् ॥ पद्मपकंमृणालंचसेव्यंतुतप्तवारिणा ।
मधुजातसितायुक्तंतत्पीतंपुष्टिदंनिशि ॥ वातंपित्तंज्वरंदाहंतृ
ष्णामूर्च्छारुचिभ्रमान् । शमयेद्रक्तपित्तंचजीमूतमिवमारुतः ॥

अर्थ—महुआ, सारिवा, दाख, मुलहटी, लालचंदन, कमलगट्टा, कंबारी, पन्नाख, लोध, त्रिफला, कमलकी केसर, फालसे, कमलकी डंडी, खस, इनको गरम जलके साथ पीवे अथवा सहतसे बनी खांड डालके रात्रिके समय पीवे तो पुष्टाई करे वातपित्तके ज्वर, दाह, तृषा, मूर्च्छा अरुचि, भ्रम, और रक्त पित्त इनको इस प्रकार नष्ट करे कि जैसे बड़लोंको पवन नष्ट करताहै ॥

धिल्वादिक्वाढ ।

विल्वंचपुष्पाणिचधातकीनांजलंसलोध्रंगजपिप्पलीच ।

क्वाथोवलेहोमधुनाविमिश्रोवालेषुयोज्यःकटिधारितेषु ॥

अर्थ—बेलफल, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध, गजपीपल, इनका काय अथवा अवलेह बनायके उसमें सहत मिलाय बालकोंको कमरपर चढाय देवे ॥

काकोलीकाय ।

काकोलीगजकृष्णाचलोध्रमेपांसमांशतः ।

क्वाथोमध्वन्वितःपीतोवालातीसारहृन्मतः ॥

अर्थ—काकोली, गजपीपल, लोध ये समान भागले कायकर सहतके साथ पीवे तो बालकोका अतिसार नष्ट होय ॥

वमन अतिसारपर ।

लाजाःसैधवमात्रास्थिचूर्णमेपांसमांशतः ।

हंतिच्छर्दिमतीसारंमधुनासहभक्षितः ॥

अर्थ—खील, सैधानिमक, आमकी गुठली, इनके चूर्णको सहतके साथ चादनेसे बालकी वमन और अतिसार दूर होय ॥

अतिसारपर ।

आम्रवीजंतथालोध्रंधानीफलरसंतथा ।

पीत्वामहिपतक्रेणवालातीसारनाशनम् ॥

अर्थ—आमकी गुठली, पठानी लोध, आमलेके फलका रस इनको भैंसकी छाछके साथ पीनेसे बालकका अतिसार दूर होय ॥

फलमुस्तादिचूर्ण ।

फलिन्यंजनमुस्तानांचूर्णपीतंसमाक्षिकम् ।

तृष्णांछर्दिमतीसारंवालानांतत्त्वतोहरेत् ॥

अर्थ—प्रियंगुफूल, रसोत और नागरमोथाके चूर्णको सहतमें मिलायके चदानेसे बालकोंकी तृषा, धमन और अतिसारको हरण करे ॥

श्यामादिचूर्ण ।

श्यामारसांजनंचूतफलास्थिसमचूर्णितम् ।

हंतिच्छर्दिमतीसारंवालानांमधुनाशितम् ॥

अर्थ—पीपल, रसोत, आमकी गुठलीके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे बालककी छर्दि अतिसार दूर हो ॥

धातक्यादिलेह ।

धातकीविल्वधान्याकलोध्रेद्रयववालुकैः ।

लेहःक्षौद्रेणवालानांज्वरातीसारवाञ्जयेत् ॥

अर्थ—धायके फूल, बेलगिरी, धनिया, लोध, इन्द्रजौ और एलुआ इनकी सहतके साथ अबलेह बनायकर चदानेसे ज्वरातिसार दूर होय ॥

लोधादियोग ।

लोध्रेणापिप्पलीवालावालकातिसृतीहितः ।

श्रीरसोमाक्षिकयुतोधातकीकुसुमैः समम् ॥

अर्थ—लोधके साथ पीपल और नेत्रवाला, बालकके अतिसारकी नष्ट करे, तथा बेलका रस धायके फूलके चूर्णको सहतके साथ पीवे तो अतिसार नष्ट होय ॥

विडंगादिलेह ।

विडंगान्यजमोदाचपिप्पलीतंदुलानिच । एषामालिह्यचूर्णा

निसुखंतप्तेनवारिणा ॥ आमेष्वृत्तेतीसारेकुमारंपाययेद्भिषक् ॥

अर्थ—वापविडंग, अजमोद, पीपल, चावल इनके चूर्णको सुखोष्ण जल पीवे तो जिस बालकके दस्तमें आम गिरता हो वह दूर होय ॥

ग्रहण्यायवन्त्यादि चूर्ण ।

यवानीजीरकंव्योषंकुटजंविश्वभेषजम् ।

एतन्मधुयुतंपीतंवालानांग्रहणीजयेत् ॥

अर्थ—अजमायन, जीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, कुडाकी छाल, सोंठ इनके चूर्णको सहतमें मिलायके देवेतो वालककी संग्रहणी दूर होय ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण ।

पिप्पलीविजयाशुंठीचूर्णमधुयुतंभिषक् ।

दत्वानिहत्यग्रहणीरुजंकीर्तिमवाप्नुयात् ॥

अर्थ—पीपल, भांग, सोंठ इनके चूर्णको सहतके साथ चाटतो निश्चय वालककी संग्रहणी दूरहोय ॥

कृष्णादिचूर्ण ।

कृष्णामहौषधंविल्वंनागरःसयवानिकः ।

मधुसर्पियुतंलीढंवालानांग्रहणींहरेत् ॥

अर्थ—पीपल, सोंठ, बेलगिरी, सोंठ और अजवायन इनके चूर्णको घी सहतके साथ चाटनेसे वालककी संग्रहणी दूरहोय ॥

नागरादिचूर्ण ।

नागरंमुस्तकंविल्वंचित्रकंअधिकंशिवाम् ।

चूर्णमेतन्मधुयुतंकफजांग्रहणींजयेत् ॥

अर्थ—सोंठ, मोथा, बेलगिरी, चित्रक, पीपरामूल, हरड इनके चूर्णको सहतके साथ सेवन करनेसे कफकी संग्रहणी दूरहोय ॥

गुडादिचूर्ण ।

सगुडंनागरंविल्वंयःखादातिहिताशनः ।

त्रिदोषग्रहणीरोगान्मुच्यतेनात्रसंज्ञयः ॥

अर्थ—जो भाणी गुड और सोंठ तथा बेलगिरी मिलायके खाय और पद्यसे रहेतो त्रिदोषजन्य संग्रहणी अवश्य नष्टहोय ॥

मुस्तकादिचूर्ण ।

मुस्तकातिविपाविल्वंचूर्णितंकौटजंतथा ।

क्षौद्रेणलीढंग्रहणींसर्वदोषोद्भवांजयेत् ॥

अर्थ—नागरमोथा, अतीस, बेलगिरी और कूडेकी छाल इनके चूर्णको सहतके संग सेवन करनेसे सर्व दोषकी संग्रहणी दूरहोय ॥

रक्तातिसारपर ।

मोचरसंसमंगाचघातकीपद्मकेसरम् ।

पिष्टैरैतैर्यवागूःस्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥

अर्थ—मोचरस, मर्जीठ, धायके फूल, कमलकी केशर, इनको पीसके यवागू सिद्धकरे यह बालकके रक्तातिसारको नष्टकरे ॥

नागरादिचूर्ण ।

नागरातिविषामुस्तावालकेंद्रयवैःकृतम् ।

कुमारंपाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम् ॥

अर्थ—सोंठ, अतीस, मोथा, नेत्रवाला और इन्द्रजो इनके चूर्णको प्रातः-काल बालकको पिलावे तो सर्व प्रकारके अतिसार नष्ट होय ॥

प्रवाहिकाकी चिकित्सा ।

लोध्रेंद्रयवधान्याकधात्रीह्वैरमुस्तकम् ।

मधुनालेहयेद्बालंज्वरातिसारनाशनम् ॥

अर्थ—लोध, इन्द्रजो, धनिया, आमले, हाऊबर, नागरमोथा, इनके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो बालकका ज्वरातिसार नष्ट होय ॥

ग्रहणी अतिसारपर ।

रजनीसरलोदारुर्बृहतीगजपिप्पली । पृश्निपर्णीशताह्वाचली

ढामाक्षिकसर्पिषा ॥ दीपनंग्रहणींहन्तिमारुतार्तिसकामलाम् ।

ज्वरातिसारंपाडुत्वंवालानांसर्वरोगनुत् ॥

अर्थ—हलदी, सरल, देवदारु, भटकटैया, गजपीपल, पृष्ठपर्णी, सतावर, इनके चूर्णको सहत और घीके साथ चाटनेसे अग्निदीपन हो संग्रहणी, वादीकी पीडा, कामला, ज्वर, अतिसार, पीलिया और बालकके सर्व रोग नष्ट होय ॥

हीबेरादिचूर्ण ।

हीबेरंशर्कराक्षौद्रंपीतंतण्डुलवारिणा ।

शिशोरक्तातिसारघ्नंकासश्वासवर्मिहरेत् ॥

अर्थ—मुगंधवाला, मिश्री और सहत इनको चावलके धोवनसे पीव तो बालकके रक्तातिसार, खांसी, श्वास और चमनको नष्ट करे ॥

अग्नीचिकित्सा ।

यवानीनागरंपाठादाडिमंकुटजंतथा ।

चूर्णोऽयंगुडतक्राभ्यांपीतोर्शःस्तंभनःपरः ॥

अर्थ—अजवायन, सोंठ, पाठ, अनारदाना, और इन्द्रजौ इनके चूर्णको गुड मिली छाछके साथ पीवे तो बवासीरका खून जाना बंद होय ॥

अजाज्यादिगुटी ।

अजाजीपौष्करंपाठात्र्यूपणंदहनंशिवा ।

गुडेनगुटिकाग्राह्यासर्वांशःशोधनक्षमा ॥

अर्थ—जीरा, पुहकरमूल, पाठ, त्रिकुटा, चित्रक, और हरड इनको दुने गुडमें मिलायके गोली बनावे यह सर्व प्रकारकी बवासीरोंको शोधन करे ॥

नवनीतादियोग ।

नवनीततिलाभ्यासात्केसरनवनीतशर्कराभ्यासात् ।

दधिसारमथिताभ्यासाद्भुदजाःशाम्यंतिरक्तवहाः ॥

अर्थ—मक्खन और कालेतिल मिलायके खानेसे अथवा नागकेशर, मक्खन और मिथ्री मिलायके खानेसे, या मक्खन और मथितके नित्य खानेसे रुधिर बहनेवाले मस्से दूरहो ॥

एवंवाकौटजंबीजरक्ताशौमधुनाहरेत् ।

तद्वन्मुस्तामोचरसकपिकच्छूभवंरजः ॥

अर्थ—इन्द्रजौके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे खुनी बवासीर दूरहो । उसीप्रकार नागरमोथा, मोचरस और कौछका चूर्ण खुनीबवासीरको नष्टकरे ॥

अजीर्णविषूचिकाकी चिकित्सा ।

धान्यनागरजःक्वाथःशूलामाजीर्णनाशनम् ।

चूर्णस्तक्रशुभःपीतस्तद्रथोपाग्निजीरकैः ॥

अर्थ—धानिया, सोंठकी क्वाथ, शूल, आम, अजीर्ण, एवं सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रक और जीरेका चूर्ण छाछके साथ पीवे तो अजीर्ण और विषूचिका दूरहो ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण ।

पिप्पलीरुचकंपथ्याचूर्णमस्तुजलंपिबेत् ।

सर्वाजीर्णहरंशूलगुल्मानाहाग्निमांद्यजित् ॥

अर्थ—पीपल, कालानिमक, और हरडका चूर्ण छाछके जलके साथ पीवे तो सर्व प्रकारके अजीर्ण, शूल, गोला, अफरा, और मंदागिको नष्टकरे ॥

रक्तातिसारपर ।

मोचरसंसमंगाचधातकीपद्मकेसरम् ।

पिष्टैरैतैर्यवागूःस्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥

अर्थ—मोचरस, मजीठ, धायके फूल, कमलकी केशर, इनको पीसके यवागू सिद्धकरे यह बालकके रक्तातिसारको नष्टकरे ॥

नागरादिचूर्ण ।

नागरातिविषामुस्ताबालकेंद्रयवैःकृतम् ।

कुमारंपाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम् ॥

अर्थ—सोंठ, अतीस, मोथा, नेत्रवाला और इन्द्रजौ इनके चूर्णको प्रातःकाल बालकको पिलावे तो सर्व प्रकारके अतिसार नष्ट होय ॥

प्रवाहिकाकी चिकित्सा ।

लोभ्रेंद्रयवधान्याकधात्रोह्विवेरमुस्तकम् ।

मधुनालेहयेद्बालंज्वरातिसारनाशनम् ॥

अर्थ—लोध, इन्द्रजौ, धनिया, आमले, हाऊबर, नागरमोथा, इनके चूर्णको सहतेके साथ चाटे तो बालकका ज्वरातिसार नष्ट होय ॥

ग्रहणी अतिसारपर ।

रजनीसरलोदारुर्वृहतीगजपिप्पली । पृष्टिपर्णीशताह्वाचली

ढामाक्षिकसर्पिषा ॥ दीपनंग्रहणींहन्तिमारुतातिसकामलाम् ।

ज्वरातिसारंपाडुत्वंबालानांसर्वरोगनुत् ॥

अर्थ—हलदी, सरल, देवदारु, भटकटैया, गजपीपल, पृष्टपर्णी, सतावर, इनके चूर्णको सहते और घीके साथ चाटनेसे अग्निदीपन हो संग्रहणी, वादीकी पीडा, कामला, ज्वर, अतिसार, पीलिया और बालकके सर्व रोग नष्ट होय ॥

हीविरादिचूर्ण ।

हीविरंशर्कराक्षौद्रंपीतंतण्डुलवारिणा ।

शिशोरक्तातिसारघ्नकासश्वासवर्मिहरेत् ॥

अर्थ—सुगंधवाला, मिश्री और सहते इनको चावलके धोवनसे पीवे तो बालकके रक्तातिसार, खांसी, श्वास और वमनको नष्ट करे ॥

अर्शचिकित्सा ।

यवानीनागरंपाठादाडिमंकुटजंतथा ।

चूर्णोऽयंगुडतक्राभ्यापीतोर्शःस्तंभनःपरः ॥

अर्थ—अजवायन, सोंठ, पाठ, अनारदाना, और इन्द्रजौ इनके चूर्णको गुड मिली छाछके साथ पीवे तो बवासीरका खून जाना बंद होय ॥

अजाज्यादिगुटी ।

अजाजीपौष्करं पाठात्र्यूपणंदहनं शिवा ।

गुडेन गुटिकाग्राह्या सर्वा र्शः शोधनक्षमा ॥

अर्थ—जीरा, पुहकरमूल, पाठ, त्रिकुटा, चित्रक, और हरड इनको दुने गुडमें मिलायके गोली बनावे यह सर्व प्रकारकी बवासीरोंको शोधन करे ॥

नवनीतादियोग ।

नवनीततिलाभ्यासात्केसरनवनीतशर्कराभ्यासात् ।

दधिसारमथिताभ्यासाद्भुजाःशाम्यंतिरक्तवहाः ॥

अर्थ—मक्खन और कालेतिल मिलायके खानेसे अथवा नागकेशर, मक्खन और मिथी मिलायके खानेसे, या मक्खन और मथितके नित्य खानेसे रुधिर बहनेवाले मस्से दूरहो ॥

एवंवाकौटजं वीजं रक्ताशौमधुना हरेत् ।

तद्वन्मुस्तामोचरसकपिकच्छूभवं रजः ॥

अर्थ—इन्द्रजौके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे खुनी, बवासीर दूरहो । उसीप्रकार नागरमोथा, मोचरस और कौछका चूर्ण खुनीबवासीरको नष्टकरे ॥

अजीर्णविपूचिकाकी चिकित्सा ।

धान्यनागरजःकाथःशूलामाजीर्णनाशनम् ।

चूर्णस्तक्रशुभःपीतस्तद्वद्रचोपाग्निर्जरकैः ॥

अर्थ—धनिया, सोंठकी काथ, शूल, आम, अजीर्ण, एवं सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रक और जीरेका चूर्ण छाछके साथ पीवे तो अजीर्ण और विपूचिका दूरहो ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण ।

पिप्पलीरुचकंपथ्याचूर्णमस्तुजलंपिबेत् ।

सर्वाजीर्णहरंशूलगुल्मानाहाग्निमांद्यजित् ॥

अर्थ—पीपल, कालानिमक, और हरडका चूर्ण छाछके जलके साथ पीवे तो सर्व प्रकारके अजीर्ण, शूल, गाला, अफरा, और मंदाग्निको नष्टकरे ॥

त्वगादितैल ।

त्वक्पत्ररास्नायुरुशियुकुष्टेरम्लप्रपिष्टैःसवलासिताह्वैः ।

अजीर्णकंघ्नचविषूचिकाघ्नतैलंविषकंचतदर्थकारि ॥

अर्थ—तज, पात्रज, रायसन, अगर, साहिजना, कूड, खिरंटी और मिश्री इनको खटाईमें पीसके तैल सिद्ध करे तो अजीर्ण, विषूचिकाको दूर करे ॥

भस्मककी सामान्यचिकित्सा ।

अन्नपानैर्युरुस्निग्धैर्मद्रसांद्रहिमस्थिरैः ।

पित्तघ्नैरेचनेर्द्धीमान्भस्मकंप्रशमनयेत् ॥

अर्थ—भारी भोजनके पदार्थ, पनिके पदार्थ और चिकने, गाढे, शीतल, स्थिर, पित्तनाशक, और रेचनकर्ता पदार्थोंसे यह प्राणी भस्मरोगको नष्ट करे ॥

औदुंबरकल्क ।

औदुंबरत्वचंपिष्टानारीक्षीरयुतंपिबेत् ।

ताभ्यांचपयसासिद्धंभुक्तंजयतिभस्मकम् ॥

अर्थ—गूलरकी छालको खोके दूधमें पीसके पीवे अथवा खीरे दूधमें उसको परिपक करके सेवन करे तो भस्मक रोग दूर होय ॥

मयूरतंदुलादिक्षीरम् ।

मयूरतंदुलैःसिद्धंपायसंभस्मकंजयेत् ।

विदारीस्वरसंक्षीरसिद्धंवामहिपीघृतम् ॥

अर्थ—चिरचिराके चांबलोंको दूधमें डाल खीर बनावे यह भस्मकको दूर करे । अथवा विदारीकंदके स्वरसको दूधमें डालके खीर करे और घी मिलायके खाय तो भस्मक रोग दूर हो ॥

कासरोगमें धान्यादिहिम ।

धान्याकंशर्करायुक्तंतंदुलोदकसंयुतम् ।

पानमेतत्प्रदातव्यंकासश्वासापहंशिशोः ॥

अर्थ—धनियेमें बराबरकी मिश्री मिलाय चावलके धोवनके साथ पीवे तो बालककी खांसी और श्वास दूर होय ॥

दुरालभादि लेह ।

दुरालभाकणाद्राक्षापथ्याः क्षौद्रेणलेहयेत् ।

त्रिरात्रंपंचरात्रंवाकासश्वासहराःशिशोः ॥

अर्थ—धमासा, पीपल, दाख, हरड इनके चूर्णको सहतके साथ ३ या ५ रात्रि चाटे तो खांसी और श्वास ये दोनों दूर हो ॥

हिग्वादिचूर्ण ।

हिगुकर्कटगृगीचगैरिकंमधुजेष्टिका ।

त्रुटिःक्षौद्रनागरंचहिक्काश्वासनिवारणम् ॥

अर्थ—हींग, काकडासिगी, गेरू, मुलहठी, छोटी इलायची, सोंठ इनका समान भाग चूर्णकर १ मासेको सहतके साथ चढावे तो बालककी हिचकी और श्वास दूर हो ॥

कृष्णादिचूर्ण ।

कृष्णादुरालभाद्राक्षाकर्कटाख्यागजाह्वया । चूर्णितामधुसर्पिर्भ्यां
लीढाहंतिशिशोर्गदान् । कासंश्वासंचतमकंज्वरंवापिविनक्ष्यति ॥

अर्थ—पीपल, धमासा, दाख, काकडासिगी, गजपीपल इनके चूर्णमें सहत और घी मिलायके चाटे तो बालकके श्वास, खांसी, तमकश्वास, ज्वर आदि अनेक रोग दूरहो ॥

हिक्काश्वासचिक्रिसा ।

शृंगीसमुस्तातिविपांविचूर्ण्यलेहंविदध्यान्मधुनाशिशूनाम् ।

कासज्वरच्छर्दिसमन्वितानांसमाक्षिकंवातिविपासमेतम् ॥

अर्थ—काकडासिगी, नागरमोथा, अतीस इनको सहतमें लेहके समान बनायके चढावेतो खांसी ज्वर, वमन, दूरहो, अथवा अतीसके चूर्णमात्रकोही सहतमें मिलायके चाटे तो पूर्वोक्त रोग दूर होय ॥

गुडोदकयोग ।

गुडोदकंवाक्कथितंव्योपसंधवसंयुतम् ।

सुखोष्णंपाययेद्वालंकासरोगोपशान्तये ॥

अर्थ—गुडके जलमें सोंठ, भिरच, पीपल और संधानिमक डालके सुहाता २ गरमको बालकके वास्ते पिलावे तो बालककी खांसी दूरहोय ॥

व्याध्वादिहेह ।

विहितोमधुनालेहोव्याघ्रीकुसुमकेशरः ।

लीढोहिनाशयत्याशुकासंपंचविधंशिशोः ॥

अर्थ—कटेरीके फूलकी केशरको सहतमें सानके सेवन करे तो बालकी पांच प्रकारकी खांसी दूर हो ॥

शृंग्यादि लेह ।

एकाशृंगीनिहंत्याशुमूलकस्यफालान्विता ।

घृतेनमधुनालीढाकासंवालस्यदुस्तरम् ॥

अर्थ—काकडासिंगी और मूलीके फलका चूर्ण इनको घृत अथवा सहतके साथ चाटे तो बालककी दुस्तर खांसी दूर होय ॥

तुगालेह ।

तुगांक्षौद्रैश्वसंलिह्याच्छ्वासकासौशिशोर्जयेत् ॥

अर्थ—वंशलोचनके चूर्णको सहतमें सानके चाटे तो बालककी श्वास और खांसी दूर होय ॥

विडंगादिचूर्ण ।

विडंगमधुनालीढंपुष्करंवालशिशुकम् ।

आसुपर्णीतथैकावाकृमिभ्योमुच्यतेशिशुः ॥

अर्थ—वायविडंग, पुहकरमूल, सहंजना, मूसाकानी इनमेंसे किसी एकके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो बालक कृमिरोगसे छूट जाय ॥

पौष्करादि चूर्ण ।

पौष्करातिविपाशृंगीमागधीधन्वयासकैः ।

कृतंचूर्णतुसक्षौद्रंशिशूनांपंचकासजित् ॥

अर्थ—पुहकरमूल, अतीस, काकडासिंगी, पीपर, और धमासा इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो बालककी पांच प्रकारकी खांसी दूर हो ॥

मुस्तादिचूर्ण ।

मुस्तकातिविपावासाकणाशृंगीरसंलिहन् ।

मधुनामुच्यतेवालःकासैःपंचभिरुद्धितैः ॥

अर्थ—नागरमोथा, अतीस, वासा, पीपर, काकडासिंगी, इनके स्वरसको सहत मिलायके पीये तो घोर पांच प्रकारकी खांसी दूर होय ॥

व्याघ्र्यादिलेह ।

व्याधीकुसुमसंजातकेसरैरवलेहिका ।

मधुनाचिरसंजाताच्छिशोःकासान्वपोहति ॥

अर्थ—कटेरीके फूलकी केसरकी अवलेहको सहत डालके चाटे तो बालककी सर्व प्रकारकी खांसी दूर हो ॥

हिकाचिकित्सा ।

सुवर्णगैरिकंपिष्ट्वामधुनासहलेहयेत् ।

शीघ्रंसुखमवाप्नोतितेनहिकादिंतःशिशुः ॥

अर्थ—सुवर्ण गैरुको पीसके सहतके साथ चाटे तो हिचकीसे पीडित बालक शीघ्र अच्छा होय ॥

पिप्पल्यादि काथ ।

पिप्पलीरेणुकाकाथःसर्हिगुःसमधुःकृतः ।

हिकांवहुविधांहन्यादिदंधन्वंतरेर्वचः ॥

अर्थ—पीपल और रेणुककी काथमें हींग और सहत डालके सेवन करे तो अनेक प्रकारकी हिचकियोंको नष्टकरे यह धन्वंतरीकी आज्ञाहै ॥

कटुकीचूर्ण ।

चूर्णकटुकरोहिण्यामधुनासहयोजयेत् ।

हिकांप्रशमयेत्क्षिप्रंछर्दिचापिचिरोत्थिताम् ॥

अर्थ—कुटकीके चूर्णको सहतसे चाटे तो हिचकीको और वमन जो बहुत दिनोंकी वमनको दूर करे ॥

यवान्यादिलेह ।

यवानीकुटजारिष्टसप्तपर्णपटोलकैः ।

लेहश्छर्दिमतीसारंज्वरंबालस्यनाशयेत् ॥

अर्थ—अजमायन, इंद्रजौ, नीमकी छाल, सताना और पटोलपत्र इनकी अवलेह वमन, अतिसार, ज्वरको नष्टकरे ॥

हरीतक्यादिचूर्ण ।

हरीतक्याःकृतंचूर्णमधुनासहलेहयेत् ।

अधस्ताद्विहितेदोपेशीघ्रंछर्दिःप्रशाम्यति ॥

अर्थ—हरडके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो जहां एक या दो दस्त हुए और शीघ्रही बालककी छर्दि दूर होय ॥

वद्वत्थक्षार ।

अद्वत्थवल्कलंशुष्कंदग्धनिर्वापितंजले ।

तज्जलंपानमात्रेणछर्दिजयतिदुर्जयाम् ॥

अर्थ-पीपलकी सूखी छालको आगमें जलाय उसकी राखको जलमें डालके घोट देवे फिर उसके नितरे हुए जलको पीवे तो दुर्जय छर्दि दूर होय ॥

एलादि चूर्ण ।

एलानांजलमुस्तानांचूर्णपीतंसमाक्षिकम् ।
तुष्णांछर्दिमतोसारंशिशूनांसत्वरंहेरेत् ॥

अर्थ-छोटी इलायची, नेत्रवाला, और नागरमोथा इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो, बालकके वृषा, वमन, अतिसारको शीघ्र दूरकरे ॥

आम्रादि चूर्ण ।

आम्रादिलाजसिंधूत्थंसक्षौद्रंछर्दिनुद्भवेत् ॥

अर्थ-आम्रादिचूर्ण, स्त्रील, सैधानिमक इनके चूर्णको सहते मिलायके चाटे तो बालककी वमन होना दूर होय ॥

घनादिचूर्ण ।

घनशृंगीविपाणांचूर्णहंतिसमाक्षिकम् ।
वांतिज्वरंतथायोगोमधुनातिविपारजः ॥

अर्थ-नागरमोथा, काकडासिंगी, अतीस इनके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो वमन और ज्वर नष्ट होय अथवा अतिविष (अतीस) के चूर्णको सहतसे चाटे तो वमन और ज्वर दूर होय ॥

क्षीरछर्दिचिकित्सा ।

पीतंपीतंवमेद्यस्तुस्तन्यंतमधुसार्पिपा ।
द्विवाताकीफलरसंपंचकोलंचलेहयेत् ॥

अर्थ-जो बालक दूध पीर कर वमन कर देता होय, वह सहत और घीमें फटेरीके फलका रस और पंचकोलका चूर्ण डालके चाटे तो दूध डालना बंद होय ॥

पिप्पल्यादि चूर्ण ।

पिप्पलीमधुकानांचूर्णसमधुशर्करम् ।
मातुलुंगरसेनैवहिक्काछर्दिनिवारणम् ॥

अर्थ-पीपल, मुलहदीके चूर्णको सहत मिश्रीऔर विजोरेका रस मिलायके पीवे तो बालककी हिचकी और वमन करना दूर होय ॥

पिप्पल्यादि चूर्ण ।

पिप्पलीमधुकंजंवृरसालतरुपलवाः ।

चूर्णोयमधुनाचेतितृष्णाप्रशमनःशिशोः ॥

अर्थ-पीपल, मुलहठी, जामनेके और आमके कौमल पत्ते इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो बालककी तृषा दूर होय ॥

हिंवादि चूर्ण ।

हिंगुसैधवपालाशंचूर्णमाक्षिकसंयुतम् ।

लीढनिवारयत्याशुशिशूनामुद्धतांतृषाम् ॥

अर्थ-हींग, सेंधानिमक, पलासकी छाल, इनके चूर्णको सहत डालके पीवे तो घोर तृषाको निवारण करे ॥

आनाहवायु ।

घृतेनसिंधुविश्वैलाहिंगुभाङ्गीरजोलिहन् ।

आनाहवातिकंशूलंहन्यात्तोयेनवाशिशोः ॥

अर्थ-सैंधानिमक, साँठ, छोटी इलायची, हींग, भारंगी, इनके चूर्णको घृतमें मिलायके चाटे ऊपरसे गरम जल पीवे तो बालकका अफरा, वमन और शूल ये नष्ट होय ॥

रोदनपर ।

पिप्पलीत्रिफलाचूर्णघृतंक्षौद्रपरिष्ठुतम् ।

वालरोदितियस्तस्मैलेडुंदद्यात्सुखावहम् ॥

अर्थ-जो बालक बहुत रोता होय उसको पीपल, त्रिफलाके चूर्णको सहत घीमें सानके चटावे तो रोना बंद होय ॥

मलबद्धहोनेपर ।

पिष्ट्वागंधर्वबीजानित्वाखुविश्रान्निबुवारिणा ।

नाभौगुदेवालेपेनशिशूनारिचनंपरम् ॥

अर्थ-अंडीके बीजोंको और चूहेकी मँगनी और नींबूका रस डालके पीसे फिर इसका नाभिपर और गुदापर लेपकरे तो बालकको दस्त होय ॥

मृत्तिकारिचन ।

इंदुलोचननेत्राणिशिखिभागंहियोजयेत् ॥ त्रुटिगंधकमुर्दाडश
तपुष्पाविचूर्णिताः ॥ मापद्वयंगवांडुग्धैःसेवयेद्दिनपंचकम् ॥

रेचयेन्मृत्तिकांशुद्धांशिशूनांहितमौषधम् ॥

अर्थ—लीलायोथा, छोटीइलायची, गंधक, मुरदासींग और सोंफ ये क्रमसे १-३-और तीन तीन भागलेवे, चूर्ण करके २ मासे चूर्णको गौके दूधसे ५ दिन सेवनकरे तो, बालकने जो मिट्टीखाई हो उसे दस्तके द्वारा निकाल दे, यह बालकको हितकारी औषध है ॥

कार्यपर ।

यथातुदुर्वलोवालःखादन्नपिचवन्हिमान्। विदारीकंदगोधूमयव
चूर्णघृतप्लुतम् ॥ खादयेत्तदनुक्षीरंशृतंसमधुशर्करम् । सौवर्ण
सुकृतंचूर्णकुष्टमधुघृतंवचा ॥ मत्स्याक्षकःशंखपुष्पीमधुसर्पिः
सकांचनम् । अर्कपुष्पीघृतंक्षौद्रंचूर्णितंकनकंवचा ॥ सहेमचूर्
णकैडर्यंश्वेतदूर्वाघृतमधु । चत्वारोभिहिताःप्राश्याअर्धश्लो
कसमापनाः ॥ कुमारणांविपुर्मैधावलपुष्टिकराःस्मृताः ॥

अर्थ—जो बालक भोजन ठीक २ करनेपरभी लटता जाय वह विदारीकंद, गेंहूँ, और जो इनके चूर्णको घीमें सानके खाय ऊपरसे अघोटा सहत और मिश्री मिला चूर्णको पीवे तो हित होय । अथवा सुवर्णके चूर्णको कूट, सहत, घी, वच । एवं मछेली, संखाहूलीको सुवर्णचूर्ण और सहत घी।अथवा आकाहूती सौनेका चूर्ण और वच इनको सहत घृतके साथ अथवा सुवर्णका चूर्ण कायफल सपेददूब, घृत और सहत । ये चार योग आधे २ श्लोकमें कहेहैं इनमेंसे प्रत्येक प्रयोग बालकोंके देहका, बुद्धिका और बलका पुष्टकरनेवाला है ॥

लाक्षादितैल ।

लाक्षारसेसमेतैलमस्तुन्यथचतुर्गुणे । रास्त्राचंदनकुष्टान्दवा
जिगंधानिशायुतैः॥शताह्वदारुयष्ट्याह्वमूर्वातिकाहरेणुभिः ।
संसिद्धंज्वररक्षाप्रंचलवर्णकरंशिशोः ॥

अर्थ—लाखके रसमें बराबरका मोटा तेल और चौगुना दहीका जल मिलावे । फिर रासना, चंदन, कूट, नागरमोथा, असगंध, हलदी, सतावर, देवदारु, मुलहठी, मूर्वा, कुटकी, और रेणुक द्रव्य इन सब औषधोंका थल्क डालके तेल सिद्ध करे यह ज्वर, राक्षसोंको नष्ट करे तथा बालकके बल वर्णको बढ़ावे है ॥

अश्वगंधाघृत ।

पादकल्केश्वगंधायाःक्षीरेष्टगुणितेपचेत् ।
घृतदयंकुमाराणांपुष्टिकृद्बलवर्धनम् ॥

अर्थ—एक हिस्से असगंधके कल्कमें आठगुना दूध डालके धी पकावे, यह बालकोंको पुष्ट करे और बलको बढ़ावे ॥

लेप ।

मुस्ताकूष्मांडर्वाजानिभद्रदारुकलिंगकान् ।

पिष्ट्वातोयेनसंलिपेलेपोयंशोथहृच्छिशोः ॥

अर्थ—नागरमोथा, पेटके बीज, देवदारु और इन्द्रजो इनको जलसे पीसके लेप करे तो बालककी सूजन दूर होय ॥

नाभिशोथ ।

मृत्पिण्डेनाम्रितसेनक्षीरसित्केनसोष्मणा ।

स्वेदयेदुत्थितांनाभिंशोथस्तेनोपशाम्यति ॥

अर्थ—मिट्टीके गोलेको आगमें तपायके दूधमें बुझावे फिर इसका नाभिमें अफारा देवे तो उठी हुई नाभिकी सूजन शांत होय ॥

नाभिपाक ।

नाभिपाकेनिशालोध्रप्रियंगुमधुकैःशृतम् । तैलमभ्यंजनेऽस्त

मेभिश्चात्रावधूलनम् ॥ दुग्धेनच्छागशकृतानाभिपाकेवचूर्ण

नम् । त्वक्चूर्णैःक्षीरिणांवापिकुर्याच्चंदनरेणुना ॥

अर्थ—नाभिके पकनेपर हलदी, लोध, फूलमियंगू, मुलहदी, इनके काढेसे तैलकी मालिश करे और ये पूर्वोक्त औषधोंसे उद्धूलन करे । तथा बकरीकी भेंगनीको दूधमें पीसके नाभिपाक करे अथवा दालचीनीके चूर्णको क्षीरीवृक्षके और चंदन और रेणुके साथ लेप करे तो नाभिपाक दूर होय ॥

गुदपाक ।

गुदपाकेतुवालानापित्तघ्नीकारयेत्क्रियाम् । रसांजनंविशेषेण

पानलेपनयोर्हितम् । शंखयष्टचंजनैश्चूर्णैश्शिशूनांगुदपाकनुत् ॥

अर्थ—बालककी गुदापक आवे तो पित्तनाशक क्रिया करे तथा विशेष करके रसोतका सेवन और लेप करनाहित है तथा शंख मुलहदी और सुरमेका चूर्ण बालकगुदाके पाकको दूर करे ॥

पारिगर्भक ।

पारिगर्भकरोगेतुयुज्यतेवह्निदीपनम् ॥

अर्थ—बालककी पारिगर्भक रोगपर वह्निदीपक पदार्थ देने चाहिये ॥

क्षतविस्फोटविसर्प ।

पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राक्वथितंपिबेत् ।

क्षतविस्फोटज्वराणांशांतयेवालकस्यच ॥

अर्थ—पटोल, त्रिफला, नीम, हलदी, इनके काथको पीवे तो घाव, विस्फोट और बालकका ज्वर दूर होय ॥

सिध्मपामाविचर्चिका ।

गृहधूमनिशाकुप्टराजिकेंद्रयवैःशिशोः ।

लेपस्तक्रेणहंत्याशुसिध्मपामविचर्चिकाः ॥

अर्थ—घरका धूमसा, हलदी, कूठ, राई, और इन्द्रजो इनको छाछसे पीस लेप करे तो बालककी छीप खजली और विचर्चिका दूर हो ॥

तालुपाक ।

तालुपाकेयवक्षारमधुभ्यांप्रतिसारणम् ॥

अर्थ—बालकके तालुपाक पर जवाखारको सहतमें मिलायके मंजन करे ॥
दंतोद्भेदजरोग ।

दंतपालितुवालानांचूर्णेनप्रतिसारयेत् । धातकीपुष्पपिप्पल्या

धात्रीफलरसेनवा । दंतोत्थानभवारोगाःपीडयंतिनवालकम् ॥

अर्थ—बालकोंकी दंतपालीको बुझे हुए चूनेसे मले तथा धायके फूल, पीपल, आँवला, इनके रससे धिसे तो बालकोंके दांत निकलनेके जो रोग होते हैं वह कदापि पीडा नहीं करे ॥

अन्य यत्न ।

जातेदंतोहिशाभ्यांतियतस्तद्धेतुकागदाः । आचीगतंपांडुरसिंधु

वारमूलंशिशूनांगलकेनिबद्धम् ॥ हितंतुदंतोद्भववेदनायांनिः

शेषयत्नाधिकमेतदेव ॥

अर्थ—जो दांतोंके उगनेके समय बालकोंके रोग होते हैं वह जब दांत उग आते हैं तब स्वयं शांति हो जाते हैं पूर्वकी तरफ पीले रंगका सहनालूकी जड़को बालकके गलेमें बांध दीना जावे तो वह बालकके दांत निकलते समय पीडाके वास्ते अत्यंत हित है सब प्रयत्नोंमें यह उत्तम उपाय है ॥

मुत्तरोग ।

जातीपत्रामृतंद्राक्षापाठाद्रव्यैःफलत्रिकैः ।

काथःक्षौद्रयुतःशीतोमंडूपाभिर्मुखातिजित् ॥

अर्थ—जावित्री, गिलोय, दाख, पाठ और त्रिफला और चित्रक इनके काथमें सहत डालके शीतल कर कुड़े करे तो मुखपाक दूर होय ॥

मुखस्राव ।

सारिवातिकूलोघ्राणांकपायोमधुकस्पच ।

संघ्राविनिमुखेशस्तोधावनार्थेशिशोःसदा ॥

अर्थ—सारिवा, कुटकी, लोध, और मुलहटी इनके काथसे मुखको धोवे तो बालकके मुखसे लारका वहना दूर होय ॥

मुखपाक ।

मुखपाकेतुवालानामाप्रसारमयरजः ।

गैरिकंक्षौद्रसंयुक्तंभेपजंसरसांजनम् ॥

अर्थ—बालकके मुखपाक पर आमकी गुठली, लोहचूर्ण, गेरू, सहत और रसोत यह परमोत्तम औषध है ॥

मुखपाकपर लेप ।

दार्वीयपृथभयाजातोपत्रक्षौद्रेस्तुधावनम् ।

अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रेर्मुखपाकेप्रलेपनम् ॥

अर्थ—दारुहदली, मुलहटी, हरड, चमेलीके पत्ते और सहत अथवा पीपलकी छाल और पत्ते इनमें सहत डालके लेप करे तो बालकके मुखके छाले दूरहोया तालुकंटकपर ।

हरीतकीवचाकुष्ठकल्कंमाक्षिकसंयुतम् ।

पीत्वाकुमारःस्तन्येनमुच्यतेतालुकंटकात् ॥

अर्थ—हरड, बच, कूठ, इनके कल्कमें सहत डालके माताके दूधसे पीवे तो बालक तालुकंटकसे छूटजावे ॥

मूत्रकृच्छ्रपर ।

भेषामृतानागरवाजिगंधाधात्रोत्रिकटैर्विहितःकपायः ।

क्षौद्रेणपीतःशमयत्यवश्यंमूत्रस्यकृच्छ्रंपवनप्रभूतम् ॥

अर्थ—नागरमोथा, गिलोय, सोंठ असर्गंध, आवले और गोखरू इनका काय शीतलकर सहत डालके पीवेतो बालकके बादीफा मूत्रकृच्छ्र अवश्य दूर होय ॥

क्षतविस्फोटविसर्प ।

पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राक्वथितंपिवेत् ।

क्षतविस्फोटज्वराणांशांतयेवालकस्यच ॥

अर्थ—पटोल, त्रिफला, नीम, हलदी, इनके काथको पीवे तो घाव, विस्फोट और बालकका ज्वर दूर होय ॥

सिध्मपामाविचर्चिका ।

गृहधूमनिशाकुष्टराजिकेंद्रयवैःशिशोः ।

लेपस्तक्रेणहंत्याशुसिध्मपामविचर्चिकाः ॥

अर्थ—धरका धूमसा, हलदी, कुंठ, राई, और इन्द्रजो इनको छाछसे पीस लेप करे तो बालककी छीप खजली और विचर्चिका दूर हो ॥

तालुपाक ।

तालुपाकेयवक्षारमधुभ्यांप्रतिसारणम् ॥

अर्थ—बालकके तालुपाक पर जवाखारको सहतमें मिलायके मंजन करे ॥

दंतोद्रेदजरोग ।

दंतपालितुवालानांचूर्णेनप्रतिसारयेत् । धातकीपुष्पपिप्पल्या

धात्रीफलरसेनवा । दंतोत्थानभवारोगाःपीडयंतिनेवालंकम् ॥

अर्थ—बालककी दंतपालीको बुझे हुए चूनेसे मले तथा धायके फूल, पीपल, आंवला, इनके रससे विसे तो बालकके दांत निकलनेके जो रोग होते हैं वह कदापि पीडा नहीं करे ॥

अन्य यत्न ।

जातेदंतेहिशाम्भंतिथतस्तद्धेतुकागदाः । प्राचीगतंपांडुरसिंधु

वारमूलंशिशूनांगलकेनिबद्धम् ॥ हितंतुदंतोद्भववेदनायांनिः

शेषयत्नाधिकमेतदेव ॥

अर्थ—जो दांतके उगनेके समय बालकके रोग होते हैं वह जब दांत उग आते हैं तब स्वयं शांति हो जाते हैं पूर्वकी तरफ पीले रंगका सहजाळकी जड़को बालकके गलेमें बांध दीनी जावे तो वह बालकके दांत निकलते समय पीडाके वास्ते अत्यंत हित है सब भयनोंमें यह उत्तम उपाय है ॥

मुसरोग ।

जातीपत्रामृतंद्राक्षापाठाद्रव्यैःफलत्रिकैः ।

काथःक्षौद्रयुतःशीतोगंडूपाभिर्मुखातिजित् ॥

अर्थ—जाबित्री, गिलोय, दाख, पाठ और त्रिफला और चित्रक इनके काथमें सहत डालके शीतल कर कुल्ले करे तो मुखपाक दूर होय ॥

मुखसाव ।

सारिवातिकलोध्राणांकपायोमधुकस्यच ।

संसाविनिमुखेशस्तोधावनार्थंशिशोःसदा ॥

अर्थ—सारिवा, कुटकी, लोध, और मुलहटी इनके काथसे मुखको धोवे तो बालकके मुखसे लारका वहना दूर होय ॥

मुखपाक ।

मुखपाकेतुवालानामाप्रसारमर्यरजः ।

गैरिकंक्षौद्रसंयुक्तंभेषजंसरसांजनम् ॥

अर्थ—बालकके मुखपाक पर आमकी गुठली, लोहचूर्ण, गेरू, सहत और रसोत यह परमोत्तम औषध है ॥

मुखपाकपर लेप ।

दावीयष्टचभयाजातीपत्रक्षौद्रैस्तुधावनम् ।

अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाकेप्रलेपनम् ॥

अर्थ—दारुहदली, मुलहटी, हगड, चमेलीके पत्ते और सहत अथवा पीपलकी छाल और पत्ते इनमें सहत डालके लेप करे तो बालकके मुखके छाले दूरहोया

तालुकंदकपर ।

हरीतकीवचाकुष्टकल्कंमाक्षिकसंयुतम् ।

पीत्वाकुमारःस्तन्येनमुच्यतेतालुकंटकात् ॥

अर्थ—हरड, वच, कूट, इनके कल्कमें सहत डालके माताके दूधसे पीवे तो बालक तालुकंटकसे छूटजावे ॥

मूत्रकृच्छ्रपर ।

मेधामृतानागरवाजिगंधाधानोत्रिकंटैर्विहितःकपायः ।

क्षौद्रेणपीतःशमयत्यवश्यंमूत्रस्यकृच्छ्रंपवनप्रभूतम् ॥

अर्थ—नागरमोथा, मिलोय, साँठ असर्गंध, आवले और गोखरू इनका काथ शीतलकर सहत डालके पीवेतो बालकके वादीका मूत्रकृच्छ्र अवश्य दूर होय ॥

यवक्षारकाय ।

यवक्षारयुतःक्वाथःस्वादुकंटकसंभवः ।

पीतःप्रणाशयत्याशुमूत्रकृच्छ्रंकफोद्भवम् ॥

अर्थ—जवाक्षार डालके गोखरुका क्वाथ पीवेतो कफजन्य मूत्रकृच्छ्र बालकका दूरहोय ॥

वातरोगपर ।

एरंडतैलंसपयःपिवेद्योगव्येनमूत्रेणतदेवपीत्वा ।

सगुग्गुलुःप्रौढरुजंप्रवृद्धांसवातवृद्धिसहसानिहंति ॥

अर्थ—अंडीका तेल दूधमें डालके पीवे अथवा गोमूत्रके साथ गुग्गुलु डालके अंडीका तेल पीवे तो बालकोंकी घोर वातव्याधिजन्य पीडा दूरहोय ॥

मूत्रकृच्छ्रपर ।

कर्पूरवार्तिमृदुनालिंगच्छिद्रेनिधारयेत् ।

शीघ्रंतयामहाघोरान्मूत्रबंधात्प्रमुच्यते ॥

अर्थ—कर्पूरकी बत्ती नरम बनायके लिंगके छिद्रमें रखेतो उससे घोर मूत्रबंधकी बाधा शीघ्र दूरहोय ॥

मूत्रग्रहण ।

कणोपणसिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैधवैःकृतः ।

मूत्रग्रहेप्रयोक्तव्यःशिशूनालेहउत्तमः ॥

अर्थ—पीपल, कालीमिरच, मिश्री, सहत, छोटी इलायची और सैधानिमक इनका अवलेह बनायके बालकोंके मूत्ररोधपर देना उत्तमहै ॥

अपचीरोग पर ।

वनकार्पासिकामूलंतंदुलैःसहयोजितम् ।

पक्त्वातुपोलिकांखादेदपचीनाशकारिणीम् ॥

अर्थ—वनकपास (नादनवन) की जड़को चावलोंके साथ पकायके पोली (पूड़ी) बनायके खाय तो बालकोंकी अपची रोगकी नष्ट करे ॥

उन्मादपर ।

शिरीषनक्तमालानांबीजैरंजितलोचनः ।

चित्तोन्मादंनिहंत्याशुसापस्मारापतंत्रिकम् ॥

अर्थ-सिरस, कंजा, इनके बीजको घिसके अंजन करे तो चित्तका उन्मत्तपना अपस्मार और अपतंत्रिक रोग दूर हो ॥

रक्तपित्तपर ।

वासायाःस्वरसःसिद्धःसितामधुसमन्वितः ।

पर्णेश्वटरोहाणारक्तपित्तविनाशयेत् ॥

अर्थ-वासेका स्वरस मिश्री और सहत तथा बडके कोमलपत्ते यह रक्तपित्त रोगको नष्ट करे ॥

रक्तपित्तपर ।

पालाशपुष्पकाथेनवासायाःस्वरसेनवा ।

चतुर्गुणेनसंसिद्धंरक्तपित्तहरंघृतम् ॥

अर्थ-पालाशके फूलकी काथसे अथवा वासेके स्वरस चौगुनेसे घृत सिद्ध करके पीवे तो रक्तपित्त दूर होय ॥

नलसीरफूटे उसका यत्न ।

रसोदाडिमपुष्पाणांदूर्वायाःस्वरसेनवा ।

नस्येननाशयेत्तूर्णनासिकारक्तमुद्धतम् ॥

अर्थ-अनारके फूलोंका रस, अथवा दूबके स्वरसकी नस्यसे नाकसे गिरते हुए रुधिरको बंद करे ॥

वातगुल्म ।

त्रिकटुकमजमोदासैन्धवजीरकेद्वेसमचरणघृतानामष्टमोहिंशु

भागः । प्रथमकवलभोजीसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिजठराग्निं

वातगुल्मनिहंति ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, अजमायन, संधानिमक, जीरा और काला जीरा ये सात वस्तु प्रत्येक एक २ भाग लेवे और भुनी हींग १ भागले इनका चूर्ण प्रथम भोजनके आसमें डाल घृतमें सानके साथ तो जठराग्निको तेज करे और वायुगोलेको नष्ट करे है ॥

वातरोगोंपर ।

पुनर्नवैरंडनवातसीभिःकर्पासजैरस्थिभिरारनालैः ।

स्विन्नैरमीभिस्त्वित्सद्भिरेवस्वेदःसमीरार्तिहरोनराणाम् ॥

अर्थ-पुनर्नवा, अंडकी जड़, नई अलसी, कपासकी लकड़ी और कांजी इन सब वस्तुओंके भपारेसे स्वेदित करे तो यह मनुष्योंके वादीके रोगोंको नष्ट करे ॥

अपस्मारपर ।

कूष्मांडकरसंकृत्वामधुकंपरिपेपयेत् ।

अपस्मारविनाशायतत्पिवेत्सप्तवासरान् ॥

अर्थ—कुल्लंडेका रस करके उसमें मुलहठीको पीस लें, इस जलको ७ दिन पीवे तो मृगी रोग दूर हो ॥

अपस्मारपर ।

गोसर्पिःसाधितंपूतंदधिक्षीरशकृद्रसैः ।

चातुर्थिकंज्वरोन्मादंसर्वापस्मारनाशनम् ॥ .

अर्थ—दही, दूध और गोबरके रसमें गौका घृत सिद्ध करके सेवन करे और पीवे तो चातुर्थिकज्वर, उन्माद और अपस्मार नष्ट होय ॥

उदावर्तपर ।

हिंगुमाक्षिकसिंधूत्थैःकृत्वावर्तिसुवर्तिताम् ।

घृताभ्यक्तांगुदेदद्यादुदावर्तविनाशिनीम् ॥

अर्थ—हींग, सहत और संधानिमककी बत्ती बनाय घीमें चुपडके गुदामें बत्ती रखे तो उदावर्त रोग दूर हो ॥

हृद्रोगपर ।

शुंठीकणापुष्करकेतकीनांविधायचूर्णककुभत्वचोवा ।

रास्नान्वितंवामधुनावलीढंहृद्रोगमेतच्छमयत्युदयम् ॥

अर्थ—सोंठ, पीपर, पुहकर, केतकी, इनके चूर्णको या कोहके चूर्णको रास्ना मिलायके सहत चाटे तो घोर हृदयरोग दूर होय ॥

मूर्च्छाचिकित्सा ।

कोलास्थिपद्मकोशीरचंदननागकेसरम् ।

लीढंशौद्रेणवालानामूर्च्छानाशनमुत्तमम् ॥

अर्थ—वेरकी गुठली, पद्मास, खस, चंदन, नागकेशर इनके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो बालकोंकी मूर्च्छा नष्ट होय ॥

दूसरा पत्र ।

द्राक्षामामलकेस्विन्नंपिष्ट्वाशौद्रेणभक्षयेत् ।

सर्वदोषभवामूर्च्छासज्वरानश्यतिध्रुवम् ॥

अर्थ—दाख, आमले, दोनोंको सेककर पीस डाले, फिर सहतसे चाटे तो सर्व दोषजन्य मूर्च्छा और ज्वरपुक्त मूर्च्छा नष्ट होय ॥

तीसरा यत्न ।

शीताः प्रदेहामणयः सहाराः सेकावगाहाव्यजनस्यवाताः ।

लेह्यान्नपानादिसुगंधशीतमूर्च्छासुसर्वासुपरंप्रशस्तम् ॥

अर्थ—शीतल लेप, मणियोंको और हारोंको धारण करना, जलका तरडा, जलमें प्रवेशकर स्नान करना, पंखेकी पवन तथा अवलेह और अन्नपानादि सब सुगंधित और शीतल ये सब मूर्च्छाओंमें उत्तम कहेहै ॥

तिमिररोगपर ।

जीरकद्वयमम्लीकावृक्षाम्लंदाडिमन्वितम् ।

एलाद्रकंरसंशीघ्रंतिमिरंहंतिदुस्तरम् ॥

अर्थ—दोनों जीरे, इमलीकी खटाई, डासरा अनारदाना, इलायची और अदरकका रस मिलायके पीवेतो शीघ्र तिमिर रोग दूरहोय ॥

दाहरोगपर ।

पद्मकंचंदनंतोयमुशीरंश्लक्ष्णचूर्णितम् ।

क्षीरेणपीतंवालानांदाहंशमयतिध्रुवम् ॥

अर्थ—पद्मास, चंदन, नेत्रवाला, खस, इनका बारीक चूर्णकर दूधके साथ पीवेतो बालकोका दाह निश्चय दूरहोय ॥

दूसरा यत्न ।

कर्पूरचंदनोशीरलिप्तांगकटूफलैरपि ।

पल्लवप्रस्तरेधीमान्स्थापयेदाहपीडितम् ॥

अर्थ—कर्पूर, चंदन, खस और कायफल इनके चूर्णको केलके पत्तोंपर छिड़के दाहवाले रोगीको सुलावे ॥

परिपेकावगाहेषुव्यजनानांचसेवनैः ।

शस्यतेशिशिरंतोयंतृष्णादाहोपशांतये ॥

अर्थ—जलका तरडा देना जलमें पसके स्नान, पंखेका हांकना, इत्यादि सब शीतल जलसे करेतो तृष्णा दाह ये शांत होवे ॥

कृमिरोग पर ।

मुस्ताषिडंगमगधासुपर्णीकंपिष्टकादाडिमवैत्वकेन ।

कृमीन्हरेत्सत्त्वरमुग्रवेगाद्रोगेषुलीडंशमयत्यसंशयम् ॥

अर्थ—नागरमोधा, वायविडंग, पीपल, मूसाकरनी, कवीला, अनारदाना, और वेलगिरी इनके सेवनसे कृमिरोग तत्काल नष्ट होय और कीड़े पेटसे गिरजावे ॥

पांडुरोग और परिणामशूलपर ।

यवचूर्णक्रिमिरिपुमगधामधुनासह ।

भक्षयेत्पांडुरोगघ्नपक्तिशूलहरंपरम् ॥

अर्थ—इन्द्रजौका चूर्ण, वायविडंग, पीपल इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटेतो पांडुरोग और परिणामशूल ये दूरहो ॥

स्वभेदपर ।

मागधीमागधामूलंनागरंमरिचान्वितम् ।

क्षौद्रेणलीढंफजंस्वरभेदंव्यपोहति ॥

अर्थ—पीपल, पीपरामूल, सोंठ, काली मिरच इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटेतो फफजन्य स्वरभेद दूरहोय ॥

दूसरा उपाय ।

यष्ट्याह्वजीवनीमूर्वाकाकोलीवटसाधितम् ।

पेयंपित्तोद्भवंहंतिस्वरभेदंसुदारुणम् ॥

अर्थ—मुलहठी, जीवनी, मूर्वा, वेर, और बडकी छालसे बनाया गया चटक पित्तजन्य स्वरभेदको दूरकरे ॥

पांडुरोगपर घृत ।

अयोरजैस्त्रैफलचूर्णयुक्तैर्गोमूत्रसिद्धैर्मधुनावलीढैः ।

पांडुचकासंचसतक्रपथ्यंशूलंसमूलंशमयेदवश्यम् ॥

अर्थ—लोहका चूरा, त्रिफलेका चूर्ण इनको गोमूत्रमें डालकर घृतको सिद्धकरे यह पीलिया, खासी, शूल इनको समूल नष्टकरे ॥

क्षयपर ।

शिलाजितव्योमविडंगलोहताप्याभयाभिर्विहितोवलेहः ।

सर्पिर्मधुभ्यांविधिनाप्रयुक्तःक्षयंविधत्तेसहसाक्षयस्य ॥

अर्थ—जिलाजीत, अभ्रक, वायविडंग, लोहका तुरादा सुवर्णमाक्षिक इनको सहत और घृतमें मिलायके खाय तो बालोंका क्षय नष्टहो ॥

नवनीतसिताक्षौद्रंलीढाक्षीरभुजःपरम् ।

करोतिपुष्टिकायस्यक्षतक्षयमपोहति ॥

अर्थ—मक्खन, मिथ्री, और सहत इनको गौके दूधमें मिलायके पीवे तो देहकी पुष्टताकरे और हृदय रोगको और क्षयको नष्टकरे ॥

वासामहौपधाव्याघ्रीगुडूचीभिःशृतंजलम् ।

प्रपीतंशमयत्याशुश्वासंकासमपोहति ॥

अर्थ—वासा, सोंठ, कटेरी, और गिलोय इनको जलमें डालके काथकर पीवे तो घोर बढी हुई श्वासको नष्टकरे ॥

विस्फोटक ।

गर्दभिदुग्धपानेनतुलसीपत्रभक्षणात् ।

शीतलातोयपानेनाभिपेकोत्रप्रशस्यते ॥

अर्थ—गर्दके दूध पीनेसे और तुलसीके पत्र भक्षण करके शीतल जलसे शीतलाको अभिपेक करे ॥

भस्मनाकेचिदिच्छंतिकेचिद्गोमयेरेणुना ।

कृमिपातभयाच्चापिधूपयेत्सुरसादिभिः ॥

अर्थ—कौई राख और गौके गोबर और रेणुक इनकी धूनी कृमीके रोग नष्ट करे तथा कृमि निकालको राई, सुरसारसादि काथ पीवे तो कृमि-रोग नष्ट हो ॥

चंदनंवासकोमुस्तागुडूचीद्राक्षयासह ।

एतच्छीतःकपायस्तुशीतलज्वरनाशनः ॥

अर्थ—चंदन, अडूसा, नागरमोथा, गिलोय, दासके साय खाप टसका काथ शीतल करके पीया हुआ शीतलाके ज्वरको नष्टकरे ॥

नेत्रोन्मोष ।

ससैधवंलोभ्रमध्वाज्यघृष्टंसावीरपिष्टंसितवस्त्रवद्धम् ।

आश्रोतनंतन्नयनस्यकुप्यात्कंठं चदाहं चरुर्जं चहन्यात् ॥

अर्थ—सेधानिमक, लोध, सहत, पांको पिमके और कांजीमें पीस सपेंद कपडेमें बांधके नेत्रोंके ऊपर आश्रोतन कर्म करे तो नेत्रमें गुजली होना, दाह और नेत्रका दर्द दूर होय ॥

चंदनादि लेप ।

चंदनंमधुकंलोध्रंजातिपुष्पाणिगैरिकम् ।

प्रलेपोदाहरोगघ्नस्तोयाभिष्यंदनाशनः ॥

अर्थ—चंदन, मुलहठी, लोध, चमेलीके फूल और गेरुको पीसके नेत्रोंपर लेप करे तो नेत्रोंकी जलन, ढलका और सब अभिष्यंद रोगोंको दूर करे ॥

अंजन ।

शंखस्यभागाश्चत्वारस्तदधेनचपिप्पली । वारिणातिमिरंहंति

अर्बुदंहंतिमस्तुना । चिपिटमधुनाहंतिस्त्रीक्षरिणतदुन्नतम् ॥

अर्थ—चार भाग शंखके और आधे भाग पीपल मिलायके घोट गोली बनाय लेय, जलकेसाथ तिमिर रोगको, दहीके जलसे नेत्रार्बुद, सहतमें घिसके नेत्रोंका चिपकना और स्त्रीके दूधमें घिसके लगावे तो अधिक दूखनेको दूरकरे ॥

व्योपंचशृंगचमनःशिलांचकरंजवीजंचसुपिष्टमेतत् ।

कंदूर्दितानामथवर्त्मनांतुश्रेष्ठंशिशूनांनयनेविदध्यात् ॥

अर्थ—त्रिकटा, काकडासांगी, मनसिल, कंजेके बीज, इनको जलमें पीसके गोली बनावे इसे घिसके जिसके नेत्रोंमें खुजली पलकके रोग हो उन बालकोंके नेत्रोंमें अंजन करे ॥

कर्णरोगपर ।

कपिलामातुलिगाम्लशृंगवेररसंशुभम् ।

सुखोष्णंपूरयेत्कोष्णंकर्णशूलोपशान्तये ॥

अर्थ—कवीला, विजोरेका रस, और अदरखका रस इनको सुहाते २ गरम २ को कानोंमें डाले तो कानका शूल दूर होय ॥

कानकी पीडापर ।

अर्कस्यपत्रंपरिणामपीतंतैलेनलितंसशिखाश्रितसम् ।

आपीड्यतोयंश्रवणेनिपिक्तंविनिर्हरेद्वैबहुवेदनांच ॥

अर्थ—आर्कके पीले पके पत्तोंको तेलमें लेप कर आगमें तपायके फिर रस निचोड़ लेवे इसको कानमें डाले तो कानकी पीडा दूर होय ॥

मस्तकरोगपर ।

घृष्टंरसांजनंनार्याःक्षरिणक्षोद्रसंयुतम् ।

प्रशस्यतेशिरोरोगेस्त्रावेवापूतिकर्णिके ॥

अर्थ—रसोतको स्त्रीके दूधमें घिस और सहत मिलायके कानकी नाडी रोग स्याव तथा कानके दर्दको दूर करे ।

प्रथमदिवसनिदान ।

प्रथमेदिवसेनाम्नानंदिनीक्रमतेशिशुम् । दद्वर्हितस्यबालस्य
ज्वरःस्यात्प्रथमततः ॥ गात्रेशोफस्तदास्वेदोनाहारेच्छाभृशं
भवेत् । छर्दिर्मूर्च्छाचकंपश्चशोपोदीनस्वरस्तथा ॥

अर्थ—प्रथम दिनमें नंदनीनामक बालग्रह इस बालकको ग्रसे है, उसके ग्रसनेसे बालकको प्रथम ज्वर होय, देह सूज जाय, पसीने आवे, अफरा, अरुचि, वमन करे, मूर्च्छा, कंप, शोप होय और स्वर बहुत मेद पड जावे ॥

द्वितीयदिवसनिदान ।

द्वितीयेदिवशेबालंगृण्हातिचसुनंदनः । ततोभवेज्वरःपूर्वसं
कोचोहस्तपादयोः ॥ दंतान्खादतिश्वसितिनिमीलयतिचक्षु
पी । आहारचनगृण्हातिदिवारात्रौचरोदिति ॥ अक्षिरोगंछर्द
नंचभवेदितिपुनःपुनःकृशत्वंजायतेत्यंतंचिन्हमेतत्प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ—दूसरे दिनमें सुनंदनग्रह बालकको ग्रसे कि उस बालकको प्रथम ज्वर आवे हाथ पैरोंको सिकोडे दांतोंको खाय, श्वास ले, नेत्र मीचे, दूध न पीवे, दिनरात रोया करे, नेत्ररोग, वमन ये वारंवार होवे और वह दिनपर दिन सुखता हुआ चला जाय ये चिह्न होते हैं ॥

तृतीयदिवसनिदान ।

तृतीयेन्दिचगृण्हातिघंटालीबालकंग्रही ।
तच्चेष्टारोचकोद्वेगःकासःश्वासश्चशोपणम् ॥

अर्थ—तीसरे दिन घंटालीनाम बालग्रह इस बालकको दबाताहै उसके दबानेसे बालकको अरुचि, उद्वेग, खांसी, श्वास और सुखना ये रोग होते हैं ॥

गजदंतादिलेप ।

गजदंताश्चगोदंतास्तथाकेशैस्तुचांजनी ।

अजाक्षीरेणसंपिप्यततोबालंप्रलेपयेत् ॥

अर्थ—हाथीदांत, गौका दांत और अंजनके केश इनको बकरीके दूधमें पीसके बालकको लेप करे ॥

निंवादि घृष ।

धूपयेन्निवपत्राणिनखसर्पपराजिकाः ।

लेपितोधूपितोवालःसुखमाप्नोतिनिश्चितम् ॥

अर्थ—नींबूके पत्तोंकी धूनी देय, तथा नख, सरसों और राई इनका लेप कर उद्धूलन करे तो बालकको सुख होय ॥

चतुर्यदिवसनिदान ।

चतुर्थेन्हिचगृण्हातिकंठकालीग्रहीशिशुम् ।

तच्चेष्टारोचकोद्वेगःफेनोद्गारोदिगीक्षणम् ॥

अर्थ—चौथे दिन बालकको कंठकाली ग्रह आक्रमण करे है, उसके ग्रसनेसे अरुचि, उद्वेग, मुखसे झाग डालना और दशों दिशामें देखे है ॥

चौथे दिवसकी चिकित्सा ।

गजदंताहिनिर्मोकंराजीमूलंचलेपयेत् ।

धूपयेत्सर्पपारिष्टकेशैर्मुचतिसाग्रही ॥

अर्थ—हांथीदांत, साँपकी काँडली, राई और मूली इनका लेप करे तथा सरसों, नीमके पत्ते और बालोंकी धूनी देवे तो वह ग्रह बालकको छोड़ दे ॥

पंचमदिवसनिदान ।

पञ्चमेह्लित्वहंकारीग्रहीगृण्हातिवालकम् ।

तच्चेष्टाजृम्भणश्वासोमुष्टिवंधोऽर्धवीक्षणम् ॥

अर्थ—पांचवेदिन अहंकारी बालग्रह बालकको दबाता है तब बालक वारं-वार जँभाई ले, श्वास चले, हाथकी मुट्टी बांधे और आधी आंखसे देखे ॥

अन्त ।

सिततालवचालोभ्रमेपशृंगीःप्रलेपयेत् । लशुनंनिवपत्राणिसि

द्धार्थैर्धूपयेत्ततः । एवंमुंचतिसावालंनात्रकार्याविचारणा ॥

अर्थ—इसके सपेद हरताल, वच, लोध और भेटासिगीका लेप करे । और लहसन नीमके पत्ते, सपेद सरसोंकी धूनी देय, इस प्रकार करनेसे बालक उस अहंकारी ग्रहकी बाधासे छुट जावे ॥

छठेदिवसमौलक्षण ।

पष्टेहनिचवालंतुग्रहीगृह्णातिपष्टिका ।

तच्चेष्टागात्रविक्षेपोहारस्यरोदनमोहने ॥

अर्थ—छठे दिन पष्ठिका नामक बालग्रह बालकको दवाता है, उसके दवा-
नेसे देहको इधर उधर पटके, हँसे, रोवे और कभी मूर्च्छित हो जावे ॥

यत्न ।

कुप्टगुगुलुसिद्धार्थगजदंतैर्घृतान्वितैः ।

धूपयेत्पयेच्चापिततोमुंचतिसाग्रही ॥

अर्थ—कूठ, गुगल, सपेद सरसों हाथीका दांत इनको घीमें सानके धूनी देवे
और इन्ही दवाओंका लेप करे तो वह बालक पष्ठिका ग्रहके दोषसे छूट जाय ॥

सातवेदिवसका निदान ।

सप्तमेदिवसेनाम्नीसिंहिकाक्रमतेशिशुम् ।

तच्चेष्टाजृम्भणंश्वासोमुष्टिवंधस्तथैवच ॥

अर्थ—सातवेदिन इस बालकको सिंहिका नामका बालग्रह दवाताहै कि
जिससे जंभाई, श्वास और सुट्टीचांधै ॥

यत्न ।

मेपशृंगवचालोभ्रहरितालमनःशिलाः ।

एकत्रपिष्ठातत्सर्वततोवालंप्रलेपयेत् ॥

अर्थ—मेढासिंगी, वच लोध, हरताल और मनसिल, इनको एकत्र पीसकर
बालकके देहमें लेप करे तो सिंहिकाके दोष दूर होय ॥

अष्टमदिवसका निदान ।

अष्टमेदिवसेवालंरेवतीग्रसतेत्वरम् ।

कासतेश्वासतेचैवगात्रसंकोचतेभृशम् ॥

अर्थ—आठवे दिन इस बालकको रेवती ग्रह ग्रसेहै कि जिस्से बालक खांसि
श्वासचले और निरंतर देहको सकोडै ॥

यत्न ।

आपामार्गमुशीरंचपिप्पलीचित्रकंतथा ।

अजामूत्रेणसंपिप्यततोवालंप्रलेपयेत् ॥

अर्थ—चिरचिरा, खस, पीपल, चित्रक, इनको बकरेके मूत्रमें पीसके देहको
लेप करे तो रेवती ग्रहका दोष दूर होय ॥

नवमदिवसनिदान ।

नवमेदिवसेवालमेपीगृह्णातिनिश्चितम् ।

तच्चेष्टात्रासनोद्वेगःसमुष्टिद्वयखादनम् ॥

अर्थ—नौवेदिन वालकको मेपी ग्रह दवाताहै, उसकी यह चेष्टाहै कि डरपे उद्वेगयुक्त हो और दानों मुष्टियोंको खाय है ॥

यत्न ।

वचाचंदनकुष्टोग्रासर्पपांस्तत्रलेपयेत् ।

कपिरोमनखाभ्यांचधूपनान्मुच्यतेग्रही ॥

अर्थ—वच, चंदन, कूठ, घुडवच, सरसों, इनका लेप वालककी देहमें करे, तथा वानरके नख और रोमकी धूनी देवे तो वालक मेपी ग्रहके दोषसे छूट जाय ॥

दशमदिवसनिदान ।

दशमेदिवसेनाभारोदनीत्रासतोशिशुम् ।

तच्चेष्टाकासनंचैवरोदनमुष्टिवंधनम् ॥

अर्थ—दसवे दिनमें रोदनीनामक वालक ग्रह वालकको देवावे, उससे वालक खांसि रोवे और दोनों हाथोंकी मुट्टो बांधे ॥

दशमदिवसकी चिकित्सा ।

कुष्टोग्रासर्जासिद्धार्थैर्लिपेन्नैवेनधूपयेत् ।

मत्स्यमांससुरायुक्तोवलिर्नाशिसमाहरेत् ॥

अर्थ—कूठ, वच, राल, सपेद सरसों और नीमके पत्तोंको पीसकर वालककी देहमें लेप करे । तथा मछलीका मांस और दारूकी अर्द्ध रात्रिके समय सहरके बाहर चौराहमें बलिदान देवे ॥

यत्नांतर ।

अपामार्गकुशोशीरचंदनक्वाथवारिणा ।

सतांचमंत्रयेन्मंत्रीसंध्यायांपरिपेचयेत् ॥

अर्थ—ओंगा, कुश, खस, चंदन, इनका काथ करके इसको मंत्रपूर्वक अभिमंत्रित कर सायंकालके समय वालक स्नान करावे ॥

प्रथममासनिदान ।

प्रथमेमासिगृह्णातिकुमारीनामयोगिनी ।

उद्वेगज्वरशोपादिचेष्टितंत्रजायते ॥

अर्थ—पहले महिनेमें कुमारीनामक योगिनी बालकको ग्रहण करे कि जिस्से उद्वेग, ज्वर और शोषादिक चेष्टा होती हैं ॥

द्वितीयमासनिदान ।

द्वितीयेमासिगृह्णातिबालकंकुकुटाग्रही । श्रोवानिपातोनिप्यंदो
वपुपःपीतशीतता ॥ वृक्षांसशोषणंचैवारोचकंचतदाश्रयम् ॥

अर्थ—दूसरे महिनेमें बालकको कुकुटा ग्रही ग्रहण करे कि जिस्से बालक गरदनको गरदेय, चेष्टारहित देहका रंग पीला और शीतल होय वृक्ष और कंधे सूखजाय और उसको अरुचि होय ॥

तृतीयमासनिदान ।

तृतीयेमासिगृह्णातिबालकंगोमुखीग्रही । तच्चेष्टारोदनंनिद्रावं
धोमूत्रपुरीषयोः ॥ उन्मीलयतिनेत्राणिगोगंधोमधुगंधिवा ॥

अर्थ—तीसरे महिनेमें गोमुखी ग्रह बालकको दबाता है कि जिस्से बालक रोवे सोवे और मल मूत्र उतरे नहीं नेत्रोंको उघाडे उसके देहमें गौकीसी गंध आवे अथवा सहतकीसी गंध आवे ॥

चौथेमासका निदान ।

चतुर्थेमासिगृह्णातिबालकंपिंगलाग्रही । पयःपानोनिःश्वसिति
भुजस्पंदस्यशोषणम् ॥ पूतिगंधस्तुतच्चेष्टातत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥

अर्थ—चौथे महिनेमें पिंगला ग्रह बालकको ग्रहण करेहै कि जिस्से बालक दूध नहीं पीवे, श्वासलेवे, भुजाहिले नहीं, सुखसूखे, दुर्गंध आवे इसका कोई इलाज नहीं है ॥

पांचवेमहीनेका निदान ।

पंचमेमासिगृह्णातिबालकंबलवाहिनी । तच्चेष्टारोचकंकासोमु
खशोपोस्यरोदनम् ॥ सीदंतिसर्वगात्राणिविश्रांतंपिबतेपयः ॥

अर्थ—पांचवे महिनेमें बालकको बलवाहिनी ग्रह दबाताहै कि जिस्से बालकको अरुचि, खांसी, सुखका शोष, रोवे सब अंग पीडितहों और ठहर ठहरके दूध पीवे ॥

छठवेमासका निदान ।

षष्ठेमासिचगृह्णातिपद्मनाभाग्रहोशिशुम् ।
तच्चेष्टारोदनंशूलंस्वरभ्रंशस्तथेवच ॥

अर्थ—छठे महिनेमें पद्मनाभा, नामक ग्रहीबालकको ग्रहण करेहै उसकी चेष्टा यह है कि रोवे, पेटमें दर्दहो गला बैठ जाय ॥

सातवे महिनेका निदान ।

सप्तमेमासिवालंतुकुमारीनामिकाग्रही ।

क्षीरंपिबतिविश्रान्तरोदितिक्षणछर्दिवान् ॥

अर्थ—सातवे महिनेमें बालकको कुमारी नामक ग्रह ग्रसे है तब बालक रह रहके दूध पीवे, रोवे और उलटी करेहै ॥

आठवे महिनेका निदान ।

अष्टमेमासिगृह्णातिवालकं चार्गिकाग्रही ।

गात्रभंगोज्वराक्षीरुक्प्रलापच्छर्दिरेवेच ॥

अर्थ—आठवे महिनेमें बालकको अर्गिका ग्रह दबाताहै कि जिससे देहविक्षेप ज्वर नेत्ररोग प्रलाप और रद्दकरे है ॥

नवमे महिनेका निदान ।

नवमेमासिगृह्णातिवालकंकुंभकर्णिका ।

तच्चेष्टारोचकच्छर्दिज्वरोवातालगंधता ॥

अर्थ—नवमे महिनेमें बालकको कुंभकर्णिका नामक बालग्रह पकडे हैं उसके यह लक्षण है कि अरुचि, भ्रमन, ज्वर तथा हरतालकीसी दुर्गंध मारेहैं ॥

दशवे मासका निदान ।

दशमेमासिगृह्णातिवालकं तापसीग्रही ।

तच्चेष्टागात्रविक्षेपःक्षीरद्वेषोक्षिमीलनम् ॥

अर्थ—दशवे महिनेमें इस बालकका तापसी नामक ग्रह बाधा करता है, उसके यह चेष्टा हैं कि देहको श्पर उपर पटके, दूध पीवे नहीं और नेत्रोंको मूंद रहे ॥

बालरोगमें पथ्यापथ्य ।

यत्पथ्यं यदपथ्यं च नृणामुक्तं ज्वरादिषु । तत्तद्विधेयमौचित्या
द्वालानां तेषु जानता ॥ पूर्वपथ्यमपथ्यं च मंदाग्नौ यत्प्रकीर्तित
म् । औचित्यात्तेन रेजाता बालानां परिकीर्तितः ॥ आगाम्यु
न्मादवातानां पथ्यापथ्यं यदीरितम् । औचित्याद्योजयेत्तत्र वा
लेषु ग्रहरोगिषु ॥

अर्थ—जो पथ्यापथ्य प्राणियोंको ज्वरादिक रोगोंमें करा है, उन्ही २ पथ्यापथ्यको यह प्राणी जहाँ २ उचित समझे तहाँ करावे । जो प्रथम मंदाग्नि रोगपर पथ्यापथ्य कहा है, वही बालकके पेट और जठराग्निकी विमारी पर करे । तथा जो प्रथम उन्मादरोग और घातरोगपर पथ्यापथ्य कहा है वही पथ्यापथ्य बालकको बालग्रहोंमें यथायोग्य करावे ॥

इतिश्री० बालरोग निदान समाप्तम् ॥

विपरोग ।



विपनिदान ।

स्थावरंजंगमंचैवद्विविधंविपमुच्यते ।

मूलात्मकंतदाद्यंस्यात्परंसर्पादिसंभवम् ॥

अर्थ—स्थावर और जंगम ऐसे दो प्रकारका विप होता है तिनमें जड़ी आदिक स्थावर विप होता है और सांप विच्छू आदिक जंगम विप होता है ॥
जंगम विपके लक्षण ।

निद्रातंद्राकुमंदाहंपाकंरोमहर्षणम् ।

शोथंचैवातिसारंचकुरुतेजंगमंविपम् ॥

अर्थ—जंगम विप निद्रा, आलस्य, धकावट, दाह, अजीर्ण, रोमहर्ष, सूजन और अतिसार ये उपद्रव करता है ॥

विपपीतके लक्षण ।

सवातंगृहधूमाभपुरीपंयोतिसार्यते ।

फेनमुद्गमतेचापिविपपीतमादिशेत् ॥

अर्थ—जिसका अधोवायुके साथ घरके धूँयेके प्रमाण मल उतरे और मुखमें ज्ञान हीय उस प्राणीको जानना कि इसने विप पीया है ॥

स्थावरविपका सामान्यलक्षण ।

स्थावरंतुज्वरंहिक्कादंतहर्षगलग्रहम् ।

फेनश्छर्द्यरुचिश्वासंमूर्च्छांचकुरुतेभृशम् ॥

अर्थ—स्थावर विप ज्वर, हिक्का, दंतहर्ष, गलेका जकडना, ज्ञान, वमन, अरुचि, श्वास और मूर्च्छा इन उपद्रवोंको करता है ॥

कंदविषकार्य सामान्यलक्षण ।

कंदजान्युग्रवीर्याणियान्युक्तानित्रयोदश । सर्वाण्येतानिकुश
लैर्ज्ञेयानिदशभिर्युतम् ॥ स्थावरजंगमंचापिकृत्रिमंचापियद्वि
पम् । सद्योनिहंतितत्सर्वगुणैश्चदशभिर्युतम् ॥

अर्थ—कंदजन्य विष तेरा हैं, उनका वीर्य उग्र है, कुशल मनुष्योंने इनको अच्छी रीतिसे पहिचानना, स्थावर और जंगम तथा कृत्रिम जितने विष हैं वे तत्काल मारते हैं और इन सब विषोंमें दस १० लक्षण होते हैं, सो जानना चाहिये ॥

सामान्य उपचार ।

सैधवंमिरचंतुल्यंनिवबीजंसमीकृतम् ।
मधुसर्पियुतंहंतिविषंस्थावरजंगमम् ॥

अर्थ—सैधानिमक, काली मिरच बराबर लैय और दोनोंकी बराबर नीमकी निवोरी लैय, इसको घोट और सहत और घृत मिलायके पीवे तो स्थावर और जंगम दोनों प्रकारका विष दूर होय ॥

विषके दश लक्षण ।

रूक्षमुष्णंतथाशीतंसूक्ष्ममाशुव्यवायिच ।
विकासिविशदंचापिलघ्वपाकिचतेदश ॥

अर्थ—रूक्षता, उष्णता, शीतता, सूक्ष्मता, व्यवयीपना, विकासीपना, विशदता, हलकेपना, और अपकता—ये दस विषके लक्षण हैं ॥

विषोंके दशगुणोंके कार्य ।

तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्रायुमौष्ण्यात्पित्तंसंशोणितम् । तैक्ष्ण्याम
तिमोहयतिमर्मसंधिच्छिन्नत्तिहि ॥ शरीरावयवात्सौक्ष्म्यात्प्रवि
शेद्रिकरोतिच । आशुत्वादाशुतद्धंतिव्यवायात्प्रकृतिहरेत् ॥
विकासित्वात्क्षपयतिदोषान्धातून्मलानपि । अतिरिच्यति
वैशद्याद्दुश्चिकित्स्यांचलाववात् ॥ दुर्जरंचाप्यपाकित्वात्स्मा
त्क्लेशयतेचिरम् ॥

अर्थ—विष रूक्ष होनेसे वायुको कुपित करता है, उष्ण होनेसे रक्त और पित्तको कुपित करता है, तीक्ष्ण होनेसे बुद्धिफो मोह उत्पन्न करता है और मर्मके सन्धिपनको छिन्न भिन्न करता है, सूक्ष्म होनेसे शरीरके अवयवोंमें प्रवेश करता है और उनमें विकार पैदा करता है, आशुकारी होनेसे जल्दी मार देता

है, व्यवयी होनेसे प्रकृतीको बिगाड़ देता है, विकासी होनेसे घात पित्त कफ इनको तथा शारीरिक धातुओंको और मलोंको नष्ट करता है, विशद होनेसे अतिरिक्त करता है, लघु होनेसे उसकी चिकित्सा दुर्धर होती है, अपक होनेसे उसका जीर्ण होना कठिन होता है, इसीवास्ते बहुत समपतक यह विप केश देता है ॥

विपदेनेवाले मनुष्यके लक्षण ।

इंगितज्ञोमनुष्याणांवाक्चेष्टामुखवैकृतैः । जानीयाद्विपदाता
रमेतैर्लिगैश्चबुद्धिमान् ॥ नददात्युत्तरं पृष्टेविवक्षुर्मोहमेतिच ॥
अपार्थवहुसंकीर्णभापतेचापिमूढवत् । हसत्यकस्मात्स्फोटय
त्यंगुलीभिर्लिखेद्रुचम् ॥ वेपथुश्चास्यभवतित्रस्तश्चान्योन्य
मीक्षते । विवर्णवक्रःक्षामश्चनखैःकिंचिच्छिनत्यपि ॥ आल
भेतासनंदीनःकरणचशिरोरुहम् । वर्त्ततेविपरीतंचविपदाता
विचेतनः ॥

अर्थ—मनुष्यके अभिप्राय जानने वाले वैद्यको बोलने चालने तथा मुखकी चेष्टा इनसे तथा आगे जो कहते हैं, इन लक्षणोंसे विप देनेवाले मनुष्यको बुद्धिमान् जानले । सो इसप्रकार जो मनुष्य विपदे उससे कोई बात पूछे तो उत्तर नदे और जब बोले तब मोहको प्राप्त हो, अर्थात् धवडा जावे, तथा कदाचित् बोलेभी तो निरर्थक और बहुत अस्पष्ट बोले तथा अकस्मात् हंसे, हाथकी उंगली चटकावे, पृथ्वीमें रेखाकाटे, भयसे कांपे और डरकर चारों ओर वारवार सबकी तरफ देखे, मुखकी चेष्टा जाती रहे और मुख काला होजाय, चेहरा उतरजाय, नखोंसे कृच्छ्र तिनका आदि तोड़े, गर्रावके समान एकही स्थानपर बैठारहे, माथेपर हाथ फेरे, वारंवार इधर उधर डोलकर बैठजाय, उसका चित्त ठिकाने न रहे, तथा उसका चित्त भागनेको चाहे, ये लक्षण विप देनेवालेके जानने । और येही लक्षण धीर अपराध करनेवालेके राजा जानलेंवे ॥

मूलादित्तियोंके लक्षण ।

उद्वेष्टनंमूलविषैःप्रलापोमोहएवच । जंभणवेपणंश्वाप्तोमोहः
पत्रविपेणतु ॥ मुखशोथःफलविपेदाहोऽन्नद्वेषएवच । भवत्युप
विषैश्छर्दिराध्मानंश्वासएवच ॥ त्वक्सारानिर्यासविपेरुपयुक्ते
भवन्तिहि । आस्यदोर्गैष्यपारुष्यशिरोरुकफसंस्त्रवाः ॥ फेना

गमःश्रीरविषैर्विडूभेदोगुरुजिह्वता । हृत्पीडनंधातुविषैर्मूर्च्छा
दाहश्चतालुनि ॥ प्रायेणकालघातीनिविपाण्येतानिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—मूलविषसे रोगीके हाथ पैरोंमें पीडा और मोह होवै ।

पत्रविषसे—जंभाई, कंप, श्वास और मोह होवे ।

फलविषसे—मुखपर सूजन, दाह, अत्रमें अरुचि होवे ।

पुष्पविषसे—वमन, अफरा और श्वास होवे ।

छाल रस गोंद-इनसे मुखमें दुर्गंधि, अंगमें खरदरपन, मस्तकशूल और मुखके मार्ग कफ गिरे ।

दुग्धविषसे—मुखमें ज्ञाग आवे, दस्त होंय और जीफ जकड जावे ।

धातुविषसे—हृदयमें पीडा होय, मूर्च्छा आवै, तालुमें दाह होय ये सब विष बहुधाकरके कालान्तर मारनेवाले होते हैं ।

विपलिप्तशस्त्रहतके लक्षण ।

सद्यःक्षतंपच्यतेतस्यजन्तोःस्रवेद्रक्तंपच्यतेचाप्यभीक्षणम् ।

कृष्णीभूतंक्लिन्नमत्यर्थपूतिक्षतान्मांसंशीर्यतेयस्यचापि ॥

तृष्णामूर्च्छाज्वरदाहौचयस्यदिग्धाहतंमनुजंतंव्यवस्येत् ।

लिगान्येतान्येवकुर्यादमित्रैर्व्रणेविषंयस्यदत्तंप्रमादात् ॥

अर्थ—जिस पुरुषका जखम तत्काल पकजावे तथा उसमें रुधिर बहे और वारंवार पके, तथा उस जखममेंसे काला सडा दुर्गंधियुक्त ऐसा मांस निकले तथा जिसमें प्यास, मूर्च्छा, ज्वर, दाह ये होवें उसके विषमें बुझे वा लिप्त शस्त्रकी जखम लगी जानना चाहिये ॥

शत्रुओंनें कपटकरके जिसके घ्रणमें विष डाल दिया हो, उसके भी यही लक्षण हैं ॥

स्यावरविषको बहकर जंगममें सर्पविष ये अतितीक्ष्ण

हे इसीसे प्रथम सर्पोंकी जाति कहते हैं ।

वातपित्तकफात्मानोभोगिमण्डलिराजिलाः ।

यथाक्रमंसमाख्याताद्यन्तराद्द्वंद्वरूपिणः ॥

अर्थ—भोगी मंडली और राजिल, ये सर्प अनुक्रमसे वात, पित्त, कफप्रकृति हैं । और जे व्यंतर अर्थात् जो दो जातिके सर्प और सर्पणीसे प्रगट होंवे व्यंतर कहते हैं । उनकी प्रकृति द्वंद्वज है अर्थात् जिस जिस प्रकारके सर्प सर्पणीसे प्रगट उसी प्रकारकी प्रकृति उनकी होती है। जिनके मस्तकपर चक्र, हल, छत्र, स्वस्तिक (सतिया), अंकुश इनका चिह्न हो और जिनका फण पर-

छोके समान चौड़ा हो और जल्दी चलनेवाले हों उनको भोगी अथवा राजिल सर्प कहते हैं । और जो अनेक प्रकारके चकत्तोंसे चित्रविचित्रहों तथा मोटे और मंद चलनेवाले तथा अग्नि और सूर्यकासा प्रकाश जिनका उनको मंडली सर्प कहते हैं ॥

और जो चिकने और अनेकप्रकारकी रेखा उनके ऊपर नीचे विद्यमान हों उनको राजिल सर्प कहते हैं । इन सर्पोंकी चार जाती हैं । तिनमें मोती, चांदी, सुवर्णकीसी प्रभा होवे और जो नम्र तथा जिनकी देहमें सुगंध आवे, वो ब्राह्मण जातिके सर्प हैं । और जिनका स्वच्छवर्ण, क्रोधी और जिनके मस्तकपर सूर्यचन्द्रके समान तथा छत्र तथा कमलका चिह्न होवे, वो क्षत्री जातिके सर्प हैं । काल और हीराके समान तथा लोहेके वर्ण हों और जिनकी धुआं और कबूतरके समान प्रभा हो, वो वैश्यजातिके सर्प हैं । जिनकी देह भैंसा, चीतेके समान हो और जिनकी त्वचा कठोर हो, तथा अनेक प्रकारका जिनका वर्ण हो, वो शूद्रजातिके सर्प हैं । रात्रिके पिछिले प्रहरमें राजिलजातिके सर्प विचरते हैं और रात्रिके पहले तीन पहरोंमें मंडली जातिके सर्प विचरते हैं । और दिनमें दर्वीकर जातिके सर्प बहुधा विचरते हैं । इनमें दर्वीकर जातिके सर्प तरुण हैं और मंडली जातिके वृद्ध और राजिल जातिके मध्य अवस्थाके हैं ॥

इतनी जातिके सर्प निर्विष जानने । जो नौलासे हत हैं और बालक, तथा जलसे ताडित हैं और कृश, वृद्ध, तथा जिनकी फांचली बूट रही हो और डर रहे हों, ऐसे सर्प विपरहित होते हैं ॥

अब सर्पोंके भेद कहते हैं ।

तहां प्रथम दर्वीकर सर्पोंके भेद कहते हैं । कृष्णसर्प, महाकृष्ण, कृष्णोदर, श्वेत, कपोल, बलाहक, महासर्प, शंखपाळ, लोहिताक्ष, गवेधुफ, परिसर्प, खंडफण, ककुदपन्न, महापन्न, दर्भपुष्प, दधिसख, पुंडरीक, भ्रुकुटीमुख, विष्किर, पुष्पाभिकीर्ण, गिरिसर्प, ऋतुसर्प, श्वेतोदर, महाशिरा, अलगर्द, आशीविष ये दर्वीकर जातिके सर्प हैं ॥

आदर्शमंडल, श्वेतमंडल, रक्तमंडल, चित्रमंडल, प्रपत्त, रोधपुष्प, मिलिदक, गोनस, वृद्धगोनस, पनस, महापनस, वैशुपत्रक, शिशुक, बभ्रु, कपाय, कलुप, पारावत, हस्ताभरण, चित्रक, एणीपद ये मंडलीजातिके सर्प हैं ॥

पुंडरीक, राजिचित्र, अंगुलराजि, विंदुराजि, कर्दमक, तृणशोपक, संसर्पक, श्वेतहनु, दर्भपुष्प, चक्रक, गोधूमक, विक्रसाद, ये राजिलजातिके सर्प हैं ॥

गुलगोली, शूकपत्र, अजगर, दिव्यक, वर्षाहिक, सप्तशकटी, ज्वातीरय

क्षीरिक, पुष्पक, अहिपतानक, अंधाहिक, गौराहिक, वृक्षेशय, इतने सर्प हीन विष जानने ।

अब कहते हैं कि द्वयंतर (वर्णसंकर) सर्पभी तीन प्रकारके हैं । माकुली, पोटगल, स्निग्धराजि ॥

तहां कृष्णसर्पजातिकी सर्पिणी और गोनसजातिके सर्पसे जो सर्प प्रगट हो वो माकुली कहाता है ॥

इसी प्रकार राजिल और गोनसीजातिकी सर्पिणी सर्पसे जो प्रगट सो पोटगलकसर्प कहाता है ॥

इसी प्रकार कृष्णसर्प और राजमती जातिकी सर्पिणीसे जो प्रगट हुए सर्पको स्निग्धराजी कहते हैं ॥

तहां अकुली सर्पमें पिताकासा विष (जहर) होय है और पोटगल स्निग्धराजी इन दोनोंमें माताकासा विष होता है । इन तीनोंके विपरीततासे दिव्येलक, लोभ्रपुष्पक, राजिचित्रक, पोटगल, पुष्पाभिकीर्ण, दर्भपुष्प, वेष्टितक, इन सात जातिके सर्प प्रगट होते हैं ॥

इनमेंभी प्रथमके तीन सर्पोंमें राजिल सर्पोंकासा विष होता है और शेषोंमें मंडली सर्पोंकासा जानना ऐसे सब मिलकर अस्सी प्रकारके सर्प हैं । इनमें भी जिनके नेत्र, जीभ, मुख, शिर बडे हो वो पुरुष जानने । और छोटे होय वो स्त्री जाननी और जिनमें दोनों स्त्री पुरुषके लक्षण मिलते होय, तथा मंद विषवाले क्रोधरहित हों उनको नपुंसक जानना ॥

भोगिप्रभृति सर्पके फाटनेपर वातादिकोंके लक्षण ।

दंशोभोगिकृतःकृष्णःसर्ववातविकारकृत् ।

पीतोमण्डलिजःशोथोमृदुःपित्तविकारवान् ॥

राजिलोत्थोभवेदंशःस्थिरशोथश्चपिच्छिलः ।

पाण्डुःस्निग्धोऽतिसान्द्रासृक्सर्वश्लेष्मविकारवान् ॥

अर्थ—भोगी अथवा राजिल (दर्वाकर) सर्पके फाटनेसे फाटनेकी ठौर फाली हो और सर्व वातके विकार करे इसके मुथुतमें (१) बडुत अवगुण लिखे हैं (मंडली) सर्पके फाटनेकी ठौर पीली सूजन युक्त और नरम और पित्तके विकार करे और (राजिल) का दंश चिकना पीले रंगका या गाढा तथा उसकी सूजन कठोर होय, उसमें गाढा रुपिर निकले तथा सब प्रकारके कफविकार हों ये लक्षण राजिल सर्प फाटनेके हैं ॥

बंध्याककोटकीयोग ।

बंध्याककोटकीकंदंजलैःपिद्वापिवेष्टिपेत् ।

सर्पमूषकमार्जारवृश्चिकादिविपापहम् ॥

अर्थ-बाँझककोडेके कंदको जलमें पीसके पीवे और काटनेकी ठौर लगावे तो सोंप, चूहा, विल्ली और विच्छू आदिके विपको नष्ट करे ॥

विशिष्टदेशमें तथा विशिष्टनक्षत्रमें काटनेके असाध्य लक्षण ।

अश्वत्थदेवायतनश्मशानवल्मीकसंध्यासुचतुष्पथेषु ।

याम्येचदष्टाःपरिवर्जनीयाऋक्षेशिरामर्मसुयेचदष्टाः ॥

अर्थ-पीपलके वृक्षके नीचे, देवताओंके मंदिरमें, श्मशानमें, वैवईमें, संध्या-काल (प्रातः और सायंकालकी संधि) चारोहमें, भरणीनक्षत्रमें, (चकारसे आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, मघा, कृत्तिका, इन नक्षत्रोंमें) और शिरानाडीके मर्ममें सर्पके काटनेसे मनुष्य बचे नहीं ॥

काटनेवालेको कष्टसाध्य नक्षत्र ।

आर्द्रासुचमयामूलकृत्तिकाभरणीषुच । पंचम्यांसंध्ययोर्मध्ये

मर्मसुस्वांगकेषुच ॥ दष्टाकष्टेनजीवंतियदिदूतादिसंपदः ॥

अर्थ-आर्द्रा, मघा, मूल, कृत्तिका, भरणी इन नक्षत्रोंमें और पंचमी तिथी प्रातःकाल और सायंकालकी संध्याओंमें मर्म स्थलमें फाटा होय तो यदि उसके पास दूतादिक चतुःसंपत्ति होवे तो भी बड़े कष्टसे जीवे ॥

उष्णताके योगसे विषका वेग होता है यह कहते हैं ।

दूर्वाकराणांविपमाशुहंतिसर्वाणिचोष्णेद्विगुणीभवंति ।

अर्थ-दूर्वाकर सपोंका विप तत्काल इस प्राणीको मार डाले है और सर्व प्रकारके विप गरमीके समय दूना जोर करे है ॥

अजीर्णपित्तातपपीडितेषुवालेषुवृद्धेषुबुभुक्षितेषु ।

क्षीणक्षतेमेहिनिकुष्ठदुष्टेरुक्षेवलेगर्भवतीपुचापि ॥

अर्थ-अजीर्ण, पित्तरोगी, गरमीसे पीडित, वालक, वृद्ध, भूखा, क्षीण, घाववाला, प्रमेहरोगी, दुष्टकोठका रोगी, रुखा, निर्बल और गर्भवतीकोभी विप प्राणहरण करे यहभी कष्टसाध्य है ॥

सर्पके काटेके असाध्य लक्षण ।

शस्त्रक्षतेयस्यनरक्तमस्तिराज्योलताभिश्चनसम्भवन्ति ।

शीताभिरद्रिश्चनरोमहर्षोविपाभिभूतंपरिवर्जयेत्तम् ॥

अर्थ-जिसको विषका जंमल चढगया हो, उसके शस्त्रके घाव करनेसे

रुधिर निकले नहीं, अथवा चात्रुक मारनेसे अंगमें उपडे नहीं, अथवा शीतल पानी अंगपर डालनेसे रोमांच नहीं, ऐसे मनुष्यका जहर उतारनेका उद्योग न करे ॥

दूसरे असाध्य लक्षण ।

जिह्वामुख्यस्यचकेशशातोनासावसादश्चसकंठभंगः ।

रक्तःसकृष्णश्चयथुश्चदंशेहन्वोःस्थिरत्वंचविवर्जनीयः ॥

अर्थ—जिसका मुख टेढा और स्तब्ध होजाय, केश (बाल) स्पर्श करनेसे टूट टूटकर गिर पडें, नाककी हड्डी टेढी होजाय, नार नीचेको झुकी पडे, ऊंची न होय और काटनेकी जगह सूजन होय, तथा वो दंशलाल अथवा काला होय तथा स्थिर होय, उस रोगीको त्याग देय ॥

तथा असाध्य लक्षण ।

वार्तिर्धनायस्यनिरोतिवक्राद्रक्तस्रवेदूर्ध्वमधश्चयस्य । दंष्ट्राभि
घाताश्चतुरस्ययस्यतंचापिवैद्यःपरिवर्जयेतु ॥ उन्मत्तमत्यर्थ
मुपद्रुतंवाहीनस्वरंचाप्यथवाविवर्णम् । सारिष्टमत्यर्थमवेगिनं
चजह्यान्नरंतन्नकर्मकुर्यात् ॥

अर्थ—जिसके मुखसे गाढी लारकी वत्ती गिरे और नाक मुखके मार्ग तथा गुदाके मार्गसे रुधिर निकले और जिसके चार दांत लगे होय उसको त्याग देय अत्यंत उन्मत्त होगया हो, अथवा ज्वर अतिसार आदि उपद्रवों करके पीडित हो, बोलनेमें असमर्थ हो, जिसके देहका वर्ण काला हो गया हो, नासाभंगादि अरिष्टयुक्त, जिसका वेग (लहर) आवे नहीं, ऐसा अथवा विष्ठा मूत्रादि वेगरहित ऐसे विपचाले पुरुषको त्याग देय अर्थात् उसका उपचार चिकित्सा न करे ॥

सर्पविष चिकित्सा ।

कार्यासद्यःसर्पदष्टेमणिमंत्रौपधक्रिया ।

अचिंत्योहिप्रभावस्तुमणिमंत्रौपधस्ययत् ॥

अर्थ—सर्प काटनेपर तत्काल मणिधारण, मंत्रसे ज्ञारना औपध देना इत्यादि करना चाहिये क्योंकि मणि मंत्र और औपधोंका अचिन्त्य प्रभावहै ॥

तंदुलीयकमूलंतुपीतंतंदुलवारिणा ।

तक्षकेणापिदष्टंहिनिर्विपंकुरुतेनरम् ॥

अर्थ—चौलाईकी जड़को चाँवलके पानीमें पीसके पीवैतो तक्षकका काटाभी प्राणी निर्विप होय ॥

घृतमधुनवनीतंपिप्पलीगृग्वेरंमरिचमपिचदद्यात्सप्तमसैधवेन ।
यदिभवतिसरोपंतक्षकेणापिदष्टोगदमिहखलुपीत्वानिर्विपंतत्क्षणेन ।
अर्थ—घृत, सहत, मक्खन, पीपर, अदरख, कालीमिरच और सैधानिमक इन सबको एकत्र पीस और घोलके पीवै तो क्रोधित तक्षक सांपका काटाभी निर्विप होय ॥

मूलंतंदुलवारिणापिवतियःप्रत्यंगिरासंभवंनिष्पिष्टंशुचिभद्रयो
गदिवसेतस्याहिभीतिःकुतः । द्वादेवफणिर्यदादशतितंमोहा
न्वितोन्मूलनस्थानेतत्रतदेवयातिनिधनंवक्त्रंयमस्याचिरात् ॥
अर्थ—जो प्राणी प्रत्यंगिरा की जड़को चावल धोवनके पानीसे शुभदिनमें घोटकर पीवै तो उस प्राणीको साँपोंका भय कहाँहै । यदि क्रोधयुक्त सर्प मूल-स्थान (गुदा) में डसे तो वह प्राणी उसी समय यमराजके परजाय ॥

शिरीषार्द्यजन ।

शिरीषपुष्पस्वरसेसप्ताहंमरिचंसितम् ।
भावितंसर्पदष्टानापाननस्याजनेहितम् ॥

अर्थ—सिरसके फूलके स्वरसमें सप्पद मिरचोंकी भावना देवे तथा इसको पीवै और अंजन करनेसे साँपका काटा अच्छा होय ॥

सामान्य उपचार ।

दंशोपरिनिवश्रीयात्तत्क्षणाच्चतुरंगुलम् । क्षौमादिभिर्वाणिकया
सिद्धैर्मंत्रैश्चमंत्रयेत् । अंबुवत्सेतुबंधनस्तभ्यतेविपमंविपम् ॥

अर्थ—चतुर वेद्य जहापर साँपने काटा होय उसके ४ अंगुल हटकर रेशमी कपड़ेसे बांधदेवे फिर सिद्ध मंत्रोंसे उसको झाड़ देवे तो जैसे बंद बांधनेसे जलका वेग रुक जाता है इस प्रकार सर्पका विप आगे नहीं बढ़े ॥

नक्तमालार्द्यजन ।

नक्तमालफलंव्योपंवल्वमूलंनिशाद्रयम् ।
सौरसंपुष्पमाजंवामूत्रबंधनमंजनम् ॥

अर्थ—कंजाके फल, सोंठ, मिरच, पीपल, बेलफलकी जड़, हलदी और दारुहलदी तथा तुलसीकी मंजरी बकरीका मूत्र इनका अंजन करनेसे विप-वेग नष्ट होयके घोष हो जाता है ॥

कर्कोटक्यादि नस्य ।

वंध्याकर्कोटकीमूलंछागमूत्रेणभावितम् ।

नस्यंकांजिकसंपिष्टंविषोपहतचेतसः ॥

अर्थ—वांझकर्कोटकी जडको बकरेके मूत्रकी भावना देकर कांजीमें पीसके नास देवे तो विषयुक्त प्राणीका विष जाता रहे ॥

लांगल्यादि योग ।

जलेनलांगलीकंदनस्यंसर्पविपापहम् ।

वारिणाटकणंपीतमथवार्कस्यमूलकम् ॥

अर्थ—जलमें कलियारीकी जडको पीसके नस्य देवे तो सर्प विष दूर हो अथवा जलमें सुहागा पीसके पीवे या आककी जडको जलमें घोटके पीवे तो सांपका विष दूर होय ॥

सर्प विषपर धूप ।

कपोतविष्मर्त्यंशिरोरूहाश्वसगोविपाणांशिखिपिच्छकाग्रम् ।

यवश्चधान्यंचतुपाश्वबीजंकार्पासजंवाप्युपिताश्वमालाः ॥ इ

त्यौपधीभिःपरिकल्पितोऽयंधूमोगदस्याद्भुजगैर्युक्तः । गृहेवि

धेयःकुशलैरनेननश्यंतिसर्पाश्वतथाखवश्च ॥

अर्थ—कपोत (कबूतर) की बीठ मनुष्यके मस्तकके बाल, गौकासींग, मोरकी चंद्रिका, जौ, धनिया, तुप, कपासके बीज (बिनोले) और बासी माला इन सबको पीस धूनी बनावे इसकी कुशल वैद्य सांप काटनेवालेको धूनी दे और घरमें धूनी देय तो सांप और मूसे दूर हो ॥

सातलाफलेननेत्रांजनंकृत्वासर्पविपनश्यति ॥

अर्थ—धूरके फलेके रसको नेत्रोंमें अंजन करनेसे सर्पविष नष्ट होय ॥

कालवज्राशनीरस ।

पारदंगंधकंतुत्थंठंकणंरजनीसमम् । देवदाल्याद्रवैर्मर्द्यंदिनशु

ष्कंतुभक्षयेत् ॥ कालवज्राशनिर्नामरसःसर्वविपापहः । नरमू

त्रैपिवेच्चानुकालदष्टोऽपिजीवति ॥

अर्थ—पारा, गंधक, लीलायोथा, हलदी ये समान भाग लेय फिर १ दिन वंदालके रसकी भावना देकर गोली बनाय लेवे यह कालवज्राशनि रस सर्व प्रकारके विषोंको दूर करे इसके ऊपर वैद्यका मूत्र पीवे परंतु कोई कहता है कि मनुष्यका मूत्रही पीवे ॥

रजनीसंधवयुतंसक्षौद्रघृतमुत्तमम् ।

पानंमूलविपार्तस्यविपविद्धस्यचक्षते ॥

अर्थ—हलदी, सैधानिमक, सहत और घी इनको मिलायके पीवे तो मूल (जड़के विप, जैसे सिंगिया आदि है) के विष सब दूर हो ॥

दूषीविपके लक्षण ।

जीर्णविपघ्नौपधिभिर्हतंवादावाग्निवातातपशोपितंवा ।

स्वभावतोवागुणविप्रहीनंविपंदिदूषीविपतामुपैति ॥

अर्थ—जो विप पुराना होगया हो अथवा विपकी नाशक औषधीसे हतवीर्य होनेसे, अथवा सरदी, गरमी, अग्नि इनसे सूखी हुई अथवा जे स्वभावसे गुणरहित है, ऐसे स्यावर जंगमात्मक विप दूषीविपताको प्राप्त होते हैं ॥

दूषीविपके लक्षण ।

वीर्याल्पभावान्निपातयेत्तत्कफान्वितं वर्षगणालुबंधि । तेना

दितोभिन्नपुरीषवर्णोविगंधवैरस्ययुतःपिपासी ॥ मूर्छाभ्रमंगद्व

दवागवमित्वंविचेष्टमानोरतिमाप्नुयाद्वा ॥

अर्थ—वे दूषीविप अल्पवीर्य होनेसे मारक नहीं होते, किंतु कफसंबंध होनेसे टण्णादि गुण मंद होकर बहुत वर्षपर्यंत गर (विप) रूप होकर रहते हैं उस विपस पीडित हुए पुरुषके दस्त होते हैं, उसका वर्ण पलट जाय, उसकेमुखसे बूरी दुर्गंधि निकले, उसके मुखका स्वाद जाता रहै, प्यास लगे, मूर्छा आवै, भ्रम होय, वो बोलते समय अक्षर चबावे, वमन करे, विरुद्ध चेष्टा करे और उसको चैन नहीं पड़े ॥

स्यानभेदकरके उसके विशिष्ट लक्षण ।

आमाशयस्थेकफवातरोगीपक्वाशयस्थेनिलपित्तरोगी ।

भवेत्समुद्धस्तशिरोरुहांगोविलूनपक्षस्तुयथाविहंगमः ॥

अर्थ—पूर्वोक्त विप आमाशयमें स्थित होनेसे कफवातजन्य रोग होय और पक्वाशयमें आनेसे घातपित्तजन्यविकार होय, तथा उस रोगीके मस्तकके और सब देहके बाल उडकर पंखरहित पक्षी (पखेरु) के समान हो जाय ॥

निद्रागुरुत्वंचविजृंभणंचविश्लेषहर्षावधवांगमर्दः । ततःकरो
त्यन्नपदाविपाकावरोचकंमंडलकोष्ठजन्म ॥ मांसक्षयंपादकर
प्रशोथंमूर्छांतथाछर्दिमथातिसारम् । दूषीविपंश्वासतृषौचकुर्या

ज्वरप्रवृद्धिजठरस्यचापि ॥ उन्मादमन्यजनयेत्तथान्यदाहं
तथान्यत्क्षपयेच्चशुक्रम् । गद्गद्यमन्यजनयेच्चकुट्टंतास्तान्वि
कारांश्चवहुप्रकारान् ॥

अर्थ—दूषीविषके प्रभावसे निद्रा, भारीपन, जंभाई, अंग शिथिल, रामांच, अंगोका टूटना ये प्रथम होकर तदनंतर भोजनके उपरांत हर्ष होना, अन्न पचे नहीं, अरुचि, देहमे चकते तथा गांठ उठे, मांसक्षय, हाथ पैरोंमे सूजन, मूर्छा, वमन, दस्त, श्वास, प्यास, ज्वर, उदररोग ये विकार होंय तथा अनेक प्रकारके रोग होय, सो इस प्रकार किसीसे उन्माद रोग होय, और किसीसे दाह होय कोई नपुसकत्व करे, और कोई गद्गदवाणी करे, कोई कुष्ठरोग करे, और विसर्प विस्फोट आदि अनेक प्रकारके रोग होंय ॥

दूषीविषकी निरुक्तिके लक्षण ।

दूषितदेशकालात्रदिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः ।

यस्मात्संदूषयेद्भातूस्तस्माद्दूषीविषंस्मृतम् ॥

अर्थ—देश, काल और अन्न और दिवा निद्रा, इनसे चारंवार दूषित हुए विष धातुओको दुष्ट करे इसीसे उसको दूषीविष कहते है । दूषीविष दो प्रकारका है एक कृत्रिम और दूसरा गरसंज्ञक, जो विष पदार्थोंसे बनाया जाय वो कृत्रिम । और निविष द्रव्योंके संयोगसे होय उसको गर कहते हैं । सो बृद्धकाश्यपने चरकमें लिखा भी है ॥

इन दोनोंविषोंका लक्षण ।

सौभाग्यार्थस्त्रियःस्वेदरजोनानांगजान्मलान् ॥ शत्रुप्रयुक्तां
श्वगरान्प्रयच्छन्त्यन्नमिश्रितान् ॥ तैःस्यात्पाण्डुःकृशोऽल्पाग्नि
ज्वरश्चास्योपजायते । मर्मप्रधमनाध्मानंहस्तयोःशोथलक्ष
णम् ॥ जाठरग्रहणोदोषोयक्ष्मगुल्मक्षयज्वराः । एवंविधस्य
चान्यस्यव्याधेर्लिङ्गानिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—गरका अधिकार स्वार्थान करनेको, दुष्ट जनोंके कहनेसे, पतिको पशीकरण वरनेके निमित्त, स्त्री अपने पतिको पसीना, आर्तव (रजोदर्शन रुधिर) तथा अपनी देहके अनेक अंगोका मैल, अन्नमे मिलाकर विलाती हैं । अथवा शत्रुकृत गर विषका प्रयोग, अर्थात् वैरी विष अथवा गरको अन्न

१ बृद्धकाश्यप संयोगज तु द्विविध स्त्रीष विषमुच्यते । गर स्यादविपलज राविष कृत्रिम यत् ॥१॥

चरक—दूषीविषे मूलविषे सगरे वृत्रिमे विषे ॥ इति ॥

तथा जलमें मिलाकर खवाय देय, इससे मनुष्य पीला और कृश होय, उसकी अग्नि मंद होय, सब मर्मोंमें पीडा, पेट फूलजाय, हाथोंमें सूजन, उदररोग, ग्रहणीरोग, राजयक्ष्मा, गुल्म, क्षय, ज्वर इन रोगोंके तथा इसीप्रकारके रोगोंके लक्षण होते हैं ॥

दूषीविषके असाध्यदि लक्षण ।

साध्यमात्मवतःसद्योयाप्यंसंवत्सरोपितम् ।

दूषीविषमसाध्यंतुक्षीणस्याहितसेविनः ॥

अर्थ—दूषीविष पेटमें जानेसे तत्काल उपाय करनेसे और रोगी पथ्यमें रहनेसे साध्य है और वर्ष दिन व्यतीत हो जाय तो याप्य जानना और क्षीण तथा अपथ्य सेवन करनेवालेके असाध्य होय ॥

शर्करादि लेह ।

शर्कराचूर्णसंयुक्तचूर्णताप्यसुवर्णयोः ।

लेहःप्रशमयत्युग्रनानायोगकृतंविषम् ॥

अर्थ—मिश्रीका चूरा और सुवर्णमाक्षिक और सुवर्ण इनके अवलेहका सेवन अनेक प्रकारके बने हुए विषोंको नष्ट करे है ॥

पुत्रजीवमज्जायोग ।

पुत्रजीवस्यमज्जांचनिष्कमात्रांगवांपयः ।

पिष्ट्वाचोग्रतरंहन्यान्नानायोगकृतंविषम् ॥

अर्थ—जीयापोताकी मिर्गी ४ मासेको पीस गौके दूधमें मिलायके पीबें तो घोर अनेप्रकारके बनेहुए विषविकारोंको नष्ट करे ॥

कृत्रिमविषगृहधूमतैल ।

गृहधूमेनसंपिष्ट्वातंडुलीमूलतुल्यकम् । कल्काच्चतुर्गुणंचाज्यं

तस्मात्क्षीरंचतुर्गुणम् । घृतशेषपचेत्सर्वपिबेत्सर्वगरापहम् ॥

अर्थ—घरका धूआँ और चौलाईकी जड़को समान भागले कल्क करे कल्कसे चौगुना घी और घीसे चौगुना दूध लेय, फिर घृत शेष रहे तब, उतारके शीतल कर लेय यह सर्व विष और बने हुए विषोंको नष्ट करे है ॥

पारावतादि हिम ।

पारावतामिपसठीपुष्कराह्वशृतंहिमम् ।

गरतृष्णारुजाकासश्वासहिध्माज्वरापहम् ॥

अर्थ-कचूरका मास, कचूर, पुहकर मूल, इनका हिम बनायके पीवे तो विष, टूपा, पीडा, खांसी, श्वास, हिचकी और ज्वर इनको दूर करे ॥

टंकणयोग ।

तुल्येनटंकणेनैवम्रियतेभक्षणाद्विपम् ।

अतिमात्रंयदाभुक्तंतदाज्यंटंकणंपिबेत् ॥

अर्थ-जितना विष भक्षण करा हो उतनाही भुना सुहागा खानेसे विष मर जाता है यदि अधिक विष खाय लिया होय तो भुना सुहागा और धी पीवे ॥
दूर्वादिपान ।

दूषीविपातैसुस्निग्धमूर्ध्वैचाधश्चशोधनम् ।

पाययेदगदंमुख्यमिदंदूषिविषापहम् ॥

अर्थ-दूषीविषवाले प्राणीको प्रथम घृत तैलादिसे चिकना कर फिर ऊपर और नीचेसे अर्थात् वमन विरेचन द्वारा शोधन करे फिर दूबको घोटकर पीवे तो दूषी विष नष्ट होय ॥

पिप्पल्यादि ।

पिप्पलीधान्यकंमांसीलोध्रमेलासुवर्चिकाः ।

मरिचंवालकंचैलातथाकनकगैरिकम् ॥

अर्थ-पीपल, धनिया, जटामांसी, लोध, छोटी इलायची और सोरा, काली मिरच, सुगंधवाला बडी इलायची और सोनगेरू, इनका सेवन दूषी विषको नष्ट करे ॥

लूताविषकी उत्पत्तिके लक्षण ।

यस्माद्धूनंतृणंप्राप्तामुनेःप्रस्वेदविदवः ।

तस्माद्धूताःप्रभाष्यन्तेसंख्ययातास्तुपोडश ॥

अर्थ-विश्वामित्रराजा वसिष्ठकी कामधेतु जवर्दस्ती लेकर चला, उस समय वसिष्ठजीको क्रोध आया, उससे ललाटमे पसीनाका बिंदु निकला, सो समीप जो कटे तृण गौके चरनेके अर्थ पडे थे उनपर वो बिंदु पडे, इसीसे लूता (मकड़ी) प्रगट हुई इत मकडियोकी सोलह जाति है इन सोलहोके भी दो भेद हैं एक कृच्छ्रसाध्य, दूसरी असाध्य ॥

उनके काटनेके सामान्य लक्षण ।

ताभिर्दंष्ट्रेदंशकोथप्रवृत्तिःक्षतजस्यच । ज्वरोदाहोऽतिसारश्च

गदाःस्युश्चत्रिदोषजाः ॥ पिडिकाविविधाकारामण्डलानिमहा
न्तिच । शोथामहान्तोमृदवोरक्तश्यावाश्चलास्तथा ॥ सामा
न्यंसर्वलूतानामेतदंशस्यलक्षणम् ॥

अर्थ—उन मकड़ियोंके काटनेसे वो स्थान सड़े और उसमेसे रुधिर बहे,
ज्वर, दाह, अतिसार और त्रिदोषज, तथा अनेक प्रकारके फोडा, बड़े बड़े
चक्ते, नरम, लाल, काली, नीली और चंचल ऐसी सूजन होय इत्यादि लक्षण
होते हैं, इस प्रकार सर्व लूताओके सामान्य लक्षण जानने ॥

दूषीविपलूताके काटनेके लक्षण ।

दंशमध्येतुयत्कृष्णंश्यावंवाजालकावृतम् ॥ ऊर्ध्वाकृतिभृशं
पाकंक्लेदकोथज्वरान्वितम् । दूषीविपाभिर्लूताभिस्तदंष्ट्रमिति
निर्दिशेत् ॥

अर्थ—जिस दंशका मध्यभाग काला, अथवा पीला, अथवा हरा, तथा
जालके सदृश ऊंचा होकर शीघ्र पके, तथा उसमेसे दुर्गंधियुक्त लस बहे,
उसमें ज्वर होय, उसको दूषीविप अथवा लूताका काटा हुआ जानना ॥

प्राणहरलूताके लक्षण ।

सर्पाणामेवविण्मूत्रशक्कोथसमुद्भवाः । दूषीविपाःप्राणहरा
इतिसंक्षेपतोमताः ॥ शोथाःश्वेताऽसितारक्ताःपीताःसपिटिका
ज्वराः । प्राणान्तिकाभिर्जायन्तेदाहहिक्काशिरोग्रहाः ॥

अर्थ—सर्पोंके मलमूत्रसे अथवा भरे हुए सर्पके सदजानेसे जो दूषी विपके
कीड़ा उत्पन्न होय, वे प्राण हरनेवाले होते हैं उनका काटा हुआ स्थान सूज
आवे, तथा वो सफेद काला लाल पीला होय और फुंसो होंगाय और रोगी-
को ज्वर आवे, दाह होय, हिचकी आवे, मस्तकमे शूल होय ॥

लूताविप चिकित्सा । रजन्यादिलेप ।

रजनीद्वयमंजिष्टापतंगगजकेसरैः ।

शीतांबुपिष्टैरालेपःसद्योलूताविपापहः ॥

अर्थ—हलदी, दारुहलदी, मज्जाठ, पतंग, गजकेशर, इन सबकी शीतल
जलमे पीसके लेपकरे तो तत्काल लूताविप दूर होय ॥

गिरिकर्णोदिलेप ।

गिरिकर्णद्वयंश्लुःपाटलाद्रेपुनर्नवे ।

कपित्थश्चाशिरीपश्चलेपोलूताविपापहः ॥

अथ—नीलीकोयल और सपेदकोयल, वेलगिरी, पाटला, लालपुनर्नवा और सपेद पुनर्नवा, कैथ और सिरस इनका लेप लूताविपको नष्ट करेहै ॥
कीटजलौकाचिकित्सा ।

कटभ्यर्जुनशैरीपशैलुक्षीरिद्रुमत्वचः ।

कपायकल्कचूर्णोयंकीटलूताव्रणापहः ॥

अर्थ—कटभी कोह, सिरस, वेलगिरी और क्षीरीवृक्ष (बड पीपल आदि) इनकी छालका काश कल्क या चूर्ण बनायके सेवन करे तो लूताका घाव अच्छा होय ॥

वचादि काढा ।

वचाहिंशुविडंगानिसैंधवंगजपिप्पली । पाठाप्रतिविपाव्योपंक

श्यपेनविनिर्मितम् ॥ दशांगमगदंपीत्वासर्वकीटविपजयेत् ॥

अर्थ—वच, हांग, वायविडंग, सैंधानिमक, गजपीपल, पाठ, अतीस, सोंठ, मिरच, पीपल, यह कश्यपका बनाया दशांग अगद है, पीनेसे सर्व कीट (कीड़ों) का विप दूर होय ॥

वरटीविपचिकित्सा मरिचादिलेप ।

मरिचंनागरोपेतंसिंधुसौवर्चलान्वितम् ।

फणिवल्लीरसैलेपाद्धंतितद्रटीविपम् ॥

अर्थ—काली मिरच, सोंठ, सैंधानिमक, संचर निमक, इन सबको नागर-बेलके रससे घिसके लेप करे तो वरटी (वरयां ततैयां) का विप नष्ट होय ॥
दूषीविपासु लक्षण ।

आदंशाच्छोणितंपाण्डुमण्डलानिज्वरोऽरुचिः ।

लोमहर्षश्चदाहश्चाप्याखुद्रूपीविपादिते ॥

अर्थ—विषेलआसु (मूसा) के काटनेसे पीला रुधिर निकले, देहमें गोल चकत्ते उठें, ज्वर होय, अरुचि होय, रोंमांच और दाह होय ये मूसेके काटनेके विषपीडित मनुष्यके लक्षण हैं ॥

प्राणहरमूपवविप लक्षण ।

मूर्च्छांगशोथवैवर्ण्यैक्रेदोमन्दश्रुतिज्वरः ।

शिरोगुरुत्वंलालासृक्छर्दिश्वासाध्यमूपकैः ॥

अर्थ—जिस मूसेके काटनेसे मूच्छा, मूसेके आकार सृजन, देहमें विवर्णता, क्लेद, मंद सुनाई दे, ज्वर, मस्तक, भारी, लार और रुधिर इनकी रद्द होय, ये लक्षण प्राणहर्ता मूसेके असाध्य हैं ॥

आयुविपचिकित्सा ।

आगारधूममंजिष्टारजनीलवणोत्तमैः ।

लेपोजयत्याखुविपंकोशातक्यथवासिता ॥

अर्थ—घरका धूमसा, मजीठ, हलदी, सैंधानिमक, इनका लेप विपेल मूसेके विपको दूर करे अथवा वासी तोरईके लेपसे विपेल मूसेके विप दूर होय ॥

चरगकुंचुकी धूम ।

उरगेणविनिर्मुक्तनिर्माकधूमसेवनात् ।

पथ्याशीत्रिदिनंधूमोभवेदाखुविपापहः ॥

अर्थ—साँपकी काँचलीकी धूनी तीन दिन लेवे और पथ्यसे रहे तो विपेल मूसेके विपको नष्ट करे ॥

चित्रकमूलचूर्ण ।

अथवाचित्रकमूलचूर्णतैलेविपाच्यमस्तकेक्षुरेणप्रच्छित्य ।

शिरसित्रह्वरंभ्रेमर्दनंकृत्वाआखुविपंनश्यति ॥

अर्थ—चित्रककी जड़को चूर्णके तैलमें पचावे, फिर छुरासे मस्तकमें पछना लगायके मर्दन करे अर्थात् ब्रह्वरंभ्रमे मले तो विपेल मूसेका विप दूर होय ॥

चिंचादिचूर्ण ।

चिंचापलसमायुक्तंगृहधूमंपलार्धकम् ।

पुराणाज्येनसप्ताहंलीढ्वाआखुविपंहरेत् ॥

अर्थ—इमली ४ तोले, घरका धूमसा २ तोले इन दोनोंको पुराने घृतमें सानके चाटे तो विपेल मूसेका विप दूर होय ॥

रसादिलेप ।

रसगंधनिशावंधुंगृहधूमंशिरीषजम् । वीजंदिनकरक्षीरैर्मदंयि

त्वाविलेपनम् । विशेषान्मृपकविपंहन्यादन्यान्विपोद्भवाद् ॥

अर्थ—पारा, गंधक, कपूर, घरका धूमसा और सिरसके वीज, इनको आकके दूधमें मर्दन करके लेप करे तो मूषक विप दूर होय तथा अन्य विष-जन्य रोग दूर हो ॥

शिलादिपान ।

शिलातालककुष्ठानिपिष्टानिर्गुडिजद्रवेः ।

पानंमूपकदष्टानांदत्वातीव्रविषंहरेत् ॥

अर्थ—मनसिल, हरताल, कूठ, इनको निर्गुंडीके रसमें पीसके पीवे तो तीव्र मूसेका विष हरण करे ॥

नखदंतविष ।

पिचुमंदशमीकंटकलकयुतंक्षयितंजलमाशुविलोडनतः । नख
दंतविषाणिनिहंतिनृणांविषमान्यखिलान्यपिसत्यमिदम् ॥

अर्थ—नीम, छोकरा, कायफल, इनके कल्कका काय करा जल विषके ऊपर डालनेसे नाखून दांतेके विषोंको नष्ट करे और भी विषम विषोंको नष्ट करे, यह सत्य है ॥

कृकलासदष्टलक्षण ।

क्राण्यैशावत्वमथत्रानानावर्णत्वमेवच ।

व्यामोहोवर्चसोमेदोदष्ट्रेस्यात्कृकलासकैः ॥

अर्थ—नीलोके काटनेसे देहका वर्ण काला, अथवा लाहरा, तथा अनेक प्रकारका होय, तथा उस रोगीके धांति और अतिसार होय ॥

वृश्चिक (विच्छू) की उत्पत्ति ।

सर्पाणामेवविष्मूत्राद्दृश्चिकाःकीटजामताः ॥

अर्थ—सांपोंकी विष्ठा मूत्रमेंसे जो विच्छू पैदा हो, वो कीटज कहलाते हैं ॥

वृश्चिकविपलक्षण ।

दहत्यग्निरिवादौतुभिनत्तीवोर्ध्वमाशुवै ।

वृश्चिकस्यविषंयातिदंशेषश्चात्तुतिष्ठति ॥

अर्थ—विच्छूके काटनेसे उस स्थानमें प्रथम आगसी जले, पीले ऊपरकों चढे, पीले उस काटनेकी जगह फटनेकीसी पीडा होय ॥

अब कहते हैं कि वीछू मन्दविष, मध्यविष, महाविषके भेदसे तीन प्रकारका है । तिनमें जो गौके गोवरसे प्रगट होय वो मन्दविष है, और काठ ईंट इनसे प्रगट होय वो मध्यविष है और जो सर्पकी सड़ी देहसे प्रगट होय वो अथवा अन्य विषवाली वस्तुओंसे प्रगट होय वो विच्छू महाविषवाला होताहै मंद विषवाले विच्छू बारह प्रकारके हैं । और मध्यविषवाले तीन प्रकारके हैं । और महाविषवाले पंद्रह प्रकारके हैं ऐसे सब मिलकर तीस प्रकारके विच्छू हैं कोई आचार्य २७ प्रकारके कहते है, कृष्ण, श्याव, कंठुर, (विचित्रवर्ण) पीत, गोमूत्राभ, कर्कश, मेचक, श्वेत, लाल, रोमश, शादलाभ, रक्त ये बारह मन्दवीर्य है, इनके काटनेसे पीडा, कंप, देहका स्तंभ, काले रुधिरका निकलना, इत्यादि रोग होते है ॥

रक्तोदर, पीतोदर, कापिलोदर, ये तीन मध्यविषवाले विच्छू है, इनके काटनेसे जीभमें सूजन, भोजनका न होना, घोर मूर्च्छा ये लक्षण होते है ॥

श्वेत, चित्र, श्यामल, लोहिताभ, रक्तश्वेत, रक्तोदर, नीलोदर, पीत, रक्त, नीलपीत, रक्तनील, नीलशुक, रक्तचक्षु, एकपञ्चा, उपञ्चा, ये घोर विषवाले १५ विच्छू है । इनके काटनेसे सर्पके समान वेग होय, फोडोंकी उत्पत्ति होय, भ्रांति, दाह, ज्वर, नाक, कान, आदि छिद्रोंसे काला रुधिर निकले, इसीसे शीघ्र प्राणत्याग होवे ॥

वृश्चिकविषके असाध्यलक्षण ।

दष्टोसाध्यस्तुहृद्घ्राणरसनोपहतोनरः ।

मांसैःपतद्भिरत्यर्थवेदनातीजहात्यसून् ॥

अर्थ-हृदय, नाक, जीभ, इनमें विच्छूके काटनेसे मांस गलकर अत्यन्त वेदना होकर मनुष्य मरे ॥

विच्छूविषचिकित्सा कार्पासादिलेप ।

कार्पासपत्रैःसंपिष्टैराजिलेपोविषापहः ॥

वृश्चिकस्याथवावत्सनाभलेपःप्रशंस्यते ॥

अर्थ-कपासके पत्तोंके रसमें राई मिलायके पीसे तो विच्छूका विष दूर होय । अथवा वत्सनाभ विषका लेप विच्छूके विषको शांति करे ॥

मनःशिलादिलेप ।

मनःशिलाकुण्डकरंजवीजशिरीषकाश्मीरभवैःसमांशैः ।

विनिर्मितास्येविधृताचलितासंधारणोवृश्चिकवैकृतस्य ॥

अर्थ-मनसिल, कूट, कंजके बीज, सिरसकेबीज, केशर ये सब समान भाग लेवे, इनको वारीक पीस गौली घनाय लेवे । गौली मुँहमें रखे और जहाँ काटा होय उस जगह लेपकरे तो विच्छूका विष नष्ट होय ॥

विजोसामूलयोग ।

मातुलिंगस्यमूलंतुराविवारेसमुद्धरेत् । उत्तराभिमुखेनवृंहामं

त्रोच्चारणात्स्पृशेत् ॥ वामाग्रेदक्षिणेदष्टेवामेदष्टेचदक्षिणे ।

सप्तधामार्जनेनैवविषंवृश्चिकजंहरेत् ॥

अर्थ-विजोरेकीजड रविवारको उत्तराभिमुख होकर साँदे फिर "ह्रीं" इस मंत्रका जपकरता हुआ उसको उखाडलेवे, यदि दाहिनीतरफ काटा होय तो इस जडको बाई तरफ और बाई तरफ काटा होय तो दहनी तरफ ७ बार झाडा देनेसे विच्छूका विष दूर होय ॥

अन्ययोग ।

श्वेतपुनर्नवामूलंरविवारेसमुद्धरेत् ।

कार्पासमूलंचर्वित्वाविपंवृश्चिकजंहरेत् ॥

अर्थ—सपेद पुनर्नवाकी जड़की रविवारके दिन उखाड़ लावे इसके लगाने-से तथा कपासकी जड़ चवानेसे विच्छूका विष दूर होय ॥

हंसपादीमूल ।

ग्राह्यंहंसपदीमूलंप्रातरादित्यवासरे ।

मुखस्थंपूत्कृतंकर्णैर्विपंवृश्चिकजंहरेत् ॥

अर्थ—हंसपदी (लुईसुई) की जड़की रविवारके प्रातःकालको उखाड़ लावे फिर इसको चवायके जिसे धीछूनेकाटा होय उसके कानमें धूकदेवे तो विच्छूका विष दूर होय ॥

जेपालकल्क ।

पानीयपिष्टजेपालकल्कलेपेनसर्वथा ।

विपंवृश्चिकविद्धस्यभस्मीभवतितत्क्षणात् ॥

अर्थ—जमालगोटेको पानीमें पीसके जहांपर विच्छूने काटा होय उसपर लेप करे तो नत्क्षण विच्छूका विष भस्म होय ॥

नवसादरादिलेप ।

नवसादरहरितालेपिष्टेतोयेनलेपनादंशे ।

तत्क्षणमेवजयतिवृश्चिकविद्धस्यदुर्धरंक्ष्वेडम् ॥

अर्थ—नौसदर, हरिताल, इन दोनोंको जलमें पीसके जहां विच्छूने काटा होय लेप करे तो घोर विच्छूके विषको नष्ट करे ॥

कणभदष्टके लक्षण ।

विसर्पःश्वयथुःशूलंज्वरश्छर्दिरथापिवा ।

लक्षणंकणभेदंप्रेदंशश्चैवविशीर्यते ॥

अर्थ—कणभ एक जातिका कीड़ा होता है । उसके काटनेसे विसर्प सूजन, शूल, ज्वर, वमन, ये लक्षण होते हैं और घोर काटनेका स्थान गल जाय, अब कहते हैं कि त्रिकंदक, कुपी, हस्तिकस, उपराजित ये कणभ कीड़ाके चार भेद हैं । इनके काटनेसे पूर्वोक्त रोग होंय और अंगोंका टूटना, देहमें भारी-पन और काटनेकी ठौर काली हो जाय, ये लक्षण विशेष होंय ॥

उच्चिटिंगर (झींगर) विपके लक्षण ।

हृष्टरोमोच्चिटिंगेनस्तब्धलिङ्गोभृशार्तिमान् ।
दष्टःशीतोदकेनेवसिक्तान्यंगानिमन्यते ॥

अर्थ—उच्चिटिंगनामक विच्छूके काटनेसे देहमें रोमांच होंय, लिङ्ग जकड़ जाय, घोर पीडा होय और सब देहपर शीतल जल मानो डाल दिया है, उच्चिटिंगको सुश्रुतवाला झींगर कहता है और कोई उष्ट्रधूम कहते हैं परन्तु आतंकदर्पण टीकाकारने विच्छूका भेद माना है ॥

मंडूक (मंडक) विपके लक्षण ।

एकदंष्ट्रादितःशूनःसरुजःपीतकःसतृट् ।
छादिर्निद्राचसविषैर्मण्डूकैर्दष्टलक्षणम् ॥

अर्थ—विपेले मंडकके काटनेसे उसका एक दांत लगे, उस ठिकाने पीली सूजन होय, दूखे, प्यास, वमन और निद्रा ये लक्षण होंय अब कहते हैं कि कृष्णसार, कुहक, हरित, रक्त, यववर्णाभ, भ्रुकुटी १ फोटिक, इन भेदोंसे मंडक आठ प्रकारका हैं इनके काटनेसे पूर्वोक्त लक्षण होंय और खुजली, मुखमें पीले ज्ञाग आना, इन आठमेंभी भ्रुकुटी और फोटिक इन दोनों मंडकोंके काटनेसे पूर्वोक्त लक्षण होंय और दाह, मूच्छा, अत्यन्त होंय ये विशेष लक्षण होते हैं ॥

मंडूकविप चिकित्सा ।

शिरीषबीजैःकुलिशद्रुमस्यक्षीरेणपिष्टैःकृतलेपनानाम् ।

विपंविनाशं व्रजतिक्षेणनमंडूकदंशप्रभवंनराणाम् ॥

अर्थ—सिरसके बीज, धूरके दूधमें पीसके लेप करे तो विपेल मंडकका विप तत्काल दूर होय इसमें किंचिन्मात्र संदेह नहीं है ॥

विपेल मछली ।

मत्स्यास्तुसविपाःकुर्युर्दाहंशोथंरुजंतथा ॥

अर्थ—विपेल मछलीके काटनेसे दाह सूजन और शूल, ये होंय, विपेल मछलीके सत्ताईस भेद हैं ॥

मत्स्यविप चिकित्सा ।

कृष्णवेत्रस्यनिःक्वाथ्येकल्केघृतंविमिश्रितम् ।

शृंगिमत्स्यविपंहतिधूमोवाचर्हिपक्षजः ॥

अर्थ—काली घेतके काथमें या कल्कमें घृत मिलायके पीये तो शृंगी मछलीका विप दूर होय ॥

विपैलजोंके लक्षण ।

कंडूशोथंज्वरंमूर्च्छांसविपास्तुजलौकसः ।

अर्थ—विपैले जोकके काटनेसे खुजली, सूजन, ज्वर और मूर्च्छाये लक्षण होतेहैं ।

छिपकलीके विपके लक्षण ।

विदाहंश्वयथुंतोदंस्वेदं चगृहगोधिका ॥

अर्थ—छिपकलीके विपसे दाह होय, सूजन, नोचनें कीसी पीडा और पसीना आवै ॥

कांतर (कानखजूराके) विप ।

दंशेस्वेदंरुजंदाहंकुर्याच्छतपदीविपम् ॥

अर्थ—कानखजूराके काटनेसे काटनेके स्थान पर पसीना आवै, शूल होय और दाह होय ॥

कातर कानखजूरेके विपका यत्न ।

लेपःप्रदीपतैलस्यखजूरविपनाशनः ।

हरिद्राद्रयलेपोवासगैरिकमनःशिला ॥

अर्थ—दीपकके तैलका लेप करनेसे कानखजूरेका विप नष्ट होय । अथवा हलही दारुहलदी, गेरू और मनसिल इनका लेप शतपदी (कांतर) के विपको नष्ट करे ॥

मच्छरके विपके लक्षण ।

कंडूमान्मशकैरीपच्छोथःस्यान्मंदवेदनः ॥

अर्थ—मच्छर अथवा डांसके काटनेसे किंचित् सूजन होय, उसमें खुजली चले, तथा थोड़ी पीडा होय ॥

असाध्य मशकक्षतके लक्षण ।

असाध्यकीटसदृशमसाध्यमशकक्षतम् ॥

अर्थ—पर्वतके ऊपर रहनेवाले मच्छर, अथवा डांसके काटनेसे क्षत असाध्य कीटके समान असाध्य है । असाध्य कीटके विपके लक्षण सुश्रुतमें लिखे हैं सो जान लेंने ॥

सविपमक्षिका (मक्खी) दंशके लक्षण ।

सद्यःप्रस्राविणीस्याद्दाहमूर्च्छांज्वरान्वितां ॥

पिडिकामक्षिकादंशेतासांतुस्थविकाऽमुहत् ॥

अर्थ—विपैलमक्खीके काटनेके ठिकाने काली फुंसी प्रगट होय, वो तत्क्षण वहनें लगे, उस ठिकाने दाह होय और मूर्च्छा, ज्वर होय, इनमें स्थविका नाम मक्खी प्राणहर्ता जानना ॥

मक्खीके छः भेद हैं जैसे कान्तारिका, कृष्णा, पिंगालिका, मधूलिका, कापायी, और स्थविका, इनमें कापायी और स्थविका दो असाध्य हैं ॥

चतुष्पादादिकोंके विपके साधारण लक्षण ।

चतुष्पद्भिर्द्रिपद्भिर्वा नखदन्तविपंचयत् ।

शूयतेपच्यतेचापिस्रवतिज्वरयत्यपि ॥

अर्थ—व्याघ्र आदि चतुष्पाद और वनमनुष्यादि वानरादि द्विपाद इनके नख दांतोंका विप सूज आवे, पकजावे, वहे तथा इसके योगसे ज्वर आवे अब कहतेहैं कि श्रीमाधवाचार्यने विश्वभरा, अहिंडूका, कंडूमका, शुकृन्तादि पिपीलिका, गोधेरका और सर्पापिवा, इनके विपका निदान नहीं लिखा परंतु इनका निदान मुश्रुतमें कहा है सो ग्रंथकी समाप्तिमें लिखेंगे ॥

विप उतरगयाहो उसके लक्षण ।

प्रसन्नदोषंप्रकृतिस्थधातुमन्नाभिकांशंसममूत्रविट्कम् ।

प्रसन्नवर्णोन्द्रियचित्तचेष्टवैद्योऽवगच्छेदविपमनुष्यम् ॥

अर्थ—जिस पुरुषके वातादि दोष निर्मल होंय, रस रक्तादि धातु निरोग अवस्थामें जैसे होते हैं वैसेही होंय, अन्न खानेकी इच्छा होंय मलमूत्र जैसे होते हैं वैसे होंय शरीरका वर्ण, इन्द्री, मन और व्यापार (देहकी चेष्टा) ये जिसके शुद्ध होंय, उसका विप उतरगया ऐसे वैद्य जाने ॥

शृंगीविपका मल ।

नागरंगृहकपोतपुरीपंवीजपूरकरसोहरितालम् ।

सैधवंचविनिहंतिविलेपादाशुशृंगजनितंविपमेतत् ॥

अर्थ—सोंठ, घरके खरतरकी बीठ, विजौरिका रस, हरिताल, सैधानिमक इनकी जलमें पीस, लेपकरे तो शृंगजविप दूर होय ॥

मक्खीकी पिटका ।

सोमवल्कोऽवकर्णश्वगोजिह्वाहंसपाद्यपि ।

रजन्यौगैरिकंलेपोमक्षिकापिटिकापहः ॥

अर्थ—सोमवल्कल, अश्वकर्ण (सालका भेद) गोभी, लुईमुई, हलदी, दारुहलदी और सोनगेह इनकी पीस लेपकरे तो मक्खियोंके फांटकी पिटिका नष्ट होय ॥

बेटी, मक्खी और मच्छर ।

पिपीलिकाभिर्दधानामक्षिकामशकैस्तथा ।

गोमूत्रेणवरालेपःकृष्णवल्मीकमृत्कृतः ॥

अर्थ—गोमूत्रसे त्रिफलेको पीसके लेप करें अथवा काली मिट्टी और वैव-
ईकी मिट्टीका लेप चेटियोंका काटना, मक्खियोंका काटना, मच्छरके काटेका
विष दूर होय ॥

विपनाशकयोग ।

तिक्तकोशातकीकाथंमध्वाज्यसंयुतंपिवेत् । कटुकानिबुमूलं
वातत्पत्रंवापिवेज्जलैः॥तत्क्षणाद्गमनाद्धंतिविपयोगाद्विमुच्यते॥

अर्थ—कडवीतोरईके काथमें सहत और धी मिलायके पीवे, अथवा कुटकी
नीबूकी जड़, अथवा नीबूके पत्ते जलमें घोटके पीवे, उसी वस्तु रद्द होकर इस
प्राणीका विष दूर होय ॥

शीतलपरिपेक ।

विपमत्यर्थमुष्णंचतीक्ष्णंचकथितंयतः ।

अतःसर्वविपेयुक्तःपरिपेकस्तुशीतलः ॥

अर्थ—विष अत्यंत गरम और तीक्ष्ण है, इसीसे सर्व विषोंमें शीतल जल-
का तर देना हितहै ॥

प्रमाणांतर ।

औष्ण्यात्तौक्ष्ण्याद्विशेषेणविषंपित्तंप्रकोपयेत् ।

वामितंसेचयेत्तस्माच्छीतलेनजलेनच ॥

अर्थ—विष अपने गरम और तीखे गुणसे पित्तको कुपित करताहै अतएव
विषखाए रोगीको प्रथम वमन करावे फिर शीतल जलका तरडा देना चाहिये॥

यत्नान्तर ।

पाययेन्मधुसर्पिर्भ्यांविषंभेषजंद्रुतम् ।

भोक्तुमम्लरसंदद्याच्चर्वयेन्मरिचानिच ॥

अर्थ—विषवाधावालेको सहत और धीमें विषनाशक औषध पिलावे और
भोजनके वास्ते खट्टे रस देवे तथा उसको कालीमिरच चबलाना चाहिये ॥

सामान्यचिकित्सा ।

यस्ययस्यचक्षुपस्यपश्येच्छिगानिभूरिशः ।

तस्यतस्यौषधैःकुर्याद्विपरीतगुणक्रियाम् ॥

अर्थ—जिस २ विषमें जिस २ दोषके लक्षण बहुतसे प्रतीत होते हो उसी
२ दोषकी शांति कर्ता चिकित्सा करे । क्योंकि रोगसे विपरीत क्रियाही फ-
लोंपयोगिनी होतीहै ॥

गरनाशकरस ।

शुद्धंसूतंमृतंस्वर्णसंशुद्धंहेममाक्षिकम् । त्रयाणांगंधकंतुल्यंमृ
घात्कन्याद्रवैर्दिनम् ॥ तच्छुष्कंससितंशौद्रैर्मापैकंभक्षयेत्सदा ॥
वन्हिमूलंशृतंक्षीरेनुस्याद्गरनाशनम् ॥

अर्थ—शुद्धपारा, सुवर्णकी भस्म, शुद्ध सुवर्ण माक्षिक इन तीनोंकी बराबर गंधक लेवे सबको घी गुवागके रसमें १ दिन खरल करे । जब सूख जाय तब इसमें मिश्री और सहतके साथ १ मासे नित्य सेवन करे और चित्रककी छालका काथ इसके ऊपर पीवेतो यह गरनाशक रस सर्व प्रकारके विषोंकी नष्ट करे ॥

विपहरशिरीषाटिलेप ।

मूलत्वक्पत्रपुष्पाणिबीजंचेतिशिरीषतः ।

गवांमूत्रेणसंपिष्टंलेपाद्विपहरंपरम् ॥

अर्थ—जड़, त्वचा, पत्ते, फूल और बीज ये सिरसके लेकर गोमूत्रमें बारीक पीस लेप करे तो यह विपहरणकारी योग सर्वोंपर है ॥

स्थावरविषका यत्न ।

स्थावरेणविषेणार्तनरंयत्नेनवामयेत् ।

वमनेनसमंनस्तिथुतस्तस्यचिकित्सितम् ॥

अर्थ—स्थावरविषव्याप्त मनुष्यको यत्नपूर्वक वमन करावे, क्योंकि इस विषके खानेवालेको वमन करानेके समान और औषधि नहीं है ॥

पथ्य ।

शालय.पष्टिकाश्चैवकोरदूपाःप्रियंगवः । सुद्वोहरेणवस्तेलंसर्पि
श्चापिनवंकचित् ॥ वार्ताकंकुलकंधात्रीजीवंतीतंडुलीयकम् ।

कालशाकंचलशुनंदाडिमंचविकंकतम् । भोजनार्थेविपार्तानां
हितंपटुपुसेधवम् ॥

अर्थ—शालीचावल, सांठीचावल, कूटू, प्रियंगु धान्य (कामनी) मूंग, मटर, नया तेल और घी वैगन, पडवल, आंवले, जीवंती (डोडी) चौलाई, कालशाक, लहसन, अनारदाना, विकंत ये सब पदार्थ विषवालेको सब हित और सेधेनिमक सब निमकोंसे हिताकारी है ॥

अपथ्य ।

विरुद्धाध्यशनंक्रोधंक्षुद्रयायासमैथुनम् ।

वर्जयेद्विषयुक्तोपिदिवास्वापंविशेषतः ॥

अर्थ-विरुद्ध भोजन तथा अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन) क्रोध, भूख, भय, परिश्रम, मेथुन करना इनको विषयुक्त प्राणी त्याग देय तथा दिनमें सोनाभी विशेष करके त्याग देवे ॥

अलर्क (बावला कुत्ता) विपनिदिनि वाग्भृसे ।

शुनःश्लेष्मोल्बणादोपांसंज्ञासंज्ञावहाश्रिताः । सुष्णन्तःकुर्वन्ते

क्षोभंघातृनामतिदारुणम् ॥ लालावानंधवधिरःसर्वतःसोऽभि

धावति । म्रस्तपुच्छहनुस्कंधःशिरोदुःखीनताननः ॥

अर्थ-कुत्ताक कफाधिक दोष संज्ञाके वहानेवाले खोत्रों (छिद्रों) में प्रवेश करके संज्ञानाशके सदृश करे और उसका घातूका क्षोभ करे । इस योगसे उस कुत्ताके मुखसे लार बहे तथा वो अंधा बहरा होकर इधर उधर दौड़ने लगे, उसकी पूंछ सीधी होजाय और ठोड़ी कंधा डीले होजाय, इसको बावला कुत्ता कहते हैं ॥

उसके काटनेके लक्षण ।

दंशस्तेनविदष्टस्यसुप्तःकृष्णक्षरत्सृक् ।

हृच्छिरोरुग्ज्वरःस्तम्भस्तृष्णामूर्च्छोद्भवोच ॥

अर्थ-उस घावले कुत्ताके काटनेसे काटनेकी जगह शून्य होजाय, उसमेंसे काला रुधिर बहे, तथा उस मनुष्यका हृदय और भस्तक सूखे, ज्वर होय, देह जकड़जाय, प्यस लगे, तथा मूर्च्छा आवै ॥

अनेनान्येपिबोद्धव्याव्यालदंष्ट्राप्रहारिणः ।

सृगालाश्वतराश्वर्क्षद्वीपिव्याध्रवृकादयः ॥

अर्थ-इसप्रकार डाढाप्रहार करनेवाले सर्प, स्यार, खिंचर, घोडा, रीछ, चीता, बाघ, भेडिआ, आदिशब्दसे सिंह, वानर, आदि इनके लक्षण भी कुत्ताके समान जानने ॥

सविष निर्विषदंशके लक्षण ।

कण्डूनिस्तोदवैवर्ण्यसुप्तिकेदज्वरभ्रमाः । विदाहरागरुक्पाक

शोफग्रंथिविकुंचनम् ॥ दंशावदरणंस्फोटाःकर्णिकामण्डला

निच । सर्वत्रसविषोर्लंगविपरीतंतुनिर्विषे ॥

अर्थ—खुजली, नोचनेकीसी पीडा, वर्णका बदलना, शून्यता, क्रेद, ज्वर, भ्रम, दाह, लाली, दर्द, पकना, सूजन, गांठें, चोटनी, काटनेकी जगह चीरा पडें, फोडा, कर्णिका मंडल, ये लक्षण सविष दांतके होते हैं । इससे विपरीत लक्षण निर्विषके जानने !!

असाध्य लक्षण ।

दष्टोयेनतुतच्चेष्टारुतंकुर्वन्विनश्यति ।

पश्यंस्तमेवचाकस्मादादर्शसलिलादिषु ॥

अर्थ—जिस प्राणीका काटा हुआ मनुष्य उसी प्राणिका सर्व चेष्टा करे और रुदन करे, तथा आदर्श (शीसा) पानी आदि पदार्थोंमें उसी प्राणीका प्रति-विंब देखे वो रोगी मरजाय ॥

जलसंत्रासनामाके लक्षण ।

योऽद्यंस्त्रस्येददष्टोपिशब्दसंस्पर्शदर्शनैः ।

जलसंत्रासनामानंदष्टंतमपिवर्जयेत् ॥

अर्थ—पुरुष पानीके शब्द, स्पर्श-और अवलोकन (देखने) से डरपे उसको जलसंत्रासनामा कहते हैं । उसको भी वैद्य त्याग देवे, कोई शंका करे कि जलविना कैसे मनुष्य डरता है इसवास्ते कहते हैं ॥

श्वानविपरी चिकित्सा ।

काकोदुंबरिकामूलंधनूरफलसंयुतम् ।

पीतंतदुलतोयेनसारमेयविपापहम् ॥

अर्थ—कटूमरकी जड़, धतुरेके फल दोनोंको समान भागले चावलके धोवनसे घोटके पीवे तो बावले कुत्तेका विष दूर होय ॥

दूसरा यत्न ।

कारस्करफलसेव्यंक्रमवृद्धंदिनेदिने ।

सारमेयविपंहंतिमासेननहिसंशयः ॥

अर्थ—कुचलेके फलको दिन प्रतिदिन क्रमसे बढायकर खावे तो १ महिने-में निस्सदिह बावले कुत्तेका विष दूर होय ॥

तीसरा यत्न ।

पिष्टापामार्गमूलंतुकर्पिकंमधुनापिबेत् । श्वानदंश्राविपंहन्या

त्कुमारीदलसेधवम् ॥ दंशस्थानेबंधयेत्तुत्रिदिनांतेसुखावहम् ॥

अर्थ—जोंगा (चिरचिरा) की जड़को १ तोले लेकर जलमें घोट सहतसे

पीवे, अथवा धीगुवारके गूदेमें संधानिमक मिलायके जहां कुत्तेने फाटा हीय वहां बांधे तो ३ दिनमें बावले कुत्तेका विष दूर होय ॥

चतुर्थ यत्न ।

कस्तुरीवच्चूलपत्ररसोगोघृतेनपानेदेयःशुनोविपंनश्यति ॥

अर्थ—कस्तूरी और वचूलके रसको गौके घीके साथ पीनेको देय तो बावले कुत्तेका विष नष्ट होय ॥

पंचमयत्न ।

शतावरीमूलरसोगोदुग्धेनसहपानेदेयःविपंनश्यति ॥

अर्थ—शतावरीकी चूडका रस गौके दूधमें पीवे तो बावले कुत्तेका विष दूर होय ॥

छठायत्न ।

गुडतैलार्कदुग्धंवालेपाच्छुनोविपंनहरेत् ॥

अर्थ—गुड, तेल, आकका दूध, इनको पीसके लेप करे तो कुत्तेका विष नष्ट होय ॥

सप्तमयत्न ।

श्वानदंष्ट्राविपंहंतिलेपात्कुक्कुटविष्टया ॥

अर्थ—गुरमेकी घीठको पीसके लेप करे तो बावले कुत्तेका विष दूरहोय ॥

अष्टमयत्न ।

तैलंतिलानांपल्लंगुडंचक्षीरंतथार्कस्यसमंहिपीतम् ।

आलर्कमुग्रंविपमाशुहंतिसद्योद्भवंवायुरिवाभ्रवृंदम् ॥

अर्थ—तिलका तैल, खली, गुड, आकका दूध ये समान भागले, सबको एकत्र कर अनुमानकी मात्रासे पीवे तो बावले कुत्तेके विषको इस प्रकार नष्ट करे जैसे वायु अपने वेगसे बादलोंको ॥

स्नायुके निदान ।

शाखासुकुपितोदोषःशोथंकृत्वाविसर्पवत् । भिनत्तितक्षतेतत्र

सोष्मामांसंविशोप्यच ॥ कुर्यात्तन्तुनिभंजीवंवृत्तंसितद्युतिव

हिः । शनैःशनैःक्षताद्यातिछेदात्कोपमुपैतिच ॥ तत्पाताच्छो

फशान्तिःस्यात्पुनःस्थानांतरेभवेत् । सस्नायुकेतिविख्यातः

क्रियोक्तातुविसर्पवत् ॥ बाह्योर्यदिप्रमादेनजंघयोस्तुद्यतेक

चित् । संकोचंखंजतांचैवछिन्नोजन्तुःकरोत्यसौ ॥

अर्थ—हाथपैरोंमें दौप कृपित होकर विसर्पके सदृश सूजन होय वो सूजन फूटकर घाव पडजावे और उसमें आगसी चले, तथा मांस शुष्क होकर मृतके समान गोल संफेद जीव डोंरेके सदृश बाहर निकल आवे, वो धीरे धीरे घावसे बाहर निकलते समय टूट जावे तो बहुत दुःख देता है, यदि वो समय बाहर निकल आवे तो सूजन जाती रहै और उसमेंसे कुछ टुकड़ा बाकी रह जावे तो वह फिर दूसरे स्थानपर निकले उस रोगको स्नायुक (नहरुआ) कहते हैं. इसपर चिकित्सा विसर्परोग कीसी कही है कदाचित् हाथ वा पैरोंमें नहरुआ होकर टूट जावे तो हाथ पैरसे टोंटा अथवा लूला होजाय ॥

सायुककी चिकित्सा ।

स्नेहस्वेदप्रलेपादिकर्मकुर्याद्यथात्रलम् ।

अर्थ—रोगीका बलाबल विचारके स्नेहन, स्वेदन और लेप आदि कर्म वैद्य अपनी बुद्धिसे करे ॥

वातज स्नायुकपर ।

अहिंसामूलगोमूत्रकल्काद्येपस्तुवातजे ॥

अर्थ—काकादनीकी जड़ गौके मूत्रमें कल्ककर लेप करे तो वादीका स्नायुक अर्थात् वादी नहरुआ दूर होय ॥

पित्तजस्नायुक पर ।

पंचवल्कलकल्केनहितोलेपोत्रपित्तजे ॥

अर्थ—पंच वल्कलके कल्कका लेप पित्तजन्य स्नायुकको दूरकरे ॥

कफज स्नायुक ।

श्लेष्मजेस्नायुकेलेपःप्रशस्तःकांचनारजैः ॥

अर्थ—कचनारके कल्कका लेप कफके नहरुआपर करना हितकारी है ॥

द्वंद्वज और संनिपातज ।

द्वंद्वाभ्यांद्वंद्वजेलेपःसर्वैस्तैःसर्वजोहितः ॥

अर्थ—द्वंद्वज स्नायुक पर दो दोषोंके और संनिपात जन्य स्नायुक पर तीनों दोषोंपर जो लेप लिखे हैं वो मिलापके करने चाहिये ॥

रक्तजन्य स्नायुकपर ।

रक्तजेस्नायुकेलेपोवटप्लुक्षत्वचोहितः ।

विसर्पोक्ताःक्रियाःत्रिर्वाःस्नायुकेतुहितामताः ॥

अर्थ—रुधिरके स्नायुक रोगपर वट पाकरकी छालका लेप करे तथा विसर्प

रोग पर जो औषधि कही गई है वह सब इस स्नायुक रोगमें हितकर्ता कही है ॥
स्नायुक पर लेप ।

कुष्ठरामठशुंठीभिःकल्कःशिशुसमन्वितः ।

पानालेपनयोगेनजंतुपीडाविनाशनः ॥

अर्थ—कुठ, हींग और सोठ इनमें सहजना डालके कल्ककरे इस कल्कके पीने अथवा लेप करनेसे नारुयेकी पीडा नष्ट होय ॥

उपायान्तरम् ।

शिशुमूलफलेःपिष्टैःकांजिकेनससेन्धवैः ।

लेपनंलशुनंचाग्निराजिकापिंडिकादिके ॥

अर्थ—सहिजनेकी जड़, फल, सैधानिमक, लहसन, चीतेकी छाल और राई इनको कांजीमें पीस गोली बनायके नहरुयेपर धरे तो नहरुआ नष्ट होय ॥

बन्धूलबीजयोग ।

बन्धूलबीजंगोमूत्रपिष्टं हंति प्रलेपनात् ।

स्नायुकानिसमस्तानिसशोथानिसहंजिच ॥

अर्थ—बन्धूरके बीजोंको गोमूत्रमें पीसके लेप करे तो साथ युक्त ओर पीडा-युक्त सपूर्ण स्नायुक रोग दूरहोय ॥

सुधायोग ।

सुधयासहलोणारंजलेनालोब्धलेपयेत् ।

अनेनतुप्रयोगेणत्रिदिनदेवनश्यति ॥

अर्थ—थूहरके साथ लौनातृणको जलमें पीसके लेप करे इस प्रयोगसे नहरु आ तीन दिनमें अवश्य नष्ट होय ॥

पातालगरुडीयोग ।

पातालगरुडीमूलंपिबेत्स्नायुकनाशनम् ।

तिलपिण्याकलेपोवाह्यारनालेनपेपितः ॥

अर्थ—छिलहिटाकी जड़को जलमें पीसके पीवे तो स्नायुक दूर है य अथवा तिलकी खलको कांजीमें पीस लेप करे तो नहरुआ जाता रहे ॥

अश्वगंधा वा विष्णुक्रांतावा लेप ।

तक्रेणवाथंतेलेनह्यश्वगंधांप्रलेपयेत् ।

श्वेतविष्णुक्रांतयावाशिशुमूलेनवापुनः ॥

अर्थ—छाँड़से अथवा तेलसे असगंधको पीसके लेपकरे अथवा सपेद कायल और सहिंजनेकी जडको पीसके लेप करे तो स्नायुकरोग नष्टहोय ॥

कांचनी लेप ।

पुंमूत्रैःकांचनीपिष्टालेपःस्नायुकजिद्भवेत् ॥

अर्थ—पुरुषके मूत्रमें सोनरुहीको पीसके लेप करे तो स्नायुक रोग नष्टहोय ॥

अन्य योग ।

वार्ताकमूलंमूत्रैर्वापत्रैर्वाश्वत्थजैश्ववा ।

सुतसंबंधयेच्चापिनिहन्यात्स्नायुकंगदम् ॥

अर्थ—बैंगनकी जड अथवा बैंगनके पत्तोंको गोमूत्रमें पीस अथवा पीपलके पत्तोंको गोमूत्रमें पीस लेप करे तो निश्चय नहरुआ रोग नष्ट होय ॥

अन्ययोगांतर ।

गुडूचीरसेनटकणक्षारःपेयः । अथवाशणवीजंभागमे

कंगोधूमपिष्टंभागमेकंद्वयमेकीकृत्यघृतेनपक्तव्यं गुडे

नत्रिदिनंभक्षयित्वास्नायुकोनश्यति ॥

अर्थ—गिलोयके रसके साथ सुहागको पीवे । अथवा सनके बीज १ भाग गेहूँका चून १ भाग दोनोंको एकत्र कर घीमें पकावे, फिर इसको गुडके साथ ३ दिन खाय तो स्नायुक रोग नष्ट होय ॥

गव्य और निर्गुंडी स्वरस ।

गव्यंसपिरुयहंपीत्वानिर्गुंडीस्वरसंज्यहम् ।

पीत्वास्नायुकमत्युग्रहंत्यवश्यंनसंशयः ॥

अर्थ—गौका घी तीन दिन पीव अथवा निर्गुंडीका स्वरस तीन दिन पीवे तो अतिठग्न नहरुएका रोग निश्चय दूर होय ॥

योगराज ।

रामठंटकणक्षारंप्रत्येकंशाणसंमितम् । चूर्णयित्वासप्तदिनंखा

देत्संध्याद्वयंनरः । अनेनयोगराजेनस्नायुकोनश्यतिध्रुवम् ॥

अर्थ—हाँग, सुहागा, हरएक चार चार भासे, इनका चूर्ण कर दोनों बख्त सात दिन खाय इस योगराजके सेवनसे स्नायुक अवश्य नष्ट होय ॥

सुपवीयोग ।

मूलंसुपव्याहिमवारिपिष्टंपानादिनातंतुगदंप्रचंडम् ।

शांतिनयेत्सत्रणमाशुपुंसांगंधर्वगंधश्वघृतेनपीतः ॥

अर्थ—सुपवी (फलोंजी) की जड़को शीतल जलसे पीसके पीवे तो प्रचंड नारुका रोग शांत होये । अथवा गंधर्व गंधरुखड़ीको पीस घृतके साथ पीवे तो घावयुक्त नारुका रोग नष्ट होय ॥

अतिविपादि चूर्ण ।

अतिविपमुस्तकभाङ्गीविश्वौषधिपिप्पलीविभीतकानांच ।

चूर्णतंतुकृमिघ्नपुंसामुष्णेनवारिणार्पितम् ॥

अर्थ—अतीस, मोथा, भारंगी, सोंठ, पीपल और बहेडा इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो स्नायुक रोग दूर होय ॥

प्रयोगांतर ।

पारावतपुरीपस्यमधुनाकल्कितस्यच ।

गिलितागुटिकाहंतिस्नायुकामयमुद्धतम् ॥

अर्थ—कन्नूतरकी बीठको सहतमें सानके गोली बनायले १ गोली नित्य निगल जाय तो घोरस्नायुक रोग दूर होय ॥

निंबादियोग ।

निंबशम्याकजात्यर्कसप्तपर्णाश्वमारकाः ।

कृमिघ्नामूत्रसंयुक्ताःसेकलेपनधावनैः ॥

अर्थ—नीम, अमलतास, चमेली, आक, सतौना और कनेर इनके पत्ते गोमूत्रमें पीस लेप करनेसे या इनके काथकी धारा देनेसे या धौनेसे स्नायुक रोग नष्ट होय ॥

वृन्ताकयोग ।

वृन्ताकंभर्जितंभांडिकृत्वादध्वासहोपरि ।

बंधयेत्स्नायुकोयातिवहिःसप्तदिनात्खलु ॥

अर्थ—बैंगनको मिट्टीके वासनमें भून उसपर दही डालके जहां नहरआ होय उस जगह बांध देय तो सात-दिनमें स्नायुक निश्चय बाहर निकलकर गिर पड़े ॥

गोधूम और सनके बीज ।

गोधूमशणबीजस्यचूर्णंघ्राह्यंसर्गाशकम् ।

घृतपक्वगुडेनात्तंत्रिदिनात्स्नायुकापहम् ॥

अर्थ—गेंहू, सनके बीज दोनोंको समान भाग चूर्णकर घृतमें पकाय गुडमें मिलाय तीन दिन सेवन करे तो नहररुका दौष दूर होय ॥

इति श्रीस्वामिभट्टणालतनयदत्तपामपाठकनिर्मिते बृहन्निघण्टुनाम्ने निदानसहितानिघण्टुसमाप्ता ।

छठवां भागसमाप्त ।

राज श्रीकृष्णदास “श्रीवेङ्कटेश्वर” छापाखाना—मुंबई.